महादेवभाओी

जन्म १-१-१८९२

अवसान १५-८-'४२

महादेवभाईकी डायरी

दूसरा भाग

[५-९-'३२ से १-१-'३३ : गांधीजीके साथ यरवदा जेलमें]

संपादक

नरहरि द्वा० परीख

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

प्रस्तावना

सन् १९१६ में अहमदाबादके प्रेमाभाअी हॉलमें सब जातियोंका अेक सम्मेलन हुआ था। गांधीजीका आश्रम अुस वक्त कोचरबमें अेक किरायेके बंगलेमें था। अिस सम्मेलनमें प्रवचन करनेके लिअे गांधीजीको न्यौता दिया गया था। गांधीजीने अपने प्रवचनमें जातियोंके बारेमें क्या कहा, अिसका मुझे अभी कोअी खयाल नहीं है। परन्तु बहुतसी जातियोंके जो प्रतिनिधि वहाँ अिकट्ठ हुअे थे; अुन्हें अुन्होंने चेतावनी दी थी कि अूँच-नीचके भेदभाव और अस्पृश्यताको नहीं मिटाया गया, तो हिन्दू समाज और हिन्दू धर्मका विनाश अनिवार्य है। यह कहकर सिर झुकाकर और गर्दन पर हाथ रखकर अुन्होंने बहुत ही गम्भीर भावसे घोषणा की थी कि यह सिर अिस अस्पृश्यताके विनाशके लिअे समर्पित है। बादके अुनके वचनों परसे तो जान पड़ता है कि अुनका यह संकल्प ठेठ तरुण वयसे ही था। दक्षिण अफ्रीकामें भी किसी प्रसंग पर अुन्होंने यह बात प्रगट की होगी, मगर हिन्दुस्तानमें तो अैसा मालूम होता है कि पहली बार अुसी वक्त प्रगट की थी। अस्पृश्यताकी बुराअीके बारेमें भावनाकी तीव्रता बतानेके लिअे काममें लाअी गअी वाक्छटाके सिवाय अुस वक्त श्रोताओंने शायद अुसका विशेष अर्थ नहीं किया होगा। जैसे १९३० की गोलमेज परिषद्में अल्पमतवाली जातियोंकी समितिमें जब अुन्होंने घोषणा की थी कि अंत्यज जातियोंके अलग निर्वाचक मण्डल बनाकर अुन्हें बाकीके हिन्दुओंसे अलग किया जायगा, तो अुसका विरोध मैं अपने प्राण अर्पण करके करूँगा, तब अिस बातको बहुतोंने शब्दशः सही नहीं माना होगा। अिसीलिअे गांधीजीको अग्निशय्या पर सो कर अपने वचन सच्चे करके बताने पड़े।

महादेवभाअीकी डायरीका पहला भाग अिस मामलेमें सर सेम्युअल होरको लिखे गये पत्रसे शुरू होता है। मगर अुस भागमें अिस बातकी चर्चा बहुत कम आती है। अिस दूसरे भागमें नज़दीक आनेवाली घटनाकी परछाअीं पहले ही पन्ने पर पड़ जाती है। बादमें तो यह घटना सचमुच ही घट जाती है। हिन्दू समाजके टुकड़े करनेवाला प्रधानमन्त्रीका निर्णय रद्द होता है और अुसके बजाय हरिजनोंके लिअे कुछ सुरक्षित बैठकोंके साथ तमाम हिन्दुओंके संयुक्त निर्वाचक मंडल बनते हैं। कुछ सिर्फ राजनैतिक दृष्टिसे सोचनेवाले लोग अैसी राय प्रगट करते हैं कि गांधीजीने अुपवास करके अिसमें क्या अधिक पा लिया? अितना तो लन्दनमें कहा होता, तो वहाँ भी मिल जाता। लन्दनमें क्या हो

सकता था, अिस बारेमें तर्क-वितर्क करना व्यर्थ है। मुद्देकी बात तो यह है कि गांधीजीके अुपवासके कारण सवर्ण हिन्दुओंके नेताओं और हरिजनोंके नेताओंके बीच जो समझौता हुआ, अुसमें राजनैतिक मामलेमें जो समझौता हुआ अुससे भी अधिक महत्त्वका समझौता सामाजिक मामलेका था। लन्दनमें शायद राजनैतिक मामलेमें समझौता हो जाता, परन्तु सामाजिक मामलेका तो विचार भी न हुआ होता। और गांधीजीके अुपवासके परिणामस्वरूप सारे हिन्दू समाजमें और दूसरे धर्मोंके लोगोंमें भी — क्योंकि अूँच-नीचके भेदभाव दुनियाके दूसरे समाजोंमें भी हैं ही — जो जाग्रति हुअी और छुआछूतकी भावना पर जो घातक वार हुआ, वह न हुआ होता।

जब प्रधानमन्त्रीके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध गांधीजीने अुपवास किया, अुसी समय केरलके श्री केलप्पनने वहाँका गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुलवानेको अुपवास किया। श्री केलप्पनके अुपवासमें काफी नोटिस न देनेकी त्रुटि थी। अिसलिअे यद्यपि अुस अुपवासके परिणामस्वरूप मन्दिर खुलनेकी तैयारीमें था, फिर भी अिसका लोभ छोड़कर अपनी त्रुटि सुधार लेनेके लिअे गांधीजीने श्री केलप्पनको अुपवास मुलतवी करनेकी सलाह दी; और यह आश्वासन दिया कि आगे चलकर ज़रूरत पड़ेगी तो खुद भी गुरुवायुरके मन्दिरके लिअे अुपवास करके अुनका साथ देंगे। अिस तरह निर्णयके विरुद्ध अुपवास पूरा होते ही गुरुवायुरके मन्दिरके लिअे अुपवासकी बात शुरू हो गअी।

निर्णयके विरुद्ध अुपवासके दिनोंमें अुसके सिलसिलेमें लोगोंसे मिलने, पत्र-व्यवहार करने और पत्रोंके प्रतिनिधियोंको मुलाकातें देनेकी जो सुविधाअें गांधीजीको दी गअी थीं, वे अुपवास खोलनेके बाद तीसरे ही दिन सरकारने वापस ले लीं और पहले जैसे सब बन्धन लगा दिये। गांधीजीको लगा कि अुनके कैदी होने पर भी सरकारने यह समझौता होने दिया और अुसे मंजूर कर लिया है, तो फिर अिस समझौतेके सब अंगोंका दोनों पक्षोंकी तरफसे, खास करके सवर्ण हिन्दुओंकी तरफसे, पूरी तरह पालन होनेके लिअे जो कुछ करना ज़रूरी है अुसे करनेकी छूट सरकारको अुन्हें देनी ही चाहिये। अिसलिअे अुन्होंने तुरन्त सरकारसे पत्रव्यवहार शुरू कर दिया और अन्तमें सरकारको नोटिस देकर ता० १-११-'३२से अुसके विरुद्ध सत्याग्रहके रूपमें 'सी' क्लासकी खुराक लेना शुरू कर दिया। यह सत्याग्रह अुत्तरोत्तर बढ़ता जानेवाला था, यानी भोजन पेटके अनुकूल न मालूम होते ही खुराक लेना छोड़ देना था। मगर अैसा कुछ भी करनेकी ज़रूरत नहीं पड़ी। गांधीजीने सरकारको सात दिनका समय दिया था, परन्तु बम्बअी सरकारने २४ तारीखका पत्र भारत सरकारको ३१ तारीखको पहुँचाया। अिसलिअे पहली तारीखको ही भारत सरकारने जवाब भेजा कि हमें विचार

करनेका समय नहीं मिला, अिसलिअे आप भोजनका नियंत्रण मुलतवी रखें और हम दो-तीन दिनमें ही जवाब दे रहे हैं। अिसलिअे गांधीजीने दूसरे दिन सवेरेसे हमेशाका भोजन लेना शुरू कर दिया और तीन तारीखको भारत सरकारका जवाब आ गया, जिसमें गांधीजीकी हरअेक माँगको स्वीकार ही नहीं किया गया, बल्कि देर होनेके लिअे अफसोस भी जाहिर किया गया।

यह किस्सा खतम हुआ ही था कि खबर मिली कि अप्पा साहब पटवर्धन रत्नागिरी जेलमें जो भंगीका काम करते थे, अुसकी मनाही कर दी गअी। अिसलिअे अुसके विरुद्ध सत्याग्रहके तौर पर वे अल्पाशन कर रहे हैं। अतः गांधीजीने अुसके बारेमें आअी० जी० पी० के साथ पत्रव्यवहार करके अन्तमें सरकारको नोटिस देकर ता० ३ दिसम्बरसे अुपवास शुरू कर दिया। अिसका भी दूसरे दिन दोपहरको ही निपटारा हो गया।

अस्पृश्यता-निवारणका काम करनेकी पूरी आज़ादी मिलनेके दूसरे ही दिन यानी ४ नवम्बरको गांधीजीको खयाल हुआ कि हमारे नेता अमुक दिन तक अेकता स्थापित न कर सकें, तो अुपवास किया जाय। हर बार गांधीजीकी अुपवासकी बातसे सरदार खूब घबराते और अपनी घबराहट सख्त भाषामें प्रगट भी करते। अिस अुपवासकी बात सुनकर सरदारने चिढ़कर कहा: "अब आप जरा लोगोंको आरामसे बैठने तो दीजिये। बेचारे वहाँ जमा हुअे हैं, अुन्हें जो सूझेगा सो करेंगे। तब फिर आप अिस तरह तमंचा दिखाकर लोगोंको किसलिअे घबराहटमें डालते हैं? दूसरे लोगोंको भी लगेगा कि यह आदमी तो निठल्ला है, बात-बातमें अुपवास ही करता रहता है। छूटनेके लिअे यह बहाना है, अैसा भी मान सकते हैं।"

"अध्यक्ष महोदयकी बिलकुल नामंजूरी ही है न? तुम जिसके लिअे अिनकार कर दो वह हो सकता है?" गांधीजीने यों विनोदमें कहा। अिस पर सरदारने विनोदमें जवाब दिया: "आप हमारी तो माननेवाले नहीं। अुपवास करना हो तो अिन सब गोलमेज परिषदमें जानेवालोंके विरुद्ध कीजिये न!"

बापू: "वह तुम्हें करना चाहिये। जाओ तुम्हें अिजाज़त देता हूँ।"

वल्लभभाअी: "जी हाँ, मैं किस लिअे करूं? मैं करूँ तो ये लोग मुझे मर जाने दें। आपके ये सब मित्र हैं, अिसलिअे शायद मान जायँ! मगर मरनेवाले क्या वापस आनेवाले हैं? जाने दीजिये यह बात। अेक बात है — अिस देशमें सब बर्फ जैसे ठंडे होकर बैठ गये दीखते हैं। चलिये न हम तीनों आदमी अुनके खिलाफ अुपवास करें।"

बापू: "तुम्हारी यह बात सोलह आने ठीक है। मगर अिसका अवसर अभी नहीं आया। यह अवसर आ ज़रूर सकता है, लेकिन आज नहीं अैसा मुझे स्पष्ट दीखता है।"

वल्लभभाअी : “आपकी अिजाज़त हो, तो अिसके लिअे तो मैं अकेला ही अुपवास करूँ।”

अिस प्रकार अुपवासके प्रसंग बार-बार आते रहनेके कारण वहाँ विनोदमें भी अुपवासकी ही बातें होती थीं। यह डायरी शुरूसे आखिर तक अुपवासके वातावरणसे भरी हुअी है। अिसलिअे सत्याग्रहके अेक शास्त्रके रूपमें अुपवासकी सांगोपांग चर्चा जितनी अिस पुस्तकमें हुअी है, अुतनी और कहीं नहीं हुअी होगी। अुपवास कौन कर सकता है? कब कर सकता है? किसके प्रति किया जा सकता है? अुपवासमें दूसरों पर जबरदस्ती नहीं! सहानुभूतिमें अुपवास किया जा सकता है या नहीं? प्रसंगों और अुदाहरणों व दलीलोंके साथ अिस किताबमें अिन सारे प्रश्नोंकी खूब ही छानबीन की गअी है और सारा विषय विषद बन गया है। अिन सारी चर्चाओंका सार देनेका यह स्थान नहीं है। यहाँ तो अिस सम्बन्धके अभिप्राय ही ढूँढ़ कर सूत्र रूपमें रख दिये हैं :

१. स्वार्थी हेतुके लिअे अुपवास नहीं हो सकता। हेतु शुद्ध जन-कल्याणका होना चाहिये।

२. किसीके कहनेसे अुपवास नहीं हो सकता। अुपवास करनेकी प्रेरणा भीतरसे होनी चाहिये। अिसके लिअे भीतरी आवाज़ या आदेश साफ़ सुनाअी देना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें अिसके लिअे अीश्वरीय प्रेरणा होनी चाहिये।

३. भीतरकी आवाज़ सुननेकी योग्यता यम-नियमके कड़े पालनसे विशुद्ध हुअे मनुष्यमें आती है। अुपवास प्रार्थनाका अुत्कट-से-अुत्कट रूप है। सत्याग्रहीका आखिरी सहारा है। ‘भगवान तुम्हारा सोचा हुआ ही हो, मेरा नहीं,’ अिस तरहकी वृत्ति रखकर जो पूरी तरह अीश्वरकी शरणमें जाता है, वह अुपवास करनेके लायक माना जायगा।

४. फिर भी सम्भव है कि अन्तर्नाद सुननेमें मनुष्यकी भूल होती हो। यह नाद अीश्वरका न हो और शैतानका हो। अैसे अुपवाससे मनुष्यकी मौत हो जाय, तो अुसका प्रभाव जिन पर पड़ता हो अुन परसे अुसका झूठा असर या बोझा दूर हो जाता है।

५. जो अपनेको विरोधी या दुश्मन समझते हों, अुनके विरुद्ध अुपवास नहीं किया जा सकता। अुपवास हमेशा अुन्हींके विरुद्ध किया जा सकता है, जो हम पर प्रेम रखते हों और हमारे कामोंमें साथ देते हों। विरोधीका मत बदलवानेके लिअे अुपवास अुचित साधन नहीं होगा।

६. अुपवास दो तरहके होते हैं : सशर्त और बिना शर्त। बिना शर्त अुपवास मरण पर्यन्त या खास समय तकके लिअे हो सकता है। अैसे अुपवासमें किसीसे कोअी चीज़ करानेकी शर्त नहीं होती। अिसलिअे अगर अुपवास शुद्ध

हो, तो अुसके परिणामस्वरूप अुपवास करनेवालेकी और अुस पर प्रेम रखनेवालोंकी आत्मशुद्धि होती है। अैसा अुपवास अीश्वरके दरबारमें अपनी वेदनाकी पुकार पहुँचानेके बराबर है। अैसा अुपवास अगर किसी खास मियादके लिअे हो, तो अुस आदमीको अीश्वरको जिलाना हो तो जिलाता है और अुपवास पूरा कराता है।

७. सशर्त अुपवासकी शर्त मुकर्रर करनेमें विवेक और मर्यादा होनी चाहिये। अैसे अुपवास अपने मित्रों और साथियों पर अेक किस्मका दबाव डालते हैं; मगर वह प्रेमका दबाव होनेके कारण अिष्ट होगा, क्योंकि वह अुनके सोये हुअे अन्तरात्माको झकझोर कर जगाता है और अुन्हें अपने कर्तव्यमें प्रवृत्त करता है। जिन्हें अिस आदमी पर प्रेम नहीं या जो विरोधी हैं, अुन पर अैसे अुपवासका कोअी असर नहीं होगा। कअी बार तो विरोधियोंको अैसा भी खयाल होता है कि यह गलत जिद कर बैठा है, अिसका हम क्या करें? भले ही मर जाय।

८. अुपवाससे बलात्कार होता है, यह शब्दप्रयोग ही गलत है। बलात्कारमें शारीरिक जबरदस्ती रहती है। अपनी जिस मान्यताको मनुष्य धर्मके बराबर महत्त्व न देता हो या अुस मान्यताके पीछे गहरा विचार न हो और अुपवास करनेवालेके प्रति रहे प्रेमके कारण या लोकमतका आदर करके अुस मान्यताको छोड़ देने या अपनी रायको ताक पर रख देनेको मनुष्य तैयार हो जाय, तो वह बलात्कार नहीं कहा जा सकता। अैसे मनुष्यकी मान्यता अटल नहीं होती। प्रेमकी खातिर या लोकमतकी खातिर वह अुसे गौण पद देता है। अुपवासीके प्रति रहे प्रेमका या अुपवाससे जाग्रत और संगठित हुअे लोकमतका आदर करना वह अपना धर्म बना लेता है।

९. मगर जिस मान्यताको मनुष्य अपना धर्म समझता हो, अुस मान्यताको दूसरेके अुपवासके कारण छोड़ना नहीं चाहिये। गांधीजीने तो कहा है कि मेरे खिलाफ लाख आदमी अुपवास करें, तो भी जिसे मैं अपना धर्म समझता हूँ, अुस चीज़को नहीं छोड़ूँगा।

१०. सहानुभूतिमें अुपवास करना आम तौर पर ठीक नहीं।

मगर अुपवास तो साधन है, तपस्या है। यहाँ ध्येय या साध्य अस्पृश्यता-निवारण है। और अुसमें सारे हिन्दू समाजकी शुद्धिका प्रश्न समाया हुआ है। अिस पुस्तकमें कअी अलग-अलग ढंगों और अनेक दृष्टिकोणोंसे यह चीज़ समझाअी गअी है। हिन्दू समाजमें सदियोंसे अेक बड़े जनसमुदायको अछूत मानकर अुसके प्रति धर्मके नाम पर अमानुषिक और निर्दय बर्ताव किया जा रहा है। यह बुराअी अगर ठीक न की गअी तो हिन्दू धर्मका नाश हो जायगा, अैसी गम्भीर चेतावनी गांधीजीने समय-समय पर दी है। और यह भी कहा है कि

ये अछूत माने जानेवाले लोग ही सवर्ण हिन्दुओंके खिलाफ बगावत करेंगे और भारी गृहयुद्ध होगा। अिससे हिन्दू समाजको बचा लेनेके लिअे गांधीजी अपने प्राणोंकी आहुति देनेको तैयार हुअे थे। अुनकी अिस तपश्चर्यासे सवर्ण हिन्दुओंकी अन्तरात्मा जाग्रत हो जाय, तो समाजमें खूनखराबी हुअे बिना ही छुआछूत निर्मूल हो जाय। अिससे सिर्फ हिन्दू समाजकी ही शुद्धि नहीं होगी, बल्कि गांधीजीको यह अुम्मीद थी कि अिसका असर तमाम दुनिया पर पड़ेगा और दूसरे समाजोंमें चाहे किसी भी रूपमें छुआछूत जैसी चीज़ हो, अुसे सख्त चोट पहुँचेगी। अिस अुपवासको आज सोलह वर्ष बीत गये है और गांधीजीकी आशा बहुत कुछ पूरी हो चुकी है। पहलेके 'अस्पृश्य' माने जानेवाले वर्गोंके लिअे स्वतंत्र भारतके सार्वजनिक जीवनमें आज किसी भी किस्मका अपमान या अधिकारहीनता नहीं है। हालाँकि देशके पिछड़े हुअे भागोंमें अभी तक हरिजनोंको सारी सामाजिक सुविधाअें प्राप्त नहीं हुअी हैं; परन्तु अिसका कारण सवर्ण और हरिजन दोनोंका अज्ञान और निष्क्रियता है। चूँकि अब किसी भी तरहका अन्यायपूर्ण प्रतिबन्ध नहीं रहा, अिसलिअे यह अज्ञान और निष्क्रियता दूर होनेमें देर नहीं लगेगी।

अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नने अिस पुस्तकमें बड़े महत्त्वका स्थान लिया है। मन्दिर जानेके मामलेमें अलग-अलग कारणोंसे बिलकुल अुदासीन हो चुके और मन्दिरोंमें होनेवाले अनाचारोंके कारण अुनका नाश चाहनेवाले कितने ही सुशिक्षित हिन्दू तो गांधीजीसे कहते थे कि आपने यह सवाल किस लिअे अुठाया है? आप खुद तो मन्दिरमें जाते नहीं। जिस चीज़को अच्छे अच्छे हिन्दू छोड़ चुके हैं, अुसे हरिजनोंको दिलवानेका आग्रह आप क्यों करते हैं? बहुतसे हरिजन नेता भी यह कहते थे कि हमें मन्दिर-प्रवेशकी ज़रूरत नहीं; हमारी सामाजिक और आर्थिक कठिनाअियाँ दूर हों और हमें राजनैतिक अधिकार ज्यादा मिलें, अैसा काम कीजिये। हरिजनोंको तो गांधीजीका जवाब अितना ही था कि आपके प्रति हमने जो अन्याय किया है, अुसे मिटाकर हमें अपने पापका प्रायश्चित्त करना है। आप हमारे लेनदार हैं और हम आपके देनदार। हमें अपना कर्ज़ चुका ही देना चाहिये। आपको अपना लेना न लेना हो, तो आप भले ही न लीजिये या चाहें तो अुसे फेंक दीजिये। हम सवर्णोंको तो आपके लिअे मन्दिरोंके द्वार खोल ही देने हैं। अिन मन्दिरोंमें जाना न जाना आपकी मरजीकी बात है।

मन्दिरोंमें होनेवाले अनाचारके बारेमें अुनका कहना था कि मैं अिससे अिनकार नहीं करता कि कुछ मन्दिर दुराचारके अड्डे बन गये हैं। मगर यह हालत बड़े मशहूर तीर्थोंके मन्दिरोंकी और शहरोंके बड़े-बड़े मन्दिरोंकी है। और

वहाँ भी दुराचारमें भाग लेनेवाले और अुसका शिकार बननेवाले आदमी गिनतीके ही होते हैं। बड़े जनसमुदायको तो अिस दुराचारका पता भी नहीं होता। वे तो सिर्फ भक्तिभावसे धार्मिक सन्तोष और शान्ति प्राप्त करनेके लिअे मन्दिरमें जाते हैं। अैसे लोगोंको जो धार्मिक और आध्यात्मिक प्रेरणा और समाधान मन्दिरों द्वारा मिलता है, वह और किसी तरह नहीं मिल सकता। अिन लोगोंको तो मन्दिरकी ज़रूरत है ही। अिसलिअे मन्दिरोंका नाश नहीं, बल्कि मन्दिरोंका सुधार करनेकी ज़रूरत है।

दूसरी बात यह है कि गाँवोंके मन्दिरोंमें, जिनके आसपास देहातका सारा सामाजिक जीवन गुँथा हुआ रहता है, अूपर बताया हुआ कोअी अनाचार नहीं होता। अिन मन्दिरोंमें हरिजनोंको प्रवेश मिलते ही देहातमें अुनकी जो बहिष्कृत दशा है, वह दूर हो जायगी।

मन्दिर-प्रवेशके साथ ही मूर्तिपूजाका सवाल स्वाभाविक रूपमें पैदा होता है। गांधीजीने अेक बहनके पत्रके जवाबमें मूर्तिपूजाके बारेमें जो कुछ लिखा है, वह बहुत मनन करने लायक है:

"अमुक चीज़ मुझे सहायक नहीं होती, अिसलिअे दूसरोंके बारेमें मैं लापरवाह रहूँ और यह जाननेका कष्ट न करूँ कि वह अुनके लिअे सहायक होती है या नहीं, यह ठीक नहीं। मैं जानता हूँ कि अमुक प्रकारकी मूर्तिपूजा करोड़ों मनुष्योंको सहायक होती है। अिसका कारण यह भी नहीं कि अुनका विकास मुझसे कम हुआ है . . . किसी-न-किसी रूपमें वह हम सबके लिअे आवश्यक हो जाती है। . . . मस्जिदमें जाना और गिरजेमें जाना भी अेक तरहकी मूर्तिपूजा है। बाअिबिल, कुरान, गीता या अैसे किसी और ग्रन्थके प्रति पूज्यभाव रखना भी मूर्तिपूजा ही है। आप किसी ग्रन्थ या मकानका अुपयोग न करें और अपनी कल्पनामें ही परमेश्वरका कोअी खास चित्र खींच लें व अुसमें कुछ खास गुणोंका आरोपण करें, तो यह भी मूर्तिपूजा हुअी। जो पत्थरकी मूर्तिकी पूजा करते हैं, अुनकी पूजा अिन दूसरी पूजाओंसे ज्यादा स्थूल है, यह भी मैं नहीं कहूँगा। बड़े विद्वान न्यायाधीश भी अपने घरोंमें मूर्तियाँ रखते पाये गये हैं। पंडित मालवीयजी जैसे तत्त्वज्ञानी अपने गृहदेवताका पूजन किये बिना मुहमें अन्न नहीं डालते। अैसी पूजाको वहम माननेमें अज्ञान और अभिमान दोनों है। पूजा करनेवालोंकी कल्पनामें तो अीश्वरका अधिष्ठान मंत्रपूत पत्थरमें है, आसपास पड़े हुअे दूसरे पत्थरोंमें नहीं। . . . किसी भी स्वरूपकी सच्चे दिलसे की गअी पूजा, पूजा करनेवालेके लिअे अेक-सी अच्छी और फलदायक है। . . . पूजाकी खास विधि या शब्दोंकी तरफ अीश्वर नहीं देखता। वह तो हमारे कृत्यों और हमारी वाणीके आरपार देख सकता है। और हम खुद ही

अपने जिन विचारोंको नहीं समझ सकते, अुन्हें भी वह जानता और समझता है। अुसके सामने तो हमारे विचार ही असली चीज़ हैं।"

अस्पृश्यता और मन्दिर-प्रवेशके सिलसिलेमें सनातनी शास्त्रियोंके साथ हुअी गांधीजीकी चर्चाको अिस और अिसके बाद प्रकाशित होनेवाले भागका महत्त्वका हिस्सा समझना चाहिये। कुछ शास्त्रियोंका वर्णन करते समय महादेवभाअीको बहुरूपियेकी याद आ जाती थी। कुछ शास्त्री तो बहुरूपियेको भी मात करते थे। गांधीजीको भी अुनके साथ बातें करते हुअे मनमें तो हँसी आती थी, परन्तु दूसरी तरफ अुनका जी जल जाता था। आप शास्त्रका आधार मानते हैं या नहीं? वेदको प्रमाण मानते हैं या नहीं? ये अिन शास्त्रियोंके मुख्य प्रश्न थे। शास्त्र माने जानेवाले ग्रंथोंके परस्पर विरोधी अर्थ और भाववाले वचनोंकी चाहे जिस तरह खींचतान करके संगति बैठानेमें ही लगी हुअी अुनकी बुद्धिको यह विवेक करना और अुसका तारतम्य निश्चित करना सूझता ही नहीं था कि किस चीज़को महत्त्वपूर्ण (essentials) और किसे महत्त्वहीन (non-essentials) मानना चाहिये। फिर भी गांधीजी अुनके साथ अपार धीरजसे बातें करते रहते थे। आप बताअिये कि हम कैसे प्रमाणोंसे आपको विश्वास दिलायें, अिसके जवाबमें गांधीजी अुनसे कहते: 'आप पण्डित हैं, आप मुझे पढ़ाने आये हैं। शिक्षक कहीं विद्यार्थीसे पूछता है कि मैं तुझे किस तरह पढ़ाअूँ? या वैद्य बीमारसे नहीं पूछता। मुझे तो खुदको बीमारी भी नहीं है। परन्तु वैद्य कहता है कि बीमारी है, तो फिर वही दवा बताये। मैं तो मानता हूँ कि मैं जो काम कर रहा हूँ वह धार्मिक है। मगर आप यह सिद्ध कर दें कि वह अधर्म है, तो मैं अपनी प्रवृत्ति छोड़ दूँगा। मेरा तो निश्चय है कि जो अहिंसा और सत्यकी कसौटी पर खरा निकले वही धर्म है।'

वेदोंके प्रमाणके सम्बन्धकी चर्चामें गांधीजीके अुद्‌गार बहुत ध्यानमें रखने लायक हैं: 'वेद अीश्वरप्रेरित हैं। मगर वे अन्तिम शब्द नहीं हैं। वेदोंकी प्रेरणा करनेके बाद अीश्वरने कोअी हाथ नहीं धो डाले। अीश्वर अभी और भी प्रेरणा या स्फुरणा कर सकता है। वेदोंमें जो कुछ है, वह सब सनातन धर्म नहीं माना जा सकता। वेदोंमें कुछ सनातन धर्म है और कुछ केवल अुस समयके लिअे ही है। जो अुस समयके लिअे होगा, वह बदल सकता है। और सिर्फ चार ग्रंथ ही वेद नहीं हैं। अुसके बाद ज्ञानी मनुष्योंके अनुभव-वचनोंकी अुनमें वृद्धि हुअी है और आगे भी होती रहेगी। अिसके सिवाय यह भी मानना चाहिये कि दूसरे धर्मोंके ग्रंथ भी अीश्वरप्रेरित होंगे। हिन्दुस्तानसे बाहरके ब्रह्मज्ञानी या सत्यज्ञानी पुरुषोंके अनुभव-वचनोंको भी वेदोंके बराबर ही महत्त्व देना चाहिये। अिन सबका मेल कराना हिन्दू धर्मका काम है। अिसीमें

हिन्दू धर्मकी विशालता है, और वह असा करेगा तभी मानवधर्म कहलाने लायक बनेगा ।'

गांधीजीके अुपवासके कारण अस्पृश्यता-निवारणके लिअे जो प्रचण्ड आन्दोलन हुआ, अुसे देखकर जाति-पाँतिका नाश चाहनेवाले व्यक्तियों और संस्थाओंने गांधीजीको सुझाना शुरू किया कि अिस प्रवृत्तिके साथ जाति-पाँतिके नाशका काम भी हाथमें लें, तो हिन्दू समाजकी पूरी तरह शुद्धि हो जायगी। गांधीजीका जवाब यह था : 'यद्यपि मैं जाति-पाँतिकी दीवारोंको तोड़नेके मतका हूँ और जाति-पाँतिके सिलसिलेमें रोटी-बेटी-व्यवहारकी जो पाबन्दियाँ समाजमें मौजूद हैं वे मुझे जरा भी अिष्ट नहीं मालूम होतीं, फिर भी अिन दोनों प्रवृत्तियोंको अेक साथ मिला देना समझदारीका काम नहीं है। छुआछूत हिन्दू समाजको कुतर कर खानेवाला जहर है, जब कि जाति-पाँति अेक सामाजिक बुराअी है। यह बुराअी हमें देर सबेर दूर करनी पड़ेगी। मगर अिस सुधारका बोझा अस्पृश्यता-निवारणके काम पर नहीं डालना चाहिये।'

जिस समय देशमें सरकारके खिलाफ सविनय-भंगकी लड़ाअी हो रही थी, अुस समय गांधीजीने जेलमें से अस्पृश्यता-निवारणकी प्रवृत्ति शुरू की। अिसका असर देशके भिन्न-भिन्न विचार रखनेवाले वर्गों पर अलग-अलग पड़ा। सविनय-भंगमें विश्वास न रखनेवाला, परन्तु अस्पृश्यता-निवारणके कामको महत्त्व देनेवाला वर्ग कहने लगा कि आप सविनय-भंग बन्द करके बाहर आ जाअिये और अिसी कामको जोशके साथ चलाअिये। जिन्हें सिर्फ राजनैतिक लड़ाअीमें ही ज्यादा दिलचस्पी थी, वे कहने लगे कि अिस कामके कारण लोगोंका ध्यान सविनय-भंगसे हट जाता है, अिसलिअे अिस कामको आपने क्यों शुरू कर दिया?

गांधीजीको सविनय-भंग मुतलवी कर देनेका विचार अेक बार आया ज़रूर था। परन्तु अुसके अनेक कारण हो सकते हैं। लड़ाअीका संचालन ज्यादातर गुप्त ढंगसे हो रहा था, अिस कारण लड़ाअी चलानेवालोंमें काफ़ी असत्य घुस गया था, लोगोंमें डर और अविश्वासका वातावरण फैल गया था, और अिस कारण ही सरकारका आर्डिनेन्स राज्य संभव हुआ था। लड़ाअीको मुल्तवी करनेके विचारके पीछे ये कारण भी हो सकते हैं। वैसे गांधीजी तो यही कहते थे कि जब मैं जेलमें रहकर यह काम कर रहा हूँ, तो सविनय-भंग तो पूरी तरह कर ही रहा हूँ, और यह काम तो अुसके सिवाय अतिरिक्त कामके तौर पर कर रहा हूँ। जिन्होंने सविनय-भंगकी प्रतिज्ञा ले रखी है, मैं नहीं चाहता कि वे सविनय-भंगका काम छोड़कर अस्पृश्यता-निवारणके काममें पड़ें। अुन्हें स्वतन्त्र रूपमें अस्पृश्यता-निवारणका काम ज्यादा महत्त्वका लगे, तो दूसरी बात है; या जो लड़ाअीसे थक गये हों और अस्पृश्यता-निवारणके काममें पड़ना

चाहते हों, वे अीमानदारीके साथ अपनी स्थिति प्रगट करके भले ही अुसमें पड़ जायँ। मगर मैंने अिस कामका आधार कांग्रेसियों पर नहीं रखा। अपने बारेमें वे अितना और कहते हैं: "मेरा जीवन जैसे अस्पृश्यता-निवारणके लिअे समर्पित है, वैसे ही दूसरी बहुतसी बातोंके लिअे भी — जिनमें से अेक स्वराज्य है — समर्पित है। मैं अपने जीवनको अेक दूसरेसे अलग कअी विभागोंमें नहीं बाँट सकता। मेरा जीवन अखण्ड है। मेरी तमाम प्रवृत्तियोंका मूल अेक ही दिखाअी देगा। जीवनके हर क्षेत्रमें, फिर वह छोटा हो या बड़ा, सत्य और अहिंसाकी अुपासना करना ही मेरा ध्येय है।"

अिस तरहकी विविध चर्चाओंमें और विपुल पत्रव्यवहारमें अनेक मनुष्योंके मनकी गुत्थियाँ सुलझानेवाले अुनके अिस्तेमाल किये हुअे मार्ग-दर्शक और प्रेरणा-दायक वचनोंसे यह पुस्तक भरी हुअी है। हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले गहनसे गहन विचार महादेवभाअीकी रोचक शैलीमें सीधी-सादी और मामूली अकलवाले आदमीकी समझमें आनेवाली भाषामें हमें यहाँ मिलते हैं, यह हमारा बड़ा सौभाग्य है।

साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें सरकारके साथ हुआ पत्र-व्यवहार, अुपवासके दिनोंमें गांधीजीके दिये हुअे बयान और अुपवास पूरा होनेके बाद अुनके हरिजन-कार्य सम्बन्धी वक्तव्य वगैरा देनेकी छूट मिलनेके बादसे ता० १–१–'३३ तकके बयान — ये तीनों चीज़ें डायरीके अन्तमें तीन परिशिष्टोंमें दी गअी हैं। तीसरे परिशिष्टमें ता० ४–११–'३२ से ९–१२–'३२ तकके पहले दस बयान भाअी चन्द्रशंकर शुक्ल द्वारा अनुवाद की हुअी 'धर्मसंस्थापन' (गुजराती) पुस्तकसे अुनकी सहर्ष अनुमतिसे लिये गये हैं।

नरहरि परीख

महादेवभाईकी डायरी

दूसरा भाग

[५-९-१९३२ से १-१-१९३३ : गांधीजीके साथ यरवदा जेलमें]

“भूख और दुःखके आगे सब देह समान हैं। खूनमें जातपाँत नहीं होती। वह तो मानव मात्रके शरीरमें अेक ही रंगका बहता है। आँसुओंमें भी जातपाँत नहीं होती। सभीकी आँखोंमेंसे वे वैसे ही खारे टपकते हैं। मनुष्य ललाट पर तिलककी छाप लेकर या गलेमें जनेअू पहनकर जन्म नहीं लेता। जो सत्कर्म करता है, वह अूँचा (द्विज) है; जो दुष्कर्म करता है, वह नीच है।”

लाअिट ऑफ अेशिया (जम्बू-ज्योति)

*　　　*　　　*

“कोअी अिसके लिअे कुछ खानेको लाया है?”

“औसा अुनसे कहते हैं: ‘जिसने मुझे भेजा है, अुसकी अिच्छा पूरी करना और अुसका काम पूरा करना ही मेरी खुराक है’।”

सेण्ट जॉन, ४, ३३–३४

हरिः ॐ

५–९–'३२

पद्मजा 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिण्डिया सोसायटी' में आबहवा बदलनेके लिअे रह रही है और हर सप्ताह बापूके लिअे बढ़िया मोसम्बियाँ भेजती रहती है। अुसके अक्षर पढ़ना मुश्किल है। पिछली बार दो-तीन शब्द पढ़नेमें कअी मिनट लग गये थे। अिसलिअे बापूने ताना मारा था कि 'मेरे अक्षर खराब होते हुअे भी तुझसे तो अच्छे हैं। और माँके गुणोंका अनुकरण हो सकता है, अवगुणोंका थोड़े ही हो सकता है?' आज अुस पत्रका जवाब सुन्दर अक्षरोंमें लिखा हुआ आया। यह पत्र सभी तरहसे अच्छा है, मगर अुसमें अेक बात असाधारण महत्त्वकी थी: "अिस सप्ताह मुझसे मिलने आनेवालोंमें दो बड़े क़ानून-पंडित और राजनीतिक पुरुष थे — श्री सी० पी० और श्री ज०। छुट्टीका अिनका आदर्श अैसा है कि अेक हाथमें जूहीके फूलोंका गुच्छा और दूसरे हाथमें मोटा लट्ठ लेकर घूमना। श्री ज० ने आज आपके बारेमें बड़ी भविष्यवाणी की। लेकिन अुसके बारेमें मैं यहाँ नहीं लिखूँगी। आपसे जब वे पिछली बार मिले थे, तब आपने अुन्हें बुद्धकी वह अद्‌भुत कथा सुनाअी थी, जिसमें बुद्ध पूर्वजन्ममें अपना शरीर अेक भूखे शेरके सामने रख देते हैं। मालूम होता है, अुसी बात परसे अुन्होंने अपनी भविष्यवाणी रची है। अिस कहानीमें प्रेमका जो सुन्दर आदर्श अुपस्थित होता है, वैसा दुनियाके और किसी साहित्यमें होगा या नहीं, अिसमें मुझे शंका है। शायद अुस आदर्शको दुनियाके आगे मूर्तिमन्त करना आपके भाग्यमें लिखा हो।"

अिस पर काफ़ी चर्चा और तर्क-वितर्क हुआ। बापूने कहा: "स्त्री-स्वभावके अनुसार अुसने न कहते-कहते भी बहुत कुछ कह डाला। सी० पी० से जयकरको खबर मिली होगी, और जयकरने भावीकी ध्वनि अिस लड़कीको सुना दी होगी, और अपनेको मिली हुअी जानकारी भविष्यवाणीके रूपमें पेश की होगी!" कुछ भी हो, यह जानकर मुझे बहुत आनंद हुआ कि बुद्ध भगवानके पूर्वअवतारका अुदाहरण बापूकी भावी कारवाअी पर लागू करनेकी कोमलता, सौजन्य और कवित्व ज० में है।

यह भी सहज ही अनुमान होता है कि यह बात अिस तरह फैलने लगी है। अिस परसे अनेक तर्क-वितर्क अुठे। सी० पी० को बम्बअी भेजा हो, तो क्या यह अिस भावी विपत्तिमें अुदार दलवालोंका सहयोग प्राप्त करनेके लिअे हो सकता है? क्या अिस बातकी चर्चा वाअिसरॉयकी कौंसिलमें हुअी होगी? अिन लोगोंने तैयारी तो बहुत कर रखी होगी, मगर यह कल्पना नहीं हो सकती कि वह क्या है।

बापू कहने लगे: "अिन लोगोंने १९ तारीखको मुझे छोड़ देनेका विचार कर रखा होगा, जिससे अुन पर कोअी बोझ न पड़े।" हँसते-हँसते बोले — "तो देखो, अपने राम तो १९ तारीखको चले, फिर रहना तुम दोनों अकेले।"

बातें तो अिस तरह चलती रहतीं, मगर रामानंद चटर्जीके साम्प्रदायिक निर्णयके बारेमें गहरे अध्ययनसे भरे हुअे जो लेख 'मॉडर्न रिव्यू'में आये हैं, अुन्हें पढ़नेमें समय देना ज़्यादा लाभदायक समझा गया।

अुस पत्रका जवाब देते हुअे पद्मजाको बापूने लिखा:

"बुद्धकी जिस भव्य कथाका तूने अुल्लेख किया, अुस परसे बहुतसी पवित्र वस्तुओंका स्मरण होता है। हाँ, मैं अैसे बहुत सपने देखता हूँ। ये सब केवल हवाअी किले ही नहीं हैं। अैसा हो, तो मैं तरह-तरहके पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियोंका जो प्रेम भोग रहा हूँ, अुसके बोझके नीचे दब ही जाअूँ।"

अिस पत्रके बाद दिलीपका अुदाहरण दिनभर याद आता रहा, और गाता रहा:

'बाजी हो, तन-मन-धन बाजी;
बाजी खेलूँ पीवसे रे, प्रेम लगाय।
हारी तो भअी पीवकी रे, जीती तो पियु मोर हो,
तन-मन-धन बाजी।'*

. . . को लिखा:

"तू या तो लुच्ची है या मूर्ख है। विकार नहीं समझती? दाल खानेसे होनेवाला विकार और स्पर्श-विकार, दोनों बिगाड़ हैं। दोनों समान प्रवाह (?) में फेरफार करते हैं। अेक विकार बाहरका स्थूल पदार्थ पेटमें डालनेसे होता है। दूसरा बाहरी वस्तुको देखनेसे होनेवाला मनोवृत्तिका परिवर्तन या विकार है। यह विकार जब सारे जीवनको हिला देनेवाला होता है, तब हानिकारक हो सकता है। अेक स्त्री किसी पुरुषके प्रति विकारवश हो

* यह भजन किसका है और अिसका पाठ बराबर है या नहीं, अिसके बारेमें मैं अितमीनान नहीं कर सका। — सं०

जाय, तो समाज अुसे सदा दोषी नहीं मानता; बशर्ते कि अुस विकारके पीछे विवाहका अिरादा हो, जिसके साथ विवाहका विचार हो जाय, वह त्याज्य न हो, यह बात प्रियजनोंसे गुप्त न रखी हो और अुसको विवाह करनेका अधिकार हो। मेरे खयालसे तू अभी शादीके लायक़ नहीं है, क्योंकि पढ़ रही है और बच्ची ही है। . . . के साथ अैसा सम्बन्ध त्याज्य होगा, क्योंकि वह शिक्षक था और फिर तेरे लिअे भाअीके समान था। तेरे मनमें विकार पैदा हुआ या यों कहा जाय कि विवाह-प्रेम पैदा हुआ, मगर तूने अिसे पोशीदा रखा, अिसलिअे यह विकार दूषित माना जायगा।

"तू स्वाधीनताको भी नहीं समझी। तू अपनी अिच्छासे बड़ोंको पत्र बता दे, तो अुससे तू अपनी स्वाधीनता नहीं खोती, बल्कि अपनी रक्षा ढूँढ़ती है। कोअी हमारे घरकी देहली पकड़ कर बैठ जाय, तो वह जब्ती करनेवाला आ गया और हमारी स्वाधीनता गअी। परन्तु हम घरका पहरा देनेको द्वारपाल रखें, तो अिससे अुसकी स्वाधीनता नहीं जाती, बल्कि रक्षा होती है। अिसी तरह तेरी अज्ञान अवस्थामें, अधपकी हालतमें, तू बड़ोंको पहरेदार समझ कर अुनके सामने अपना दिल खोले, अपने खत बतावे, तो तू पराधीन नहीं बनती, बल्कि अपनी स्वाधीनताकी रक्षा ढूँढ़ती है। मेरी तीव्र अिच्छा है कि तू स्वाधीन बने। यह स्वाधीनता क़ायम रहे, अिसीलिअे मैंने तुझे सलाह दी कि तुझे पत्र वग़ैरा सब कुछ मातापिताको बता देना चाहिये। मगर तेरा मन अिसे न माने, तुझे भार-सा लगे, तो ज़रूर अपने पत्रोंको ख़ानगी रख। मैं तो ज़रा भी जब्र करना नहीं चाहता। अैसा करनेसे तू दब जायगी। मैं तो यही चाहता हूँ कि तू वीर-बाला और प्रतापी सेविका बने। तू पत्र लिखना बन्द करे, यह तो असह्य मालूम होगा।"

६-९-'३२ आज शामको प्रार्थनाके समय काफ़ी बातें हुअीं। बापूने वल्लभभाअीसे कहा: "सुबह तो तुम मज़ाक करते थे, मगर मैं सचमुच कहता हूँ कि तुमको जो पूछना हो, पूछ लो।"

वल्लभभाअी: "आपके खयालमें ये लोग क्या करेंगे?"

बापू: "मुझे अभी तक अैसा ही लगता है कि १९ तारीखको या अुससे पहले मुझे छोड़ देंगे। ये लोग मुझे अुपवास करने दें, अिसकी कोअी खबर न दें, और यह कहें कि अुसे क़ैदीकी हैसियतसे जो न करना चाहिये था वह किया, तो हम क्या करें? यह तो नीचताकी हद होगी। मैं यह नहीं कहता कि ये लोग अिस हद तक नहीं जा सकते; मगर ये लोग अिस हद तक जानेकी ज़रूरत नहीं समझेंगे। और ज़रूरतसे ज़्यादा आगे जानेवाले ये लोग हैं नहीं।"

वल्लभभाअी : "तब आप क्या करेंगे ?"

बापू : "२० तारीखको तो अुपवास शुरू नहीं किया जा सकता। २० तारीख क़ायम नहीं रखी जा सकती।"

वल्लभभाअी : "यह तो नया विधान बनने तकका समय मिल गया कहलायेगा न ? या लोगोंको और सरकारको आप लम्बी मियाद दे सकते हैं ?"

बापू : "हाँ, मगर यह तो अिस पर निर्भर है कि बाहर जानेके बाद ये लोग मुझे कितना करने देते हैं। क्या स्थिति होगी, यह तो मेरी कल्पनामें नहीं आ सकता। यह भी मुझे नहीं सूझता कि मैं कैसा पत्र तैयार करूँगा। लेकिन मुझे तो हिन्दू समाज, अन्त्यज, सरकार और मुसलमान सभीको ध्यानमें रखकर कहना होगा। हिन्दू समाजको तो अन्त्यजोंके साथ मिल कर और स्थान-स्थान पर सभाअें करके अिस चीज़से अिनकार ही करना होगा। सरकारने तो अीसाअी सरकारके रूपमें यह किया है, अिसलिअे सरकार और अीसाअी दोनोंको मुझे अेक ही बात कहनी होगी कि आप अीसाअीके नाते अैसा नहीं कर सकते। हमारा स्वराज हो जाने दीजिये, फिर अन्त्यजों पर आप जो असर डालना चाहें, डालें। लेकिन आज हमारे टुकड़े मत करिये। मुसलमानोंसे तो मैंने वहाँ विलायतमें भी कहा था। यहाँ भी यही कहूँगा। हिन्दू समाजको भी समझाअूँगा कि अब तो अछूतोंके लिअे मुसलमान या अीसाअी बननेके सिवा कोअी चारा नहीं है।"

वल्लभभाअी : "मगर यहाँ तो सुननेवाले मुसलमान रहे ही कौन हैं ?"

बापू : "भले ही कोअी न हो। मगर हम आशा रखें कि ये लोग भी जाग्रत होंगे। सत्याग्रहकी जड़ मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखनेमें है, दुष्टसे दुष्ट आदमीको भी पिघला सकनेकी श्रद्धामें है। अिसलिअे कोअी न कोअी मुसलमान तो ज़रूर निकलेगा, जो कहेगा कि अितनी ज़्यादती तो हम बरदाश्त नहीं कर सकते। यह सब करनेके लिअे खास-खास लोगोंको तो मैं बुलवा लूँगा। पता नहीं अिन सबको आने दिया जायगा या नहीं। मगर वे लोग तो अैसे भी हैं कि मेरा अपमान कर दें। वे कह सकते हैं कि अिसे हमने अिसी कारण छोड़ा है कि अिसके मरनेकी ज़िम्मेदारी लेनेको हम तैयार नहीं। मगर यह सविनयभंग करेगा, तो अिसे हमें वापस बन्द कर देना पड़ेगा।"

मैंने पूछा : "जो लोग आयेंगे, अुनमें तो अीसाअी मित्र भी रहेंगे। और वे कहेंगे कि आप सरकारको दोष देते हैं, अिससे पहले अपना दोष तो दूर कीजिये। हिन्दू समाज किसलिअे अन्त्यजोंको अछूत मानता है ?"

बापू : "यह समझाना मेरे हाथमें है। अिसमें कोअी बड़ी बात नहीं। अुनसे तो कहा जा सकता है कि 'हमें आपसमें निपट लेने दीजिये, आप किसलिअे

बीचमें पड़ते हैं? हम अपना कारबार चलाने लग जायँ, तब आपको जो कुछ करना हो, कर लेना। हममें फूट डालकर फिर किसलिअे ये सब बातें करते हैं? आज तो अंत्यजोंके लिअे आपके या मुसलमानोंके पास जानेके सिवाय कोअी चारा ही नहीं रहा।' स्त्रियोंका सवाल भी अंत्यजोंके जैसा ही है। मगर स्त्रियाँ अछूत नहीं। वे अछूत बनना चाहें, तो भी पुरुष अुनकी खाटपर जाकर बैठेंगे। अुनका अलग निर्वाचक-मण्डल बनाकर भी अुन्हें अलग नहीं किया जा सकता। आज तो अंत्यजोंको स्थायी रूपसे अलग कर दिया गया है। अिसका नतीजा क्या होगा? आन्तरिक विग्रह होगा। . . . जैसे तो मौजूद ही हैं। वे क़ौममेंसे गुंडे जमा करके हिन्दुओं पर अत्याचार करा सकते हैं, कुओंमें ज़हर डलवा सकते हैं और चाहे सो कार्रवाअी कर सकते हैं।

"यहाँ रहनेवाले तुम सबका फ़र्ज़ तो अितना ही है कि केम्प जेलमें सबको बता दो कि अुपवास करनेकी सख्त मनाअी है, और शान्ति रखना है।"

७–९–'३२

सुबहकी प्रार्थनाके बाद टहलते समय, स्त्रियाँ संकट पड़ने पर तमाचा मारें, अिस सूचना पर बात चली। बापूने बताया कि, "अिसमें दस-बारह बरसकी यानी जो नादान हैं और कुछ भी नहीं समझतीं, अैसी लड़कियोंकी बात नहीं है। जो समझदार है, वह किसी भी हालतमें बलात्कार न होने देगी और होनेसे पहले मर जायगी। मैं यह नहीं कहता कि युक्ति-प्रयुक्तिसे, व्यवहार-बुद्धिसे और अुल्टे ज़ोर-जब्रसे काम नहीं बन सकता। परन्तु स्त्रियाँ अिन्हीं साधनों पर आधार रखकर बैठी रहें, तो ये साधन अधूरे भी साबित हो सकते हैं; और संभव है कि अुस समय अुन्हें हाथ मलकर रह जाना पड़े। अिसलिअे जिसका आत्मबल पर विश्वास है, अुसकी हार नहीं होती। क्योंकि आत्मबलकी पराकाष्ठाका अर्थ है मरनेकी तैयारी। तमाचेमें हिंसा नहीं, क्योंकि सामनेवालेको चोट पहुँचानेका अिरादा नहीं होता। अुससे शारीरिक हानि भी नहीं होती। मगर कोअी स्त्री पत्थर या लकड़ी काममें ले, तो वह दूसरेको अिससे ज़्यादा कठोर हथियार काममें लेनेका मौका देती है। मैंने तो आपबीती दो घटनाअें सोच लीं। अेक वह जब (दक्षिण अफ्रीकामें) जहाज़से अुतरने पर गोरोंकी भीड़का घातक हमला हुआ था और दूसरी वह जब बग्घी (सिगराम) की ताड़ियाँ पकड़ कर मार खाते खड़ा रहा था। अुस वक्त मैंने मरनेका निश्चय कर लिया था। अुपवासका विचार करते समय भी मैंने सोच लिया है कि मान लो ये लोग मर्यादा छोड़ दें और जबरन खाना खिलानेकी कोशिश करें, तो मुझे क्या करना है? मेरे लिअे अपने शीलकी रक्षा करने जैसा यह प्रसंग आ जाय, तो निश्चित है कि ये लोग मुझे देरसे मरने देनेके बजाय जल्दी मार

डालेंगे। यह बात अुन लड़कियोंके लिअे है, जो यह मान बैठी हैं कि तमाचा भी कैसे मारा जा सकता है? तमाचा मारनेके साथ दुराचारीमें जाग्रति आ जाती है।"

आज शामको कोअी अखबार पढ़नेके लिअे नहीं थे। 'माडर्न रिव्यू' भी पढ़ना मुल्तवी कर दिया और बातोंमें लग गये।

मैंने कहा: "यह लड़ाअी पाँच-सात बरस तो चलेगी।"

बापूने कहा: "नहीं। पर हाँ, मामला बिलकुल ठप हो जाय, तो चल भी सकती है, जैसे दक्षिण अफ्रीकामें चली थी। वैसे असली चीज़ जो लेनी है, अुसके लेनेमें समय तो ज़रूर लगेगा। नये विधानसे हमें दूर ही रहना है, सो बात नहीं। अगर अैसा लगे कि अुसमें भाग लेनेसे कुछ हो सकता है, यानी यह दिखाअी दे कि हम अपने ध्येयकी तरफ बढ़ सकते हैं, तो ज़रूर सरकारमें घुसना है। अिसका दारमदार अिस बात पर है कि यह विधान किस किस्मका होगा। मगर कांग्रेस बिलकुल छोटेसे अल्पमतमें रह जाय, तो लोगोंको पसन्द हो या न हो, असहयोगके सिवाय दूसरा कोअी अुपाय नहीं।"

वल्लभभाअी: "मेरी भी यही राय है। सरकारी नौकर देहातियोंको जो तकलीफ दे रहे हैं, अुसे भीतर घुसे बिना कम नहीं किया जा सकता। मगर भीतर घुस कर भी कुछ कारगर हो सकें तभी न। सरकारी नौकरियाँ सब गारंटीवाली हों, वेतन कम किये ही न जा सकते हों, और नये कर न लगाये जा सकते हों, तो फिर यह दिवालिया कारबार हाथमें लेकर भी क्या करेंगे?"

शामको . . . मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा: "आप गांधीजीके सामने मुझसे प्रतिज्ञा लिवानेवाले थे, अुसका क्या हुआ?" मैं खुश हुआ और अुसे ले गया। बापूने अपना अत्यंत आनंद व्यक्त करते हुअे अैसे वचन कहे, जो अुसे ज़िन्दगी भर याद रहेंगे: "अपने मनमें निश्चय करके रखनेका कोअी अर्थ नहीं। मनुष्य प्रतिज्ञा करके तोड़ता है, अिसका कारण यह है कि वह अैसा अभिमान रखता है कि वह अुसे अपने ही बल पर पाल सकेगा। जब कि हमारा कोअी बल ही नहीं, वह तो भगवानका ही दिया हुआ है। अुसीके बलसे हम बलवान हैं। यह अेक छोटेसे घडेकी समुद्र बननेकी कोशिश करने जैसी बात है। अिसमें शक नहीं कि घड़ेमें जो पानी है, वह समुद्रके पानीका ही अंश है। मगर हममें वह अंश है और अिसलिअे हमें दिन-दिन शुद्ध होकर अुस महासागरमें मिलना है, यह ज्ञान ही हमें पशुसे अलग करता है। नहीं तो पशु जैसे गुण तो हममें बहुत हैं। जो सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापक है, अुसके बिना हम अपंग हो जायँगे। तू जल्दीमें प्रतिज्ञा न लेना, क्योंकि तुझे फिर कभी

लालचोंमें पड़ना है। मगर कभी अुनके वशमें न होना। अगर तू अीश्वरको मानता हो, तो अीश्वर तुझे बल दे।" फिर अुसे क्रेसवेल या अीसाअी सेवा संघमें जानेकी सलाह दी। . . . में यह चीज़ है, यह पिछले तीन-चार दिनमें मालूम हुआ था और बापूके लिअे तो सत्य-संघ मात्र अपना कुटुम्बी जन है। अिसलिअे अुसे कहा कि, "अब मुझे जब अिच्छा हो, तब पत्र लिखना। और मुझे लिखना है, अिस बातसे भी तेरी प्रतिज्ञाका पालन होगा।"

'बी' क्लासवालोंको २० औंस रोटी मिलती थी, वह बन्द होकर ४ औंस रोटी और १६ औंस चपाती देनेकी योजना हुअी। अिस बारेमें डोअिलको पत्र लिखा।

आज डोअिलने बापूको दफ़्तरमें बुलवाया था। अुनके साथ २० तारीख वाले प्रस्तावके बारेमें खूब चर्चा की। आज भी अुसने कहा: "मैं आपके साथ साधारण आदमीकी तरह ही बात करता हूँ। सरकारकी तरफ़से कोअी बात नहीं करता।" अुसने तीन सवाल अुठाये:

८-९-'३२

१. मंत्रि-मण्डलका प्रस्ताव जातियाँ जब चाहें, तब बदल सकती हैं। बापूने कहा कि यह २० वर्ष तकका वज्रलेख है।

२. जातियोंको समझौते पर पहुँचनेके लिअे सम्बंधित जातिको ही समझौता करना चाहिये या सभीको?

३. आप अगर सुरक्षित स्थानोंके विरुद्ध न हों, तो यह झगड़ा ही किसलिअे होना चाहिये?

बापूने अुसे संतुष्ट कर दिया। वह कहने लगा कि आप मुझे पत्र लिख देंगे, तो ठीक रहेगा। कल अिसपर हम निश्चित चर्चा करेंगे। वैसे आप अुपवास शुरू कर देंगे, तो मेजर भंडारीके बाल सफ़ेद हो जायँगे।

रोटी सम्बंधी पत्रका अुसने दफ़्तरमें ही जवाब दे दिया कि जिसकी रोटीके बिना तबीयत खराब हो, अुसे तो रोटी मिलती ही रहेगी। बापू कहने लगे: "यह सूचना आप हरअेक जेलको भेजिये।" वह बोला: "अैसा नहीं हो सकता। मगर आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि जिसे ज़रूरत होगी, यानी जो माँग करेगा, अुसे ज़रूर मिलेगी।"

अपने मामूली आटेकी रोटी बनानेकी सूचना देनेके लिअे आज बापू बेकरीमें गये। अुसकी रोटी परसोंसे मिलने लगेगी।

मथुरादासको पत्र लिखते हुअे : "व्यायाममें खड़े रहकर धीरे-धीरे प्राणायाम करनेसे आश्चर्यजनक फ़ायदा होता है । यह धीरे-धीरे और क़ायदेसे होना चाहिये । संगीतमें जैसे पद-पद पर समयका ध्यान रखना पड़ता है, वैसे ही प्राणायाममें भी है । श्वासकी गति नियमबद्ध चलनी ही चाहिये । अिसका अभ्यास हो जाने पर फेफड़ोंको बहुत कम काम करना पड़ता है और वे बाहरसे प्राणवायु ज़्यादा खींचते हैं । और जैसे-जैसे प्राणवायु ज़्यादा खींचते हैं, वैसे ही अपानवायु भी ज़्यादा निकालते हैं । यह कसरत थोड़ी-थोड़ी बढ़ाते जाना चाहिये । ठीक ढंगसे होती रहे, तो अुसका लाभ तुरन्त ही मालूम हो जायगा, थकावट कम मालूम होगी, भूख लगेगी, दिमाग शान्त रहेगा और शरीर ठंढा होगा, तो गरम हो जायगा ।

"हाँ, रतिसुखकी आवश्यकता है ही, यह बात मेरा मन स्वीकार नहीं करता । अनुभव अुसकी पुष्टि करता है । कृत्रिम अुपायोंकी नीति स्वीकार करनेमें ही रतिसुखकी योग्यता और आवश्यकता आ जाती है । यह भयंकर वस्तु है । अगर यह नियम सार्वजनिक हो, तो ब्रह्मचर्यको अनावश्यक ही नहीं, हानिकारक भी मानना पड़ेगा । अगर यह माना जाय कि ब्रह्मचर्य हर हालतमें स्तुत्य है, तो फिर कृत्रिम अुपाय पसन्द ही नहीं किये जा सकते । चोरी समाजके लिअे घातक है, फिर भी जैसे वह रहेगी ही, वैसे ही संभव है कि कृत्रिम अुपाय भी रहेंगे । मगर वे अनुचित हैं, अिस मान्यताका वातावरण आवश्यक है । रतिसुख भोगनेवालेको प्रजोत्पत्तिकी जिम्मेदारी भी अपने सिर लेनी ही चाहिये । अिसमें जो दिक़्क़त है, अुसे सहन करना अुचित है । शुद्ध संयमका पाठ अिसीसे सीखा जा सकता है ।"

. . . को लम्बा पत्र लिखा । अुसमें साफ़ लिखा : "आपके पत्रकी भाषामें मुझे कहीं-कहीं कपट भाव दिखाअी देता है । अिसमें मेरी भूल हो, तो धीरजसे मेरी भूल सुधारना । मेरा वहम सही हो, तो आप अपनेको सुधारना । यह आपका डॉक्टरके लिअे किया हुआ श्राद्ध माना जायगा । अीश्वर आपको सन्मति दे । मुझसे यदि अन्याय होता हो, तो मुझे बचायें ।"

९-९-'३२

आज पौने तीन बजे भंडारी प्रधानमंत्रीका पत्र लेकर आये । पत्र लम्बा था और तारसे आया था । अिसमें काफ़ी विनय दिखानेकी कोशिशके साथ मैकडोनल्डके लाक्षणिक ढंगका अेक चुभने वाला वाक्य था । बापूने पत्र पढ़ा और तुरंत बोले : "अिन लोगोंने निश्चय किया दिखता है कि मुझे मरने दिया जाय । बस, लाओ नोटबुक । जवाब लिख डालें ।" जवाब लिखा गया और चार बजे मैंने अुसकी नक़ल तैयार कर दी । सवा चार बजे भंडारी आये और अुसे

ले गये। प्रधानमंत्रीके पत्रके साथ अुसके खानगी मंत्री गुल्डका डोअिलके नाम पत्र था कि यह पत्र खुद पहुँचाना और पत्रव्यवहार प्रकाशित करनेकी अपनी प्रार्थना पर गांधी क़ायम रहते हैं या नहीं, अिसे जानकर मुझे खबर देना। डोअिलको खुद ही पत्र देनेको आना चाहिये था, परन्तु अुसने वह मेजर भंडारीके हाथ पहुँचाया।

प्रार्थनाके बाद रातको बापूने अपना दिया हुआ अुत्तर फिर पढ़ा और कहने लगे: "'आप सही फ़ैसला नहीं कर सकते' वाले वाक्यमें 'अनजान और बाहरके आदमी होनेके कारण' और लिखा होता, तो ठीक रहता। पत्र आज चला गया, अिसलिअे बापू खुश हो गये और हम सबको अैसा लगा कि कल ही सब कुछ छप जाय, तो अच्छा हो।

पत्र भेजनेके बाद बापू कहने लगे: "वाअिसरॉयका भाषण हुआ, अुदार दलवालोंका सहयोग ले लिया और फिर यह जवाब भेजा। यह सब जान-बूझकर किया है।"

वल्लभभाअीने भी भोजन करके आने पर यही बात कही।

वल्लभभाअी बोले: "सारी चीज़में बड़ी भारी चाल है। थोड़े-बहुत अछूतोंको रखकर अुनके जरिये राज करेंगे। और अुतनोंको खास प्रतिनिधित्व दे दिया, तो दूसरे हिन्दू निर्वाचक-मंडलमेंसे आ नहीं सकेंगे। अिस तरह वे यह बता सकेंगे कि देखो, साम्प्रदायिक निर्वाचक-मण्डलकी कैसी ज़रूरत थी?"

बापू कहने लगे: "यह तो तुमने अिसका राजनीतिक पहलू बताया। मगर अिसके नैतिक पहलूका तो अिन लोगोंको पता ही क्या हो सकता है? गुजरातके गाँवोंमें कहीं-कहीं अंत्यज छिपे पड़े हैं और दक्षिणमें 'अगम्य' (unapproachables) और 'अदृश्य' (invisibles) मौजूद हैं, अिसकी मैकडोनल्डको कहाँसे खबर होगी? अिन सबका कचूमर निकल जायगा। और यह पृथक् निर्वाचनकी घुन हिन्दू समाजको लगी कि हिन्दू समाजका सफाया हुआ। मुझे अिस चीज़के नैतिक परिणाम ज़्यादासे ज़्यादा खटकते हैं। सिर्फ राजनीतिक मामला हो, तो मैं जीवन देनेको तैयार न होअूँ। मगर हिन्दू समाजमें यह विष जो घुसेड़ना चाहते हैं, अुसके खिलाफ़ ही मैं प्राण देनेको तैयार हुआ हूँ। अुन्हें तो हिन्दू समाज-सुधारकोंका काँटा ही निकाल डालना है। हम क्या मर गये हैं? हम अिन लोगोंको न्याय दिलावेंगे। मगर ये तो अंत्यजोंको डोंडी पीट-पीट कर कहते हैं कि तुम अिन लोगों पर विश्वास न रखो, मुसलमानों पर रखो और गुंडों पर रखो। अिसलिअे मुसलमान अंत्यजोंको लेकर मंदिरों पर हमले करेंगे, अुन्हें जला देंगे और जो कुछ करना होगा सो करेंगे।"

आज सुबह बापूने मेजर भंडारीके सामने कलकी ही नैतिक पहलू वाले मामलेकी चर्चा सुनाअी। अिस बेचारेको बड़ी चिन्ता

१०-९-'३२

हो गअी है। अुसने कहा: "मेरे बाल तो अभीसे सफेद होने लगे हैं। क्या कुछ भी नहीं हो सकता?"

बापू कहने लगे: "बहुत कुछ हो सकता है। अुन्हें झुकना ही चाहिये, अैसी कोअी बात नहीं। हो सकता है कि अंत्यज कल अिकट्ठे होकर समझौता कर लें और संयुक्त निर्वाचन माँगें। मगर ये तो खुशीसे कह सकते हैं कि दूसरोंकी सम्मति कहाँ है? और अंग्रेज़ ही कहेंगे कि हमारी सम्मति नहीं है। तो ठीक है। मेरे मरनेसे हिन्दू समाज जाग्रत होगा। अितना ही नहीं, मेरे मरनेके साथ ही यह विधान भी मर जायगा। हिन्दू समाज जाग्रत हो जाय, तो सैकड़ों आदमी अैसे निकल आयँगे, जो अिस विधानको चलने ही नहीं देंगे। आज तो अिस निर्णयमें अंत्यजोंके अीसाअी या मुसलमान बननेका मसाला भरा है। आंबेडकरमें न धर्म है, न हिन्दुत्व। अिसलिअे दूसरे अुन्हें जिस तरह नचाते हैं, वैसे ही वे नाचते हैं।"

बापूको अब सपने आने लगे हैं — ज़्यादातर अुपवासके। अुस दिन अुनके पिताजीका स्वप्न आया था। कल रातको दो बजे वे अिस

११-९-'३२

विचारमें पड़े हुअे थे कि अगले हफ़्ते क्या-क्या करना है। अुसमें अेक बात यह थी कि महादेवसे रोटी बनाना सीख लेनेको कहा जाय। और आज सुबह ही मैंने कहा: "बापू मुझे रोटी बनाना सीखना है।" अिस पर बापूने कहा: "मुझे और तुम्हें यह विचार अेक ही समय आया होना चाहिये, क्योंकि मैंने रातको दो बजे यह विचार किया था। फिर मुझे लगा कि यह बोझ ज़्यादा हो जायगा, अिसलिअे विचार छोड़ दिया।"

अिस बार डाक भी खूब लिखी। वल्लभभाअी बोले: "अब लम्बी डाक लिखना छोड़ दीजिये।" बापू बोले: "अरे! वल्लभभाअी, अिस बार तो लम्बी लिखे बिना कैसे काम चलेगा? अब किसे पता कितनी लिखी जायगी।"

आजकी आश्रमकी डाकके पत्रोंमें भविष्यकी ध्वनि गूँज रही है। बबलभाअीको लिखे पत्रमें: "अमुक काम करना अच्छा है, यह निश्चय हो जानेके बाद अुसे करनेमें अेक क्षण भी न रुकना चाहिये, क्योंकि सिर पर मौत लटक रही है। अिसलिअे अच्छे कामके आरम्भमें देर करनेसे सारा सौदा ही रह जाता है; क्योंकि जीव देह छोड़ता है, तब आरम्भोंको साथ ले जाता है। अमल न

होनेवाले विचार तो अुसके नामे लिखे जाते हैं। मान लो, रेलमें जाते समय मैंने साथमें पाँच रुपये ले जानेका विचार किया, मगर आलस्यके मारे नहीं लिये। गाड़ीमें बैठा। विचारोंको तो मैं भुना नहीं सकता। और वे मेरे दिमाग पर बोझ बनकर मुझे कुरेदते रहेंगे।

"प्रार्थनामें बैठकर भी जो भजनादिमें भाग नहीं लेता, वह असत्य आचरण करता है।"

दूसरे पत्रमें: "किये हुअे कामका मूल्य है। आचरण रहित विचार कितने ही अच्छे क्यों न हों, तो भी अुन्हें खोटे मोतीकी तरह समझना चाहिये।"

"अपने पड़ोसीके हमेशा गुण देखने चाहियें, अपने सदा दोष देखने चाहियें। तुलसीदास जैसे भी अन्तमें अपनेको कुटिल कहते हैं।"

अीश्वरत्व, कर्म, प्रारब्ध, भक्ति वग़ैराके अनादि प्रश्न पूछनेवालोंको भी बहुतसे जवाब दिये (हिन्दीमें): "परमेश्वर और प्रकृति अेक ही वस्तु है। देवता परमेश्वरकी अेक-अेक शक्ति है। अुसकी अुपासनासे भी अन्तमें परमेश्वर तक पहुँचा जा सकता है।"

"कर्म प्राधान्यका वर्णन करके तुलसीदासजीने अीश्वरी न्यायकी प्रशंसा की है। भक्तके पापोंको भगवान क्षमा करता है। शास्त्रकी भाषामें अिसका अर्थ यह है कि भक्त जब भगवानमें लीन हो जाता है, तब शुद्ध होता है। शुद्ध होना पापका क्षय ही है, जैसे सुवर्णमेंसे कुधातुका निकलना . . .।"

"सन्त पुरुषके लिअे अेकान्तमें रहकर विचारमात्रसे भी सेवा कर सकना सम्भव है। अैसा लाखोंमें अेक निकल सकता है।"

"शरीरका अस्तित्व पूर्ण अहिंसाका विरोधी है। पूर्ण अहिंसाके बिना सत्यका साक्षात्कार असम्भव है। लेकिन जो निर्विकार हुआ है, वह बहुत नज़दीक जाता है। अुतना काफ़ी होना चाहिये।"

"दंडका अर्थ आज तक मैंने शरीर-दण्ड समझा है। भोजनादिक बन्द करना मेरी कल्पनाके बाहर नहीं है। अुसे मैं दण्ड नहीं कहूँगा। भोजनका स्वतंत्र अधिकार किसी संस्थामें किसीको नहीं है। समझौतेकी बात है। अेक तरफसे नियम पालनकी शर्त है, दूसरी तरफसे भोजनादिक देनेकी। संस्थामें भोजनका बदला पैसा ही नहीं, परन्तु नियमपालन है।"

"भय और सत्य विरोधी वस्तु हैं। परन्तु जिसमें भयका अंश भी नहीं है, अुसे छिपाना सत्यका अविरोधी और आवश्यक हो सकता है। दर्दीके स्वास्थ्यके लिअे वैद्य अवश्य भयानक व्याधिकी बात छिपा सकता है, छिपानेका धर्म भी हो सकता है।"

“सब अिन्द्रियाँ जिसके वशमें हैं, वह पूर्ण ब्रह्मचारी है। यह स्थिति शरीर रहते हुअे सम्भवित है। खुराकका संयम आवश्यक है। ब्रह्मचर्य पालनमें अुसका हिस्सा कम है। असंयम अवश्य घातक है। दूध-घी औषधकी मात्रामें लेनेसे हानिकर नहीं हैं, अैसी कुछ मेरी प्रतीति है।”

(गुजरातीमें): “मूर्तिपूजा और आश्रममें मन्दिर और मूर्ति स्थापनाके बारेमें मेरे विचार बन चुके हैं। अपने बारेमें मैंने कहा है कि मैं मूर्तिपूजक और मूर्तिभंजक दोनों हूँ। शरीरधारीकी कल्पनाका अीश्वर मूर्तिमान होगा ही। वह मूर्तिभावसे अुसकी कल्पनामें बसता भी ज़रूर है। अिस प्रकार मैं मूर्तिपूजक हूँ। मगर अेक भी रूपको — आकृतिको — परमेश्वरके रूपमें पूजनेकी मेरे मनने कभी हाँ नहीं की है। वहाँ मेरे मनमें ‘नेति नेति’ होता है। अिसलिअे मैंने अपने आपको मूर्तिभंजक माना है। अिस तरहके विचारके बारेमें मेरे मनमें हमेशा यह रहा है कि हम आश्रममें मन्दिर न बनायें। अिसीलिअे प्रार्थनाके लिअे भी मकान नहीं बनाया गया। आकाशकी छत और दिशाओंकी दीवार बनाकर हम अुसमें बैठ गये। अगर सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना हो, तो हमारी यही स्थिति होनी चाहिये। आजकल वेदादिमें चंचुपात कर रहा हूँ। वहाँ भी यही देख रहा हूँ। कहीं भी मूर्तिके लिअे स्थान नहीं देखता। फिर भी हिन्दूधर्ममें मूर्तिके लिअे स्थान है, अिसलिअे हम अुसका द्रोह न करें। अुसकी पूजा आवश्यक नहीं, अैच्छिक है। अिसलिअे मुझे लगता है कि हम समाजके रूपमें मन्दिरसे अलग रहें, तो अच्छा। आश्रममें जिस स्थानको मैंने समाधि माना है, वह मन्दिर हो, तो भी हम अुसे सार्वजनिक संस्था न बनायें। ज़मीनका मालिक अुसे गिराकर अींटें ले जाना चाहता था, तब रुपया देकर अुस स्थानको बचाया। मगर अुसे मन्दिर बनानेकी मेरी अिच्छा नहीं होती।”

व्रजकृष्णको नमक लेने न लेनेके गुण-अवगुणके बारेमें लम्बा पत्र लिखा और आश्रम सम्बन्धी आक्षेपों पर विचार ज़ाहिर किये (हिन्दीमें):

“सही है कि आश्रमके लोग जैसे होने चाहिये, वैसे नहीं हैं। अुनमें काफी दोष भरे हैं। अिसलिअे लोगोंको आश्रमवासियोंकी टीका और निन्दा करनेका अधिकार है और आश्रमियोंको अुसे बरदाश्त करना चाहिये। तुम्हारे मन पर भी कुछ अैसा ही असर हुआ है, अुसका मुझे आश्चर्य नहीं है। क्योंकि अैसा है ही। लेकिन अैसा होते हुअे भी परिणाम बुरा नहीं है, अैसा मेरा विश्वास है। आश्रममें रहनेवालोंने कुछ न कुछ अुन्नति की है। बात यह है कि करनेका बाकी बहुत है, हुआ है कम। और अैसा ही हो सकता था। और आश्रमवासी किसको कहा जाय? तुमने यदि अिस बारेमें नारणदाससे बात नहीं की है, तो दिल खोल कर सब बात करो। अुसकी सुनो। नारणदाससे

बढ़कर कोअी आदमी अितना ही दृढ़, विवेकी, समझदार और कर्तव्य-परायण मुझको मिलनेकी कोअी अुम्मीद नहीं है। और नारणदास मिला है, अुसको मैं अीश्वरका अनुग्रह मानता हूँ। आश्रमके लोग व्याधिमुक्त नहीं हैं, यह सत्य है। अितना है कि आश्रममे आकर वे बीमार नहीं पड़ते, बीमारी लेकर आते हैं। बात यह है कि अपूर्णतामेंसे पूर्णता पैदा करनेका वे प्रयत्न करते हैं। अीश्वर-आज्ञा है कि प्रयत्न करते-करते मर जाओ, फलका स्वामी मैं हूँ। अिसलिअे यदि अितना कहा जा सकता है कि आश्रममें प्रयत्नमें मंदता नहीं है, तो मुझे संतोष होगा। मैं तो यह भी कबूल कर लूँगा कि प्रयत्नमें भी सुधारणाकी गुंजाअिश है।"

. . . . के पत्रमें विकारकी बढ़िया व्याख्या दी: "तू लिखती है कि तेरा मन ठिकाने नहीं, अिसलिअे पत्र नहीं लिखेगी। यह भी विकारकी निशानी है। विकारका अर्थ अच्छी तरह समझनेकी ज़रूरत है। क्रोध करना भी अेक विकार ही है। मनमें अनेक प्रकारकी अिच्छाअें होते रहना भी विकार है। अिसलिअे यह पहनूँ, यह ओढ़ूँ, यह खाअूँ, यह न खाअूँ, यह विकार है; और विवाहकी अिच्छा हो या विवाहकी अिच्छा हुअे बिना बराबरके लड़कोंका संग अच्छा लगे, अुनके साथ गुप्त बातें अच्छी लगें, अुन्हें छूना अच्छा लगे, अुनके साथ दिल्लगी करना अच्छा लगे, तो यह भी विकार है। यह आखिरी विकार अेक भयंकर विकार माना जाता है। लेकिन अिनमेंसे कोअी भी विकार जब तक होता है, तब तक स्त्रीको मासिक धर्म होगा और पुरुषको मासिक धर्म नहीं तो दूसरा कुछ होता ही है। अिस अर्थमें मीराबहन भी विकार-रहित नहीं कही जा सकती। अिसीसे अुसे अभी तक मासिक धर्म होता है। अिसमें वह कोअी पाप नहीं करती। वह तो बहुत अूँची पहुँच गअी है। वह अपने तमाम विकारोंको दूर करनेके लिअे लड़ रही है। पुरुष संग रूपी अिच्छाका विकार तो अुसमेंसे साफ़ चला गया है। मगर अुसमें क्रोध है, राग है, अनेक अिच्छाअें हैं। अिन सबको भी रोकनेकी वह कोशिश करती है। मैंने जिस विकार-रहित स्थितिका वर्णन किया है, वहाँ तक जो पहुँच जाय, अुस स्त्रीको मासिक धर्म हो ही नहीं सकता। अुस स्थितिको पहुँचनेकी तुम सब लड़कियाँ कोशिश करो, तो मुझे अच्छा लगे। संभव है अिस जन्ममें सफलता न मिले, तो भी क्या? प्रथम पाठ यह है कि कुछ छिपा कर न रखा जाय। किसीके साथ गुप्त सम्बन्ध न रखा जाय। सत्यव्रत पर अडिग रहा जाय।"

नारणदासको ४७वें जन्म-दिन पर अपने अक्षरोंमें प्रेमसे छलकता हुआ यह आशीर्वाद भेजा: "तुम्हें मेरा आशीर्वाद अंजलियाँ भर-भर कर है।

क्यों न भेजूँ ? मेरी सारी आशाअें तुम सफल कर रहे हो और अपनी अनन्य और ज्ञानमय सेवासे हम तीनोंको ही आश्चर्यचकित कर रहे हो। सारी अग्नि-परीक्षाओंमेंसे पार अुतरनेकी शक्ति अीश्वरने तुम्हें बख्शी मालूम होती है। खूब जीओ और अहिंसादेवीके ज़रिये सत्यनारायणका साक्षात्कार करो और दूसरोंके करनेमें सहायक बनो।"

प्रेमाके नाम बड़ा लम्बा पत्र लिखा। अिसमें अुसके बारेमें अपना विश्वास और बड़ी-बड़ी आशायें बताओीं और अनेक प्रश्नोंके अुत्तर दिये: "किसी व्यक्ति या समाजकी अवनतिका कारण सचमुच ढूँढा गया है, अैसा नहीं जान पड़ता। अनुमान तो बहुत होते हैं, तात्कालिक कारण मिल भी जाते हैं; और वे हमेशा अेक ही नहीं होते। मगर आम तौर पर यह ज़रूर कहा जा सकता है कि अवनतिके मूलमें धार्मिक न्यूनता होती ही है। पारतंत्र्य कभी अिसका मूल कारण नहीं हो सकता, क्योंकि वह खुद दूसरे कारणोंका, कमज़ोरियोंका, परिणाम होता है।

"अहंकारका बीज शून्यता अनुभव करनेसे ही जाता है। अेक भी क्षण कोअी गहरा विचार करे, तो अुसे अपनी अति तुच्छता मालूम हुअे बिना रह ही नहीं सकती। पृथ्वीके आगे जैसे हम जंतुओंको तुच्छ मानते हैं, अुससे करोड़ों गुनी बड़ी मात्रामें अिस जगत्के आगे मनुष्यप्राणी तुच्छ है। अुसमें बुद्धि है, अिससे कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ता। अुसकी महिमा अपनी तुच्छता अनुभव करनेमें ही है। क्योंकि अिस अनुभवके साथ ही यह दूसरा ज्ञान पैदा होता है कि जैसा वह अपने आपमें तुच्छ है, वैसा वह भगवानका तुच्छतम अंश होनेके कारण जब भगवानमें अुसका लय होता है, तब वह भगवानरूप है, और अिस सूक्ष्म अणुमें भगवानकी शक्ति भरी है।

"मायावादको मैं अपने ढंगसे मानता हूँ। कालचक्रमें यह जगत् माया है। लेकिन जिस क्षण तक अुसकी हस्ती है, अुस क्षण तक तो वह है ही। मैं अनेकान्त-वादको मानता हूँ। अगर कोअी भी वस्तु मनुष्यके लिअे प्रत्यक्ष है, तो वह मृत्यु ही है। अितना होने पर भी अिस अनिवार्य प्रत्यक्ष वस्तुका बड़ा डर लगता है। यही आश्चर्य है, यही ममता है, यही नास्तिकता है; अुससे पार अुतरनेका धर्म अकेले मनुष्यको ही लभ्य है।

"पाप-पुण्य मृत्युके बाद भी जीवके साथ ही जाते हैं। जीव जीवरूपमें अुन्हें भोगता है। फिर वह दूसरे दृश्य शरीरमें हो या सूक्ष्म शरीरमें, अिसमें हर्ज़ नहीं।"

आजकी वल्लभभाओीकी दिल्लगी: "लिख-पढ़ कर कौन अमर हुआ है? मार कर या मर कर अमर होते हैं।"

१२-९-'३२ आज 'टाअिम्स'में अनशन सम्बन्धी पत्र-व्यवहारके आनेकी राह देख रहे थे, मगर नहीं आया। शामको कटेलीने अेकाअेक आकर कहा: "महादेव देसाअीसे काम है। चलिये।" मैं गया। दरवाज़ेके बाहर मुझसे कहने लगा कि कुछ लड़के अुपवास कर रहे हैं, आप अुन्हें समझाअिये। अेक जवान कर्नाटकीके साथ मुझे मिलाया गया। अेक सिपाहीने तीन जनोंको मारा था, अुसकी शिकायत सुपरिण्टेण्डेण्टके पास गअी थी। अुसने अुस सिपाहीको सजा दी थी, और अिस चक्करमेंसे अुसे निकाल दिया था। मगर अिन लोगोंके टिकटों पर लिख दिया: 'अनुशासन-भंगके लिअे चेतावनी दी गअी।' अिस टिप्पणी पर अिन लोगोंने अुपवास किया था। मैंने कहा: "भले मानुसो, अैसी जरासी बातके खिलाफ़ भी कोअी अुपवास करते हैं? अैसा तो होता ही रहता है। अुपवासके कड़े प्रसंग होते हैं और जेलमें अुनकी कमी नहीं।" मगर वे क्यों मानने लगे? अुन्हें तो वह टिप्पणी रद्द करानी थी। हमारी ही शिकायत और हमारे ही विरुद्ध टिप्पणी कैसी? अुनकी बात सही थी। कटेलीने लौटते समय मुझे कहा कि यह सब अुनकी गैरमौजूदगीमें हुआ। नहीं तो कुछ भी न होता।

बापूके पास आकर मैंने सब बातें कहीं। बापूने कहा: "तुम्हें वापस आना चाहिये था और कहना चाहिये था कि बापूसे मिले बिना मैं अुनके पास नहीं जाअँगा। मुझे बापूकी आज्ञा और सूचना लेकर जाना चाहिये। बापूसे कहे बिना आप मुझे ले जा रहे हैं, यह ठीक नहीं। अब आगे जब कभी अैसा हो, तो यही करना। यह बात ठीक है कि सुपरिण्टेण्डेण्टने तुम्हींको ले जानेकी सूचना दी होगी, परन्तु कटेलीका फ़र्ज था कि मुझे सब कुछ सुनानेके बाद तुम्हें ले जाता। वैसे तुमने जो कहा, सो तो ठीक ही था। अैसी टिप्पणीके विरोधमें भी कोअी अुपवास होता होगा? अैसे प्रसंगों पर मुझे फिरोज़शाह मेहताकी दी हुअी सलाह याद आया करती है। पोलिटिकल अेजण्टने जब मेरा अपमान किया था, तब अुन्होंने कहा था: 'अरे, अैसी तो बहुतसी बातें पी जानी पड़ेंगी। अुन्हें जमा करके अुन पर कुढ़ते रहनेसे क्या हाथ लगेगा'?"

१३-९-'३२ आज सुबह भी वह पत्र-व्यवहार नहीं आया। मगर 'टाअिम्स'में अेक छोटासा लेख आया, जिसमें खासी साफ़ सूचना थी कि सांप्रदायिक निर्णयकी आलोचना करनेके बजाय सर्वसम्मत निराकरण अभी तक क्यों नहीं किया जाता? यह बात सच है कि दलित वर्गोंको हिन्दुओंसे अलग करनेसे हिन्दू धर्मके टुकड़े होते हैं, मगर अिसके लिअे गांधी ज़िम्मेदार हैं। क्योंकि जब अुन्होंने अिन लोगोंके लिअे सुरक्षित स्थान

देनेसे भी अिनकार कर दिया, तब आंबेडकरके लिअे यह पृथक् निर्वाचनकी माँग करना अनिवार्य हो गया। अब भी आंबेडकर और दूसरे लोग समझ जायँ और सुरक्षित स्थान मंजूर कर लें, तो पृथक् निर्वाचन रद्द हो जाय, वगैरा। हमें यह अुन लोगों (सरकार) की तरफ़से प्रेरित मालूम हुआ और अैसा लगा कि अब पत्र-व्यवहार नहीं छपेगा। मगर अैसी कुछ न कुछ योजना बनाकर रख देंगे, और पत्र-व्यवहारको दबा देंगे।

मगर शामको चार बजे मेज़रने आकर अेण्ड्रूज़का तार दिया, तब हमारा भ्रम दूर हुआ। अेण्ड्रूज़का तार यह था: 'मैं आअूँ, तब तक अुपवास मुल्तवी रखो। तुरंत रवाना हो रहा हूँ।'

मेज़र कह गये कि आपको जो जवाब देना हो, वह मुझे किसी भी समय भेज दीजिये। मुझे सरकारको बताना पड़ेगा। मगर मैं जहाँ होअूँ, वहीं मेरे पास भेजनेकी सूचना दे जाता हूँ। बापूने कहा: "शायद कल जवाब दूँगा।" मगर मेज़र तो व्यवस्था करके चले गये। अुनके जानेके बाद तुरंत बापूने कहा: "महादेव, लाओ कागज और अेण्ड्रूज़को जवाब भेज दो।" जवाब अिस आशयका लिखवाया:

"तार मिला। अुपवासका विचार अीश्वरके आदेशके अनुसार है। अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचन रद्द होना निश्चित हो, तभी अुपवास मुल्तवी हो सकता है। मेरी रायमें तुम्हारा वहाँ रहना ज़्यादा अुपयोगी होगा। वल्लभभाअी और महादेव सहमत हैं।"

शामको घूमते हुअे बापू कहने लगे: "अेण्ड्रूज़की आध्यात्मिकता अैसे वक़्त कहाँ चली जाती है, यह पता नहीं चलता। अुनकी तरफ़से अैसी माँग ही कैसे हो सकती है? अुनके मना करनेसे मैं अुपवास छोड़ दूँ, तो फिर मेरे वचनका मूल्य क्या रहे? भविष्यमें मैं कुछ भी कहूँ, तो लोग कहेंगे: 'अरे, यह तो अुस अुपवासकी तरह होगा'। वे अभी तक मेरा स्वभाव नहीं जानते होंगे?"

रातको चार पत्र लिखाये: नारणदासभाअी, रामदास, देवदास और बा को।

नारणदासभाअीको:

"मेरे अनशनकी खबर अखबारमें देखी होगी। कोअी भी घबराये न होंगे, यह मैं मान लेता हूँ। अगर समझें, तो हर आश्रमवासीके लिअे यह अुत्सवका अवसर होना चाहिये। अनशन तो आश्रमकी कल्पनामें आखिरी और अुत्तम वस्तु है। अिसका अधिकार किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। शुद्ध अनशन रोज़ नहीं किये जाते। किसी समय किसी-किसीको ही अिसका अधिकार होता है। अपने लिअे मैंने अिस बार यह अधिकार मान लिया है। अिसमें मेरी भूल होगी, तो वह मिथ्याभिमान गिनी जायगी और यह आसुरी तप माना

जायगा । अन्तर्नाद साफ़ तौर पर सुनाअी दे सके, अैसा अन्तःकरणको शुद्ध करनेके लिअे लगभग आधी शताब्दीका मेरा अविच्छिन्न प्रयत्न रहा है । अिस प्रयत्नके लिअे अन्तर्नादके अधीन होकर यह क़दम अुठाया है। २० तारीख तो अभी दूर है । अभी तो संकल्प मात्र है। यह पत्र सिर्फ़ यह चीज़ समझानेके लिअे और अिस सूचनाके लिअे ही लिखा है कि वहाँ कोअी घबराहटमें न पड़ें, बल्कि यह सुनकर अधिक कर्त्तव्य-परायण, अधिक शुद्ध और अधिक जाग्रत हों। तुम खुद तो समझ गये होगे कि वहाँ अिस अुपवासका अनुकरण करनेकी बात किसीके लिअे नहीं हो सकती । दूसरोंको भी समझाना । मैंने अपनी अनशनकी अिच्छा छिपाकर रखी और हम तीनके सिवाय और किसीके कानों तक न जाने दी, अिससे किसीको हरगिज़ आश्चर्य न होगा । जेलका तो यह क़ानून ही है कि अैसे पत्रोंकी बात प्रकाशित ही न करनी चाहिये । और मैं अनुचित रूपमें प्रकाशित करनेकी अिच्छा भी करूँ, तो मेरा सत्याग्रह लज्जित हो और अिस व्रतकी शुद्धतामें बड़ा कलंक लगे । अिस व्रतका मूल्य अुसकी पूर्ण शुद्धतामें ही है। ”

मोहनलाल भट्टको* : “ मैं यह मानता हूँ कि यह मेरा परम धर्म है । अिसलिअे रामदास या तुम कोअी ज़रा भी खिन्न न होना, बल्कि सब प्रसन्न होना और अीश्वरका अनुग्रह मानना कि तुम्हारे अेक साथीको अन्तिम धर्मपालन करनेकी सूझी है और अुसे अिसका अवसर मिला है। यह तो सभी समझ सकते होंगे कि अिसका अनुकरण नहीं करना चाहिये । अनशनका अधिकार सभीको नहीं होता । और अधिकारके बिना जो करते हैं, अुनका तप अशास्त्रविहित और आसुरी है । अिसलिअे अुनके पल्ले निरे कष्टके सिवाय और कुछ पड़ता ही नहीं । अिसलिअे मेरे अनशनके विषयमें तुम सबका धर्म कुछ भी विचार या चिन्ताके बिना ज़्यादा कर्त्तव्य-परायण बनना, ज़्यादा शुद्ध बनना और ज़्यादा जाग्रत रहना है । . . . वहाँ किसी भी तरहकी खलबली न होनी चाहिये । यह निश्चित समझना कि अंदर रहनेवालोंके लिअे मैंने जो अूपर लिखा है, अुसके सिवाय दूसरा कर्त्तव्य है ही नहीं । ”

देवदासको : “ अनशनकी डोंडी पिट गअी । मैं मान लेता हूँ कि तू बिलकुल घबराहटमें न पड़ा होगा । अैसा अपूर्व अवसर किसीको माँगे नहीं मिलता । यह तो कभी-कभी और किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। मैं मानता हूँ कि वह मुझे मिला है; और जो अैसा मानता है, वह अुसका स्वागत करेगा । अिसलिअे अुद्वेगका कोअी कारण नहीं। घनश्यामदाससे कलकत्तेमें मिले, तो यह समझाना । मालवीयजीको समझानेकी कोअी बात ही नहीं । मैं यह

* यह पत्र रामदास व मोहनलाल भट्ट दोनोंके लिअे है । वे दोनों जेलमें साथ-साथ रखे गये थे ।

मानता हूँ कि वे तो हर्षके आँसू बहाते होंगे और अुनके हृदयसे पल-पलमें मेरे लिअे आशीर्वादके अुद्‌गार निकलते होंगे। अितना तू अुनसे कहना और दूसरे स्नेही खिन्न हों, तो खुद बहादुर बनकर तू अुन लोगोंको खिन्न होनेसे रोकना। दूसरे अगर समझें, तो अुनका धर्म तो अधिक कर्त्तव्य-परायण होना, लोक-जाग्रति करना और लोकमत अिकट्ठा करना है। और शान्त, किन्तु प्रचंड लोकमत अिकट्ठा हो जाय, तो शायद मुझे अन्त तकका अुपवास करना भी न पड़े। जहाँ तक मैं अपनेको समझ सकता हूँ, अुसके अनुसार मुझे अैसा करना पड़े, तो अिसमें परम शान्ति ही है। और अधूरा रहे और अिस देहके द्वारा अभी और सेवा करनी बाकी होगी, तो भी स्वागत करूँगा। मेरा मन आखिर तक स्थिर रहे, तो दोनों ही दृष्टिसे अच्छा है।"

अुस दिन भी मोहनलाल भट्टको जेलियोंके सवालके जवाबमें लिखा था : "पुनर्जन्मका अर्थ है शरीरका रूपान्तर, आत्माका — शरीरीका — नहीं। अिसलिअे वैज्ञानिक मान्यतासे पुनर्जन्म अलग चीज़ है। आत्माका रूपान्तर नहीं, बल्कि स्थानांतर होता है। अपनेको कर्ता न माननेवालेके हाथसे किसीकी मौत होती ही नहीं। कर्तापन मानना न मानना यह बुद्धिका विषय नहीं, हृदयका विषय है। अिसलिअे सच पूछा जाय, तो 'कर्ता न मानकर' और 'अीश्वरार्पण करके'— यह प्रयोग ही ग़लत है। क्योंकि यह बुद्धिका प्रयोग हुआ। और गीतामें या दूसरे शास्त्रोंमें अीश्वरार्पणताके जो वचन आते हैं, अुनका बुद्धिके साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं। मैं जिस तरह वेदान्तको समझता हूँ, अुस तरह तो अिसका हमारे कार्यके साथ अच्छी तरह मेल बैठता है।"

बा को लिखा : "तेरा पत्र मिल गया। तूने शायद मेरे अुपवासकी बात सुनी होगी। अिससे तू ज़रा भी न घबराना, और न दूसरी बहनोंको घबराने देना। तुझे तो हर्ष ही होना चाहिये कि अीश्वरने मुझे अैसा कठिन धर्म-पालन करनेका अवसर दिया है। अिस अुपवासका अर्थ भी तू समझी होगी। अन्त्यज भाअियोंके बारेमें मैंने जो माँग की है, वह मंजूर हो जाय, तो मेरे लिअे अुपवास करनेकी बात नहीं रह जाती; और अुपवास शुरू हो गया हो, तो वह बन्द भी किया जा सकता है। लेकिन अन्त तक पूरा करना पड़े, तो अीश्वरकी कृपा ही माननी चाहिये। माँगी हुअी मौत करोड़ोंमें किसी-किसीको ही मिलती है। अैसी मौत मुझे मिले, तो कितनी अच्छी मानी जाय? और यह तो दीयेकी तरह स्पष्ट है कि मौत न मिले, तो और भी ज़्यादा शुद्ध होना और ज़्यादा सेवा करना मेरा धर्म हो जायगा। मैं मानता हूँ कि मेरे साथके पचास वर्षके सहवासके बाद अितनी आसान बात तो तू अच्छी तरह समझ ही जायगी और बरदाश्त कर सकेगी।"

शामको घूमते हुअे बोले : “हॉर्निमेन समझनेकी शक्ति रखता है, अिसलिअे सारा लेख बढ़िया लिखा है। लोकजाग्रति हो और २० तारीखसे पहले अिस मामलेका निपटारा हो जाय, तब तो सत्याग्रहकी अपूर्व विजय हो और हिन्दुस्तान कितना ही अूँचा अुठ जाय।”

१४-९-’३२

आज सुबह घूमते समय मैंने कहा : “आम्बेडकरको आपके पत्रका पता विलायतमें ही चल गया हो और वह बँध गया हो, तब तो अुसका मानना कठिन है।”

बापू : “हां, मगर यह मानना चाहिये कि अुसे विलायतमें खबर नहीं लगी होगी। अुसे खबर लग गअी हो, तो सेम्युअल होर पर भारी नीचताका आरोप लगाना चाहिये। वह लगानेको मैं तैयार नहीं। और अैसा ही हो, तो अुसका खुद अपने मनमें भी कोअी मूल्य न रहे। जो कुछ होगा, सब सामने आ जायगा।”

आम्बेडकर प्रच्छन्न मुसलमान है या क्या है! अुसमें हिन्दुत्व है ही नहीं। फिर भी कअी तरफ़से दबाव पड़े, तो वह सुन लेगा। देखिये, आजके अपने वक्तव्यमें वह अैसी बातें करता है, जैसे अस्पृश्य हिन्दुओंसे अलग ही जातिके हों।

आजकी डाकमें पहला ही मानो मंगल चिन्हके रूपमें श्रीमती कामकोटी नटराजनका पत्र आया : “आज सुबहके अखबारोंमें मैंने पढ़ा कि आपने अपने देशबन्धुओं और अपनी मातृभूमिके लिअे अुपवास करके अपने जीवनका बलिदान करनेका निश्चय किया है। यह पढ़कर बड़ा दुःख हुआ। मैं तो रोया करती हूँ और यह भी नहीं सूझता कि आपसे क्या कहूँ। आपकी और पिताजीकी तरह मुझे प्रार्थनामें श्रद्धा नहीं है। मगर मैं आशा रखती हूँ कि हमारे लोगोंमें अितनी बुद्धि ज़रूर है कि वे आपके अिस महान बलिदानको अनावश्यक बना देंगे। मेरे अन्तरकी यह तीव्र अभिलाषा है कि आप हमें स्वराज्यके रास्ते पर ले चलनेके लिअे बहुत-बहुत वर्षों तक जीयें।”

अुसे बापूने जवाब दिया :

“प्रिय कामकोटी,

“तुम्हारा बहुत ही कोमल और भावभरा पत्र मिला। अन्तरकी आवाज़का आदर करके मैंने जिस अग्नि-प्रवेशका निश्चय किया है, अुसके लिअे दुःखी होनेकी बात हो ही नहीं सकती। अैसा अवसर तो किसी विरलेको ही मिलता है। हमारे अन्त्यज भाअी-बहनोंके साथ मैंने पचास बरससे अेकता साधी है। अिस कारण मेरे लिअे दूसरा कोअी अुपाय ही नहीं है। फिर भी अीश्वरको अिस शरीरके ज़रिये मुझसे ज़्यादा सेवा लेनी होगी, तो वह मेरा मार्ग सरल कर देगा।

" और प्रार्थनामें तुम्हारा विश्वास क्यों नहीं? विश्वास या तो प्राप्त किया जाता है या अन्दरसे पैदा होता है। हरअेक देशमें और हरअेक कालमें जो सन्त और ऋषि-मुनि हो गये हैं, अुन्होंने निरपवाद रूपसे जिस बातकी गवाही दी है, अुससे तुम्हें यह विश्वास मिलना चाहिये। सच्ची प्रार्थना केवल मुँहके वचनोंसे नहीं होती। वह कभी झूठी नहीं पड़ती। निःस्वार्थ सेवा भी प्रार्थना ही है। तुम्हें यह तो हरगिज़ न कहना चाहिये कि 'मुझे प्रार्थनामें श्रद्धा नहीं।'"

आज शामको कहने लगे: "कुछ भी हो, यानी मुझे छोड़ दिया जाय या तुम्हें भी साथ ही छोड़ दिया जाय, तो भी तुम्हें रोटी बनानेका शास्त्र तो जान ही लेना चाहिये। और अुसकी विधि अच्छी तरह लिखकर मुझे देनी चाहिये।"

मैंने कहा: "आपके साथ छूटा, तो वहाँ लिख दूँगा; और न छूटा, तो लिखकर भेज दूँगा।"

बापू: "यानी यों कहो न कि तुम्हारी लिखनेकी नीयत ही नहीं। वह अच्छी तरह समझमें आ जाय, तो सब क़ैदियोंके लिअे यह फेर-बदल करानेका मेरा अिरादा है और सभी जेलोंमें छोटी-छोटी बेकरियाँ बनवानेका विचार है।"

मैंने कहा: "मगर यह सब आज हो सकता है? कल तो आप चले जायँगे। वहाँ अिसमें किस तरह पड़ेंगे?"

बापू चिढ़ गये और कहने लगे: "ज्ञान भी कहीं बेकार जाता है? और कलका कल ही मर तो नहीं जाअूँगा। मैं तो छूट कर भी डोअिलको पत्र लिखूँगा। और आश्रममें तो तुरंत ही जो फेरफार कराने ज़रूरी हों, वे करा दिये जा सकते हैं।"

आम्बेडकरके बारेमें कहते हुअे मैं बोला: "अिस आदमीकी सब खुशामद करेंगे, तो अुसकी धृष्टताको प्रोत्साहन देनेकी बात हो जायगी। अपने खानगी हलकोंमें तो वह यही कहेगा कि देखो, गांधीसे अुपवास करा लिये न? और अब ठीक है कि ये सब मेरी खुशामद करने आते हैं!"

बापू: "हाँ, यह बात बुरी है। नरगिस और दूसरी बहनें तो अुसके पीछे पड़ गअी होंगी! और मुझे यह ज़रा भी अच्छा नहीं लगता कि ये सब अुसकी खुशामद करें। मगर किया क्या जाय?"

मैंने अपने मनमें कहा: "अिस तरहकी परिस्थिति अुत्पन्न करना अुपवासमें दोष नहीं माना जायगा? अुपवास करके किस लिअे अैसे आदमी पर सारा आधार रखनेवाली परिस्थिति अुत्पन्न की जाय?"

बापू: "अिसीलिअे मेरे जीमें आता है कि मुझे न छोड़ें और यहीं पड़े-पड़े अुपवास करने दें और मरने दें, तो कैसा अच्छा रहे! मगर छोड़ेंगे, तो सब बातें साफ़ करूँगा। वह यह कि अुसे सही लगे तो वह माने, दबानेसे न

माने, और कोअी अुस पर दबाव न डाले। हिन्दुओंसे कहूँगा कि जो अुपाय अिसके विरुद्ध काममें लिया, वही अुपाय तुम्हारे विरुद्ध काममें लूँगा, अिसलिअे सब समान हो जाओ। सरकारको पहले ही दिन नोटिस दे दूँगा कि मेरे विचार जैसेके तैसे हैं। मैं तो जो सविनय भंगकी बात पूछने आयेंगे, अुनको भी यही सलाह देता रहूँगा। अिसलिअे तुम्हें मुझे वापस पकड़ना हो, तो पकड़ लो।"

प्रातःकाल रोटी बनानेका सारा तरीका लिख दिया, अिसलिअे बापू खुश हो गये। जितने पत्र लिखने चाहियें, अुतने लिख डालने लगे।

१५–९–'३२

सावित्रीने अपने पत्रमें बताया था कि मेरा पति ब्रह्मचर्य पालनेकी अशक्ति बताता है और मुझे कहता है कि युरोपमें अैसी बात नहीं चल सकती। हम तो, जैसा गांधीजी कहते हैं, आपसमें समझौता करके जीनेवाले हैं। अुसे लिखा :

"मैं समझता हूँ सत्यवानका प्रश्न सरल है। कोअी आदमी अपनी शक्तिसे आगे नहीं जा सकता। किसीको ब्रह्मचर्य पालनेके लिअे मजबूर नहीं किया जा सकता। वह तो भीतरसे पैदा होना चाहिये। तुझे अुसे अपनेसे अलग होनेकी, और ज़रूरत पड़ जाय, तो तलाक़का हुक्मनामा लेनेकी पूरी आज़ादी देनी चाहिये। अपनी पसन्दकी किसी दूसरी स्त्रीके साथ विवाह करनेकी भी अुसे स्वतंत्रता होनी चाहिये। विकारोंकी तृप्तिके लिअे निरंतर माला जपता रहे, अैसा विषयी मन हो, तो यह बहुत भयंकर बात है। तू जितना प्रेम अुस पर बरसा सके, बरसा। कठोर बन कर अुसका न्याय न करना। अितने वर्षों तक अुसने अपने पर क़ाबू रखनेका प्रयत्न किया, यह अुसके लिअे बहुत माना जायगा। अुसकी वासनाको सन्तुष्ट करनेकी तुझे ज़रा भी अिच्छा होती हो, तो तू यह मान कि अिसके लिअे तुझे स्वतंत्रता है। कारण, आत्मसंयमका निर्णय तुम दोनोंने मिलकर किया है। अिस-लिअे अिस करार पर फिरसे विचार करनेकी अेक पक्ष अिच्छा करे, तब दूसरे पक्षकी भी अगर अैसी मरज़ी हो जाय, तो अुसे भी यह करनेकी स्वतंत्रता है।

"मगर तुझे विश्वास हो कि तुझमें ज़रा भी वासना नहीं है, तो जहाँ तक हो सके प्रेमसे, परन्तु पूरी दृढ़ताके साथ, सत्यवानकी तमाम माँगोंका तुझे विरोध करना चाहिये। यह पत्र अुसे पढ़नेको देना। वह अिस पर विचार करे और प्रकाशके लिअे अीश्वरसे प्रार्थना करे। मगर अुसे अैसा लगे कि वह अपने विकार पर क़ाबू नहीं रख सकता और अुसके अधीन होनेकी तेरी अिच्छा न हो, तो अुसे दूसरी स्त्रीसे शादी कर लेनी चाहिये। तुम दोनों मित्र बनकर अलग होना। तुम्हें अलग ही होना पड़े, तो यह विचार गौण होना चाहिये कि बादमें तेरा क्या होगा। तेरे अन्दर शक्ति हो, और मैं जानता हूँ कि वह तेरेमें है, तो तुझे अपनी मेहनतसे ही अपना गुज़र करना चाहिये।

"ईश्वर तुम्हारी मदद करे और तुम दोनों पर उसका आशीर्वाद हो।
गहरे प्रेम सहित — बापू"

मीराबहनको उपवासके बारेमें लम्बा पत्र लिखा। वह पूरा नक़ल करने लायक़ है, मगर नक़ल न हो सकी। नरगिसके नाम पत्र :

१६-९-'३२ "दुःखी होनेकी मनाई है। हम कल्पना कर सकते हों, वैसे पवित्रसे पवित्र कार्यके लिए एक कुटुम्बीजनको ईश्वरने महा बलिदान करनेका मौक़ा दिया है। उसके लिए खुश होना चाहिये। और इस उपवासका — थोड़ासा भी — अनुकरण तो किया ही नहीं जा सकता। तुम सबको तो उस समय अधिक काममें और अधिक आत्म-शुद्धिमें लग जाना है। हममेंसे यदि कोई ज़रा भी दुःखी जैसा दिखाई दे, तो तुम्हें उसे झंझोड़कर हिम्मत बँधानी है।

"तुम सबको — पिंजरेमें बन्द पक्षियोंको भी प्यार।"

सरलादेवीको : "तुम्हारा अत्यंत प्रेम-पूर्ण पत्र मिला। यह मेरे लिए प्रसादीरूप है कि उसमें सब बच्चे भी शामिल हैं। जब निश्चित धर्म जान पड़ा, तभी मैंने यह क़दम उठाया है। ईश्वरके नामसे और उसीके कामसे यह क़दम उठाया है। वह लाज रखेगा, यह मानकर मैं बिलकुल निश्चिन्त हो गया हूँ। तुम्हारे एक कुटुम्बीजनको ऐसा शुभ अवसर हाथ लगा है, यह जानकर सब खुश होना।"

अनसूया बहनको : "तुम्हारी और शंकरलालकी व्याकुलता यहाँ बैठा भी सुन और देख सकता हूं। मगर इसे मोह ही समझना। तुम्हारा धर्म तो निर्मल आनंद अनुभव करनेका है। ऐसा शुभ अवसर ईश्वरने मेरे लिए सहज ही भेज दिया है। तुम सबको तो ज़्यादा कर्तव्य-परायण और ज़्यादा शुद्ध ही होना है।"

डॉ० अनसारीको :

"आपके मनोहर कार्ड मुझे मिलते रहते हैं। आप और शेरवानी जल्दी पूरी तरह अच्छे हो जायें और घर लौट आयें, ऐसी प्रार्थना मैं कर रहा हूँ। आप दोनोंको हमारा प्रेम पहुँचानेके लिए ही यह लिख रहा हूँ।

"मैंने जो निश्चय किया है, उस विषयमें आपने ज़रूर जाना होगा। ईश्वरका ऐसा स्पष्ट आदेश था, जिसकी मैं अवहेलना नहीं कर सका। मैं आशा रखता हू कि मेरे इस निर्णयकी क़द्र करनेमें आपको कोई मुश्किल नहीं पड़ी होगी। भविष्य भगवानके हाथमें है।

"घटनाएं इतनी जल्दी-जल्दी घट रही हैं कि यह पत्र आपको मिलेगा, तब तक क्या-क्या हो गया होगा, यह कहना कठिन है। ऐसा भी हो सकता है कि आपके नाम मेरा यह अन्तिम पत्र ही साबित हो। इसलिए मैं

आपसे कह दूँ कि हिन्दू-मुस्लिम अेकताके बारेमें मेरी श्रद्धा सदाकी भाँति हरी-भरी है। मैं मानता हूँ कि सगे भाअी जैसे कुछ मुस्लिम मित्र मुझे मिले हैं, अिससे मेरा जीवन विशेष समृद्ध हुआ है।"

रोमा रोलाँको :

"प्यारे मित्र और भाअी,

"मेरे जीवनके अेक महान कार्यका आरंभ करते समय आपको अितना लिखनेकी अिच्छा होती है कि आपके और आपकी महान, भली और भावुक बहिनके साथ बिताये हुअे दिन मेरे लिअे बहुत क़ीमती हैं। महादेव देसाअी मेरे साथ हैं। हम दोनों अकसर आपका विचार किया करते हैं।

"मेरे निर्णयका आप पर क्या असर हुआ है, अुसे जाननेकी अिच्छा रहती है। मैं अितना ही कहूँगा कि मैंने यह निश्चय अन्तर्नादकी आज्ञाके अनुसार किया है।

आप दोनोंको प्यार"

पोलाकको :

"प्यारे हेनरी और मिली,

"मैं समझता हूँ कि मैंने जो निर्णय किया है, अुसे तुम पूरी तरह समझते हो और अुसकी क़द्र करते हो। मुझे भीतरसे अैसी आज्ञा मिली कि जिसे रोका नहीं जा सकता था। चार्लीसे भी यह कह देना। वे कहाँ हैं, यह पता न होनेके कारण मैंने अुन्हें लिखा नहीं।

तुम सबको प्यार – भाअी।"

म्यूरियलको :

"मेरे खयालसे जो पवित्र कार्य है, अुसे शुरू करनेसे पहले मैं तुम्हें यही कहनेको यह पत्र लिख रहा हूँ कि किंग्सले हॉलके सारे परिवारका, जिसके बीच मैंने बहुत सुखी महीने बिताये हैं, मैं निरंतर विचार करता रहता हूँ।"

अेक अंग्रेज़ मित्रको लिखते हुअे : "जब मैंने प्रधान मंत्रीको पत्र लिखा था, तब अपने तमाम अंग्रेज़ मित्रोंको मनःचक्षुके सामने रखकर लिखा था।"

* * *

शामको 'क्रॉनिकल' में व्हाअिट हॉलका तार बापूको 'छोड़ने' के बारेमें पढ़ा : "गांधी अुपवास शुरू करें, अुसके बाद अुन्हें किसी अनुकूल खानगी घरमें ले जाया जाय। अुनके लिअे अिस क़िस्मका हुक्म जारी किया जाय कि वे वहीं रहें।" यह सब पढ़कर बापू कहने लगे : "देशका जितना अपमान हो सके, अुतना अुन्हें कर लेना है। अिस शर्त पर मिलने आने वाले भी मिलने

आनेसे अिनकार कर दें, तो कैसा अच्छा रहे ! रंगा आयरने धारा-सभाको मुलतवी रखनेका जो नोटिस दिया, वह बताता है कि वहाँ भी कुछ न कुछ हो रहा है। धारा-सभाको भी लगता होगा कि जब अिस आदमीका अितना अपमान कर रहे हैं, तब हमारा तो पूछना ही क्या ? " घूम कर बैठनेके बाद तुरंत ही वाअिसरॉयके खानगी मंत्रीको तार लिखाया कि " सरकारकी घोषणा पढ़ी। अिसमें नाहक सार्वजनिक खर्च करने, तकलीफ़ देने और मुझे व्यर्थ चिन्तामें डालनेके बजाय मुझे यहाँसे न हटाया जाय, क्योंकि मैं अपनी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखनेवाली अेक भी शर्त नहीं मानूँगा।"

बापूने कहा : " अितने हल्केपनकी आशा मैंने नहीं रखी थी। यह तो अकल्प्य वस्तु कही जा सकती है। मगर ठीक है, वे जो भी करें, अुसमें हमें घाटा नहीं है। यह तार जाने पर भी मुझे निकालेंगे, तो पहले ही दिन अिस हुक्मका अनादर करके चल दूँगा। कल रा० ब० गोविन्दलालके यहाँ जानेकी बात कर रहे थे, तब मेरे जीमें आ रहा था कि अछूत मुहल्लेमें क्यों न जाअूँ? मगर हिम्मत नहीं होती थी। अब हिम्मत आ गअी। बस, वहाँ जाकर ही मरना बहुत अच्छा होगा। अीश्वर मुझे जितनी चाहिये, अुतनी शक्ति दे देता है। अिस तरह चल पड़ना दूसरा दाँडी-कूच हो जायगा। सी० पी० को तो यह सब देखकर अिस्तीफ़ा दे देना चाहिये था। अुनका क्या नुक़सान होगा ? परन्तु हमारे लोगोंमें यह चीज़ है कहाँ ? "

वल्लभभाअी बोले : " अैसे व्हाअिट हॉलके पास ये लिबरल लोग हक़ माँगनेको जानेवाले हैं ! "

फिर अन्त्यज नेताओंके और बम्बअीके नारायणराव देसाअीके आये हुअे पत्रों और तारोंके जवाब दिलवाये। अिन जवाबों पर बहुत चर्चा चली। वल्लभभाअीने आपत्ति की : " जब अिन्हें जवाब देते हैं, तो पुरुषोत्तमदासको किसलिअे नहीं दिया ? अुसे बुरा नहीं लगेगा ? "

बापू बोले : " पुरुषोत्तमदासको अितना-सा लिखनेसे काम नहीं चल सकता। और भी बहुत कुछ लिखना पड़ेगा। "

वल्लभभाअी : " अिन लोगोंको अितना-सा लिखें, तो पुरुषोत्तमदासके लिअे ज़्यादा किसलिअे ? "

बापू : " क्योंकि अुससे ज़्यादा आशा रखता हूँ। "

फिर लम्बी चर्चा चली। आखिर दोनोंमेंसे अेक भी पत्र न भेजनेका ही निश्चय रहा।

पारखी आया और यह कहकर बापूके हस्ताक्षर ले गया कि वाअिसरॉयके खानगी मंत्रीके तार पर बापूके हस्ताक्षर नहीं हैं; डोअिल बापूके दस्तखतों वाला तार माँगते हैं।

कल रातको और आज भी बापू बोले कि "मुझे जब लगेगा कि कहीं भी समझौता होनेके चिन्ह नहीं हैं, तब मैं पानी, नमक वग़ैरा सब बन्द कर दूँगा। यह मरनेका निश्चय है। यह निश्चय करके मैं बिलकुल निश्चिन्त होकर बैठ जाअूँगा। अगर मैं जिया, तो मेरा बिलकुल नया जन्म होगा, अिस विषयमें मुझे शंका नहीं।"

१७–९–'३२

खाडिलकर, सुरेन्द्र और रामदाससे कल बापू मिले थे। खाडिलकरने पूछा था: "हम सबको परेशानी यह है कि अिस अुपवाससे विधानकी बात पीछे पड़ जायगी।"

बापू बोले: "यही विधान है।"

वे: "तब तो आप यह चाहेंगे कि आपका अिसमें अंत हो जाय, तो हम सब कुछ छोड़कर यही काम करते रहें?"

बापू: "आपने ठीक कहा। अिस कामका फैसला हो जायगा, तो बहुतसे कामोंका फ़ैसला हो जायगा।"

रामदासने कहा: "आपको बाहर ले जायँ, तो मैं आपकी सेवाके लिअे छूटनेकी माँग करूँ?"

बापू: "तुझे अैसी अिच्छा हो, यह मैं समझ सकता हूँ। मगर तेरा अिस अिच्छाको रोकना ही मेरी सेवा है। मेरी सेवा करनेवाले बाहर बहुत होंगे।"

गोसीबहनको पत्र लिखा:

"तुम जानती हो न कि मुझे यह विचार टिकाये हुअे है कि अिस परीक्षामें बहुतसी बहनें मेरे साथ हैं! कमलाको अलग पत्र लिखनेका मेरे पास वक़्त नहीं है। मगर वह मुझे लिखे। तुम सबको प्यार। अीश्वरका चाहा हो, हमारा नहीं।"

"चि० . . .

"तेरा पत्र विचित्र है। अेक तरफ़से अुपवासकी बात करती है, दूसरी तरफ़से विवाहकी। अुपवासका तेरा समय नहीं, अधिकार नहीं।

"जब तक विवाहकी गाँठ बँध न जाय, तब तक जिस युवकके साथ संबंध हुआ है, अुसके साथ माता-पिताकी आज्ञा लेकर निर्विकार पत्र-व्यवहार तू ज़रूर कर सकती है। 'निर्विकार' शब्द मैंने जान-बूझकर अिस्तेमाल किया है। जो विकार आज कार्यरूपमें नहीं आने वाला है, अुसे बढ़ाते रहनेमें दोष है।

अिससे मानसिक शक्तिका व्यर्थ व्यय होता है। अैसा करनेमें समझदारी बिलकुल नहीं है। तेरी अुम्रका मुझे पता नहीं है। लेकिन तेरी अुमर बिलकुल पक गअी हो और तू विकारवश होती हो, तो तेरा शादी करना मैं पसन्द करूँगा। अगर तू वयस्क है, तो तुझे विकारोंको क़ाबूमें रखना चाहिये और अपने भावी पतिके साथ पत्र-व्यवहार करनेका लालच न रखना चाहिये। मेरे ख़यालसे तेरी सारी परेशानियोंका हल अिसीमें है।

बापूके आशीर्वाद।"

बरजोरजी भरूचाने तार दिया कि सरकारको जब छह मासका नोटिस दिया, तो जनताको छह हफ़्तेका भी नहीं देंगे? अुसे अुत्तर दिया:

"भाअी बरजोरजी,

"आपका तार तो मिलना ही चाहिये न? सीधी बात तो यह है कि अनशन व्रत कोअी आदमी अपने ही ज़ोर पर नहीं ले सकता, ले तो वह मूढ़मति है। अपने लिअे तो मैं कह सकता हूँ कि यह व्रत मैंने नहीं लिया, अीश्वरने मुझसे लिवाया है। तारीख भी अुसीने निर्माण की है। तारीख बदलनेके नियम भी अुसीने बनाये हैं। अिन नियमोंमें आपका आग्रह नहीं आ सकता। अब क्या किया जाय?

"दूसरी सीधी बात यह है कि क़ैदी अपने आप और अपनी अिच्छासे बाहरकी दुनियाको कुछ कह नहीं सकता। अिसलिअे मैं जो कर रहा था, अुसका अेक शब्द भी यदि टेढ़े-मेढ़े तरीक़ेसे जनता तक पहुँचाता, तो सत्याग्रहीकी हैसियतसे मैं पापमें पड़ता। सत्याग्रही क़ैदी स्वेच्छासे जेलके क़ानूनोंका पालन करता है; और अुसे तोड़नेका कोअी भी समय आये, तो खुले तौर पर ही तोड़ सकता है। अिसलिअे क़ैदीके नाते तो सरकारको जो नोटिस मिला, वह जनताको ही मिला माना जायगा — यानी जनताको जानकारी कराना तो सरकारकी ही न्यायप्रियता पर था। जनताको जल्दी जानकारी नहीं हुअी, तो अिसका हमें यही अर्थ करना चाहिये कि अीश्वरने यह नहीं सोचा था कि जनताको जल्दी मालूम हो। जनताकी असुविधा दूर करनेके लिअे मैं कैसे मियाद बढ़ा सकता हूँ? लेकिन जो लोग खुदापरस्त हैं, वे यह क्यों न मानें कि अगर अीश्वरको मुझसे ज्यादा सेवा लेनी होगी, तो अुपवासके बावजूद भी वह मेरी ज़िन्दगी आवश्यक दिनों तक टिकाये रखेगा? आप तो खुदापरस्त हैं ही। अिसलिअे मेरे अिस पत्रको समझकर अिसका अर्थ जो भाअी-बहन व्याकुल हों, अुन्हें समझाना और दिलासा देना। साथियोंका धर्म अिस समय सामने आये हुअे कामको वेगपूर्वक करते रहना है। परिणाम अीश्वरको जो पैदा करना होगा, वह करेगा।

"अितना याद रखना कि यह अुपवास किसी पर भी दबाव डालनेके लिअे नहीं हो सकता, और है भी नहीं। अिसका हेतु सिर्फ अंत्यज भाअियोंके लिअे जो अुचित हो, वही करना है। मुझे जो ठीक लगता है, वह दूसरेको न भी लगे। अुसे अपना विरोध जारी रखना ही चाहिये। अैसे खुले शुद्ध अुपवास जन-जीवनमें जाग्रति लाते हैं, जन-जीवनको मोहवश बनाकर अुलटे रास्ते तो हरगिज़ नहीं ले जा सकते। अज्ञानसे अुपवास करके मैं जनतासे कोअी भी अनुचित वस्तु माँगने लगूँ, तो मुझे विश्वास है कि भूतकालमें मैंने अुसकी बहुत सेवा की है, अैसा मानते हुअे भी जनताको मुझे जिलानेके खातिर मेरी अनुचित माँगसे हरगिज़ न दबना चाहिये। अुससे न दबनेमें जनताका भला तो है ही, मगर मेरा भी भला ही होगा।"

बंगलोर छावनीकी कांग्रेस कमेटीके मंत्री भीमरावका तार :

"अपने देशबंधुओंको मझधारमें डुबोनेके बजाय अुन्हें पार लगाअिये। अश्रु-सहित विनती है कि अुपवास न कीजिये।"

अुसे जवाब :

"आपका भावभरा तार मिला। यह अुपवास अीश्वरके नाम पर और अुसीके आदेशसे हो रहा है। अब अुसे न करना गलत और नामर्दीका ही काम होगा। हम अैसी आशा रखें कि भगवान मुझे अिससे पार अुतरनेका बल देगा। अन्तमें तो अुसकी अिच्छाके बिना कोअी प्राणी जी ही नहीं सकता। अगर मेरा कुछ भी अुपयोग अुसे होगा, तो वह मुझे ज़रूर बचा लेगा।"

कृष्णदासको :

"जैसे कुछ हुआ ही नहीं, यह समझ कर मुझे लिखते रहो। संभव है तुम्हारे नाम मेरा यह आखिरी खत हो। अैसा हो तो अितना ध्यानमें रखना कि मेरी आशा यह है कि तुम किसी दिन आश्रमकी तरफ़ खिंच आओगे और तुम्हारे बारेमें मैंने जो आशाअें बाँधी हैं, अुन्हें पूरा करोगे। मैं मानता हूँ कि मेरे अुपवासके बारेमें तुम अच्छी तरह समझे होगे कि अीश्वरने मुझे यह अलभ्य अवसर दिया है। अिसलिअे अिसका दुःख न मान कर खुशी ही मनाना चाहिये। अिसके साथ यह भी समझ लो कि किसीको अिसका अनुकरण नहीं करना है। अन्तरमेंसे खूब ही स्पष्ट आवाज़ आये, तो ही अनुकरण किया जा सकता है।"

दरबारी साधुको :

"मुझे भय है कि शायद अब हम नहीं मिल सकेंगे। फिर भी आप माँग तो करना ही। मुझसे हो सका तो मैं बुलवा लूँगा। मगर मिलना न भी हो, तो समझ लेना कि मिट्टीके पुतलेसे मिलकर कोअी सार नहीं निकलता। मिलना तो

मनके साथ मनका और हृदयके साथ हृदयका होता है; और ये तो दुनियाके पूर्व और पश्चिमके सिरों पर बैठे होने पर भी अेक क्षणके भीतर मिल सकनेकी शक्ति रखते हैं। और जहाँ अिनका मिलाप न हो, वहाँ मिट्टीके पुतले बहुत नज़दीक और गहरे मिले हुअे हों, तो भी मनोंमें अुत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुवके बराबर फ़र्क़ हो सकता है। अिसलिअे मिट्टीके साथ मिलनेका कोअी मूल्य नहीं रह जाता। लेकिन मिट्टीके पुतलेमें जीव हिल-डुल रहा हो, तभी हमें मिलना अच्छा लगता है। अिसीको सबसे बड़ा मोह कहते हैं; और यह न निकल जाय, तब तक हम लोहेसे भी ज़्यादा सख्त बेड़ियोंमें जकड़े हुअे हैं। मगर यह सब बुद्धिसे जान लेनेसे ही कोअी लाभ नहीं। यह हृदयमें पैठना चाहिये। और यह ज्ञान जिसके हृदयमें अुतर गया है, अुसे सब कुछ मिल गया। मगर अिस ज्ञानके प्राप्त करनेमें कितने ही जन्म बीत जायँ, तो भी थोड़े ही रहेंगे। अिस-लिअे गीताकी ध्वनि यह है कि कर्तव्य करते-करते शरीरको घिस डाले। अनासक्ति या निर्मोह अिसीसे पैदा हो सकता है।"

बिड़लाको तार दिया। अुसमें यह लिखा था कि "यहाँसे मैं कोअी हिदायत नहीं दे सकता"। अिसे यहाँकी सरकारने तो पास कर दिया, मगर बंगाल सरकार या किसी और सरकारने निकाल डाला और 'यहाँसे' छपा ही नहीं — न 'टाअिम्स' में, न 'क्रॉनिकल' में। अिससे यह समझा जा सकता है कि अिस मामलेमें सरकारकी मदद देनेकी कितनी अिच्छा है। राजाजी दो दिनसे आकर बैठे हैं, तो भी अुन्हें मिलनेकी अिजाज़त नहीं मिल सकी। दो दिन हुअे अखबारोंके लिअे बयान दिया है, वह अब छपता है! अिंडिया लीग डेलिगेशनके मित्रोंने हॉरेबिनको रोक कर होरको और 'डेली हेरल्ड'को तार दिये हैं।

बापू कहने लगे: "मगर वहाँका मुसोलिनी सुने, तब न कुछ हो! सेम्युअल होर तो फ़ासिस्ट है। वहाँ बैठा-बैठा हुक्म ज़ारी करता है। आज वहाँ फ़ासिज़्म नहीं तो और क्या है? अुसकी 'फ़ोर्थ सील' में भी फ़ासिज़्म दिखाअी देता है। हाँ, यह बात सही है कि अुसमें सिर्फ अेक प्रकारकी पारदर्शकता है।"

* * *

आजकी डाकमें अेक-दो अपूर्व सौन्दर्यवाले पत्र थे:

"प्यारे छोटेसे करुणाके अवतार और भावीके भाग्यविधाता,

"अेक आधुनिक कविके शब्दोंमें कहूँ, तो आपने 'अपने भले और कृपालु स्वभावके विरुद्ध जा कर' दुनिया पर अचानक वज्राघात किया है। ग़ाफ़िल दुनिया तो आपके बलिदानकी बात सुन कर चौंक गअी है और आश्चर्य, भय, दुःख और निराशाकी मिश्र भावनायें अनुभव कर रही

है। आप जिस आदर्शके लिअे बलिदान देनेको तैयार हुअे हैं, वह आदर्श आपके लिअे अपने जीवनसे भी महँगा है और अपनी मृत्युसे आप अुस पर मुहर लगानेको तैयार हुअे हैं।

"आत्म-विसर्जनके अद्भुत और गूढ़ महाआनन्दमें निमग्न होकर आप वहाँ बैठे है। चारों दिशाओंमें बहनेवाली वायु अगणित हृदयोंकी दर्दभरी आहें पतझड़के असंख्य पत्तोंसे भी ज़्यादा प्रमाणमें फैला रही है। अुससे आप अछूते हैं। आप स्वेच्छासे जो अग्नि-प्रवेश करनेवाले हैं, अुसे सुनकर लाखों स्त्री-पुरुषोंके दिलोंको चोट पहुँची है। अुनके पास अैसे ज्ञानपूर्ण, अैसे सूक्ष्म तर्कयुक्त, अैसे वाक्छटासे भरे हुअे, अैसे दिलको पिघलानेवाले और अैसे रामबाण शब्द नहीं, जिनसे वे आपके साथ बहस कर सकें, या आपको समझा सकें; और कुछ नहीं तो आपका निर्णय मुल्तवी करा सकें। मगर अपने महाबलिदानके लिअे आपने जो हेतु चुना है, वह बहुत थोड़े महत्वका और छोटा है। अिसे बदल कर बहुत ज्यादा विशाल, बहुत ज्यादा गहरा और दूरगामी, तथा ज़्यादा गहरे अन्याय और जुल्मको मिटानेवाला अधिक जीवित और अधिक महत्त्वका मुद्दा अपने सामने रखनेकी बात आपकी समझमें आनी चाहिये थी।

"बहुतसे लोग तो सिर्फ़ आपके देहान्तके विचारसे ही डर गये है। अुन्हें तो अैसा लगता है कि सिर पर आकाश टूट पड़ा है। मैं अिस तरह घबरा जाने-वालोंमेंसे नहीं हूँ। अपने घमण्डमें आकर हम जिन्हें वर्णबाह्य — अछूत — कहते हैं, अुन हिन्दू सम्प्रदायके दलित, पीड़ित, तिरस्कृत और लावारिस बनाये हुअे अपने ही भाअियों पर जो अन्याय हम सदियोंसे कर रहे हैं, अुसका अन्त करने और अुनकी सेवा करनेके लिअे जीनेका मार्ग हालाँकि ज़्यादा कठिन और अधिक साहसका है, फिर भी अुसे छोड़कर आपने मरनेका मार्ग पसन्द किया है। अिससे मुझे बड़ा दुःख हुआ है, यह मुझे क़बूल करना चाहिये। आपके निर्णयके पीछे जो नैतिकता या तत्त्वज्ञान है, अुसके बारेमें मैं शंका नहीं कर रही हूँ। आप किसी दिन मरेंगे तो ज़रूर, आज नहीं तो कल। किसी दुर्घटनासे या किसी बीमारीके कारण बेमनसे या नीरस ढंगसे मरनेसे तो अैसे अुदात्त सिद्धान्तके लिअे ज्ञानपूर्वक प्राण समर्पण करना मैं ज़्यादा अच्छा समझती हूँ। महान धर्म-प्रवर्तकों, साधु-सन्तों, आदर्शवादियों, सुभटों, संगीताचार्यों, संशोधकों, विज्ञानाचार्यों वग़ैरा सबने अपने आदर्शोंके लिअे प्राण समर्पण किये हैं। तो आपकी मौत भी अिसी तरह क्यों न हो? ये काँचके कंगन जैसी हड्डियाँ, झुर्रियाँ पड़ी चमड़ी, ये बालोंके जाले — क्या यही गांधी है? या वह महात्मा, जिसे सत्य और ऋतकी भव्य झाँकी हुअी है, दुनियामें जिसका नाम अमर रहेगा, गांधी है? अिसलिअे आपके देहान्तके विचारसे मैं ज़रा भी नहीं घबराती। . . . पर . . . आपमें

मैंने सदा अनुपम सचाअी, अगाध समझदारी और सुन्दर भावनाके दर्शन किये हैं। जब संसार पैबन्द लगी हुअी कमली वाला पागल मानकर आपकी हँसी अुड़ाता था, तब मैंने आप पर अपनी श्रद्धा प्रगट की है। जब मेरी अपनी बुद्धि और विवेक आपके निर्णयों और कार्यक्रमोंको मानते नहीं थे, तब भी अेक चिर साथीके प्रति मैंने अपनी अटल वफादारी, प्रेम और विश्वासको अखण्ड रखा है। अिस प्रकार आपसे आज्ञा रूपमें माँग करनेका मेरा हक़ है। वह माँग यह है कि जिस हेतुकी आपके बलिदानकी भव्यताके साथ किसी भी तरह तुलना नहीं हो सकती, अुस पर अितनी बड़ी कुरबानी आप न कीजिये।

"अेक ब्रिटिश मन्त्रीकी राजनीतिक युक्तिको अेक आगन्तुक प्रसंग मानने लायक़ सप्रमाणता, वास्तविकता और प्रस्तुतता परखनेकी आपकी विशद और तीव्र बुद्धि कहाँ गअी? यह प्रसंग भले ही महत्त्वका हो, मगर अुसका महत्त्व तात्कालिक ही है। अिसकी वेदी पर आपके जीवन जैसा मूल्यवान और अपार महत्त्वका बलिदान भी कहीं हो सकता है? दरअसल विवाद आपके और ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीके बीच नहीं, बल्कि आपके और हिन्दू समाजके बीच है। ज़रूरत हो तो अिस सदियों पुराने अन्यायको दूर करनेसे अिनकार करने पर आप हिन्दू समाजको चुनौती दीजिये, और अुसे अपने आत्मोत्सर्गकी वेदी बनाअिये। आपके पास क्या सात-सात जीवन देनेको हैं? हे भावीके भाग्यविधाता, मैं तो कहती हूँ कि अैसे सात-सात जीवन हों, तो भी अिस शताब्दियों पुराने पापको धोनेके लिअे आप अुन्हें अर्पण कीजिये। अछूतपनका भयंकर कलंक, ज़रूरत हो तो, आपके जैसे पवित्र रक्तसे जब तक नहीं धुलेगा, तब तक हमारे राष्ट्रकी मुक्ति नहीं, हमारे राष्ट्रके जीवनमें प्राण नहीं आयेंगे। अिससे छोटे किसी भी मुद्दे पर आपको प्राण देनेका अधिकार नहीं है। जाति, राष्ट्र, देश या संस्कृति किसीका भी भेदभाव रखे बिना दुनियाकी निरंतर सेवा करनेके लिअे आपका जीवन निर्मित हुआ है। प्रेम, सत्य, करुणा, शान्ति, आशा और मानव-अेकताके आप विश्वप्रतीक है। आपके जीवनके अखण्ड स्रोतसे असंख्य स्त्री-पुरुष साहस, आश्वासन और बलके घूँट पीते हैं। . . . अिसलिअे नम्रतापूर्वक और प्रार्थनाके साथ फिर विचार कीजिये कि अीश्वर, जिसका प्रकाश आपके ज़रिये अिस दुनियामें चमक रहा है, क्या चाहता है? समस्त मानव जातिके कल्याणके लिअे, खासकर हिन्दू जातिकी लावारिस और दयापात्र सन्तानोंके लिअे, अधिक स्वीकार्य, अधिक सुन्दर और अधिक निष्पाप बलिदान — आपका जीवन है या आपकी मृत्यु?

"अगर आप अतिशय नम्रतापूर्वक और प्रार्थनामय होकर अपने हृदयमें विराज रहे अीश्वरकी आवाज़ सुननेका प्रयत्न करेंगे, तो हे छोटेसे भाग्यविधाता,

आपको जवाब मिलेगा कि सर्वोत्तम बलिदानके लिअे आपको जीवन पसन्द करना है, न कि मरण ।

"मगर आप कुछ भी पसन्द करें, आप जानते हैं कि मैं आपकी भक्त मित्र हूँ, और हमेशा रहूँगी ।"

अिसका जवाब :

"प्यारी बुलबुल माता और मेरी आत्माकी संरक्षक,

"तुम्हारा मनोहर पत्र आया । अुससे पहले, शायद अुससे भी मनोहर पद्मजाका पत्र आया था । खूब प्रार्थनाके बाद अीश्वरके नाम पर और अुसीके आदेशसे यह निर्णय किया गया है । अुसके अमलका समय मुलतवी रखनेका मुझे अधिकार नहीं ।

"अपने निर्णयों और अपने कामों पर फिर विचार करनेके लिअे मुझे कहनेका तुम्हें पूरा पूरा अधिकार है । और मुझे अपनी भूल मालूम हो जाय, तो अुसमें फेर-बदल करना मेरा फ़र्ज़ है । परन्तु भूल ढूँढ़नेके लिअे खूब प्रार्थनामय प्रयत्न करनेके बाद भी मुझे भूल न मिले, तो तुम्हारी चुपचाप 'अधीनता' माँगनेका मुझे अधिकार है । पुरुषोचित ढंगसे तुमने अपना अधिकार स्थापित कर लिया है और स्त्रियोचित ढंगसे अपनी अधीनता अर्पित कर दी है ।

"यहाँ मातृ-प्रेमने कविकी आर्षदृष्टि पर विजय प्राप्त की है । और अिसी-लिअे मेरा निर्णय बदलवानेकी — मेरा जीवन क़ायम रखनेके लिअे मेरे गर्वको अपील करनेकी — तुम्हें प्रेरणा हुअी है ।

"मगर मैं मानता हूँ कि मुझमें जो स्त्रीत्व मौजूद है, अुसे तुम भूली नहीं हो । अिस स्त्रीत्वके कारण ही मैंने मरने तक कष्ट सहन करनेका मार्ग पसन्द किया है । मेरी निर्बलतामें ही मुझे अपना बल ढूँढ़ना होगा ।

"तुम्हारी भूल कहाँ हुअी है, यह समझाअूँ । साम्प्रदायिक निर्णय तो अिस बलिदानके लिअे आखिरी प्रसंग है । अछूतपनके लिअे जीवनका बलिदान देनेका मेरा विचार कोअी आजकलका नहीं है । यह खयाल बहुत पुराना है । मगर अितने वर्ष तक अुसके लिअे भीतरसे आवाज़ नहीं आअी । ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलका यह निर्णय ज़ोरसे बजनेवाली खतरेकी घंटीके समान सिद्ध हुआ । अुसने मुझे नींदसे जगाया और कहा : 'अवसर आ गया है ।' अिस निर्णयने मनके अनुकूल अवसर मुझे दे दिया और सहज भावसे मैंने अुसे पकड़ लिया । सरकारको लिखे गये मेरे पत्रकी मर्यादामय भाषाके गर्भमें वही चीज़ मौजूद है, जिसके लिअे तुम चाहती हो कि मैं मरूँ या जीअूँ । तत्वतः तो ये दोनों अेक ही चीज़ हैं । सच्चे कवि या द्रष्टा तो वे माने जाते हैं, जो मृत्युमें जीवन और जीवनमें मृत्यु देख सकें । शकरका स्वाद तो खानेसे ही मालूम होता है । थोड़े ही समयमें तुम चख सकोगी और तुम्हें मालूम हो जायगा । अिस बीच तुम प्रार्थना करो कि

अिस सँकरी गलीमेंसे सीधा रहकर पार हो जानेका अीश्वर मुझे बल दे। हिन्दू धर्मको जीना है, तो अछूतपनको मरना ही होगा।

"यह हो सकता है कि यह मेरा तुम्हारे नाम आखिरी ही खत हो। तुम्हारे प्रेमको मैंने हमेशा क़ीमती खज़ाना माना है। मैं मानता हूँ कि १९१४ में मैंने तुम्हें काअिटेरियनमें पहले-पहल देखा और सुना, तभीसे मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचान गया हूँ। मैं मरूँगा, तो यह श्रद्धा लेकर मरूँगा कि अीश्वरकी कृपासे मुझे तुम्हारे जैसे साथी मिले हैं, और जिस भावनासे हमने देशका काम शुरू किया था, अुसी भावनासे वे अुसे जारी रखेंगे। हमारे देशका काम पूरी तरह मानवताका काम है। देशका हित समस्त मानव-हितके साथ हमें सुसंगत रखना हो, अेक धर्म-सम्प्रदायका हित हमें अिस तरह करना हो कि अुसमें दुनियाके तमाम धर्म-सम्प्रदायोंका हित हो, तो वह मन, वचन और कर्मसे सत्य और अहिंसाका संपूर्ण पालन करनेसे ही हो सकेगा।

"अब अपनी मर्यादाअें समझनेके लिअे अेक छोटा-सा पाठ दे दूँ। तुम्हें मिठाअियाँ अच्छी बनानी आती होंगी। परन्तु अिससे यह न मान लेना चाहिये कि तुम्हें रोटी भी अच्छी बनाना आता है या तुम्हें अच्छी रोटीकी परख है। मेरी गेहूँके रंगकी रोटी तुम्हारी 'सुन्दर सफ़ेद रोटी'से सचमुच ही बढ़िया है। अिसका मज़ेदार और जानने लायक अितिहास है। यह तुम मेजर भण्डारीसे, वे कहें तो, सुन लेना। यहाँ तो मेरी स्वादिष्ट और सुपाच्य गेहूँके रंगकी रोटी और चमड़े जैसी चीठी चपातीके बीच चुनाव करनेका प्रश्न था। जिन्हें अैसी चपातियाँ मिलती थीं, अुन्होंने गेहूँके रंगवाली रोटी पसन्द की। पहलेसे ही तुम्हारी माफी मंजूर कर लेता हूँ।"

पद्मजाका सुन्दर पत्र आया था। अुसका जवाब:

"प्रिय पद्मजा,

१८-९-'३२

"तेरा सुन्दर पत्र मेरे लिअे क़ीमती खज़ाना है। अुसके बाद माताजीका प्रेममय अुपदेश आया है। तू मुझे अितना घमण्डी न समझ कि मुझे 'मित्रों, साथियों और हमजोलियोंकी' प्रार्थनाकी ज़रूरत न हो। यह बात सच है कि अपने आसपासकी हवासे, जिसमें मैं साँस लेता हूँ, भी अीश्वर मेरे ज़्यादा निकट है। निर्दोष बालकोंकी प्रार्थनामें मैं अुसीकी अदृश्य अुपस्थिति अनुभव करता हूँ। अुसीके सहारे मैं टिका हुआ हूँ। अिसलिअे तू ज़रूर प्रार्थना करना कि मेरे सामने जो अग्नि-परीक्षा आअी है, अुसमेंसे पार होनेका वह मुझे बल दे।

"'अच्छी हो जा और खूब सेवा कर।

"'तेरे निकटके मित्र, साथी और हमजोलीकी तरफ़से प्यार।

— गुलामोंका हाकिम।"

पद्मजाका पत्र :

"सारी दुनियाके प्यारे,

"हमारे लिअे तो ये दिन अपार दुःखके हैं। बुद्धने फिर अवतार लिया है और वह भूखे शेरके सामने अपना शरीर रख दे रहा है। अैसे समय हमें तो आत्माके अिस परमानंदसे वंचित रहकर प्रतिक्षण अिस शारीरिक वेदनामें भाग लेना पड़ता है। अपने हृदयका गहरा प्रेम मैं आपको भेजती हूँ। हाँ, यह प्रेम आपके ज़रा भी योग्य नहीं है। मेरी प्रार्थनाओंकी भी आपको ज़रूरत नहीं है। क्योंकि जेलकी कोठरीमें आप जो हवा लेते हैं, अुससे भी अीश्वर आपके ज़्यादा नज़दीक है। अीश्वरकी कृपासे जीवनमें मिली हुअी अनेक सुन्दर वस्तुओंमें निकटके मित्र, साथी और हमजोलीके रूपमें आपको पानेका जो क़ीमती अधिकार मुझे मिला है, अुसके लिअे अत्यंत आनंदमय नम्रतासे मैं अीश्वरका अुपकार मानती हूँ। खुदा हाफ़िज़।"

कैलनबेकको :

"प्रिय 'लोअर हाअुस',

"मैं अगर मर गया, तो अिस आशाके साथ मरूँगा कि तुम्हारे बारेमें तुम और मैं जो अभिलाषा लम्बे समयसे रखते आये हैं, वह तुम किसी न किसी दिन पूरी करोगे।

"अगर अिस शरीरसे अीश्वरको अधिक काम लेना होगा, तो वह अिस अग्नि-परीक्षामेंसे मुझे पार अुतारेगा। मैं जीता रह जाअूँ, तो तुम जहाँ तक हो सके जल्दी आनेकी कोशिश करना और मुझसे मिल लेना। अभी तो यह अंतिम राम-राम है।

'अपर हाअुस' की तरफ़से खूब प्यार।"

"चि० मणिलाल और सुशीला,

"तुम दोनोंका खयाल आया ही करता है। लेकिन मैं यह मानकर आश्वासन लेता हूँ कि तुम दोनोंमें धीरज और वीरता है। यहाँ दौड़ आनेकी अिच्छा तो होती ही होगी। अुसे रोकना। मेरी सारी आशाअें पूरी करना। जानते हो, मैं तुम दोनोंसे क्या आशा रखता हूँ? बापू जो विरासत छोड़ जाते हैं, अुसमें खूब वृद्धि करना। अीश्वर तुम्हारा कल्याण ही करेगा।"

"माधवदास और कृष्णा,

"तुम दोनोंके पत्र मिल गये। मेरे व्रतसे बिलकुल घबरानेकी बात ही नहीं। अुसका अुल्लास ही हो सकता है। अैसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। तुम दोनों पर अिसका परिणाम यह हो कि तुम्हारी त्यागवृत्ति और सेवावृत्ति बढ़े। आर्थिक कष्टका अफ़सोस न करके, जो मिल जाय अुसीसे गुज़र चला लेना चाहिये। मेरे अिस शरीरसे सेवा लेनी होगी, तो प्रभु निभा लेगा। अगर सेवा न लेनी होगी, तो अुसका नाश कर देगा। दोनों ही तरहसे ठीक है। मनमें यह विचार दृढ़ रखना चाहिये कि अुसकी अिच्छाके बिना अेक तिनका भी नहीं हिल सकता। मौन लेनेके बाद यह पत्र लिखा है।"

राजगोपालाचार्यजीने थोड़ीसी पंक्तियोंमें अपना हृदय अुँडेल दिया :

"जेलमें आपसे मिलनेकी मैंने जो माँग की, अुसके जवाबमें अिनकारका पत्र सरकारकी तरफ़से अभी मिला। आपने मुझे मद्रास जो पत्र लिखा था, वह मुझे यहाँ मिला। क्योंकि वह मद्रास पहुँचा, अुससे पहले मैं वहाँसे निकल गया था। पत्रके लिअे आपका आभार मानता हूँ। मैं किसलिअे झूठ बोलूँ? मैं आपके अिस फ़ैसलेसे खुश नहीं हो सकता। अिस आत्महत्याका मैं कोअी बचाव नहीं पाता। अीश्वरकी दी हुअी ज़िन्दगीका आपको दुनियाके लिअे अुपयोग करना चाहिये। सोनेका अंडा देनेवाली मुर्गीको आप मारने चले हैं। क्षमा कीजिये। अगर अुस समय तक मुझे मुक्त रहने दिया गया, तो 'आप छूटेंगे' तब मैं आपसे मिलनेकी आशा रखता हूँ। मुझे बहुत दुःख होता है। मेरे पास दूसरे शब्द नहीं हैं। आपको लगेगा कि मैं सत्याग्रहके सिद्धान्त भूल गया हूँ। लेकिन मुझे अैसा नहीं लगता। प्यार।

सी० आर."

अुन्हें जवाब :

"प्रिय सी० आर,

"आपका दुःख देखकर मेरा हृदय द्रवित होता है। अन्तर्नादकी सत्यताके बारेमें मेरे दिलमें ज़रा भी शंका नहीं है। और मुझे यह भी विश्वास है कि आप अन्धकारमेंसे जल्दी ही प्रकाश देख सकेंगे।

बहुत-बहुत प्यार,
बापू।"

डॉ० मुथुका पत्र :

"यह कह रहा हूँ, अिसके लिअे क्षमा कीजियेगा। लेकिन आप जीयें और तन्दुरुस्त रहें, अिसकी हमारे लोगोंको ज़रूरत है। आपके बिना वे क्या करेंगे? बिना मालिकके सूने पशुकी-सी अुनकी हालत हो जायगी।"

अुत्तर :

"आपके और आपकी पत्नीके खूब ममता और प्रेमभरे पत्रका मेरे दिल पर बहुत असर हुआ। लोगोंको मेरी अिस देहकी ज़रूरत होगी और अीश्वरकी अिच्छा होगी, तो लोगोंके सम्मानपूर्वक समझौता कर लेनेतक, जिससे हमारे दलित भाअी सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे, मैं जीता रहूँ। आपकी और श्रीमती मुथुकी प्रार्थना अिस अग्नि-परीक्षामें मुझे टिकाये रखेगी।"

आज छः बजे मेजर भंडारी आये और बापूको घनश्यामदास, सर पुरुषोत्तमदास, मथुरादास विसनजी खीमजी और सर चुनीलालसे मिलने ले गये। बापूका मौन था। बापूने कल रातको ही क़रारका मसौदा तैयार किया था। अुस पर आज सवेरे वल्लभभाअीने बहुत तेज़ होकर बातें की थीं : 'यह चीज़ खलबली पैदा करेगी। अिसके लिअे हिन्दू समाजको नोटिस चाहिये। अिन लोगोंको तो आपका अुपवास छुड़वानेसे मतलब है। आप यह सब अेक साथ माँग करेंगे, तो समाज पर बलात्कार होगा। आप अिस तरह समाजको मजबूर नहीं बना सकते,' वग़ैरा वग़ैरा।

बापूने समझाया : "यह अुपवास छोड़नेके लिअे नहीं है। लेकिन आज अुपवास छोड़ दूँ, तो फिर आगे मेरा व्यवहार कैसा होगा, यह बात मैं अिन लोगोंसे छिपी कैसे रख सकता हूँ? समाजके पाससे मैं जो चाहता हूँ, वह मिलना ही चाहिये। भले ही समाज छः महीनेकी नोटिस माँगे। मगर अुस दिन सारे मन्दिर, सारी पाठशालाअें और सार्वजनिक संस्थाअें खुली हो ही जानी चाहियें। अिस विषयके करार पर महाराजोंके भी हस्ताक्षर चाहिये।"

वल्लभभाअी : "मगर आम्बेडकरको अिनमेंसे कुछ नहीं चाहिये। अुसे तो अपनी बैठकें चाहियें।"

बापू : "मगर मुझे आम्बेडकरसे क्या काम है? फिर भी यह आदमी जो कहता है कि 'गांधीको क्या चाहिये, अिसका मुझे पता नहीं', वह कहनेका अुसे अधिकार है। अिसलिअे मुझे क्या चाहिये, अिसकी जानकारी दिये देता हूँ। यही बात सरकारके मारफ़त मेरे भेजे हुअे बयानमें गर्भित रूपसे मौजूद है। यह बयान जब तुमने जाने दिया, तो अिस करारके विरुद्ध तुम्हें क्यों आपत्ति है?"

सुबह 'अिंडियन सोशिअल रिफॉर्मर' आया। अुसमें 'अेक हिन्दू'का 'महात्माजीकी प्रतिज्ञा' नामक लेख आया। अुसमें मानो यही क़रार दिया गया है; अिसके अलावा, जो मन्दिर और महाराज न समझें अुनका बहिष्कार करनेकी सूचना भी देखी, और बापू प्रसन्न हो गये। यह तो विषयान्तर हो गया। मगर

सर पुरुषोत्तमदास वग़ैरा जो लोग आये थे, अुन्हें करारके साथ यह लेख बताने लायक था, अिस बातसे भी बापूको बहुत आनंद हुआ।

बातें सब मेजरकी ग़ैर हाज़िरीमें हुअीं। बापूने थोड़ेमें सब बातोंका सार बताया। वह अुन्हींके शब्दोंमें अिस प्रकार है। कल मौन खुलेगा, तब ज़्यादा पता चलेगा।

"घनश्यामदास, मथुरादास, पुरुषोत्तमदास और चुनीलाल, अितने लोग मिले। राजा और केलकरको अिनकार कर दिया। अिन लोगोंका अनुमान यह है कि अलग-अलग हर व्यक्तिको अिजाज़त नहीं देंगे, मगर किसी संस्थाकी तरफ़से अिजाज़त माँगी जायगी तो मिलेगी। मेरा अनुमान यह है कि अब क़ैदीके रूपमें ही मुझे रखेंगे, अिसलिअे मिलनेकी छूट दी है। अिन लोगोंसे हम ज़्यादा जानते हैं। मेरा परसों क्या होगा, अिसका अिन लोगोंको कोअी खयाल नहीं है। मैंने सब बातें कह कर करार बताया। करार वे ले गये हैं। कल वापस देंगे। अुसे समझनेमें अुन्हें बाधा नहीं पड़ी। घनश्यामदासने तुरन्त अुसके दो भाग कर दिये। अेक अुपवास तोड़नेके सम्बन्धमें और दूसरा महाराजों वग़ैराके हस्ताक्षर लेनेके सम्बन्धमें। अिस मामलेमें मेरा छः मासका नोटिस लेनेको ये लोग तैयार दिखाअी दिये। बयान भी सारा पढ़ा गया। वह अुन्हें बहुत अच्छा लगा। बाहर जाकर वे बयान देंगे कि मौनके कारण बहुत बात नहीं कर सके, मगर कुछ मुश्किलें दूर हुअी हैं। गांधी देखनेमें तंदुरुस्त और प्रसन्न मालूम हुअे।

"अिस सारी हलचलके पीछे घनश्यामदास है। मुंजेसे बयान दिलानेवाले वही हैं। शायद आम्बेडकरसे अब मिलेंगे। मैंने अेक ही हाथमें सब कुछ सौंपनेके विरुद्ध खूब सचेत कर दिया है। ये लोग मानते हैं कि आम्बेडकर आज यहीं है। अैसा जान पड़ता है कि यह आदमी बेन्थॉलके हाथमें खेल रहा है। ज़रूरत हो तो बेन्थॉलने आकर मदद देनेको कहा है। कारण अल्पमतोंके करारमें अुसका हाथ था। अकेले बिड़लासे मिलनेकी बात तो चल ही रही थी। अितनेमें यह हो गया। बंगालका गवर्नर मेरी मुलाक़ात (राजनैतिक मामलेमें) करानेमें अिसकी मदद कर रहा था। घनश्यामदास बोले कि कलकी मीटिंगमें कुछ नहीं रखा है। आदमी भी थोड़े ही आयेंगे।

"कल करार बना डाला, यह बहुत ही अच्छा हुआ। आज तो सारा समय समझानेमें ही चला गया। और मुझे यही ठीक लगा।"

छगनलाल जोशी को :

"अनशन व्रतका पूरा रहस्य समझमें आ गया होगा। खबरदार, हिम्मत न हारना। नरम तो पड़ना ही नहीं है। देहसे चिपटे रहनेसे क्या होगा? देहकी

ममता छोड़नेकी रटन तो आश्रममें रोज़ ही करते हैं। यह साबित करनेका अवसर अब आया है कि रटा हुआ हज़म भी हो गया है। तुम सब यह अिच्छा करना कि मुझे कसौटीसे पार अुतरना आ जाय। अुसमें प्रवेश करना तो तुलनामें आसान है, मगर तैर कर अुस पार पहुँचना कौन जानता है? अिसलिअे जबतक यह पूरा न हो जाय, तबतक खुश होनेका कोअी भी कारण नहीं है। परन्तु मैं तो यह आशा रख ही रहा हूँ कि भगवानके नाम पर आरंभ किया है, तो वह पार अुतारेगा। शोभित होना, शोभित करना।"

"चि० छगनलाल और काशी,

"रात थोड़ी है, पत्र बहुत लिखने है। तुम्हे क्या लिखूं? ये दिन अुत्सवके मानना। प्रभुदास, तुझे घबरानेकी मनाअी है। अपने ज्ञानका पूरा अुपयोग कर्तव्यपरायण रहनेमें करना। अीश्वर तेरी मदद ज़रूर करेगा।"

"तारामती,

"मेरे अनशनका दुःख न मानना। अुसके बजाय खुश होना कि अीश्वरने मुझे अैसी त्याग-बुद्धि सुझाअी है। देह तो अेक दिन छोड़ना ही है। लेकिन दुःखियोंके निमित्त छूटे, अिसके बराबर शुभ और क्या हो सकता है? मनुष्य खाते-पीते भी मरता तो है ही। यदि अीश्वरको मुझसे अब भी सेवा लेनी होगी, तो सारे संयोग पैदा हो जायँगे और मैं बच जाअूँगा। अगर मेरे दिन पूरे हो गये होंगे, तो किसी भी तरह बचनेका अुपाय ही नहीं।"

हंसा मेहताको :

"मेरे अनशनसे न तुम्हें घबराना है, न डॉक्टरको। मगर खुशी मनानी है कि तुम्हारे अेक साथीको अीश्वरने शुभ अवसर दिया है। अैसा अवसर तो कभी-कभी किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। और अीश्वरको मुझसे अिस देहके द्वारा सेवा लेनी होगी, तो वह किसी भी तरह जिलायेगा। और मेरी घड़ी आ पहुँची होगी, तो खाते-पीते भी नहीं बच सकता।"

जानकी बहन (बजाज) का मज़ेदार खत आया था कि मुझे तो 'सी' क्लासकी खुराक खाकर मरनेका डर था, अिसलिअे 'अे' क्लासका भोजन खाया। हुक्म यह है कि 'अे' क्लासका खाना दिया जाय और दूसरा सब कुछ कराया जाय।

१९-९-'३२

अुसे पत्र लिखा :

"'क' वर्गका भोजन लेनेसे तुम जैसोंको मरनेका डर लगता है, अिसीलिअे मैंने बिना खाये जीनेका रास्ता पकड़ा है। यह कलसे देख लेना। खाते-खाते तो सारा संसार मरता है। 'अ' वर्गका खाकर तू कितना जियेगी, सो देख लूँगा।

परन्तु अनशन करते-करते जीनेकी कला कैसी है? अेक शर्त ज़रूर है। तमाम माताओंको जोगन बनकर बाहर निकल पड़ना होगा और अछूतोंको स्पृश्य बनाकर खुद ओश्वरकी शक्ति होनेका अपना दावा साबित करना पड़ेगा। अितना करना। और फिर 'अ' वर्गकी ही खुराक खाती रहना। लेकिन कोअी 'अ' वर्गकी न दें, तो 'क' वर्गकी खुराकसे सन्तोष कर लेना।

"मगर मान लो जोगनोंकी भी कुछ न चली, तो फिर भले ही यह पुतला अभी टूट-फूट जाय। मैं तो जीअूँगा ही। जब तक अेक भी माता मेरा काम करती रहेगी, तब तक कौन कहेगा कि मैं मर गया? हम भले ही आत्माकी अमरता सम्बन्धी गीताका तत्वज्ञान छोड़ दें। पर मैंने जो अमरता बताअी, वह तो चमड़ेकी आँखोंसे भी दिखाअी दे सकती है। अिसलिअे खबरदार! ज़रा भी मत घबराना। शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन ओश्वरको सौंप कर सुखी होना और सुखी रहना। नखराखोर ओमको और ज्ञानी मदालसाको आज नहीं लिखा जा सकता। यह तुम सबके लिअे है, असा समझ लेना। अखण्ड सौभाग्य भोगो।

बापूके आशीर्वाद।"

अपने बड़े भाअी खुशालभाअीको:

"जिस यज्ञका कल आरंभ होता है, वह आपको पसन्द आया होगा। अगर वह आपको धर्मसंगत लगा हो, तो अंजली भरकर दोनों बुजुर्ग आशीर्वाद भेजना। अगर आपसे पहले चला जाअूँ, तो शोक न करना। परन्तु यह जानकर खुश होना कि आपको असा छोटा भाअी मिला, जिसे ओश्वरने असा यज्ञ पूरा करनेकी शक्ति दी। आपने भाअीसे ज़्यादा मेरी ज़रूरत पूरी की है। मेरी भाभीको आराम हो गया होगा।

"अिस प्रातःकालमें सिर नमाते हुअे आपके छोटे भाअी,

मोहनदासका दोनोंको प्रणाम।"

. . . को:

"तुम्हारा अत्यंत सुन्दर पत्र पढ़ कर हम सबको बड़ा हर्ष हुआ। तुम बहुत अूँचे पहुँच गये हो। और भी अूँचे जाना। ओश्वर तुम्हें ज़रूर बल देगा। तुम्हारे खतका जवाब तो लम्बा देना चाहिये। मगर अभी अुतना वक्त नहीं दे सकता। यह पत्र रख छोड़ूँगा। समय और शक्ति होगी, तो लिखूँगा। नहीं तो कोअी बात नहीं। अिस यज्ञसे तुम या कोअी भाअी घबराये न होंगे। ओश्वर ही अिसे करा रहा है, वही अिसे पार लगायेगा। अिस अछूतपनको मिटानेके लिअे हमें कितने यज्ञ करने पड़ेंगे, सो नहीं कहा जा सकता। अुसके लिअे तैयार होना। तैयारीका अर्थ आत्मशुद्धि ही है। आत्मशुद्धिमें कार्यदक्षता आ ही जाती है।

“ बारीक सूत महँगा तो पड़ेगा ही। परन्तु हममें ढाकेकी मलमलका पुनर्जन्म करनेकी शक्ति होनी चाहिये। अैसा करते हुअे रास्तेमें बारीकसे बारीक खोज कर सकते है। पहले अैसा सूत राजा लोग बेगारमें कतवाते और बुनवाते थे। अब हम अुसे यज्ञके रूपमें कातें और बुनें। अिसलिअे अुसकी क़ीमतका प्रश्न ही नहीं रह जाता और हाथ-कताअीकी महिमा बढ़ती है। अीश्वरकी अिच्छा होगी, तो यह ज्यादा समझाअूँगा।”

लक्ष्मीदासभाअीको :

“ तुम्हारी अुम्र बड़ी हो तो भले ही हो, मगर मैंने अमृतसरमें हम पहले-पहल मिले तभीसे तुम्हें ज्ञानी लड़कोंमेंसे माना है। अिसलिअे यह मानता हूँ कि तुमने अनशनको ठीक तरहसे समझा है। और यह भी मान लेता हूँ कि मैं चला जाअूँ, तो तुम विरासतको शोभित करोगे। और अिसीलिअे ज़रूरतके बिना तुम्हें लिखता भी नहीं।”

वेलांबहनको :

“ तुमने अच्छा धीरज रखा। आनंदीकी ज़रा भी चिंता न करना और मेरी भी चिन्ता न करना। मिट्टीके पुतलेको जाना हो, तो भले ही जाय; और फिर वह धर्मके काममें खप जाय, तो अिसके बराबर सुन्दर और क्या हो सकता है! मैं तो तुम्हारे पास ही पड़ा हूँ। फिर किसके लिअे रोओगी? आश्रमको शोभित करना, शरीरकी रक्षा करना और अुसे सेवामें लगाये रखना।”

वालजी और दूधी बहनको :

“ तुम पर मेरी बेहद श्रद्धाको तुम जानते हो। अुस सबको सिद्ध करनेका बल अीश्वर तुम्हें दे। महायज्ञके लिअे शरीरकी जितनी रक्षा हो सकती हो, अुतनी करना।”

गंगाबहनको :

“ मेरे यज्ञसे बिलकुल न भड़कना, अुत्तेजित भी न होना। अैसे यज्ञ तुम सबसे कराने हैं। अगर देहको छूटना होगा, तो अिस श्रद्धासे छोड़ूँगा कि तुम लोग अैसे यज्ञ कर सकोगी। जब बहुतसे पापोंकी तह जम जाती है, तब अुनका प्रायश्चित्त अिसी तरह होता है। अैसे व्रतोंका अनुकरण नहीं हो सकता। अपने अन्तरसे पैदा हों, तो ही पार वे लगते हैं। अन्तर्शुद्धि न होने पर भी पैदा हो जाय, तो वह अनशन राक्षसी हो सकता है। अिसीलिअे अैसे यज्ञ पहले अन्तर्शुद्धि हुअी हो, तो ही किये जा सकते हैं। अिस शुद्धिको प्राप्त करनेके लिअे ही आश्रमकी हस्ती है।

“ मगर तुम तो कहती हो कि अुसकी बहुत निन्दा सुन रही हो। अिस निन्दाको सहन करना चाहिये। निन्दाके पीछे जितना सच मालूम हो, अुतना

पकड़ लेना और सुधार करना चाहिये। जो गलत जान पड़े, अुसके बारेमें तटस्थ रहना चाहिये। मनुष्योंको जैसा लगे, वैसा कहनेका अधिकार है। और कोअी-कोअी तो केवल द्वेष-भावसे भी निन्दा कर सकते हैं। अैसी निन्दाका तो विचार ही नहीं करना चाहिये।

"तुम्हारी अशान्तिके बारेमें। अुसके दो कारण हैं। अेक तो तुम्हें अपने कामसे सन्तोष नहीं रहता। जितना हो सकता है, अुससे बहुत ज़्यादा करनेका लोभ रहता है। हदके भीतर यह लोभ अच्छा है। हदसे बाहर चला जाय, तब वह दुःख देता है। अिससे भी ज़्यादा अशान्तिका कारण तुम्हारी असहिष्णुता है। जितना तुम कर सकती हो, अुतना दूसरा न करे या तुम्हारी न माने, तो तुम्हें बेचैनी होती है। अिसकी दवा आसान है। जितना काम तन-मनसे करने पर हो सके, अुतनेसे सन्तोष करना और जितना आगे बढ़ा जा सके, आगे बढ़ते जाना चाहिये। अितना जान लो कि स्वर्ग जानेका जितना अधिकार वेद जाननेवालेको है. अुतना ही भंगीका काम करनेवालेको है। लेकिन वेद जाननेवाला केवल वेदिया या पाखंडी हो, तो कितना ही विद्वान होने पर भी वह नरकमें पड़ेगा; और भंगी ब्रह्म अक्षर न जाने, तो भी अीश्वरार्पण बुद्धिसे पाखाने साफ़ करे तो ज़रूर अूँचा चढ़ जायेगा। यह सन्तोष तो अेक दवा हुअी। दूसरी, अुदारता है। हम चाहें या करें, अुतना दूसरे न करें, तो भी मनको बुरा न लगना चाहिये। अैसा करनेसे ही समाजके निकट रह कर भी शान्ति क़ायम रख सकेंगे। अिस पत्र पर नाथके साथ दो-चार बार विचार कर लेना। तुम शोभित होना और आश्रमको शोभित करना।"

पुत्रवधू नीमूको :

"तू ज़रा भी न घबराना। रामदास जैसा वीर और साधु तुझे सौंपा है, फिर तू किस लिअे घबराये? मुझे कहाँ तक बचाकर रखोगे; और रखना ही हो तो मैं तो रोज़ ही तुम सबके पास मौजूद हूँ। देह तो जड़ है। अुसका क्या करेगी? शुक्रवारको रामदासके साथ दो घंटे बैठा था। अुसने ज़रा भी घबराहट नहीं दिखाअी। मैं पिता और शिक्षकके नाते फूला न समाया। तू भी अैसी ही बनना और बच्चोंको सँभालना। घी-दूध लेती रहना।"

"चि० नानीबहन झवेरी,

"अितने अधिक दिन तक मुझे पत्रके बिना तरसाया, अुसकी माफी तो नहीं देनी चाहिये। मगर यज्ञका आरंभ करते समय तो बड़ेसे बड़े बैरीको भी माफी दी जाय, तभी यज्ञ सफल होता है। अिसलिअे तुम्हारे जैसी लड़कियोंको माफी न दूँ, तो मेरा सफाया ही हो जाय न!"

पुत्रवधू लक्ष्मीको (हिन्दीमें) :

"क्या जाने अीश्वर क्या करना चाहता है। मेरे यज्ञसे तुम्हें घबरानेका नहीं है। देखो देवदासने कैसा सुन्दर खत अखबारमें निकाला है? वह घबराया नहीं है, परन्तु हर्षमें आ गया है। और होना भी अैसा ही चाहिये। धर्मके कारण देहका बलिदान देनेका अवसर किसीको क्वचित् ही मिलता है। अीश्वर तुम सबका कल्याण ही करेगा। और अुसकी अिच्छा होगी, तो अिस मृत्यु-शय्या परसे मैं अुठ खड़ा होअूँगा।"

विनोबाका पत्र अिन्हीं दिनोंमें आया था। अुसमें अुनके ग्राम-प्रचारका वर्णन था। 'कलिः शयानो भवति' कह कर कृतयुगमें 'घूमने' का धर्म है और हमें कृतयुगी होना चाहिये, अैसा भाव व्यक्त किया था। अुन्हें लिखा :

"कृतयुगी विनोबा,

"तुम्हारे कृतयुगका द्वेष करनेका कोअी कारण नहीं, क्योंकि हमारे पास भी कृतयुगी सरदार हैं। अिसलिअे तुमसे कमसे कम अेक बालिश्त तो बढ़ ही गये न? तुम्हें पता है कि सरदार तो अधिक समय घूमते ही रहते हैं? अुनकी चले तो खायें भी घूमते-घूमते और कातें भी घूमते-घूमते। बुढ़ापेमें गीता तो घूमते हुअे ही रटते हैं। अुच्चारणके लिअे अुन्हें तुम्हारे पास भेजना चाहिये, और तुम्हारे हाथमें अेक बेत देनी चाहिये। लेकिन यह अवसर तो तुम्हें मिले तब!

"तुम गरीबोंको काफ़ी फुसलाते दीखते हो! मेरे जैसे गरीबको जब तुम्हारे पत्रकी चिन्ता हो, तब तो अुसे लिखना ही नहीं और जब वह मृत्यु-शय्यापर सोनेकी तैयारी करे, तब अुसे लिखना कि 'अब आरंभ किया है, तो नियमित लिखूँगा।' मगर भगवान जाने। कृतयुगियोंकी प्रतिज्ञाअें झूठी होती नहीं जानीं। अिसलिअे तुम्हारे प्रतिज्ञापालनके लिअे ही मुझे अिस बिस्तरसे अुठना हो तो भले। तो तुम्हारे पत्र नियमित मिलते रहनेकी आशा रखूँगा।

"अिस प्रकार दिल्लगी करके गंभीर पत्र लिख रहा हूँ। अिससे मनको खींचा और साथ ही साथ यह भी सुझाया कि तुम्हारे कामके बारेमें कहीं भी आलोचना करने लायक बात नहीं है। बताना। अगर अग्नि-परीक्षामेंसे देह और जीव दोनों पार लग जायँगे और कोअी लिखने जैसी बात होगी, तो लिखूँगा। तुम्हारा पत्र रख छोड़ता हूँ।"

प्राचीन कालमें आकाशसे तपस्वियों पर पुष्पवृष्टि हुआ करती थी। आज सुबहके समय क्या यह वैसी ही नहीं कही जा सकती? अीसाअी सेवा संघके भाअियों और बहनोंने बापूके लिअे फूल भेजे। अुन पर 'बापूजीको अीसाअी सेवा संघके भाअियों और बहनोंकी तरफ़से' अितना ही लिखा था। बापूने लिखा :

" ओसाओ सेवा संघके प्यारे भाअियो और बहनो,

" फूलोंकी भेटके बिना भी मैं जानता हूँ कि आपके हृदय और आपकी प्रार्थनाअें मेरे पास ही हैं। फिर भी अुनके अिस प्रतीकको मैं क़ीमती मानता हूँ।

प्यार, बापू । "

छोटी कुसुमने पूछा था कि लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं, तब अुन्हें तुरंत ब्याह देनेकी बात कैसे करते हैं ? और लड़के बीमार पड़ते हैं, तब तो शादी कर देनेकी बात नहीं करते। अुसे लिखा : " मेरे व्रतसे तुझे घबराना नहीं है। अपने धर्मके लायक आराम लेकर अपना शरीर बनाना है। अिस बारेमें ज़्यादा क्या लिखूँ ? लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं, तब शादी कर देनेकी बात करनेवाले अज्ञानी हैं। विवाहिता स्त्रियाँ जितनी बीमार रहती हैं, अुतनी कुमारिया कहीं नहीं रहतीं। और तूने लड़कोंके साथ तुलना की, सो भी ठीक है। फिर भी हमें अिस तानेका सीधा ही अर्थ करना चाहिये और बीमार पड़ना ही न चाहिये। बीमार न पड़नेके लिअे जैसा मैंने लिखा है, वैसे थोड़े ज्ञानकी ज़रूरत तो है ही। कुमारियोंके शरीर वज्रके समान होने चाहियें, वैसे ही कुमारोंके। सच पूछा जाय, तो आजकल दोनों ही बीमार रहते हैं। लेकिन दोनों ब्याह करके और भी ज़्यादा बीमार रहते हैं। देखो अुमिया, रुखी, हरिअिच्छाको। रुखीको विवाह फला हो, अैसा कुछ लगा ज़रूर मगर, अितनेमें तो वह भी बीमार पड़ गअी। अिससे लड़कियाँ यह भी अर्थ न कर डालें कि जो ब्याह करती हैं, वे बीमार पड़ती ही हैं। यह सही है कि जो कुमारियाँ विकारसे जलती हैं, अुनका छुटकारा तो शादी करनेसे ही होगा। क्योंकि अुनके विकार अुन्हें खा जाते हैं। मगर अिसका अर्थ तो यह हुआ कि वे विवाह किये बिना ही विवाहिता स्त्री की तरह व्यवहार करती हैं। अिसलिअे व्यभिचारिणी हैं। जो स्त्री या पुरुष मनसे भी विकारोंको पोषण देता है, वह व्यभिचारी ही है।

बापूके आशीर्वाद "

लड़कों और लड़कियोंको :

" तुम्हें कौन सी छूट पहले मिलती थी, जो अब नहीं मिलती ? यह सही हो, तो अेक डेपुटेशन लेकर नारणदास भाओके पास जाओ। अुनके तीन मिनट अपनी बातोंमें लेना और दो अुन्हें जवाबके लिअे देना चाहिये। फिर अगर मैं अपने बिस्तर पर करवटें बदलता होअूँ, तो मुझे लिखना; और मैंने आखिरी नींद ले ली हो, तो नाचना और प्रतिज्ञा लेना कि बापूका काम अब हम करेंगे। कैसा आनंद, कैसा मज़ा ! अैसी अग्नि-परीक्षाके लिअे सब तैयार होना। "

" चि० बबूड़ी (शारदा),

" तेरे प्रश्न कितने बढ़िया हैं ? जिसे मरना है, वह तो सदा ही मर सकता है : जीभ काटकर, गला घोंटकर, कोअी बाँध दे, तो बंधन तोड़नेमें हड्डियाँ तोड़कर और बहुत बड़ी सती स्त्री तो अपनी कल्पना मात्रसे मृत्यु ला सकती है। यह आत्महत्या तो कहलाती है, मगर कितने ही प्रसंगों पर आत्महत्या करना धर्म हो जाता है। स्त्री पर कोअी राक्षस बलात्कार करने आये, तो वह मौका आत्महत्याका है, बशर्ते दूसरा कोअी योग्य अुपाय न हो।

" विद्यार्थी मुझसे शरमाकर नहीं झगड़ेंगे अैसा नहीं, बल्कि अुन्हें खुद अपनी भूलोंसे शर्म होगी और वे नहीं झगड़ेंगे। मुझसे तो किसीको शरमाना ही न चाहिये।"

रामेश्वरदासको (हिन्दीमें) :

" मेरे यज्ञका सुनकर नाचो और रामनाम पर अधिक विश्वास रखो। देखो वह क्या करता है। अनशन मेरा नहीं, रामका है। चिंता मुझे नहीं, अुसको है। यदि निष्फल हुआ, तो निंदा अुसकी होगी, मेरी नहीं। सफल हुआ, तो अुसे स्तुति नहीं चाहिये, अिसलिअे अुसके द्वार पर पडा हुआ भिखारी मैं ले लूँगा।"

कन्हैयालालको (हिन्दीमें) :

" दरिद्र वह है, जिसमें शुद्ध प्रेमकी बूँद तक नहीं है। धनवान वह, जिसके प्रेममें जंतुसे लेकर मस्त हाथी समा सकता है। नास्तिक वह, जो शरीरके बाहर विश्वव्यापी आत्माको नहीं पहचानता। आस्तिक वह, जो हर जगह आत्माके सिवा और कुछ देखता नहीं।"

बाबलाको :

" कृष्णको पूछनेवाला अेक ही अर्जुन था, अिसलिअे अुसे सारे लाड़-प्यार क्यों न सूझें ? और फिर कृष्ण ठहरे ज्ञानी और मैं हूँ थोडे ज्ञानवाला। और पूछने वाले अर्जुन कितने हैं ? गिन तो सही। सभीको थोड़ा-थोड़ा बाँट दूँ, तो कितनी बड़ी और कितनी गीतायें हो जायँ ? क्योंकि कृष्णको तो अेक ही बार पूछा गया था, और मुझे तो अितने अर्जुन हर सप्ताह पूछते हैं।"

* * *

सरोजिनी देवीको जो पत्र लिखा, अुसमें क्राअिटेरियनका अुल्लेख है। अिस बारेमें बापू कहने लगे : "१९१४ में वह विलायतमें अिस नामके रेस्टोराँमें रहती थी। अुस समय अुसकी शौक़ीनीका पार नहीं था। मगर मुझसे मिलने आती, तब बिलकुल सादे वेशमें आती और मेरे सामने ज़मीन पर बैठती थी। मैं भी

अुस समय नीचे ही बैठता था। अिसमें अेक प्रकारकी जो सचाअी अुस वक़्त देखी थी, वह आज तक पाअी जाती है। यह स्त्री बम्बअीके दंगोंमें वीरांगनाकी तरह जूझती थी। अिस स्त्रीने कांग्रेसके अध्यक्षपदको भी शोभित किया था। अिसमें अहंताका नाम निशान भी नहीं है।"

* * *

बा की बात निकली। मैंने कहा: "बा तो शायद आपके साथ अुपवास कर बैठेंगी। यदि वे अुपवास करें, तो अुन्हें कोअी नहीं कह सकता और अुसपर कोअी आपत्ति भी नहीं कर सकता।"

बापू मौन थे, लेकिन हकारमें सिर हिला दिया। मगर आज बा का पत्र आया। अुससे जान पड़ता है कि वे बहुत व्याकुल हो अुठी हैं। बा ने आवेश ही आवेशमें बापूको कड़े वचन कह दिये हैं।

सर पुरुषोत्तमदास, चुनीलाल वग़ैराके साथ बातें करके बापू वापस आये और आश्रमके बाकी रहे पत्रोंको पूरा किया। बारह पत्र तो अपने ही हाथसे लिख चुके थे। बाकीके अब खत्म किये। यह है अेक छोटासा पत्र:

"तू अपने स्थानको शोभित करना। सीताजी रामकी संपत्ति नहीं थीं, परन्तु रामकी आँखोंकी पुतली थीं। सीताको वनवासमें भेजकर राम खुद वनवासी बन गये, क्योंकि अुनका हृदय सीताके साथ गया था। लेकिन कोअी मामूली आदमी अपनी स्त्रीके साथ अैसा बर्ताव नहीं कर सकता; क्योंकि स्त्री और खुद अेक ही हो, अैसा अलौकिक प्रेम देखनेमें नहीं आता।"

अनशनका मंगल प्रभात।

"प्रिय मित्र और भाअी,

२०–९–'३२ "मंगलवारको सुबह तीन बजेसे कुछ पहले ही मैं यह लिख रहा हूँ। गुरुदेवके नाम अेक छोटासा पत्र अभी पूरा किया है।

"वेदनाके अिन दिनोंमें तुम हमेशा मेरे सामने रहे हो। शायद तुम्हारे विचार भी मैं पढ़ सकता हूँ। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिअे मेरे दिलमें कितनी अिज़्ज़त है। हालाँकि कुछ मामलोंमें हमारे विचारोंमें ध्रुवके दो सिरोंके बराबर अन्तर है या अैसा दीखता है, फिर भी हमारे हृदय अेक हैं। अिसलिअे जब-जब तुम्हारे साथ सहमत हो सकता हूँ, तब-तब मेरे लिअे वह आनन्दका विषय होता है। मेरा यह क़दम तो शायद तुम्हारे लिअे आखिरी तिनका साबित हो। अैसा हो जाय, तो भी तुम्हारे घावमें मैं शरीक होना चाहता हूँ। कारण मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे लिअे प्रयत्न करना छोड़ दो। मेरा खयाल है कि मैं अपने बड़े भाअीसे चौदह वर्ष बहिष्कृत

रहा। वे हर साल मेरे नाम रजिस्टर्ड पोस्टसे गालियाँ भेजते थे। अुनकी गालियोंसे मुझे तो आनन्द ही होता था। क्योंकि ये गालियाँ प्रेमकी चिनगारियाँ ही थीं। अन्तमें मैं अुन्हें जीत सका। अुनके मरनेके छः महीने पहले अुन्हें अपनी भूल मालूम हुअी और लगा कि मेरी बात सच थी। अुनके गुस्सेका अेक कारण तो यह अस्पृश्यताका सवाल ही था। हमारे मामलेमें मैं नहीं जानता कि भूल किसकी है। मगर मैं यह जानता हूँ कि तुम मेरे सगे भाअी जैसे हो। संभव है, यह मेरा अन्तकाल भी हो। अैसे समय भी तुम्हें मेरे लिअे प्रयत्न करना छोड़ना न चाहिये। तुम मुझे अपनी गालियाँ भेजो या अपने आशीर्वाद भेजो। तुम्हें अैसा लगे कि मेरी बात गलत है, तो दूसरोंके असफल होने पर भी शायद तुम मेरी आँखें खोल सको। तुम मुझे अितनी अच्छी तरह तो जानते ही हो कि मेरे बारेमें यह मान लो कि मुझे विश्वास हो जाय, तो अपनी भूल सुधारनेकी मुझमें अीश्वरदत्त शक्ति है। मुझे पत्र लिखो या तार दो।

"अेक महीने पहले मैंने पत्र लिखकर तुम्हारी तबीयतका हाल पुछवाया था। मेरा वह पोस्टकार्ड तुम्हें मिला या नहीं?"

"प्रिय गुरुदेव,

"मंगलवारको प्रातःकाल तीन बजे है। आज दोपहरको मेरा अग्निप्रवेश होगा। अिस कार्यको आप अगर आशीर्वाद दे सकते हों, तो मुझे आपका आशीर्वाद चाहिये। आप मेरे सच्चे मित्र हैं, क्योंकि आप साफ़ कहनेवाले हैं और जो दिलमें होता है, वह स्पष्ट कह देते हैं। मैंने आपसे अुपवासके पक्ष या विपक्षमें आपकी पक्की रायकी आशा रखी थी। लेकिन आपने आलोचना करनेसे अिनकार कर दिया। अब तो यह आलोचना अुपवासके दौरानमें ही आ सकती है। अगर आपका हृदय मेरे अिस कार्यकी निन्दा करता हो, तो भी आपकी आलोचनाको मैं भेंट समान मानूँगा। मुझे अपनी भूलका पता लग जाय और अुसका अिक़रार करनेकी कुछ भी क़ीमत चुकानी पड़े, तो भी मैं अितना अभिमानी नहीं हूँ कि अपनी भूलका खुला अिक़रार न करूँ। आपका दिल मेरे अिस कामको पसन्द करे, तो मुझे आपका आशीर्वाद चाहिये। वह मुझे बल देगा। मुझे आशा है कि मैं अपनी बात साफ़ कह सका हूँ।"

शास्त्रीको देवधरके मारफत पत्र भेजा। देवधरका कल पत्र आया था कि यह सोसायटी आपका घर है और आप यहाँ आकर रहिये।

"प्रिय भाअी देवधर,

"सोसायटीका घर ज़रूर मेरा ही घर है। मैं स्वेच्छासे अुसके बाहर रहा हूँ। अीश्वरकी अिच्छा होगी, तो वह मुझे वापस घर भेज देगा।

"मुझे ज़रा भी खयाल नहीं कि यह अुपवास कहाँ शुरू होगा। यह अद्भुत परीक्षा है। मैं अिस सबका पात्र हूँ, क्योंकि मेरा दिल हिन्दू है। अछूत लोगोंके साथ हमने जो बर्ताव किया है, अुसके लिअे क्या हम अीश्वरकी तरफ़से अति भयंकर सज़ाके पात्र नहीं हैं? मुझे अछूतोंमें शामिल करनेसे पहले वह मेरी हर तरहसे जाँच कर रहा है। मैं पचास बरससे अिसकी अभिलाषा कर रहा हूँ। कृपया साथका पत्र शास्त्रीको भेज दें।"

शिन्देने अहल्याश्रम नामके अस्पृश्योद्धार आश्रममें आनेका बापूको निमंत्रण भेजा था। अुसे जवाब:

"आपका मर्मस्पर्शी पत्र मिला। मुझे कुछ भी खयाल नहीं कि मुझे कहाँ रखा जायगा। अभी तो कुछ भी कहना बहुत जल्दी होगा। यह निश्चित है कि आज बारह बजे मेरा अुपवास शुरू होगा। कहाँ, कब और कैसे अुसका अन्त होगा, यह अेक अीश्वर ही जानता है। आपकी सहानुभूति और आमंत्रणके लिअे धन्यवाद।"

मीराको:

"आज ढाअी बजे अुठ गया हूँ। गुरुदेवको और शास्त्रीको पत्र लिखे। अब तुझे लिख रहा हूँ। तेरा हृदय-विदारक पत्र मिल गया। पहले तो मुझे लगा कि यह पत्र मैं गवर्नरको भेज दूँ। मगर यह विचार जैसे ही मनमें आया, वैसे ही निकाल डाला। तूने भट्टीमें तपना पसन्द कर लिया है। अिसलिअे तुझे अुसमें रहना ही चाहिये। अितने वर्षोंमें तू देख सकी होगी कि मेरा सत्याग्रह छोटे बच्चोंका खेल नहीं है। अिसलिअे तुझे ज़हरकी आखिरी बूँद तक पीनी होगी।

"अपनी प्रतिज्ञाकी सूचना देनेवाला पहला पत्र मैंने (सरकारको) लिखा, तब मुझे तेरा और बा का खयाल आया था। घड़ी भर तो मुझे चक्कर आ गया। तुम दोनों यह किस तरह सह सकोगी? परन्तु मेरे अन्तर्नादने कहा, 'अगर तुझे अिसमें प्रवेश करना है, तो तुझे आसक्तिके तमाम विचार छोड़ देने चाहियें।' बादमें पत्र गया। अछूतपनका पाप धोनेके लिअे कोअी भी वेदना अधिक नहीं है। अिसलिअे अिसे सहन करनेमें तुझे खुश होना चाहिये और बहादुरीसे सहन करना चाहिये। मैं जानता हूँ कि अैसा करना कितना कठिन है। फिर भी तुझे अिसीका प्रयत्न करना है। ज़रा विचार कर और समझ कि मुझे आखिरी बार देख लेनेका कोअी अर्थ नहीं है। जिस आत्माको तू चाहती है, वह तो सदा तेरे पास ही है। जिस शरीरके द्वारा तू अुस आत्माको चाहना सीखी, अुस शरीरकी अिस प्रेमको क़ायम रखनेके लिअे कोअी जरूरत नहीं।

जब तक शरीरका अुपयोग है, तभी तक वह रहे, अिसीमें भलाअी है । और जब अुसका अुपयोग न रहे, तब अुसका नाश हो जाय, यह भी अुतना ही अच्छा है । अिस शरीरका अुपयोग कहाँ तक होता है, यह हम नहीं जानते । अिसलिअे किसी भी कारणसे मृत्यु हो जाय, तो हमें यही मानना चाहिये कि शरीरका अुपयोग नहीं रहा था । अिससे तुझे कुछ भी सन्तोष मिलता हो, तो मैं बता दूँ कि वल्लभभाअी, महादेव, रामदास, सुरेन्द्र और देवदास, जिनसे मैं मिला हूँ, वे सब अिस चीज़को अच्छी तरह सहन कर रहे हैं । तेरे साथियोंको प्यार । किरण तेरे साथ है, अिससे मुझे आनंद होता है । वह बड़ी अच्छी और बहादुर लड़की है । अीश्वर तुझे यह सहन करनेकी शक्ति दे ! ”

नाथका पत्र : अुन्होंने बहस नहीं की, मगर बताया है कि यह क़दम धर्म-संगत नहीं लगता । अिसमें समष्टिका श्रेय नहीं । भावना और विवेक आपमें अधिक है, परन्तु अुनका प्रवाह धर्मके रास्ते पर होना चाहिये, सो नहीं है ।

अुन्हें अुत्तर :

“ तुम्हारे पत्रकी राह देख ही रहा था । कल रातको ही वह मिला । तुम्हारे साथ चर्चा हो सकती, तो अच्छा लगता । अुपवासके बीचमें भी मुझे अुपवासका अधर्म प्रत्यक्ष हो जाय, तो बिना शर्मके मैं अुसी क्षण अुसे छोड़ दूँगा । अिस संसारमें मुझे अेक ही शर्म है — असत्य विचारने, बोलने या आचरण करनेकी ।

“ यह काम बुद्धिसे नहीं हुआ, अन्तर्नादसे हुआ है । मगर बुद्धिने यों कहा : ‘ अछूतपनका मैल धोनेके लिअे शायद तुम्हारे जैसे सैकड़ोंको मरना पड़े । ’ अनशन हिन्दू धर्ममें बहुत प्रचलित है । मुझे वह हमेशा प्रिय रहा है । यह आर्तनाद है । प्रधान मंत्रीका निश्चय तो निमित्त मात्र है । वह सहज ही अनशनका मुहूर्त बन गया । अनशनका हेतु केवल निर्णय बदलवाना नहीं, परन्तु अुसे बदलवानेके प्रयत्नमेंसे जो जाग्रति और शुद्धि पैदा होनी चाहिये, अुसे पैदा करना है । मतलब यह है कि अस्पृश्यताकी जड़को हिलानेका यह अवसर है ।

“ यह सही है कि सोचा हुआ परिणाम निकल आनेसे ही यह क़दम धर्म-संगत है, अैसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता । यह निश्चय तो सबको अपने-अपने लिअे करना होगा; और अगर अैसा करनेकी अपनी शक्ति न हो, तो गुरुजनोंकी रायको मानना चाहिये । मुझे यह क़दम धर्म-संगत लगता है, अितना ही नहीं, मेरे लिअे यह अनिवार्य — आवश्यक — मालूम होता है । अिस पर विचार करके मुझे फिर लिखना । मुझसे निराश न होना । तुम्हारी खुजली मिटी होगी । ”

काकाको :

“ मेरी अग्नि-परीक्षाके बारेमें तो सुन ही लिया होगा । सुनकर खूब हर्ष हुआ होगा । शोकका कारण हो ही नहीं सकता । अनशन और अशन दोनों

अेक हैं, जैसे जन्म और मरण अेक ही है। परन्तु कोअी साथी केवल धर्मके लिअे देह छोड़े, तो वह शोकका कारण हो ही नहीं सकता। अैसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। अुसका अुसे स्वागत करना चाहिये। अिसलिअे तुम व्याकुल न होकर अधिक जाग्रत और अधिक कर्तव्यपरायण बनना। शरीर ज्यादा अच्छा बनाकर बाहर निकलना। बहुत आहुतियाँ दी जायँगी, तभी अस्पृश्यता रूपी मैल धुलेगा।"

अीश्वरकी कृपा अपार है। बापूने सुबह ही रविबाबूका स्मरण किया। अुनसे आशीर्वाद देने या नाराज़ी ज़ाहिर करनेवाले पत्रकी प्रार्थना की। और यह पत्र जब मैं जेलरको देता हूँ, तभी अुनसे मुझे तारोंका अेक पुलिंदा मिलता है। अुसमें रविबाबूका यह तार निकला :

"हमारे देशकी अेकता और हमारे समाजकी अखण्डताके लिअे क़ीमती जीवनका बलिदान देने लायक़ है। हमारे शासकों पर अिसका क्या असर होगा, अिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। वे लोग यह नहीं समझ सकते कि यह चीज़ हमारे लोगोंके लिअे कितनी महत्वकी है। फिर भी अितना तो निश्चित है कि अैसे स्वेच्छापूर्ण बलिदानका हमारे देशबन्धुओंके दिलों पर जो भारी असर होगा, वह निष्फल नहीं जायगा। मैं यह अुत्कट आशा रखता हूँ कि अैसी राष्ट्रीय विपत्तिको आखिरी हद तक पहुँचने देने जैसे कठोर हम नहीं होंगे। हमारे दुःखी हृदय पूज्य भाव और प्रेमके साथ आपकी भव्य तपश्चर्याका अनुसरण कर रहे हैं।

रवीन्द्रनाथ टागोर।"

अिसलिअे बापूने तार लिखा :

"सुबहके साढ़े दस बजे। मैं सुपरिण्टेण्डेण्टको आपके नाम लिखा हुआ पत्र देने जा रहा था कि आपका प्रेमपूर्ण और भव्य तार मुझे मिला। थोड़े ही समयमें मैं जो अग्नि-प्रवेश करनेवाला हूँ, अुसमें यह मुझे सहारा देगा। मैं आपको तार भेज रहा हूँ। धन्यवाद।

मो० क० गांधी।"

प्रो० त्रिवेदीको :

"आपकी प्रेमपूर्ण पंक्तियाँ मिल गअीं। आपका प्रेम मैं जानता हूँ। अीश्वर कोअी आकाशमें नहीं है। अैसा निर्मल प्रेम मेरे लिअे अीश्वर रूप है। और वही मुझसे अैसे यज्ञ कराता है।"

आजके बढ़िया पत्रोंमें अब्बास साहब और श्री० परचुरे शास्त्रीके और तारोंमें रविबाबू, सरलादेवी चौधरानी और अिटलीकी अुन तीन बहनोंके थे।

आज शामको बापूने अखबारवालोंको मुलाक़ात दी। आकर बोले : "दिल्लीमें आखिरी दिन जैसा हुआ था, वैसा ही हो गया। मैं खुद नहीं जानता कि अितना सुन्दर वक्तव्य कैसे बन गया! अुपवासका रहस्य पहले मैंने अिस तरह कभी नहीं बताया था। 'टाअिम्स' वाला भला हो और शब्दशः दे दे तो अच्छा।"

सबेरे रविबाबूको पत्र लिखनेके बाद मैंने अेक-दो सवाल किये : "मैकडोनल्ड जैसे अुठाअूगीर आदमीने योग्यायोग्यका विवेक न रखनेवाले मनुष्योंके वश होकर जो निर्णय किया है, वह बदले तभी यह अुपवास छूट सकता है, अैसी शर्त आपने रखी है। लेकिन यह क्या अिस अुपवासका दोष नहीं है? यह आदमी निर्णय बदल भी दे, तो अिसमें अुसकी हृदय-शुद्धि तो हुअी न होगी।"

बापू कहने लगे : "नहीं, अिससे क्या? हृदय-शुद्धि न हो, मगर दूसरे परिणाम आये बिना नहीं रह सकते। हिन्दू समाजकी शुद्धि हो जाय, तो काफ़ी है।"

मैं : "आप हिन्दू समाजसे शुद्धि चाहते हैं और वह सात दिनमें ही हो जानी चाहिये। क्या यह दुराग्रह नहीं है?"

बापू : "नहीं, सात दिनमें नहीं चाहता। सात दिनमें जो कुछ मैं चाहता हूँ, वह तो थोड़ा ही है। और मेरे अुपवास लंबे जायें, तो क्या बुराअी है? अिनके लम्बे जानेका अर्थ अितना ही है कि जितनी खलबली मचनी हो, मच जाय। और मैकडोनल्ड न सुने, तो भी क्या? जब सब कुछ भगवान ही कर रहा है, करा रहा है, तो फिर अुसकी लीला देखकर नाचना चाहिये या चिढ़ना चाहिये? 'जुआ खेलनेवालेका जुआ मैं हूँ और छल करनेवालेका छल मैं हूँ', यह कह कर अुसने सब कुछ कह दिया है। यह जान लेनेके बाद यह शरीर नष्ट हो जाय, तो अिसकी क्या परवाह? छल करानेवाला भी वही है। अुपवास करानेवाला भी वही है।"

वल्लभभाअीसे कहने लगे : "तुममें रोष भरा हुआ है। जबतक यह रोष है, तबतक तुमको अुपवास नहीं करना चाहिये, न किसीसे कराना चाहिये। सबसे कहो कि जिसमें क्रोधका नाम निशान भी न हो, वही यह बाजी खेले। दूसरोंको अुपवासकी प्रतिज्ञा लेनेका अधिकार नहीं।

"मगर बात तो यह है कि शरीरके नष्ट होनेका अितना डर क्यों? मेरा शरीर बचानेका मोह छोड़ देना चाहिये। जापानी लोगोंका 'हाराकिरी'का रिवाज़ मुझे बहुत पसन्द है। मोरक्कोके अरब लोग फ्रांसीसी सिपाहियोंकी तोपोंके मुँहमें किस लिअे घुसे थे? क्या वे आत्महत्या कर रहे थे?"

मैंने पूछा : “यह निर्णय तुच्छ वस्तु है। मगर स्थायी चीज़ अस्पृश्यताका नाश है। मान लीजिये कि अछूतपन मिटता हुआ साफ़ दिखाअी देने लगे और वे नालायक़ लोग अिस निर्णयको न बदलें, तो भी क्या आप अुपवास नहीं छोड़ेंगे?”

बापू : “ज़रूर छोड़ दूँगा। मगर यह सवाल पूछना नहीं चाहिये। अछूतपनका नाश अिस निर्णयके बदलवानेसे ज्यादा बड़ा चमत्कार है। मगर अिसका जवाब प्रकाशित नहीं किया जा सकता, क्योंकि जनता पर अुसका ग़लत असर पड़ सकता है। यह तो मनमें समझ लेनेकी बात है।”

रातमें बापूको ज़रा भी थकावट नहीं थी। २०८ तार काते। लेटनेके बाद बोले : “अुपवासमें आकाश-दर्शनका जो लाभ अुठाअूँगा, वह अवर्णनीय है। तुम तो परोक्ष प्रमाण देते हो, मगर मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है। यह तारामण्डल हर क्षण जो शक्ति संचार कर रहा है, वही हमें क़ायम रखती है। यह शक्ति मिलती रहे, तब तक हम क्यों मानें कि कोअी कमी है? सर जेम्स जीन्स कहते है कि हम वैज्ञानिक लोग तो अभी कुछ नहीं जान पाये हैं। अिसके भीतर तो अपार शक्तियाँ भरी हैं।”

लेटे-लेटे कहने लगे : “वल्लभभाअी, तुमसे अेक दिल्लगीकी बात कहनी रह गअी। अुस विलिंग्डनने जयकर-सप्रूसे कहा था : ‘अर्विन मूर्ख था, जो अुस बदमाश बनियेके आगे झुक गया। मैं अैसा नहीं करूँगा।’ अिस पर जयकरको भूखे शेरकी बात याद आअी थी। वह मेरे अुपवासके बारेमें कुछ नहीं जानता था!”

* * *

रेहानाका पत्र तो अैसा है, जो किसी व्रजकी गोपीकी याद दिला देता है :

“बापूजी, जबसे मैंने सुना, तबसे मैं नाचती रही हूँ। पर दिलमें अितनी बेअिन्तेहा खुशी थी कि हलक़ और ज़बान दोनों बन्द हो गये। क्या लिखती? यह चीज़ कामिल है। अुसकी क्या तारीफ़ हो सके? और जब आपकी सारी ज़िन्दगी ही गोया मुजतमाअन कुरबानी है, तो फिर अिस आखिरी कुरबानीसे क्या ताज्जुब हो सके? घड़ी आ गअी। आपका यह अिरादा तो मेरे लिअे किरसनजीकी बाँसरी ही है। अुसको सुनकर मैं नाचने लगूँ, अिसमें भी क्या ताज्जुब? मैं कुछ कह नहीं सकती और अब भी मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता। मैं सिर्फ़ अितना जानती हूँ कि आप अिसके लिअे पैदा हुअे थे। मैं आँखोंसे देख रही हूँ कि किरसनजी अपना वादा हरेक बार किस खूबीसे पाल रहे हैं। धरम हफ़राहमें है, अुनको (किरसनजीको) आकर अुसको बचाना ही था। घड़ी आ गअी और धरमके बचनेके सब सामान तैयार हो गये। अब किरसनके दिये हुअे दिलसे अुनके चमत्कार देखनेका ही बाक़ी रहा। और क्या?

आपकी अिस कुरबानीको मैं कुरबानी नहीं समझती। बल्कि मुझे तो यह नटराजका नाच ही नाच मालूम होता है। जब नटराज नाचें, तो तमाम दुनियाको नाचना ही पड़ता है। हम सब नाच रहे हैं। बापू, आपने नाचकर हमको नचा दिया। हमारी दुआअें हर घड़ी बारगाहे अिलाहीमें पहुँचती हैं। वह भी सुनते-सुनते थक जाते होंगे! क्या करें बेचारे! अुनके बन्दे अुनको भी नचाते रहते हैं। . . . ने परणाम भिजवाये हैं। मैं क्या भेजूँ? मेरे जिस्मका, दिलका, दिमागका ज़र्रा-ज़र्रा नाच रहा है। रोम-रोम नाच रहा है। यह मोहब्बत और खुशीका नाच है। आपको भेज दूँ? मेरे दिलसे अेक भजन निकला है, सो भेज दूँ?

'अहो मुरारी ले तूने मुझको लुभा लियो है चिड़ा-चिड़ा कर,
कियो है कोमल हिरदयको मोरे विरह-अगनमें जला-जला कर,
तुम्हारी युक्तिको अंत नाहीं, अनंत भी हैं हमारी आहें,
कभू हँसा कर, हमें रुलायें, कभू हँसायें रुला-रुला कर।
कभू तो क्रोध और कभू तो प्रीति, कभू निकम्मी, कभू चहेती,
ये कैसी तुमरी अनोखी रीति, हराअी मुझको सता-सता कर।
कभू तो बातें प्रिय मधुरी, कभू तो वाणी हो बन्द पूरी,
कभू तो अुंधो अुत्तर दियो री, थकाअी मुझको नचा-नचा कर।
कहे है 'रेहान' सुनो तो भगवन् हुअी जो तुम पर सदा समर्पन,
तो क्या ये ही बार मिलोगे मोहन, मरूँगी तुमको बुला-बुला कर?

नहीं? जवाब ज़रूर मिलेगा। जवाब तो मिल ही गया। आपकी यह कुरबानी जवाब नहीं तो क्या है?"

कल आंबेडकरका बयान पढ़ा जा रहा था, तब बापू बोले: "मुझे अिससे ज़रा भी गुस्सा नहीं आता। अिसे यह सब कहनेका अधिकार है। आज वह जो कुछ कर रहा है, अंत्यज चिढ़ कर जो कुछ कर रहे हैं, मैं अुसके लायक़ ही हूँ। हम सब अिसी लायक़ हैं।"

सबेरे भगवद्गीताका पाठ शुरू करते समय सिसक-सिसक कर रोना आ गया। मेरे मनमें यही भावना थी कि मेरे जैसे 'कुटिल खल कामी' को बापूके अुपवासके आरंभमें गीता-पाठ करनेका क्या अधिकार है?

बारह बजते ही रेहाना बहनका प्रिय भजन "अुठ जाग मुसाफ़िर भोर भअी" गाकर ज़ाहिर किया कि अुपवास शुरू हो गया। बापू बोले: "निर्णय रूपी चिड़ियाँ खेतको खा रही हैं, हम जाग कर अुठ बैठें, नहीं तो मारे जायँगे।"

अिसके बाद अेक बजे डोअिल आया। अुसने पूछा: "आपका निश्चय क़ायम है?"

बापू बोले : "हाँ।"

तब वह कहने लगा : "सरकारने आपके बारेमें यह बयान जारी करनेका निश्चय किया है। आज यह बयान शिमलामें दिया जायगा।"

बापू बोले : "ठीक है। मैं तो खुश हुआ, मगर आप पर कामका भार टूट पड़ेगा।" और थोड़ी बातें हुआीं, पर मैंने नहीं सुनीं।

फिर देवदासकी बात निकली। डोअिलने पूछा : "आपका जो लड़का आया था, अुसका जन्म कहाँ हुआ है? अुसकी अुमर क्या है?"

बापूने कहा : "वह मैफ़िकिंग दिवस* पर पैदा हुआ था। मेरी स्त्रीकी प्रसूति मैंने ही की थी। डॉक्टरको बुलाअूँ अुससे पहले ही अुसे अतिशय व्यथा होने लगी। मैंने प्रसूति कराअी, नाल काटी और बालकको साफ़ किया, तब डॉक्टर आया। डॉक्टरने कहा कि सब ठीक हुआ है। दूसरा लड़का अफ्रीकामें है, तीसरा रामदास, चौथा देवदास। पहला तो अुल्टे रास्ते पड़ गया है।"

फिर अपने पोते कान्तिका जो पत्र आया था — जिसे डोअिलने वीसापुर भेज दिया और जिसकी जाँच हो रही है — अुसके बारेमें हँसते-हँसते बापूने कहा : "मेरे पोतेका पत्र आपने वीसापुर भेज दिया। मुझे तो वह मिला ही नहीं, अिसकी वह शिकायत करता है।

शैतानी ढंगसे मुसकरा कर वह बोला : "अरे अिसे तो मैंने आपके पोतेका प्रमाण-पत्र मानकर रखा है। और अिसे मैंने सरकारको बताया कि देखो मेरी जेल कैसे चल रही है, अिस बारेमें यह गांधीके पोतेका प्रमाण-पत्र है।"

फिर अुसने पूछा : "और कोअी बात कहनी हो तो कहिये।" अिस पर बापूने मथुरादासकी बात निकाली : "यह लड़का पैरोल पर छूटनेकी माँग कर रहा है। मैंने अिनकार लिखा है। मगर अिन दिनोंमें मेरे अैसे बच्चोंको मुझे लिखनेकी छूट हो और बेलगाँव वाले समय पर पत्र दे दें, अितना आप कर सकें तो अच्छा हो।"

अुसने पूछा : "आपको मथुरादाससे मिलना है?"

बापू : " नहीं, मथुरादाससे मिलनेकी ज़रूरत नहीं। अुसे वहीं रहना चाहिये।"

---

* मैफ़िकिंग दक्षिण अफ्रीकाका अेक छोटा शहर है। यह अंग्रेजोंके कब्जेमें था और अुस पर बोअर लोगोंका घेरा कअी महीने तक रहा था। १७ मअी, १९०० के दिन अुसका छुटकारा हुआ। अिस प्रसंग पर सारे अिंग्लैण्डमें खूब धूमधामसे अुत्सव मनाया गया था। — सं०

डोअिल : “ यह तो ठीक है, मैं मथुरादासके लिअे ही नहीं कहता; मगर आपकी शान्तिके लिअे जो कुछ करने लायक़ हो, वह करनेको तैयार हूँ।”

बापू : “ नहीं, नहीं। अितने पत्र लिखनेकी छूट हो तो काफ़ी है। मगर अेक बात कह दूँ। आप जानते हैं मीरा मेरे लिअे कितनी पागल है। कल जब अुसका यह पत्र आया, तब पल भरके लिअे मेरे जी में आया कि गवर्नरको लिखूँ कि यह आपका कितना हलकापन है कि अेक जलसेना नायककी लड़कीको आप अिस तरह सतायें और वह मुझसे मिल न सके ? फिर मैंने ही निश्चय कर लिया कि नहीं, यह तो मेरे पास आअी है आगमें तपनेको ही। अिसे तपना चाहिये और ज़हरमें अमृतके घूँट पीने चाहियें। अिसी तरह मैंने लिख दिया। ”

डोअिलको पत्र बताया। वह बोला : “ मैं यह बात सरकारके कानों तक पहुँचा दूँगा।”

नरहरिको :

“ तुम्हें अुपवासका क्षोभ न होना चाहिये। जिसकी लालसा थी, अुसे प्रभुने घर बैठे भेज दिया। माँगा हुआ मिल जाय, तो अुसका शोक हरगिज़ न होना चाहिये। हम तीनों आनंदमें है, और प्रभुकी लीला देखकर नाचनेकी कोशिश करते हैं। नाचना अभी तक पूरा आया तो नहीं है। मुझे लिखनेकी अिजाज़त मिल गअी है, अिसलिअे लिखना। ”

२१-९-’३२

मणिको :

“ तुझे आश्वासनकी ज़रूरत हो सकती है ? खबरदार, अेक भी आँसू गिराया है तो। जो सद्‌भाग्य मुझे मिला है, वह किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। अिससे खुश होना चाहिये, रोना हरगिज़ नहीं। तेरे और तेरे जैसोंके लिअे अुपवास नहीं है, मगर पूरी तन्मयताके साथ कर्तव्यपालन करना है। मुझे जब लिखना हो तब लिखनेकी छूट मिल गअी है। अिसलिअे मुझे लिखना।”

मथुरादासको :

“ तेरे तारसे तेरा संताप देख सका हूँ। मेरा तार पहुँचा होगा। मैंने तुझे ज्ञानी माना है और तू वैसा ही निकलना। अैसा प्रबंध किया है कि मेरी जेलवाले तुझे यह पत्र जल्दी ही पहुँचा देंगे और जवाब लिखनेकी अिजाज़त देंगे। तू जानता है कि तुझे मैं अपनी नीतिका चौकीदार मानता हूँ। यह अपना अधिकार और धर्म अच्छी तरह पालना। अगर तुझे मेरा क़दम

पसन्द आया हो, तो यह सिर्फ़ अुत्सवका प्रसंग है, यह तो समझमें आ गया होगा। मुझे जी भर कर लिखना।"

किशोरलालको :

"तुम्हें मेरा क़दम नीतिमय लगा या नहीं, यह जाननेकी अिच्छा तो रहती ही है। नाथको शंका है। अुनको मैंने अुत्तर दे दिया है। तुमने विचार किया हो तो लिखना। यह तो समझ ही लिया होगा कि अगर यह क़दम धर्मके अनुसार जान पड़े, तो यह हमारे लिअे आनन्दोत्सवका मौका है।

"वल्लभभाअीकी संस्कृतके बारेमें तुम्हें जो डर है, अुसके लिअे कोअी कारण नहीं है। वल्लभभाअीकी किसानी गुजराती तो कोअी अुनसे छीन ही नहीं सकता। अिस प्रवाहको संस्कृत ज्यादा मज़बूत बनायेगी। और अिस बार वे जो भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं, अुसीका हमें तो स्वागत करना है। अिसका असर विद्यार्थियों पर पड़े बिना नहीं रह सकता। संस्कृत हमारी भाषाके लिअे गंगा नदी है। मुझे लगता रहता है कि वह सूख जाय, तो भाषाअें निर्माल्य बन जायँगी। मुझे यह महसूस होता है कि अुसका साधारण ज्ञान आवश्यक है।"

जयरामदासको :

"मैं जानता हूँ कि तुम्हें अिस तपश्चर्यासे कैसा लगता होगा। मगर तुम अितना समझने लायक बहादुर अवश्य हो कि यह प्रसंग शोकका नहीं, आनन्दका है। अिस अस्पृश्यता रूपी राक्षसीका विनाश हो, अिससे पहले हममेंसे बहुतोंको मरना पड़ेगा। तुम्हें अिससे आनंद होना चाहिये कि अेक साथीको अग्नि-प्रवेशका मौका मिला है। कुछ भी आँच आये बिना अुसमेंसे बाहर निकलूँ, तो अच्छा ही है। पर यह अग्नि मुझे जलाकर भस्म कर डाले, तो वह ज्यादा अच्छा नहीं, तो अुतना ही अच्छा तो ज़रूर है। अीश्वर मुझे रास्ता बता रहा है और अन्त तक बतायेगा।"

जमनालालजीको :

"तुम कोअी परेशान न होना। तुम्हें तो नाचना ही चाहिये। तुमने जिसे बाप बनाया है, वह तुम्हारे प्रिय कामके लिअे पूर्णाहुति दे, यह तुम्हारे लिअे तो अुत्सवकी ही बात हो सकती है। जानकी मैयाके साथ मेरा विनोद जारी है।"

मणिलाल (कोठारी) को :

"सरदार कहते हैं कि मेरे पट्ट शिष्यको तो अलग पत्र लिखना ही पड़ेगा। मैं कहता हूँ, जमनालालजीमें मणिलाल समा जाता है। अिस पर मेरे सामने लाल आँखें करके वे कहते हैं कि जमनालालजी और दूसरे सब मणिलालमें समा

सकते हैं, पर मणिलाल किसीमें भी नहीं समा सकता। मैं कहता हूँ, अैसा नहीं है। मणिलाल तो अहिंसाका पुजारी होनेके कारण सबमें समा जायगा। वह यह हरगिज़ नहीं चाहेगा कि अुसमें कोअी भी समाये। अब हमारे बीच मचा हुआ झगड़ा तुम्हीं मिटा सकते हो। देखना, अिन्साफ़ करना। कौन सच्चा है? सरदार या मैं? और जहाँ अिस तरहके संवाद होते रहते हों, वहाँ जैनोंको पसन्द आनेवाले अनशनके विचारमें हम पड़ें ही क्यों?

"हमारे आनन्दका अन्दाज़ अिस पत्रसे लगा सकते हो। रोनेकी सख्त मनाअी है।"

फूलचन्दको :

"अुपवासकी खबर सुनकर सबको खुशीसे फूलना है, रोना हरगिज़ नहीं। अैसा शुभ अवसर कहाँ मिलता है? मुझे देखकर कोअी अुपवास न करे। सब अपना-अपना अवसर आने पर जल मरते हैं। न मरें तो मनुष्य काहेके? अभी तो तुम सबको अधिक जाग्रत, अधिक कर्तव्यपरायण और अैसे बलिदानके लिअे शुद्ध होनेका ज्यादा प्रयत्न करना है।"

राजाजी, राजेन्द्रबाबू वगैराके साथ खूब बातें कीं। अेक बात अुनके मन पर खूब ही स्पष्टताके साथ बिठा दी। वह यह कि आपको समय-पत्रक निश्चित करना चाहिये। अमुक समय पर तो निर्णय कर ही लेना है, अमुक निर्णय कर लेनेके बाद जो कुछ भी हो अुसपर अटल रहना है और आंबेडकरकी खुशामद छोड़ देनी है। वह न माने, तो तुरंत ही बाकीके आदमियोंको प्रस्ताव तैयार करके प्रधान मंत्रीको तार कर देना चाहिये कि यह अधिकसे अधिक बहुमतकी राय है। अुससे निर्णय बदलनेकी माँग की जाय और देशमें जगह-जगहसे यही माँग कराअी जाय।

२२-९-'३२

कल शामको मुझे अैसा लगा था कि बापूको बहुत कमज़ोरी आ गअी है। मगर आज सुबह तो वे बिलकुल ताज़ा थे और हमारे साथ अुन्होंने बहुत ही अुत्साह और आवेशसे बातें कीं। आंबेडकरके साथ सलाह करके तैयारी की हुअी योजनाके अेक भागकी खूब चर्चा करनेके बाद हमें अच्छी तरह डाँट कर कहा: "तुम खूब समझ लो, मेरा विरोध करना अुचित हो तो विरोध करो, और विरोध न हो तो औरोंके साथ झगड़ो।"

राजाजी, राजेन्द्रबाबू वगैरा आये। अुनके साथ अिसी चीज़की चर्चा हुअी कि अेक बैठकके लिअे पृथक् निर्वाचनसे तीन या चार अुम्मीदवारोंका प्रारंभिक

चुनाव करनेकी योजना थोड़ी नहीं, बल्कि सभी बैठकोंके लिअे लागू करानी चाहिये।

राजाजी बड़े विवेकी और विनयी आदमी लगे। आंबेडकर और अुनका बारहवाँ चन्द्रमा कैसे है, सो समझमें आता है। अिनका हाड़ हिन्दूका है, अुस आदमीका हाड़ नास्तिकका है।

तेजबहादुर और जयकरके साथ अिसी विषय पर बातें करके बापूने दोनोंको अपने मतका बना लिया। सिर्फ़ राजाजी और राजेन्द्रबाबूके गले यह बात नहीं अुतरी कि सभी बैठकोंके लिअे अलग प्रारंभिक चुनाव हों। वे बोले: "कोअी भी कीमत देकर हम आपको बचाना चाहते हैं। कारण आपके बचनेमें अछूतोंका बचाव है। अिसलिअे आप बच जायँ, अिसके लिअे आपको जो करना ज़रूरी हो, वही कीजिये।"

शामको आंबेडकर अपने तीन अनुयायियोंके साथ आये। अिस आदमीकी अुद्धतताका पूरी तरह प्रदर्शन हुआ। अुद्धतता तो अुनकी बोलीमें बार-बार आती थी: "देशमें दो भिन्न भिन्न विचारधारा वाले लोग हैं, यह मानकर ही हमें चलना चाहिये और मुझे मेरा बदला मिलना ही चाहिये। मैं यह माँगता हूँ कि अैसा साफ़ समझौता हो जाय, जिससे मुझे दूसरी तरह बदला मिल जाय। निर्णयमें मुझे ७१ जगहें मिली हैं। यह सच्चा, अच्छा और निश्चित हिस्सा है। ("आपके विचारके अनुसार" — बापू।) अिसके सिवाय सामान्य निर्वाचक-मंडलमें मत देने और अुम्मीदवार बनकर खड़ा रहनेका मुझे हक़ मिलता है। और मज़दूरोंके निर्वाचक-मंडलमें भी मुझे मत मिलता है। हम अितना समझते हैं कि आप हमारी बहुत मदद करनेवाले हैं। ("आपकी नहीं" — बापू।) मगर आपके साथ मेरा अेक ही झगड़ा है। आप केवल हमारे लिअे नहीं, पर कथित राष्ट्रीय हितोंके लिअे काम करते हैं। आप सिर्फ़ हमारे लिअे काम करें, तो आप हमारे लाड़ले वीर (Hero) बन जायँ। ("यह तो बहुत सुन्दर बात है" — बापू।) मुझे तो अपनी जातिके लिअे राजनैतिक सत्ता चाहिये। हमारे जीते रहनेके लिअे यह अनिवार्य है। अिसलिअे मेरे समाधानकी बुनियाद यह है कि मुझे योग्य बदला मिले। मैं हिन्दुओंसे कहना चाहता हूँ कि मुझे अपने बदलेका आश्वासन मिलना चाहिये।"

बापू: "आपकी स्थिति आपने बहुत सुन्दर ढंगसे स्पष्ट कर दी है। मगर मैं आपसे अेक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। आपने कहा कि दलित वर्गमें दूसरा कोअी सच्चा पक्ष हो, तो अुसे भी आगे आनेकी पूरी गुंजाअिश होनी चाहिये। अिसलिअे ये लोग अलग प्रारंभिक चुनावोंके बिना संयुक्त निर्वाचक-मंडलकी शर्त न मानें,

तो बिलकुल वाजिब है। मुझे जो नापसन्द है, वह यह है कि आपने यह कैसे नहीं कहा कि अैसे स्वरूपका अेक अलग चुनाव होना चाहिये? अिस चीज़का मैंने जहाँ तक अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि अलग प्रारंभिक चुनावको मैं मंजूर कर लूँ, तो अुससे मेरी प्रतिज्ञाके शब्दार्थका भंग नहीं होता। अिसलिअे मैं यह शर्त मंजूर कर लूँ, मगर अुसकी भाषाकी मुझे अच्छी तरह जाँच करनी पड़ेगी। अभी तो मैं अितना ही कहता हूँ कि अलग प्रारंभिक चुनावका विचार मेरी प्रतिज्ञाके विरुद्ध नहीं है। मगर अिसमें आप जो तीनका ही पैनल* रखनेको कहते हैं, अुसमें मुझे कुछ गंध आती है। अिसमें तो मुझे करवट बदलने तककी जगह नहीं मिलती। और आप तो कुछ बैठकोंके लिअे ही दो अलग-अलग चुनाव करनेका विचार करते हैं और अिस प्रकार दोनों पक्षोंका सन्तोष करते हैं। अेक चुनाव अकेले हरिजन मतदाताओंकी तरफसे प्रारंभिक स्वरूपका हो, और दूसरा संयुक्त निर्वाचक-मंडलसे हो। मुझे अेक पक्षका हित नहीं, बल्कि सारी अस्पृश्य जातिका हित सजग और सावधान रहकर साधना है। मुझे अछूतोंकी सेवा करनी है। अिसीलिअे आपके विरुद्ध मुझे ज़रा भी रोष नहीं है। आप मेरे लिअे कोअी अपमानजनक या क्रोधजनक शब्द काममें लेते हैं, तब मैं अपने दिलसे यही कहता हूँ कि तू अिसी लायक़ है। आप मेरे मुँह पर थूकें, तो भी मैं गुस्सा नहीं करूँगा। यह मैं अीश्वरको साक्षी रखकर कहता हूँ, अिसीलिअे कि मैं जानता हूँ कि आपको जीवनमें बहुत कड़वे अनुभव हुअे हैं। मगर मेरा दावा असाधारण है। आप तो अस्पृश्य जन्मे हैं, मगर मैं स्वेच्छासे

---

* जितनी बैठकें हरिजनोंके लिअे खास तौर पर सुरक्षित रखी गअी हों, अुनमेंसे हरअेकके लिअे अमुक हरिजन अुम्मीदवारोंका चुनाव पहले अकेले हरिजन मतदाता ही करें, यह अलग प्रारंभिक चुनाव हुआ। अिस तरहसे चुने हुअे अुम्मीदवारोंमेंसे ही संयुक्त निर्वाचक मंडल प्रतिनिधि चुन ले। हरअेक बैठकके लिअे तीन, चार या पाँच, जितने अुम्मीदवारोंको चुना जाय, अुतनेका अेक पैनल कहलाता है। यहाँ विवादका प्रश्न यह है कि हरिजन मतदाता अपने अलग प्रारंभिक चुनावमें अेक बैठकके लिअे तीन अुम्मीदवार चुनें या पाँच। आम्बेडकर कहते हैं तीन, और दूसरे लोग पाँच कहते थे। अन्तमें समझौतेसे चारकी संख्या तय हुअी।

दूसरा मुद्दा यह था कि निर्णयमें निश्चित की गअी बैठकोंके सिवाय जितनी बैठकें अिस समझौतेसे दी जायँ, अुतनी बैठकोंके लिअे ही यह दोहरा चुनाव किया जाय। निर्णयमें निश्चित की गअी संख्याका चुनाव तो संयुक्त निर्वाचक-मंडलसे सीधा ही हो। आम्बेडकर यह चीज माननेको तैयार हो रहे थे, मगर गांधीजीको स्वेच्छासे बने हुअे हरिजनके नाते आपत्ति थी कि अगर दोहरे चुनावकी प्रणाली जारी करनी हो, तो तमाम बैठकोंके लिअे वही पद्धति होनी चाहिये। —सं०

अछूत बना हूँ। और अिस जातिमें नया भरती होनेके नाते अिस जातिके हितके लिअे अिस जातिके पुराने आदमियोंसे मुझे ज्यादा लगन है। अिस समय मेरी नज़रके सामने मूक अस्पृश्य — दक्षिण भारतके 'अगम्य' (unapproachables) और 'अदृश्य' (unseeables) खड़े हैं। अिस भावनासे मैं अिस योजनाकी जाँच कर रहा हूँ कि अिसमें अिन सबका क्या होगा? आप तो कह देंगे: 'अिसकी चिन्ता किसलिअे करते हैं? हम सब अीसाअी या मुसलमान हो जायँगे।' मैं कहता हूं कि मेरा शरीर चला जाय, अुसके बाद आपको जो करना हो, कर लेना। अिस योजनाके बारेमें मैं कहता हूँ कि दलित वर्गके लिअे यह अच्छी हो, तो यह सारी ही अच्छी होनी चाहिये। शुरूसे ही अैसे दो विभाग कर दिये जायँ, यह मुझे पसन्द नहीं। सारे अछूत अेक और अखंड होंगे, तो मैं सनातनियोंके किलेको सुरंग लगाकर अुड़ा सकूँगा और ज़मींदोज़ कर डालूँगा। मैं यह चाहता हूँ कि सारा अस्पृश्य समाज अेक आवाजसे सनातनियोंके खिलाफ़ बगावत करे। जब तक अुम्मीदवार नामजद करना आपके हाथमें है, तब तक आपको संख्याकी परवाह न रखनी चाहिये। मैं तो जीवन भरका लोकतंत्रवादी हूँ। जब मेरी भस्म हवामें अुड़ जायगी या गंगाजीमें विसर्जन कर दी जायगी, अुसके बाद सारी दुनिया क़बूल करेगी कि लोकतंत्रवादियोंमें मैं शिरोमणि था। यह मैं अभिमानसे नहीं कहता, बल्कि नम्रतापूर्वक सत्यका अुच्चारण कर रहा हूँ। मैंने बारह बरसकी कोमल आयुसे लोकतंत्रका पाठ पढ़ा है। हमारे घरके भंगीको अस्पृश्य माननेके कारण मैंने अपनी माँके साथ झगड़ा किया था। अुस दिन मैंने भंगीके रूपमें अीश्वरको अवतार लेते देखा। जब आपने यह कहा कि मुझे अछूतोंका हित अपनी ज़िन्दगीसे भी ज़्यादा प्यारा है, तब आपने अीश्वरकी वाणी कही। अब सचाअीसे अिस पर क़ायम रहना। आपको मेरी ज़िन्दगीकी परवाह न करनी चाहिये। मगर अछूतोंके लिअे झूठे न बनना। मेरे मरनेसे मेरा काम नहीं मरेगा। मैंने अपने लड़केसे परिषदको अेक सन्देश देनेको कहा है। अुसमें मैंने अुसे कहा कि मेरी ज़िन्दगी जोखममें पड़े, तो अुसके लिअे तू अछूतोंका हित छोड़ देनेकी लालचमें न फँसना। और मुझे विश्वास है कि मैं मरूँगा, तो मेरे पीछे मेरा लड़का भी मरेगा। वह अकेला ही नहीं, परन्तु और भी बहुतसे मरेंगे। क्योंकि मेरा अेक लड़का नहीं, बल्कि हज़ारों लड़के हैं। हिन्दू धर्मकी आबरू बचानेके लिअे अगर वह अपने प्राण न दे, तो वह मेरा योग्य पुत्र नहीं कहला सकता। और हिन्दू धर्मकी आबरू अछूतपनको जड़-मूलसे अुखाड़ फेंके बिना बचेगी नहीं। यह तभी होगा, जब अछूतोंको हरअेक मामलेमें स्पृश्य हिन्दुओंके बराबरका दर्जा मिलेगा। अभी जो 'अदृश्य' माने जाते हैं, अुन्हें भी हिन्दुस्तानका वाअिसरॉय बननेका पूरा अवसर मिलना चाहिये।

हिन्दुस्तानमें आनेके बाद मैंने जो पहला राजनैतिक भाषण दिया था, अुसमें मैंने कहा था कि मुझे तो किसी भंगीको कांग्रेसका अध्यक्ष बनाना है।

"अिसलिअे मैं आपसे अपील करता हूँ कि आप विवाद न कीजिये। जो चीज़ दिखनेमें भी अच्छी न लगे, अैसी भद्दी चीज़ मेरे पास न लाअिये। मेरे पास तो अैसी सुन्दर भेंट लाअिये, जिससे स्वेच्छासे मृत्यु-शय्या पर पड़े हुअे अिस मनुष्यके जीवमें कुछ चेतन आये। मगर अैसा आप तभी कीजिये, जब आपको यह लगता हो कि मेरे सहयोगका कोअी मूल्य है।"

फिर नीचे दिया बयान लिखवाया :

"डॉ० आम्बेडकरने प्रारंभिक चुनावका जो तरीक़ा मुझे समझाया है और जो मुझे दी गअी योजनाकी क़लम 'ब' में बताया गया है, अुसमें मेरी प्रतिज्ञाकी दृष्टिसे कोअी आपत्ति दिखाअी नहीं देती। परन्तु कोअी भी योजना अन्तिम रूपसे मंजूर करनेसे पहले मुझे अिस सारी चीज़को स्पष्ट भाषामें देखना पसन्द होगा। अुसके बाद मैं क़लम 'ब' पर अपनी अन्तिम राय दे सकता हूँ। अुसकी भाषा मुझे पसन्द नहीं। अुसमें बहुत फेरबदल करनेकी ज़रूरत है। अिस क़लमके कुछ भागों पर और अुसकी भाषा पर मुझे जो आपत्तियाँ हैं, वे मैंने समझा दी हैं।

"मेरी आपत्तियाँ : (१) प्रारंभिक चुनावकी पद्धति और विशेष रूपसे सुरक्षित बैठकें दस वर्ष बाद अपने आप बन्द हो जायें। (२) आबादीकी संख्या लोदियन कमेटीकी रिपोर्टके अनुसार निश्चित की जाय। 'ब' विभागके खिलाफ़ दोहरी आपत्ति है। जिस हेतुके लिअे मैं अिस मृत्यु-शय्या पर पड़ा हूँ, अुस हेतुको वह नगण्य ही नहीं कर डालता है, बल्कि राष्ट्रको भी भारी नुक़सान पहुँचाता है।

"दूसरे मुद्दोंके बारेमें तो आपको हिन्दू जातिको अुसकी अिज्ज़त पर छोड़ देना चाहिये! आप मुझे अैसी कोअी बात करनेको न कहिये, जो मृत्यु-शय्या पर पड़े हुअे आदमीको करना शोभा न दे। अगर मैं अपने मुद्देसे हट जाअूँ, तो मैं जानता हूँ कि राष्ट्रका सत्यानाश हो जाय।"

आज सबेरे बा आअीं। बा बापूके पैरों पड़ीं। बापूने हाथ पकड़कर अुन्हें पास खींच लिया। तब बा बोलीं : "यह क्या ढोंग रचा है?"

बापू बोले : "क्यों, मेरे साथ मरना है न?"

बा : "नहीं, मैं किस लिअे अुपवास करूँ? तुम अुपवास छोड़ दो। भगवान तुमसे अुपवास छुड़वा दें।"

फिर बापू कहने लगे : "तेरे तो जबड़े बैठ गये हैं। देख, तू मुझसे भी दुबली दिखती है। अिसका अर्थ यह है कि भंडारी मुझे अच्छी तरह रखते हैं और अडवानी तुझे अच्छी तरह नहीं रखते थे।"

बा : "नहीं, वे तो सिन्धी हैं। सिन्धी पंजाबियोंसे अच्छे होते हैं।"

भंडारी : "यह क्या कहती हैं! यह तो मेरे साथ अन्याय कहा जायगा।"

२३-९-'३२

बापूसे आज पूनाके बोहरोंका अेक प्रतिनिधि-मंडल मिलने आया था। बेचारे सूतकी माला लाये थे और अपील लिख लाये थे कि अछूतोंके अलावा भी और बहुत हैं। अुनकी रक्षाके लिअे आप जीयें और अुपवास छोड़ दें। बोलते-बोलते अेक आदमीका गला भर आया। और भी कअी रो रहे थे। बापू पर बड़ा असर हुआ और बोले : "आप गहरा विचार करेंगे, तो देखेंगे कि अिस दुनियामें कोअी भी काम प्राण दिये बिना नहीं हो सकता। आपका प्रेम मुझ पर मेरी दृढ़ताके कारण है, प्राण छोड़नेकी मेरी शक्ति पर अवलंबित है। अिसलिअे आप मुझे जिस खयालसे चाहते हैं, अुसी खयालसे छोड़ दीजिये। मेरी ज़िन्दगी खुदाके हाथमें है। मैं चाहूँ तो भी नहीं जा सकता। और जानेवाला ही हूँगा, तो बड़ेसे बड़े डाक्टर भी आकर मुझे नहीं जिला सकते। अगर आप यह गवाही देंगे कि मैं सच्ची बातके लिअे मरा, तो यह बड़ी बात होगी। मैं जिस कलंकके लिअे अुपवास कर रहा हूँ, वह कलंक हिन्दू धर्म पर ही नहीं है, मगर सारे हिन्दुस्तान पर है। क्योंकि सारा हिन्दुस्तान अिस कलंकका गवाह है। अिसलिअे आप सबको यह दुआ करनी चाहिये कि गांधीका लिया हुआ व्रत पार पड़े। अैसी कोअी बात नहीं कि हिन्दूके लिअे मुसलमान अिबादत न करे, और मुसलमानके लिअे हिन्दू न करे। अिस तरहका खयाल सिर्फ ढोंग है।"

बापू अिस दृश्यसे बहुत खुश हो गये। श्रीमती नायडूसे कहने लगे : "यह दृश्य भव्य माना जायगा।"

* * *

आज सारी कमेटी आम्बेडकरको लेकर चार बजे आनेवाली थी, फिर टेलीफोन आया — छः साड़े छः बजे आयेंगे। बादमें यह टेलीफोन आया कि साढ़े सात बजे आयेंगे। अिस पर बापू बोले :

"यह तो मरनेको पड़े हुअे किसी बीमारकी घड़ी-घड़ी खबर आती हो, अैसा लगता है। मैं मरनेको पड़ा हुआ मरीज़ नहीं हूँ, मगर वह समझौता मरनेको पड़ा जान पड़ता है।"

बिड़ला नौ बजे आये और कहने लगे : "सिर्फ़ जनमत लेनेके मामलेमें हम अलग-अलग हो गये हैं। मुझे यह महत्वका नहीं लगता, अिसलिअे अिस पर हम बातचीत तोड़ नहीं सकते।"

बापूको आश्चर्य हुआ। फिर कहा : “तुमने कोअी समयपत्रक बनाया है या नहीं? जितनी बार बदलते जाते हो, अुतनी बार व्रत टूटता है। अिससे तो मुझे छोड़ क्यों नहीं देते?”

सारी मण्डली साढ़े नौ बजे आअी। डॉक्टर लम्बी बातचीत या चर्चाके विरुद्ध थे। मगर बापूने तो आम्बेडकरसे कह दिया : “मुझ पर ज़रा भी दया न करना”। आम्बेडकरने अपनी बात समझाअी : “हमें तो हिन्दुओं पर सज़ाकी क़लम रखनी है कि हमारे दुःख ये लोग दूर न करें, तो हरिजनोंकी मतगणना (रेफरेण्डम) माँगी जाय; अैसी मतगणनामें आपको क्या आपत्ति हो सकती है? आपने तो मुसल्मानोंके लिअे भी अैसा स्वीकार किया था।”

बापूने कहा : “आपने अपनी बात बहुत अच्छी तरह स्पष्ट कर दी है। आपकी यह स्पष्टता मुझे पसन्द है। आप हिन्दुओं पर तलवार लटकती रखें, यह भी मुझे पसन्द है। क्यों न रखें? आपका अुनपर अविश्वास है। लेकिन अगर आप न्यायसे देखें, तो आपको पंद्रह बरस तक यह तलवार किसलिअे लटकती रखनी चाहिये? हिन्दू आपके साथ ठीक बर्ताव करते हैं या नहीं, यह तो आपको अेक सालमें ही मालूम हो जाना चाहिये। अिसके लिअे पंद्रह वर्ष तक राह क्यों देखनी पड़े? या तो आप हमें अपनी अिज्ज़त पर छोड़ दीजिये या न छोड़िये। अगर विश्वास हो, तो आपको अेक बरस बादकी (हरिजनोंकी) मतगणनाके अनुसार चलना चाहिये। अधिकसे अधिक पाँच वर्षकी मियाद रखिये। लेकिन जब आप लम्बे अर्सेकी बात करते हैं, तो यही कहा जायगा कि आप अपने मनमें भेद रख कर बात करते हैं। आपके खिलाफ़ मेरी सबसे बड़ी शिकायत यह है कि आप सामनेवाले पक्षको अुसकी अिज्ज़त पर छोड़नेको तैयार नहीं हैं। आप कट्टर हैं, मगर विरोधीकी अिज्ज़त पर विश्वास रखनेको तैयार नहीं। यह असह्य है। यह विश्वास रखें तो अभी मतगणना करा लीजिये, नहीं तो नये चुनावके बाद अेक सालमें मतगणना करा लीजिये; और अुसमें हम हार जायँ, तो फिर पाँच बरस बाद मतगणना कराअी जा सकती है। लेकिन पन्द्रह बरसकी बात ग़लत है। अितनी बात कहकर मैं आपसे अपील करता हूँ कि आप अिसे समझनेका प्रयत्न कीजिये। आप पन्द्रह साल या दस साल झगड़ा लम्बायेंगे या पाँच वर्षमें शान्त कर देंगे? हिन्दूके नाते नहीं, मगर हिन्दुस्तानीके नाते और अवर्णकी हैसियतसे और अेक मनुष्यके नाते भी मैं कहता हूँ कि अिस चीज़का आप पर असर होना चाहिये। अगर मेरी पूरी सचाअीका आप पर कोअी असर होता हो, तो मैं कहूँगा कि हमें अपनी अिज्ज़त पर छोड़ दीजिये।”

आम्बेडकरके पास अिसका जवाब नहीं था। वह चुप हो गये। बस अब कल आयेंगे, यह कह कर अुठ गये।

“ अितनी सीधी-सी बात आप क्यों न समझा सके ? ” यह कह कर बापूने राजाजीको फटकारा । राजाजीने कहा : “ यह तो वह मान ही नहीं सकता था । ” अिस पर बापूने कहा : “ तो आपको मुझे फेंक देना था । यह नहीं मानता, नहीं मानता, अैसी बातें क्यों किया करते हैं ? ” देवदासको भी कहा कि तूने कुछ नहीं समझाया ?

सबके चले जानेके बाद मैंने बापूसे कहा : “ आप देवदास पर नाहक चिढ़ गये । वह तो सभामें बड़ी खलबली मचाकर आया था । अुसने तो सबको रुलाया, खुद भी रोया और कहा कि मेरे पिताने छह महीने बाद अछूतोंके लिअे मरनेकी प्रतिज्ञा क़ायम रख कर मतगणनाका हक़ दे ही दिया है । ”

बापूने कहा : “ देवदासको बुलाओ । मुझे अेक ही मिनटका काम है । ” मैंने देवदासको बुलाया । बस देवदासके आते ही बाप-बेटे मुँहसे मुँह मिलाकर रोये ! फिर शान्त हो कर बापू कहने लगे : “ मुझे अैसे धार्मिक व्रतमें क्रोध आया ही कैसे ? मैंने तेरे साथ अन्याय किया है । तू तो मुझे माफ़ कर देगा, मगर भगवान कैसे माफ़ करेंगे ? राजाजी और दूसरोंसे भी कहना कि मुझे अुनसे माफ़ी माँगनी है । ” बादमें बापूने सारी योजना देवदासको फिर समझाअी ।

आज सुबह ‘ द्यूतं छलयतामस्मि ’ को याद करके फिर कहने लगे कि “ ये जुआ खेलनेवाले छली आदमियोंमें — मैकडोनल्ड आदिमें — भी भगवान हैं ! यह जुआ भगवान नहीं, मगर भगवान अिस जुअेमें प्रवेश करते हैं । अिस प्रकार अुसमें अिनका अंश आ जाता है, जैसे मैला पानी गंगामें मिलता है और पवित्र हो जाता है । ”

२४-९-’३२

कल रातको कहा था : “ शरीर, मन और आत्माकी वेदना अब ही शुरू हुअी है । ” यह वेदना आज सवेरे भी चालू है, यह कहा जा सकता है । फिर भी अखबार वालोंमेंसे किसीको भी अिनकार नहीं किया । किसीने अुनकी बड़ाअी की थी कि ‘ आप कुशल प्रचारक हैं । ’ यह बात बापू अिस अुपवासके दरमियान हर प्रसंग पर साबित कर रहे हैं । अेक भी अखबारवालेको निकाला नहीं, और किसीके आगे भी नअी बात न कही हो, अैसा नहीं । आज सुबह ‘ अिलस्ट्रेटेड वीकली ’ का सहायक-संपादक नॉर्मन और अमरीकन प्रेसका अेक प्रतिनिधि आया । अिन सबसे मिलनेकी आतुरता दिखाते हुअे बापूने कहा : “ आखिर मेरा अुपवास अिस अुद्देश्यके ही आधीन तो है । यह अुद्देश्य है समझौता करानेका । आपसे तो मैं मध्यरात्रिमें भी मिलूँगा । ”

अुसने पूछा : "साधारण आदमी सहज ही कारण मिलने पर अुपवास कर बैठे, तो अिसका परिणाम बुरा न होगा ?"

जवाबमें बापूने वाग्धारा छोड़ दी :

"आपकी बात बिलकुल सही है। अुपवासमें भारी जोखम भी है। मगर यह तो दुनियाकी हरअेक बड़ी शक्तिके बारेमें है। जितनी बड़ी शक्ति, अुतना ही बड़ा अुसके दुरुपयोगसे नुकसान। संखिया जैसे ज़हरका अुदाहरण लीजिये। दवाके रूपमें यह बहुत कारगर साबित होता है। मगर बहुतसे लोग अिसका दुरुपयोग भी करते हैं। तो क्या अिससे हम अुसे नष्ट कर दें ? किसी चीज़में बहुत अच्छे तत्त्व हों और अुचित समय पर और अुचित मात्रामें अुसका बड़े पैमाने पर अुपयोग किया जाय, और अुससे बहुत लोगोंका लगभग चमत्कारिक ही कहा जाय अितना भला हो सकता हो, तो आपको अुस शक्तिका अुपयोग करना ही चाहिये। अुसका ग़लत अुपयोग होनेकी संभावना हो, तो अुसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। और अैसे अुपवासका तो दुरुपयोग होनेकी भी बहुत गुंजाअिश नहीं। अिसका मुख्य कारण यह है कि यह चीज़ अितनी कष्टमय है कि मामूली आदमी तो अिसके विचारसे ही काँप अुठता है। अिसलिअे भय बहुत बड़ा नहीं है। अैसा ज़रूर हो सकता है कि कमज़ोर दिलके और अनुशासन रहित मनुष्य भावनाके वेगमें आकर अुपवास कर बैठें और अपनी कमज़ोरीसे फिर अुसे तोड़ दें। मगर सत्यपरायण मनुष्य बीचमें कभी कमज़ोर पड़ भी जाय, तो भी अन्त तक निभा सकता है।"

सवाल : "अिस अुपवाससे यह पेचीदा सवाल हल हो जाय, तो किसी दूसरे हेतुके लिअे आप फिर अुपवास करेंगे क्या ?"

बापू : "ज़रूर। सत्याग्रहके तत्वज्ञानमें ही यह बात समाअी हुअी है कि अिन्सानको अपने मक़सदके लिअे बलिदान देना चाहिये। मान लीजिये कि यही प्रश्न फिर खड़ा हो जाय और अछूत आज जिस हालतमें हैं अुससे भी बुरी हालतमें पड जायँ, तो मेरे पास दो ही अुपाय होंगे : मैं अुनके लिअे अपना जीवन दे दूँ या अुनके साथ मिलकर हिंसक युद्ध करूँ। परन्तु अहिंसासे बँधा होनेके कारण हिंसक युद्ध तो मेरे लिअे है ही नहीं। अिसलिअे पवित्र वचनका भंग करनेवालेके विरुद्ध अुपवासके सिवाय मेरे लिअे और अुपाय ही नहीं। और अुसका परिणाम बहुत ज़बरदस्त होता है।"

अखबारवालोंके साथ विनोद तो होता ही रहता है। अेक सवाल पूछनेके साथ ही सामनेवाले आदमीकी प्रामाणिकताका अन्दाज़ बापू लगा लेते हैं। अुन्हें यह लगे कि आदमी भला है, तो अुसके आगे अपना हृदय अुंडेल देते हैं।

नॉर्मनने पूछा : "हमारे 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' के बारेमें आपकी क्या राय है ?"

बापूने तुरन्त कहा : " तो आपको तो ' अिलस्ट्रेटेड वीकली ' के लिअे विज्ञापन चाहिये। तब तो मुझे कहना ही पड़ेगा कि आपका साप्ताहिक अच्छा है ! "

अुसने पूछा : " आप यह कैसे कहते हैं ? "

बापू : " मैं यह अिसलिअे कहता हूँ कि मुझे आपकी नीति अैसी लगती है कि या तो आप जानबूझ कर तोड़-मरोड़ करते हैं या आपका पूरा अज्ञान है। ' टाअिम्स ' जैसा बड़ा अखबार — जिसके लिअे मुझे बड़ा आदर है और जिसके संपादक अेकमात्र लोगोंकी सेवा करनेके अुद्देश्यवाले हो गये हैं, — जब अपने स्तंभोंमें ज़हरीली बातें लिखता है और अपने अग्रलेख निश्चित रूपसे गलतबयानी करनेवाले लिखता है, तो मुझे दुःख होता है। अब जिस अखबारके लिअे मैं अैसे विचार रखता हूँ, अुसके लिअे अैसी राय नहीं दे सकता, जो विज्ञापनके रूपमें काम आये। मुझे जो लगता हो वह मैं न कहूँ, तो मेरा व्यवहार साफ़ नहीं माना जा सकता। "

अिस पर वह कहने लगा : " मगर यह तो आप दैनिककी बात कह रहे हैं। हमारा साप्ताहिक राजनैतिक मामलोंकी चर्चा ही नहीं करता। यह तो थोड़े बहुत सामाजिक स्वरूपवाला है। "

अिस पर बापूने तुरन्त ही कहा : " हूँ, अब अंग्रेज़ मानस बोल रहा है, जिसे मैं पसन्द नहीं करता। आप यह समझते दीखते हैं कि अिस जीवनके अेक दूसरेसे अलग-अलग खाने बनाये जा सकते हैं। आप यह समझते हैं कि घरके अेक भागमें हम नालीमें सड़ते रहें और दूसरे भागमें अूँचे स्वर्गमें अुड़ते रहें ? ' टाअिम्स ' की जो नीति होगी, अुसका अनुसरण किये बिना ' अिलस्ट्रेटेड वीकली ' रह ही कैसे सकता है ? "

अितना कह कर बोले : " यह सब होते हुअे भी मैं यह नहीं कह सकता कि अुसके चित्रोंसे मेरा मनोरंजन नहीं होता या अुससे कुछ जानकारी नहीं मिलती। लगभग अिंग्लैण्ड और अमेरिकाके अखबारोंकी टक्करमें आवे अैसा आपका अखबार माना जा सकता है। "

अमरीकी संवाददाताने कहा : " अमेरिकाके लिअे कुछ दीजिये। "

बापू : " अिसका जवाब तो मैंने दे ही दिया है, अिसलिअे और कोअी सवाल पूछिये। "

अिस पर वह बोला : " मगर यह तो मैंने स्वीकार किया ही है कि मैं बिलकुल कोरा हूँ। "

बापू : " तो यही ठीक है कि आप कोरे ही लौटें। "

दोपहरको आम्बेडकर, राजाजी वग़ैरा आये। आम्बेडकर ज़रा ठंडे पड़ गये थे। 'मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ', 'मैं आपसे माँग करता हूँ'— अुनके मुँहसे अैसी बातें निकलती रहती थीं। "आपको पाँच वर्ष चाहियें, मगर हमारे आदमी दस वर्ष माँगते हैं।"

बापू: "अब आप मुझसे कहिये कि आपको क्या चाहिये? अछूतों और सवर्ण हिन्दुओंके बीच हृदयकी अेकता हो, यह आपको चाहिये या नहीं? अगर मुझे जीना होगा, तो अिस अेकताकी स्थापनाके लिअे ही जीअूँगा। मैं आपसे कहता हूँ कि आप यह बात हमारी अिज्ज़त पर छोड़ दीजिये। हम वचन देते हैं कि कमसे कम अमुक बैठकें तो आपको मिलेंगी ही। अिससे हमारी नेक-नीयतीकी परीक्षा हो जायगी। अगर अितने अछूत चुन कर न आयें, तो आपको अपने आप मतगणना मिल जाती है। और हम हिन्दुओंसे सम्बन्ध रखनेवाले भागकी तुरन्त दुरुस्ती कर लेंगे। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो आपको बता दूँगा कि अस्पृश्य अपनी आबादीके हिसाबसे नहीं, बल्कि बहुत बड़ी संख्यामें चुनकर आयेंगे। अगर आप अपनेको अपने व्यक्तित्वसे अलग कर सकें और मेरी स्थितिमें रख सकें, तो आप देखेंगे कि मेरी सूचना पाँच साल या दस सालके अन्तमें अछूतोंकी मतगणना करनेसे कहीं ज्यादा बढ़िया है। अिससे आपको गांधीके आदमियोंकी सच्ची नीयतकी परीक्षा हो जायगी। जो पाषाणहृदय और किसी तरह पिघलनेसे अिनकार करते थे, अुनके लिअे यह अुपवास अीश्वरकी भेजी हुअी चीज़ है। आप मुझे अेक सालकी मोहलत दीजिये और मुझे काम करने दीजिये। मैं हिन्दू जातिकी अमानतके रूपमें आपकी जेबमें पड़ा हूँ।"

आम्बेडकर: "मगर महात्माजी, आप कोअी अमर तो हैं नहीं।"

बापू: "मैं जानता हूँ। अमर होता, तो मुझे अुपवास ही किसलिअे करने पड़ते?"

आम्बेडकर: "मगर अिसकी क्या गारंटी है कि आप अेक साल जीयेंगे ही और काम कर ही सकेंगे? अगर आप हिन्दू समाजकी सारी शकल ही बदल डालें, अितने वर्ष जीयें तब तो शायद आप आशा रखते हैं वैसे परिणाम ला सकें। यह अेक बात हुअी। दूसरी बात यह है कि आज जिस अुदारता और सहानुभूतिका अुफ़ान आया है, वह तो वापस बैठ जायगा। अिस नाज़ुक मौक़े पर जो वातावरण बना है, अुस पर हम आधार नहीं रख सकते। जीवनमें हम कुछ खास बातोंके आदी बन जाते हैं। अुसमें अेकाअेक परिवर्तन हो जाय और हम सब सद्बुद्धिपूर्वक जीवन बिताने लगें अैसा नहीं होता।"

बापू: "यह दलील आपको ज्यादा लम्बानेकी ज़रूरत नहीं। अेक न्यायाधीशकी हैसियतसे मैं ज़ाहिर करता हूँ कि दलीलोंमें आपने मुझे हरा दिया

है। मैं यह देख सकता हूँ कि आप ज्यादा सावधानीका मार्ग किसलिअे पसन्द करते हैं। अब हम दूसरे मुद्दे पर आयें। आप दस साल किसलिअे माँगते हैं?"

आम्बेडकर: "दस सालकी अिसलिअे ज़रूरत है कि अितने समयमें लोकमत स्थिर किया जा सकता है। महात्माजी, हम लोगोंमें जो पूर्वग्रह भरे हैं, अुनका भी आपको विचार करना चाहिये। मतगणना या अुसकी मुद्दत तो आपकी प्रतिज्ञाका मुद्दा है भी नहीं।"

बापू: "अब यह दलील जरूरतसे ज्यादा हो जाती है। सीधी बात तो यह है कि अिसके अेवज़में क्या? वह चीज़ संयुक्त निर्वाचनसे कहीं ज्यादा बढ़िया होनी चाहिये। मेरी निश्चित राय है कि पाँच सालकी मियाद ज्यादासे ज्यादा है। यह तो आप नहीं चाहेंगे कि जिसे मैं सत्य मानता हू, अुससे डिग जाअू। आप यह भी नहीं कह सकते कि दस साल आपके लिअे अन्तरात्माका सवाल है, जब कि कल मैंने आपको साबित करके बता दिया था कि मैं अिसे अन्तरात्माका सवाल मानता हूँ। सही बात यह है कि आप दस सालका आग्रह रखेंगे, तो मुझे आपकी प्रामाणिकताके बारेमें शंकाशील बनायेंगे। अिसलिअे आखिरी बात यह है: पाँच सालमें मतगणना या मेरा जीवन। अपने अनुयायियोंसे जाकर कहिये कि गांधी तो यह कहता है। अुनके सामने जाकर मेरे मामलेकी वकालत कीजिये। वे आपका कहा न मानें, तो वे आपके अनुयायी कहलानेके लायक़ नहीं माने जा सकते। मेरी ज़िन्दगी आपके हाथमें है। मेरी अिज्ज़त पर मुझे छोड़ दीजिये। मैं बहुत धिक्कारपात्र मनुष्य हो सकता हूँ, मगर जब सत्य मेरे अन्तरमेंसे निकलता है, तब मैं अजेय होता हूं।"

हम सब खूब चिन्तामें पड़ गये। हममेंसे कितने ही रो रहे थे। अिस आदमीके हाथमें सिर दे दिया। अब और कुछ होनेका रास्ता नहीं, यह कह कर हाथ मलते हुअे बैठे थे। अिस बीच बापूकी अधीरता बढ़ रही थी। 'कहीं मुझे बचानेके लिअे अुल्टा-सीधा न किया जाय।' मुझे कहने लगे: "मालवीयजी, जयकर और सप्रूके नाम अितना सन्देश भेजो: 'मेरे खातिर अनुचित जल्दबाज़ी न करें। जो चीज़ अुन्हें अुचित लगे अुसी पर सही करें। बादमें मुझे मनाना पड़ेगा, तो वे भी दोषमें आ जायँगे और मैं भी आअूँगा। धर्मकी बातमें लिहाज़ नहीं किया जा सकता। अिसलिअे जो सत्य, योग्य और न्याय्य है, अुस पर क़ायम रहना ही चाहिये। अैसा करनेसे मेरी जिन्दगी जाती हो, तो भले ही चली जाय। अिसलिअे जिसे जो योग्य प्रतीत हो, वही करे। मेरी स्थिति — या तो पाँच वर्ष बाद हरिजनोंकी मतगणना हो या मुझे मरने दिया जाय — जिसे अुचित न मालूम होती हो और हानिकारक लगती हो, वह अुसे मंजूर न करे'।"

दो घंटे बाद देवदास, सर चुनीलाल मेहता और फिर राजाजी आये। आम्बेडकरने बहुत कोशिश की, तब भी अछूत पक्षने पाँच साल मंजूर नहीं किये। अिसलिअे बिड़लाने रास्ता निकाला कि दस सालमें यह प्रथा अपने आप बन्द हो जाय और अिस बीचमें दोनों पक्ष मिलकर दूसरा रास्ता निकालना चाहें तो निकाल लें। बापूके पास यह चीज़ आअी कि तुरन्त वे बोले: "बस, मंजूर है। बढ़िया चीज़ है। दुनियामें यह समझौता प्रसिद्ध हो जायगा।" सबके जी खुश होने लगे। बिड़ला आये। अुनके गाल पर बापूने ज़ोरका तमाचा मारा। अुन्होंने खबर दी कि अब तो दस्तावेज़ लिखा जा रहा है।

शामको पाँच-छह बजे तक कोअी खबर नहीं आअी, तो फिर बोले: "और कुछ हो गया होगा। तीन बजे दस्तावेज़ टाअिप हो रहा था, वह अभी तक टाअिप ही हो रहा है?" मैंने चन्द्रशंकरको खबर लाने भेजा। वे खबर लाये कि हस्ताक्षर हो रहे हैं और वहाँ तो सुलहकी वाह-वाह हो रही है। अिसके बाद बिड़ला दस्तावेज़ लेकर आये, फिर मालवीयजी आये। मालवीयजीकी खुशीका पार नहीं था। बादमें आम्बेडकर आये। ठक्करबापा सामने बैठे थे।

ठक्करबापाने कहा: "आम्बेडकरका परिवर्तन हो गया है।"

बापू बोले: "यह तो आप कहते हैं। आम्बेडकर कहाँ कहते हैं?"

आम्बेडकर: "हाँ, महात्माजी, हो गया। आपने मेरी बहुत मदद की। आपके आदमियोंने मुझे समझनेका जितना प्रयत्न किया, अुसके बनिस्बत आपने मुझे समझनेका प्रयत्न अधिक किया है। मुझे लगता है कि अिन लोगोंकी अपेक्षा आपमें और मुझमें अधिक साम्य है।"

सब खिलखिला कर हँस पड़े। बापूने कहा: "हाँ, हाँ।"

अिन्हीं दिनों बापूने भी कहा था कि "मैं भी अेक तरहका आम्बेडकर ही तो हूँ?" कट्टरताके अर्थमें!

सप्रू-जयकर बादमें बहुत देर तक बैठे रहे। वे चाहते थे कि अब किसी भी तरह लड़ाअीका अन्त हो और फिर बापूकी मदद मिले। बापूने कहा: "आप भले ही वाअिसरॉयको लिखिये कि अब जब कि देशमें सुधारकी यह लहर बह रही है और देश अिस काममें लग गया है, तब लड़ाअीका ज्यादा चलना संभव नहीं रहता। शान्तिका जो वातावरण है, अुसके अनुकूल क़दम अुठाअिये और हमें गांधीके साथ छूटसे मिलने और पत्र-व्यवहार करनेका मौक़ा दीजिये।"

जवाहरको तार भेजा:

"कसौटीके अिन तमाम दिनोंमें तुम हमेशा मेरे मनःचक्षुके सामने रहे हो। तुम्हारी राय जाननेकी मुझे बड़ी अुत्सुकता है। तुम जानते हो कि तुम्हारी रायको

मैं कितनी क़ीमती मानता हूँ। सरूपके बच्चे और अिन्दु मिल गये। अिन्दु आनन्दमें दीखती थी। शरीर भी कुछ भर गया है। मेरी तबीयत बहुत अच्छी है।

खूब प्यार,

बापू "

आज श्रीमती ज़गलूलका तार आया था। अुन्हें लिखाया:

"प्रेम भरे सन्देशके लिअे धन्यवाद। अीश्वरकी अिच्छानुसार हो"

आज सुबह कुमारी विलकिन्सन आअीं और समझौते पर अेक लम्बा बयान बापूसे लिखा ले गअीं। जो कुछ हो रहा है अुसमें अीश्वरका हाथ देखता हूँ। आसपास आश्चर्यकारक दर्शन हो रहा है। अिसके बारेमें लिखानेके बाद बताया कि "मंत्रि-मण्डल अिस समझौतेको अच्छी तरह धार्मिक वस्तु समझे, तो वह अिसे अक्षरशः स्वीकार करे। नहीं तो अिसका पूरी तरह त्याग करे।"

२५-९-'३२

अिसके बाद 'टाअिम्स' का मेकरे आया। अुसे मुलाक़ात दी।

दोपहरको बॉअिड टकर आया। अुसने शान्तिनिकेतनमें बापूके अुपवाससे हुअे अद्भुत असरकी बातें कहीं। कविने खुद देहातोंमें जाकर भाषण दिये और यहाँ तक जोशमें आ गये कि अुनके भाषणोंमेंसे कुछ वाक्य तो निकाल देने पड़े थे। अेक वक्तव्यमें लिखा: "मैं महात्मा गांधीका अन्त तक और अुस जन्ममें भी अनुसरण करूँगा।" अिस सारी खबरसे बापूको बड़ा सन्तोष हुआ।

कुमारी विलकिन्सन बंगाली गाँवोंका चित्र खींचते हुअे कहने लगीं: "बंगालमें आम्बेडकर शब्द गांधीके लिअे अेक पदवी बन गया है और लोग आम्बेडकर गांधीकी जय बोलते हैं। जब पूछा गया कि आम्बेडकरकी जय क्यों बोलते हो, तो कहने लगे कि महात्मा गांधीका नाम अब आम्बेडकर गांधी पड़ गया है।"

आखिर श्रीनिवास शास्त्रीका तार आया। बापूको अुससे बड़ा आनंद हुआ। अुन्हें जवाबमें तार दिया कि जिस तारके लिअे लालायित था, वह आ पहुँचा।

शामको सेनापति बापटको तार दिलवाया:

"अुपवासके लिअे आप जो कारण देते हैं, वह भावपूर्ण है। मगर अैसे मामलेमें मैं निष्णात माना जाअूँगा; और मेरी राय अिसके खिलाफ़ है, अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आप फिरसे विचार करें। मुझे तो विश्वास है कि आपके अुपवासको धर्मकी मंजूरी नहीं है। आपका मेरे प्रति प्रेम भाव है, तो अुसके लिअे आपको मेरे साथ मरना नहीं चाहिये। आपको तो मेरा काम करनेके लिअे जीना चाहिये। सभी साथी मेरे साथ मर जायँ, तो क्या परिणाम होगा, अिसे

सोचिये। अैसा करना क्या गुनाह नहीं होगा? अिसलिअे मेरा कहा मानिये। अीश्वर आपका भला करे!"

लॉरेन्स हाअुसमॅनका तार आया। होम्सका भी आया। हाअुसमॅनने विलायतमें 'फ्रेण्ड्स ऑफ़ अिण्डिया' की तरफ़से होनेवाली खास सभाके लिअे सन्देश माँगा था। सभा ब्रिटिश जनताको अुपवासका रहस्य समझानेके लिअे होने वाली है। बापूका मौन था। अिसलिअे मैंने सोचा कि दूसरे दिन जब तक मौन छूटे नहीं, तब तक बापू लेख नहीं लिखा सकेंगे। अिसलिअे मैंने तार रख छोड़ा था। अितनेमें तो बापूने माँग ही लिया। मैंने कहा आज थके हुअे है, जल्दी नहीं है। कल लिखाअियेगा। अिस पर अुन्होंने कहा कल तो सभा है। मैंने कहा सभा परसों है, कल लिखायेंगे तो भी चलेगा। आज आप लिखनेका कष्ट न कीजिये। अिस पर बोले: "नहीं, कल सुबह भी तो लिखना ही पड़ेगा? मुझे अभी ही कागज़ पेंसिल दो।" कागज़ पेंसिल दिये, सो तो हाथमें ही पड़े रहे और सो गये। फिर प्रार्थनाका समय हो गया। मैंने "हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे" भजन गाया। बापूने कागज़ पर लिखा: "फिर गाओ"। फिर गानेके बाद लंदनके लिअे यह सन्देश लिखा:

"मेरा अुपवास केवल हिन्दुओं और सारे हिन्दुस्तानसे ही नहीं, बल्कि ब्रिटिश अन्तरात्मा और तमाम दुनियासे अपील है। जो आदमी ब्रिटिश लोगोंको चाहता है, अुसके बारेमें अितना अविश्वास और ग़लतफ़हमी कैसे होती है, यह मेरे लिअे तो अेक पहेली ही है। खास तौर पर अिसलिअे कि मेरा धर्म शरीर-बलका आसरा लेनेसे अिनकार करता है। मैं अीश्वरसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझे अुग्र प्रकारके सामूहिक कष्टसहनका अन्तिम मार्ग बताये और अुससे पार अुतरनेका बल दे। जब ज़रूरत होगी और अैसा समय आयेगा, तब मैं जानता हूँ कि अुसका असर हर ब्रिटिश घरमें पड़ेगा। मैंने आशा रखी थी कि अिस अग्नि-शय्या परसे की हुअी मेरी अपील ब्रिटिश लोगोंको ज़रूर कुछ जाग्रत करेगी। हिन्दुस्तानके लोगोंको तो अुसने अद्‌भुत ढंगसे जाग्रत किया है। लेकिन अीश्वरकी अिच्छा शायद कुछ और होगी। मुझे तो ब्रिटेनकी सहानुभूति और मदद चाहिये ही, अिसलिअे आपकी सभा जो कुछ करेगी अुसे मैं क़ीमती समझूँगा। मैं जानता हूँ कि हज़ारों ब्रिटिश स्त्री-पुरुषोंकी मूक सहानुभूति और प्रार्थना मेरे लिअे है।"

बापूकी तबीयतकी खबर ठेठ जर्मनी तक पहुँच गअी थी। म्यूनिचके अेक डॉक्टरने तार भेजा था: "आप 'रिटेन्शन' अेनीमा लें, तो अुल्टी मिट जायगी।" बम्बअीके कअी डॉक्टरोंके तार आये थे। देशमुख, पटेल वगैरा आ गये थे।

कलकत्तेसे विधानचन्द्र और नीलरंजनका तार आया : "अखबारोंका समाचार यह है कि आपको अुल्टी होती है। हमें लगता है कि अुसे रोकनेके लिअे सोडेके अलावा ग्लुकोज़ लेना ज़रूरी है। हमारी प्रार्थना है कि आप ग्लुकोज़ लें।"

अुन्हें बापूने शान्तिसे तार लिखाया :

"डॉक्टरोंकी हैसियतसे आपकी सलाह सम्पूर्ण मानी जायगी। मगर अुसका नैतिक मूल्य कुछ भी नहीं है। अेक मानव-बन्धु अपने धर्मसे अिनकार कर दे, यह तो आप हरगिज़ न चाहेंगे। आपका बहुत आभारी हूँ। अुपवास ठीक चल रहे हैं।"

२६–९–'३२

सबेरे जवाहरलालका तार आया। बापू अुससे गद्गद हो गये। अुसका मतलब यह था : "अखबारोंसे समाचार मिला था। आश्चर्य भी हुआ और क्षोभ भी। फिर मेरा आशावाद सामने आया और मनको शांति मिली। समझ गया कि अति दलितोंके अुद्धारके लिअे जितना त्याग किया जाय, अुतना ही थोड़ा है। क्योंकि अिन लोगोंके स्वराजके बिना हमारा स्वराज निरर्थक है। अुपवासका धार्मिक रहस्य मैं नहीं समझता। कुछ लोग अिसका दुरुपयोग भी करेंगे। मगर मैं आप जैसे जादूगरको क्या सलाह दूँ?"

मौन तो दो बजे खुलनेवाला था। सुबह अखबारोंमें पढ़ा कि मंत्रि-मण्डलकी बैठक अभी तो बुधवारको होगी। हम सबको बड़ी चिढ़ हुअी। डॉक्टरोंने आज बापूकी तबीयतकी बात कह कर जी अुड़ा दिया। कहा कि "अितने खूनके दबावके साथ चार दिनसे ज्यादा नहीं टिक सकते।" सरकारसे भी अिन लोगोंने सिफ़ारिश करनेका विचार किया था कि अिस हालतमें गांधीजीको जेलमें रखना जोखमकी बात है। मैंने तो कह दिया कि अिस स्थितिमें छोड़नेमें भी सलामती नहीं है। जो होना हो, यहीं होने दो।

आज कअी मुलाक़ातोंका दिन था। सरूपरानी, वासंतीदेवी, अुर्मिलादेवी, कविसम्राट् टागोर। सबसे पहले सरूपरानी और कमला आअीं। सरूपरानीने थोड़ी देर बापूको देखा और फिर रो पड़ीं। बापूसे मिलीं। बापूकी आँखोंमें भी पानी आ गया। फिर स्वस्थ होकर देशमें आअी हुअी जाग्रतिकी बातें करने लगे। अछूतोंके लिअे कैसे भारद्वाज मन्दिर खोला गया, कैसे पंडोंने भंगियोंको भीतर धकेला, कैसे सरूपरानी खुद वहाँ गअीं, कैसे प्रसाद बाँटा और संकोच होने पर भी खुदने कैसे प्रसाद खाया, अिन सब बातोंका वर्णन किया। बोलीं : "आपकी जान बचानी थी तो भंगीका क्या, कुत्तेके मुँहमेंसे भी खा लेती।"

अिसके बाद दासकी पत्नी और बहन आअीं ।

यह सब होने पर भी मेरा जी अुड़ गया था। अुसी समय नहास पाशाका तार माँगा । देवदास यह तार छपवाने ले गया था । अिस पर बापू बोले : "खैर, तार देखे बिना ही जवाब लिखूँगा ।" बापूने जवाब लिख कर दिया :

"आपके सन्देशसे हृदय द्रवित हो गया । परमात्मा करे आत्मशुद्धिके अिस अुपवासका असर सभी धर्मसम्प्रदायों पर पड़े और वह सबको और हमें जीती-जागती गाँठमें बाँध दे । मेरे पिछले सफ़रमें आपने मुझे जो मिश्रका कम्बल भेंट किया था, वह मुझे अिस संग्राममें अकबर और रहीम अल्लाहकी छाया दे रहा है । — गांधी"

यह तार देखकर सरोजिनी बोलीं : "मैं कहती हूँ कि यह बूढ़ा मरेगा नहीं।"

अिसके बाद अेक बजे अेसोशियेटेड प्रेसकी तरफ़से खबर आअी कि मंत्रि-मण्डलके समझौता स्वीकार कर लेनेका प्रस्ताव आ गया है । मेज़र भण्डारीको भी डोअिलका टेलीफ़ोन आया और वे वहाँ गये । डेढ़ या दो बजे कवि आये। देर तक दोनों मिलते रहे । कविके बनिस्बत बापूकी भावना ज्यादा अुमड़ आअी थी। कविने अुपवाससे शांतिनिकेतनमें हुअी जाग्रतिकी बात कही। वहाँके ढेड़-भंगियोंकी सभाकी बात कही और फिर शान्तिसे छायामें जाकर बैठ गये। दो बजे, तीन बजे और चार बज गये, परन्तु सरकारकी तरफ़से कोअी जवाब नहीं आया । घड़ियाँ और मिनट घंटोंके बराबर लग रहे थे । सब कहते थे कि "यह कैसी निर्दयता है ?"

सवा चार बजे डोअिल सरकारका वक्तव्य लेकर आये । बापूसे पढ़नेको कहा । पढ़ लिया । बापू कहने लगे : "आम्बेडकरकी राय जाने बिना कुछ भी नहीं हो सकता । अुन लोगोंको संतोष हो, तभी हम अिसे स्वीकार कर सकते हैं । और अिसमें दूसरी अस्पष्टताअें भी बहुत हैं।" कुंजरू, राजाजी, वल्लभभाअी सब सोचने लगे । सबको सन्तोष हुआ और बापूको जाकर समझाया कि अब ज्यादा आग्रह करनेकी ज़रूरत नहीं। राजाजीने कहा : "अुन लोगोंको तो यह पसन्द है ही। अितनी आशा तो अुन लोगोंने भी नहीं रखी थी ।"

अन्तमें बापूने कहा : "बस, आप सब कहते हैं तो ठीक है । डोअिलको बुलाअिये ।" डोअिलको बुलाकर धीरेसे कहा : "यह अस्पृश्यता निवारणका काम जारी रखनेके लिअे अभी मुझे जो छूट दी गअी है, वह आपको चालू रखनी पड़ेगी ।"

डोअिल बोले : "मैं सरकारसे बात करूँगा । मैं तो कोअी जवाब नहीं दे सकता ।" फिर खुश होकर अिजाज़त माँगते हुअे कहने लगे : "मैं आशा रखता हूँ कि आप श्रीमती गांधीके हाथसे अुपवास तोड़ेंगे ।" यह कह कर अुन्होंने बा के पास जाकर अुनसे हाथ मिलाया ।

बापूने अुनसे कहा : "मुझे परचुरे शास्त्रीकी ज़रूरत है ।" शास्त्रीजीको बुलवाया गया । बापूके दाहिनी तरफ़ कुरसी पर कवि बैठे, बाअीं ओर कम्बल बिछा कर परचुरे शास्त्री बैठे । सामने सारा आश्रम-मण्डल बैठा । पीछे जेलर, मेजर भंडारी और मेहता बैठे ।

कविने "जीवन जखन शुकाये जाय" गाया । सौभाग्यसे मेरे पास यह लिखा हुआ था । अिसका राग वे तो भूल ही गये थे ।

फिर परचुरे शास्त्रीने अुपनिषदोंमेंसे मंत्र बोले और बादमें "वैष्णव जन" गाया गया । सबको फल बाँटे गये । जेलवालोंने भी फल लिये । आनंद ही आनंद छा गया । आज सब आनेवाले अपनेको धन्य मानने लगे ।

रातको फिर बापूने 'हरिने भजतां' भजन गवाया । रातको कटेलीकी माताजी और श्रीमती भंडारी वग़ैरा आअीं । रातको साढ़ेआठ बजे बापूने अपना बयान लिखवाया । अुसमें अितनी तफसील थी कि मानो अुन्हें कोअी थकान ही न हुअी हो और अुपवास किया ही न हो ।

२७-९-'३२

सुबह ही सुबह श्रीमती भंडारी बापूको जन्मदिनकी बधाअी देने आअीं । फिर तो जेलके नौकरोंके और अुनकी स्त्रियोंके झुंडके झुंड आने लगे । तार तो दिन भर आ ही रहे थे । अुपवास छूटनेके तार तो थे ही, अुनमें जन्मदिनके तार और मिल गये । फिर तो पूछना ही क्या ? सारे दिन मुलाक़ातें होती रहीं । कवि, मालवीयजी वग़ैरा दिन भर रहे ।

२८-९-'३२

कविने अपनी योजनाके बारेमें खूब बातें कीं । अुनकी योजना तो स्वतंत्र रूपमें प्रकाशित हो गअी । फिर राजनैतिक परिस्थितिके बारेमें अुन्हें जो तार देना था, वह बापूसे दिलानेकी सूचना देकर वे चले गये । बापूने मसौदा तैयार करके राजाजीके सामने पढ़ा । राजाजीने फौरन आपत्ति की कि यह तार आप यहाँ अितनी मंडलीमें बैठ कर लिखें और वह यहाँसे जाय, यह तो अवश्य ही अनर्थ और पाप होगा । मैं तो विरोध करने ही वाला हूँ । मालवीयजी और सरोजिनी सब सहमत हुअे, अिसलिअे तार फाड़ दिया गया ।

फिर ज़ामोरिनके नामके तारका मसौदा बनने लगा । अिसमें बापूने यह लिखा था कि अुपवासका हेतु ठण्डे दिलोंको सतेज करना था । मालवीयजीने कहा : "'ठण्डे' शब्दको निकाल दीजिये, अुन्हें अपमान लगेगा ।" राजाजीने कहा : "नहीं, यह शब्द निकाल देंगे, तो 'हृदयहीन' अर्थ हो जायगा ।" अन्तमें वह शब्द तो निकाल ही दिया ।

फिर बापूने केलप्पनको लिखा कि ज़ामोरिनके तारके अनुसार तुम लोगोंने सूचना दिये बिना अुपवास किया है, अिसका भी विचार करो।

दोपहरको कुंजरू और टक्कर बापा आये। अिनके साथ भविष्यके विषयमें बातें हुअीं। कुंजरूने कहा: "आप सविनय भंग वापस ले लें, यह तो हो ही नहीं सकता। मगर जैसा अर्विनने किया वैसा कोअी सम्मानपूर्ण समझौता हो सकता है।"

बापूने कहा: "पूर्ववत् स्थिति कर दें तो काफ़ी है। अिसमें क़ैदियोंको छोड़नेके अलावा ज़मीनें वापस देनेकी बात भी होनी ही चाहिये। अर्विनके साथ साफ़ बात हुअी थी।"

अितनेमें फ़ादर विन्स्लो आ गये। बापूने अुन्हें समझाया कि "आपके लिअे सरल मार्ग है। आप सब अीसाअियोंका मत लीजिये। आप आज जिसे चाहें अुसे मत नहीं दे सकते। यह अन्तरात्माका सवाल कहलायेगा। वहाँ विलायतमें तो सिर्फ़ डॉ० दत्ताने विरोध किया था, दूसरे तो कोअी विरोध करने जैसे थे नहीं। मगर आप तो यहाँ अिस पर अच्छी तरह लड़ सकते हैं।"

अुमा नेहरूको मन्दिरोंका सत्याग्रह करनेकी कला समझाअी। या तो मन्दिर खुलवायें या अुनका त्याग करायें। कोअी वहाँ जायगा ही नहीं तो थक जायेंगे।

२९-९-'३२

आज मेजर भंडारीको सरकारका हुक्म मिला कि मुलाक़ात वग़ैरा सब बन्द हैं और अब पहलेकी तरह तंत्र जारी कर दिया जाय। बापू चिढ़ गये और अुन्होंने सख्त पत्र लिखा। खाते-खाते पत्र लिखाते जाते थे और अेक-अेक वाक्य बोलते समय अुनकी मुखमुद्रा वाक्यका भाव व्यक्त करती थी। सुबह जयकर, केलकर और मालवीयजी आकर चले गये। अुन्हें वापस आना था, मगर आनेकी ज़रूरत ही न रही। स्वरूपरानी तो बेचारी दरवाज़े पर आअी हुअी वापस गअीं। अुर्मिलादेवी वापस आकर पाँच-सात मिनट जो बातें करना चाहती थीं, वे सब रह गअीं। मगर क़ैद किसे कहते हैं! क़ैदमें हैं यह कहीं भूल जायँ तो!

जयकर, हरिजी, मालवीयजी सब भविष्यमें शान्तिका मार्ग ढूँढनेकी चर्चा करने आये थे। सब कुछ व्हाअिट हॉलसे हो तो हो, शिमलासे कोअी आशा नहीं। सी० पी० जैसे आदमी बिलकुल हितशत्रु बन बैठे हैं। यहाँकी सरकारसे शायद सुलहकी बात कराअी जा सके तो कराअी जा सके, अैसी बात हुअी। बापूने कहा कि "शिमला नहीं बदलेगा। वहाँके लोग चले जायँ और दूसरे न आ जायँ, तब तक परिस्थितिमें किसी परिवर्तनकी आशा रखना मिथ्या है।"

केलप्पनको लम्बा तार दिलवाया कि अुपवास तीन महीने मुल्तवी रखा जाय। यह मियाद पूरी होने आये, तो फिर बापूकी सम्मति लेकर अुपवास घोषित किया जाय। अुनको तार तो देते ही रहे थे। फिर रंगस्वामी आये। अुन्होंने कुछ बातें कहीं और बापूने कहा: "बस मैं तार दूँगा। मगर अब यह चीज़ मेरे अन्दर पचने दो, फिर मुझे पता चलेगा कि अुससे क्या कहना है।"

अिसके बाद दो-अेक घण्टे दूसरी बातें करते रहे। अितनेमें २३ मअीका लिखा हुआ केलप्पनका पत्र आ पहुँचा। तुरन्त बापूने लम्बा तार लिखवाया। लिखवा कर कहने लगे: "बस, अिस पत्रके आते ही सूझ गया कि मुझे अुससे क्या कहना है।"

शामको बा को जाना पड़ा। यह बड़ी मुश्किल बात थी। बापूने कहा: "अब जेलरको न रोको। तुरंत चली जाओ, तुरंत चली जाओ।"

बा के दिलमें यह था कि बापूके लिअे आखिरी खाना तैयार करके जाअूँ। आखिर तैयार हो गअीं। बापूसे बोलीं: "लो तो आना। मैं जाती हूँ।" कहते-कहते आँखें भर आअीं।

बापूने अुनके गाल पर हलकी-सी चपत लगाकर कहा: "मैं आअूँगा, या तू आयेगी। चिन्ता तो करनी ही नहीं है। अितने दिन रहनेको मिल गया, यह क्या कम है?"

आज रातको भी "हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे" भजन गवाया। आज नियमके अनुसार तो "बहारे बाग़ दुनिया" की बारी थी। मैंने पूछा: "तो भी 'हरिने भजतां' ही गाना है?"

बापू: "हाँ, तो भी।"

अिसलिअे मैंने पूछा: "यह आप कैसे कहते थे कि अिस भजनका अितिहास है? क्या अितिहास है?"

बापू कहने लगे: "खास अितिहास तो नहीं है। मगर अेक बार हरजीवन कोटकको पत्र लिख रहा था और यह भजन याद आ गया। बस, फिर किसी भी तरह वह मनमेंसे निकलता ही नहीं था। अुसके बाद तुमने अेक दिन अुपवासमें गाया। मैंने फिर गवाया। और अब रोज़ गवाता हूँ, क्योंकि तृप्ति ही नहीं होती।"

शास्त्रियारका बहुत ही सुन्दर पत्र आया। पढ़ कर सरोजिनीसे बोले: "पूरा धनका भंडार है।"

आज बा को छोड़ दिया। मेजर भंडारीने ही अुन्हें छोड़नेकी सिफ़ारिश की थी। यह अिसलिअे कि अगर अुन्हें कभी क़ैदीके रूपमें यहाँ लायें, तो शायद बापू कहें कि 'सरोजिनी नायडूको न आने दिया जाय, तो मैं बा से भी मिलना नहीं चाहता।' सरकारको अुन्होंने सूचना दी और वह मान ली गअी। बापूको यह बहुत अच्छा लगा कि अिस तरह मेजर अुनकी भावनामें प्रवेश कर सके।

३०-९-'३२

बापूने आज सुबह विलायतके बहुतसे प्रेमपत्र लिख डाले।

पहला चार्ली अेण्ड्रूज़को :

"मेरे अुपवासका तुम्हारे दिल पर कितना असर हुआ था, यह तो तुम्हारे पहले तारसे ही मालूम हो गया था। मेरे लिअे तो यह अीश्वरका स्पष्ट आदेश था। अुसके बाद जो घटनाअें हुअी हैं, अुनसे हँसी अुड़ानेवालोंके दिल भी बदल गये हैं। सनातनियोंकी तरफ़से बहुत बड़ा जवाब मिलेगा, यह आशा तो मैंने रखी ही थी। मगर अेकाअेक जो अुत्साह प्रगट हुआ है, अुसके लिअे मैं तैयार नहीं था। लेकिन अिस सबसे मैं धोखा नहीं खाअूँगा। जो मन्दिर खुले हैं, वे कबतक खुले रहते हैं और जो बातें हुअी हैं, वे कबतक जारी रहती हैं, यह देखना है। अिसलिअे अुपवासका यह टूटना अुसका मुल्तवी होना ही है। फिर भी मैं कोअी चिन्ता नहीं करता। अुपवास और अुसका पारणा अीश्वरने ही कराया है। और फिर कभी अुपवास करना पड़ा, तो अुसे भी वही करायेगा।

"गुरुदेवकी मुलाक़ात आशीर्वाद साबित हुअी। हम पहलेकी अपेक्षा अेक दूसरेके अधिक निकट आ गये हैं। अुपवासके आरंभमें ही अुन्हें लिखा हुआ मेरा पत्र और अुपवासके लिअे आशीर्वाद देनेवाला अुनका तार अेक दूसरेसे टकरा गये, और अुसके बाद तुरंत ही शास्त्रीका बहुत प्रेमपूर्ण तार आया। मुझे पता नहीं, यह सब लिखनेका महादेवको समय मिल सका या नहीं।

"मगर यह सब तो अब अितिहासकी बात हो गअी। मुझमें दिनोंदिन शक्ति आती जा रही है। चिन्ता करनेकी मनाअी है।"

यह लिखनेके बाद अेण्ड्रूज़ और वेरियरका तार आया। अिसलिअे बापूने 'पुनश्च' करके यह और जोड़ दिया :

"मैं युरोपके प्रेमपत्र लिख रहा था कि तुम्हारा तार, जिस पर वेरियरके भी दस्तखत हैं, मिला। अीश्वरकी बड़ी कृपा है। मैं जानता हूँ, तुम खूब मेहनत कर रहे हो।"

श्रीमती अेस्थर मेननको :

"अितनी दूरसे भी मैं तुम्हारा दुःख समझ सकता हूँ। मगर अीश्वर हमेशा हमारे पास काँटोंके रास्ते ही आता है। अैसी पावक वेदनाके समय अेक गहरा, अूपरसे न दिखनेवाला आनंद अनुभव होता है। मैं आशा रखता हूँ कि अिस परीक्षाके दरमियान तुम भी अिस आनंदकी भागीदार बनी होंगी। अिंग्लैण्डसे हॉरेस अेलेग्ज़ेण्डर और अेण्ड्रूज़ तथा औरोंने लम्बा सन्देश भेजा था, अुसमें तुम्हारा नाम भी मैंने देखा या सुना था। मुझमें हर रोज़ शक्ति आती जा रही है। मुझसे लम्बे पत्रकी आशा तो तुम नहीं रखती होंगी। मुझमें जो शक्ति है, वह अिंग्लैण्डके मित्रोंको प्रेमपत्र लिखनेमें खर्च कर रहा हूँ।"

देवी वेस्टको :

"मेरे अुपवासकी खबर सुनकर तुम पर क्या बीती होगी, सो मैं जानता हूँ। परन्तु अीश्वरकी अिच्छा यही थी। बादमें जो कुछ हुआ, अुसमें यह अिच्छा क्या तुम देख नहीं सकतीं?"

म्यूरियलको :

"सब खत्म हो गया। जिस अुपवासका अितना शोर मचा, वह गअी-बीती बात बन गया। यह अनुभव करने लायक ही था। और कुछ नहीं, तो अिसीलिअे कि दुनियाके सभी भागोंसे प्रेमकी वर्षा हुअी और हिन्दुस्तानके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सुधारकी लहर आ गअी।"

हॉरेस अेलेग्ज़ेण्डरको :

"अुपवासके दरमियान अंग्रेज़ मित्र निरंतर मेरे हृदयके समीप थे।"

वेरियरको :

"और बहुत-सी बातोंके साथ अिस अुपवाससे मैं संघके सदस्योंके प्रत्यक्ष सम्पर्कमें आया हूँ। फादर विंस्लोके साथ प्रेममय वार्तालाप हुआ। अिन सब भाअियोंके साथ परिचय होनेसे मुझे खुशी हुअी। श्यामराव भी अुनके साथ थे।"

रोलाँ भाअी–बहनको :

"प्रिय मित्रो,

"आपका प्रेमपूर्ण सन्देश मिला। अिस अग्नि-परीक्षाके दरमियान आप हमेशा मेरे सामने थे। अीश्वरकी दया अपार थी और सारे प्रसंगमें प्रत्यक्ष हो रही थी। मुझे अभी अभी मीराका पत्र मिला। अुसने तो आनंदका लाभ लूटे बिना दुःख अुठाया। मगर अुसने यह शरशय्या पसन्द की है, और अुस पर वह बहादुरीसे लेटी हुअी है।"

पोलाक दम्पतीको :

"प्रिय हेनरी और मिली या तुम चाहो तो मिली और हेनरी,

"तुम्हारे तारों और मन ही मन मिले हुअे सन्देशोंसे मुझे यह खबर लग गअी कि अिस आनन्दमय वेदनाके दिनोंमें तुम पर क्या बीती होगी और तुमने क्या-क्या किया होगा। यह तो नये जन्मकी वेदना थी। मेरा तो यह नया जन्म हुआ ही है; और मैं समझता हूँ कि वहम और अज्ञानमें डूबे हुअे हिन्दुस्तानका भी नया जन्म हुआ है। चारों ओर जो अुत्साह प्रगट हुआ है, अुसके सामने अुपवासकी तो कुछ भी बिसात नहीं। हिन्दुस्तानके बाहरसे और अिंग्लैण्डसे प्रेमके बेशुमार पैगाम आये हैं। अिन सब बातोंके ज्ञानसे त्रिविध ताप शीतल हो जाता था।"

शास्त्रियारको जवाब :

"परम प्रिय भाअी और मित्र,

"आपका तार और आपका पत्र मेरा धन और मेरी खुराक है। आपके विषयमें मेरे मनमें गलतफ़हमी न होगी। अधिक अच्छे संयोगोंमें मैं समझता हूँ कि लन्दनमें मैंने जो कुछ किया, अुसका पूरा और समझमें आने लायक़ हिसाब देनेमें मुझे कोअी कठिनाअी न होगी। मगर यह छोटी बात है। मुझे तो यह चाहिये कि कठिनसे कठिन परीक्षामें भी हमारा प्रेम बना रहे। मेरी तबीयत अच्छी है। खूब प्यार।"

हीरालाल शाहको :

"अिस अुपवासमें शारीरिक यातना काफ़ी भुगतनी पड़ी। अंत्यज भाअी-बहनोंके प्रति हमने जो पाप किया है, अुसके प्रायश्चित्तके लिअे तो यह यातना भोगनी पड़ी, सो ठीक ही हुआ। मगर शरीर चोर है। जितना दुःख टाल सके, अुतना टालना चाहता है। मैं नहीं जानता, अभी मेरे भाग्यमें कितने अुपवास और लिखे हैं। मगर पानीसे पहले पाल बाँधना चाहता हूँ। जैन अुपवासोंमें 'अंबर' किसलिअे लेते हैं? कितना लेते हैं? अिससे मतली मिटती है? पानी पीनेमें मदद मिलती है? अम्बर किससे पैदा होता है? कोअी-कोअी तो कस्तूरी लेते हैं। अिस बारेमें अनुभवियोंसे जानकारी मिल सके, तो भेजना।"

चिन्तामणिको :

"त्रिविध तापके अिन दिनोंमें अीश्वर मेरा पथप्रदर्शक और सहारा था।"

शारदाबहनको :

"तुम्हारे पत्रकी हर पंक्तिसे प्रेम टपकता है। तुम जैसी पुत्री मुझे मिली, यह मेरा सौभाग्य ही है। तुम जैसी बहनोंने मुझे जो पद दिया है, वह

ले तो बैठा हूँ। वह भी अीश्वरके नाम पर लिया है। वही शोभावे और लाज रखे। मुझे बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है।"

गोविन्ददासको (हिन्दीमें):

"अंत्यज भाअियोंके प्रेमके बारेमें मुझे कभी अविश्वास था ही नहीं। अीश्वरने सब अच्छा ही किया है। अब हम आशा रखें कि जो अुत्साह पैदा हुआ है, वह चिरस्थायी रहेगा और अस्पृश्यताकी जड़ अुखड़ जायगी।"

मेरी बारको:

"हरदम यह रटन जारी है कि अीश्वर महान और दयालु है।"

रेहाना बहनका दूसरा पत्र आया। अुसे अुर्दूमें लिखा:

"प्यारी बेटी रेहाना,

"फ़ाक़ेके बाद यह पहला अुर्दू खत है। तुम्हारे भजन बहुत अच्छे हैं। फ़ाक़ा शुरू करनेके वक़्त जो भजन गाया वह तुम्हारा नहीं है, तो क्या है? आखिर है तो तुमने ही दी हुअी अुमदा चीज़। हाँ, तुम्हारा ही होता, तो मुझे बहुत ज्यादा अच्छा लगता। ठीक है, दुबारा जब फ़ाक़ेका मौक़ा खुदा भेज देगा, तब तुम्हारा ही बनाया हुआ भजन मुझे चाहिये। आजसे तैयार करो।"

१-१०-'३२

बूढ़े अब्बास साहबको लिखा:

"सचमुच आपकी श्रद्धा ज़बरदस्त थी और जो घटनायें हुअीं, अुनसे वह सच्ची साबित हुअी। वह श्रद्धा अितनी जीती-जागती थी कि दूसरे मित्रोंकी तरह यहाँ दौड़े आकर मुझे रोकनेके लिअे आपको विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ा। सचमुच ही बेगम अब्बासकी भविष्यवाणी या भावीकी प्रेरणा सच्ची निकली। अुन्हें मेरा खूब मुबारकबाद। दूध और फलोंसे शक्ति आती जा रही है।"

फिलिप किंग्स्लीको सन्देश भेजा:

"मैं चाहता हूँ कि पिछले कुछ दिनोंमें हिन्दुस्तानमें जो घटनाअें हो गअी हैं, अुनमें अमेरिका अीश्वरका हाथ देख सके। यह मनुष्यका काम नहीं, अीश्वरकी ही कृपा है अिसमें शक नहीं।"

मीराको:

"अुपवासके द्वारा पैदा हुअे परिणामोंको देखते हुअे अुपवास किसी गिनतीमें नहीं था। यह काम अिन्सानका नहीं, अीश्वरका है। यह सब देखकर तेरी अुदासी भाग जानी चाहिये।"

नाजुकलालको:

"प्रभुने नया जन्म दिया है। अब वह अपनी अिच्छानुसार चलायेगा।"

क्रेसवेलको :

"हाँ, अीश्वरकी मुझ पर दया है; अुसके मुझ पर चारों हाथ हैं।"

अब्दुलरहीमको :

"आपके साथ मैं पूरी तरह सहमत हूँ कि दूसरे साम्प्रदायिक प्रश्न भी परस्पर लेन-देनकी भावनासे तय होने चाहियें। मैं आशा रखता हूँ कि अिस दिशामें प्रयत्न होंगे।"

आनंदशंकर ध्रुवको :

"मेरे खयालसे मेरे अनुभव अीश्वर-साक्षात्कार ही हैं। दूसरे साक्षात्कारमें और ज्यादा क्या होगा?"

जमशेद मेहताने यह लिखा था कि प्रायोपवेशन किसे करना चाहिये, कब करना चाहिये, वगैरा बातों पर आप कुछ नियम तय कर दें, तो ठीक हो। अुन्हें लिखा :

"अीश्वरके नामका कितना दुरुपयोग होता है, यह सोच लीजिये। जब वह अिस दुरुपयोगको सह लेता है, तो फिर महान शक्तियोंका अुपयोग करनेमें अुनका दुरुपयोग भी हो जाय, तो यह सहने लायक है। फिर भी जैसा आप कहते हैं, अुसे रोकनेके लिअे भरसक कोशिश करनी ही चाहिये। वह करनेमें मैं नहीं चूकूँगा।"

मुनशीको :

"जो कुछ हुआ वह मनुष्यका काम था ही नहीं। मुझे यह खयाल तक नहीं आता कि मैंने कुछ किया है। 'जो कुछ करे वह मुझे अर्पण करके मेरे निमित्त कर', गीताका यह वाक्य मैं हर क्षण प्रत्यक्ष अनुभव किया करता हूँ और रसके घूँट पिया करता हूँ।"

अुपवास करनेके बारेमें बहुतसे तार आते हैं। गणेशन्‌का तार था कि शंकर पार्थसारथिका मन्दिर खुलवानेको अुपवास कर रहा है। ट्रस्टियोंको कुछ दिनका नोटिस देनेके बाद भी कुछ नहीं किया गया। बापूने अुसे फ़ौरन ही तार दिया :

"शंकरके जैसे अुपवास अनुचित नहीं, तो समयसे पहले ज़रूर हैं। अुसे अुपवास छोड़ देनेके लिअे कहो।"

और बहुतसे पत्र भी हैं। आज चौघाटसे बहुत तार आये। सवर्ण परिषद्‌की कार्य-समितिके अध्यक्षका तार महत्वका था। अुसका आशय था कि हज़ारों आदमियोंकी मौजूदगीमें अिस परिषद्‌ने मन्दिर खोलनेका निश्चय किया है; मगर ज़ामोरिन नहीं मानता; अिसलिअे सवर्ण अन्दर जाकर और अवर्ण बाहर रहकर सामूहिक अुपवास करनेका विचार कर रहे हैं। आप अपना आशीर्वाद दीजिये।

केलप्पनने भी लिखा कि "नोटिस तो दिया जा चुका है। सर्दी और धूपमें खड़े रहकर कितने ही लोगोंने सत्याग्रह किया है, क्या यह नोटिस नहीं माना जायगा? आपके अुपवासको मैंने सम्मति मान ली है। अब तो लगभग विजय दिखाअी दे रही है। अुपवास छोड़नेसे सारी लड़ाअी पीछे हट जायगी। मैं अपनी आत्माकी ही बात मानूँ, तो अुपवास लम्बाअूँ; आपकी आज्ञा ही हो तो छोड़ूँ।"

बापूने अुन्हें लम्बा तार दिया: "फ़िलहाल अच्छे परिणाम दीखते हों, तो अिससे जो क़दम अुठाया गया है अुसकी नीति पर कुछ भी असर नहीं पड़ता। सारे हालातको देखते हुअे मुझे तुम्हारी भूल मालूम हो रही है। अुपवास छोड़ो और तीन महीनेका नोटिस दो।"

वल्लभभाअीको और मुझे अिससे आघात लगा। मेरा तो यही सवाल था कि अुसके लिअे यह अन्तरात्माका सवाल क्यों नहीं हो सकता? अिस पर बापू कहने लगे: "वह मुझे पूछता है, मेरा आशीर्वाद माँगता है, यही बताता है कि अुसके लिअे यह अन्तरात्माका प्रश्न नहीं है; मगर वह मेरी रायसे चलता है। बापटका मेरे साथ विरोध था; वे मेरे अनुशासनमें नहीं, अिसलिअे अुनके बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है; लेकिन केलप्पन तो अनुशासन माननेवाला ठहरा। कामको कोअी धक्का पहुँचनेवाला नहीं। तीन महीनेके बाद केलप्पनमें शक्ति होगी, तो वह फिर ज़रूर अुपवास करेगा। मान लीजिये कि वह न करे, तो मैं तो बैठा ही हूँ। मैं तो अुसे वचन दे चुका हूँ कि तुम्हारा भार मैं अुठाअूँगा। अिसलिअे मरना ही होगा। भगवानसे ही मैं तो कहूँगा कि अेक निर्दोष बकरेको छुड़ाया है, अब अुसकी क़ीमत पर यह दूसरा बकरा ले लो।"

शामको अैसे समाचार आये कि केलप्पन बापूके तारके परिणामस्वरूप कल अुपवास छोड़ेंगे।

बापू बोले: "अिसकी हठका कोअी ठिकाना है? अभी कल तक राह देखनी है। अेक बार भूल मालूम हुअी कि तुरन्त अुसे सुधारना चाहिये।"

मैंने कहा: "मेरे मनमें दिन भर यह विचार आया कि भले ही केलप्पनका अुपवास छूटे, और आपके कहनेसे छूटे, मगर अिसीके साथ मन्दिर भी खुले।"

बापू बोले: "मुझे अैसा विचार नहीं आया। मुझे तो यही लगा कि अिसका अुपवास बन्द हो जाय तो अच्छा। मन्दिर न खुले तो मुझे परवाह नहीं। मैं तो यह कहूँगा कि मन्दिर न खुले तो अच्छा। कारण, केलप्पनकी बहादुरी तो अद्‌भुत कहलायेगी, मगर अिसमें शंका नहीं कि यह अुपवास दूषित है। अिस अुपवासके छोड़नेमें अुसकी ज्यादा बहादुरी मानी जायगी। अुसकी आलोचना तो हरगिज़ नहीं होगी, मगर अुसकी नम्रता और नियमपालनकी तारीफ़ होगी। और तीन महीने बाद तो फिर करना ही है। मुझे कोअी शक नहीं कि

यह अुपवास दूषित है। और अिस तरह अुतावलीमें मन्दिर खुले, यह भी ठीक नहीं।"

जबलपुरवाले अेक वकीलने तार दिया कि सहभोजन किया जाय या नहीं? कांग्रेसी विरुद्ध हैं। बापूने तुरन्त लिखा : "मैं राय नहीं दे सकता।"

अलीगढ़के अेक डॉ० मोहनलालने तार दिया था : "सवर्ण हिन्दुओंने प्रचारके लिअे सफ़ाअीका काम शुरू किया है। सम्मति दीजिये।"

बापूने जवाब दिया :

"अगर बिलकुल सच्चाअीसे किया जाय और भंगी भाअी अिसका असली भाव समझें, तो सवर्णोंके अिस तरह भंगियोंके साथ मिलकर सफ़ाअीका काम करनेसे अच्छे परिणाम निकलेंगे।"

आज बिड़ला और मथुरादास विसनजी आये। मुख्य कार्य अस्पृश्यताके कामके बारेमें सूचनाअें लेना था। बोले : "हम तो रुपया देना जानते हैं और कुछ नहीं जानते। अिसलिअे सलाह दीजिये।"

बापूने कहा : "मन्दिर वग़ैरा खुलें या न खुलें, मगर अिन लोगोंकी भलाअीके काम होने चाहियें। अुनके बीचमें रहकर अुनकी शिक्षा, सफ़ाअी वग़ैरा करनेवाले निष्ठावान शिक्षक चाहियें।"

बिड़लाने पूछा : "सफ़ाअीके कारण अलग बैठाया जा सकता है?"

बापूने कहा : "नहीं, अिसमें अधर्म है। जोखम अुठाकर भी साथ ही बैठाना चाहिये। अिसमें सैकड़ों वर्षोंके पापका प्रायश्चित्त है।"

अुन्होंने होरसे हुअी अपनी बातें कहीं, बंगालके गवर्नरसे हुअी बातें भी कहीं। भावी सुलहके लिअे बापूकी राय माँगी। बापूने कहा कि "कमसे कम माँग यह है कि पहले जैसी स्थिति हो जाय, जमीनें वापिस मिलें" वग़ैरा। फिर भी अिस बारेमें कहीं भी लिखनेसे अिनकार कर दिया। बापूने कहा : "समझौतेकी बातचीत करनी हो, तो ये लोग भले ही करें, अपनेसे तो नहीं हो सकती।"

२-१०-'३२

रामदासको ब्रह्मचर्यके निश्चयकी अिच्छाके सम्बन्धमें लिखते हुअे : "तू जो निश्चय करनेका सोच रहा है, वह तो बेशक बढ़िया है। तेरा अपना स्वतंत्र निश्चय हो जाय, तो अभी नीमूसे अुसकी चर्चा करनेकी ज़रूरत नहीं। तेरी शान्तिका प्रभाव अुस पर पड़ता ही रहेगा। यही ब्रह्मचर्यकी खूबी है। जब दोनों अेक-से दुर्बल होते हैं, लेकिन दोनों संयम रखनेकी अिच्छा रखते हैं, तब अेक दूसरेके साथ चर्चा करनी चाहिये और फिर अेकका निश्चय दूसरेकी मदद करता है। जब अेक दृढ़ है, तब वह

चर्चा नहीं करे; मगर अुसकी निर्विकारिता अपने आप काम करती रहेगी। यह तो मैंने तुझे अपना अनुभव बताया है। अन्तमें तो जो तुझे ठीक लगे, वही करना। अिसमें दूसरेकी समझदारी काम नहीं देती। मेरा तो तुझे अैसे शुभ संकल्पमें आशीर्वाद ही हो सकता है। अन्तिम निश्चय जेलके बाहर ही हो सकता है। जेलमें किये हुअे बहुतोंके निश्चय बाहर जाने पर टूट गये हैं। दोनों वातावरण अलग हैं। दोनों अलग दुनिया हैं।"

मातेने पत्र लिखा कि "आपको अुपवाससे दबाव डालनेके बजाय शान्त मतपरिवर्तन करना चाहिये। अिस मतपरिवर्तनके लिअे आपको कमसे कम अेक साल कोशिश करनी चाहिये और वह भी जेलमें बैठ कर नहीं, मगर बाहर निकल कर। मुझे सिर्फ़ अछूतपनका ही काम करना है, यह घोषणा करके आपको छूटना चाहिये।"

अुन्हें लिखा :

"आपकी दलील मैं समझ सकता हूँ। मेरा अुपवास किसी पर भी ज़बरदस्ती करनेके लिअे नहीं, बल्कि ठण्डे पड़ गये अन्तरात्माको सतेज करनेके लिअे है। बदक़िस्मतीसे यह सच है कि कुछ लोगों पर ज़बरदस्ती हो सकती है। मगर न तो यह बहुत लम्बाअी जा सकती है और न व्यापक ही हो सकती है। धार्मिक सुधारक लोगोंके मन पर आधिपत्य जमानेकी कोशिश नहीं करता, वह तो लोगोंको जाग्रत करता है और अुन्हें विचार करने और काम करनेमें लगा देता है।

"मुझे अपने सिद्धान्तोंका बलिदान करके रिहाअी न खरीदनी चाहिये। अछूतपन मिटाना मेरे जीवनके कार्यक्रमका बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है, मगर वह अेकमात्र अंग नहीं। मेरा जीवन अीश्वरके हाथोंमें है। अुसे जैसा पसन्द होगा, वैसा बनायेगा। आपको अैसा नहीं लगता कि मैं अुसके हाथोंमें सुरक्षित हूँ?"

"वैष्णव मन्दिर खुलवानेके लिअे नम्रता और प्रेमसे आन्दोलन कर सकें, तो करना चाहिये। लेकिन प्रेमके नाम पर अुतावले बनकर लोगोंके साथ अुद्धत व्यवहार न किया जाय, यह खूब ध्यानमें रखना होगा"

अेक भाअीको लिखा :

"मेरी दृष्टिमें स्पर्श, मन्दिर-प्रवेश, आदि अस्पृश्यता निवारणके अंग हैं। भोजन अैच्छिक बात है।"

आखिर केलप्पनका तार आया :

"बापूके प्रेमकी आज्ञाके आधीन हूँ। अुपवास खोल दिया, आज आठ दिन हो गये। बापूके जन्मदिवस पर अुन्हें नम्रतापूर्वक प्रणाम।"

सारे हिन्दुस्तानसे जिसे अुपवास छोड़नेके लिअे तार जा रहे थे और जो

किसीकी नहीं सुनता था, वह बापूकी आज्ञा मानकर अुपवास छोड़ देता है, यह भी प्रेमकी महिमा और आज्ञापालनका सुन्दर दर्शन कराता है।

आज शास्त्रीका अेक सुन्दर भाषण पढ़ा। अिसमें अुन्होंने दक्षिणके मन्दिरोंको खोलनेकी बापूकी माँगको ध्यानमें रखकर बापूकी अंत्यज-सेवाका हृदयभेदी वर्णन किया है। ट्रावणकोरके अेक तामिलके घर बापूने कैसे यात्रा की, दक्षिण अफ्रीकामें गोली खाये हुअे अुस वीरकी विधवा कैसे बापूके पास आनेसे डरती थी, अिसका भी अुसमें वर्णन था। बापूने अिसका ज्यादा वर्णन करते हुअे कहा : "वह नाअिकरका बाप था। मैं नाअिकरकी माँग करने गया था। अिस लड़केको मैं नहला-धुलाकर, साफ़-सुथरा बना कर पहले सभामें ले गया और कहा कि यह कथित अछूत लड़का मेरे साथ है, अब तुम्हें सभा छोड़ कर जाना हो तो जाओ। फिर मैंने अिस लड़केको लेकर सफ़र किया था। नटेसनकी पुराने विचारोंकी माताजीको पहले मैंने नटेसनके ज़रिये पुछवाया कि आपके यहाँ ठहरनेमें आपत्ति हो तो न ठहरूँ। अुनकी माताने कहा : 'गांधीके साथ अछूत या कोअी भी क्यों न हो, वह मेरे यहाँ भले ही आये। अुसे घरमें खिलानेमें मुझे अड़चन नहीं होगी'।"

*　　　*　　　*

अुपवासके दरमियान वल्लभभाअीका विनोद सूख गया था। वह अब फिर हराभरा हो गया है। बापूकी अालमारीमेंसे कअी अंगोछे 'स्पंज बाथ' देनेको निकाले थे, अुनकी बात निकलने पर बापू बोले : "मैं सबका हिसाब माँगूँगा।"

वल्लभभाअी : "यह हिसाब किसलिअे दिया जाय? हम तो आपको खो बैठे थे। हमें क्या पता था कि आप हिसाब माँगने वापस आ जायँगे?" बा से कहने लगे : "देखिये तो बा, अिनका जुल्म। मालवीयजीको खादी पहनाअी, अछूतसे छुआया, जेलमें लाये, विलायत ले गये और अब अछूतोंके साथ रोटी-बेटी व्यवहार भी करायेंगे।"

जेलके घण्टेकी आवाज़ बहुत बार सुनाअी दी, अुस ओर मैंने बापूका ध्यान खींचा। वल्लभभाअी बोले : "अुपवासकी आवाज़ अितनी ही सुनाअी दे, तो कैसा अच्छा!"

बापूकी बड़ी बहनने जन्मदिनका तार भेजा था :

"अन्तःकरणपूर्वक प्रार्थना करती हूँ कि तुम्हारा शरीर फूलकी तरह खिले। अीश्वर तुम्हारा कल्याण करे। जवाबकी राह देख रही हूँ।"

अुन्हें बापूने तारसे जवाब दिया :

"अीश्वरकी कृपासे फूलकी तरह खिल रहा हूँ। मगर अछूतपनके बारेमें तुमने अपना मन सुधार लिया है?"

यह तार अपने बड़े भाअी खुशालभाअीके मारफ़त भेजा, अिसी अुद्देश्यसे कि वे भी तार देख कर जान लें कि अिन्हें आशीर्वाद देनेमें कितनी ज़िम्मेदारी है।

आश्रमकी डाकके लिअे मौनवारके दिन पचास पत्र लिख डाले।

पूँजाभाअीको :

३-१०-'३२ "मैंने तुम्हारे साथ दौड़ लगाअी तो सही, मगर अभी हारा हुआ ही माना जाअूँगा। 'जीवन या मरणमें कोअी कमीबेशी नहीं।' मेरे लिअे नया जन्म है। अीश्वरको जो करना हो सो करे। प्रभुने लाज रखी है। कसौटी बहुत हल्की की। मैं तो क्षण-क्षणमें अीश्वरकी कृपा अनुभव कर रहा हूँ।"

अेस० के० जॉर्जको :

"हाँ, अिस दवासे भी रामराज्य संभव है, बशर्ते कि कार्यकर्ता सच्चे हों। कार्यकर्ताओंसे मुझे बाहर नहीं समझना चाहिये। अगर मैं सच्चा हूँ, तो साथी ज़रूर सच्चे होंगे। मैं झूठा हूँ, तो साथी भी झूठे ही होंगे।"

"बड़ोंकी हँसी और तिरस्कार हम मनमें भी कैसे कर सकते हैं? और अिस तिरस्कारमें हमारे दोषोंके प्रति रहनेवाली अुदासीनता कितनी हानिकारक है?"

"अितनी शक्ति अभी प्राप्त नहीं कर ली कि लम्बा जवाब दे सकूँ। और लिखूँ भी क्या? मुझे फिर लिखना। मेरा नया जन्म हुआ है न? पूर्वजन्ममें सुने हुअेका अुत्तर अिस जन्ममें देनेकी ज़रूरत है? होगी तो सही, मगर नये रूपमें। अिसलिअे अब पूछने जैसा लगे तो पूछना।"

"अुपवासमें भी तुझे भूला न था। तेरे बारेमें रंगून लिख रहा हूँ। मैंने यह भी सोच लिया था कि मुझे कुछ हो जाय, तो भी तू निर्भय रह सकता है। मगर अब जान पड़ता है कि अिस शरीरसे मुझे कुछ सेवा करनी है।"

"अिस अुपवाससे हम अधिक सावधान और कर्तव्यपरायण बनना सीखें। मैंने तो रसके घूँट पिये हैं।"

"मैं जानता हूँ कि गाँवोंमें अछूतोंका काम बहुत कठिन है। अुपवास-सप्ताहकी जाग्रति गाँवोंमें कितनी पहुँची है, यह तो तुम्हारे जैसे ही कह सकते हैं। अुसके लिअे ज्यादा अुपवासोंकी ज़रूरत थी। मगर यह तो हुअी मनुष्यकी कल्पना। अीश्वरने सोचा था, अुतने अुपवास करा लिये। यह कौन जानता है कि अुसे अभी और कितने कराने हैं? वह जैसे रखे वैसे रहना है। अुबलते तेलमें डाले, तो भी खुशीसे नाचनेको हम तैयार रहें। नाचनेकी शक्ति भी वही देगा, अैसा अुसका वचन है न?"

भंसालीको :

"तुम्हारा पत्र देखकर तो मैं बाग-बाग हो गया। मगर तुम्हारा संन्यास तभी शोभा दे सकता है, जब तुम ज्ञान सहित वापस आश्रममें आकर सेवा करो और सेवा करते हुअे अलिप्त रहो। पत्थरकी गुफा और मुर्दे जलानेका श्मशान सच्ची गुफा या श्मशान नहीं। असली गुफा हृदयमें है और श्मशान भी वहीं है। हम अिस गुफामें रहकर विकार मात्रकी राख कर डालें, तब सच्चा संन्यास कहलायेगा। अिसकी महिमा गीतामें गाअी गअी है। अभी तो मेरी आत्मा यही गवाही दे रही है।"

"अर्जुनको तो शंका पैदा हुअी थी और वह अुसने कृष्णके सामने रखी थी। मुझे तो शंका भी नहीं हुअी, मगर कृष्णने ही कहा: 'अुठ, सोता क्या है? घड़ी आ पहुँची है, अिसे न चूक।' मैंने यह माना है कि अनशन अहिंसाकी पराकाष्ठा थी। परिणाम भी यही बता रहा है। हिन्दूधर्ममें वर्णित तपस्यामें अनशनका स्थान है, और वह बड़ा है। अिस तरह मेरे और अर्जुनके मामलेमें भेद है। मेरे कहनेका मतलब यह नहीं कि अुससे मैं ज्यादा ज्ञानी हूँ। सिर्फ़ यही बताना है कि अिस मामलेमें मेरे मोहकी बात नहीं है। यह समझमें आया?"

नारणदासको :

"अुपवासमें यातना तो ठीक भोगी, मगर शान्तिका कोअी पार नहीं था। प्रभुने परीक्षा काफी ली, फिर भी वह हलकी थी। सात अुपवास तो कुछ भी नहीं। मगर अुस दरमियान शारीरिक यातना और मानसिक यातना खासी रही। यह मुझे मालूम नहीं होता कि मेरे अनुभवसे भिन्न प्रभुके दर्शन कैसे होते होंगे। कहनेका मतलब यह नहीं कि अिस दर्शनका अर्थ पूर्ण ज्ञान है। यह अकथनीय अनुभव है। अिसे पूर्ण दर्शन भी नहीं कहा जा सकता।"

भावनगरके अेक युवकने अेक दुकानदारके विरुद्ध अनशन शुरू किया है। क्योंकि अुसने अछूतोंको दुकान पर आने देनेका वचन दिया और बादमें सनातनियोंमें मिल गया और अुनके घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। अुसने अनशन शुरू कर देनेके बाद बापूको पत्र लिखा। बापूने अुसे लिखा :

"अिस दुकानदारके साथका तुम्हारा सम्बंध जाने बिना मैं राय नहीं दे सकता। वहाँ नानाभाअी हैं, अुनसे पूछना चाहिये। और क़दम अुठानेके बाद तुम सलाह माँगते हो, यह भी ठीक नहीं। यह संभव नहीं कि अनशन करनेसे मनुष्य अपना स्वभाव तुरंत बदल दे।"

*　　　*　　　*

केलप्पनके बारेमें ज़ामोरिनको जो तार भेजा था, अुसकी नक़ल अे० पी० आअी०को भेजनी थी। मेज़रने यह तार, रंगस्वामीका तार तथा अे० पी० आअी०को भेजनेकी नक़ल, सब कुछ सरकारके पास भेज दिया। बापूको अिससे काफ़ी चोट लगी और शामको बोले कि अिन अछूतोंके मामलेमे लड़ लेना पड़ेगा।

केलप्पनके बारेमें ज़ामोरिनको भेजे हुअे तारकी बात करते हुअे मैंने पूछा : "अिस मामलेमें आप अपनी हृदसे आगे बढ़ गये हैं। आपने तो कहा था कि केलप्पन अुपवास न कर सके, तो आपको करना पड़ेगा। आज आप कहते हैं कि आप अुसके साथ करेंगे।"

बापू बोले : "ज़रा भी फेरबदल नहीं किया। तुम मेरी यह वृत्ति नहीं जानते कि जिस चीज़की मैं सलाह देता हूँ, अुसे खुद करनेकी मेरी तैयारी होनी चाहिये। केलप्पन खुद सफल न हो, तो अैसा संभव है कि मैं अुसके साथ हो जाअूँ। यह अेक संभावना मुझे बता देनी चाहिये। अुसी वक़्त मैं साथ हो जाअूँ, तो अैसा कहा जायगा कि नोटिस दिये बिना साथ हो गया।"

मैंने कहा : "तब तो राजाजीकी यह बात सही है कि जो लोग खुद अनशन करने लायक़ न हों, वे आपके अनशनकी बढ़ाअी करें, तो अुसका कोअी अर्थ नहीं।"

बापू : "नहीं, यह ठीक नहीं। अैसे लोग अनशनकी सलाह भी नहीं देते और न सूचना देते हैं। मगर तारीफ़ करनेवालोंके बारेमें तुम देखोगे कि जो वे खुद नहीं कर सकते, वह दूसरेमें देखते हैं तो तारीफ़ करते हैं। कवि पर मेरे अनशनका अितना असर कैसे हुआ? कारण, वे जानते है कि अुनसे यह नहीं होगा। यह कहा जा सकता है कि यह साधारण नियम ही है।"

४-१०-'३२

आज सुबह बाअीस पत्र लिखकर मुझे दिये। यह बात सच है कि अिनमें बहुतसे पर्चे ही थे। मगर बाअीस पत्रोंको निपटाया यह तो सही है न? अिनमें कुछ पत्र जन्म-दिवसकी बधाअी देनेवाले बच्चोंके नाम थे। अेक अमेरिकाकी स्त्रीका करुण पत्र था। अुसमें लिखा था कि मेरा लड़का क्षयसे बीमार है। अुसके अुपचारके साधन भी थोड़े हैं। वह बड़े आदमियोंके हस्ताक्षर जमा करता है और अुससे जो रुपया मिलता है, वह अिलाज करानेमें काम आता है। बापूने अुसे अेक पंक्ति लिखी :

"तुम जल्दी अच्छे हो जाओ।"

“मुझमें तो बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है। सरदार अपनी सरदारी यहाँ बैठकर भी नहीं छोड़ते और छोड़नेको कहें, तो कहते हैं कि ‘अफ़ीम खानेवाला काठियावाड़ी राजपूत अफ़ीम छोड़े, तो मैं सरदारी छोड़ूँ!’ यह दुखड़ा कहाँ रोने जायें?”

आज कअी तरहकी भेंटें आअीं। लाहोरके अेक वैद्यने ‘सामो’* भेजा। अेरिस्टार्शीने रूसी क्रॉस भेजा। मुर्तिज़ापुरके अेक वैद्यने पारेका शिवलिंग भेजा। बंगालसे अेक आदमीने शहद भेजा।

स्कॉट हेंडरसन नामके अेक पादरीको लिखा:

“मैं कहता हूँ कि अुपवासकी प्रेरणा मुझे अीश्वरने की और आप कहते हैं अुसने नहीं की; तो अिसका फैसला कौन करे? आप बता सकते हैं कि मैं अपने अंतर्नादकी अपेक्षा आपकी रायको किसलिअे पसन्द करूँ? आपको अैसा नहीं लगता कि मनुष्यके हाथोंमें रहनेके बजाय अीश्वरके हाथोंमें रहना मेरे लिअे अधिक सुरक्षित है?”

५-१०-’३२

आज सरकारको पत्र लिखनेके लिअे सुबहके समय नोटबुक माँगी, परन्तु बादमें फिलहाल लिखनेका विचार छोड़ दिया और दूसरे पत्र लिखे। आज भी ढेरों पत्र लिखे।

“अुपवास आज अितिहासका विषय बन गया है। और शायद वह सुफल देनेवाला भी साबित हुआ है। अिसलिअे जॉर्ज लैंकेस्टर अुसकी नैतिकताकी चर्चा नहीं चाहेंगे। जो चीज़ अीश्वरकी तरफसे आती है, अुसके पूरे बुद्धिगम्य कारण शायद ही दिये जा सकते हैं।”

“मिस्टर लॉयड जॉर्जके बगीचेकी हवाको मैं मूल्यवान मानता हूँ, क्योंकि वह अुनके प्रेमसे भरी हुअी है।”

“मेरी खोअी हुअी शक्ति तेज़ीसे वापस आ रही है। मुझे बहुत क़ीमती अनुभव हुआ। मैंने बहुत दफ़ा अुपवास किये हैं, परन्तु अेकमें भी अितना आनन्द नहीं मिला।”

“मणिलाल अेक-दो दिनमें बम्बअी आ पहुँचेगा। वह बेचारा मुझे मृत्युशय्या पर देखने आ रहा है। अुसे जीवनकी अेक निराशा मिलेगी!”

“मेरी यह बात कि युरोपमें लोग कुछ न कुछ समझौता किये बग़ैर जीवन नहीं बिता सकते, सत्यवान जैसोंको ध्यानमें रखकर नहीं कही गयी थी।

* अेक प्रकारका जल्दी पकनेवाला धान।

लेकिन आप और मैं अुसका फैसला न करें। आखिर तो समर्थसे समर्थ मनुष्योंको भी अेक हद तक समझौता करना ही पड़ता है। कोअी भी अिन्सान दूसरेके लिअे नियम नहीं बना सकता।

संत फ्रांसिसके अेक अिटेलियन मठकी बहनोंको लिखा :

"आपका २ सितम्बरका प्रेमपूर्ण पत्र मुझे मिल गया। मेरे पवित्र अुपवासके दिनोंमें आपका सुन्दर तार भी मुझे मिल गया था। आप जैसोंका प्रेम मेरे लिअे अीश्वरकी भेजी हुअी भोजन सामग्री हो गअी थी।"

"यातनाके दिन आंतरिक आनन्दके दिन भी थे। करोड़ों मनुष्योंने अपने मानव-बन्धुओंके प्रति अस्पृश्यता रखनेका जो महापाप किया है, अुसे धोनेके लिअे यह छोटीसी तपस्या थी।"

हॉरेसको :

"मैंने अिस अुपवासके बारेमें अितने अधिक मित्रोंको अितना अधिक लिखा है कि अिस पत्रमें कुछ भी कहनेकी अिच्छा नहीं होती। अिस हफ़्तेकी डाकमें लिखे हुअे पत्रोंमेंसे कुछ तो ज़रूर तुम्हें देखनेको मिलेंगे। फिर भी अितना तो कहूँगा ही कि अिस अुपवासके दिनोंमें अीश्वर जितना मेरे समीप था, अुतना पहले कभी नहीं रहा। और यद्यपि अुस समय मुझे अिंग्लैण्डसे अेक भी पत्र नहीं मिल सका था, फिर भी तुम सबका प्रेम मैं अनुभव कर रहा था।"

बद्रीदत्त पांडेको, जिनका पुत्र गंगामें डूबकर मर गया और तुरन्त ही लड़की भी भाअीके आघातके मारे मर गअी, लिखा (हिन्दीमें) :

"आपका दुःख अवर्णनीय है। लेकिन सुख और दुःख दोनों अीश्वरदत्त है। अिसलिअे दोनोंको हम शांतिपूर्वक और अेक ही भावसे स्वीकार करें। और मौतका डर क्यों? वह तो सबके लिअे है। जो गये वे गये नहीं हैं, जो रहे वे रहे नहीं हैं। दोनों हैं ही। सिर्फ़ स्थानभेद है। यह तो हुअी ज्ञानवार्ता। अीश्वर आप दोनोंको शांति देवे, सहनशीलता देवे।"

"जब देशमें सुधारकी लहर अुठी है, तो हरअेक आर्यसमाजी हरिजनोंकी सेवामें अपनी सारी शक्ति लगा दे, अिससे ज्यादा महान दूसरा कोअी कारगर तरीका स्वामी दयानन्दकी यादका आदर करनेका मैं सोच नहीं सकता।"

"हाँ, ये चमत्कारके दिन थे। अितनी ही आशा रखता हूँ कि यह अुत्साह मिट नहीं जायगा।"

आज भी बापूने बाओीस पत्र लिखे। बापूकी तरफ़से मुझे लिखनेकी छूट थी वह बन्द हुअी, अिसलिअे सिर्फ़ पहुँच स्वीकारनेके पर्चे भी अुन्हींको लिखने पड़ते हैं। अछूतपनके बारेमें कुछ प्रश्नोंवाला हरिभाअू फाटकका पत्र आया, अुसका बापूने ब्योरेवार जवाब दिया :

६-१०-'३२

"तुम्हारे सवालोंके ये छोटे-छोटे जवाब काफ़ी होंगे।

"अछूतपनको जड़से अुखाड़नेके लिअे सहभोजन और मिश्र-विवाह अनिवार्य नहीं हैं। ये दोनों सुधार अलग-अलग हैं। और हिन्दू समाजकी सारी जातियोंको अेक दिन अिन्हें मानना होगा।

"ज़बरदस्तीसे कुछ नहीं हो सकता और होना भी नहीं चाहिये। अुपवास और अैसे अुपाय लोगोंसे अुनकी मरज़ीके खिलाफ़ कुछ भी करानेके लिअे नहीं हैं। ये तो लोगोंको विचार और काममें लगानेके लिअे हैं। 'अछूत' अगर अब अछूत नहीं रहे हों, तो हिन्दू समाजमें वे क्या हैं? मेरी राय यह है कि आज तो वर्ण-व्यवस्था नष्ट हो गअी है। आज कोअी सच्चा ब्राह्मण या सच्चा क्षत्रिय या सच्चा वैश्य नहीं रहा। हम सब शूद्र हैं यानी अेक वर्ण हैं। यह स्थिति स्वीकार कर ली जाय, तो बात बहुत आसान हो जाती है। लेकिन अिसे स्वीकार करनेमें हमारे अभिमानको ठेस पहुँचती हो, तो हम सब ब्राह्मण कहे जा सकते हैं। अस्पृश्यताका निवारण करनेका अर्थ है, अूँच-नीचके भेदभावको जड़से अुखाड़ फेंकना। जो यह कहता है कि मैं दूसरोंसे बड़ा हूँ, वह अपना पतन करता है। जो यह कहता है कि मैं सबसे छोटा हूँ, वह अपनेको अूँचा अुठाता है। मेरे ये अुपवास अिन प्रश्नोंको अूपर-अूपरसे हल करनेके लिअे नहीं थे, बल्कि अिसलिअे थे कि हम सब सच्चे बनें।

"मैं चाहता हूँ कि मैं कोअी समय-मर्यादा मुक़र्रर कर सकूँ। परन्तु यह करनेवाला मैं कौन? अपने पिछले अनुभव परसे मैं अितना कह सकता हूँ कि अगर यह सुधार स्थिर वेगसे होता रहा और अिसमें कोअी ढोंग या दंभ नहीं घुसा, तो मुझे अिस प्रश्नके लिअे अुपवास नहीं करना पड़ेगा। सच्ची प्रगति अपने आप दिख जाती है। हरिजन अिसकी गरमी अचूक रूपमें महसूस कर सकेंगे। अिसलिअे तुमसे बिनती है कि समय-मर्यादाकी चिन्ता न करो।

"हम सब किसी न किसी तरहकी मूर्तियोंको मानते हैं। मैं तो मानता ही हूँ। साधारण मन्दिरका मुझे स्वयं कोअी आकर्षण नहीं है। लेकिन अुसका आध्यात्मिक मूल्य बहुत है। अिसलिअे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलने ही चाहियें। मन्दिरोंमें सुधार होनेकी जरूरत है। अुनका नाश आवश्यक नहीं।"

अिसमें जो अूँच-नीचका भेद मिटानेकी बात कही गअी है, वही कविके २० तारीखवाले ग्रामवासियोंके आगे दिये हुअे भाषणका मुख्य विषय था।

कलकी डाकमें भी लोगोंके प्रेमचिन्होंके अनेक प्रमाण मिले। बेलगाँवमें लोगोंने अखण्ड सप्ताह मनाकर 'राम कृष्ण हरे' की धुन लगाअी थी, जुलूस निकाले थे, सहभोजन किया था और बापूको बकरीके दूध और शकरका प्रसाद भेजा था। कवि कितने व्याकुल हो अुठे थे, यह अुनके दो भाषणोंसे मालूम होता है। अिन दोनों बातोंका अुल्लेख करके बापूने अेण्ड्रूज़को पत्रमें लिखा:

"मुझे आशा है कि तुम्हें अब कुछ आराम मिला होगा। अिस मामलेमें गुरुदेवका घनिष्ठ सम्बन्ध है, यह जानकर तुम टिक सके होगे। अुपवासके पहले ही दिन अुनके दिये हुअे भाषणोंमेंसे अेकका अनुवाद करके महादेवने मुझे पढ़ कर सुनाया। बड़ी प्रेरक वस्तु थी। अिन दिनोंमें अीश्वरके प्रेमकी और भी बहुतसी निशानियाँ मिलीं। सारे प्रसंगमें अीश्वर रास्ता दिखा रहा था, अिस बारेमें मुझे ज़रा भी शंका नहीं हुअी।

"मगर बड़ा काम तो अभी बाकी है। मुझे लगता है कि अभी तुम्हारा स्थान वहीं है।"

अगेथाको:

"मैं जानता हूँ कि मैंने तुम सबके लिअे बड़ी चिन्ता पैदा कर दी थी। लेकिन यह अनिवार्य था। यह सब अीश्वरका ही काम था। अिन दिनोंमें जो कुछ हुआ, अुस सबमें मुझे अीश्वरका हाथ दिखाअी देता था।"

बेलगाँवसे आये हुअे पत्रके अुत्तरमें:

"आपके पत्र और प्रसादके लिअे धन्यवाद। अखंड सप्ताहके लिअे तमाम व्यापारियोंका मैं आभार मानता हूँ। मुझे कोअी शक नहीं कि अुपवासके सप्ताहमें जो अुत्साह प्रकट हुआ, अुसमें अिन सब आध्यात्मिक कार्योंकी मदद थी।

श्रीमती लिंडसेको:

"आपके मधुर पत्रके लिअे धन्यवाद। अगर भगवान पंडितोंको ही मिल सकते हों, तो यह बड़ी करुणापूर्ण बात होगी। आपकी वह बात सही है। मेरी भावना आपकी धोबिनकी भावनाके साथ मिलती है। अेक बार सब वैज्ञानिक अीश्वरकी खोजमें निकल पड़े थे। बात यह है कि ये वैज्ञानिक हिन्दुस्तान आये। यहाँ ब्राह्मणोंके घर या राजाओंके महलमें अुन्हें अीश्वर नहीं मिला, मगर अेक अछूतकी झोंपड़ीमें मिला। अिसीलिअे मैं अीश्वरसे कहता हूँ कि मुझे अछूत बना दे। पचास बरसकी परीक्षाके बाद मैं अछूत बननेके योग्य बना हूँ और अिससे मुझे आनन्द ही आनन्द हो रहा है।"

“चोर अीश्वरके आदेशके अनुसार चोरी नहीं करता, यह सही है। मगर अुसका यह चोरीका काम भी अीश्वरकी अिजाज़तके बिना नहीं हो सकता।”

“वैष्णव हवेली और स्वामीनारायणका मन्दिर ज़रूर सार्वजनिक मन्दिर हैं। लेकिन वहाँ भी ट्रस्टियोंको मनाये बिना जबरदस्ती नहीं घुस सकते।”

पद्मजाको :

“तेरी गैरमौजूदगी मुझे बहुत खटकती है। फूलदानियाँ हमेशा तेरी याद दिलाती हैं। मगर अपने प्यारोंकी जुदाअी तो क़ैदीका विशेषाधिकार है।”

“ग़रीबोंके मण्डलसे मोची आदि भाअियोंको बाहर रखना अवश्य अधर्म है। मगर अिसे दूर करनेके लिअे तुम्हारा अेकदम अुपवास कर बैठना ठीक नहीं समझा जा सकता। तुम्हें बड़ोंसे विनती करनी चाहिये। तुम्हें अुनकी सेवा करके प्रतिष्ठा प्राप्त करनी चाहिये। किसीको मजबूर नहीं किया जा सकता।”

अस्पृश्यताके विषयमें मित्रोंसे मिलने और खुलकर पत्रव्यवहार करनेकी और अखबारोंमें लिखनेकी अिजाज़त माँगनेका दूसरा पत्र सरकारको आज लिखा।

कहान चकु गांधीने बापूको बड़ी नम्रतापूर्वक लिखा कि हिन्दू समाजमें नाहक़ खलबली न मचाअिये। जो चला आ रहा है, वह वैसे ही चलता रहेगा। आपको बड़ी भारी विजय मिल गअी है। अब तपस्याका यह अुपयोग न कीजिये। यह सूचना करनेके लिअे माफी भी माँगी। अुन्हें लिखा :

७–१०–’३२

“आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। अिस प्रेमके पीछे अैसी माँग है कि मुझे अपनी पचास वर्षकी मान्यता और मेहनत छोड़ देनी चाहिये। प्रेमके वश भी अैसा कैसे हो सकता है?”

हीरालालकी लड़की लीलीने लिखा : “अुपवास मुझे खुलवाना था, मगर मैं न खुलवा सकी। मेरे हाथसे अुपवास खोलना होगा भला?”

बापूने अुसे लिखा :

“मेरा अुपवास खुलवानेका अर्थ समझती है? मुझे तेरे हाथसे पारणा करनेके लिअे अुपवास करना चाहिये!”

धारवाड़के अेक सज्जनके खूब लम्बे पत्रके जवाबमें यह पर्चा :

“मेरी रायमें सब तरहकी निःस्वार्थ सेवाका फल आत्मशुद्धि होता है। आर्थिक और नैतिक अुन्नति साथ-साथ होनी चाहिये। आत्मा वह है, जो शरीरको प्राणवान बनाये। आत्मशुद्धिमेंसे आत्मज्ञान होता है। भोजन सबके लिअे आवश्यक है, तो प्रार्थना भी सबके लिअे आवश्यक है।

" मनुष्य पागल हो जाय, तब अुसकी आज़ादी छीन लेनी चाहिये ।"

मणिशंकर गणपतरामको :

" रोटी-बेटी व्यवहार अस्पृश्यता निवारणका अंग नहीं । अिसमें किसीके साथ बलात्कार करनेकी तो बात ही नहीं है; लेकिन कोअी रोटी-बेटी व्यवहार करे तो अुसे रोकना भी नहीं चाहिये, जिस तरह जाति-जातिके बीच अैसा व्यवहार करनेवालेको रोका नहीं जाता । अस्पृश्यता निवारण और यह व्यवहार अलग-अलग चीज़ है ।"

किशोरलालभाअीके पत्रमें :

" अुपवासके अुचित-अनुचित होनेके बारेमें लिखनेकी ज़रूरत नहीं रह जाती । अुसमें दोष तो था ही, परन्तु अुसके बिना काम चल ही नहीं सकता था । अहिंसाकी यह आखिरी सीढ़ी मानी जा सकती है ।"

" बारीक सूत जहाँ तक काता जा सकता हो कातनेकी ज़रूरत है । बारीक कपड़े पहननेका दोष मैं भी मानता हूँ । मगर बारीक कपड़ेके दूसरे अुपयोग हैं । कलाकी दृष्टिसे अुसकी बड़ी ज़रूरत है । बारीक सूत निकालनेमें बहुतसी खोजें हो जाती हैं और हाथकी क्रियाओंको प्रोत्साहन मिलता है । और पहले तो बारीक सूत बेगारमें कतवाया जाता था । अिस बेगारके प्रायश्चित्त-स्वरूप भी हममेंसे कुछ लोगोंको यज्ञार्थ बारीक सूत कातना चाहिये, ताकि जहाँ जहाँ अैसे कपड़ेकी ज़रूरत साबित हो जाय, वहाँ यज्ञार्थ काता हुआ सूत मिल सके । बारीक सूतकी पूरी मज़दूरी देने लगेंगे, तो अुसके दाम बहुत बढ़ जायेंगे ।"

" रवीन्द्रनाथने तो अिस बार कमाल कर दिया । हम बहुत नज़दीक आ गये ।"

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् — अिस श्लोकका किशोरलालभाअीका अनुवाद बापूको पसन्द आया :

" हुँ तो अिच्छुं सर्व मारुं सदाय
को प्राणीनां दुःखनाशार्थ थाय."

मैं तो चाहता हूँ कि मेरा सब कुछ हमेशा प्राणियोंके दुःखनाशके लिअे हो ।

शौकतअलीको सुबह ही तार लिखवाया :

" आपने अमेरिका जाना मुलतवी कर दिया, अिससे मुझे खुशी हुअी । वह दिन भव्य होगा, जब हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख अेकता पक्की हो जायगी । और तो सब कुछ वैसे ही होकर रहेगा, जैसे रातके बाद दिन होता है । आप अच्छी तरह देखेंगे, तो मुझे अब भी अपनी जेबमें ही पायेंगे । प्यार ।"

अनका दिया हुआ तार मेज़रने बापूको देनेसे पहले अभी सरकारके पास भेजा है, अितनेमें तो वह अखबारमें भी आ गया और बापूने यह जवाब लिखवा दिया। वल्लभभाअी कहने लगे: "अन्दर यह तो लिखवाअिये कि यह तार हाथमें नहीं आया है!"

बातचीतमें बापूने कहा:

"कोअी आदमी नास्तिकताका प्रचार करे, अिसकी मुझे परवाह नहीं। मैं जानता हूँ कि अुसका प्रचार अुसकी नाककी नोकसे आगे नहीं जा सकेगा। बहुतेरे नास्तिक हो गये हैं। अुनमेंसे कौन सफल हुआ है?"

मथुरादासको:

"सच पूछो तो अब कोअी अैसा जाना हुआ आदमी नहीं रहा, जिसका आशीर्वाद अनशनको न मिला हो। अिसमें शक नहीं कि

८-१०-'३२

अहिंसा आखिरी शस्त्र है। अुसका दुरुपयोग हो रहा है और ज्यादा दुरुपयोग हो यह भी संभव है। तथापि अिसके दुरुपयोगमें भी खूबी भरी है। वह सिर्फ़ दुरुपयोग करनेवालेको ही नुक़सान पहुँचा सकता है। और वह भी गहरा विचार करें, तो थोड़ा ही। हेतु शुभ होगा, तो आत्मा कलुषित न होगी। देहकी ही हानि होगी। और अैसा दुरुपयोग बहुतोंसे तो न हो सकेगा। अुपवासकी यातनाअें भोगनेको कितने तैयार होंगे?

"मुझे अच्छी तरह शक्ति आ रही है। दो रतल दूध और नारंगी, मोसम्बी, अंगूर या अनारका रस खूब लेता हूँ। टमाटरका रस भी लेता हूँ। वज़न घट कर ९३॥ पौंड तक चला गया था। अब फिर ९९ तक बढ़ गया है। दिन भरमें डेढ़ घण्टे घूम सकता हूँ। अिस प्रकार कह सकते हैं कि लगभग असली शक्ति तक पहुँच गया हूँ। कमसे कम २०० तार लगभग ४५ नम्बरके कातता हूँ। अिसमें बहुत थकावट भी मालूम नहीं होती। अिसलिअे चिन्ताके लिअे बिलकुल कारण नहीं है। अुपवासमें शारीरिक कष्ट तो हुआ, परन्तु शान्तिके रसके घूँट पीये।"

मोहनलाल भट्टको:

"महम्मद क़ाज़ीके रोज़ेके निश्चयमें तथ्य है। संकटके समय रोज़ेका फ़रमान अिस्लाममें है। अिसी तरह अेक और मुसलमान भाअीने अिस अरसेमें रोज़े रखे थे। रोज़ा अुपवास नहीं है। अिस मामलेमें मुसलमान भाअियोंका फ़र्ज़ है कि वे अैसी तीव्र अिच्छा करें कि जैसे अछूतोंके प्रश्नका निपटारा हो गया है, वैसे ही हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख प्रश्नका भी निपटारा हो जाय और अुसके बारेमें कर्त्तव्यपालन करें।"

“मेरे अुपवासके पीछे धार्मिक हल तो था ही। और हिन्दू जनता अुसे बिना परिश्रमके समझ गअी। जो बड़ी जाग्रति हुअी, वह तो धार्मिक ही है।

“सरकारी निर्णयसे धार्मिक दृष्टिसे तो अछूतोंका कचूमर ही निकल रहा था। अुसके सामने राजनैतिक प्रश्न तो तुच्छ था। राजनीति तो धर्ममें समाअी हुअी है। राजनीति स्वतंत्र चीज़ नहीं। अछूतोंके धार्मिक हलमें सभी देशोंकी कुचली हुअी तमाम जातियोंका समावेश होता है। यह बात अीसाअी और मुस्लिम समाज भी समझ गये दीखते हैं।”

“शराब न पीनेवाला मजलिसमें शराबका प्याला आगे बढ़ाये, तो अिसमें मुझे सिद्धान्त दोष नहीं दीखता। मेरा खयाल है कि अैसी मजलिसमें जानेके बाद प्याला आगे बढ़ाना धर्म है। अिसमें दंभ नहीं है। सूक्ष्म रूपमें शराब पीनेवालेका प्रेम पानेका यह तरीक़ा है। यह दलील पक्के मदिरानिषेधक पर भी लागू होती है। प्रश्न भी अैसोंको ध्यानमें रख कर हुआ है। यह जवाब अच्छी तरह समझमें न आया हो, तो अनर्थ हो सकता है। मगर आपके पास यह अुत्तर जाय, तो अिसमें मुझे निर्भयता है।”

अेक अमेरिकन बहनको:

“मेरी अन्तरात्मा कहती है कि आजकलके ग़लत जीवनका हम दिलोजानसे विरोध करें, तो ही आध्यात्मिक अेकता प्राप्त हो सकती है।”

रविबाबूके सुन्दर पत्रमें अपील थी: “अुपवासके परिणामसे सब आश्चर्य-चकित हैं। अब मुसलमानों और हिन्दुओंको अेक करनेके लिअे आपकी तरफ़से अेक वक्तव्य निकलना चाहिये।”

फ़ादर विन्स्लोका पत्र है: “अैसी आशा हो रही है कि आपका बताया हुआ काम सफल होगा। हम आपसे मिलना चाहते हैं।”

चिन्तामणिका पत्र:

“मैं यह पत्र आपको अेक अुदारदलीके नाते नहीं लिख रहा हूँ, मगर अेक हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे, जिसे कांग्रेसकी प्रतिष्ठाको धक्का पहुँचने पर दुःख हुअे बिना नहीं रह सकता, लिख रहा हूँ। फिर भी मैं कहता हूँ कि सविनय भंगकी लड़ाअी समेट लीजिये। और कुछ नहीं तो अिस लड़ाअीको मुलतवी रखनेका विचार कीजिये।”

‘अुपवासके परिणाम’ नामके ‘लीडर’ में लिखे हुअे लेखमें भी अुपवासके अद्‌भुत परिणामोंका वर्णन करके यही सूचना दी गअी है।

अैसे परिणामोंके बाद ये लोग अिसी काममें अेकाग्र होंगे, अिसलिअे अब दमन बन्द करो और अिन लोगोंको छोड़ दो, यह सूचना सरकारसे करनेकी

अिनकी हिम्मत नहीं होती। और क्या वे यह मानते हैं कि सविनय भंगकी लड़ाअी समेट लेनेसे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा घटेगी नहीं, बल्कि बढ़ेगी ?

अिन्हें अुत्तर :

"माफ़ी माँगनेकी ज़रा भी ज़रूरत नहीं। पहले आपका पत्र आया था। आशा है अुसके जवाबमें लिखा हुआ मेरा पत्र आपको मिल गया होगा।

"आपके बताये हुअे मार्गको अपनानेमें अैसी कठिनाअियाँ हैं, जिन्हें पार नहीं किया जा सकता। कैदी होनेके कारण मैं अुन सबकी चर्चा नहीं कर सकता। अगर कर सकता होता, तो मेरा विश्वास है कि अपनी दलीलोंके ठोस होनेका मैं आपको यक़ीन करा सकता हूँ। अितना आपसे कह दूँ कि सरकार और लोगों या कांग्रेसके बीच अमन क़ायम हो जाय, अिसके लिअे मुझसे ज़्यादा अुत्सुक और कोअी नहीं हो सकता।

"अुम्मीद है आपकी तबीयत अच्छी होगी।"

मूलचन्द पारेखको :

९-१०-'३२

"ठक्कर बापाको हिसाब भेजकर पैसे मँगा लेना। मगर जब यह शुद्धिकी हवा बह रही है, तब यह प्रतिज्ञा करना कि तुम खुद बिक जाओ या तुम्हारे घरका छप्पर बिक जाय, तो भी अेक भी पाठशाला या आश्रम बन्द न होने पाये। काठियावाड़ अितनेसे मुट्ठीभर रुपये अिकट्ठे न कर सके, यह असह्य होना चाहिये। तुमने अिस कामको अपने हाथमें लिया है। अितनी जल्दी हार जाओगे, तो काम कैसे चलेगा ?"

. . . ने अपने दुराचारोंकी आत्मकथा लिखी। अुनके लिअे अपने बापको ज़िम्मेदार मानते हैं और चूँकि बाप अब अुनके सुधारके काममें हिस्सा नहीं लेता, बापका भण्डाफोड़ करनेकी अिजाज़त चाहते हैं। यह भाअी वही हैं जो जामनगरमें सत्याग्रह करने गये थे और अभी थोड़े दिन पहले . . . भाअीकी दुकानमें अछूतोंको प्रवेश करानेके लिअे सत्याग्रह कर चुके हैं। अिन्हें बापूने लिखा :

"कोअी पुत्र पिताका क़ाज़ी नहीं बन सकता। तुम्हारा काम सुधारकका है। सुधारक सिपाही अपराधी पर असर पहुँचाता है, अुसके छिद्र प्रकट नहीं करता, अुसे अदालतमें नहीं घसीटता। तुम्हारा धर्म यह है कि प्रेमसे पिताका व्यवहार बदलो। प्रकट करनेमें पाप है। तुम तो पिताके और बहुतसे गुण वर्णन करते हो। रुपयेका लोभ न हो तो ज्यादा अच्छा। मगर अुसे तुम समय पाकर अपने विनयसे मिटा सकते हो। जब तक न मिटे, अुसे सहन करो। भाअी-बहनोंको समझाओ। अपना जीवन अधिक शुद्ध और अधिक संयममय बनाओ। सब कुछ करने पर भी पिता न माने, तो घरका त्याग कर दो। अिसमें मुझे कोअी अनुचित

बात नहीं दीखती। यह त्याग भी पूरा समय देकर किया जाय। हम सुधरे कि तुरन्त दुनियाको हमारे जैसी हो जाना चाहिये, यह अभिमान नहीं रखना चाहिये। हममें अेक सुधार हो गया हो, मगर अनेक दोष भरे हों, यह तो हम देखते भी नहीं। यह सोचकर नम्र और दूसरोंके दोषोंके प्रति अुदारचित्त रहना आवश्यक है। अिसमें तुम्हारे सब सवालोंका जवाब आ जाता है।"

वासन्ती देवीको :

"आपसे फिर मिल नहीं सका यह बड़ा दुःखद था। आप जा रही थीं, तब मैं आपकी तरफ प्यासी नजरोंसे देख रहा था। पता नहीं यह आपने देखा या नहीं। सरोजिनी देवीने मुझसे कहा था कि आप अभी वापस आ रही हैं। मगर यह तो होना लिखा नहीं था।

"अगर सब कुछ स्वाभाविक क्रमसे हुआ करे, तो फिर अिसका अर्थ ही क्या हुआ कि मैं कैदी हूँ! ओीश्वरने हम पर जितना अनुग्रह किया, अुसके लिअे हमें अुसे धन्यवाद देना चाहिये। मुझे खुशी हुअी कि मेरा अुपवास आपको पूना तक खींच लाया। आप पत्र तो लिखती नहीं, अिसलिअे मुझे आपसे मिलनेकी बड़ी भूख थी।

"और अब तो अस्पृश्यता निवारणके अिस भव्य कार्यमें आपको लग ही जाना चाहिये।"

अुर्मिलादेवीको :

"प्रिय बहन अुर्मिला,

"कितना करुण था वह सब! अुस दिन जब आप बाहर जा रही थीं, तब मैं आपको पुकारने ही वाला था कि सरोजिनी देवीने कहा कि आप सब थोड़ी देरमें वापस आनेवाली हैं। अिसलिअे मैं ठहर गया। मगर अैसा ही होना लिखा होगा। मैं कैदी हूँ और सब कुछ मेरी मरज़ीके अनुसार ही नहीं हो सकता, अिसकी मुझे तीखी याददिहानी हो गअी। अैसे आघातोंका लगना अच्छी चीज़ है। अुनसे मेरी नम्रता कायम रहती है।

"अिससे यह शिक्षा मिलती है कि जो आज हो सकता है अुसे कल पर न छोड़ो, और जो अभी हो सकता है अुसे दूसरे क्षणके लिअे न छोड़ो। मुझे आपके और सब बाल-बच्चोंके हालचाल पूछने थे। अब तो आपको जो हर्ष अनुभव हुआ हो, और शोक तो अनुभव करती ही हैं, वह सब तफ़सीलके साथ लिखना। अीश्वरके भक्तोंके लिअे तो शोकके प्रसंग भी सब हर्षके ही प्रसंग हैं। अुनकी आगमें अीश्वर हमें तपाता और विशुद्ध बनाता है। अिस दुनियामें केवल सुख ही सुख हों, तो हमारा जीवन अुनसे अूब जाय। दुःखोंके प्राणवायुके बिना हम मर जायँ।

"महादेवके नाम आपका पत्र मैंने पढ़ा है। आपके लड़केको आसान काम मिले जिससे तो वह कठिनाअियोंकी सख्त चक्कीमें पिसे, यह अुसके लिअे अच्छा ही है।"

बाअीस पत्र आज भी लिखे।

"अेक तार तो आपने तोड़ डाला। अब दूसरा तोड़ दें, तो काम पूरा हो जाय।" बा ने बेलगाँववालेके साथ हुअी बातोंकी रिपोर्ट देते हुअे अुनका वाक्य दोहरा दिया।

कल वैकुण्ठ और गगन तथा सौदामिनीकी अचानक मुलाक़ात हो गअी। ये लोग अितने अुल्लासमें थे कि अुसे देखकर मुझे बाहरकी जाग्रतिका ठीक अन्दाज़ हो सका। गगन कहते थे कि अिन लोगोंने तो यही मान लिया कि गांधीजीका अुपवास टूटना ही स्वराज्य मिलना है। अिन छः-सात दिनों तक तो सुलह ही थी, यह कहा जा सकता है। बापूने जो न सोचा होगा, अैसा और अितना अुपवाससे लोगोंने समझ लिया; यही बताता है कि यह अुपवास अीश्वरने कराया। अिसके पीछे मनुष्यकी अहंता नहीं थी। जहाँ जिस प्रकारकी अस्पृश्यता है, अुस पर प्रहार हो रहे हैं। बंगालमें नाराजोलका खान तीस हजार आदमियोंको सहभोजन कराता है। अुधर मद्रासमें धीरे-धीरे मन्दिर खुल रहे हैं। पालाघाटमें अेक मन्दिर खुला और अुसमें नायाड़ियोंको मन्दिरके चौकमें ही साथ बिठलाकर खिलाया गया, यह असाधारण बात कहलायेगी। वैकुण्ठ कहते थे कि वाल्पाखाड़ीका दृश्य भी अद्भुत था। 'हिन्दू' के स्तम्भ तो अिसी चर्चासे भरे हुअे आते हैं। अिसमें अस्पृश्यता निवारणके लिअे शिन्देकी अपील है। अुसमें अुनकी बापूजीके साथकी मुलाकातका रोमांचकारी वर्णन है। "आध्यात्मिक धर्म, मौलिक सांसारिक सुधार और अूँचे दर्जेकी राजनीति, अिन तीनोंमें मैं कोअी फर्क़ करता ही नहीं। मैं जानता हूँ कि आज महात्माजी अिस त्रिविध धर्मके अीश्वरके भेजे हुअे पैगम्बर हैं।"

बापू पर पहलेकी तरह मुलाक़ातों वग़ैराकी पाबन्दी लगानेकी बातके खिलाफ़ अुन्होंने घोर विरोध प्रगट किया है और थोड़ेसे सुन्दर वाक्य लिखे हैं : "महात्माजी तो क़ैदी हैं, अिसका सरकारको कोअी आश्वासन चाहिये? अपने अटल सिद्धान्तोंके वे हमेशा क़ैदी ही हैं। सिद्धान्तोंकी छोटीसे छोटी तफ़सीलका भी वे भंग करें, अिसकी अपेक्षा वे अपनी बनाअी हुअी क़ैदखानेकी दीवारोंमें (सिद्धान्तोंकी) रहना ज़्यादा पसन्द करते हैं।"

अस्पृश्यता निवारणको अुन्होंने तमाम अछूतों और छूतों — हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी — के बीचका द्वन्द्व कहा है। जो भी हिन्दुस्तानका नमक खाते हैं, वे सब अछूतपनकी जड़ अुखाड़नेके लिअे बँधे हुअे हैं। बापूसे अुन्होंने यह पूछा

था कि 'आप अिस सवालमें व्यवहारके नाते कोअी समझौता करेंगे?' अिसका जो जवाब बापूने दिया था, अुसे वे सहर्ष वर्णन करते हैं:

"अस्पृश्यता तो तमाम सत्यकी, धर्मकी और प्रगतिकी दुश्मन है। अिसे ज़रा भी सहारा देनेमें मेरा हाथ हो ही नहीं सकता।"

आजकी डाकमें आश्रमके तेअीस पत्रोंके सिवा बापूने अट्ठाअीस पत्र और लिखे। आजकी मनोदशा और मंथन गुरुदेवको लिखे हुअे पत्रमें सुन्दर ढंगसे व्यक्त हुअे हैं:

१०-१०-'३२

"प्रिय गुरुदेव,

"मुझे आपका सुन्दर पत्र मिल गया। मैं प्रकाशके लिअे नित्य प्रार्थना कर रहा हूँ। हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकता भी अेक जीवनकार्य है। रुकावटें बीचमें आती हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि जब मुझे प्रकाश मिलेगा, तब वह अिन सब बाधाओंको चीरकर निकल जायगा। अिस बीच मैं अुपवास नहीं करता, मगर प्रार्थना कर रहा हूँ।

"पूनामें आपको खूब मेहनत करनी पड़ी और यह लम्बा सफ़र भी अुतना ही थकानेवाला था। फिर भी मैं आशा रखता हूँ कि आपकी तबीयत ठीक रही होगी। पिछले महीनेकी बीस तारीखको ग्रामवासियोंमें आपने जो सुन्दर प्रवचन दिया, अुसका अनुवाद करके महादेवने हमें सुनाया था।"

अेक आदमीने लिखा था कि 'अस्पृश्यताके प्रश्नके निराकरणके साथ ही दूसरे अनेक प्रश्नोंका निराकरण हो जायगा। अब अिसके साथ-साथ ही विधवा-विवाहका प्रश्न अुठायें क्या?'

अुसे जवाब दिया:

"जातिके सुधार आवश्यक हैं और जिससे यह काम हो सके, अुसे यह करना चाहिये। अस्पृश्यता निवारणका अप्रत्यक्ष असर अुस पर भी होगा ही। बालविधवाओंकी शादी करनेका प्रयत्न मैं स्तुत्य मानता हूँ। ये काम संयमी और पवित्र व्यक्तियोंसे ही हो सकते हैं।"

लंकासे सोमसुन्दरमने पूछा कि 'समझौतेसे ही आपको संतोष होना चाहिये था। फ़ैसला रद्द हो यह शर्त भी क्यों रखी?' अुसके जवाबमें यह पत्र लिखा:

"मैंने अखबारोंको जो पहला वक्तव्य दिया, मालूम होता है अुसका आपने अच्छी तरह अध्ययन नहीं किया। आप देखेंगे कि शास्त्रीय ढंगसे तो अुसमें मैंने जैसे लिखा है, अुसी तरह मैं अपना अुद्देश्य बता सकता हूँ। फिर भी वास्तवमें अुपवास हिन्दुओं और मुझ पर श्रद्धा रखनेवाले दूसरे लोगोंको ध्यानमें रखकर ही किया गया था। आप यह भी देखेंगे कि हिन्दुओंका विशाल

जनसमुदाय अुपवासका अुद्देश्य अंतर्वृत्तिसे ही समझ गया था। मैं आशा रखता हूँ कि आपके लिअे यह बिलकुल स्पष्ट होगा।"

मैंने याद दिलाया कि अिसके पत्रमें प्रश्न यह नहीं था, बल्कि दूसरा ही था (जो अूपर बताया है)। अिसलिअे अेक वाक्यमें अुसे जवाब दिया :

"सरकारकी अनुमति अिसलिअे ज़रूरी थी कि जब तक विरुद्ध फ़ैसला मौजूद रहे, तब तक यह समझौता बेकार होगा। यह अनुमति प्राप्त करना समझौते और अुपवासमेंसे स्वाभाविक रूपमें फलित होता था।"

चौंडे महाराजको पत्र (हिन्दीमें):

"आपका पत्र मिला है। मेरा संदेशा यह है: 'मेरा अभिप्राय दृढ़ होता जाता है कि जब तक हम गोरक्षाका अर्थशास्त्र भलीभाँति नहीं पढ़ेंगे, जब तक अंत्यज भाअियोंको, जिनके हाथसे बहुत गोरक्षाका कार्य हो सकता है, नहीं अपनावेंगे और जब तक सब गोशालाअें शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं चलेंगी और हम सब मृत जानवरके ही चर्मके अुपयोगका व्रत नहीं लेंगे, गोरक्षा अशक्य है। अिसलिअे अब गोसेवकका कर्तव्य है कि अितनी मोटी बातोंको अच्छी तरह समझे और अुसका यथासंभव पालन करे और करावे।'"

सुरेश बेनर्जीने लिखा था कि बंगालमें जातपाँत टूटे, यही अस्पृश्यता निवारण कहलायेगा। अुन्हें लिखा :

"जाति और अस्पृश्यताके बारेमें मैं आपके पुराने विचार जानता हूँ। मैं आपसे अिस बारेमें पूरी तरह सहमत हूँ कि जातियोंको नष्ट होना ही पड़ेगा। लेकिन यह मेरी जिन्दगीमें होगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। अिन दोनों मुद्दोंको अेक दूसरेसे मिलाकर हमें दोनोंको बिगाड़ना नहीं चाहिये। अस्पृश्यता आत्माका हनन करनेवाला पाप है। जातपाँत सामाजिक बुराअी है। कुछ भी हो, आप तो बिलकुल अच्छे हो जाअिये और अपनी हमेशाकी लगनके साथ जातिपाँतिसे भिड़ जाअिये। अिसमें आपको मेरा अच्छा सहयोग मिलेगा।"

बलदेवदास बिजोरियाको (हिन्दीमें):

"आपका कृपापत्र मिला। अस्पृश्यता निवारण मेरे जैसोंके लिअे केवल धार्मिक प्रश्न है। राजप्रकरणके लिअे मैं प्राणत्यागकी चेष्टा कभी न करूँ। हाँ, अितना ठीक है कि धार्मिक कार्य क्या, और दूसरा भी, अुसमें बलात्कार नहीं होना चाहिये। जहाँ तक यहाँ बैठा हुआ मैं समझ सकता हूँ, आज जो कार्य हो रहा है अुसमें बलात्कार नहीं है और अीश्वर ही करवा रहा है। छुआछूतमें धर्म कभी नहीं हो सकता, अैसा मेरा दृढ़ विश्वास है। और तो क्या लिखूँ? कृपा रखियेगा।"

मेघाणीके ‘छेल्ली सलाम’ काव्यके विषयमें लिखा :

“विलायत जाते हुअे जो भेंट आपने भेजी थी, वह बहुत अच्छी लगी थी। अुसके साथ अिसे मैं नहीं रख सका।”

रमण सोनीको लिखा :

“काव्य कुल मिलाकर अच्छे लगे हैं। मगर कुछकी भाषा ज़रूर कड़वी लगी है।”

मगर दोनों पत्रोंमें अेक सामान्य वाक्य : “मुझे काव्योंकी परीक्षा आती नहीं है।”

हरदयाल नागको :

“अिन मौक़े पर सच्चा संदेश भेजनेमें आप हमेशा नियमित रहे हैं। अितनी अुम्रमें अितना अुत्साह दिखाकर आप देशके नौजवानोंको शरमाते हैं। अभीके जैसा ही जोश क़ायम रखकर अीश्वर आपसे सौ बरस पूरे कराये।”

मेहरबाबाने अुपवासके दिनोंमें अेक संदेश भेजा था :

“चालीस दिनके अुपवास करेंगे तो अीश्वरदर्शन कराअूँगा। यह अुपवास जल्दी छूट गया, तो भी बादमें चालीस करने पड़ेंगे? सबका तो चालीससे भी काम नहीं चलेगा। मगर आपकी तपश्चर्या अैसी है कि आपके लिअे चल सकता है। राजनीति छोड़कर सामाजिक कार्य करना चाहिये,” वग़ैरा।

अुनके शिष्यको पत्र लिखा :

“भाअी दादाचानजी,

“यह आपके २३ ता. के पत्रका अुत्तर है। बाबाके बारेमें अपनी स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूँ। यह माननेमें मुझे बड़ा संकोच है कि कोअी दूसरेको अीश्वरदर्शन करा सकता है। हृदय अिनकार करता है। मगर जब बाबा अैसा दावा करते हैं, तब मैं कहता हूँ, ‘आप मुझे अीश्वर दर्शन करा दें, तो बहुत अच्छा।’ जो कहता है कि मैंने अीश्वरदर्शन किया है अुसने किया ही है, यह मानना ज़रूरी नहीं है। अीश्वरदर्शन किया है, अैसा कहनेवाले बहुतसे तो भ्रममें पड़े हुअे पाये गये हैं। बहुतोंके लिअे यह केवल अपने मनका प्रतिबिंब होता है। यह तो मैं मानता ही नहीं कि अीश्वरदर्शनका अर्थ किसी बाहरी शक्तिका दर्शन है। क्योंकि मेरा यह खयाल है कि अीश्वर तो हम सबमें बसता ही है, परन्तु अुसे हृदयमें कोअी-कोअी ही पहचानते हैं। बुद्धिसे पहचानना काफ़ी नहीं है। मुझे अैसा महसूस हुआ करता है कि यह दर्शन कोअी किसीको नहीं करा सकता।

"अीश्वरके दर्शनके लिअे किसीके कराये अुपवास नहीं हो सकते। मुझे अन्तरप्रेरणा हो तभी हो सकते हैं। अैसी प्रेरणा होने पर मैं किसीके रोके रुकनेवाला नहीं हूँ। यह मान लेनेका कोअी कारण नहीं कि अुपवास करनेसे अीश्वरदर्शन हो जायगा। यह बात मेरे दिलमें नहीं अुतरती कि मेरे चालीस दिनके अुपवास करनेके बदलेमें बाबा अीश्वरदर्शन करा सकते हैं। यह बदला तो आसान है। अैसा होता हो तो मेरी निगाहमें अीश्वरदर्शनकी कोअी क़ीमत नहीं।

"मैं तो आज तक यह मानता आया हूँ कि बाबा जीवनके विभाग नहीं करते। जिसका जीवन धर्मसे रंगा हुआ है, अुसके खयालसे राजनीति और अर्थशास्त्र सब धर्मके अंग हैं, और वह अुनमेंसे अेकको भी छोड़ नहीं सकता। मेरी मतिके अनुसार जो धर्मको बहुतसी प्रवृत्तियोंमेंकी अेक प्रवृत्ति मानता है, वह धर्मको जानता ही नहीं। अिसलिअे राजनीति या समाजसुधार वग़ैरा मैं किसी दिन छोड़ दूँगा, यह मेरी कल्पनाके बाहर है। अपने धर्मके पालनके लिअे ही मैं राजनीति और समाजसेवा अित्यादिमें पड़ा हुआ हूँ।

"मैंने बाबाके लेखोंका गुजराती अनुवाद करनेका वचन नहीं दिया है। अुलटे मैंने तो बाबाको सुझाया था कि वे अंग्रेज़ीमें लिखने या दूसरोंसे लिखवानेका मोह छोड़कर या तो अपने विचार मादरी ज़बान गुजरातीमें प्रगट करें या फ़ारसीमें, जो अुनके कहनेके अनुसार वे बहुत बढ़िया जानते हैं। हाँ, अुनके लेखोंमेंसे कोअी मेरे दिलमें जम जाय, तो अुसका गुजराती अनुवाद मैं अवश्य करूँ।

"थोड़ेमें, मैं बाबाका अेक विद्यार्थी हूँ। जमशेद मेहताको पवित्र व्यक्ति मानता हूँ। अुनके तारसे मैं बाबासे मिला। अीश्वरके भक्तोंको मैं खोजता रहता हूँ। बाबाके सम्पर्कमें यह सोचकर आया कि वे अैसे होंगे।

मोहनदास गांधीका वन्देमातरम्"

रेहानाने लिखा था:

"आप फिर अुपवास करेंगे, तब ज्यादा अच्छा भजन भेजूँगी।"

अुसे लिखा (हिन्दीमें):

"प्यारी बेटी रेहाना,

"बहुत चालाक लड़की है। अपने भजनके लिअे मुझे फाका करवाना चाहती है। मैं नहीं करूँगा। और भजन तू जब गाकर सुनायेगी, तब दिलको भायेगा। अगर 'अुठ जाग मुसाफ़िर' मैं न सुनता तो मुझे अैसा दिलचस्प न लगता। अगर जेलकी दीवारके बाहरसे भी तू गायेगी, तो भी तेरा आवाज़ मुझे पहुँच जायगा। तुम सबका नाच तो मैं सुन ही रहा हूँ।"

जयशंकर त्रिवेदीको :

"तारागौरीके खेदजनक अवसानके बाद आप सब अितना श्राद्ध नहीं करेंगे? या तो घरसे प्रायमसका बहिष्कार कीजिये या वह असम्भव लगे तो स्त्रियाँ अुसे न सुलगानेकी प्रतिज्ञा लें। पुरुषोंसे ही सुलगवायें। हमारी स्त्रियोंकी पोशाक प्रायमस जैसे चूल्हे सुलगानेके लिअे नहीं बनी है।"

आश्रममें अिस सूचना पर अमल करनेको नारणदासभाअीको लिखा।

प्रेमाको :

"हम अपनी प्रेमीसे तो बिछुड़ गये हैं, क्योंकि हमें दूसरी जगह रखा है। अुसका वियोग दुःख दे रहा है। मगर क्या करें? ज़िन्दगी वियोगोंका समुदाय ही तो है?"

पंडितजीको लम्बा पत्र :

"प्रीतिभोज अस्पृश्यता निवारणका अंग नहीं, तो भी वह अुसका परिणाम है। मुझे वह पसन्द भी है। विरोध तो हुआ ही करेगा। मगर जनतामें यह चीज़ प्रवेश कर गअी हो, तो अुसे कोअी रोक नहीं सकता। खाने वगैरामें तो छुआछूतके लिअे धर्मका अेक भी प्रमाण नहीं है।

"मूर्तिपूजाको हम प्रोत्साहन नहीं देते। मगर हम अुसकी मनाअी भी नहीं करते। जब तक हिन्दू धर्म है, किसी न किसी तरहसे मन्दिर रहेंगे। हिन्दू धर्मको जो मन्दिर मान्य हों, अुनमें अंत्यजोंको जानेका अधिकार होना ही चाहिये। जहाँ अछूतपनको ही मिटा देना है, वहाँ और कुछ हो ही नहीं सकता। अिसलिअे आश्रमवासी मन्दिरप्रवेशको प्रोत्साहन दें तो अिसमें विरोध नहीं है। अितना ही नहीं, प्रोत्साहन देना अुनका धर्म है। धार्मिक दृष्टिसे यह प्रश्न अछूतोंके लिअे बड़े महत्त्वका है। अिसमें हिन्दू जातिकी परीक्षा है।

"अस्पृश्यता निवारणके लिअे जो आश्रमवासी बाहर निकल सकें वे निकलें, यह ज़रूरी समझता हूँ। आश्रमवासी अन्तमें बाहर फैल जानेको तैयार होते हैं। आश्रममें जिन्हें गणेशपूजन वगैरा करना हो, अुन्हें रोका ही नहीं जा सकता। मगर मेरी रायमें आश्रमकी हैसियतसे हमें तटस्थ रहना चाहिये। और अिसलिअे आश्रममें सार्वजनिक मूर्तिमन्दिर न बनने दें। सार्वजनिक मन्दिर तो प्रार्थनाभूमि है, जिसकी दीवारें दिशाअें हैं, जिसकी छत आकाश है और जिसमें मूर्ति निराकार भगवान है। अगर अैसा न करें, तो हमें मस्ज़िद, अगियारी, गिरजा, सिनेगॉग वगैराके लिअे स्थान रखना ही चाहिये। आज हिन्दू ज़रूर ज़्यादा हैं, मगर हम चाहते तो यह हैं कि दूसरे धर्मवाले भी बहुतसे

आ जायँ । सब धर्मोंके प्रति समभाव रखें, तो आजसे हमें अैसे देवालयोंके प्रति अपने दिलमें तो जगह रखनी ही चाहिये । मगर अुसे रखनेमें समभाव खो देना सम्भव है, अिसलिअे और बातोंकी तरह अिसमें भी संयम ही हमारा सुवर्ण मार्ग है। यह सब अच्छी तरह समझ लेना । समझमें न आये तब तक पूछते ही रहना। मैं नहीं थकूँगा और अब अैसे कामोंको निपटाने लायक़ शक्ति आ गअी है।"

बाकीका पत्र . . . के बारेमें है ।

". . . और . . . . का सम्बन्ध कैसे हुआ, यह तो मैं भूल गया हूँ । धार्मिक प्रश्न तो पहलेके मनाये हुअे विवाहके बारेमें था । यह आदर्श तो मैंने बताया ही है कि शिक्षक और शिष्याके बीच और अेक ही संस्थामें रहनेवाले शिक्षक और शिक्षिकाके बीच विवाह सम्बन्ध न होना चाहिये। अिसमें कोअी धार्मिक प्रतिबन्ध नहीं है । अगर किसीकी आपसमें विवाहकी अिच्छा हो जाय, तो अुन्हें हम प्रोत्साहन नहीं देंगे, मगर रोक तो सकते ही नहीं। यह तो साधारण रूपमें लिख रहा हूँ । अिस मामलेमें क्या हुआ है, यह मैं भूल गया हूँ । मेरे आदर्शका पूरा प्रचार भी नहीं हुआ । अिस बारेमें विद्यापीठमें भरती होनेवालोंको सावधान भी नहीं किया जाता । अैसी हालतमें यह आदर्श कैसे लागू हो सकता है? अैसे अुदाहरणोंमें अपने आदर्श पर क़ायम रहते हुअे भी अुदार वृत्ति रखनी चाहिये।"

छगनलाल जोशीको :

"ली हुअी प्रतिज्ञा पर विचार कर लेना चाहिये । अुसका जरा भी भंग न होना चाहिये । अिसका अर्थ यह नहीं कि मैं कुछ भी जानता हूँ । मुझे अभी सब बातें याद भी नहीं । और अिसीलिअे मेरा आग्रह रहा है कि जो प्रतिज्ञा ली जाय, वह अुसी वक्त लिख ली जाय । अैसा न करनेसे बादमें मनुष्य ढीला पड़ जाता है और प्रतिज्ञाको शिथिल कर डालता है । मुझे खुद अैसे पछतावे हुअे हैं ।"

आज मणिलाल आये । डरबनसे आते हुअे रास्तेमें जंज़ीबार और दारेसलाम बन्दरगाहों पर हज़ारोंकी भीड़ बापूके प्रति आदर और प्रेम प्रगट करनेके लिअे आअी थी । दक्षिण अफ्रीकाकी चर्चा करते हुअे बापूने मणिलालको बता दिया कि सत्याग्रह करनेमें समझदारी नहीं है । वैसे शहीद बनकर मर जाना हो तो मर जाओ । अिसमें तो किसीको कुछ कहनेकी बात हो ही नहीं सकती । फिर प्रेमी पिताकी हैसियतसे सलाह दी : "बुद्धिमानीका रास्ता यह है कि शास्त्री, वाजपेयी और रेड्डी वग़ैरासे तू मिल, अिनसे पत्र लिखवा, कुछ राहत सोच ले, अुन्हें प्राप्त करनेकी कोशिश कर और बात खतम कर ।"

११-१०-'३२

अस्पृश्यताके बारेमें डाक बढ़ती ही जा रही है। अछूत और दूसरी जातियोंके साथ रोटी-बेटी व्यवहारके बारेमें बापूके विचारोंमें हर रोज़ विकास होता जा रहा है। आजके दो पत्र पहलेकी स्थितिमें प्रगति बताते हैं :

"अस्पृश्यता निवारणका अर्थ यह है कि जो व्यवहार हम और जातियोंके साथ रखते हैं, वही अिनके साथ रखें। यानी अिन्हें छूअें, अिनके हाथका पानी वगैरा पीयें, और ये घरोंमें, मन्दिरोंमें और स्कूलों आदिमें औरोंकी तरह ही जायँ। अितना तो ज़रूरी अंग है। अुनके हाथका पकाया हुआ खायें या अुनके साथ बैठकर खायें या बेटी व्यवहार रखें, यह सबकी अिच्छाकी बात है। धर्ममें अुसका प्रतिबंध नहीं है और न वह लाज़िमी है। अभी जो प्रीतिभोज हो रहे हैं, वे अस्पृश्यता निवारणके आवश्यक अंग नहीं। मगर अिसमें मुझे शक नहीं कि वे स्तुत्य है।"

यह पत्र नागपुरके अेक जिज्ञासु मारवाड़ीको लिखा।

विलासपुरसे अेक पत्र आया था। अुसमें अुपवासके सिलसिलेमें हुअी सभाका दुःखद वर्णन था। चमारसे पानी मंगाकर पीने जा रहे थे कि कांग्रेस वालोंने सवाल अुठाया कि गांधीजीने खाने-पीनेकी सलाह नहीं दी। अिस पर सभा भंग हो गअी और बादमें पानी पीनेवालोंने प्रायश्चित्त किया, और प्रायश्चित्त न करनेवालोंका बहिष्कार — चतुर्मुखी बहिष्कार — करनेकी धमकियाँ दी जा रही हैं। क्या यह सब अुचित है? यह सवाल अेक प्रायश्चित्त न करनेवालेने पूछा है!

अुसे जवाब (हिन्दीमें) :

"आपका पत्र मिला है। जिन कांग्रेसजनोंने अस्पृश्य भाअियोंके पानी लानेसे सभा छोड़ी, अुन्होंने बहुत अनुचित कार्य किया।

"अस्पृश्यता निवारणमें अछूत भाअियोंके हाथोंसे पानी पीना आवश्यक अंग है। जैसा बर्ताव हम अन्य जातियोंसे रखते हैं, वैसा अछूतोंके साथ रखना धर्म है। अिसलिअे जिन्होंने प्रायश्चित्त किया, अुन्होंने पाप किया, और कांग्रेसका विरोध किया है। आपका बहिष्कार नीति-विरुद्ध है। आप प्रायश्चित्त हरगिज न करें। मुझे दुःख है कि विलासपुरके कअी भाअियोंने नीति-विरुद्ध व्यवहार करके अछूत भाअियोंमें बुद्धि-भ्रम पैदा किया है। मैं चाहता हूँ कि वे अपने दोषका जाहेर स्वीकार करें।

"रोटी-बेटी व्यवहार मुझे तो अिष्ट है। परन्तु अुसको मैं अस्पृश्यता निवारणका आवश्यक अंग नहीं मानता हूँ। जो अैसा व्यवहार धर्म समझकर करें, वे स्तुत्य कर्म करते हैं अैसा मेरा अभिप्राय है। अिसलिअे आजकल

प्रीतिभोजन होता है, वह मुझे पुण्यकार्य प्रतीत होता है। रोटी-बेटी व्यवहारका प्रतिबंध धर्ममें मैंने नहीं देखा है।

"अब आपके सब प्रश्नोंका अुत्तर आ गया है। मुझे लिखें अुसमें क्या हुआ?"

अेक मुसलमानने — गुजरातके म्युनिसिपल मेम्बरने — शायद शहद और दूध वगैरा न लेनेके बारेमें पत्र लिखा। पत्र पागल जैसेका था। फिर भी बापूने अुसे जवाब दिया :

"आपके पत्रके लिअे धन्यवाद। आपने जो कारण दिये हैं अुनके अनुसार गाय-भैंसका दूध त्याज्य है, अिसमें मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। मैं गाय-भैंसका दूध नहीं लेता, मगर बकरीका दूध लेता हूँ। हाँ, दूसरे व्यापक कारणोंसे मैं अिसे भी आपत्तिजनक मानता हूँ। अुसके बदले दूसरी असरकारक चीज़की तलाशमें हूँ। मगर अभी तक असफल रहा हूँ। मैंने अुपवास शहदसे नहीं, नारंगीके रससे खोला था, हालाँकि मैं शहद लेता हूँ और अुसे आपत्तिजनक नहीं मानता। अगर शहद शास्त्रीय ढंगसे निकाला जाय, तो अेक भी मक्खीका नाश न करना पड़े और न अुसे भूखों मारना पड़े। मगर मुझे स्वीकार करना चाहिये कि हमेशा अैसा निर्दोष शहद मुझे मिलता नहीं है।"

'मंगलप्रभात'के मराठी अनुवादकी पहुँच स्वीकारते हुअे जो मामूली पत्र लिखा, अुसमें अिनकी विशेषता है :

"अनुवादकी प्रतिके लिअे धन्यवाद। तुम्हारा अनुवाद यदि प्रामाणिक हो, तो अिजाज़त न ली अिसकी कोअी परवाह नहीं।"

अेक पत्रमें (हिन्दीमें):

"प्रारब्ध अवश्य है। परन्तु साथ ही पुरुषार्थ भी है। प्रारब्धका अितना ही अर्थ है कि पुरुषार्थके अभावमें पूर्वकर्मोंका फल ही बाकी रहता है। पुरुषार्थ होते हुअे प्रारब्ध बदल सकता है। अिस कारण जो ब्रह्मदर्शन करना चाहता है, अुसे ब्रह्मचर्य आवश्यक है। (देखें गीता अ. १५) अैसे तो ब्रह्मचर्य गीताकी ध्वनि है। जो ब्रह्ममें लीन होना चाहता है, जो सदा सेवापरायण रहना चाहता है, अुसे विषयेन्द्रिय सुखके लिअे अवकाश ही नहीं हो सकता है। अितनेमें आपकी सब शंकाका अुत्तर आ जाता है।"

कल बा अपने आप ही कहने लगीं :

"अब मुझे यहाँ आना बन्द करना है। कितने ही जेलोंमें पड़े हैं। अुनमेंसे कितने ही बीमार हों, तो अुनसे कौन मिल सकता है? मुझे बहुत बार रामदासकी चिन्ता होती है। बापूकी होती है। फिर खयाल होता है कि हज़ारों

लड़कोंकी माताअें और पत्नियाँ अिसी तरह चिन्ता करती होंगी न? सबकी रक्षा करनेवाला अीश्वर है। मुझे सरकारने यहाँ आनेकी अिजाज़त दी, अुसका लाभ अुठा लिया। मगर अब अधिक ठहरना ठीक नहीं। यह लोभ अधिक होगा।"

मेजरने कल कहा: "मणिलाल और रामदास बहुत मिलते-जुलते हैं। और शायद हरिलाल और देवदास मिलते-जुलते होंगे।"

अिस पर वल्लभभाअी बोले: "वे दो बा के लड़के हैं, और ये दो बापूके।"

बापूने कहा: "सही बात है। मैं जब बिलकुल साहब था, हरिलाल अुस समयका है। अुसे क्या पता था कि साहब होते हुअे भी मेरा दिल साहबीमें ज़रा भी नहीं था? अुसने मेरा बाह्य रूप देखा और वैसी ही मौज-शौक़ करनेकी अुसमें अिच्छा हो गअी। अुसने मुझसे कहा, 'मुझे बेरिस्टर बना दीजिये, फिर देखिये मैं क्या-क्या करता हूँ; अितना त्याग करता हूँ या नहीं?'"

•

कच्छ केरावाले चमनने लिखा:

"बापू, मैं बम्बअीमें धारा-सभा वाले मुसलमानोंसे मिला। अुन्होंने कहा कि महात्मा अब हिन्दू बन गये हैं। अुन्होंने हिन्दुओंके लिअे अुपवास किये हैं, देशके लिअे थोड़े ही किये हैं? बापू, अिस मामलेमें बहुत ग़लतफ़हमी है। आप कोअी स्पष्टीकरण प्रकाशित नहीं करेंगे?"

१२–१०–'३२

अुसे बापूने लिखा:

"तुम जो चाहते हो सो तो लिखनेकी अिजाज़त अभी मिलनेकी आशा नहीं। जिनके दिलोंमें शक भरे होंगे, अुनके शक भगवान ही दूर करेगा। मेरे खयालसे तो मैंने सभी धर्मोंकी सेवा की है। बहुतसे मित्र तो यह समझ भी गये है। यह बात सच ही होगी, तो कोअी छिपी रहने वाली थोड़े ही है? जिस अीश्वरने अुपवास कराया, वही अुसका अर्थ भी मनुष्योंको समझायेगा।"

पोलाकने लिखा था:

"मिलीके जन्मदिन पर ही आपने यह अुपवासका व्रत लिया, यह कैसी भद्दी बात है? आप तो धर्म-दण्डकी तरह हैं, आप तो प्यारेसे प्यारोंको अतिशय दुःख देकर अुनकी सेवा करनेमें विश्वास रखते दीखते हैं।"

बापूने लिखा :

“मिलीके जन्मदिवस पर ही ओश्वरकी आज्ञाका मैं पालन करूँ, अिससे ज्यादा मांगलिक और क्या हो सकता है? अुसके अधिकसे अधिक जन्मदिवस आयें और अुसे अधिकाधिक सेवाका अवसर मिले।”

अे० टरटन नामके अेक अंग्रेज़ने अपने पत्रमें बापूको लिखा :

“आपकी हानि मुझे बहुत नहीं लगती, लेकिन आपके सिद्धान्तका त्याग मझे खटकता है। आप तो आत्महत्या करनेको तैयार हुअे थे।”

बापूने लिखा :

“ओश्वरकी कृपा थी कि यह अुपवास मैंने नहीं किया। यह सब ओश्वरका काम था। और सारी दुनियाकी ‘नहीं’ हो, तो भी ओश्वरकी ‘हाँ’ के आगे अुसकी क्या चल सकती है?”

मानो बा के साथ बहुत समय न बिताया हो और अुनसे बहुत सेवा न ली हो, अुसका बदला लेनेके लिअे बापू बा से खूब सेवा ले रहे हैं।

वल्लभभाओीने कहा : “अिन्हें अब नींद आ रही है, सोने दीजिये।”

बापू : “नहीं, मुझे सुलाकर बादमें सो जाना।”

तेल भी बा का मसला हुआ ही बापूको अच्छा लगता है और आज तो हद ही कर दी। अेक बहनने बाहरसे लौकीका हलवा भेजा था और बा ने भी बनाया था। बापूने बा का बनाया सब खा लिया और वह रहने दिया।

आज डाकमें सूरतके कितने ही दुःखद किस्सोंका वर्णन था। अनशन दिवसके निमित्त सार्वजनिक कॉलेजके विद्यार्थियोंने अुपवास किया और रसोअियोंने खाना नहीं बनाया। अिससे चिढ़कर आंटियाने कॉलेजमें जाकर विद्यार्थियोंको धमकाया और रसोअियोंको गालियाँ दीं। अेकको फटकारा। आफवा अिसरोली गाँवके लोगोंने अछूतोंके साथ अेक कुअें पर स्नान किया और प्रसाद लिया। अिसकी खबर अेक अखबारवालेने दी। अुस गाँवमें जाकर अुन लोगोंसे लिखवा लिया कि हमने अैसा कुछ नहीं किया। बादमें अखबारवालेको झूठी खबर देनेके लिअे खूब धमकाया।

मैंने बापूसे कहा : “लोग कितने गिर गये हैं? यह जानकर पीड़ा होती है।”

बापू कहने लगे : “यह तो सूरतकी बात है, अिसलिअे हमें मालूम हो गओी। मगर बंगालमें जो कुछ हो रहा होगा अुसकी हमें कल्पना नहीं है। सारे दिन घरमें बैठे रहनेका हुक्म और रातको न निकलनेका हुक्म, अिसका क्या अर्थ? यू० पी० में किसान बेघरबार हो गये हैं। रासवाले बहादुर, मरनेके लिअे तैयार रहनेवाले और क़ाबिल हैं, अिसलिअे भूखों नहीं मरते। ये तो अज्ञान मनुष्य;

हक्के-बक्के बन जाते हैं और भूखसे तिलमिला अुठते हैं।" फिर कहने लगे: "मनुष्योंको कष्ट भोगना पड़े, यह मुझे अुतना नहीं खटकता जितना अिन्सानका पतन होना खटकता है।"

१३-१०-'३२ जैसे-जैसे अछूतोंके लिअे मन्दिर खुलते जा रहे हैं, वैसे-वैसे कहीं-कहीं से सनातनियोंके विरोधके समाचार भी आते जा रहे हैं। अुपवास मुल्तवी रखकर पंद्रह दिन या कुछ सप्ताह लोगोंको काम करनेके लिअे मोहलत दी होती, तो शायद अिन विवेकहीन शक्तियोंको काम करनेका ज्यादा मौक़ा मिलता। वे ज़ाहिरा विरोध पैदा करनेका बहुत प्रयत्न करते, और सरकारको भी अच्छा बहाना मिल जाता।

मदुरामें हरिजनोंकी अेक सभा हुअी। अुन्होंने प्रस्ताव किया कि हमारे लिअे जो मन्दिर खोले जाते हैं और सहभोज होते हैं, अुनमेंसे अेकमें भी हमें नहीं जाना चाहिये, क्योंकि यह सवर्ण हिन्दुओंकी चाल है। दूसरा प्रस्ताव शहशाहकी वफ़ादारीका था!

बापूने कहा: "यह अुपवास मुल्तवी रहा होता, तो अिसकी धार्मिकता ही मिट जाती। यह धर्मक्रिया थी। अिसीलिअे अुसकी घड़ी पल तक निश्चित हो चुकी थी। २० तारीखको बारह बजे अुसका मुहूर्त था। वह तो विधाताके लेखकी तरह ही था।"

अस्पृश्यता निवारणका विरोध अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग स्वरूप लेता जा रहा है। रत्नागिरिसे अेक पाठशालाका शिक्षक पूछता है कि "वर्ण कितने हैं? यहाँ कुछ लोग ब्राह्मण और शूद्र दो ही वर्ण बताते हैं और यह कहते हैं कि शूद्रोंको वेदोच्चारका अधिकार नहीं है। और मैंने अुनसे वेदोच्चार कराया, अिसलिअे मेरा बहिष्कार हो गया है।" बापूने अुसे लिखा कि "वर्ण मात्र शूद्र हैं और हरअेक हिन्दूको वेदोच्चारका हक़ है।"

अस्पृश्यता सम्बन्धी पत्र:

१४-१०-'३२ "मन्दिरप्रवेश अस्पृश्यता निवारणका आवश्यक अंग है। आम तौर पर जो व्यवहार दूसरी जातियोंके बीच है, वही अछूत भाअी-बहनोंके साथ होना चाहिये। सहभोजन सबकी अिच्छा पर है। वह अछूतपन दूर करनेका आवश्यक अंग नहीं है। मगर मेरा यह खयाल है कि हिन्दू धर्ममें किसीके साथ भी खाद्य पदार्थ खानेके लिअे प्रतिबंध नहीं है।"

अेक आदमीने पूछा था कि अछूत गोमांस खायें, शराब पीयें और साफ़ न रहें, तब तक क्या किया जाय? अुसे लिखा :

"मेरा पक्का विश्वास है कि हरिजनोंमें जो भी कुटेव पाअी जाती हैं, अुन सबके लिअे कथित सवर्ण ज़िम्मेदार हैं। सहानुभूतिपूर्वक अुपाय करनेसे ही वे दूर हो सकती हैं।"

दूसरेको :

"अस्पृश्यता निवारणमें सहभोजन और मिश्रविवाह अनिवार्य रूपसे शामिल नहीं है। लेकिन कोअी हरिजनोंके साथ भोजन-व्यवहार या कन्या-व्यवहार करे, तो अुसकी मनाही नहीं होनी चाहिये। दूसरे शब्दोंमें कहें, तो हरिजनोंका दरजा तमाम बातोंमें बाकीके हिन्दुओं जैसा होना चाहिये। सहभोजनका अर्थ अेक थालीमें खाना तो होता ही नहीं। अिसलिअे यह सवाल ही पैदा नहीं होता कि खानेके साथ दूसरेका थूक मिल जायगा।"

अीसाअी सेवा संघके ब्रदर केशवको लिखा :

"हाँ, अुपवास अीश्वरकी भेंट थी। आप धर्म-परिवर्तन करानेका विचार मनमें रखे बिना अछूतोंकी जो भी सेवा कर सकें अुससे भला ही होगा।"

रेनाल्ड्ज़का पत्र आया। १५ सितम्बरका यानी अुपवासका पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ अुसके दूसरे ही दिनका लिखा हुआ था। अुसमें लिखा था :

"और बहुतोंकी तरह मैं आपसे यह मनवानेकी कोशिश नहीं करूँगा कि आपका निर्णय ग़लत था। कारण मैं खुद ही मानता हूँ कि यह निर्णय अीश्वर प्रेरित था। आपके अेक अैसे अंग्रेज़ मित्रके नाते जो आपको खूब चाहता है और जो बहुत बार आपके विचारोंसे सहमत न होकर भी हमेशा आपके प्रति अत्यंत पूज्य भाव रखता है, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि निराश और हारे हुअे मनुष्यके जैसे दीखनेवाले आपके अिस कार्यको मैं आपके जीवनका सबसे बड़ा काम मानता हूँ।"

बापूने अुसे लिखा :

"आपका प्रिय पत्र मिला। मुझे यह ठंडी हवाके झोंकेके समान लगा है। मैं जानता ही था कि आप और दूसरे भी जो मेरे ध्यानमें हैं, अिस अुपवासका रहस्य समझ सकेंगे। माता जैसे बालकको सुलाती है, वैसे ही अीश्वरने धीरेसे मुझे (अुपवासकी शय्या पर) सुलाया। और सारे देशमें अुत्साहके जो भव्य प्रदर्शन हुअे, अुन्होंने तो मेरे लिअे खुराकसे भी ज्यादा काम किया।"

जेलकी बहनोंको पत्र :

"दुर्गाबाअी जोरसे कहना कि बहनोंको आते-जाते जो डर बैठ गया है, वह मनको दृढ़ कर लेनेसे निकल जायगा। मनमें यह निश्चय करके कि रक्षा करनेवाला राम है, जहाँ सेवाके कामके लिअे जाना ज़रूरी हो, वहाँ चले जाना चाहिये। डर किसका? पुरुषोंका ही न? पुरुष मात्र कोअी बहनों पर हमला करनेके लिअे ताकमें थोड़े ही बैठे रहते हैं? अुनका जन्म भी माताके पेटसे ही हुआ है। यह विश्वास रखना चाहिये कि वे माताके समान स्त्री जाति पर अिस तरह हरगिज़ हमला नहीं करेंगे। स्त्री अपना मातृपद धारण कर ले और अगर माता अपने बालकसे डरती हो, तो वह पुरुषसे डरे। अितने पर भी कोअी कामान्ध पुरुष निकल आये, तो बहनें समझ लें कि अुनकी अपनी पवित्रताका कवच ज़रूर रक्षा करेगा।"

बा आज गअीं। अुनकी बिदा करुण थी। "भगवान फिर कब मिलायेगा?"

बापूने कहा : "अिस बार मिलेंगे यह कौन जानता था?"

वल्लभभाअी तो अिनकी बच्चोंकी-सी निर्दोषताकी तारीफ़ करते हुअे थकते ही नहीं।

वाअिसरॉयका विमान हमारे सिर परसे अुड़ता हुआ हमारे पड़ोसमें अुतरा। बापू कहने लगे : "कितना मद है? अेक घुड़दौड़में आनेके लिअे हज़ारों रुपयों पर पानी फेर दिया।"

वल्लभभाअी : "यहाँ आकर अुसे यह बताना है कि अभी मेरा राज है और गांधी यहाँ कैदी है।"

आज सुबह बापूने कहा : "अेक ज़िम्मेदार अंग्रेज कर्मचारी अिस तरह कहे, यह बहुत विचित्र लगता है।" बात यह हुअी थी कि अेक दिन हम खाने बैठे थे कि अुस साहबने आकर बातों-बातोंमें कहा : "गांधी अिस जगतका दूसरा बड़ा पाखंडी है।" . . .

हमने पूछा : "और पहला कौन?"

अुसने कहा : "पहला अीसा था।" यह कहकर अुसने अितना और जोड़ा : "ये लोग नैतिक दुनियाकी जो बातें कहते हैं, अुनमें मेरा विश्वास नहीं है। मैं तो मद्य और मानिनीके आधुनिक जगतमें विश्वास करता हूँ।"

वल्लभभाअी कहने लगे : "अपना साँड़ अिसी जातका है!"

सरकारने ज़ामोरिन और रंगस्वामी आयंगरको तार भेजनेकी अिजाज़त दे दी। यह अिजाज़त दो दिन पहले आ गअी थी, अैसी खबर आज मेजरने दी। अभी मुलाकातोंके बारेमें तो खबर आअी ही नहीं। यह भी खबर दी कि शौकतअलीका तार अुन्हें नहीं भेजा जायगा।

आज केलप्पन, रंगस्वामी और ज़ामोरिनको पत्र लिखे और तीनोंको ज़ामोरिनको दिया हुआ तार भेजा।

१५-१०-'३२ केलप्पनको लिखा :

"मैंने आपको जल्दी ही पत्र लिखा होता, लेकिन अधिकारी यह विचार कर रहे थे कि अैसा पत्रव्यवहार होने दिया जाय या नहीं। मैंने आपको तीन तारीखको तार दिया। अुसी दिन अधिकारियोंको ज़ामोरिनके नाम अेक तार दिया था। मगर वह अुन्होंने रोक लिया। अब वह भेज दिया गया है। अुसकी नक़ल अिसके साथ भेज रहा हूँ। अिस तरह आप देखेंगे कि मैंने तो तुरंत काम शुरू कर दिया है।

"आपको नम्रता और सभ्यतासे काम लेना चाहिये। धमकियाँ बिलकुल न दी जायँ और न बड़े-बड़े दावे किये जायँ। असली काम तो कट्टरसे कट्टर सनातनियोंका भी परिवर्तन करना है। आंदोलनकी प्रगतिकी मुझे नियमित रूपसे जानकारी देते रहना।"

रंगस्वामीको यही हाल लिखकर बताया :

"अिस तरह आप देखेंगे कि हमें निश्चित किये हुअे समयमें मन्दिर खुलवाना हो, तो अब बहुत वक्त नहीं खोना चाहिये। अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि आप और आपके बताये हुअे मित्र अिस मामलेमें जल्दी काम करने लग जायँगे।"

ज़ामोरिनको :

"प्रिय मित्र,

"मैंने तीन तारीखको जो तार अधिकारियोंको दिया था अुसे जाने देनेके बारेमें अुन्होंने विचार किया और तीन दिन पहले ही अुन्होंने अुसे रवाना करनेका फ़ैसला किया है। आशा है आपको वह समय पर मिल गया होगा। मुझे विश्वास है कि आप अिस मामलेमें जो कुछ अुचित हो वह करेंगे और यह ध्यान रखेंगे कि अुपवास रोकनेके दरमियान मन्दिर खुल जाय।

"आपको किस तरह संबोधन किया जाता है यह मुझे मालूम नहीं। अिसलिअे तरीकेमें कोअी खामी रह गअी हो, तो यह समझकर कि वह जरा भी जानबूझकर नहीं की गअी, मुझे सूचना दीजिये।"

अेस० के० जॉर्जको लिखा :

"जैसा तुम करते जान पड़ते हो, वैसा मैं राजनीति और धर्मको अेक दूसरेसे अलग नहीं समझता। सच्चा धर्म जीवनकी हरअेक प्रवृत्तिमें व्याप्त होना चाहिये। कोअी भी प्रवृत्ति धर्मका बलिदान किये बिना न हो सकती हो,

तो यह समझना चाहिये कि वह प्रवृत्ति अनैतिक है। किसी भी कीमतपर अुसे छोड़ देना चाहिये। राजनीति अैसी प्रवृत्ति नहीं है, पर वह सामाजिक जीवनका अेक अभिन्न अंग है। दूसरी चर्चा तो अधिक अनुकूल अवसरके लिअे मुल्तवी रखनी चाहिये। मैं अितना ही चाहता हूँ कि मेरे बारेमें निराश होकर मुझे छोड़ न देना।"

मीठीबहन नामकी अेक गुजराती स्त्री नअी पुत्री बनी है और वह कलकत्तेसे अस्पृश्यता निवारणके बारेमें हिदायतें चाहती है। अुसने पूछा कि मालवीयजी जो कहते हैं अुसमें और आप जो कहते हैं अुसमें क्या फ़र्क़ है? अुसे लिखा:

"अस्पृश्यता निवारणमें रोटी-बेटी व्यवहार नहीं आता। लेकिन जो भी अछूत माने जानेवाले हरिजनोंके साथ रोटी-बेटी व्यवहार रखता है, वह अधर्म करता है, अैसा मैं नहीं मानता। रोटी-बेटीका प्रतिबंध हिन्दू धर्मका अविभाज्य अंग नहीं है। यह रूढ़ि हो गअी है। हरिजनों और दूसरी जातियोंके बीच हरगिज भेद नहीं रखा जा सकता। अिसमें किसीको मजबूर करनेकी बात नहीं है, अिसलिअे दुःख न होना चाहिये।"

आज 'टाअिम्स' में पूनाके समझौते पर सीतलवाड़का ज़बरदस्त हमला आया। विलिंग्डन साहब यहाँ आये हैं, अिसलिअे मानो सुबह ही अुनके पढ़नेके लिअे हो!

बापू बोले: "न जाने क्यों अिस आदमीका हंटर कमेटीके समयसे ही मेरे प्रतिका जहर मिटता ही नहीं। लंदनमें ११ किंग्ज़ स्ट्रीटमें आम्बेडकर तो कभी आया ही नहीं था। सुरक्षित बैठकोंके आधार पर बनाया हुआ अेक भी निश्चित प्रस्ताव मेरे सामने नहीं रखा गया था। और आम्बेडकरसे तो मैं सिर्फ़ सरोजिनीदेवीके यहीं मिला था। वहाँ अुसने किसी भी हालतमें अलग निर्वाचन न छोड़नेकी बात कही थी। यह आदमी प्रारंभिक चुनाव और अलग निर्वाचन मंडलमें भेद नहीं देखता, क्योंकि वह देखना ही नहीं चाहता। प्रारंभिक चुनावका असर तो अिससे अधिक कुछ नहीं है कि अछूत निर्वाचक अुम्मीदवारोंको नामज़द करें। और बात तो यह है कि चार अुम्मीदवार खड़े हों, तब तक तो प्रारंभिक चुनावकी भी ज़रूरत नहीं। ज़रूरत तो चारसे ज्यादा हों, तभी पड़ सकती है। और अेक ही अुम्मीदवार हो, तब तो प्रारंभिक चुनाव या साधारण चुनाव दोनोंमें से अेक भी करनेकी ज़रूरत नहीं पड़े। अितनी बात मंजूर है कि विलायतमें यही योजना मेरे सामने रखी गअी होती, तो शायद मैं स्वीकार न करता। क्यों कि, वहाँ वातावरण ही नहीं था। यहाँ अवर्णों और सवर्णोंके अितने अधिक प्रतिनिधियोंने मिलकर जो किया, अुसकी तुलना वहाँ जो कुछ भी किया जाता, अुसके साथ कैसे हो

सकती है ? मगर सच बात तो यह है कि यह आदमी यह मान ले कि मेरे अुपवासने हिन्दू समाजमें जागृति पैदा कर दी, तो फिर अुसे और कुछ कहने का हक नहीं रहेगा। हिन्दू समाज अिस अुपवाससे जैसा अेक हो गया, वैसा दूसरी तरह न होता। और यह अेकता मुख्य बात है। प्रतिनिधित्व की बात तो गौण है।"

मैंने पूछा : "आज केलप्पनको लिखा है कि हिन्दू समाजका परिवर्तन ही मुख्य बात है। क्या आप मानते हैं कि अुपवाससे यह परिवर्तन होता है?"

बापू : "हरअेक अुपवाससे नहीं। अिसीलिअे तो मैंने यह कह दिया है कि अुपवास कैसा होना चाहिये। अुसके पीछे निर्मलसे निर्मल हेतु होना चाहिये। अुसमे किसीपर दबाव डालनेका काम नहीं। यों तो कोअी शराबी या व्यभिचारी आदमी भी अैसा हो सकता है, जिसे अछूतपनके सवालसे बहुत पीड़ा होती हो और वह अुपवास करे, मगर अुस अुपवासका कोअी असर होगा तो क्षणिक ही होगा। अिसका कारण यह है कि अुपवास करनेवालेको समझना चाहिये कि वह अीश्वरका प्रतिनिधि है। और अीश्वरके प्रतिनिधिके नाते अुसमें किसी भी प्रकारका मैल नहीं होना चाहिये। यह स्थिति हो, तो अुपवासका व्यापक असर हुअे बिना न रहे।"

मैंने कहा : "मामूली आदमीका भी असर होता है, क्योंकि कलियुगमें तो अल्प तपस्या भी फल देती है।"

बापू : "ठीक है, जैसे मेरे छः दिनके अुपवाससे अितना असर हुआ।"

मैंने कहा : "मैं आपके अुपवासकी बात नहीं कहता। मगर भावनगरमें अुस आदमीने दो दिन अुपवास किया और दुकानवालेने माफ़ी माँगी। यह अल्प तपस्या और सामान्य मनुष्य द्वारा की हुअी तपस्याकी मिसाल है।"

बापू : "यह ठीक है, अुसका व्यापक असर नहीं होता। व्यापक असर वह कहलाता है, जो ६ अप्रैल १९१९को अुपवास और प्रार्थनाका और सूचनाओंका हुआ था। मैं यह मानता हूँ कि वैसा ही असर अिस अुपवासका हुआ है। मैंने तो यह माना ही नहीं था कि अितना असर होगा और लोग अिशारेमें अितना समझ जायँगे।"

'लोकशिक्षण' में 'तिलकभक्त' नामधारी लेखकने केलकरके साठ बरस पूरे होनेके निमित्तसे महाराष्ट्रमें हुअे अुत्सवोंपर अेक बहुत कड़ा लेख लिखा है। आगरकर, चिपलूणकर, आप्टे, अणे, खाड़िलकर आदि प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय व्यक्तियोंकी तुलनामें ये कहीं नहीं टिक सकते, अिनमें ध्येयशून्यता है, ये सुस्त स्वभावके हैं, तिलककी गद्दीकी रक्षा करनेके बजाय अिन्होंने तिलक-सत्ताका लोप कर दिया — अिस प्रकारकी आलोचना अिस लेखमें काफी

कड़वी भाषामें की गअी है। यह बात बापूके सामने कहने पर वे बोले: "यह सब बेमौके है, अप्रस्तुत है। यह लेख अिस समय लिख कर वह समाजकी क्या सेवा करना चाहता है? तिलककी गद्दी लेनेका अर्थ क्या? तिलकके जैसे बनना ही अिसका अर्थ हो, तब तो किसीने तिलककी गद्दी ली नहीं। अिस तरह गद्दी ली जाती हो, तो तिलककी विशेषता जाती रहे। गद्दीकी रक्षा अिन्होंने ज़रूर की है। 'केसरी'को चलाया, बढ़ाया; और वह यहाँ तक कि जब तिलक वापस आये, तब वे फिर गद्दी पर बैठ गये और अिस तरह पत्र चलाने लगे, मानो बाहर गये ही न हों। अुन्होंने आकर तुरन्त कांग्रेस पर अधिकार कर लिया और होमरूलका आन्दोलन अुठाया। अिस सबका यश केलकरको मिलना चाहिये। तिलककी सत्ता पर हुआ १९०८ का हमला अंग्रेज़ोंका मानें, तो कहा जा सकता है कि अुसके सामने देश अच्छी तरह डटा रहा। अगर मेरा हमला माना जाय, तो अुसके आगे झुकनेमें महाराष्ट्रका गौरव था। और अुसका मुक़ाबला करना था, तो ये 'तिलकभक्त' ही क्यों न विरुद्ध हुअे? अुनकी बहुतसी आलोचनामें तथ्य हो, तो भी अुसके लिअे यह मौक़ा नहीं। भले ही केलकरको दिये गये अभिनन्दन-पत्रमें अतिशयोक्ति हो। पर अिससे क्या? कौनसा अभिनन्दन-पत्र अतिशयोक्तिसे खाली होता है? अभिनन्दन-पत्र महत्त्व देनेकी चीज़ ही नहीं। अैसा लेख 'लोकशिक्षण' वालों ने लिया ही क्यों?"

मैंने कहा: "संपादकने अेक टिप्पणी लिखी है, जिसमें यह बताया है कि लेखकके विचारोंसे संपादकका सम्बन्ध नहीं है और यह बताया है कि लेख दूसरोंके विचारोंको स्थान देनेके लिअे ही दिया गया है। साथ ही यह भी लिखा है कि यही चीज़ सौम्य भाषामें भी कही जा सकती थी।" तब बापू ज़रा शान्त हुअे।

वल्लभभाअी बोले: "जो आदमी महाराष्ट्रीय हो, वही अपने निकट परिचयके कारण अुन्हें पहचान सकता है और अैसा लिख सकता है। हम क्या जानें?"

बापू: "नहीं, यह मर्यादा छोड़ कर लिखा हुआ कहलायेगा और अिसमें द्वेष भी हो सकता है।"

१६-१०-'३२

आज आश्रमकी सारी डाक शाम तक पूरी कर दी। अुपवासके अुचित-अनुचित होनेके बारेमें पोलाककी कड़ी टीका — आठ नौ टाअिप किये हुअे पन्नेकी आयी। अिससे यह तो जान पड़ता है कि विलायतमें शायद ही किसीने अुपवासको समझा होगा।

आश्रमकी डाकमें ज़िक्र करने लायक पत्र :

जमनाबहनको लिखा :

"तीन महीनेका तुम्हारा सब मिलाकर १२५) रु. का खर्च ज्यादा नहीं है। अुसे जाननेकी मुझे अिच्छा थी, क्योंकि अिससे मुझे बहुतसी बातें जाननेको मिल जाती हैं। भले ही अपना रुपया हो, तो भी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब रखना ही चाहिये। क्योंकि सच बात तो यह है कि अपना अिस दुनियामें कुछ भी नहीं, सब ओश्वरका है। यह हमें रोज़ अनुभव होता है। अिसलिअे सब कुछ त्यागबुद्धिसे ही भोगना और खर्च करना चाहिये। जो अैसा करता है वह आत्मसन्तोषके लिअे पाओी-पाओीका हिसाब रखता है। अगर १२५) रु. का हिसाब अिस तरह न रखा हो, तो अब रखनेकी आदत डालनी चाहिये। मुझे याद है कि देवभाभी अैसा ही हिसाब ज़बानी रखती थीं।"

नर्मदा भुस्कुटेको (हिन्दीमें) :

"वाङ्मय साध्य नहीं है, सेवा साध्य है। वाङ्मय सेवाका साधन है, अिसलिअे जब तक हमारे हाथमें कुछ भी सेवा आयी हो तब तक शान्तिसे अुसमें तन्मय रहना। गीतामाताकी प्रतिज्ञा है कि जो ओश्वरके भक्त हैं, अुनको भगवान् साधन दे देगा। हाँ, जब समय मिले तब अक्षरज्ञानमें वृद्धि अवश्य करना। अुसमें भी समझो कि पढ़नेसे विचार ज्यादा चीज़ है। भले पढ़नेका थोड़ा हो। जितना पढ़ना अुसे हज़म करना।"

छगनलाल जोशीको :

"मुझे तो सभी परीक्षा अच्छी लगती है। ओश्वरने शर्त की ही नहीं कि वह अपने भक्तोंको यहीं तक तपायेगा। अितनी मर्यादा अवश्य है कि वह किसीको अुसकी शक्तिसे अधिक नहीं तपाता।

"सब कुछ अनासक्त रहकर करना सीख लोगे तो कुशल ही है। मैं तो देखता हूँ कि आरोग्यकी कुंजी भी अुसीमें है।"

बालकोबा को :

"यह कहा जा सकता है कि अुपवासके दिनोंमें नामस्मरण आदि ज्यादा था। क्योंकि शारीरिक दुःख होते हुअे भी शान्ति बहुत थी। यह हो सकता है कि जिसे असाध्य रोग है, वह खास हालतोंमें अनशन करे, तो अुसमें आत्महत्याका दोष न हो। मगर जिस असाध्य रोगवालेका मन साफ़ है, अुसे अनशनका अधिकार नहीं है। क्योंकि वह मनसे भी सेवा कर सकता है। मेरी पिछली बीमारी जो कोल्हापुरमें हुअी, वही थी ? कुछ भी हो। मुझे याद है कि हर बीमारी मुझे अनुग्रहके रूपमें ही हुअी है। ओश्वरके भक्तको अैसा

होना ही चाहिये। फिर भले ही बीमारी अुसकी मूर्खतासे ही आअी हो। रामनामका अुपयोग तो जाने अनजाने रोज ही होता है। लेकिन हर संकटके समय वह ज्ञानपूर्वक होता है और मेरी यादके मुताबिक़ अुससे हमेशा मुझे शान्ति मिली है। यह नहीं कहा जा सकता कि नामस्मरणका कोअी मुकर्रर वक़्त है।"

अेक बहनको :

"चूड़ी, बिन्दी और रंगीन साड़ी सिंगार भी हो सकता है और केवल रूढ़ि भी हो सकती है। जैसे खाना भोग भी हो सकता है और देहका भाड़ा भी। भोगके लिअे खायें, तो अुसे छोड़ दें। भाड़ेके तौर पर शरीरको जो कुछ देना चाहिये दें। फिर भले ही वह चीज़ भोगकी ही क्यों न हो। दूध, दही, खजूरमें कहाँ कम भोग है? फिर भी खाती हो न! क्योंकि तुम्हारे लिअे वह भोगकी वस्तु नहीं। अिसी तरह चूड़ी, बिन्दी या रंग तुममें विकार पैदा करते हों, तो दुनिया भरके विरोधके बावजूद भी अुन्हें छोड़ दो। लेकिन अगर रिवाजकी खातिर या बड़ोंको खुश रखनेके लिअे ही अिस्तेमाल करती हो तो अिसमें दोष नहीं। यानी अिन्हें काममें न लेना अेकान्तिक धर्म नहीं — जैसे झूठ न बोलना अेकान्तिक धर्म है। अिन कारणोंसे मैंने लिखा था कि चूड़ी न पहननेका व्रत लेनेमें दोष था। जो अेकान्तिक धर्म नहीं, अुसका व्रत अेकाअेक नहीं लेना चाहिये। अुसमें बड़ा त्याग नहीं। हाँ, चूड़ीके पीछे तुम मर रही होतीं, चूड़ीके लिअे देश-विदेश भटकती होतीं या चोरी करती होतीं, तो अुसकी कसम लेना ठीक था। मैं अैसी स्त्रियोंको जानता हूँ, जिन्हें तरह-तरहकी चूड़ियाँ चाहियें; और अुन्हें लेनेको वे लड़ती हैं और चोरी करती हैं। अैसी बहनें व्रत लें तो अच्छा। मगर अैसी बात कहूँ, तो भी वे मेरे साथ लड़ती हैं। जिनके लिअे चोटीमें ही सारा शृंगार है और चोटीका त्याग करनेको कहते ही जो लाल आँखें कर लेती हैं, वे भले ही चोटी कटवा दें। लेकिन जिन्हें चोटी भार स्वरूप बन गयी है, अटपटी लगती है, वे माँ-बापको खुश रखने या समाजको न छोड़नेके लिअे रखें तो कोअी बुरा नहीं। अुनके लिअे चोटी रखना धर्म भी हो सकता है। अब यह चूड़ीका शास्त्र समझमें आया?"

आम्बेडकरको बापूसे मिलनेकी और मन चाहे विषयपर छूटसे चर्चा करनेकी अिजाज़त मिली है।

१७–१०–'३२ अुपवासके बारेमें बहस करनेवाले अेक आदमीको लिखा :

"मैं अितना ही कह सकता हूँ कि जब मनुष्य अन्तर्नादकी प्रेरणा होने की बात कहता है, तब अुसे अीश्वरकी दया पर ही छोड़ देना चाहिये।"

आश्रमकी डाकमें ज़िक्र करने लायक पत्र :

जमनाबहनको लिखा :

"तीन महीनेका तुम्हारा सब मिलाकर १२५) रु. का खर्च ज्यादा नहीं है। अुसे जाननेकी मुझे अिच्छा थी, क्योंकि अिससे मुझे बहुतसी बातें जाननेको मिल जाती हैं। भले ही अपना रुपया हो, तो भी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब रखना ही चाहिये। क्योंकि सच बात तो यह है कि अपना अिस दुनियामें कुछ भी नहीं, सब अीश्वरका है। यह हमें रोज़ अनुभव होता है। अिसलिअे सब कुछ त्यागबुद्धिसे ही भोगना और खर्च करना चाहिये। जो अैसा करता है वह आत्मसन्तोषके लिअे पाअी-पाअीका हिसाब रखता है। अगर १२५) रु. का हिसाब अिस तरह न रखा हो, तो अब रखनेकी आदत डालनी चाहिये। मुझे याद है कि देवभाभी अैसा ही हिसाब ज़बानी रखती थीं।"

नर्मदा भुस्कुटेको (हिन्दीमें):

"वाङ्मय साध्य नहीं है, सेवा साध्य है। वाङ्मय सेवाका साधन है, अिसलिअे जब तक हमारे हाथमें कुछ भी सेवा आयी हो तब तक शान्तिसे अुसमें तन्मय रहना। गीतामाताकी प्रतिज्ञा है कि जो अीश्वरके भक्त हैं, अुनको भगवान् साधन दे देगा। हाँ, जब समय मिले तब अक्षरज्ञानमें वृद्धि अवश्य करना। अुसमें भी समझो कि पढ़नेसे विचार ज्यादा चीज़ है। भले पढ़नेका थोड़ा हो। जितना पढ़ना अुसे हज़म करना।"

छगनलाल जोशीको :

"मुझे तो सभी परीक्षा अच्छी लगती है। अीश्वरने शर्त की ही नहीं कि वह अपने भक्तोंको यहीं तक तपायेगा। अितनी मर्यादा अवश्य है कि वह किसीको अुसकी शक्तिसे अधिक नहीं तपाता।

"सब कुछ अनासक्त रहकर करना सीख लोगे तो कुशल ही है। मैं तो देखता हूँ कि आरोग्यकी कुंजी भी अुसीमें है।"

बालकोबा को :

"यह कहा जा सकता है कि अुपवासके दिनोंमें नामस्मरण आदि ज्यादा था। क्योंकि शारीरिक दुःख होते हुअे भी शान्ति बहुत थी। यह हो सकता है कि जिसे असाध्य रोग है, वह खास हालतोंमें अनशन करे, तो अुसमें आत्महत्याका दोष न हो। मगर जिस असाध्य रोगवालेका मन साफ़ है, अुसे अनशनका अधिकार नहीं है। क्योंकि वह मनसे भी सेवा कर सकता है। मेरी पिछली बीमारी जो कोल्हापुरमें हुअी, वही थी? कुछ भी हो। मुझे याद है कि हर बीमारी मुझे अनुग्रहके रूपमें ही हुअी है। अीश्वरके भक्तको अैसा

होना ही चाहिये। फिर भले ही बीमारी अुसकी मूर्खतासे ही आअी हो। रामनामका अुपयोग तो जाने अनजाने रोज ही होता है। लेकिन हर संकटके समय वह ज्ञानपूर्वक होता है और मेरी यादके मुताबिक़ अुससे हमेशा मुझे शान्ति मिली है। यह नहीं कहा जा सकता कि नामस्मरणका कोअी मुक़र्रर वक़्त है।"

अेक बहनको :

"चूड़ी, बिन्दी और रंगीन साड़ी सिंगार भी हो सकता है और केवल रूढ़ि भी हो सकती है। जैसे खाना भोग भी हो सकता है और देहका भाड़ा भी। भोगके लिअे खायें, तो अुसे छोड़ दें। भाड़ेके तौर पर शरीरको जो कुछ देना चाहिये दें। फिर भले ही वह चीज़ भोगकी ही क्यों न हो। दूध, दही, खजूरमें कहाँ कम भोग है? फिर भी खाती हो न? क्योंकि तुम्हारे लिअे वह भोगकी वस्तु नहीं। अिसी तरह चूड़ी, बिन्दी या रंग तुममें विकार पैदा करते हों, तो दुनिया भरके विरोधके बावजूद भी अुन्हें छोड़ दो। लेकिन अगर रिवाजकी खातिर या बड़ोंको खुश रखनेके लिअे ही अिस्तेमाल करती हो तो अिसमें दोष नहीं। यानी अिन्हें काममें न लेना अेकान्तिक धर्म नहीं — जैसे झूठ न बोलना अेकान्तिक धर्म है। अिन कारणोंसे मैंने लिखा था कि चूड़ी न पहननेका व्रत लेनेमें दोष था। जो अेकान्तिक धर्म नहीं, अुसका व्रत अेकाअेक नहीं लेना चाहिये। अुसमें बड़ा त्याग नहीं। हाँ, चूड़ीके पीछे तुम मर रही होतीं, चूड़ीके लिअे देश-विदेश भटकती होतीं या चोरी करती होतीं, तो अुसकी कसम लेना ठीक था। मैं अैसी स्त्रियोंको जानता हूँ, जिन्हें तरह-तरहकी चूड़ियाँ चाहियें; और अुन्हें लेनेको वे लड़ती हैं और चोरी करती हैं। अैसी बहनें व्रत लें तो अच्छा। मगर अैसी बात कहूँ, तो भी वे मेरे साथ लड़ती हैं। जिनके लिअे चोटीमें ही सारा शृंगार है और चोटीका त्याग करनेको कहते ही जो लाल आँखें कर लेती हैं, वे भले ही चोटी कटवा दें। लेकिन जिन्हें चोटी भार स्वरूप बन गयी है, अटपटी लगती है, वे माँ-बापको खुश रखने या समाजको न छोड़नेके लिअे रखें तो कोअी बुरा नहीं। अुनके लिअे चोटी रखना धर्म भी हो सकता है। अब यह चूड़ीका शास्त्र समझमें आया?"

आम्बेडकरको बापूसे मिलनेकी और मन चाहे विषयपर छूटसे चर्चा करनेकी अिजाज़त मिली है।

१७-१०-'३२ अुपवासके बारेमें बहस करनेवाले अेक आदमीको लिखा :

"मैं अितना ही कह सकता हूँ कि जब मनुष्य अन्तर्नादकी प्रेरणा होने की बात कहता है, तब अुसे अीश्वरकी दया पर ही छोड़ देना चाहिये।"

हैंडरसन नामके पादरीको :

"आप जब 'मेरा अीश्वर' और 'तुम्हारा अीश्वर' अैसी बात कहते हैं, तब आपके साथ चर्चा करना फ़जूल है। मैं तो आज तक यही मानता हूँ कि बुद्धिमानका और मूर्खका, पापीका और सन्तका अीश्वर अेक ही है। मेरा यह सुझाव है कि मेरे साथ बहस करनेके बजाय आप मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये कि 'आपका' अीश्वर मुझे बुद्धि दे और आपके खयालसे मेरी जो भूल है अुसे मैं समझ सकूँ।"

बारह बजे बापू आम्बेडकरसे मिलने दफ्तर गये। श्रीमती नायडू भी वहाँ आअी थीं। शुरूमें हडसनका आया हुआ पत्र आम्बेडकर और बापूको पढ़ाया गया। अुसमें बताया गया था कि सिर्फ़ अिसी शर्त पर मुलाकात हो कि अछूतपनके बारेमें ही बातें की जायें और अिस बारेमें बाहर कहीं भी सार्वजनिक रूपमें न लिखा जाय अथवा गांधीजीकी तरफ़से बयान प्रकाशित न किये जायें। अगर अिन शर्तोंका भंग हुआ, तो भविष्यमें ये मुलाक़ातें नहीं मिलेंगी। बापूको यह बात अच्छी नहीं लगी और न आम्बेडकरको। आम्बेडकरने तो 'किसी भी विघ्नके बिना मुलाक़ात' की अनुमति माँगी थी और अुसे 'आपके तारमें लिखे अनुसार' अनुमति भी मिली थी। जेलमें अुसे यह पत्र देखकर अचंभा हुआ और अुसने हडसनसे टेलीफ़ोन पर बातें कीं। हडसनने कहा: "यह निश्चय लार्ड विलिंग्डनके साथ बातें होनेके बाद करना पड़ा है।" अिसलिअे मजबूर होकर आम्बेडकरने मंजूर किया। फिर भी आंबेडकरने कह दिया: "मैं तो अछूतपनके बारेमें नहीं, परन्तु राजनैतिक परिस्थितिके विषयमें बातें करने आया था। मगर अब तो जो होना था, हो गया।"

बापूने कहा: "सच बात है। मुझसे आपके साथ अिस विषयमें बातें नहीं की जा सकतीं। आप करें तो भी मैं राय नहीं दे सकता। मेरा मन ही अिस दिशामें काम नहीं करेगा।"

आम्बेडकर बोले: "मैं तो कह देता हूँ कि सिर्फ़ अिसीलिअे आया था। मुझे आपसे सविनय भंग छोड़ कर बाहर निकलकर गोलमेज़ परिषद्में चलनेकी प्रार्थना करनी थी। बात यह है कि आप न चलें, तो विलायतमें कुछ नहीं मिल सकता; अुलटा सब कुछ बिगड़ जायगा। अिक़बाल जैसे आदमी तो देशके दुश्मन हैं, वे बिगाड़ देंगे; और हमें तो कैसा भी विधान हो अुस पर काम करना है। अिसलिअे मैं छोटा आदमी होकर भी आपसे बिनती करता हूँ कि आप चलिये।"

बापूने कहा: "आप सारी बहस विस्तारसे करें, तो मैं अुस पर विचार करूँ। मेरा सुझाव है कि आप बाहर जाकर अखबारोंमें अिस चीज़ पर विस्तारसे लिखिये। मैं अुसपर विचार करूँगा।"

आम्बेडकर: "यह सारी बात लिखी जा सके अैसी नहीं है। अिसमें तो मुझे वह कहना पड़ेगा, जिससे मुसलमानोंको बहुत दुःख हो सकता है, और यह मैं सार्वजनिक रूपमें नहीं कह सकता। मगर अब तो मैं नामके बिना दूसरी ही तरह लिखूँगा या लिखवाअूँगा। अुसे आप देखना और यह समझकर अुसपर विचार करना कि वह मेरा ही है।"

बापू बोले: "आप अपने नामसे ही लिखे तो अच्छा है। फिर जैसी आपकी अिच्छा।" श्रीमती नायडू भी अिस रायसे सहमत हुअीं।

फिर अस्पृश्यताके बारेमें बात निकली। आम्बेडकर बोले: "मुझे अीमानदारीसे कहना चाहिये कि ये जो मन्दिर खुलते है और सहभोज होते हैं, अिसमें मुझे दिलचस्पी नहीं। अिसमें तो हमारी मौत है। मेरे आदमियोंको मार खानी पड़ती है और कड़वाहट बढ़ती है। विलेपारलेमें सहभोज होनेके बाद काम करनेवाले मराठोंने हड़ताल कर दी। अगर अूँचे वर्णके हिन्दुओंमें ताक़त होती, तो अछूतोंको नौकर रखते। मगर यह तो हो नहीं सकता, अिसलिअे मुझे अिसमें दिलचस्पी नहीं है। मैं तो यह चाहता हूं कि अछूतोंकी सामाजिक और आर्थिक दिक्क़तें मिटें।"

बापू बोले: "आप अुदाहरण दीजिये।"

अुन्होंने कहा: "अछूतोंको रहनेके लिअे मकान नहीं मिलते। अुनपर अन्याय और अत्याचार होते रहते हैं। अेक मामलेमें अेक अछूतपर मराठेके खूनका अभियोग था। मामला सेशनमें ले जाकर मैं अुसे छुड़वा सकता था, मगर मजिस्ट्रेटने अुसपरसे खूनका अिलज़ाम बदलकर सख्त चोटका लगा दिया। अब अुसे कुछ न कुछ सज़ा होगी। खुद मुझपर भी क्या बीतती है, सो आप नहीं जानते होंगे। मुझे बम्बअीमें पोर्ट ट्रस्टकी चालके सिवाय और कहीं रहनेकी जगह नहीं मिलती। अपने गाँवमें तो मुझे महारोंकी गन्दी बस्तीमें ही रहना पड़ता है। पूनामें दूसरे सब अपने मित्रोंके यहाँ ठहरते हैं, पर मुझे नेशनल होटलमें ठहरना पड़ता है और सात रुपये और गाड़ी भाड़ा खर्च करना पड़ता है।"

बापूने कहा: "भारत सेवक समितिमें?"

आम्बेडकर: "हाँ, वहाँ शायद रहा जा सकता है। मगर वहां भी शायद ही। वझेको पूछिये तो मालूम हो। वझेके देखते-देखते अुसके नौकरने मेरा अेक बार अपमान किया था। मुझे तो ये सब दिक्क़तें दूर करनी हैं।"

बापू बोले: "मैं आपके साथ सहमत हूँ। आपको जानना चाहिये कि मेरा अुपवास पूरा नहीं हुआ है, अभी क़ायम ही है। समझौतेको सुधरवाना तो गौण बात थी। मुख्य बात अभी बाकी रही है। अुसके लिअे मैं प्राण देनेको तैयार हूँ। आप जो कहते हैं, वे सब अन्याय मिटने ही चाहियें।"

आम्बेडकरने कहा : “मुझे बिड़लाने अस्पृश्यता निवारण सभाके बोर्डमें लेनेको कहा । मैंने अिनकार कर दिया, क्योंकि मैं अकेला वहाँ क्या करूँ ? मुझे तो आप चाहेंगे, अुसी तरहके काममें सम्मति देनी पड़ेगी। हम जो अधिक हों, तो चाहें अुस तरह सुधार करा सकें । आप चाहते होंगे कि मन्दिर बनाये जायँ या कुअें खुदवाये जायँ। पर हमें अैसा लगता है कि यह रुपया व्यर्थ जाता है, अिसके लिअे दूसरा रास्ता चाहिये ।”

बापू बोले : “आपका दृष्टिबिन्दु समझता हूँ। अिसे ध्यानमें रखूँगा और देखूँगा कि अिस बारेमें क्या किया जा सकता है ।”

फिर बापू हमसे कहने लगे : “बातें अुसने बहुत मीठी कीं । अुसमें सिद्धान्त तो नहीं है, मगर ये सारी बातें बहुत सीधे ढंगसे कीं । अुसने यह भी कहा कि मुझे राजनैतिक सत्ता चाहिये थी सो मिल गअी। अब मुझे तो राष्ट्रीय काम करना है । अब मैं आपके काममें रोड़े नहीं अटकाअूँगा । अेम. सी. राजा यहाँसे जाकर आर्डिनेंस बिलका समर्थन करें, वैसा मुझसे नहीं हो सकता । मैंने तो अपने आदमियोंसे कह दिया : ‘अब तुम मुझसे अिस काममें बहुत आशा न रखना। अब मुझे अपनी शक्ति देशके काममें खर्च करनी होगी।’ मगर आप बाहर निकलकर देशका काम शुरू करें तब हो। यों ही कुछ नहीं हो जायगा।

“अपने बारेमें कहा : ‘कहा जाता है कि सरकार मुझे रुपया देती है। मेरे जैसा भिखारी कोअी नहीं । तीन सालसे मेरी कुछ भी कमाअी नहीं। यह काम करते हुअे मुझे अपना रुपया खर्च करना पड़ता है और मेरे मुक़दमोंका काम कम होता है । सार्वजनिक कामके लिअे समय भी जाता है और रुपया भी खर्च होता है । थोड़े-थोड़े मुकदमें मिलते हैं, अुनसे अपना गुज़र चलाता हूँ । आज भी सावंतवाड़ीमें अेक मुकदमा है । वहाँ जाते हुअे रास्तेमें अुतर गया हूँ ।’ ”

नरसिंहरावकी लड़की लवंगिकाकी मृत्युका समाचार अखबारमें देखा और बापूका ध्यान दिलाया। बापूने तुरन्त अिस आशयका पत्र लिखा :

१८–१०–’३२ “आपकी लड़कीके अवसानके समाचार पढ़कर हम सबको दुःख हुआ । महादेवने कहा, यह अेक ही लड़की रह गअी थी । आपको शोक नहीं करना चाहिये । आप दोनों ज्ञानी हैं । अीश्वर आपको शान्ति प्रदान करे ।”

अितने वाक्योंका नरसिंहराव पर अद्भुत असर हुआ । अुन्होंने लिखा :

“ अिस तरह अैसे प्रसंगपर आपने हमारा स्मरण रखा, अिस विचारसे हृदय आर्द्र हो गया। कृपालु प्रभु अिस तरह अनपेक्षित आश्वासनोंका अमृत बरसाता है, यह कम धन्यता है ? पर ‘ आपको शोक नहीं करना चाहिये ’ अिन पाँच शब्दोंमें जो अमूल्य सद्भाव आपने भर दिया है वह और कहींसे — अिस रूपमें तो — हमें नहीं मिला। आपने हमें जिस अूँची कक्षामें — ज्ञान, तपश्चर्या वगैरा सम्पत्तिके सम्बन्धमें — रखा, अुसकी योग्यता प्राप्त करनेकी शक्ति प्रभु हमें दे। हम तो अभी साधारण मनुष्यकी भूमिकामें भटक रहे हैं। सिर्फ़ अैसी कसौटीके समय अुच्चतर भूमिकामें चढ़नेके लिअे दयालु प्रभु आप जैसे स्नेही सज्जनोंके द्वारा पंख देता है, यह लाभ कम नहीं।

“ वैसे भी कसौटी तो कठिन ही है। पहले जो दो सन्तानें जाती रहीं, वे तीन हफ़्ते बीमारी भुगतकर गयीं। अिसने तो चार घण्टेमें ही अेकाअेक बेहोश होकर देह छोड़ दी। शान्तिदाता शान्ति देता है और देगा। आपके पत्रके लिअे धन्यवाद नहीं दूँगा। मगर यह कहूँगा कि अिस पत्रको अमूल्य निधिके रूपमें संग्रह करके रखूँगा।

दूसरा पत्र लिखकर :

“ मेरी प्रिय पुत्रीके अवसानके दसवेंके मौक़े पर साढ़े आठ बजे प्रार्थना रखी है, अुस समय क्या आप हृदयमें प्रार्थना करेंगे ? यह गत आत्माके लिअे नहीं। वह तो चिर शान्तिमें विराजमान है। मगर अिस अशान्तिके अन्ध अरण्यमें भटकते हुअे हम जो पीछे रहे हैं, अुन्हींके लिअे। आपके पत्रमें तो हमें ‘ अीश्वर शान्ति प्रदान करे ’ ये प्रार्थनाके शब्द है ही, फिर भी हमारी अिस प्रसंगके लिअे बिनती है।”

अुन्हें पत्र लिखा :

“ सुज्ञ भाअीश्री,

“ सुबह चार बजेकी प्रार्थना हम कर चुके और यह लिखने बैठा हूँ। आपके दोनों पत्र मिल गये। हम तीनों आज ८॥ बजे आपके साथ दसवेंका श्राद्ध मनायेंगे। मूक प्रार्थनाके बजाय ‘ लीड काअिण्डली लाअिट ’का आपका अनुवाद गायेंगे। अुसमें आप दोनोंको जितनी शान्ति चाहिये, अुतनी क्या नहीं भरी है ? आपके बच्चे तो चिरशांति भोग रहे हैं। लेकिन अिस संसारमें जितने बच्चे हैं, वे क्या सब आपके नहीं हैं ? आपने तो अिस तरहका ज्ञान बहुत दिया है। वह अिस समय आपकी सहायता करे।

“ ‘ प्रेमळ ज्योति ’की अेक बात आपको अच्छी लगेगी। जाते-जाते फादर अेल्विनने सोचा कि अीसाअियोंका मित्र-मण्डल हर सप्ताह मेरे साथ मानसिक सम्बन्ध रखे तो अच्छा। अैसा करनेके लिअे अुन्होंने मुझसे अेक भजन माँगा, जिसे सभी ठीक निश्चित समय पर हर सप्ताह गायें। मैंने वह न्यूमेनका

भजन पसन्द किया। अुसे आज युरोपमें, अमेरिकामें, यहाँ और दूसरे देशोंमें मित्रमंडल हर शुक्रवारको शामके ७॥ बजे गाता है। हम यहाँ और आश्रमवासी साबरमती वगैरामें 'प्रेमळ ज्योति' हर शुक्रवारको शामकी प्रार्थनामें गाते हैं। अिस प्रकार अिस भजनमें आपने जो प्राण पूरे हैं, अुसमें वृद्धि होती जा रही है। अैसी यह आपकी भेट आपको भी फल दे।

आपका

मोहनदास"

पोलाकको जवाब दिया :

"सुबहकी प्रार्थना हो गअी और ४-२० हुअे हैं। तुम्हारा ७ तारीखका लिखा पत्र मुझे कल मिला। तुम्हारे पत्रकी मैं कितनी क़ीमत करता हूँ, यह तुम अिसी परसे देख सकोगे कि अुसका जवाब देनेके लिअे मैंने अपना सबसे मूल्यवान समय चुना है। तुम्हारे पत्रका महत्व तो अिसमें है कि अुसमें तुम्हारे प्रेमकी और तुम्हारी सच्चाअीकी परछाअीं पड़ रही है। मेरे विचार बदलनेके लिअे दी गअी दलीलोंके रूपमें अुसकी क़ीमत बहुत थोड़ी है, या कुछ भी नहीं। अगर मेरी भूल हुअी हो और घटना घट जानेके बाद भी वह मेरी समझमें आ जाय, तो मुझे अच्छा लगे। कारण, दुबारा भूल करनेसे बच जाअूँ। मगर मुझे भरोसा नहीं होता कि मैंने भूल की है।

"मैं देख रहा हूँ कि यद्यपि हमारा पारस्परिक प्रेम जैसा-का-वैसा ही है, फिर भी हमारे विचार अेक दूसरेसे अलग होते जा रहे हैं। चीज़ोंको देखनेका हमारा ढंग भी अलग हो रहा है। अिसलिअे हमें अलग होनेमें सहमत होना होगा।

"अिस विषयमें मैंने सोचा था कि दूसरे सब लोग मेरा यह काम नहीं समझ सकें, तो भी मिली और तुम अन्तर्वृत्तिसे यह समझ जाओगे और मेरी ढाल बनोगे। लेकिन यह आनन्द मेरे नसीबमें नहीं है। फिर भी अिसके बजाय मुझे अिस बातसे बहुत ज्यादा आनन्द मिल रहा है कि राजनैतिक और आध्यात्मिक मतभेद होते हुअे भी हमारा प्रेम क़ायम है। यह मैंने नहीं सोचा था कि हमारे बीच आध्यात्मिक मतभेद भी होंगे। लेकिन मैं देखता हूँ कि राजनैतिक, सामाजिक और दूसरे विषयों सम्बन्धी विचार आध्यात्मिक विचारोंके साथ गुँथे हुअे हैं और अुन्हींमेंसे पैदा होते हैं। अिसलिअे हमारे बीच जो तीव्र राजनैतिक मतभेद है, अुसका कारण ज्यादा संभव है कि आध्यात्मिक मतभेदमें मिल सके। अुपवासका खास कारण ही तुम भूल गये जान पड़ते हो। अिसके लिअे 'अल्पसंख्यक समिति' में दिया हुआ मेरा भाषण तुम्हें पढ़ लेना चाहिये। यह भाषण पहलेसे तैयार किया हुआ नहीं था। अुसके आखिरके शब्द तो मैं कहे बिना रह ही नहीं सका। यह अुपवास अुस गंभीर प्रतिज्ञाका अनिवार्य परिणाम था। अुस वक्त मुझे यह थोड़े ही पता था कि अिस प्रतिज्ञाका पालन किस

अंत्यजोंके प्रश्न सम्बन्धी पैदा होनेवाली मुश्किलोंके बारेमें काठियावाड़से शंभुशंकरका पत्र आया। बापू बोले: "यह काठियावाड़ तो अन्तमें दिक्क़त ही देगा। खुद कुछ करना नहीं और अैसे मामलोंमें मुश्किलें पैदा करना। राजाओंको भी अपना अैश-आराम घटाना नहीं है, अिसलिअे लोग कहीं हमारे ही विरोधी न बन जायें अिस खयालसे अैसे मामलोंमें वे लोगोंका समर्थन करते है।"

आज डॉ० कटियाल होम सेक्रेटरीसे अिजाज़त लेकर बापूसे मिल गया। अुसने यह कहकर अिजाज़त ली कि लन्दनमें वह बापूका 'डाक्टरी सलाहकार' था और अब वापस विलायत जानेसे पहले मिल लेना चाहता है। पंजाबके हाल सुनाते हुअे अुसने कहा कि फ़ज़ली हुसेनके सिवा वहाँ और कोअी कठिनाअी पैदा करे अैसा नहीं है। अिस आदमीकी बातोंसे बापू पर यह असर हुआ कि सारे सवालका सन्तोषजनक निपटारा हो जायगा।

शामकी प्रार्थनामें 'निन्दक बाबा वीर हमारा' भजन गाया। प्रार्थना पूरी होनेके बाद बापू बोले: "क्या सचमुच यह भजन हम गा सकते है?"

मैंने कहा: "अिसे बहुत कुरेदने लगें, तो शायद न गाने लायक़ लग सकता है। पर मुझे तो अिसमेंसे क्षमाभावकी ही ध्वनि निकलती दीखती है।"

बापू: "मैंने भी अैसा ही माना है, मगर आज बोलते-बोलते मुझे सूझा कि सचमुच क्या हम यह चाह सकते हैं कि जुग-जुग जीवो निन्दक मेरे? अिस सारे भजनमें कटाक्ष नहीं है?"

मैंने कहा: "मुझे नहीं लगता कि कटाक्ष है। मुझे तो अकसर यह भजन पढ़कर अैसा लगा है कि मानो आपकी ही वृत्तियाँ अिसमें ध्वनित हो रही हैं। बहुत बार जब आपकी सख्त आलोचना होती है, तब आप कहते हैं कि यह अच्छा है और अुस टीकाके लाभ वर्णन करते हैं।"

बापू: "यह सही है। अिस भजनका राग मीठा है, शब्दरचना भी अच्छी है और अिसे गाना हमेशा अच्छा लगा है। मगर आज विचार आया कि हमारी निन्दा करनेवाला सदा निन्दाका ही धन्धा किया करे, खुद डूबे और दूसरोंको तारता रहे, अिस तरहकी प्रार्थना क्या हम कर सकते हैं?"

मैं: "भक्तोंके ये भजन अुनके अपने अपने समयकी मनोवृत्तिके प्रतिबिम्ब हैं। मैं यह नहीं मानता कि अिनके द्वारा क्षमाभावका अुपदेश देनेके सिवाय अिनका और कोअी अुद्देश्य हो सकता है। वैसे अिसका विश्लेषण करने पर संभव है अिसमेंसे क्षमाके बजाय तिरस्कार निकल आये।"

बापू: "बस यही मेरा कहना है। अिसमें कटाक्ष है और निन्दकका तिरस्कार है। हम यह चाहते हैं कि दुष्टसे दुष्ट मनुष्य भी दुष्टता छोड़े; यह कभी नहीं चाहते कि दुष्टतामें ही पड़ा रहे। यह भजन गाया जाय या नहीं
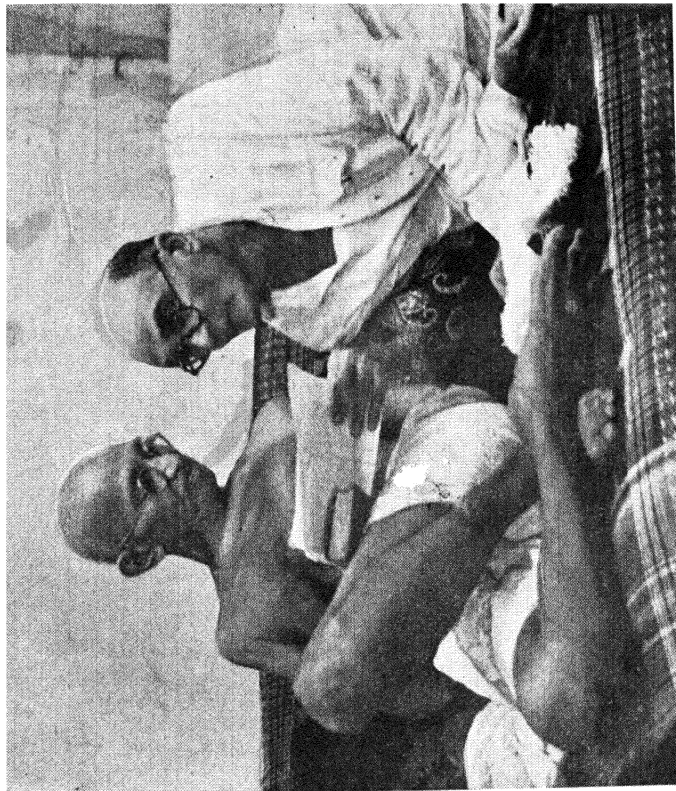
बापू और महादेवभाओी

यह विचार तो मुझे अिसलिअे आया कि मैं 'भजनावलि' के नये संस्करणका विचार कर रहा हूँ।"

मैं: "ठीक है। अगर कोअी यह कहे कि अिसमें निन्दकके लिअे शुभेच्छाके बजाय शाप भरा है, तो ग़लत नहीं होगा। अिस दृष्टिसे 'तू तो राम सुमर जग लड़वा दे' भी नहीं गाया जा सकता। कारण, अुसमें 'नरक पचत वाको पचवा दे' तो Revelation (रेवेलेशन — बाअिबलके नये क़रारका अेक भाग)के शापवाक्यका अनुवाद ही लगता है। 'He who is in hell, let him go deeper still' — 'जो नरकमें पड़ा है, अुसे और गहरी खाअीमें पड़ने दो'।"

बापू: "ठीक है, यह नहीं गाया जा सकता।"

१९-१०-'३२

कलके पत्रोंमें मेहरबाबाके मंत्रीका पत्र था। अिसमें अुन्होंने बापूकी अुनके साथ हुअी मुलाक़ातोंकी रिपोर्ट दी थी। सारी रिपोर्टका भाव अितना ही लगा कि गांधीजी पर यह असर पड़ा कि बाबा अेक महा विश्वगुरु हैं और बाबासे अीश्वरज्ञान प्राप्त करनेकी गांधीजीने अुत्कंठा दिखाअी थी। मुझे अिस सबका अुद्देश्य बापूके साथके सम्बंधका लाभ अुठानेके सिवाय और कुछ नहीं लगा।

अुन्हें बापूने लिखा: "आपका ८ तारीखका पत्र मिला। अुसके साथकी टिप्पणी भी मिली। अुसे पढ़ लिया। मुझे लगता है कि वह अैसी है, जो नहीं छापी जा सकती। अुसमें बहुत सी बातें रह गअी हैं, और जो कुछ लिखा गया है, वह अिस ढंगसे रखा गया है कि अर्थ बदल जाता है। अिसलिअे मेरी राय है कि कुछ भी नहीं छापा जा सकता। सिर्फ़ अितना ही छापनेकी ज़रूरत है कि बाबा और मेरे बीच गुरु शिष्यका संबंध नहीं है। साधारण मित्रोंके बीच जैसा सम्बन्ध होता है वैसा ही है। बातचीत ज्यादातर आध्यात्मिक विषयों पर हुअी थी। आम लोगोंको यहाँ या पश्चिममें अिस वार्तालाप या मुलाक़ातको महत्व देनेकी कोअी ज़रूरत नहीं।"

जातपाँत तोड़क मंडलके मंत्रीने पत्र लिखकर पूछा था कि अब अिस मौकेसे फायदा अुठाकर सब तरहकी जातपाँतको तोड़नेका काम नहीं कर लिया जाय? वर्ण-वर्णके बीच भी अेक तरहकी क्रमिक अस्पृश्यता तो है ही। जब तक अिन सबका नाश नहीं होगा, तब तक अस्पृश्यताका नाश नहीं होगा। अुसे बापूने लिखा (हिंदीमें):

"यदि जातपाँत तोड़नेका अर्थ वर्णका अुच्छेद है, तो यह बात मुझे अयोग्य-सी प्रतीत होती है। यदि अुसका अर्थ असंख्य जातियोंका तोड़ना है, तो मैं अुसमें सम्मत हूँ। तदपि जातपाँत तोड़ना और अस्पृश्यता निवारण दोनों भिन्न प्रवृत्ति

हैं। अस्पृश्यता निवारणका अर्थ जिसको अस्पृश्य मानते हैं असके साथ व्यवहार करना, जैसे अितर हिन्दुओंके साथ किया जाता है। दोनोंको साथ मिलानेसे दोनों कार्य बिगड़नेका डर है। फलतः रोटी-बेटी व्यवहार अस्पृश्यता निवारणका अनिवार्य अंग नहीं है। किन्तु हरिजनोंके साथ रोटी-बेटी व्यवहार अधर्म्य भी नहीं है।"

वालवा (जि० सतारा) के हरिजनोंकी सुन्दर अक्षरोंमें बड़े और चौड़े कागज़ोंपर लिखी हुअी अर्जी आअी कि "हमें स्पृश्य हिन्दुओंकी तरफ़से बड़ा कष्ट है। हमारे झोंपड़े हर साल पानीसे नष्ट हो जाते हैं। मगर स्पृश्योंके विरोधके कारण हमें अूंची जगह पर झोंपड़ियाँ बनानेकी अिज़ाजत नहीं मिल सकती। हम दूसरे धर्ममें क्यों न प्रवेश करें? लेकिन आपने अब बाबासाहब आम्बेडकरसे सुलह कर ली है, अिसलिअे हम अिस अितज़ारमें बैठे हैं कि आप अब क्या करते हैं।"

अुन्हें लिखा (हिन्दीमें):

"आप भाअियोंका सुन्दर अक्षरोंमें और सुन्दर भाषामें लिखा हुआ खत मुझे मिला है। आप लोगोंका दुःख मैं समझ सकता हूँ। बाबासाहब आम्बेडकरसे मेरी बहोत बातें हुअी हैं। यहाँसे मैं थोड़ी ही सेवा कर सकता हूँ। मेरी सलाह है कि आप लोग आपके दुःखकी कथा जो नया मंडल स्थापित हुआ है अुसे लिखें। मुझको तो अवश्य लिखा करें।

"आप लोग हिन्दू हैं, यह किसी पर अुपकार करनेके लिअे नहीं है। अिसलिअे मैं कैसे कहूँ कि आप दुःखके मारे धर्म छोड़ें? धर्मकी परीक्षा ही दुःखमें होती है। हाँ, मैं आप भाअियोंको अितना आश्वासन दे सकता हूँ कि मैंने अिस दुःखके निवारणके कारण प्राणार्पण किया है। और यदि अितर हिन्दू आप लोगोंसे न्यायपूर्वक व्यवहार नहीं करेंगे, तो प्रायश्चित्त रूपमें मैं मुलतवी रखा हुआ अनशनका आरंभ कर दूँगा। अैसा करनेकी शक्ति अीश्वर मुझे देवे।

हरिजनोंका सेवक
मोहनदास गांधी"

काठियावाड़में होनेवाली अस्पृश्यता निवारणकी कठिनाअियोंके बारेमें शंभुशंकरका पत्र आया। अुसे अुत्तर:

"जहाँ लोकमत विरुद्ध हो, वहाँ जबरन् हरिजनोंको दवाखानों या मन्दिरोंमें ले जानेका आग्रह नहीं रखना चाहिये। लेकिन जो अुनकी सेवा करना चाहते हों, अुन्हें अुनके लिअे अुन्हींके मुहल्लोंमें या अुनके पासमें वैसी सहूलियत पैदा कर देनी चाहिये और वहाँ हरिजनोंके सिवाय दूसरोंको आना हो, तो अुन्हें आनेका न्यौता देना चाहिये। अिस बीच लोगोंको विनयपूर्वक समझाया जाय। लोगोंपर रोष करनेसे या अुनकी ज़हरीली आलोचना करनेसे काम नहीं सुधरेगा। पूरे प्रेमसे लोगोंका

अज्ञान मिटाया जा सकेगा। जो सहूलियतें अुनके लिअे न हों, वे पैदा करनेका भगीरथ प्रयत्न होना चाहिये। राज्य तो बहुत कुछ कर सकता है। अुन्हें ज़मीनके मालिक बना दे, अुनके मुहल्ले सुधारे, अुनके घर अच्छे कर दे और अुनके वेतन अच्छे कर दे।

"भंगीको जूठन न दी जाय। अुनमें सफ़ाअी वग़ैराका प्रचार किया जाय। थोड़ेमें जिस-जिस तरह अुनकी हालत सुधारी जा सके, वे ही अुपाय संघर्ष पैदा किये बिना किये जायँ।"

आज नये वार्डसे पुराने वार्डमें चले गये।

मणिलाल मिलकर लौट गये। देवदासकी तबीयत अच्छी न होनेके कारण वह न आ सका। दक्षिण अफ्रीकाकी स्थितिके बारेमें बापूने बहुत तफसीलसे सलाह दी।

२०-१०-'३२

आजकी डाकमें जानेवाले पत्रोंमें बड़ा और सबसे ज़रूरी पत्र वालजीके नाम पर था। मेरा कार्यकाल शुरू होते समय हरिलाल माधवजी भट्टका गोखलेके अनुवादका भाग छप गया था, अुसे सारा रद्द करनेकी सलाह दी थी। अिसी तरहकी सलाह वालजीभाअीकी अीसाकी पुस्तकके बारेमें दी। वह पत्र यह है:

"लगभग यों कहा जा सकता है कि तुम्हारी पुस्तक मिलते ही मैं तुरन्त पढ़ गया। तुम्हारी भाषा मुझे मीठी लगती है, अिसलिअे अुसकी तरफ़ मैंने ध्यान नहीं दिया। ध्यान दूँ, तो कुछ समझदारी कर सकता हूँ। मगर यह तो तुच्छ लगता है।

"मुझे पुस्तक पसन्द नहीं आअी। तुमने नाम 'अीसाचरित्र' दिया है। भीतर अैसा नहीं देखता।

"मुझे याद है कि तुमने अेक बार कहा था, या मैंने तुम्हारे बारेमें अैसा मानकर किसीसे कहा था। तुम मानते हो, 'मैं मौलिक वस्तु देनेवाला कौन? हम तो पूर्वजोंने जो अुत्तम चीज़ें दी हैं, अुनका अनुवाद कर देनेमें ही सन्तोष मानें।' यह दलील मैं मान लूँ, तो शायद तुम्हारी पुस्तक पास कर दूँ। मगर मुझे यह दलील मंजूर नहीं। अगर वह तुम पर लागू हो, तो दूसरोंपर भी हो सकती है। सब अिसी तरह करें, तो हमें पूर्वजोंके कुअेंमें डूब मरना ही रहा। मैं मानता हूँ कि हमारा धर्म पूर्वजोंकी विरासतमें वृद्धि करना है, अुसे आजके चलनके सिक्केमें भुनाना है, अुसे आजके युगके अनुकूल बनाना है। यह काम सिर्फ़ अनुवादोंसे नहीं होगा। तुमने जो कुछ लिखा है, वैसा तो गुजराती भाषामें मिल सकता है। अीसाअियोंने भी अथक मेहनत करके जो अनुवाद प्रकाशित किये

हैं, वे फेंक देने लायक़ नहीं हैं। अुन्हींका प्रचार क्यों न किया जाय? अपनी मीठी वाणीका ही प्रचार करनेके लिअे तो तुम अैसी पुस्तकें लिखोगे नहीं। और अैसा करो भी तो अितने ही से अुस वाणीका प्रचार नहीं होगा।

"अिस कृतिमें मैं अेक तरहका आलस पाता हूँ। जो बहुत पढ़ता है और बहुत लिखता है, वह अुद्यमी ही है सो तो तुम हरगिज़ नहीं कहोगे। तुम्हारे बारेमें मैं यह मानता हूँ कि तुम्हें बहुत पढ़ने और अनुवाद करनेका रोग है। यह छूटना चाहिये। मैं तुमसे यह माँगता हूँ। भले ही 'अीसाचरित्र' दो। नया क़रार जितनी बार पढ़ना हो पढ़ो। फिर सब पुस्तकें आलमारीमें रख दो और पढ़े हुअे में से अीसाका जीवन तैयार करो।

"यह पुस्तक छपवा ली, अिसलिअे जनताको देनी ही चाहिये, अैसा न्याय न करना। अगर मेरा लिखना ठीक मालूम हो, तो छापी हुअी चीज़ रद्द कर देना। भले ही अितना रुपया चला जाय। और नया, जैसा मैं कहता हूँ, वैसा मौलिक लिखना शुरू करना। अगर यह मेहनत ज्यादा मालूम हो, तो शान्त रहना। पढ़ना छोड़कर किसी न किसी शारीरिक प्रवृत्तिमें लग कर शरीरको सुधारना। पढ़नेकी बीमारीवाले मैंने यहाँ और दूसरी जगह बहुत देखे हैं। यह रोग तुम्हें भी सताये हुअे है। अिस रोगसे मुक्त होनेके लिअे भ्रमण करो, अीश्वरकी लीला देखो, कुदरतकी किताब पढ़ो, पेड़ोंकी भाषा समझो, आकाशमें होनेवाला गान सुनो, और वहाँ रोज़ रातको होनेवाला नाटक देखो। दिनमें कातो, थकावट लगे तब सीओ, बढ़अीका काम हो सके तो करो, और मोचीका काम करो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हाथोंमें पीड़ा होती है। वह अभ्याससे मिट जायगी।

"अंग्रेज़ीमें सुन्दर लिखे हुअे अीसाके चरित्र बहुत हैं। अुनमेंसे भी कुछ न कुछ चुना जा सकता है। मगर यह बोझ मैं तुम पर नहीं लादूँगा।

"अुपरोक्त पुस्तकमें देवदूत वग़ैराके आगमनका भाग अनुचित है। अैसा तो हमारे यहाँ बहुत कुछ है। अुसमें वृद्धि क्या की जाय? देवदूत और ज्ञानी न आये हों, तो भी अीसाके नामको हानि पहुँचेगी, सो बात नहीं। मेरी शिकायत है कि तुमने पढ़नेवालेके सामने अीसाकी तस्वीर खड़ी नहीं की। तुमने 'अीसा-नीति' दे दी है, और वह भी अवतरण चिन्होंमें। तुम अपनी ही भाषामें दो, तो कौन अविश्वास करनेवाला है?

"मैं नहीं जानता, तुमने यह पुस्तक किसे ध्यानमें रखकर लिखी है। अगर जन-समाजको ध्यानमें रखकर लिखी हो, तो अुस पर विदेशी नामोंका बोझ नहीं डाला जा सकता। बाअिबलके नामोंको तुमने अपने कपड़े पहनाये हैं,

यह मेरे जैसे बहुत कमै पढ़नेवालेको मालूम नहीं हो सकता। मुझे डर है कि अिससे बहुत फ़ायदा नहीं होगा। अगर तुम्हें असे नाम देने थे जो गुजराती भाषामें घुलमिल जायँ, तो बाअिबलके हर नामके साथ जो अर्थ होता है, वह अर्थ लेकर चुने हुअे गुजराती नाम गढ़ लेने चाहिये थे।

"यह सब लिखने पर भी तुम्हारा पुस्तक छपवानेका आग्रह हो, तो अुसे सिर्फ़ डाकखर्च लेकर किसीको देनेकी ज़रूरत नहीं। लागत क़ीमतपर भी लोग न लें, तो भले ही न लें। तुम्हारा नाम होगा, तो पुस्तक खपेगी तो ज़रूर ही। अिसे पुस्तक-परीक्षाके रूपमें न समझना। तुम्हारा काम लेखकका है। लागतके दाम भी न दे सकें असे लोगोंको पुस्तक देनी होगी, तो यह असा काम करनेवाली कोअी परोपकारी संस्था करेगी। यही ठीक है कि अेक आदमी दो घोड़ोंपर न चढ़े। वे १५० रुपये भले ही ब्याज खाकर बढ़ते रहें।

"मैंने सोचा था अुससे बहुत ज्यादा लिखा गया है। और मैंने अपना गुबार अच्छी तरह निकाल लिया। अिसलिअे मैं मोहमें पड़ा हूँ और अिसकी रजिस्ट्री करानेमें पैसे फेंकूंगा।

"चलते-चलते चलाअी जा सकती है, अिसलिअे तो तकली पसन्द नहीं आअी न? तकली भी आरामसे चलाअी जा सकती है। ज्यादा लोभ पापका मूल है। तुम्हारी साधना शरीरको वज्रके समान बना लेनेकी है।"

दूसरे पत्र कल रातको लिखवाये। आजकी डाककी विविधता और बोधकता असाधारण कही जा सकती है। जो प्रतिक्षण सत्य और अहिंसाके दर्शन करता हुआ जीता है, अुसके लिअे कारावास क्या और मुक्ति क्या? अुसकी अेक पंक्ति या अेक विचार मात्र जगत-हितके लिअे काफ़ी है। यह अनुभव प्रतिक्षण हो रहा है और आजकी डाक खास तौरपर करा रही है। विचारों — शुद्ध हृदयसे होनेवाले विचारों — के बलके प्रभावके बारेमें साक्षी देनेवाला यह पत्र देखिये।

सतीशबाबूके बिस्तर पर पड़े हुअे पुत्र अरुणको:

"तुझे निराश नहीं हो जाना चाहिये। अिन्द्रिय सम्बन्धी दोष भी सुधरते जाते गये हैं, अथवा और कुछ नहीं तो वे क़ाबूमें तो आ ही जाते हैं। ठीक श्वासोच्छ्वास, ठीक भोजन, ताज़ा हवा और साथ ही अच्छा होनेका संकल्प, यह सब हो तो लोग अच्छे हो जाते हैं। तुझे अीश्वर पर जीती-जागती श्रद्धा होनी चाहिये। अितना समझ ले कि जब तक अिस शरीरका अुपयोग होगा, तब तक वह अिसे ज़रूर ठीक रखेगा।

"और तू यह क्यों सोचता है कि हम शरीरसे ही सेवा कर सकते हैं? मन सेवाका कहीं ज्यादा बलवान साधन है। जिनके हृदय पूरी तरह पवित्र हैं,

वे अधिकसे अधिक सेवा करते हैं। सम्पूर्ण पवित्रता प्राप्त करनेके लिअे ही हम सेवा करते हैं। पवित्र हृदयवालोंके विचार वह काम कर सकते हैं, जो अपवित्र हृदयवालोंके शरीर कभी नहीं कर सकते। अिसलिअे तुझे किसी भी तरह निराश होनेका ज़रा भी कारण नहीं है। विचार किस तरह काम करते हैं, अिसकी बारीकीमें पड़नेकी कोशिश न करना। वे काम कर सकते हैं और बड़े परिणाम पैदा करते हैं, यह मान लेना तेरे लिअे काफ़ी है। अिसलिअे हृदयकी पवित्रता हमेशा रखनेका प्रयत्न करते हुअे, तेरा शरीर अच्छा हो या न हो फिर भी, तुझे पूरी शान्ति रखनी चाहिये। अितना तू करेगा ?"

अिसी तरहका बापूके अन्तर्जीवन पर खूब प्रकाश डालनेवाला अेण्ड्रूज़के नामका पत्र देखिये :

"प्यारे चार्ली,

"अीश्वरकी कृपा अद्‌भुत है। अिन दिनों मैं अुसकी अुपस्थितिकी तेज रोशनीमें मौज कर रहा था। मैंने अेक क़दम भी अपनी अिच्छासे नहीं अुठाया। प्रार्थनाका अितना निश्चित और तुरन्त जवाब मिलनेका मुझे कभी अनुभव नहीं हुआ।

"तुम वहीं रहे, यह अच्छा किया ; मैं जानता हूँ तुमको वहाँ रहना कितना बुरा लगा होगा। फिर भी तुम्हारे तारके जवाबका निर्णय करनेमें मुझे अेक क्षण भी देर नहीं लगी थी। अिस निर्णयके सही होनेके बारेमें वल्लभभाअी और महादेवको भी कोअी शंका नहीं थी। अिन भयंकर दिनोंमें भविष्यको बनानेवाले जो निर्णय किये गये हैं, अुनके सही होने की बात वे सहजमें ही समझ गये, यह कितनी अद्‌भुत चीज़ है ? मगर काम तो अभी शुरू हुआ है। मेरे लिअे यह जीवन मरणका संग्राम है। या तो अस्पृश्यता मरेगी या मैं मरूँगा। बहुत बड़ा काम है। मेरी सभाओंमें जो लाखों लोग आते थे, मुझे अुनके प्रेमकी परीक्षा करनी है। खुद अीश्वरके साथ मुझे कुश्ती लड़नी है। मगर वह नरम और सख्त दोनों है। अुसे या तो संपूर्ण आत्मसमर्पण चाहिये या कुछ नहीं चाहिये। मेरे पिछले अुपवास शायद अभी जो होना बाकी है, अुसकी भूमिका ही हों। लेकिन ये मनसूबे मैं नहीं बाँधूँगा। अुसीका सोचा हुआ हो, मेरा नहीं। मुझे तो अगर बलिदान करनेका मौका आये, तो अुसके लायक़ बननेका प्रयत्न करना है।

"तुमको अभी वहीं रहना है। तुम वहाँ जिस अस्पृश्यताकी बात कहते हो, वह ज्यादा सूक्ष्म है और वह प्रतिष्ठाका अंचल ओढ़कर फिरती है। अिस

देशमें अस्पृश्यता जैसी है वैसी ही दिखाअी देती है, और अिसलिअे अिसके साथ लड़ना अेक तरहसे शायद कम मुश्किल होगा ।

"मेरी खोअी हुअी शक्ति लगभग लौट आअी है । तुमको और बढ़ते हुअे हमारे कुटुंबके सभी सदस्योंको प्यार ।

तुम्हारा मोहन"

अिसी प्रकारकी आत्मशुद्धि पर ज़ोर देनेवाले मीराबहनको लिखे हुअे पत्रका नीचेवाला भाग देखिये :

"तू तेरे साथियोंको अब 'अपराधी' कहती है । अपराधी शब्दको ही हमें अपने शब्दकोषसे निकाल देना चाहिये वर्ना हम सभी अपराधी हैं । 'तुममेंसे जो निष्पाप हो, वह पहला पत्थर फेंके,' यह कहने पर सारी भीड़मेंसे अुस पापी वेश्यापर पत्थर फेंकनेकी किसीकी हिम्मत नहीं हुअी । अेक बार अेक जेलरने मुझसे कहा था कि हम सब छिपे हुअे अपराधी हैं । वह वाक्य अुसने तो आधे मजाकमें कहा था, मगर अुसमें बहुत सत्य समाया हुआ है । अिसलिअे तेरे साथियोंको अच्छे साथी बनना चाहिये । मैं जानता हूँ कि यह करनेसे कहना आसान है । लेकिन गीता और वस्तुतः सब धर्म ठीक यही चीज़ करनेका हमें अुपदेश देते हैं ।"

अिसके सिवाय चार पाँववाले प्राणियोंके प्रति अुनका प्रेम भी अिस पत्रमें अुमड़ रहा है:

"क्या मैंने तुझे लिखा था कि अुपवासके दिनोंमें हमें दूसरे यार्डमें, जहाँ ज्यादा अेकान्त मिल सकता है, ले गये थे ? हमें अपनी बिल्ली बहनोंको छोड़कर जाना पड़ा था । अब हमें फिर पुराने यार्डमें ले आये हैं । अिसपर ये चार पाँववाले साथी खुश हैं । म्याँव-म्याँव करते हुअे ये हमारे चारों तरफ चक्कर काट रहे हैं ।"

विलायतकी अेक लड़कीने अुपवास छूटनेके बाद पत्र लिखा :

"सहानुभूति भेजनेकी मेरी हिम्मत नहीं होती । अपने देशभाअियोंकी मूर्खता और अंधेपनके लिअे मुझे शर्म और दुःख बतानेकी अिससे भी कम हिम्मत हो सकती है । . . . . बापू, मेरे हृदयमें जो कुछ बीत रही है, मैं चाहती हूँ, वह सब आपके सामने प्रकट कर सकूँ । मेरे बारेमें अेक बात तो आप जान ही लीजिये । वह अैसी नहीं जो कही जा सके । मगर कहनेकी मैं कोशिश करूँगी । हिन्दुस्तानके बारेमें मुझमें प्रेम और रस पैदा हुअे अिक्कीस महीने ही हुअे हैं । अुससे पहले मैं अेक बहुत बुरी आदतकी शिकार बन गअी थी । अुसके कारण मेरे शरीर और शायद मेरी बुद्धिके भी बरबाद होनेकी नौबत आ गअी थी । 'फ़ादर अिंडिया' और दूसरी पुस्तकोंके द्वारा आपको अपने ही विरुद्ध जो संग्राम करना पड़ा, अुसका मुझे पता चला । मैंने ब्रह्मचर्यके

बारेमें पढ़ा और आपके अुपदेशपर नम्रतापूर्वक अमल करनेका प्रयत्न किया। मैं अच्छी और स्वच्छ बनना चाहती थी। बापूजी, अब मैं स्वच्छ हूँ, शायद बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। मैं जवान हूँ और 'भीतर बैठे हुअे बन्दर और शेर' से मुझे अभी लड़ना है।"

अुसे सुन्दर पत्र:

"प्रिय डोरोथी,

"तुम्हारे प्रेमपत्रको मैं मूल्यवान समझता हूँ। तुम्हारे सवालके जवाबमें म्यूरियलने तुम्हें 'प्रार्थना करने'को कहा, सो सही है। हृदयकी सच्ची प्रार्थनासे हमें सच्चे कर्तव्यका पता चलता है। आखिरमें तो कर्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है। तुम्हारा यह सादा वाक्य कि 'अब मैं स्वच्छ हूँ' मुझे पसन्द आया। अीश्वर तुम्हें स्वच्छ रखे। पीछे मुड़कर भूतकालकी तरफ़ न देखो। अुससे जो पाठ मिलना था, तुम्हें मिल चुका। भविष्यकी तरफ आशा और विश्वासके साथ देखती रहो।"

अब यह अेक वैद्यको लिखा हुआ पत्र देखिये। अुसने गरम पानीके साथ शहद लेना कृश प्रकृतिके लिअे हानिकारक बतानेवाले श्लोक सुश्रुतसे देकर बापूसे प्रार्थना की थी कि आप शहद ठंढे पानीके साथ लीजिये। अिसे विस्तारपूर्वक लिखा (हिन्दीमें):

"अुष्णोदक मध न पीना चाहिये, अैसा वैद्य मित्रोंने तीन-चार वर्ष पूर्व मुझे लिखा था। पश्चिमकी अुपाधिवाले दाक्तर मित्रोंने अिस बारेमें कुछ विरोध नहीं किया है। अुनकी सम्मतिका मुझपर प्रभाव नहीं पड़ सकता है, क्योंकि खाद्यपदार्थोंके असरका अुन्होंने सूक्ष्म अभ्यास नहीं किया है। अुनके यहाँ पथ्यापथ्यका बहुत भेद नहीं है, परन्तु मैं निजी अनुभवकी बात लिखता हूँ। मुझको अुष्णोदकमें मध लेनेसे कुछ हानि नहीं हुअी, किन्तु लाभ हुआ है। अेक दाक्तरके कहनेसे मैंने मधका आरंभ किया। अुनके कहनेका कारण यह था, मेरे शरीरमें कार्बोहाअिड्रेट कम है अिसलिअे शर्कराकी आवश्यकता थी। सबसे अच्छी शर्करा अुनकी दृष्टिसे मधकी थी। तबसे मैं मध लेता आया हूँ। अुष्णोदकमें लेनेका अुन्होंने प्रतिबंध नहीं किया।

"हमारे वैद्योंके खिलाफ मेरी फरियाद यह है कि वे प्राचीन पुस्तकोंको संपूर्ण समझकर अुनमें जो लिखा है, वह अनुभवसे विरुद्ध हो, तो भी मानते रहते हैं। मेरा अभिप्राय है कि वैद्यकीय शास्त्र बहुत अपूर्ण है। अुसमें अनुभवसे सुधारणा करनी चाहिये। अुष्णोदकमें मध डालनेसे क्या विकृति होती है? मधका आपने पृथक्करण किया है? स्थूलता कृशता सापेक्ष गुणदर्शक शब्द हैं। किस

प्रकारके कृश लोगोंके लिअे अुष्ण मद्य अपेय है? और क्यों अपेय है? अन्तमें आप जो कहते हैं वह अनुभवसे सिद्ध किया है? अिस तरह वैद्य लोग नहीं करते हैं; परन्तु प्राचीन ग्रन्थोंमेंसे श्लोक बताकर संतुष्ट रहते हैं। आपसे मेरा विनय है आप अिस अनुचित स्थितिमेंसे निकल जायँ और जो कुछ प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है अुसकी अनुभवसे परीक्षा करें।"

ये दो पत्र अस्पृश्यता निवारणकी प्रवृत्तिके सम्बन्धमें:

"अस्पृश्यता निवारणमें सहभोजन और मिश्र विवाहका समावेश नहीं होता। मगर मेरे मतके अनुसार हिन्दू धर्म केवल जन्मके कारण किसीके साथ भी भोजन व्यवहार या कन्या व्यवहारकी मनाही नहीं करता। अिन सामाजिक सम्बन्धोंके नियमनके साथ धर्मके तत्त्वका कोअी वास्ता नहीं है।"

मद्रासमें हरिजनोंने 'हरिजन' शब्द पर आपत्ति की। शैव हरिजन कैसे कहलायें? हम तो हरजन हैं, हरिजन नहीं! शंकरने लिखा: 'अिन लोगोंको आदि हिन्दू कहें, तो अिन्हें अच्छा लगेगा। आप अिजाज़त दीजिये।' अुसे बापूने लिखा:

"हरिजन नाम पर आपत्ति होनेके लिअे मुझे अफ़सोस होता है। तुम्हारे मित्रोंको जो नाम पसन्द हो, वह अिस्तेमाल कर सकते हो। मगर अुन्हें यह ज़रूर समझाना कि मेरे मनमें विष्णु या शिवका ज़रा भी खयाल नहीं था। मेरे लिअे तो अिस नामका अर्थ 'भगवानके आदमी' ही होता है। विष्णु, शिव या ब्रह्मामें मैं कोअी भेद नहीं मानता। सभी अीश्वरके नाम हैं। मगर अिस मामलेमें अुनके निर्णयपर अमल करना चाहिये।"

अबुल कलाम आज़ादका तार आया कि हिन्दू तेरह मुद्दे मंजूर कर लें, तो संयुक्त निर्वाचनके आधार पर अेकता हो सकती है। आपके बाहर न होनेसे दिक्कत हो रही है। आप आशीर्वाद नहीं देंगे?

बापूने आशीर्वाद दिया कि "हम जिस अेकताके लिअे अुत्सुक हैं, अुसे आने दीजिये। रही शर्तोंकी बात, सो सच्ची स्थिति जाने बिना यहाँ बैठे मुझसे कुछ कहा नहीं जा सकता।"

वल्लभभाअी बोले: "यह बताता है कि स्थिति कठिन है। ये लोग तेरह तेरहकी बात पर चिपटे हों, तो चौदहवाँ भी क्यों न दे दिया जाय? तेरह कोअी हिन्दू नहीं देगा?"

बापू: "अिस तारसे मुझे अैसा नहीं लगता कि तेरहके बदले संयुक्त निर्वाचनका करार किया गया है।" शामको शौकतअलीका बयान आया। अुसमें भी यही था कि हमारे जो मुसलमान भाअी हमारे विरुद्ध थे, अुन्होंने भी अब तेरहों मुद्दे मंजूर कर लिये हैं, अित्यादि।

बापूसे मैंने पूछा : "अब वल्लभभाअीके डरको कुछ अधिक कारण मिलता है या नहीं ?"

बापू : "नहीं, मुझे तो पहलेसे ही शक है कि शौकतअली यह सब किसलिअे कर रहा है ? लेकिन अिस बयानसे मेरे शककी ज्यादा पुष्टि नहीं होती। अुलटे, राजेन्द्रबाबूका बयान यह बताता है कि सब मिलकर कुछ कर रहे हैं। मगर मेरी मुश्किल तो यह है कि सब कुछ हो जायगा, मगर सिक्ख ही मंजूर नहीं करेंगे। अिसलिअे यह सब सिक्खोंसे ही टूट जानेवाला है।"

कविका कार्ल हीथको भेजा हुआ अद्भुत वक्तव्य 'लिबर्टी'में छपा है। अिसमें पूरा परिवर्तन दिखाअी देता है। कोअी कांग्रेसी अिससे अच्छा बयान नहीं दे सकता। जेलमें कवि आये और अुपवासके दूसरे दिन जो मसौदा बापूने तैयार किया था, वह कविके लिअे कृत्रिम होता। यह बयान अुससे कहीं अधिक अच्छा है। बापूने कहा : "कोअी मानेगा नहीं कि यह कविका बयान है। मगर अब तो हम अुनकी वृत्ति जान गये हैं। अुनके साथके आदमी अच्छे प्रचारक मालूम नहीं होते, नहीं तो यह केवल 'लिबर्टी'में ही क्यों छपता ?"

मुहम्मद आलमकी स्त्रीका असाधारण वीरता बतानेवाला बयान प्रकाशित हुआ। बापू बोले : "अिसके पीछे मुहम्मद आलमका हाथ है। तो भी अिस पर दस्तखत करना भी असाधारण बात है। शायद ही कोअी स्त्री यह कहेगी कि मुझे छूटकर घर आनेवाले अपने अधमरे पतिका मुँह नहीं देखना है। अिससे तो अिज्ज़तके साथ जेलमें मरे हुअे पतिको देखकर मैं ज्यादा खुश होअूँगी। देखो तो, ...ने अेक बच्चा बीमार पड़ा है, अिस कारण पतिको छुड़वानेके लिअे अर्ज़ी दी है। अुधर अिस स्त्रीकी वीरता देखो।"

प्यारेलालने बम्बअीके रूअीके व्यापारियोंका झगड़ा निपटानेमें महत्वका भाग लिया। अुसका बयान सुन्दर था। अुसके प्रयत्नका अुल्लेख 'टाअिम्स'को भी करना पड़ा, यह अच्छी बात है। बापू बहुत खुश हुअे।

२१-१०-'३२

लाला दुनीचंदने लिखा था कि अब आप भविष्यमें अैसा क़दम अुठायें, तब देशको सारी बातें बताकर अुठाअियेगा। देशके अनुशासनमें आपको भी रहना चाहिये। अुन्हें लिखा :

"सही बात है। और सबकी तरह मैं भी अनुशासनके अधीन ही हूँ। मगर जब अीश्वर अपना अनुशासन लाद दे, तब मनुष्यके अनुशासनकी क्या चले ?"

अेक बहनने लिखा कि "मेरे पतिने अुपवासके लिअे दुःख प्रगट किया, अुसमें मैं शरीक नहीं थी। क्योंकि मुझे तो विश्वास था कि सब कुछ अच्छा ही होगा।" अुसे बापूने लिखा :

"तुम्हारे जैसी बहनोंने अन्तर्वृत्तिसे ही देख लिया कि अुपवास ठीक है और अुन्हें परिणामोंका डर नहीं लगा। अपनी श्रद्धाका असर पतिदेव पर भी डालो।"

अेक हाअीलैण्डका बढ़िया पत्र आया था, जिसमें अुन्होंने अुपवासको 'बलिदानका अद्भुत कार्य' बताकर लिखा था :

"अखबारोंसे तो मालूम होता है कि आपकी पद्धतिके, जिसे मैं अीसाअी परिभाषामें सूली पर चढ़नेकी पद्धति मानता हूँ, सफल होनेके आसार दिखाअी दे रहे हैं, जब कि युगोंसे दूसरी वृत्ति और पद्धतिसे किये गये प्रयत्न लगभग असफल साबित हुअे।"

अुन्हें बापूने लिखा :

"आपका पत्र अुपवासके दिनोंमें मिले हुअे क़ीमती तोहफ़ोंमेंसे अेक है। मुझे बहुत खुशी होती है कि जब कितने ही लोगोंने अुपवासका अनर्थ किया है, तब आप जैसे मित्रोंको अुसे समझनेमें कठिनाअी नहीं हुअी। परिणामसे हम कार्यका निर्णय करें, तब तो यही साबित होता है कि यह कार्य अीश्वरप्रेरित था।"

अुपवासके दिनोंमें दिये हुअे सब साधन अुपवास पूरा होते ही हटा लिये गये। अन्तमें हमें अेक बड़ी मेज़ दी गअी थी, वह भी अिस नये यार्डमें आनेपर ले गये और यहाँ लाअी हुअी अेक आराम कुर्सी भी ले गये। मेज़के लिअे वल्लभभाअीने माँग की, तो जेलरने कहा : "हमारे दफ़्तरमें ज़रूरत है।" कुर्सी ले गये यह वल्लभभाअीको और मुझे अच्छा नहीं लगा।

बापू कहने लगे : "यह कुर्सी अिन लोगोंको बेचनी होगी, अिसलिअे मँगा ली होगी।"

मैंने कहा : "मगर अिनमें अितनी सभ्यता भी नहीं कि आपसे पूछें कि अब अिसकी ज़रूरत न हो तो ले जायँ।"

बापू : "नहीं, यह कुर्सी अिससे पहले ही वापस भेज देनेकी सभ्यता हममें होनी चाहिये थी। अुसमें हम चूक गये। बा को अिनके कहनेके पहले ही हमने छुट्टी दे दी, सो शोभाकी बात हुअी। यहाँ अिस यार्डमें वापस आनेको अिन लोगोंके कहने के पहले ही हमने माँग की, यह भी शोभास्पद था। अिन्होंने कहा होता तो दुःख होता।"

वल्लभभाअी : "आपको तो सबके गुण ही दिखाअी देते हैं। जहाँ गुण न हों, वहाँ भी गुण दीखते हैं। ये लोग बिलकुल जड़की तरह हैं। बहुतसी चीज़ें हिसाबमें चढ़ाअीं, वैसे अिसे भी चढ़ा देते तो कौन पूछनेवाला था!

अिसे बेचनेकी जल्दी हो, तो आपके खातेमें डालकर बेची हुअी दिखा देते। मगर यह असभ्यता ही दिखानी हो तब क्या?"

बापू: "नहीं, असभ्यता दिखानेका हेतु तो हरगिज़ नहीं। सुपरिण्टेण्डेण्टको पता भी न होगा कि ये ले गये।"

वल्लभभाअी: "अुसे सब पता होगा। अुसे पूछे बिना कौन ले जा सकता है?"

बापू: "नहीं वल्लभभाअी, अिसमें दुःख माननेका कोअी कारण नहीं। तुमने छठा अध्याय सीखा या नहीं? — 'मन अेव मनुष्याणां कारणं बंध-मोक्षयोः।' और आत्मा ही आत्माका बन्धु है।"

वल्लभभाअी: "है तो। मगर आत्मा आत्माका शत्रु भी तो है न?"

बापू: (खिलखिलाकर हँसते हुअे) "अरे, तुमको तो मालूम है। तुम अितना मानते हो सो काफ़ी है। मगर यह श्लोक मालूम कैसे हुआ? छठा अध्याय तो तुमने अभी सीखा ही नहीं।"

मैं: "कल ही शुरू किया है और यह श्लोक आखिरी ही सीखा है।"

बापूके अेक-अेक शब्द और अेक-अेक अक्षरको सब आँखें मल मलकर पढ़ते हैं, अुसका विश्लेषण करते हैं और समझना चाहते हैं।

२२-१०-'३२ अिसका अुदाहरण:

करीमनगरकी मिस मेरी बार पूछती हैं: "आप अपनी अपीलमें दक्षिण भारतके हिन्दुओंको लिखते हैं कि 'और फिर अिन मूर्तियोंमें ओश्वरका सच्चा अधिष्ठान होगा।' और फिर भी आप मूर्तिपूजाको तो मानते नहीं। तब यह वाक्य क्यों लिखा है?"

अुसे बापूने लिखा:

"यह सच है कि आम तौर पर जो समझा जाता है, अुस अर्थमें मैं मूर्तिपूजाको नहीं मानता। मगर यह भी नहीं कि दूसरे मूर्तिके द्वारा ओश्वरकी पूजा करें अुसे भी मैं नहीं मानता। अेक अर्थमें तो हम सब मूर्तिपूजक हैं। हम अपनी मूर्तिके ओश्वरको पूजते हैं। यह मूर्ति स्थूल रूपकी ही होनी चाहिये, सो बात नहीं। ओश्वरके गुण और ओश्वरकी कल्पना हरअेक मनुष्यकी अलग-अलग होती है। अितने पर भी वास्तवमें ओश्वर निर्गुण है और कल्पनातीत है। अिस प्रकार जब हम अपना ओश्वर सम्बन्धी चित्र बनाते हैं, तब हम मूर्तिपूजक बन जाते हैं। अिसलिअे जो पत्थर या धातुकी मूर्तिमें ओश्वरका निवास मानते हैं, मेरा मन अुनकी निन्दा नहीं करता। वे गलत नहीं हैं, क्योंकि ओश्वर सब जगह और सब चीज़ोंमें है। किसी चीज़को हम ओश्वरके

रूपमें पूजना चाहते हैं, तो अुसमें अीश्वरका अधिष्ठान करते हैं। मगर जब मनुष्य सामुदायिक पूजामें भाग लेनेसे अपने साथियोंको रोकता है, तब हमें यह कहनेका हक़ है कि अुस पूजामेंसे अीश्वर भाग जाता है। फिर जब पश्चात्ताप किया जाता है और अपने साथियों परसे प्रतिबन्ध हटा लिया जाता है, तब वहाँ अीश्वरकी प्रतिष्ठा होती है। आशा है यह स्पष्टीकरण समझमें आने जैसा है। आप अुसे न मानें, यह दूसरी बात है। मेरी रायसे अिसमें गंभीर सत्य समाया हुआ है। यह सत्य दिखाअी न दे, तो मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ अुसे साफ़ तौरपर कह सकनेकी मेरी अशक्तिका दोष है। अपनी स्थिति मैंने साफ़ तौरपर न रखी हो, तो आप मेरा पिंड न छोड़ना।"

अुर्मिलादेवीको:

"गीताके सतत अध्ययनसे तुम्हें तमाम चिन्ताओंसे मुक्त रहना सीखना चाहिये। जब हम सबकी फ़िक्र करनेवाला अीश्वर बैठा है, तब हम यह बोझ नाहक क्यों ढोयें? हम तो अपने हिस्सेमें आया हुआ काम कर दें और निश्चिन्त रहें।

"अिसलिअे मैं कहता हूँ कि तुम निवृत्तिका विचार ही न करो। सच्ची निवृत्ति शरीरसे नहीं होती, वह तो भीतरसे पैदा होती है। सतत प्रवृत्तिके बीच हमें निवृत्ति ढूँढ़नी है। गुफामें रहनेवाले लोगोंके मन भी अकसर सतत प्रवृत्तिमें नहीं होते?

"हम सदा अपनी मुश्किलोंका रोना न रोते रहें। जो लोग सेवाकार्यमें लगे हुअे हैं, अुनके सामने हमेशा नहीं पर अकसर कठिनाअियाँ होती ही हैं।"

ख्वाजाने लिखा कि "आपने अछूतपनके विरुद्ध अैसा सत्याग्रह किया, तो क्या आतंकवादियोंके खिलाफ़ कुछ नहीं करेंगे? अुसकी विलायतमें भी क़द्र होगी और सहयोगका रास्ता भी खुलेगा।"

अुन्हें बापूने अेक वाक्यमें ही जवाब दिया:

"आतंकवाद ज़रूर मेरे अन्तरको हिला देता है। अस्पृश्यताके मामलेमें जैसे अीश्वरने रास्ता दिखाया, वैसे ही अिस मामलेमें भी दिखा दे, तो मैं ज़रूर कुछ करूँ।"

आज सुबह सुपरिण्टेण्डेण्ट अपने अनुभव सुना रहे थे। अुन्होंने कहा कि डोअिल शायद ही किसीके सिफ़ारिश किये हुअे भोजनको नामंजूर करते हैं। मैंने अपनी गवाही दी और अुन्होंने डोअिलका अेक वाक्य सुनाया: "जेलकी खुराक अिस तरह सोची हुअी नहीं है कि वह राजनैतिक क़ैदियोंके नाज़ुक पेटके लिअे अनुकूल हो सके।"

वल्लभभाअी बोले: "वह तो मारवाड़ी है। क़ैदियोंके जलानेकी लकड़ियोंमें कुछ कमी कर दे अैसा है।"

फिर पहलेके सुपरिण्टेण्डेण्टों और आअी० जी० पी० लोगोंकी बात चली।

भंडारी बोले: "कर्नल मरेको सच्ची किफ़ायत करना आता था।"

बापू: "हाँ, अुसने तो सही वक्त पर सही निर्णय करके मेरी जान बचा ली। जेलके प्रबंधकी बारीकसे बारीक बातें वह जानता था और अपने काममें होशियार था। अेक-अेक क़ैदीको पहचानता था। अिसलिअे जहाँ सब अुससे डरते थे, वहाँ अुसके प्रति आदर भी रखते थे। वह जहाँ-जहाँ गया, वहाँ-वहाँ अुसने अपने बारेमें बहुत अच्छी राय प्राप्त की है।"

सुपरिण्टेण्डेण्टने अपने अनुभव बताये: "मैंने अुसके हाथके नीचे काम किया है और अुसके कड़े अनुशासनसे मुझे बड़ा लाभ हुआ है। अपने कार्यकालके शुरूमें बल चढ़े सूतकी गाँठके मैं पचास रुपये ज्यादा देता था। अिसके लिअे अुसने मेरी धूल झाड़ी थी। तबसे मैं सावधान रहना सीख गया हूँ। वह अकसर सख्त पत्र लिखता था। फिर भी अुसके प्रति हमेशा मेरा आदर-भाव रहा है।"

फिर दूसरे सुपरिण्टेण्डेण्ट डीलकी बात चली। वह जहाँ-जहाँ गया, वहीं बदनाम हुआ। वह राजनीति, अर्थशास्त्र और अपराधशास्त्र सबका विद्वान होनेका दावा करता था। जोन्सका मिज़ाज बहुत खराब था। हाँ, अुसका हृदय प्रेमपूर्ण था। मेल बहुत चालाक आदमीके रूपमें मशहूर हुआ था। अुसके मुँहसे शब्द तो मानो बाहर ही नहीं निकलता था और वह क्या कहता, यह हम बड़ी मुश्किलसे सुन सकते थे।

सब बातें ब्रेल्वी पर से निकलीं। अुन्हें किसी बातसे अपमान लगा। अिसके बारेमें सुपरिण्टेण्डेण्टसे बात करनेकी हिम्मत ही नहीं हुअी और चिढ़कर अुन्होंने खास खुराक लेनेसे अिनकार कर दिया। अपने खर्चसे मिले तो लेना मंजूर किया। बापू बीचमें पड़े और सब कुछ ठीक कर दिया। सुपरिण्टेण्डेण्टने शिकायत की कि "वे कोअी भी काम करनेसे अिनकार करते हैं, सिर्फ़ कहते हैं कि कातनेका काम दें तो ले सकता हूँ। मैंने कहा: यह नहीं मिलेगा, मगर सीनेका काम करो।"

आज सुबह बापू बोले: "तुम अकेले फल साफ़ करनेमें ४५ मिनट लगाओ, यह नहीं चलेगा। यहाँ लाओ और हम तीनों साफ़ करें, तो १५ मिनटमें काम हो जायगा।"

मैंने कहा: "मेरे अितने मिनट जाते हैं, मगर आप अुतने समय और काम कर सकेंगे।"

बापू: "नहीं, कामका अैसा भूत कैसे बनाया जा सकता है? यों तो अगर खाना-पीना बंद कर दूँ, पाखाने जाना बन्द कर दूँ और घूमना बन्द कर

दूँ, तो काम करनेको बहुतसे घण्टे मिल जायँ। वालजीको मैं अुलाहना देता हूँ, मगर मैं अुससे क्या अच्छा हूँ ?"

मैं : "तब आप यह क्यों कहते हैं कि मेरा वक्त खराब होता है ? मैं भी सारा दिन लिखने-पढ़नेमें लगाअूँ, अिससे तो यह अच्छा नहीं कि अितना काम करूँ ?"

वल्लभभाअी बीचमें पड़कर बोले : "तुम अिनसे जवाबमें नहीं जीतोगे। ये तो हाजिरजवाब हैं। किसी बातमें ये हमारी मानते हैं ?"

बापू : "वल्लभभाअी, अनुभव तो यह है कि आप मुझसे अधिक हाजिर-जवाब हैं।"

वल्लभभाअी : "तो क्या हुआ ! मगर यहाँ जहाँ बैठना वहीं खाना, वहीं फल तैयार करना। अिससे यहाँ मक्खियाँ हो जायँगी और पानी फैलेगा।"

बापू : "मीराबहनकी अेक ही कोठरीमें रसोड़ा, सोने, पढ़ने, अुठने और बैठनेका सभी है न ?"

वल्लभभाअी : "यों तो अेक ही कोठरीमें जिनका सारा घर होता है, अुनका भी यही हाल होता है न ? मगर यहाँ जब जगह है, तो क्यों न अुसका अुपयोग किया जाय ?"

बापू : "गरीब आदमियोंकी कुछ तो नक़ल करें। अफ्रीकामें सादा जीवन बितानेके प्रयोगके बाद रसोअी, बैठना, मुँह धोनेकी कूँडी, बरतन मलना और सोना सब कुछ अेक ही कोठरीमें होता था, फिर भी सफ़ाअीके बारेमें कोअी शिकायत ही नहीं कर सकता था।"

आज दोपहरको सिक्ख भाअी प्रतापसिंहको सर्कलमेंसे बुलवाया गया। अूँचे-पूरे सिक्खको देखकर बापू बड़े खुश हुअे। वे २९ तारीख को छूटनेवाले हैं। बापूसे बोले : "कोअी सन्देश दीजिये।"

बापूने कहा : "सन्देश मुझसे दिया ही नहीं जा सकता।"

सिक्ख भाअी बोले : "मेरे अपने सन्तोषके लिअे दीजिये।"

बापू : "हाँ, अेक सन्देश दे सकता हूँ, क्योंकि वह मुझे सार्वजनिक रूपसे देनेमें कोअी संकोच नहीं होगा। वह यह कि कांग्रेसका काम करनेवाले छिपकर काम करना बन्द कर दें। हमारा धर्म तो गिरफ्तार हो जाना है, फिर छिपे-छिपे किसलिअे फिरें ? अिससे जनतामें डरके सिवाय और कुछ पैदा नहीं हुआ।"

सिक्ख भाअी कहने लगे : "तब तो जितने काम करने वाले हैं, सब जेलमें चले जायँगे और कोअी बाहर रहेगा ही नहीं।"

बापू : "यह तो अच्छा है। जब अीश्वर पर ही सब कुछ छोड़ दिया है, तब अिन्सानकी तदबीर कहाँ तक काम देगी ? हमारे पास काम करनेवाले न हों, तो भले ही सब जान लें कि अब कोअी नहीं रहा। मगर सारा समाज अिस

तरह डरपोक बन जाय, यह असह्य है। मैं तो सरकारके ज़रिये भी यह बात ज़ाहिर कर सकता हूँ। मगर नहीं करता हूँ, अिसका कारण यह है कि सरकार अिसका दुरुपयोग और अनर्थ कर सकती है।"

आजकी जानेवाली डाकमें अेक ही अुल्लेखनीय पत्र था, मि० डेविडका।

२३-१०-'३२

डेविडसे बापूने थोड़े दिन पहले पूछा था कि आपने मुझे बहुत दिन पहले निर्दोष शहद भेजा था, वैसा शहद कहाँ बनता है? और वह कैसे फूलोंसे बनता है? अिसका अुन्होंने तीन फुलस्केप कागज़ भरकर जवाब भेजा। अिसमें निर्दोष शहद बनानेके मि० बेल्ड्रीके प्रयोगके बारेमें और वे कैसे असफल हुअे, अिस बारेमें लिखा था। जंगली शहदमें कितनी मक्खियाँ नाहक मरती हैं, अुसमें कितना मैल और कचरा आता है और अिस तरह वह कितना अशुद्ध — सफ़ाअी और अहिंसा दोनोंकी दृष्टिसे — है, यह भी बताया था।

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, मेरी तरह आप भी नियमित रूपसे शहद अिस्तेमाल करते हैं। मैं यह मानता हूँ कि खुराकके तौरपर और दवाके तौरपर शहदसे पूरी तरह लाभ अुठाना हो, तो वह बिलकुल शुद्ध होना चाहिये। मुझे लगता है कि आपको तो यह जानकर ही अिसे अिस्तेमाल करनेमें बड़ा आनन्द आयेगा कि यह अहिंसक ढंगसे अिकट्ठा किया हुआ है।"

अितना लिखकर फ़िलस्तीनका, अमेरिकाका (छत्तेवाला और बिना छत्तेका), न्यूज़ीलैण्डका और फ्रांसका शहद नमूनेके तौरपर भेजा। और फिर लिखा:

"मि० बेल्ड्री हिन्दुस्तानमें रहे, तब अुन्होंने निश्चित रूपसे यह साबित कर दिया था कि हिन्दुस्तानका शहद बाहरसे आनेवाले शहदसे गुणोंमें घटिया नहीं है। . . . मैं अिस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि यरवदासे छूटनेके बाद आप शुद्ध हिन्दुस्तानी शहद काममें लेनेका आग्रह रखेंगे और अुसके सिवाय और कोअी शहद हरगिज़ नहीं लेंगे। हिन्दुस्तानमें आजकलके ढंगकी खेतीकी स्थापना करनेका यह जल्दीसे जल्दीका रास्ता होगा।"

बापूको यह पत्र बहुत पसन्द आया। अंग्रेज़ोंमें अिस प्रकारके जो अुपयोगी शौक़ होते हैं, अुनकी यह दूसरी मिसाल है। विलायतमें 'स्टार'का सम्वाददाता अिसी तरह खुद तैयार किया हुआ शहद लाया था।

बापूने डेविडको अिस प्रकार जवाब दिया:

"आपके लम्बे पत्रके लिअे बहुत धन्यवाद। आपने मुझे लगभग अपने विचारका बना लिया है। जंगली शहद लेनेमें होनेवाले पापका (मेरी दृष्टिसे) मुझे पता था। मगर मूर्खता और आलस्यसे मैं लेता रहा। जंगली शहद किस

तरह अिकट्ठा किया जाता है, अिसका आपने जो हूबहू वर्णन किया है, अुस परसे मैं जंगली शहद छोड़नेको लगभग तैयार हो गया हूँ। अिसलिअे आप देखेंगे कि जब मैं यरवदासे बाहर निकलूँगा (अगर निकला तो), तब मैं तुरन्त वही करूँगा जो आप चाहते हैं। हिन्दुस्तानमें ज़रूर अैसी जगहें होनी चाहियें, जहाँ निर्दोष शहद मिल सके। बाज़ारमें हिमालयका जो शहद आता है, अुसके बारेमें सच बात क्या है? आपने मुझे अलग अलग प्रकारका शहद भेजा, अिसके लिअे धन्यवाद। अभी हमें पारसल मिली नहीं है। मिलेगी तब हम बहुत स्वादके साथ और पाप करनेके खयालके बिना अुसे खायेंगे। आप शहद बेचते हैं, या ये नमूने खास तौरपर खरीदकर भेजे हैं? हम सबका नमस्कार।

आपका

मो० क० गांधी

"पुनश्च : जंगली छत्तेमेंसे मधुमक्खीको या छत्तेको कुछ भी नुकसान पहुँचाये बिना शास्त्रीय ढंगसे शहद निकालना संभव है क्या? अगर न हो, तो क्या यही माना जाय कि जब तक मनुष्य मधुमक्खीका या छत्तेका नाश करनेको तैयार न हो, तब तक हम जंगली छत्तेका शहद प्राप्त ही नहीं कर सकते?"

२४-१०-'३२ आश्रमकी डाक। विनोबाने बारीक सूतपर आपत्ति की थी। साधारण सूतको वाल्मीकिकी और बारीकको बाणकी कादम्बरीकी अुपमा दी थी। गाँवोंमें अनियमितता, गायका दूध मिलने की अशक्यता और शाकके अभाव वगैराकी मुश्किलोंकी बात की थी। अुन्हें जवाब :

"बाणभट्ट और वाल्मीकिकी तुलना ठीक नहीं। बालकाण्ड और किष्किन्धा-काण्डकी की जा सकती है। शायद अुससे भी अधिक तुलना किष्किन्धा और अुत्तरकाण्डकी हो सकती है। २०० अंकका और अुससे भी अूपरका बारीक सूत अुत्तरकाण्ड है। अुसके बिना किष्किन्धाका अुपयोग नहीं हो सकता। पूर्वजोंने गरीबोंसे बेगार कराकर ढाकेकी शबनम तैयार कराअी और विलासियोंके विलासका पोषण किया। हम अुसका प्रायश्चित्त करके यज्ञके रूपमें बारीकसे बारीक सूत कातें और भगवानको अर्पण करें। कला दोनोंकी सामान्य है। वह स्वार्थपोषक थी, यह परमार्थपोषक हो। खादीको व्यापक बनानेके लिअे पहलेकी शक्तिका पुनरुद्धार ज़रूरी है। जो अुस समय गुलामीकी हालतमें हो सकता था, वह हमें स्वतंत्रताके युगमें करके दिखा देना चाहिये। विषयी जो वेश्याके लिअे करे, अुतना ही भक्त भगवानके लिअे क्यों न करे? अिसमें आपत्ति नहीं, खर्च नहीं। क्योंकि धीरे-धीरे हमें आत्मार्पण करके बारीक कातना है। खादीको

सादी, अच्छी और सस्ती बनानेकी युक्तियाँ भी बारीक कातनेसे जल्दी मालूम हो सकती हैं। यह मैंने अनुभव किया है। 'यावान् अर्थ अुदपाने' यहाँ लागू होता है।

"अूपरकी विचारधारा तुम्हें अच्छी लगे, तो यह समझानेकी बात ही नहीं रह जाती कि याज्ञिकके लिअे मैं बीसका अंक क्यों कम-से-कम मानता हूँ। मगर यह कोअी वेदवाक्य नहीं, अिसे सिद्धान्तके रूपमें नहीं रखा गया है। अिसमें याज्ञिकके भावकी परीक्षा है। अेक संस्थाको अैसा कुछ न कुछ करना ही चाहिये। चाहे जैसा धागा निकालना यज्ञमें शामिल नहीं हो सकता, कुछ न कुछ नियम होना ही चाहिये, कुछ प्रमाण होना चाहिये। अगर अैसा होना चाहिये, तो बीसका अंक कभी ज्यादा नहीं माना जा सकता। याज्ञिक बेगार नहीं टालेगा। याज्ञिक अपने यज्ञमें भाव भरेगा, कला पूरेगा, रंग भरेगा और तद्रूप हो जायगा। यज्ञका द्रव्य शुद्धतम होना चाहिये न?

"अब भी न समझा सका होअूँ, तो फिर पूछना। मुझे अपनी रायके बारेमें शंका नहीं है। मगर जबतक तुम्हें न समझा सकूँगा, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।

"गाँवोंका काम बहुत कठिन है। प्याजके बारेमें स्मृति क्या कहती है, अिसकी चिन्ता नहीं। हमारा अनुभव कहे सो सच। प्याज औषधिके रूपमें लेना ठीक है। मैंने तो अुसका प्रयोग बहुत किया है। अुसकी बदबू मुझे भी अरुचिकर है। मैं अुसका अुपयोग नहीं करता, परन्तु आवश्यक जान पड़े, तो ज़रूर करूँ। आखिरी भोजनके समय अुसका अुपयोग करनेसे किसीके प्रसंगमें कम ही आना पड़ता है। दवाकी मात्राके तौरपर लेनेसे अुसकी बदबू कम होनेकी संभावना है। गायका दूध कहीं भी न मिले, यह तो हमारा दिवाला ही है न! साथमें गायके दूधका मावा रखें, तो घी और प्रोटीन दोनों मिल जायँ; और अुसका चूरा करके गरम पानीमें मिला दें, तो लगभग दूधका गुण आ जाय। अिसमें मैंने गुड़-शकर नहीं बताया, क्योंकि अुसकी ज़रूरत नहीं रहती और अुसे लिया जाय तो शायद अस्वाद व्रतका भंग हो जाय। अिसलिअे रोटी, मावा, प्याज़ और अिमली या नीबू — अितनी चीज़ोंसे गुज़र हो सकता है। सेवक लोग रातको देरसे न खाया करें। गाँववालोंसे सिर्फ़ रोटी और प्याज़की भिक्षा स्वीकार करें या खुद बनाकर खायें। हर जगह संभव हो तो पानी अुबाल लें और वही पीयें। अिसमें किसीपर भार बननेकी बात ही नहीं। किसीको कष्ट न होगा। हमारे लिअे कुछ भी नया करनेकी बात न रहेगी। खुलेमें सोया जाय। साँप वग़ैरासे बचनेके लिअे खाट मिले, तो ले ली जाय। यह सब अनुभवके बिना ही बकता जा रहा हूं। मैं यह जानता हूँ कि देहातमें जानेपर जो सहूलियतें मुझे मिली हैं, वे औरोंको नहीं मिलतीं।

अिसमेंसे जो शक्य और स्तुत्य हो, वह किया जाय और बाकीको फेंक दिया जाय। यह तो अिसलिअे लिख दिया है कि तुम्हें अधिक विचार करनेमें प्रोत्साहन मिले। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि ग्राम-प्रवेश बहुत ही कठिन है। अितने पर भी हमें यह करना ही होगा। अिसलिअे तुम्हारा आरम्भ मुझे बहुत पसन्द आया है। हरअेक सेवकको साधारण वैद्यकका ज्ञान होना ही चाहिये। वह आसान है।"

पूंजाभाअीके मरनेके समाचार शनिवार रातको मिले। अिनके जैसा 'मत्-कर्मकृत्', 'मत्परायण', 'मद्याजी' और 'मां नमस्कार करनेवाला' बापू-भक्त दूसरा नहीं देखा। अिनके आखिरी वर्ष बापूके स्मरण और ध्यानमें बीते। साधुताके सिवाय अुनमें और कुछ दिखा ही नहीं। बापूने अुनके बारेमें मर्यादा छोड़कर प्रेमोद्‌गार निकाले हैं — 'चिरंजीवी पूंजाभाअी' नामकी श्रद्धांजलिमें।

आज आश्रमको तार दिया:

"सत्याग्रह आश्रम, साबरमती। पूंजाभाअीकी चिरनिद्रासे हमें आनंद होना चाहिये। अन्तिम क्षणोंका पूरा हाल लिखो। आशा है स्मशानमें आश्रमका संपूर्ण प्रतिनिधित्व होगा।"

२५-१०-'३२

कल सबेरे मेजर भंडारी आकर अस्पृश्यताके बारेमें, मुलाकातोंके बारेमें और पत्रोंकी स्वतंत्रताके बारेमें होनेवाले पत्रव्यवहारका जवाब सुना गये। बापूने दोपहरमें ही जवाब लिखा। शामको नक़ल हुअी और मेज़रके पास गया। मेज़रने नकल देनेसे अिनकार किया था, अिसलिअे अिस बारेमें शुरूमें सख्त विरोध दिखाकर अुसे अपमानजनक बताया था। रातको ११ बजे कटेली आये और मुझे जगाकर कहने लगे कि मेज़र चाहते हैं कि पहला पैरा निकाल दिया जाय। वे नक़ल देनेको तैयार हैं। बापू और वल्लभभाअी भी जाग अुठे। अिसका भेद समझमें नहीं आया। हमने यह मान लिया था कि पत्र पर 'खानगी' लिखा है, अिसलिअे नहीं दिया होगा। मगर अंतमें मेज़रने देनेका निश्चय कैसे किया, यह समझमें नहीं आया। सुबह अुठकर प्रार्थनाके बाद बापूने फेरबदल किया और मैंने नक़ल की। ६ बजे यह पत्र चला गया। "अस्पृश्यताके बारेमें जिससे मिलना चाहूँ अुससे न मिलने दें और लिखे हुअे पत्रमेंसे चाहूँ वह न छापने दें, तो मैं सरकारके साथ अपना सहयोग छोड़ दूंगा और शरीर चलेगा तब तक 'सी' क्लासका भोजन लूँगा।" मीआद पहली नवम्बरकी दी है! अिस प्रकार हमारी तो 'नित्यं प्रच्युति शंकया क्षणमपि स्वर्गे न मोदामहे' की स्थिति है। सन् '३० में भी अैसा ही नोटिस देना पड़ा था। अुस वक्त दूसरे

कैदियोंसे मिलने और अुनका कुशल जाननेका मानव-अधिकार अेक समाज-सुधारकके तौर पर अुन्होंने माँगा था और न मिलनेपर अूपर लिखे अनुसार त्याग करनेका नोटिस दिया था। पहले तो मार्टिन चिढ़ गया। बापूने कहा: "आप क्रोधमें बात करते हैं, मैं आपके साथ बात नहीं करूँगा।" बादमें वह ठंडा होकर आया। पत्र फाड़ देनेकी प्रार्थना की। बापूने कहा: "आपकी सम्पत्ति है; मुझसे तो फाड़ा नहीं जायगा। और मेरे हाथसे यह निकल गया, अिसलिअे मेरे लिअे तो यह प्रतिज्ञावाक्य है। वह बदल नहीं सकता।" असहयोग करूँगाका अर्थ यह बताया था कि "विशेष भोजन छोड़ दूँगा, खाट-गद्दा छोड़ दूँगा, कागज़-पत्र और पुस्तकें छोड़ दूँगा — सब कुछ छोड़ता चला जाअूँगा — जैसे-जैसे आप ज्यादा कष्ट देते जायेंगे, वैसे-वैसे मैं अुससे भी अधिक कष्ट अुठाकर अुस दुःखको सुख मानता चला जाअूँगा।" हमने 'सी' क्लासकी खुराक लेनेकी बात कही, तो बोले: "यह तो सहानुभूतिकी हड़ताल हुअी। यह नहीं हो सकता। और अैसा होगा तो मेरा काम शोभेगा नहीं। हाँ, तुम्हारा समय तभी आयेगा, जब ये लोग लड़ाअी शुरू कर दें, मुझे कष्ट देना शुरू कर दें, मुझे 'सी' में डाल दें, अलग कोठरीमें बंद कर दें, डंडाबेड़ी पहना दें, वगैरा। मैं मानता हूँ कि अैसा नहीं करेंगे, मगर करें तो तुम्हें अकेले ही नहीं, बल्कि तमाम जेलोंमें जहाँ-जहाँ यह खबर पहुँचाअी जा सके, वहाँ अैसा ही करना चाहिये।"

आज सर पुरुषोत्तमदासका बयान आया। अुसे सुनकर बापू कहने लगे: "यह ठीक है। यह आदमी यहींसे कहकर जाता है कि लगभग विरोध प्रदर्शित करने ही जा रहा हूँ। अुसे अैसा कहने और करनेका अधिकार है। अुसने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यापारी मंडलको गोलमेज़ परिषद्‌में प्रतिनिधित्व नहीं मिला। मुझे लगता है कि बिड़लाने भी अुसे सम्मति दी होगी।"

डॉक्टर बेहराम खम्भाताने डॉ० दीनशा मेहताकी राय अुद्धृत की कि गांधीजी जिस संयमसे रहते हैं, अुसे देखते हुअे अुनके शरीरमें रोग होना ही नहीं चाहिये और न हड्डियोंमें दर्द होना चाहिये। अिसका अुल्लेख करते हुअे बापूने लिखा:

"जैसा ये मानते हैं वैसा ही मैं भी मानता हूँ कि मैं कितना ही संयम रखता हूँ, तो भी मुझमें कहीं न कहीं रोग भरा है और वह हाथके दर्दके ज़रिये या दूसरी तरह बाहर निकल रहा है। अँतड़ियाँ तो कमज़ोर हैं ही। मैं जन्मसे संयमी भी नहीं माना जा सकता। बहुत वर्षों तक स्वच्छंद जीवन भी बिताया है और ज्ञानपूर्वक संयम शुरू किया, अुसमें भी कितना असंयम मिल गया होगा, अिसका हिसाब कौन लगाये?"

शीतला सहायको लिखा (हिन्दीमें):

"हमें लड़के-लड़कियोंकी ओर शंकित नज़रसे नहीं देखना चाहिये। जानबूझकर अुन लोगोंको लालचमें न डालें। यहाँ कोअी अैसी चीज़ नहीं है। . . . . सावधान है। अब वह छोटा लड़का नहीं। अुसकी अुमर क़रीब ३२ सालकी है। . . . भी समझदार लड़की है। और . . . में अेक अच्छी आदत है। मेरेसे वह कुछ छिपाता नहीं है। विकारवश हो जाय, तो वह मुझे कह देता है। अिसलिअे मैं अिन दोनोंके संबंधके बारेमें बिलकुल निश्चिन्त हूँ। रोमन कैथोलिक नियमोंसे मैं थोड़ा बहुत परिचित हूँ। हमारा प्रयोग अनोखा है, अुसमें काफ़ी भय है। हिन्दुस्तानके वायुमंडलसे वह प्रतिकूल भी है। लेकिन स्त्री जातिकी जो सेवा हम करना चाहते हैं, अुनके लिअे जो स्वतंत्रता अिष्ट है, वह खतरा अुठानेके सिवा कभी हासिल नहीं हो सकती। सावधानीसे अीश्वरपर विश्वास रखकर हम निडरतासे आगे बढ़ते हैं। और अिसी कारण आश्रमके मंत्रीकी पसंदगीमें हमें बहुत सावधान रहना पड़ता है। जहाँ तक मुझे ज्ञान है, नारणदाससे बढ़कर पवित्र, धैर्यवान, संयमी और व्यवस्थित-चित्त व्यक्ति हमें नहीं मिल सकता। अुनके होनेसे मैं बिलकुल निर्भय रहता हूँ। तथापि तुम्हारे दिलमें यदि कुछ शंका हो, कोअी बात तुम्हारे कानों पर आअी हो, तो मुझे लिखो।"

आजके पत्र: वसंतलाल मुरारकाको (हिन्दीमें):

२६-१०-'३२

"प्रार्थनामें मनकी स्थिरता अभ्याससे ही आ सकती है। प्रार्थना करनेके समय अैसा चिंतवन करना कि जैसे शरीरके लिअे अन्न आवश्यक है, अुससे भी अधिक प्रार्थना आत्माके लिअे आवश्यक है। अैसा चिंतवन करके प्रार्थनामें बैठनेसे थोड़े ही दिनोंमें आनंद आ जायगा। रामनामका विस्मरण ही सबसे बड़ा दुःख है, अैसा विश्वास रखनेसे नामस्मरण स्थायी हो जायगा। असत्य सबसे बड़ा पातक है, अैसा विश्वास रखनेसे और असत्यसे कुछ क्षणिक लाभ मिल जाय तो अुसका त्याग करनेसे सत्य सहज प्रिय हो जायगा।"

रामनाथ सुमनको (हिन्दीमें):

"सामुदायिक प्रार्थनाकी जड़ वैयक्तिक प्रार्थना ही हो सकती है। सामुदायिक प्रार्थनापर मैंने वजन दिया है, अुसका यह अर्थ कभी नहीं है कि वह वैयक्तिक प्रार्थनासे अधिक महत्व रखती है। परन्तु क्योंकि हमें सामुदायिक प्रार्थनाकी आदत ही नहीं है, अिसलिअे मैंने अुस प्रार्थनाकी आवश्यकता बतानेकी चेष्टा की है। जो कुछ अनुभव अेकांतमें बैठकर तुम्हें होता है, वह समूहमें होना अशक्य नहीं, तो कठिन तो है ही; और मैंने अैसा भी देखा है कि कअी लोग

अेकान्तमें बैठकर प्रार्थना कर ही नहीं सकते, समुदायमें ही कर सकते हैं। अुनके लिअे वैयक्तिक प्रार्थना आवश्यक हो जाती है। मैं यह भी क़बूल करूँगा कि सामुदायिक प्रार्थनाके बिना मनुष्य रह सकता है, वैयक्तिकके बिना कभी नहीं रह सकता।

"अस्पृश्यताके बारेमें आज कुछ भी नहीं लिख सकता। थोड़े दिनोंके बाद दुबारा पूछिये।"

कृष्णदासको लिखे सादे पत्रमें प्रारब्ध, पुरुषार्थ और सुख-दुःखमें समताके बारेमें बापूकी वृत्ति अच्छी तरह समझनेको मिलती है:

"मनुष्यके नाते बोलें, तो यों कहा जा सकता है कि तुम्हारी बदकिस्मती तुम्हें सिनहरगाँव ले गयी। तुम वहाँ तन्दुरुस्ती सुधारने गये थे और अिन्फ्लुअेंजाके शिकार हो गये। मगर तुम्हें बिलकुल शय्यावश कर देनेवाली यह बीमारी तुम्हारे भलेके लिअे नहीं होगी, अिसे कौन जानता है? सत्य क्या है अिस बारेमें हमारा अज्ञान अितना निराशाजनक होता है कि मेरे खयालसे हम किसी भी हालतमें आ पड़ें, तो भी गीता हमें चित्तकी समता कायम रखना सिखाती है। अिसलिअे अेक तरफ़, हमें चित्तकी समता बनाये रखना सीखना चाहिये और दूसरी तरफ़, जब बीमार पड़ें, तब अच्छे होनेके लिअे अपने साधनोंकी मर्यादाके अनुसार कुदरती अिलाज करें। अिसलिअे मैं तुम्हारी तंदुरुस्तीकी चिन्ता न करनेकी कोशिश करूँगा और प्रार्थना करूँगा कि जिसमें तुम्हारा भला हो वही हो।"

रामदासकी शिक्षा तो हर पत्र द्वारा होती ही है:

"मननसे तेरे निश्चयको ज़रूर बल मिलता रहेगा। गीताको छान डालें और अुसके मूल शब्दोंका विचार करते रहें, तो अुससे भी बहुत और आवश्यक बल मिलता है। मुझे तो अैसा ही होता है। गीताको संस्कृतमें समझ लेता है? संस्कृतका अध्ययन करता है? और पढ़नेके लिअे टॉल्सटॉयके निबंध हैं। 'अिमिटेशन ऑफ क्राअिस्ट' पढ़ने लायक है। बुद्धदेवका चरित्र ज़रूर पढ़ना चाहिये। 'लाअिट ऑफ अेशिया' समझ सके, तो वह भी पढ़ना। रामायण पढ़ जाय तो अच्छा ही है। हिन्दीमें 'ब्रह्मचर्य' नामकी छोटीसी पुस्तक बहुत अच्छी है। अुसे पढ़नेकी अिच्छा हो, तो आश्रममेंसे मँगा दूँ। 'अनीतिकी राह पर' नामके मेरे जो लेख हैं, वे भी पढ़ने लायक हैं। अभी तो अितना पढ़ना काफ़ी होगा। निश्चय कैसे पार पड़ेगा, अिसकी व्यर्थ चिन्ता न करके अुसके बजाय यह विचार करना कि निश्चय ज़रूर पूरा होगा और भगवान ज़रूर मदद करेंगे। मनमें अुसे पक्का करके अपने काममें लीन रहना। पढ़नेमें भी अधीर न होना। न समझमें आये, तो दुबारा पढ़ना। देर भले ही लगे। याद न रहे, तो भी घबराना मत और प्रफुल्लित रहना। तेरी गति कितनी ही धीमी हो, अुसकी फिक्र न करना। किसी दिन सब कुछ अपने आप आसान

हो जायगा। शरीरको बिगाड़कर कुछ न करना। दिमाग जितना बोझ अुठा सके, अुतना ही अुस पर डालना।

"बच्चोंके बारेमें तेरा लोभ ठीक है। आजसे ही अुनकी चिन्ता करनेका कोअी कारण नहीं। अभी तो अुनके शरीर अच्छे बनें, यह ज़रूरी है। अिसमें नीमूकी मदद चाहिये। नीमूको मैं लिख रहा हूँ। अभी तो पत्र ठीक आ रहे हैं। तू लिखते रहना। अुनके शरीर अच्छी तरह बनेंगे और शुद्ध वातावरणमें पलेंगे, तो जैसे तू चाहता है, वैसे अपने आप बन जायेंगे। तेरा यह लिखना ठीक ही है कि अुनके लिअे भी तुम दोनोंको संयम रखना पड़ेगा। शुद्ध शिक्षा किसे कहते हैं, वह कैसे दी जाय, अिस ज़मानेके लायक शिक्षा कौनसी है— ये सब सोचने लायक बातें हैं। अुनके सोचनेके लिअे बहुत समय है। अिस बारेमें जो प्रश्न अुठें, पूछ लेना। तू चाहेगा तो थोड़ेमें तुझे मदद मिले, अैसा कुछ लिख भेजूँगा . . .।

"सुरेन्द्रका मोची काम धड़ाकेसे चल रहा होगा। अुससे कहना कि भगवान जूतोंमें, मृत पशुओंके चमड़ेमें भी आरामसे रहता है। मेरे लिअे अभी तल्वोंका जो चमड़ा आया, वह अच्छा है। अुसमें भगवान बहुत खूबसूरत लगते हैं। भगवान कोअी ग्रन्थोंमें ही बसते हों, सो बात नहीं। तुलाधारकी बात सुरेन्द्रसे समझ लेना और वह भी अुसपर दुबारा विचार कर ले। भगवानको ढूँढ़नेके लिअे अभिमन्युके चक्रव्यूहमें नहीं भटकना पड़ता। वह तो बगलमें है। हम भूलसे गाँव भरको ढूँढ़ डालते हैं और फिर जब याद आता है कि वह तो बगलमें ही छिपकर बैठा है, तब अपनी मूर्खता पर रोते और हँसते हैं।"

कल मेज़र डोअिलका पत्र भंडारी बता गये। 'राजनैतिक क़ैदी मो० क० गांधीको कह देना कि मुझे लिखा हुआ, मगर सरकारको भेजनेका अुनका पत्र सरकारको भेज दिया गया है!'

अुपवास खोलते समय कवि मौजूद थे। अुस समयके दृश्यका वर्णन कविकी कलमसे अखबारमें आया है। बढ़िया है।

डॉक्टर भास्करके पकड़े जानेकी खबर है। खूब काम करनेके बाद गिरफ्तार होने जैसी शान्तिप्रद बात कोअी भी नहीं।

२७-१०-'३२ डॉ० हरिसिंह गौड़का पत्र आया, जिसमें कहा गया है कि "बौद्ध धर्म ही हिन्दू धर्मका शुद्ध स्वरूप है। शंकराचार्यने ब्राह्मणकी अुच्चताके खयाल पर बनाया हुआ धर्म चलाया और हिन्दू धर्म पर होनेवाले अनेक हमलोंको अवकाश दिया। अब अेकीकरणके लिअे बौद्ध सिद्धान्त पर बनाये हुअे हिन्दू धर्मके पुनर्जीवनकी ज़रूरत है।" साथ ही यह भी खबर दी कि

लंकामें अखिल बौद्ध परिषद् १९३३ में होनेवाली है और हिन्दू धर्मके पुनर्जीवनके बारेमें बापूकी राय माँगी। बौद्ध धर्म पर अुन्होंने अपनी पुस्तक भी भेजी। बापूने अुन्हें पत्र लिखकर पुस्तकके लिअे धन्यवाद देते हुअे बताया:

"मैं कबूल करता हूँ कि आपको जैसी प्रेरणा होती है, वैसी मुझे नहीं होती। क्योंकि ब्राह्मणोंके प्रभावके बारेमें आपके जो विचार हैं, अुनसे मैं सहमत नहीं हूँ। बहुतसी बातोंके लिअे ब्राह्मणोंको ज़रूर ही ज़िम्मेदार माना जा सकता है। मगर मुझे यक़ीन है कि वे जितने दोषपात्र हैं, अुससे कहीं अधिक दोष अुन्हें दिये गये हैं। हरअेक धर्मने अपने-अपने ब्राह्मण पैदा किये हैं। वे अिस नामसे पुकारे नहीं गये, अिससे कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ता। मेरे खयालसे दूसरे धर्मोंके ब्राह्मणोंके मुक़ाबिलेमें हिन्दू धर्मके ब्राह्मण अच्छे हैं। अिसके साथ ही मुझे कहना चाहिये कि तरह-तरहके अज्ञानमय बन्धनोंवाली जाति-व्यवस्थापर मैं फ़िदा नहीं हूँ। वर्णाश्रमको मैं ज़रूर मानता हूँ। मगर अूपर लादे गये सहभोजन और मिश्रविवाह सम्बन्धी बन्धनोंको और अूँच-नीचके भेदको मैं नहीं मानता। विवेकानन्दकी तरह मैं मानता हूँ कि शंकराचार्यने हिन्दुस्तानसे बौद्ध धर्मको नहीं खदेड़ा, क्योंकि शंकराचार्य खुद प्रच्छन्न बुद्ध थे। अुन्होंने तो सिर्फ़ अुसमें घुसे हुअे भ्रष्टाचारको दूर किया और अुसे हिन्दू धर्मसे अलग पड़ जानेसे रोका। मेरी राय यह है कि बुद्धके अुपदेशोंका स्थायी असर हिन्दुस्तानके बराबर और कहीं नहीं हुआ। अितना होने पर भी यह कहनेमें मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ कि हिन्दू धर्ममें हमें जड़मूलसे सफ़ाअी करनेकी ज़रूरत है।"

शंकरराव घाटगेने लिखा कि पुनर्जन्मके बारेमें आप चार लकीरें अैसी लिखिये कि अुसके बारेमें श्रद्धा अुत्पन्न हो। बापूने लिखा (हिन्दीमें):

"अिस शरीरके नाशके साथ आत्माका नाश नहीं है अैसी प्रतीति सबको है। अैसे ही अिस शरीरके पहले भी आत्माका अस्तित्व था। यदि यह सच है तो आत्माको दुबारा देह धारण करना नहीं होगा, या अिस देहके पहले देह धारण नहीं किया था, अैसा माननेका कोअी कारण नहीं है। परन्तु आज आत्मा देहधारी है अिसलिअे भविष्यमें भी देहधारी होगा, अैसा मानना प्रवाह-पतित है।"

मीराबहनके यहाँके सात बरसके निवासके बारेमें अुनका पत्र था। बापूको ७ नवम्बरको देखा, अुस दिन ब्रह्मचर्यका जो अुदय हुआ, सो हुआ। यह भाव अद्भुत है। बापूने अुन्हें जो जवाब दिया, अुसमें अिन सात बरसोंमें अुन्हें गढ़नेके अपने प्रयत्नके बारेमें अुल्लेख करते हुअे वे लिखते हैं:

"सात वर्ष सपने जैसे लगते हैं। जब मैं यह याद करता हूँ कि मैंने तुझे किस बुरी तरह झिड़का है, तो काँप अुठता हूँ। संतोष अितना ही है कि ये

सब झिड़कियाँ प्रेमवश दी जाती थीं। मैं जानता हूँ कि अिससे भी अच्छा रास्ता था। पिछली बातें याद करता हूँ तो समझमें आता है कि मेरे प्रेममें अधीरता थी। उस हद तक वह प्रेम अज्ञान था। ज्ञानमय प्रेममें हमेशा धीरज होता है। अज्ञान प्रेम संस्कृतके 'मोह' शब्दका बेढंगा अनुवाद है। अधिक धीरज रखनेकी मैं कोशिश करूँगा। छोटी-छोटी बातोंमें जब मैं अपनी परीक्षा करता हूँ, तो देखता हूँ कि सच्चा प्रेम जितना धीरज चाहता है, अुतना अभी मुझमें नहीं आया। यह धीरज सीखना ही होगा।"

आज रातको १ नवम्बरके बाद पैदा होने वाली परिस्थितिमें क्या-क्या करना है, अिस बारेमें काफी चर्चा हुअी। अभी तक बापूने यह आशा नहीं छोड़ी है कि कोअी निपटारा हो जायगा और बापूको तपश्चर्या नहीं करनी पड़ेगी। लेकिन करनी पड़े और हमें अलग-अलग कर दें, या न करें, तो भी हमारा क्या कर्तव्य है, अिस पर काफ़ी चर्चा हुअी और स्पष्टीकरण हुआ।

स्कॉटलैण्डके बालमण्डलके संचालकका अेक पत्र था, जिसमें बच्चोंकी प्रार्थना और धन्यवाद थे। अुसे पत्र लिखा:

२८-१०-'३२

"बच्चोंके आशीर्वादका मैं सदा भूखा रहता हूँ, क्योंकि आम तौर पर बच्चे बड़े निर्दोष होते हैं। क्या आप यह नहीं जानते कि अैसा आत्मबल हो ही नहीं सकता, जिसके पीछे अीश्वरका हाथ न हो? आपने जो भेद किया है वह ग़लत है। मैं तो अैसे किसी आदमीको नहीं जानता, जो आत्माके अस्तित्वको तो मानता हो, मगर अीश्वरका अिनकार करता हो।

"सिर्फ अपने ही देशकी नहीं, मगर सारी दुनियाकी शांति और खुशहालीके लिअे प्रार्थना करनेका आपका विचार मुझे बहुत पसन्द है। मैं खुद तो अैसी देश-भक्तिको मानता ही नहीं, जिसमें अपने देशके सिवाय और सब देशोंकी भलाअीका विचार न हो। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आपको सफलता मिले।"

अुपवासके पहलेके दिनोंके पत्रोंमें जैसे अगले क़दमकी ध्वनि सुनाअी पड़ने लगी थी, वैसे ही अिस बार भी हो रहा है। प्रिंसेस अेरिस्टार्शीको लिखे पत्रमें लिखा:

"मेरी तबीयत लगभग पहले जैसी हो गअी है और कोअी खास थकान महसूस किये बिना मैं पहलेकी तरह ही अपने सब काम कर लेता हूँ। अिसलिअे मेरी तंदुरुस्तीकी कोअी चिन्ता न करें। भविष्यके गर्भमें क्या है यह कोअी नहीं जानता। अुसमें झाँकनेका हमें अधिकार नहीं है। वर्तमानकी चिन्ता हम कर लेंगे, तो भविष्यकी भगवान कर लेगा।"

रातको प्रार्थनाके बाद अगले सप्ताह अुठाये जानेवाले क़दमके बारेमें और शौकतअलीको वाअिसरॉयके दिये हुअे जवाबके बारेमें बातें हुअीं। वाअिसरॉयके अुत्तरके विषयमें बापूने कहा :

"मुझे यह जवाब पसन्द है। अिससे भी सब चेत जायँ और अेक हो जायँ तो अच्छा। मेरा अपमान करनेका अेक भी मौक़ा यह आदमी हाथसे जाने देना नहीं चाहता। कअी बार जी में आता है कि अेक पत्र लिखूँ और अुसे बता दूँ कि मैं कभी भी सविनय भंग छोड़नेवाला नहीं हूँ; और तुम्हें सबको जवाब देनेकी तकलीफ़ करनी पड़ती है, अिससे तो यह अच्छा है कि अिस जवाबको प्रकाशित कर दो, ताकि फिर दूसरे लोग तुम्हें कष्ट देना बन्द कर दें और तुम्हारी तकलीफ़ कम हो जाय। मगर बादमें अैसा लगा कि अिसमें क्रोध है, अिसलिअे तुरंत विचार वापस ले लिया।"

हमें न हटायें और बापूकी बिगड़ती हुअी स्थिति देखते रहना पड़े, तो क्या करें? बापू कहने लगे: "तो भी तुम्हें तो किसीको समाचार नहीं भेजना चाहिये और जैसा व्यवहार अुपवासमें किया था, वैसे ही मानो कुछ हुआ ही न हो, अिस तरह सदाकी भाँति काम करते रहना चाहिये। यह तो सब होता ही है। ये लोग थोड़े ही कोअी समाचार देनेको बँधे हैं? यहाँ दूसरे क़ैदी बीमार पड़ते हैं, मर जाते हैं और अुनके संबंधियोंको जैसे अन्तमें खबर देते हैं, वैसे ही मेरे रिश्तेदारोंको सूचना दे देंगे और कह देंगे कि तुम्हें अिसे देखना हो, तो देख जाओ; और मरनेके बाद यह खबर दे देंगे कि यह अपनी हठके कारण मर गया, तो अिसमें सरकार क्या करे? अुसे अिस बातकी अीर्ष्या है कि मेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी। किसी भी तरह अिसकी प्रतिष्ठाको बढ़नेसे कैसे रोका जा सकता है? ये सुविधाअें देना मेरी प्रतिष्ठाको बढ़ा देना है, अिसलिअे यह होगा ही नहीं। वह ज़रूर कह सकती है कि 'अिसे मरना है, तो मर जाय'। मगर मुझे आशा है कि सरकार अिस हद तक नहीं गिरेगी। लेकिन गिरे तो भी क्या? हरिश्चन्द्रको अपनी स्त्री और लड़केके प्रति क्या करना पड़ा था? सत्याग्रहकी पराकाष्ठा तो यही है न? और सच बात तो यह है कि यह पिछले सत्याग्रहसे भी ज्यादा शुद्ध है और अधिक सरल तो है ही। पिछला सत्याग्रह समझानेके लिअे भाष्यकी जरूरत होती थी और फिर भी कितने ही नहीं समझ सके थे। अिसे तो बच्चा भी समझ सकता है। पिछला सत्याग्रह नगाड़े बजा बजाकर किया था। यह शान्तिसे अिस तरह करेंगे कि कोअी न जान सके। अिसमें अुसकी अधिक शोभा है। अीश्वर मुझे टिकाये रखे, आख़िरी हद तक जानेकी शक्ति दे, यानी अंतिम घड़ी तक मैं प्रेमसे अुमड़ता रहूँ और क्रोध तथा चिढ़ मुझमें न घुसने पाये, तो यह सत्याग्रह स्वराजकी सबसे बड़ी सीढ़ी साबित होगा। अिसमें

भी सारे देशको तालीम है। पहले अुपवासको छोड़े महीना भर ही हुआ कि अीश्वरने यह अनुपम अवसर दे दिया, यह कितनी सुन्दर बात है!"

२९-१०-'३२ अेक बंगालीने लिखा: "आप 'हरिजन' नाम देकर अछूतोंका दूसरा नाम कायम करना चाहते दीखते हैं। अिन्हें अलग नाम देनेकी बात ही क्यों न छोड़ दी जाय?" अेक बड़ा फुल्स्केप कागज़ भरा था। अुसके जवाबमें:

"'हरिजन' शब्द अछूत भाअियोंको ध्यानमें रखकर हमेशाके लिअे अिस्तेमाल करना हो, तो आपका अेतराज़ ठीक है। मगर अभी तो अुन्हें अलग करके दिखाये बिना काम नहीं चल सकता। साथ ही मुझे लगता है कि 'अछूत' या अुससे मिलते-जुलते देशी भाषाओंमें काममें लिये जानेवाले दूसरे शब्द अुनके लिअे अिस्तेमाल करना अब अुचित नहीं है।"

नये सालकी शुभ कामनाअें बहुतोंके पत्रोंमें लिखीं। सबमें अेक ही भाव: "आपकी धर्मजाग्रति बढ़े, आपका नीतिबल बढ़े, आप अधिक सेवापरायण बनें।"

अेक सुनार सज्जनने अिस बारेमें निर्मल भावसे पत्र लिखा था कि माताकी अिच्छाके आधीन होकर दुबारा शादी की जाय या नहीं। विवाह करनेकी अिच्छा बिलकुल नहीं, माताका बहुत ही आग्रह है, अेक शुभेच्छु और अुपकारकर्ताकी तीन बड़ी लड़कियाँ विवाह करने लायक हैं, और जातिमें वरोंकी कमी है, अिसलिअे अुसका जी दुःखी है। अैसे लिखा:

"अगर आपका यह विश्वास हो कि शादी कभी करना ही नहीं है, तो आप शादी न करें। लेकिन भीतर ही भीतर अिच्छा हो, तो माताकी अिच्छाको मान लें। वरोंकी कमी हो तो कन्याओंको बाहर देना चाहिये। जात-पाँतकी पाबन्दियोंका धर्मके साथ कोअी सम्बंध नहीं है। यह सही है कि वह हिन्दूधर्ममें बहुत समयसे चली आ रही रूढ़ि बन गअी है, मगर रूढ़ियाँ तो समय-समय पर बदलती ही रहती हैं। आपका पत्र साफ है, अिसलिअे अितने स्पष्टीकरणके साथ आपको जवाब लिखा है। नये सालमें आपकी धर्मवृत्ति बढ़े।"

यह आखिरी वाक्य 'पुनश्च' के तौर पर और अनजान आदमीको!

३०-१०-'३२ आज संवत् १९८९ शुरू होता है। बापूने श्रीमती सरोजिनी नायडूको अेक हार और बकरीके दूधका पेड़ा भेजा, साथमें अेक पत्र भी। लेडी ठाकरसीको भी अेक पत्र भेजा — नये वर्षकी शुभेच्छाओंके साथ। अस्पृश्यता निवारणका काम करनेवाले शंकर नामके सेवकको लिखा:

"आशा है नये वर्षमें त्यागकी अधिक विशाल भावना, ध्येयकी विशेष स्थिरता और आत्मसंयमकी अधिक स्पष्ट समझ आपमें आयेगी।"

मोहनलाल भट्टको लंबा पत्र लिखा। अुसमें अिस प्रश्नका थोड़ा विवरण दिया कि अनशन कब किया जा सकता है और कौन कर सकता है:

"तुम्हें सन्तोष हो अिस ढंगसे मैं अनशनके नियम तैयार कर सकूँ अैसा नहीं दीखता। अितना कहा जा सकता है कि अुसमें पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा होनी चाहिये। वह अन्तःप्रेरणासे ही हो, देखादेखी कभी नहीं हो। अपने स्वार्थके लिअे कभी न हो, अुसका अुद्देश्य केवल पारमार्थिक होना चाहिये। जिस काममें किसीका भी द्वेष हो, अुसमें अनशन हो ही नहीं सकता। मगर अन्तर्नाद किसे कहा जाय? वह सबको हो सकता है? ये दो बड़े प्रश्न हैं। अन्तर्नाद तो सभीको होता ही है। मगर जैसे बहरा आदमी मधुरसे मधुर संगीत नहीं सुन सकता, वैसे ही जिसके कान अन्तर्नाद सुननेको खुले न हों, वह अिस नादको नहीं सुन सकता। और जो संयमी नहीं है, अुसके कान अन्तर्नाद सुननेको खुलते ही नहीं। जिसमें गीताके दूसरे अध्यायमें बताये हुअे स्थितप्रज्ञके या बारहवें अध्यायमें कहे गये भक्तके या चौदहवें अध्यायमें वर्णित गुणातीतके लक्षण हों या जिसमें तीनोंका संमिश्रण हो, अुसीमें यह योग्यता हो सकती है।"

सुन्दरम् नामके अेक जेलवासी ओसाओ भाओने सवाल पूछा: "आपको सत्यके सबसे ज्यादा नज़दीक कौनसा धर्म मालूम हुआ है?" अिसे मोहनलालके पत्रमें ही जवाब:

"भाओ सुन्दरम् जो पूछते हैं, वह सवाल पूछने लायक़ नहीं है। मगर जब वे पूछते ही हैं, तो मुझे कहना चाहिये कि मेरी दृष्टिसे सब बातें देखते हुअे 'सत्यके सबसे ज्यादा नज़दीक' हिन्दू धर्म है। मगर साथ ही यह कबूल करनेमें मुझे जरा भी संकोच नहीं होता कि शायद अिसमें मोहवश मैं भूल कर रहा हूँ। मगर जो यह भूल हो, तो भी क्षम्य है और आवश्यक भी है। क्योंकि अितना मोह न हो, तो मनुष्य किसी धर्म पर टिक नहीं सकता; और अगर अुसे किसी दूसरे धर्ममें अधिक सत्य दिखाओ दे, तो अुसमें गये बिना रह नहीं सकता, न रहना चाहिये। अिसे ओश्वरकी माया कहो या जिस किसी भी नामसे पुकारना हो पुकारो; मगर दुनियामें है अैसा ही। अितने पर भी सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना चाहिये। यानी ओसाओ ओसाओ धर्मको सत्यके अधिक नज़दीक माने, मुसल्मान अिस्लामको माने, यह मुझे हिन्दूकी हैसियतसे मान लेना चाहिये और यह भी मान लेना चाहिये कि अपने-अपने धर्ममें चुस्त रहनेके लिअे यह अुनके लिअे ज़रूरी है। अिस मान्यताके लिअे अुनके प्रति मुझे द्वेष भी न होना चाहिये। मुझे यह

भी न मानना चाहिये कि अुनका यह खयाल ग़लत है। मैं आशा रखता हूँ कि भाअी सुन्दरम्‌को और तुम सबको यह बात स्पष्ट हो गअी होगी। यह संभव है कि सब धर्मोंके बारेमें मेरा यह विचार मौलिक है। औरोंने भी अिस ढंगसे सोचा हो, तो मुझे मालूम नहीं। मेरे लिअे तो यह मौलिक ही है और मुझे अिससे रसके घूँट मिले हैं। अिस विचारके कारण मैं हिन्दू धर्ममें चुस्त रहकर भी दूसरे धर्मोंको पूज सकता हूँ और अुनमेंसे जो कुछ अच्छा हो वह निःसंकोच ले सकता हूँ। अिस शोधकी अुत्पत्ति अहिंसामेंसे हुअी है।"

अीशोपनिषद्‌के 'विद्या', 'अविद्या' और 'संभूति', 'असंभूति'का अर्थ भाअी कुलकर्णीने पूछा था। अुसका जवाब दिया:

"विद्याका अर्थ ज्ञान और अविद्याका अर्थ कर्म है। संभूति और असंभूतिका अर्थ अिससे मिलता-जुलता ही है। अिसलिअे असंभूतिका अर्थ हुआ शरीर और संभूतिका अर्थ हुआ आत्मा। यह सिर्फ़ मेरे सन्तोषके लिअे है और अिस प्रकार अीशोपनिषद्‌का अर्थ मुझे सरल और सन्तोषजनक प्रतीत हुआ है।"

और अेक सवालके जवाबमें:

"संस्थाओंमें अेकसूत्रता नहीं होती, अिसका कारण अनुदारता है, संचालकमें शून्यताका अभाव है। जहाँ संचालक संयमी होगा, वहाँ ज्यादातर अड़चन नहीं आती। मगर अिससे हम अितना नियम तो समझ ही सकते हैं कि संस्थामें जितना अधिक संयम होगा, अुतना अधिक अुसमें अैक्य होना संभव है।"

स्विट्ज़रलैण्डमें रहनेवाली अेक अंग्रेज बहनने पूछा कि गुप्त विद्याओंके बारेमें आपकी क्या राय है? अिसका जवाब देते हुअे लिखा:

"गुप्त विद्याओंके बारेमें आपने मेरी राय पूछी है। मुझे अुनमें दिलचस्पी नहीं। जीवनकी पुस्तक सादीसे सादी बुद्धिके लिअे भी खुली है, और अैसा ही होना भी चाहिये। अीश्वरकी योजनामें कुछ भी गुह्य या गुप्त नहीं। गुह्य और गुप्त चीज़ोंसे मुझे कभी आकर्षण नहीं हुआ। सत्यके लिअे कुछ भी गुप्त नहीं है। सत्य ही अीश्वर है।"

मथुरादासको नये वर्षकी शुभ कामना: "तेरे सामने अभी तो जीवन पड़ा है। तेरी सभी शुभेच्छाअें पूरी हों और सेवा करनेके तेरे सभी हौसले सफल हों। सत्य और अहिंसाका तू सच्चा प्रतिनिधि बन।"

सुबह 'अुठ जाग मुसाफ़िर' गाया। मगर अुसमें दो-तीन सुरोंकी खिचड़ी हो गअी, अिसलिअे बापूको अच्छा नहीं लगा। बापू कहने लगे: "औरोंके लिअे यह सच हो तो कौन जाने। मगर मेरे बारेमें तो यह सही है कि अच्छी तरह न गाया जाय, तो कितना ही अच्छा भजन या काव्य क्यों न हो, मेरे लिअे निरर्थक हो

जाता है। आज सुबह मुझे अैसा लग रहा था कि यह कब पूरा होगा। मेघाणी जो कहता है कि अुसके गीत जब वह खुद गाकर सुनाता है, तभी अुनमें अच्छी तरह रस आ सकता है, यह सच है।"

शामको खाते-खाते महावीर सम्बंधी पुस्तक पढ़ रहे थे। अुसमेंसे अेक वाक्य बापूने जो कुछ किया है या करना चाहते हैं अुसके समर्थनमें मिला। वह मुझे अिशारा करके बताया।

मैंने कहा: "ठीक वक्त पर ही आया है न?" बापूने आनन्द और आश्चर्यसे सिर हिलाया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "अपने लिअे समर्थन ढूँढ़ते ही रहेंगे।"

हम दोनोंकी तरफ अंगुली दिखाकर कहा: "तुम्हारे लिअे भी यही बात है।"

अिसपर वल्लभभाअी कहने लगे: "जैनोंको तो अिस तरह देह छोड़नेमें कहाँ आपत्ति है? सनातनियोंको समझायें तब जानें!"

आज सुबह मेजर भंडारीको प्रगतिशील असहयोग समझानेवाला पत्र लिखा और सरकारका फर्ज समझाया कि या तो वह अस्पृश्यताके

३१-१०-'३२ बारेमें पत्रों और मुलाकात सम्बंधी सारा पत्रव्यवहार छाप दे या मेरी माँग और सरकारका अिनकार, अिन दोनोंसे जनताको जिस तरह वह चाहे वाक़िफ़ कर दे। यह पत्र पढ़ते ही मेजर आये। अुन्होंने कहा: "आप कुछ दिन मुल्तवी रखें और थोड़ी चर्चा करें तो?"

बापू: "सरकारके पूछे बिना मैं चर्चा किस तरह करूँ?"

फिर मेजर कहने लगे: "आप 'क' वर्गकी खुराक लीजिये, मगर यहीं पर बनवा लें तो।"

बापूने हँसकर अैसे भावसे सिर हिलाया कि तब तो जो खुराक लेता हूँ वही न लूँ।

अिसपर मेजर कहने लगे: "आपका वज़न नहीं बढ़ रहा है और शरीरकी शक्ति सब जाती रहेगी, और पेचिश भी हो सकती है।"

अिसलिअे बापूने लिखा:

"मैं नहीं चाहता कि मुझे पेचिश हो। लेकिन होगी तो भोग लूँगा। हाँ, अिसके कुछ भी चिन्ह दिखाअी देंगे, तो मैं खुराक लेना बिलकुल बन्द कर दूँगा। असहयोग अुत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। सरकारको कमसे कम अड़चनमें डालनेके लिअे मैंने यह मार्ग ग्रहण किया है। अछूतपन मिटानेके लिअे मैं काम न कर सकूँ, तो मैं जी नहीं सकता। मगर सरकार यह चाहे कि अस्पृश्यता

निवारणका काम करनेके लिअे जीनेके बजाय मैं भले ही मर जाअूँ, तो मैं लाचार हूँ ।"

हरजीवन कोटकको काश्मीरके कामके बारेमें चिन्ता न करनेकी सलाह दी। शंकरलालके सामने सारी परिस्थिति जाहिर कर देनेको कहा और लिखा :

"आपका खानगी जीवन भी अुसके सामने रख देना आपका धर्म है। आप यह तो मानते ही हैं कि खानगी जीवनकी अशुद्धि भी काममें खलल डालती है? दूसरे लोग, जिनके जीवन गंदे होते हैं, व्यापार वगैरामें सफलता प्राप्त कर सकते हैं, अैसा विचार न करना। अुनकी सफलता असफलताका निर्णय हम न करें। हम व्यक्तिगत, सार्वजनिक या व्यापारी जीवनमें भेद नहीं करते। हमारी सभी प्रवृत्तियाँ आत्मशुद्धिके लिअे होती हैं। अिसलिअे हमारी अशुद्धि हमारे मार्गमें पग-पग पर बाधक होगी।"

दाहिने और बाँयें दोनों हाथोंकी कोहनियाँ दुखती थीं, अिसलिअे आश्रमकी डाकके बहुतसे पत्र अिस बार मुझसे लिखवाये।

जमनाबहनको बहुत ही बड़ा पत्र लिखवाया। अुसमें अपनी माता और खुशालभाअीकी पत्नी — अपनी भाभी — के अनेक संस्मरण लिखे और स्टव प्रकरण पर विस्तारसे दलीलें देकर स्टव छोड़नेके लिअे समझाया।

"अब यह बहन खुल रही है। मुझे आज़ादीके साथ लिखने लगी है। तो मुझे अुसे लम्बा पत्र लिखकर प्रोत्साहन देना ही चाहिये।"

बापूके अुपदेशका असर मामूली आदमी पर कहाँ तक होता है अिसका छोटासा अुदाहरण : डाहीबहन पटेलके पिता गुज़र गये। अुसने अकेलीने लड़कर रोना-पीटना सब बन्द रखा और पुराणिकको बुलवानेके बजाय खुदने ही भागवत् वगैरा पढ़ी।

अेक पत्रमें मौनका हेतु समझाया (हिन्दीमें) : "दरदी अपने दर्दके कारण मौन लेते हैं। कोअी वक्ता अपने कण्ठको आराम देनेके कारण मौन लेते हैं। कोअी अन्तर्मुख होनेके कारण मौन लेते हैं। तीनोंको अपने हेतुके अनुकूल लाभ मिल सकता है। जो अन्तर्मुख होनेके कारण मौन लेंगे, वे सामान्यतया अुस रोज़ अेकान्तमें रहेंगे, अुपवास करेंगे या अल्पाहार करेंगे। आवश्यक होने पर अन्तर्मुखता बढ़ानेवाले ग्रन्थोंका मनन करेंगे। येन केन प्रकारेण मौन लेनेका कम ही लाभ हो सकता है, और हानि होनेका सम्भव रहता है। सत्यार्थीकी प्रत्येक प्रवृत्तिका स्पष्ट हेतु रहता है।"

"जो सहभोजन आदि करते हैं, वे शुभ भावनासे ही भरे होते हैं। अिसलिअे जो विद्यार्थी मजा अुड़ानेके लिअे आते हों, अुनकी तुलना अिनके साथ नहीं हो सकती। हरिजनोंकी तुलना तो मौजमजेके लालचवाले विद्यार्थियोंके साथ किसी भी तरहसे नहीं हो सकती, क्योंकि हरिजनोंके लिअे जो कुछ भी किया जाय,

वह लालचके रूपमें नहीं माना जा सकता। जो प्रायश्चित्त करता है, वह लालच नहीं देता। वह तो अपनी शुद्धि करता है। क्या यह सब दीपककी तरह स्पष्ट नहीं लगता? सहभोजन अुचित है या नहीं, यह प्रश्न जुदा है। कुछ हालतोंमें वह अुचित है और दूसरी हालतोंमें अनुचित भी हो सकता है। अिसलिअे यह सिर्फ़ परिस्थिति पर आधार रखनेवाली बात हुअी।"

अेक छोटी लड़कीको, जिसे धोखा देने और झूठ बोलनेकी आदत पड़ गअी है, लिखते हैं:

"मुझे आशा है कि तूने झूठ न बोलने और चोरी न करनेका जो वचन दिया है, अुसका पालन करेगी। तुझे यह पसन्द नहीं होगा कि दूसरे लोग तुझे धोखा दें या तेरी चीज़ें चुरायें। अिसलिअे तुझे यह आशा हरगिज़ न रखनी चाहिये कि तू औरोंको धोखा दे या औरोंकी चीज़ें चुराये, तो वे पसन्द करेंगे।"

(हिन्दीमें): "गीताका मध्यबिन्दु क्या है अुसका निश्चय कर लेना। पीछे प्रत्येक श्लोकका अर्थ जो अपने जीवनमें अुपयोगी है अुसको आचारमें रखना। यह सबसे बड़ी टीका है। और यही गीताका सच्चा अभ्यास है। गीताका मध्यबिन्दु अनासक्ति ही है, अुसमें थोड़ासा भी शक नहीं होना चाहिये। दूसरे किसी कारणसे गीता नहीं लिखी गअी, अुसमें मुझे कुछ भी शंका नहीं है। और मैं तो यह अनुभवसे जानता हूँ कि बग़ैर अनासक्तिके न मनुष्य सत्यका पालन कर सकता है, न अहिंसाका। अनासक्त होना कठिन है, अिसमें सन्देह नहीं। लेकिन अुसमें आश्चर्य क्या है? सत्यनारायणका दर्शन करनेमें परिश्रम तो होना ही चाहिये और बग़ैर अनासक्तिके यह दर्शन अशक्य है।"

दोपहरको दोनों मेज़र बापूको समझाने आये। विशेष खुराक नहीं तो अुबला हुआ दाल-शाक ढाबेसे भेजा जायगा अुसे ले लें। अिस बीच मैं यही बात करनेको समझा रहा था।

बापूने मेज़रसे कहा: "यह खुराक मैं चार दिनसे ज्यादा नहीं लूँगा।"

मेज़र: "खुराक आपको माफ़िक़ आये तब भी?"

बापू: "हाँ, यह अुत्तरोत्तर बढ़नेवाला असहयोग है। सारा दारोमदार अिस पर है कि सरकारका रुख कैसा रहता है। अितनेसे सरकार न पिघले, तो मुझे अपनेको अधिक कष्ट देना ही पड़ेगा। अिस चीज़के खयालसे मुझे तो आनंद ही होता है। आनंद अिसलिअे कि कार्य पवित्र है। मान लीजिये वह मुझे मरने दे, तो अस्पृश्यता निवारणका काम बेहद आगे बढ़ेगा। बाहरके लोग मेरे छोटेसे कष्टसहनको बड़ा बना देंगे और मौक़ेके अनुसार काम करेंगे। दुःख यह है कि सरकार अिस कार्यकी महत्ताको नहीं समझती। मुझे अिस कामके सिलसिलेमें कितने ही पत्रोंके अुत्तर देने हैं।"

मेज़र: "मगर ये लोग तो कह देंगे कि आपको जवाब देनेसे रोका नहीं गया।"

बापू: "आप शर्तें भूल जाते हैं। मुझे तो यह चाहिये कि अिस कामके लिअे मेरे जवाब प्रकाशित हों। बहुतसी अनिष्ट शक्तियाँ अिस समय काम कर रही हैं। मुझे जो कहना है अुसे खूब प्रसिद्धि देकर अिन शक्तियों पर मैं कोअी असर न भी डाल सकूँ, तो भी अितना तो मैं ज़रूर कर सकता हूँ कि जो लोग अिन अनिष्ट शक्तियोंके असरमें आते हैं, अुन पर अपना असर डालूँ। अगर मैं यह काम न कर सकूँ, तो फिर जीनेमें मुझे कोअी रस नहीं रह जायगा। बीस दिन पहले मैंने जब प्रथम पत्र लिखा, तबसे मेरा चित्त अिस मामलेमें क्षुब्ध रहता है। अिसलिअे आप समझ सकेंगे कि मुझे कितनी वेदना सहन करनी पड़ी है। अब अिस वेदनाको चार दिनसे ज्यादा लम्बाना शारीरिक दृष्टिसे मेरे लिअे असंभव है। शायद अेक दिन बाद ही वह असंभव बन जाय और मैं कलसे ही अुपवास शुरू कर दूँ। या सात दिन तक सह्य हो जाय, तो तब तक भी ठहर सकता हूँ। अिसका आधार अिस पर है कि सरकार मेरे अिस कदमका क्या जवाब देती है।"

आज सुबह 'वैष्णव जन' गाया। छःसे साढ़े सात तक गीतापाठ किया।

१-११-'३२

बापूने छः बजे काँजीका अेक कटोरा पीया। मैंने कहा: "सदाकी तरह शहद और पानी पीनेके बजाय गरम पानी और नमक नहीं पी सकते?" तो कहने लगे: "क्यों नहीं पी सकता? सब कुछ पीया जा सकता है। मगर जहाँ असहयोग बढ़ाते ही जाना है, वहाँ फिर गरम पानी और नमक पीनेकी बात ही कहाँ रही? मामूली क़ैदियोंको कौन गरम पानी देता है? अरे, जुलाब लिया हो तब भी अूपरसे पीनेको गरम पानी नहीं मिलता।"

आजके पत्र खास महत्वके नहीं थे। अेक आदमीने 'हिन्दू' के बारेमें कड़ी शिकायतें की थीं और गुरुवायुर सत्याग्रहका प्रचार नहीं करनेका आक्षेप किया था। अुसे लिखा:

"अखबारी प्रचारका महत्व ज़रूर है, फिर भी ठोस परिणाम तो लगनके साथ और चुपचाप किये गये ठोस कामसे ही लाये जा सकते हैं। जो अिस चीज़को समझते है, अुन्हें अखबारोंमें अपने कामका ज़िक्र न होनेका अफ़सोस नहीं होता।"

साकोरीके अुपासनी महाराजकी दो पुस्तकें आअीं। होमी पेस्तनजी नामके किसी आदमीने भेजी हैं। बापूने अुसे जवाब दिया:

"आपकी भेजी हुअी पुस्तकें मिल गअीं। अुपासनी महाराजसे मैं मिला हूँ। मुझ पर अुनका बहुत खराब असर पड़ा है और मैंने अुनके लेखोंमें गंदगी पाअी है।"

अेक अछूतने लिखा था:

"आपके प्रतापसे मन्दिर और कुअें बहुत खुल गये। आज भी खुलते जा रहे हैं। अब अुपवास न कीजिये।" अुसे लिखा:

"अुपवास करना या न करना मेरे हाथमें नहीं है। अीश्वरने जो सोचा होगा वही होगा।"

अुपवासमें भी शान्तिकुमारका पत्र नहीं आया था, अिसलिअे अुसे याद किया।

पद्मजाको 'मेरी प्यारी साथिन और गुलाम' सम्बोधन करके लिखा था। अुसने चिढ़कर लिखा कि 'मैं किसी महात्मा या जादूगरकी गुलाम खुशीसे नहीं बनूँगी।'

अुसे लिखा:

"मेरी प्यारी साथिन और अनिच्छुक गुलाम,

"यह चाहते हुअे भी कि तू राजी-खुशीसे गुलाम बने और गुलामोंका हाकिम होते हुअे भी गुलामोंकी तरह तेरी अिस अिच्छाके अनुसार कर रहा हूँ कि परोपकार वृत्तिसे मैं तुझे बायें हाथसे लिखूँ। जब तक तेरे जैसी साथिनोंने अपने अनुभवसे यह खोज नहीं की थी, तब तक मुझे खयाल भी नहीं था कि मैं गुलामोंका हाकिम हूँ। मैंने यह मान रखा था कि लोग मेरा जुआ खुशीसे अुठा लेते हैं। मगर मैं देख रहा हूँ कि साफ दिलसे कबूल करनेमें तेरा अभिमान बाधक हो रहा है। मैं नहीं चाहता कि तेरे अभिमानका नाश करनेवाली घटनाअें और हों।

* * *

"मुझे भेजी हुअी तेरी पुस्तकें पढ़नेके बारेमें तूने जो क्रम बताया है, अुसका मैं अनुसरण करूँगा। मैं अपने शिक्षकोंकी संख्यामें जल्दी-जल्दी वृद्धि करता जा रहा हूँ। पहली शिक्षिका रेहाना हुअी, बादमें ज़ोहराकी नियुक्ति की गअी और अब अिस सम्मानकी अुम्मीदवार तू है। तो अिस पत्रको तू अपना नियुक्ति-पत्र समझना। मगर अिस सम्मानकी रक्षा करनेके लिअे तुझे स्वस्थ हो जाना पड़ेगा। बीमार और बिस्तरमें पड़ी रहे, तो काम नहीं चलेगा।"

रातको वल्लभभाअी खूब नाराज़ हुअे। बापूसे कहने लगे: "आपको अुपवासका नोटिस देना चाहिये। चार दिनकी सूचनासे काम नहीं चल सकता। आप लोगों और सरकार दोनोंके साथ अन्याय करेंगे। औरोंके सामने भी हम आपकी कोअी सफ़ाअी नहीं दे सकते। लोग कहेंगे कि यह अेक अुपवास पूरा करके

बापू कहने लगे : "कल देखेंगे।" फिर अन्तमें बोले : "अच्छा, कल बकरियोंको आने दो।" मेजरके जाते ही हमसे पूछा : "बोलो, तुम्हारी क्या राय है?"

हमने कहा : "दूसरा जवाब हो ही नहीं सकता। यह तो वही आया, जो हम सोच रहे थे। असमें सभ्यता है और बिनती भी है, और असमें प्रतिज्ञा छोड़नेकी कोअी बात नहीं।"

बापू कहने लगे : "अिस पर तो अुपवास शुरू किया होता, तो भी छोड़ देता। अिन्होंने मोहलत माँगी है। और यह तो बम्बअी सरकार पर जोरका तमाचा है। अिनका पत्र अितने दिन कैसे पड़ा रहने दिया, अिसका अुसे अुलाहना भी है। किसीने बीचमें रुकावट डाली होगी। शायद हडसनने गुस्सेमें रख छोड़ा होगा।"

सुबह साढ़े चार बजे बापूने शहद, पानी और फल शुरू किये और बादमें भारत सरकारके गृहमंत्रीको लम्बा तार लिखवाया। अुसमें यह समझाया कि वे सत्याग्रह करनेको किस तरह विवश हुअे। साथ ही यह भी समझाया कि कैसे पत्र और तार मेरे पास जवाब दिये बिना ही पड़े रह गये हैं। अन्तमें कहा कि "अिस आत्माका हनन करनेवाली स्थितिसे बचनेका क़ैदीके पास और क्या अुपाय हो सकता है?"

२–११–'३२

तार सुबह ही चला गया। भिन्नाये हुअे आअी० जी० पी० ने टेलीफ़ोनसे पूछा : "क्या खबर है? रोटी छोड़ी या नहीं?"

सनफील्ड स्कूलके व्यवस्थापकका पत्र आया। अुसमें यह बात थी कि पिछले साल बापू जिस दिन अुस पाठशालामें गये थे, अुसी दिन यह लिखा जा रहा है। बापूके आगमनके लिअे आभार माना गया था और यह बताया था कि सब कुछ आत्माकी पहचान और आत्माकी शिक्षा पर आधार रखता है और अुनका काम आगे बढ़ रहा है। बापूने लिखा :

"आधिभौतिक और आध्यात्मिकके बारेमें आप जो कहते हैं, अुसमेंसे अधिकांशसे मैं सहमत हो सकता हूँ। आत्मतत्त्वके बिना भूततत्त्व मृत है और भूततत्त्वके बिना आत्मतत्त्व हिल नहीं सकता। जब तक हम **अिसका** नहीं, **अिनका** विचार करते हैं, तब तक अेकको दूसरेकी ज़रूरत पड़ती है। लेकिन अिस बहुत रम्य प्रदेशमें मैं अधिक नहीं भटकूँगा।"

यह लिखाते समय बापू कहने लगे: "अीशोपनिषद्की विद्या-अविद्याका यही अर्थ है। अविद्यासे मृत्युको पार करना और विद्यासे अमृत प्राप्त करना यानी हमेशाके लिअे मोक्ष पाना।"

मैंने कहा: "गीतामें जो ज्ञान और विज्ञान है, वह भी यही होगा।"

बापू: "हो भी और न भी हो। गीतामें अैसी व्याख्या है ही नहीं। अनेक अर्थोंमें अेक शब्द अिस्तेमाल होता है। और गीतामें बार-बार अेक ही बात कही गअी है — अनासक्ति। जब कि अीशोपनिषद्में तो अेक-अेक श्लोकमें नअी-नअी बातें भरी हैं। अीशके 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' में गीताका सारा अुपदेश आ जाता है। परंतु दूसरे सब श्लोकोंमेंसे हरअेकमें नअी चीज़ें भरी हैं क्योंकि वे सब मंत्र हैं, जब कि गीताके हर श्लोकमें नअी चीज़ नहीं भरी हुअी है।"

विलायतके दो बच्चोंको 'साथ-साथ और अलग-अलग' पत्र लिखा। दोनों अेण्ड्रूज़के नये मित्रके लड़के हैं। दोनों बापूसे मिले थे, मगर बापू भूल गये थे। दोनोंने अेण्ड्रूज़के फोटो भेजे हैं। बापूने दोनोंको धन्यवाद देकर 'तुम्हारा सच्चा मित्र' सही की।

सनफील्ड स्कूलके व्यवस्थापकको पत्र लिखा था, अुसमें अेस्थरको 'मेरी मित्र और बेटी अेस्थर मेनन' संबोधित किया।

शामको कहने लगे: "देखो न, यह अेक सीधी बात है कि अिस क़रारके बाद और छः महीनेके बाद मेरा जो अुपवास होनेवाला है अुसे देखते हुअे यह आग्रह लोगोंकी तरफ़से होना चाहिये कि मुझे अछूतपनके बारेमें चिट्ठी-पत्रीकी पूरी आज़ादी हो। मगर लोग सोये रहते हैं और मुझे अिसके लिअे अुपवास करनेका नोटिस देना पड़ता है। बिड़ला भी लिखता है कि आपको अिजाज़त मिल गअी? यह अिजाज़त बिड़लाको खुद लेनी चाहिये। हाँ, मेरे अुपवासका पता लग जाय, तो फिर चेत जायँगे और यह हक दिलानेके लिअे खलबली मचा देंगे। लेकिन अपने आप किसीको यह बात नहीं सूझती।"

३-११-'३२

कल मीराबहनका सुन्दर पत्र आया था। अुसके पत्र हमेशा अुसके हृदय और आत्माके दर्पण होते हैं। अिस बारके पत्रमें लिखती है:

"मैं अपने समस्त हृदयसे जानती हूँ कि आपके अुलाहने अनंत और क्षमामय प्रेमसे प्रेरित थे। और अिसीलिअे मेरी जितनी कसौटी तथा विशुद्धि हुअी है, अुतनी दुनियामें और किसी चीज़से नहीं हो सकती थी।"

अुसने स्वयं गीताका अध्ययन शुरू किया है। किशनके साथ अेक-अेक श्लोक समझनेका प्रयत्न करती है। कुरानका पिकथॉलका अनुवाद पढ़ रही है और धर्मके बारेमें अपने विचार बताकर अपनी स्थिति अिस सुन्दर ढंगसे प्रगट करती है:

"मैं आजकल कुरानका पिकथॉलका अनुवाद पढ़ रही हूँ। यह अनुवाद पढ़नेमें अच्छा लगता है। ये खुद मुसलमान (अंग्रेज़) हैं और अिसलिअे पूरे प्रेमसे और आदर भावसे चीज़को पेश करते हैं। अीसाअी धर्म सम्बंधी अेक आयतके बारेमें आपके शब्द मुझे याद हैं। अैसी बहुतसी आयतें अिसमें हैं। अैसा लगता है कि पैगम्बरको जिन अीसाअियोंके साथ काम पड़ा था, वे अीसाअी अपने धर्मका बहुत संकुचित खयाल रखते थे। पैगम्बर साहबको यह अच्छा नहीं लगता था। अीसा मसीहके लिअे अुन्हें बहुत ज्यादा आदर था। मैं अपने अज्ञानमें यह नहीं समझी थी कि जिन शास्त्रों पर अीसाअी धर्म रचा गया है, अुन्हीं शास्त्रों पर अल अिस्लामकी बुनियाद है। मुझे अैसा लगता है कि महम्मदने अिन शास्त्रोंका अुपयोग अेक सुधारकके रूपमें किया, जब कि अीसाने अेक क्रान्तिकारीके तौर पर किया। क्या मुझ पर पड़ा यह असर सही है? ये दोनों धर्म भव्य होने पर भी कुछ न कुछ अैसा रह जाता है, जो मुझे खोज करनेके लिअे तैयार करता है। अैसी कमी महसूस होती है जिसे मैं शब्दोंमें नहीं बता सकती। मेरी आत्माको गहरा सन्तोष हो, अिस तरह वह चीज़ मुझे गीतासे मिल जाती है। मेरे अपने लिअे तो मुझे अैसा लगता है, मानो मैं अपने पूर्व जन्मके धर्ममें वापस आ गअी हूँ। अीसाअी बनना मेरे लिअे वैसा ही अस्वाभाविक हो जाता है, जैसा अीसाअीके लिअे हिन्दू या मुसलमान बनना हो सकता है। मुझे मालूम है कि अिस विषयमें मुझे कअी बार आपके मार्मिक वचन सुनने पड़े हैं। मगर अुसका कारण तो यह है कि अुस समय मुझमें पूर्वग्रह और कटुताअें भरी थीं। अब ये पूर्वग्रह मिट गये दीखते हैं और आपको अिस तरह लिखते हुअे मुझे कोअी डर नहीं लगता।

"यह प्रश्न मेरे सामने तो स्पष्ट रूपमें अुस समय जबरन आया, जब मुझे सज़ा हुअी और रजिस्टर पर मुझे अपना धर्म दर्ज करना पड़ा। मैं तो अपने आपको सिर्फ साबरमती आश्रमवासिनी कहती हूँ। पहली ही प्रार्थना जो मैं बोलना सीखी, वह आश्रमकी प्रार्थना' थी। मेरी आँखोंके सामने अीश्वर तक पहुँचनेका जो रास्ता पहली बार दिखाअी दिया, वह आपके अुपदेशसे ही दिखाअी दिया था।"

अिस पत्रसे बापू बड़े खुश हुअे और लिखा:

"मुझे लगता है कि अीसा और महम्मदके बीच तूने जो तुलना की है वह, आकर्षक है, मगर अंशतः ही सही है। तूने यह कहावत तो सुनी ही है कि 'तुलनाअें

अरुचिकर होती हैं।' मेरी रायमें सभी क्रान्तिकारी सुधारक होते हैं और सभी सुधारक क्रान्तिकारी होते हैं। दोनों महान धर्मगुरु थे और अपने ज़माने और ज़रूरतके अनुरूप थे। दोनोंने मानव प्रगतिमें अपना अनन्य भाग दिया है। जगद्-गुरुओंमें दोनोंका स्थान बराबर है। तूने अपनेको आश्रमवासिनी वर्णन किया है, सो बिलकुल ठीक है। तू अीसाका अिनकार नहीं करती, परन्तु अपनेको आश्रमवासिनी कहती है, जो किसी भी धर्मगुरुका अिनकार नहीं करता। अलग-अलग गुरुओंके अुपदेशोंके अर्थोंसे हमें कोअी वास्ता नहीं है। जिसे जो अनुकूल पड़े वह अर्थ कर ले।"

सुबह यह नकल कर रहा था कि मेज़र भण्डारी भारत सरकारका जवाब लेकर आ पहुँचे। अीश्वरकी अपार कृपाका अैसा दर्शन कहाँसे हो? बापूने कहा कि अैसा अच्छा जवाब सरकारकी तरफसे कभी मिला ही नहीं। सरकारने बापूकी अेक-अेक माँग मंजूर की। अितना ही नहीं, मानो जल्दी मंजूर न करनेकी माफ़ी माँगी हो और बापूने अपने पर जो शर्तें लगाअी हैं अुनके पालनके बारेमें पूरा विश्वास प्रकट किया। किसी भविष्यवेत्ताने यह समाचार दिया था कि बापूको २ ता० को छोड़ दिया जायगा। मुझे लगता है कि यह खबर छुटकारेसे भी ज्यादा अच्छी है। मेरी आँखोंमें तो सरकारका सुन्दर और विनम्र अुत्तर पढ़कर हर्षके आँसू आ गये।

तेल मलवाते-मलवाते बापू कहने लगे: "क्या अेक तरहसे सरकारने अुपवासका सिद्धान्त स्वीकार नहीं कर लिया?"

मैंने कहा: "और जब अुपवासको स्वीकार कर लिया, तो सविनयभंगको भी स्वीकार कर लिया, यह नहीं कहा जा सकता?"

बापू: "अितना अधिक ये लोग नहीं समझेंगे। वैसे अुपवासको मान लेनेमें सविनयभंगको मान लेना शामिल है। तुम देखना, सारी मुश्किलें धीरे-धीरे दूर होती जायेंगी। वे अपने आप समझ जायँगे कि जो आदमी अितनी अुत्कटतासे अस्पृश्यताका काम करेगा, अुसके पास सविनयभंगके लिअे समय ही कहाँ रहेगा? और आर्डिनेंस वापस ले लें, तो फिर सविनयभंगकी गुंजाअिश ही कहाँ है? मगर ये तभी समझेंगे, जब हमारे लोगोंमें शुद्ध सविनयभंगकी भावना हो, शुद्ध अहिंसा हो।"

अिस खबरसे पहले 'टाअिम्स' में बड़ोदा और काश्मीर राज्यके अछूतपनके नाशकी घोषणा करनेकी अच्छी खबरें आज आ गअी थीं।

मैंने वल्लभभाअीसे कहा: "अिस खबरका भी भारत सरकार पर असर पड़े बिना नहीं रह सकता।"

गांधी जब तक सविनयभंग नहीं छोड़ता, तब तक मिलनेकी अिजाजत नहीं मिलेगी, यह जवाब पाँच दिन पहले शौकतअलीको देनेवाले यह लिखें कि अस्पृश्यताके बारेमें बापू किसीसे भी मुलाक़ात कर सकते हैं, तो अिसके लिअे क्या कहा जाय? मगर चमत्कारको नमस्कार है। कल मगनभाअी देसाअीको पत्र लिखते हुअे बापूने जिस अनासक्तिको साधनेका बताया है और अुस पत्रमें जो अीश्वरार्पण बुद्धि दिखाअी देती है, कहा जा सकता है कि यह अुसीका शुद्ध फल है। अैसे फल अभी कितने ही निकलेंगे। मगनभाअीके नाम पत्र:

"जैसे-जैसे अीश्वर पर आस्था बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे कर्तव्य-कर्ममें रस बढ़ता जाता है, जानकारी बढ़ती जाती है, सावधानी बढ़ती जाती है और अुसीके साथ निश्चिन्तता और धीरज बढ़ता जाता है, यह मेरा अनुभव दृढ़ होता जाता है। . . .

"मेरी श्रद्धा अमर्यादित है, अिसलिअे मैं यह मानता हूँ कि छोटा-बड़ा सब कुछ अीश्वर ही कराता है। वह यह किस तरह कराता होगा, यह मैं नहीं जानता। मगर जिसने तन, मन और धन यानी सर्वस्व अुसे सौंप दिया है, वह यह मानता हो कि वह खुद कुछ कर रहा है, तो कहा जायगा कि वह चोर बन गया है। अेक भी काम मैं करता हूँ, अैसा मूर्च्छामें मानकर मैं पाप नहीं कमाअूँगा। मूर्च्छामें भी मैं अैसा मान लेता होअूँ कि यह तो मैंने किया, या लौकिक भाषामें विनोदके लिअे या घुन्ना न दीखनेके खयालसे कहता होअूँ, तो यह मूर्खता है। सच तो यह है कि दिन-दिन शून्यता बढ़ती जाती है, अिसलिअे जब यह गर्व मनमें आ जाता है कि मैं कर रहा हूँ, तब दुःख होता है।"

४–११–'३२

अस्पृश्यताके बारेमें अब तकका सारा अिकट्ठा हुआ पत्र-व्यवहार कल बापूने रातको सब साफ कर दिया। बहुतोंको अपने वक्तव्यका अिंतज़ार करनेको कह दिया। और रातको ही वक्तव्य लिखवाना शुरू कर दिया। १८ पन्नेका यह बयान अेक चिरस्थायी साहित्यके रूपमें रह जायगा।

अेण्ड्रूज़का सुन्दर पत्र आया था। अुन्हें जवाब दिया:

"प्यारे चार्ली,

"मुझे दो पत्रोंका जवाब देना है। बेशक तुम्हारा निर्णय ठीक है। तुम्हारे यहाँकी अस्पृश्यताका प्रश्न अेक तरहसे हमारे यहाँसे ज्यादा पेचीदा है।

यहाँकी अस्पृश्यता मरती हुआी रूढ़ि मानी जा सकती है। अुसपर घातक वार करनेवाले सुधारकोंकी सेना बराबर बढ़ती जा रही है। तुम्हारे वहाँकी अस्पृश्यताके मरनेके कोअी आसार दिखाअी नहीं पड़ते। विज्ञानके नाम पर अुसका समर्थन करनेवाले लोग बहुत मिल जाते हैं और तुम्हारे वहाँ कार्यकर्ता भी बहुत थोड़े हैं। लेकिन जैसा तुमने और मैंने बार-बार अनुभव किया है, जो मनुष्यके लिअे मुश्किल होता है वह अीश्वरके लिअे आसान है। हमें तो अपने हिस्सेका काम कर डालना है। मैं यह प्रार्थना करूँगा कि तुम्हें अपने काममें विजय प्राप्त हो।

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अिस गर्दभबन्धु (शरीर) को मैं मार डालना नहीं चाहता। वह अीश्वरके हाथोंमें सही सलामत है। और अुसे अिसे मारना होगा, तो मेरे या तुम्हारे प्रयत्न अिसे बचा नहीं सकेंगे। अभी तो यह खूब फल, बकरीके दूध और अुसमें डाली हुअी घर पर बनाअी हुअी बिना छने गेहूँके आटेकी रोटी पर पुष्ट होता जा रहा है।

"गुरुदेव अब भी प्रेम बरसा रहे हैं। अुस छोटेसे अुपवाससे मुझे वह खजाना मिला है, जो मैंने सपनेमें भी नहीं सोचा था। अुसमें सबसे क़ीमती चीज़ गुरुदेव हैं। किसीने मुझसे कहा होता कि 'गुरुदेवको पानेके लिअे अुपवास करो', तो और कोअी विचार किये बिना मैंने कर दिया होता। अुनके हृदयमें अेक कोना पानेके लिअे मैं तरस रहा था। अीश्वरकी कृपासे अुपवासके जरिये मैंने वह कोना पा लिया।

"हम सबकी तरफ़से प्यार।

तुम्हारा
मोहन"

वज़ेको बुलाकर अे० पी० आअी० को वक्तव्य देनेका अिन्तज़ाम किया। वज़ेसे मिलकर आनेके बाद चलते-चलते 'क्रॉनिकल' में आअी हुअी खबरों पर चर्चा चली। अुनमेंसे अेक यह थी कि कमला नेहरूको मूर्च्छा आ गअी और फिर अुसने बिस्तरसे अेक हृदयद्रावक बयान दिया। दूसरी यह थी कि मालवीयजीने यह स्वीकार किया था कि अुनको अभी तक जो प्रकाश दिखाअी नहीं पड़ा था, वह अब दीख रहा है। और शौकतअलीके भाषणकी बात थी।

अिस सब पर बापू कहने लगे: "अब जी में तो अैसा आता है—जो भी यह अुड़ता हुआ विचार है — कि मंगलवार तक ये लोग अेकता क़ायम न कर सकें, तो अुपवास करनेका नोटिस दे दिया जाय!"

वल्लभभाअी चुप रह गये। वे किसी कामसे बाहर गये तो मैंने चर्चा की: "यह चीज़ मुझे पसन्द है कि परिषद् होनेके समय सिर्फ अेक शुभ प्रेरणा देनेके लिअे ही अुपवास किया जाय।"

बापू: "हॉं, यह मेरे मनमें न हो, सो बात नहीं है। मगर मैं जो बात कह रहा था वह तो अिस परिषद्‌का अच्छा नतीजा न निकले तब तक अुपवास करनेकी थी।"

मैं: "तब तो यह अेक बन्दूक हुअी।"

बापू: "हाँ।"

मैं: "यह बात मेरे गले नहीं अुतरती। पहली बात ही गले अुतरती है। अुसके विरुद्ध कोअी बोल ही नहीं सकता। अुसमें परिणाम पैदा करने पर जोर नहीं, वह सिर्फ आत्मशुद्धि और शुभेच्छाका ही चिन्ह है।"

बापू: "यह सब ठीक है। मगर तब तो वह गुप्त रूपसे ही करना चाहिये न? सरकारको खबर दें और वह जाहिर करनेकी मेहरबानी करे या न करे, तब तक तो परिषद पूरी हो जाय!"

मैं: "मगर हम अुसकी भी परवाह न करें!"

बापू: "मगर अिस पर अेक आपत्ति है। सरकार यह सोच सकती है कि अिसे किसी न किसी तरह बाहर निकलना ही है।"

मैं: "बेशक यह आपत्ति घातक है।"

बापू: "क्यों वल्लभभाअी, तुम क्या कहते हो?"

वल्लभभाअी: (चिढ़कर) "अब आप जरा लोगोंको आरामसे बैठने दीजिये! बेचारे वहाँ जमा हुअे हैं, अुन्हें जो सूझेगा सो करेंगे। तब फिर आप अिस तरह तमंचा दिखा कर किसलिअे लोगोंको घबराहटमें डालते हैं? दूसरे लोगोंको भी लगेगा कि यह आदमी तो निठल्ला है, बात बातमें अुपवास ही करता रहता है। छूटनेके लिअे यह बहाना है, अैसा भी मान सकते हैं।"

बापू: (हँसकर) "मगर महादेव कहता है वैसा अुपवास?"

वल्लभभाअी: "किसी भी तरहका नहीं!"

बापू: "तो अध्यक्ष महोदयकी बिलकुल नामंजूरी ही है न?"

वल्लभभाअी: "हाँ।"

बापू: "खैर, तो यह बात खतम हुअी। तुम जिसके लिअे अिनकार कर दो, वह हो सकता है?"

वल्लभभाअी: "यह तो हमारी परीक्षा लेनेको आपने पूछा था। आप तो अैसे हैं कि हम हाँ कहें, तो आप ना कहेंगे और हम ना कहेंगे, तो आप हाँ कहेंगे!"

बापू: "वाह, तब तो मुझे सचमुच अुपवास करना चाहिये न?"

वल्लभभाअी: (हँसकर) "अुपवास करना हो तो अिन सब गोलमेज़ परिषद्‌में जानेवालोंके विरुद्ध कीजिये न!"

बापू: “वह तुम्हें करना चाहिये। जाओ, तुम्हें अिजाज़त देता हूँ।”

वल्लभभाअी: “जी हाँ। मैं किसलिअे करूँ? मैं करूँ तो ये लोग मुझे मर जाने दें। आपके ये सब मित्र हैं, अिसलिअे शायद मान जायँ! मगर जानेवाले क्या वापस आनेवाले हैं? जाने दीजिये यह बात! अेक बात है — अिस देशमें सब बर्फ़ जैसे ठंडे होकर बैठ गये दीखते हैं। चलिये न हम तीनों आदमी अुनके खिलाफ़ अुपवास करें।”

बापू: “तुम्हारी यह बात सोलह आने ठीक है, मगर अिसका अवसर अभी नहीं आया। यह अवसर आ ज़रूर सकता है, लेकिन आज नहीं यह मुझे स्पष्ट दीखता है।”

वल्लभभाअी: “आपकी अिजाज़त हो, तो अिसके लिअे तो मैं अकेला करूँ।”

५-११-’३२

कलके बयानमें अुपवासका रहस्य समझाते हुअे यह कहा था कि वह अस्पृश्यता निवारणके चाहनेवालों, परन्तु न करनेवालोंके खिलाफ़ है। मैंने पूछा, मगर यह क्यों नहीं कहा कि वह सनातनियोंके लिअे है।

बापू: “यह नहीं कहा जा सकता। वह ठहरा बड़ा समूह। दावा तो मेरा है कि मैं सनातनी हूँ। अिस अर्थमें कि आम लोग हमेशाके लिअे मेरी बात सुनेंगे, अिन लोगोंकी नहीं सुनेंगे। मगर यह कहूँ कि अिन लोगोंके लिअे है, तो यह कहना पड़े कि ये लोग दयाके पात्र हैं। थोड़ेसे अंग्रेज़ों या आंबेडकर या दूसरे कुछ लोगोंके लिअे है, यह जो कहा था, अुसका कारण यह है कि अुनकी संख्या थोड़ीसी थी। यह तो बड़ा समूह है। अिन्हें मेरी दयाकी ज़रूरत नहीं। अिन पर असर होगा, अिसमें शक नहीं। अिनके दिल पिघलानेके लिअे यह है, अिस बारेमें भी मुझे शंका नहीं। मगर यह बात कही नहीं जा सकती।”

आज दूसरा निवेदन गया। वज़े, कोदण्डराव और लिमये लेने आये थे।

बहुतसे तार दिये। राजाजी, बिड़ला और ठक्करको आनेका तार दिया। सरूपरानीको कमलाकी तबीयतके बारेमें तार दिया।

रातको हनुमानप्रसादके पत्र परसे तीसरा बयान लिखवाया और हनुमानप्रसादको लम्बा पत्र लिखा। हनुमानप्रसादकी शिकायत यह थी कि सुधारक सनातनियों पर अत्याचार करने लगे हैं, अस्पृश्यता निवारणने मर्यादा छोड़ दी है और जबरन् मन्दिरप्रवेश होता है, अित्यादि।

सतीशबाबूको वर्ण और जातिभेद पर लम्बा पत्र लिखा:

“ अखबारोंके नाम दिये हुअे बयानमें मैंने अपनी स्थिति समझानेका प्रयत्न किया है। आपने मेरा बयान देखा होगा। मैं जानना चाहता हूँ कि आपको अिससे सन्तोष हुआ या नहीं। जैसा मैं हमेशासे करता आया हूँ, जाति और वर्णमें मैं निश्चित रूपमें फ़र्क मानता हूँ। जातियाँ असंख्य हैं और आजकी अुनकी हालतमें वे हिन्दू समाज पर बोझकी तरह हैं। अिसीलिअे आप और मैं जातिभेदका पालन नहीं करते। वर्ण दूसरे सिद्धान्त पर रचे गये हैं। वर्णका अर्थ धन्धा होता है। भोजन-व्यवहार और कन्या-व्यवहारके साथ अुसका कोअी वास्ता नहीं। चारों मुख्य धन्धोंवाले लोग पहले अेक-दूसरेके साथ खाते और अेक-दूसरेके साथ शादियाँ भी करते थे। और अैसा करनेसे स्वाभाविक रीतिसे ही अुनके वर्णको कोअी आँच नहीं आती थी। भगवद्गीतामें अलग-अलग वर्णोंकी जो व्याख्या दी गअी है, अुस परसे यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है। मनुष्य जब अपने बाप-दादेका धन्धा छोड़ देता है, तब वह वर्णसे पतित हो जाता है। आज तो हमारे लिअे वर्णधर्म खोया हुआ धन है। समाजमें पूरी तरह गड़बड़ हो गअी है। जहाँ तक मुझे दिखाअी देता है, वहाँ तक अेक ही वर्ण है, और वह है शूद्र। वर्णोंकी यह गड़बड़ हमारे लिअे शर्मकी बात है। मगर हम सब अपनेको शूद्र कहें, तो अिसमें कोअी शर्मकी बात नहीं, क्योंकि धर्ममें कोअी अूँचा या कोअी नीचा नहीं। शूद्रका पेशा अुतना ही प्रतिष्ठित और आवश्यक है जितना ब्राह्मणका। अिसी तरह क्षत्रिय और वैश्यके बारेमें है। अपनेको शूद्र कहनेमें हमारे अभिमानको चोट पहुँचती हो, तो अुसका कोअी अुपाय नहीं। अेक क्षणके विचारसे आप यह समझ सकेंगे। यह सुन्दर स्थिति आम तौर पर स्वीकार कर ली जाय, तो हरिजनोंका दर्जा तय करनेकी कठिनाअी हल हो जाती है। अुन्हें समाजमें अपनाने पर कौनसे वर्णके माने जायँ? हम यह कहें कि शूद्र वर्णके, तो हम तुरन्त यह मान लेते हैं कि वर्ण-धर्ममें अलग-अलग दर्जे हैं। और सबसे नीचा दर्जा हरिजनोंको दिया जाय, तो अिस पर अुनका आपत्ति करना वाजिब ही है। मगर हम सभी शूद्र बन जायँ, तो कोअी मुश्किल नहीं रहती। १९१५ में नेलोरमें अेक समाज सुधारकोंकी सभामें, मुझे याद है, अेक विद्वान् शास्त्रीने सुझाया था कि वर्णोंकी गड़बड़ हो गअी है, अिसलिअे जैसे शुरूमें ब्राह्मणोंका ही अेक वर्ण था, वैसे ही अब हम सबको ब्राह्मण कहलाना चाहिये। यह बात मुझे अुस वक्त पसन्द नहीं आअी थी और आज अुससे भी कम पसन्द हो सकती है। हरअेक आदमी सेवा कर सकता है और अिसलिअे वह शूद्र कहला सकता है। मगर हरअेक आदमी विद्वान् नहीं बन सकता और हरअेक ज्ञानी तो हो ही नहीं सकता। अिसलिअे हम सबके ब्राह्मण कहलानेमें असत्य है। आज भोजन-व्यवहार और कन्या-व्यवहारमें

जो धार्मिकता समझी जाती है अुसे हम निकाल दें, तो हम कहाँ खायें और अपने बच्चोंको कहाँ ब्याहें, यह केवल हमारी मर्ज़ीका सवाल बन जाता है। फिर तो अस्पृश्यता निवारणका जो अर्थ मैंने सदा किया है वही ठीक होगा। आपको यह अच्छी तरह स्पष्ट हो जाना चाहिये।"

अलीगढ़ विश्वविद्यालयके संस्कृतके प्रो० हबीबुर् रहमानने अेक विचित्र पत्र लिखा :

"हिन्दू धर्ममें अछूतपन तो ज़रूर है। आपके शास्त्र तो शूद्र वेदोच्चार सुन लें, तो अुनके कानोंमें सीसा भर देनेकी सलाह देते हैं। पहले अिन शास्त्रों पर पाबन्दी लगावाअिये। फिर अस्पृश्यता निवारणकी बात कीजिये। भगवद्गीताके अुपोद्घातमें कृष्णार्जुनकी बातको काल्पनिक बताया है, यह भी हक़ीकतके खिलाफ़ है। क़रार आपने हिन्दुओंकी मत संख्या बढ़ानेके लिअे किया है, दुनियासे अछूतपन मिटानेके लिअे करनेकी बात ग़लत है। अैसा होता तो दुनियामें अछूतपनके रहते हुअे भी आपने अुपवास कैसे छोड़ दिया?"

अिन्हें लिखा (हिन्दीमें):

"आपका पत्र पाकर मुझे आनन्द हुआ। अब आपकी पहचान भेजिये। आपने संस्कृत भाषाका अभ्यास कहाँ तक किया? कितने बरसों तक किया? आपकी अुम्र कितनी है? कितने बरसोंसे आप अध्यापक हुअे हैं? कितने लड़के संस्कृतका अभ्यास कर रहे हैं? अुनमेंसे कितने मुसलमान हैं? कितने हिन्दू? आपके मातापिता जीते हैं? और हैं तो पिताजी क्या करते हैं?

"अब आपके प्रश्नोंका अुत्तर देनेकी कोशिश करता हूँ। हिन्दू धर्मकी खसूसियत यह है कि अुसमें काफ़ी विचार स्वातंत्र्य है। और अुसमें हरअेक धर्मके प्रति अुदारभाव होनेके कारण अुसमें जो कुछ अच्छी बातें रहती हैं, अुनको हिन्दू-धर्मी मान सकता है। अितना ही नहीं, परन्तु माननेका अुसका कर्तव्य है। अैसा होनेके कारण हिन्दू धर्मग्रन्थोंके अर्थका दिन प्रतिदिन विकास होता रहा है।

"महाभारत और गीताके पात्रोंके बारेमें जो कुछ मैंने कहा है, वह मेरा कोअी मौलिक खयाल नहीं है, लेकिन मैंने टीकाग्रन्थोंमेंसे यह विचार पाया है। सदानन्द मिश्रकृत भगवद्गीताकी अेक टीका है, अुसमें अिस विचारको अच्छी तरह बढ़ाया है। प्राकृत ग्रन्थोंमें भी अैसे विचार बताये गये हैं। हिन्दू धर्मके नामसे प्रचलित ग्रन्थोंमें जो कुछ लिखा गया है, वह सबके सब धर्मवचन हैं अैसा नहीं है, और हिन्दू जनताको यह अब मानना चाहिये अैसा भी नहीं है। वेदपाठ सुननेवाले शूद्रके कानमें गरम सीसा डालनेकी बातको अगर अैतिहासिक मानी जाय, तो मैं अुसे धर्म माननेके लिअे हरगिज़ तैयार नहीं हूँ और अैसे असंख्य हिन्दू हैं, जो अुसे धर्मवचन नहीं मानते हैं। हिन्दू धर्मके लिअे अेक

कसौटी रखी गअी है, जिसको अेक बालक भी समझ सकता है। जो बुद्धिग्राह्य वस्तु नहीं है और बुद्धिसे विपरीत है, वह कभी धर्म नहीं हो सकती है; और जो सत्य और अहिंसासे विपरीत है, वह भी धर्म नहीं हो सकती है।

"अब रही यरवडा समझौतेकी बात। कमसे कम मेरे नज़दीक 'वोट'की गिनतीकी वह बात किसी हालतमें नहीं थी। मेरे नज़दीक हरिजन भाअियोंका अंग्रेजी प्रधानमण्डलके प्रस्तावसे जो बुरा हो रहा था अुसीको मिटानेकी बात थी। अनशन व्रतके बारेमें आपसे मैं क्या विनय करूँ? अितना ही कह सकता हूँ कि वह अीश्वर प्रेरित बात थी, अुसको मैं रोक ही नहीं सकता था।"

वल्लभभाअीकी टीका: "अैसोंके साथ विनय क्या? ये विनय सुननेवाले हैं?"

बापू: "क्यों नहीं? अनसारीमें क्या विनय नहीं है? जोहरामें नहीं है? रेहानामें नहीं है? बेगम मुहम्मद आलममें विनयका पार है? बात यह है कि अिसे हमें जो कहना था सो कह दिया कि भाअी हिन्दू धर्म हम समझते हैं, तुम नहीं समझ सकते; अिसलिअे अिसमें सिर न पचाओ।"

अेक मोढ पत्रिका भेजनेवालेको लिखा:

"मोढोंकी सेवाके बजाय हिन्दुस्तानी मात्रकी सेवा क्यों नहीं? ये छोटे-छोटे बाड़े कहाँ तक बने रहेंगे? बुजुर्गोंको पसन्द न हो और जिनसे हो कुछ भी नहीं, अैसे आन्दोलनोंमें क्या पड़ना? और यह नहीं मानना चाहिये कि अिस तरह पर्चे बढ़ते रहें, तो अुनसे कोअी लाभ होता है।"

मालिक और ट्रस्टीका भेद सतीशबाबूके बीमार लड़केको समझाया:

"तुझे जब मैंने कहा था कि शरीरको अपना नहीं मानना चाहिये, तब मेरे कहनेका अर्थ, मैं आशा रखता हूँ कि तू अच्छी तरह समझ गया होगा। यह शरीर अीश्वरका है। अीश्वरने वह तुझे थोड़े समयके लिअे स्वच्छ और नीरोग रखनेके लिअे और अुसे सेवामें लगानेके लिअे दिया है। अिसलिअे तू अुसका ट्रस्टी है, मालिक नहीं। मालिक अपनी सम्पत्तिका दुरुपयोग भी कर सकता है, मगर ट्रस्टी या रक्षकको तो बहुत ही सावधानी रखनी चाहिये। सौंपी हुअी सम्पत्तिका अुसे अच्छेसे अच्छा अुपयोग करना है। अिसलिअे तुझे अपने शरीरके बारेमें चिन्ता तो नहीं करनी चाहिये, मगर साथ ही अुसकी भरसक सँभाल अवश्य रखनी चाहिये। अीश्वरकी जब अिच्छा होगी, तब वह अिसे वापस ले लेगा।"

गोविन्ददासकी पत्नी लिखती है: "आपने मुझे तो लड़की मान लिया, मगर अिन्हें लड़का नहीं माना, अिस पर अिन्हें दुःख हुआ है। मैंने कहा कि लड़का और दामाद तो अेक ही बात है।" अुसे लिखा (हिन्दीमें):

"तुम्हारा पत्र पाकर बहुत आनन्द हुआ। तुम्हारे विनोदसे ही मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारा स्वास्थ्य अब ठीक हो रहा है। अीश्वर तुमको पूर्ण आरोग्य देवे। यदि वहीं शरीर अच्छा होवे, तो जबलपुर जानेकी शीघ्रता करनेका कोअी कारण न माना जाय।

"पुरुष लोगोंको पुत्र बनानेमें बड़ी आपत्ति रहती है। वे लोग बहुत घमण्डी रहते हैं और पिताकी मिलकतमें हिस्सा माँगते हैं। गोविन्ददासने छोड़ दिया, सो तो अलग बात हुअी। पुत्री बेचारी तो हिस्सा माँग ही नहीं सकती। और मेरे जैसे जो पिता बन बैठे हैं, वह तो पुत्रियोंसे सेवा ही लेते हैं। देनेकी तो बात कहाँसे? मेरी पुत्री बननेमें क्या-क्या कठिनाअियाँ हैं वह तुमको बता दिया।"

अिस तरह अिस विश्वकुटुम्बमें नअी वृद्धि हुअी।

६-११-'३२

आज सुबह घूमते-घूमते अेक नया बम फेंककर बापूने हमें डरा दिया। धीरेसे कहने लगे: "दो दिनसे मुझे लग रहा है कि राजाजी अैसा हुक्म निकालें कि यह लड़ाअी मुल्तवी कर दी जाय और सारे कार्यकर्ताओंसे यह कह दें कि जिस जगह व्यक्तिगत सविनयभंग की ज़रूरत जरूरत हो, अुसे छोड़ कर सब जगह अस्पृश्यता निवारणका ही काम किया जाय। अब जो कुछ हो रहा है, वह कोअी लड़ाअी नहीं है। अिससे किसीको कोअी लाभ नहीं, नुक़सान ही है। मुझे तो यह भी लगता है कि अिस तरहसे लड़ाअीको सारे देशमें व्यापक करनेमें भूल हुअी थी। अुसे बारडोलीकी तरह अेक ही जगह केन्द्रित और तीव्र बना कर रखते, तो अच्छा होता। मगर यह बात छोड़ दें। मुझे तो अस्पृश्यता निवारणका काम सांगोपांग होनेके लिअे भी यह चीज़ करने लायक़ लगती है।

"हनुमानप्रसादका और गोपाल मेननका पत्र है। अिससे हम देख सकते हैं कि लोग मर्यादा छोड़ दें, तो अस्पृश्यता निवारणका सारा काम नष्ट हो जाय। और अिसके लिअे राजाजीको गुप्त सन्देश तो भेजा नहीं जा सकता। भेजा जा सकता हो, तो भी हम नहीं भेजेंगे। अिसलिअे मुझे सरकारको पत्र लिखना चाहिये कि अिस तरहकी सलाह देनेके लिअे मुझे राजगोपालाचार्य और दूसरोंके साथ मिलना है। मुझे अिसकी सुविधा कर दीजिये। सुविधा न दे, तो यह माँग की जाय कि सारा पत्रव्यवहार छाप दीजिये।" यह कहकर वल्लभभाअीकी राय पूछी।

वल्लभभाअी कहने लगे: "अिसका अर्थ क्या होगा?"

बापू: "अर्थ कुछ भी हो, अुसकी हमें क्या परवाह है? अर्थ यह होगा कि हार गये और शरण चले गये, यही न? मैं तो यह माननेवाला

आदमी हूँ कि हार गये हों, तो हार माननेमें सत्याग्रहीको शर्म न होनी चाहिये। मगर यह तो मुल्तवी करनेकी बात है, जिससे हम बादमें लड़ाअी ज्यादा अच्छी तरह चला सकें। सम्भव है अिसे ये लोग नामंजूर ही कर दें। जैसे करबलाकी लड़ाअीमें हुआ था कि यज़ीदको अिमाम हुसैनने सन्देश भेजा था कि मुझे लड़ना नहीं है, लड़ सकनेकी हालत नहीं है, बच्चे पानीके बिना तड़प रहे हैं। अिस पर वह कहने लगा: 'आकर मेरा हाथ चूम और मुझे खलीफ़ा मान।' तब हुसैनने कहा: 'तब तो हम मरना मंजूर करेंगे।' मैं मुल्तवी रखनेकी बात कह रहा हूँ। अुनकी सत्ता मंजूर करनेकी बात ही नहीं है। हमारी तरफसे लड़ाअी बन्द होती है; अुन्हें बन्द करना हो तो करें, नहीं तो न करें।"

वल्लभभाअी: "मुल्तवी नहीं कर सकते सो बात नहीं। मगर अुन्हें तो यही लगेगा न कि जो वे चाहते थे सो हो गया? और जो लड़ रहे हैं अुनका क्या होगा?"

बापू: "अुन्हें लड़ने दिया जाय; सिर्फ़ व्यापक रूप ही मिट जायगा।"

वल्लभभाअीने कोअी जवाब नहीं दिया, परेशान हुअे, व्याकुल हुअे। थोड़ी देर तक यही हालत रही। तब बापू कहने लगे: "यह तो मैंने तुम्हें कह दिया। अब अिस पर विचार करना और बादमें जवाब देना। हमें जल्दी नहीं है।"

अिसके बाद वल्लभभाअी चले गये। मैं और बापू अकेले चक्कर काटने लगे। मुझे कहने लगे: "तुम्हें क्या लगता है?"

मैंने कहा: "अगर लड़ाअी मुल्तवी करनी हो तो राजगोपालाचार्य करें; अुन्हें कौन रोकता है? मगर हम क्यों सुझायें? मुल्तवी की जा सकती है, यह मैं समझता हूँ। अिसमें कोअी सविनयभंग भूल जाने या अुससे अलग हो जानेकी बात नहीं। आप अेक तरहसे पीछे हटनेकी तो बात ज़रूर करते हैं न? मगर यह सूचना हमारी तरफसे किसलिअे जाय?"

बापू: "अगर यह सूचना अुचित हो, तो हमारी तरफसे क्यों नहीं जाय? सत्याग्रहीको तो हमेशा खुले तौर पर विचार करना चाहिये। सत्याग्रहीके अंतरमें क्या है, अुसे सारी दुनिया जान ले यह ज़रूरी है। और जैसा तुम कहते हो यह पीछे हटनेकी नहीं, मगर सिर्फ मोर्चा बदलनेकी बात है। लड़ाअी जारी ही रहेगी, परन्तु दूसरे मोर्चे पर। अुपवासके बाद जो बयान दिया और अुपवासके दिनोंमें जो बयान दिया, अुसमें भी मैं तो खुले तौर पर ही विचार कर रहा था न? सरकारको भी अजीब ही लगेगा कि ये कैसे लड़नेवाले हैं! अुपवासके समय

बापू और सरदार

छोड़नेकी माँग की, तब शर्तें करनेका साफ अिनकार कर दिया। और अब लड़ाअी बन्द करनेकी बात करते है!"

मैं: "यह तो ठीक; मगर यह सूचना यहाँसे की ही कैसे जाय? आपके क़ानूनके अनुसार मृत्यु (civil death) के सिद्धान्तके भी खिलाफ है। हमें यहाँ रहते हुअे बाहरकी हालतका क्या पता चले?"

बापू: "यह बात ठीक है। मगर हम तो सूचना ही कर रहे हैं न? और यहाँ रहते हुअे हम सच्ची सूचना न कर सकते हों, सो बात नहीं। कर भी सकते हैं।"

मैं: "मुझे यह बात कुछ गले नहीं अुतरती।"

७-११-'३२

आश्रमकी डाक। नारणदासभाअीको जेलकी खुराकके अनुसार खुराक जारी करनेकी चर्चा करनेका सुझाया। जेलमें सामूहिक स्वास्थ्य अितना कैसे क़ायम रहता है?

पूँजाभाअीके बारेमें:

"पूँजाभाअी तो हमारे पास ही हैं। मुझे अुनकी ग़ैरमौजूदगी महसूस नहीं होती, क्योंकि अैसा लगता ही नहीं कि वे नहीं हैं। अब तक तो वे कुछ लेते थे और कुछ देते थे। अब तो सिर्फ देते ही हैं।"

पुत्रवधू नीमूको विनोदपूर्ण पत्र:

"तुझे कहानदास नाम अच्छा नहीं लगता, तो फिर रामदासकी भी अैसी ही बात समझी जाय न? तब तो तुझे रामदासके लिअे भी बत्तीस बरसकी अुम्रमें नया नाम ढूँढ़ना चाहिये? रामदास खुद दास ठहरा, अिसलिअे अुसे दूसरा दास ही पसन्द होगा। तो फिर अुसकी पसन्द किस कामकी? मुझे तो तुझे रिझाना है। निर्मलदास रखें तो? अथवा निर्मललाल? और भी अपनी पसन्दके नाम भेजना। रामदासके लिअे भी कोअी नया नाम भेजना!"

"क्रोधके प्रति क्रोध नहीं, अवगुणके प्रति अवगुण नहीं; क्रोधके सामने शान्ति, अवगुणके बदले गुण, गालीके बदले प्रेम और बुराअीके बदले भलाअी — यह धर्म है, यह आश्रमव्यवहार है। खबरदार, अिसमें चूके तो।"

अीश्वर बुरे काम करते समय कैसे रास्ता दिखाता है, अैसे अेक बालकके प्रश्नके अुत्तरमें:

"अीश्वर अपने भक्तोंको रास्ता दिखाता है। जो अीश्वरका नाम तक नहीं लेता, अुसे याद तक नहीं करता, अुसे भी अीश्वर रास्ता दिखाता है यह कैसे कहा जा सकता है? हम सब अमुक संस्कारोंके साथ जन्म लेते हैं,

अुनके अनुसार हमें बुद्धि सूझती है। अिन संस्कारोंको मिटानेकी शक्ति अीश्वरने सबको दी है। अिसका जो अुपयोग करेगा, वह अिनको मिटा सकता है।"

आज दोपहरको प्यारेलाल, कोदण्डराव और अे० पी० आअी० के शास्त्री आये। 'अिंडियन सोशियल रिफ़ॉर्मर' में अुपवासके दिनोंमें बापूके नाम श्रीमती ज़गलूल पाशा और नहास पाशाके आये हुअे तारों और अुनके बापूके दिये हुअे जवाबोंकी कथित नक़लें 'फ्री प्रेस जर्नल' से ली हुअी आअी थीं। हमको मिले हुअे तारों और यहाँसे गये हुअे जवाबोंमें और अिनमें बहुत फ़र्क़ था, यह देखकर आश्चर्य हुआ। 'फ्री प्रेस' पर गुस्सा आया। अैसा सवाल अुठा कि ये जवाब अिसने पैदा कर लिये होंगे। बापूने सच्ची नक़ल मुझसे ढुँढ़वा ली और अिस पर अेक तेज मुलाक़ात देनेकी तैयारीमें थे। अितनेमें प्यारेलालसे मालूम हुआ कि ये सब तार अुपवासके दिनोंमें छपे हों या न छपे हों, मगर हालमें 'अलबलाग' नामके अरब अखबारमें मिस्री भाषासे आये थे और अब अरबीसे अंग्रेज़ीमें प्रकाशित हुअे हैं! किसी भी चीज़के सभी पहलू हमें मालूम ही नहीं होते। और अिससे यह अच्छी तरह समझमें आ गया कि किसी भी बातमें क्रोध आ जाय, तो यह मान लेना ही अुचित है कि कोअी न कोअी पहलू हमसे अज्ञात रहा होगा।

बापू यहाँ सिंगरकी सीनेकी मशीन चलाते हैं, अैसी खबर 'फ्री प्रेस' अखबारने अुड़ाअी थी और अुस बारेमें बापूने पोलाकको लिखा था। अुस मामलेमें भी अैसा ही हुआ था, यह आज ही मालूम हुआ। अुसका जो प्रतिनिधि अिसके लिअे ज़िम्मेदार था, अुसने सफ़ाअी दी कि 'मगन रेंटियो' 'मगन रेंटियो' ('मगन चरखा') अिस तरह दो-तीन बार मैंने टेलीफोनमें कहा। अुसे बम्बअीवालोंने 'मदर अिण्डिया' समझ लिया। और यह चरखा सिंगरकी सीनेकी मशीनकी तरह चलता है, अिस बातका यह अर्थ निकाला कि सीनेकी मशीन चलाते हैं। अिसलिअे अिसमें भी किसीका जानबूझकर तो क़सूर ही नहीं हुआ।

अे० पी० आअी० के शास्त्रीको बापूने गुरुवायुरके बारेमें सुन्दर मुलाकात दी। अेकाग्र चित्तसे, अेक भी शब्द पर रुके बिना, सतत प्रवाह चला जा रहा था। हिन्दू धर्म पर लोग क्यों क़ायम हैं, अिस सवालके जवाबमें कहा: "क्योंकि अुसमें अधिकसे अधिक विकास पानेका मौक़ा देनेकी सम्भावना है और कठोरसे कठोर अन्तरात्माको, गहरेसे गहरे विचारकको और पवित्रसे पवित्र मनुष्यको सन्तोष देनेकी शक्ति है।"

शास्त्रीने तो सारी रिपोर्ट अच्छे ढंगसे ली थी, फिर भी अखबारवालोंने "गहरेसे गहरे विचारककी कठोरसे कठोर अन्तरात्माको" बना दिया!

रातको आकर रामदास-गीता लिख रहे थे। रामदासका शुद्ध साधु हृदय बापूको अपनी तरफ़ बहुत ही खींच रहा है और अुसे मदद देनेके लिअे बापू कुछ भी करनेको तैयार हैं, यह आजका पत्र और विशेष परिश्रम करके तैयार की हुअी रामदास-गीता बताती है। लिखाते समय बार-बार कहते थे: "रामदासकी शक्ति और स्वभाव देखकर मैंने यह संग्रह किया है।"

रामदासके लिअे पिताके असीम प्रेमने बापूसे हाथकी अशक्तिके बावजूद भी गीतामेंसे चुने हुअे अिकतालीस श्लोकोंकी नक़ल आज रातको करवाअी। बीस श्लोक हुअे थे कि मैं जा पहुँचा।

मैंने कहा: "मुझे कहा होता तो क्या मैं नक़ल न कर देता?"

बापू: "मगर तब तो वह पुण्य तुम्हें मिल जाता?"

मैंने कहा: "थोड़ासा हिस्सा मुझे भी मिलता तो क्या हो जाता? मगर मुझे लगता है कि रामदासकी दृष्टिसे आप ही करें तो अच्छा।"

फिर अपने आप ही मुझे बाक़ीके श्लोकोंकी नक़ल करनेको दे दी। अुसके साथ प्रेमसे अुमड़ता हुआ पत्र भेजा:

"तेरे पत्रका जवाब आज भेजता हूँ। अिससे भी जल्दी देनेका अिरादा था। मगर तेरी अिच्छाके अनुसार श्लोक ढूँढ़ने लगा, तब खयाल हुआ कि तू जिन्हें आसानीसे पचा सके असे श्लोक अेक ही बारमें संग्रह करके भेज दूँ तो अच्छा। वह संग्रह आज कर सका हूँ और अिस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। अुसमें अध्याय और श्लोकका अंक दिया है, जिससे तू यह भी ढूँढ़ सके कि वे गीतामें कहाँ है। अिसमें तू देखेगा कि सभी श्लोक हृदयस्पर्शी हैं, असे हैं जिन्हें बालक भी झट समझ जाय। तू अिसमेंसे देख लेगा कि भगवानका यह वचन अेक बार नहीं, परन्तु दो-चार बार है कि जो अुसकी भक्ति करेगा अुसे आवश्यक बुद्धि वही दे देगा, अुसका निर्वाह भी वही करेगा। भक्तिका अर्थ है जिसमें अीश्वर रहता है असे जीवमात्रकी निःस्वार्थ भावसे की गअी सेवा। अिसमें आत्मशान्तिके लिअे रामनामका जप भी आ गया। फिर, तू देखेगा कि छठे अध्यायमेंसे जो संग्रह किया है, अुस संग्रहमें भी मैं फ़िलहाल तुझे जो कुछ देना चाहता हूँ वह आ जाता है। ग्यारहवें अध्यायके श्लोकोंका संग्रह अर्जुनकी की हुअी भव्य स्तुतिका भव्य भाग है। और अठारहवें अध्यायका आखिरी श्लोक गीताके अध्ययनका और अुस पर अध्ययनपूर्वक किये गये आचरणका फल है; यानी जहाँ श्रीकृष्ण है अर्थात् शुद्ध ज्ञान है और जहाँ अर्जुन है यानी ज्ञानपूर्वक कर्म है, वहाँ सब कुछ है। अिन श्लोकोंका मनन करनेसे तू देख सकेगा कि किसी भी तरहकी चिन्ता करनेकी सख्त मनाही

है। गीताका अभ्यास करनेवाला कोअी चिन्ता कर ही नहीं सकता। अैसी आज्ञा है कि सब कुछ अीश्वरके अर्पण कर दो। सब कुछ यानी किसी भी अपवादके बिना। और अिस तरह जो सर्वार्पण करेगा, वह फिर चिन्ताकी गठरीका भार क्यों अुठाये?

"तूने अब तो जान लिया होगा कि तेरे पेटकी गड़बड़ बहुत विचार और चिन्ताके कारण है, या खानपानमें किसी फेरबदलकी ज़रूरत है। बूतेसे बाहर अध्ययन भी नहीं करना चाहिये। मनके साथ तूने जो कुछ विचार कर लिये हैं, वे अब अपने आप मनमें पकते रहेंगे। तू बाहर निकलेगा तब तेरी शक्तिका अन्दाज़ लग जायगा। लगेगा या नहीं लगेगा, अिस झंझटमें तू अभीसे क्यों पड़े? अैसा करनेकी बिलकुल ज़रूरत नहीं। श्लोकोंका अर्थ 'अनासक्तियोग' में तो है ही, और सुरेन्द्र भी तेरे पास ही है। मैंने जो संग्रह किया है, अुसमें तू अपने आप या सुरेन्द्र वगैराकी सलाहसे कमीबेशी कर सकता है। अिन श्लोकोंके चुनावको नोट कर लिया था। मेरे पास जो गीता है, अुसमें अिन्हें नोट करते हुअे सहज भावसे मैंने अिसे 'रामदास-गीता' नाम दे दिया है। अब देखना है तुझे यह कहाँ तक ले जाती है।

"अब अेक हँसीकी बात लिखूँ। नीमूने बच्चेके नामकी माँग की। सविताने तो अुसे कहानजी नाम दे ही दिया है। अिस पर यह सोच कर कि तेरे नामके साथ मिल सके और सविताकी अिच्छा भी पूरी हो जाय, मैंने कहानदास सुझाया। लेकिन जिसके अन्तमें दास आये, वह नीमूको कैसे भाता? अिसलिअे अुसने नापसन्द किया और दूसरा नाम माँगा; और अन्तमें लिखा कि अितने पर भी तू कहानदास पसन्द कर ले, तो वह भी काम चला लेगी। वसुमतीने बुआजी होनेका दावा पेश किया और लिखा कि मैं तो अब बूढ़ा हो गया, अिसलिअे बूढ़ोंको शोभा देनेवाला नाम ढूँढ़ निकाला; यह क्या बुआजी मानेंगी? अिसलिअे अुसने अैसा नाम माँगा है, जो बीसवीं सदीको शोभा दे। वसुमतीको जवाब दे दिया है कि नाम देनेका ठेका बुआजीका ही होता है, अिसलिअे अुसे जो देना हो, वह दे दे। मैंने अुसकी पसंदगीके लिअे दो-चार नाम सुझाये हैं, जैसे कि फक्कड़लाल, छोगालाशंख, लखतरलाल, बारडोलीकर और साबरमतीवाला। और नीमूको सुझाया है निर्मललाल। और अुसे लिखा है कि यदि कहानदास नाम पसंद नहीं है, तो रामदास नाम शायद ही पसंद हो। अिसलिअे तेरे लिअे भी नया नाम माँगा है। यह तो सुझाते-सुझाते रह गया कि तेरा नाम 'निर्मलकान्त' रखे। मगर अैसा करने लगेंगे तो बीसवीं सदीके बजाय हम तो ठेठ रामायण-युगमें चले जायँगे, क्योंकि अुस जमानेमें पतिकी पहचान पत्नीके नामसे होती थी। रामचन्द्र सीतापति, कृष्ण लक्ष्मीकान्त,

महादेव पार्वतीपति, अैसे कअी अुदाहरण मिल जाते हैं। तुझे अिस गूढ़ प्रकरण पर कोअी प्रकाश डालना हो तो डालना।

"तूने पूछा है कि मैंने अनासक्ति कैसे साधी? मेरा काम सब स्वाभाविक होनेसे, यानी सत्यकी साधनामेंसे स्फुरित होनेके कारण, बहुत आसान हो गया है। जगत मात्रकी सेवा करनेकी भावना पैदा होनेके कारण अनासक्ति सहज ही आ जाती है। मैं अगर सिर्फ़ कुटुम्बियोंकी ही सेवा करने बैठ गया होता, तब तो अुसमें सहज ही राग पैदा हो जाता, आसक्ति भी रहती, व्याधि, मृत्यु वगैराके अुद्वेग भी रहते; मगर जहाँ असंख्योंकी सेवा अपना ली जाती है, वहाँ अुद्वेग भाग ही जाता है। किस किसकी मृत्यु या व्याधिका अुद्वेग किया जाय? वह लगभग असंभव हो जाता है। मगर अनासक्तिका मतलब जड़ता भी नहीं है, निर्दयता भी नहीं है, क्योंकि सेवा तो करनी ही होगी; अिसलिअे दयाकी भावना मन्द पड़नेके बजाय तीव्र होगी, कार्यदक्षता भी बढ़ेगी और अेकाग्रता भी बढ़ेगी। और ये सब अनासक्तिके चिन्ह हैं। फिर खूबी यह है कि अैसा करनेसे कुटुम्बसेवा मिट नहीं जाती, क्योंकि सबकी सेवामें यह सेवा भी आ जाती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि बा की, तुम भाअियोंकी या किसी भी कुटुम्बी जनकी सेवा मेरे हाथों कम हुअी हो, सो मैं नहीं मानता। अुसमेंसे आसक्ति अुड़ गअी और समभाव आ गया, अिससे वह शुद्ध हो गअी। मेरा विश्वास है कि अिससे तुमने किसीने कुछ भी खोया नहीं और मैंने तो बहुत कुछ पाया है। अिस प्रकार मेरे लिअे तो अनासक्ति सुलभ हो गअी। 'अनासक्ति' नाम तो गीताका अनुवाद पूरा करके अुसके लिअे अेक खास नाम काकाने माँगा तब सहज ही याद आ गया। सबकी सेवा करनी हो तो वह अनासक्ति-पूर्वक ही हो सकती है। और यह बात तो थी ही नहीं कि मैंने यह ज्ञान पानेके बाद अनासक्तिको अपनाया। मुझे तो रफ़्ता-रफ़्ता मालूम हुआ, आसपास रहनेवालोंको मुझसे पहले मालूम हुआ। मैं जब हिन्दुस्तान आया तब मुझे साधारण लोग 'कर्मयोगी' के रूपमें जानने लग गये थे। गीताका अध्ययन तो मैं दक्षिण अफ्रीकामें भी करता था, मगर 'कर्मयोगी' क्या होता है, यह सब मैंने सोच नहीं रखा था। परन्तु दूसरोंने देखा कि मेरे जीवनमें यह सब है और बादमें मुझे भी अैसा लगने लगा कि अुनकी बात सही है। अैसा सुयोग सभीको नहीं मिल सकता। मुझे मिला अिसका कारण मैं यह मानता हूँ कि मैं जन्मसे सत्यका पुजारी रहा हूँ। मगर तुझे अभी तो अिस चक्करमें पड़नेकी ज़रूरत नहीं। तुझे तो अभी अनासक्तिपूर्वक अनासक्ति साधनी है। यानी खेलते-कूदते आनंदपूर्वक जो सेवा हाथ आये अुसे कर डालना है। अैसा करते करते जो अध्ययन हो जाय वह कर ले। न नीमूका विचार कर, न बच्चोंका।

तेरा और अुनका विचार करनेवाला तो परमेश्वर है, यह तो अब तू नअी दृष्टिसे 'रामदास-गीता' में देखेगा। यह सिर्फ बुद्धिसे ही माननेका नहीं है, श्रद्धापूर्वक अमलमें लानेका है। अैसा करनेसे तू सुखी होगा और तुझे सब कुछ आ जायगा। नवें अध्यायमें भगवानका जो वचन है अुसे रट लेना — बड़ा दुराचारी भी अनन्य भावसे अुसकी भक्ति करे तो वह साधु है। पृथ्वी रसातलमें चली जाय, तो भी भगवानके वचन मिथ्या नहीं हो सकते। अब और क्या लिखूँ?"

राधाकान्त मालवीयका लम्बा पत्र:

८-११-'३२

"अुपवास बुरेसे बुरा बलात्कार है। आपका समझौता किसीको पसन्द नहीं आया। चिन्तामणि और कुँजरू तक को। और लोग भी यों ही 'हाँजी, हाँजी' करते हैं।" यह शिकायत थी। बापूने अिन्हें लिखा:

"श्री चिन्तामणि और श्री कुँजरूके बारेमें तुमने जो जानकारी अपने पत्रमें दी है, वह मेरे लिअे महत्त्वकी है। अिसलिअे या तो तुम्हें अुनसे अिस बातकी तसदीक और सहमति प्राप्त करके भेजनी चाहिये, या मुझे प्राप्त करनेकी स्वतंत्रता देनी चाहिये।"

फिर अिस पत्रका विस्तारसे चौथे बयानमें जवाब दिया।

अेक पंडितको (हिन्दीमें):

"बड़ी कठिनाअी सत्यपथ पर चलनेवालोंके लिअे यह है कि शास्त्र किसको कहें? जब संस्कृतमें लिखे हुअे स्मृति अित्यादि नामसे प्रचलित अनेक ग्रंथ मिलते हैं और अुसके विरोधी वचन भी मिलते हैं, तब सादा और श्रद्धालु मनुष्य क्या करेगा? अिसी कारण हिन्दू धर्मका सर्व सामान्य सिद्धान्त मैंने ग्रहण कर लिया है; सत्य और अहिंसासे जो आचार विरुद्ध है, वह निषिद्ध है और जो ग्रंथ अुसका विरोधी है, अुसे शास्त्र न माना जाय।"

कीकी ललवानीने लिखा:

"आपकी तो बड़ी कृपा है। मगर जिनपर आपकी कृपा होती है, वे बिछौने पर नहीं सो सकते!"

बापूने लिखा (हिन्दीमें):

"यह तो सच्ची बात है कि मेरे साथियोंको आराम जैसी कोअी चीज़ है ही नहीं। क्या करें? भगवानने ही गीतामें बताया है कि वह तो क्षणका भी आराम नहीं लेता है। अुसे तो न सोना चाहिये, न खाना चाहिये, न पानी चाहिये। तब हमारे नसीबमें आराम कैसे हो सकता है?"

कल शामको घूमते समय फिर 'मुल्तवी रखने' की बातचीत हुआी। वल्लभभाआी चिढ़कर बोलते थे। बापू कहने लगे: "सरकार पर और लोगों पर क्या असर होगा, अिसका विचार हमें नहीं करना चाहिये। हम तो कर्तव्यका ही विचार कर सकते हैं।" मेरी आपत्ति तो यही थी कि "हम अैसी सलाह नहीं दे सकते। और यह सलाह भी वैसी ही दोषपूर्ण है, जैसी बारडोली सत्याग्रह स्थगित होनेके बारेमें क़ैदियोंने १९२२ में जेलमें से दी थी।" बापू कहने लगे: "बात सही है, मगर जब जेलमें बैठकर मैंने अेक परिस्थिति पैदा की है, तो मुझे अुस परिस्थितिके सिलसिलेमें सलाह देनेका अधिकार मिल जाता है।" मैंने यह भी कहा कि "अगर अिस सलाहका हेतु लड़ाआीको मज़बूत बनाना ही हो, तो अैसी सलाह देनेकी अिजाज़त सरकारसे कैसे माँगी जा सकती है?" बापू कहने लगे: "यह सरकारकी सत्ताकी बात है। अुसने तो सविनयभंग और दूसरे विभागोंका भेद कर रखा है। अैसे भेद वह करती रहे, तो अिजाज़त दे। न देनी हो तो न दे। लेकिन राजाजीको स्वतंत्र रूपमें अैसा नहीं कहा जा सकता कि सब कार्यकर्ताओंको अिस काममें लगा दो। यह सलाह देते समय लड़ाआीका सवाल पैदा होगा और सरकारके साथके समझौतेको देखते हुअे अिस सवालकी मैं चर्चा नहीं कर सकता।

"अिसके अुपरान्त अब जब कि गुरुवायुरकी लड़ाआी सिर पर आ रही है, तब 'मुलतवी' करनेकी बातका प्रसंग ही पैदा नहीं होता। अिस बारेमें मुझे कोआी शंका नहीं कि जब तक अिस लड़ाआीका अंत न हो, तब तक यह बात स्थगित ही रखनी चाहिये।"

शास्त्रीको पत्र लिखा:

"जब यह लड़ाआी आ रही है, तो क्या आप अपने संस्कृत पांडित्यकी कुछ भी मदद नहीं देंगे? और शास्त्रियोंके साथ नहीं भिड़ेंगे?"

अैसा ही पत्र आनंदशंकरको लिखा। अुसका मतलब अिस तरह था:

"जब अनेक आगमोंका आधार लिया जा रहा है, तब क्या आप अिन पंडितोंसे टक्कर नहीं लेंगे? मेरा तरीक़ा तो देहाती ठहरा। पंडितजीके प्रतिनिधिके रूपमें आप वहाँ नहीं जायँगे? और संस्कृतमें वहाँके पंडितोंके साथ नहीं भिड़ेंगे?"

जमनालालजीका लम्बा पत्र आया। अुन्होंने अेक लम्बा पत्र माँगा, जो अुनके जन्म-दिवस पर पहुँच जाय। अुन्हें लम्बा पत्र लिखा। अिस पत्रमें अुनके लिअे अुत्तम मृत्यु चाही:

"जन्मसे मृत्यु ज्यादा अुत्सवका प्रसंग है। जन्मसे पहले नौ महीने यातनाअें भोगनी पड़ती हैं और जन्मके बाद भी अनेक दुःख हैं, जब कि कुछ को मृत्युके अवसर पर ब्राह्मी स्थिति प्राप्त होती है। अिस प्रकारकी

मृत्यु प्राप्त करनेके लिअे जीवन अनासक्तियुक्त कामोंमें बीतना चाहिये। हम तीनोंकी यह प्रार्थना है कि तुम्हें अैसी ही मृत्यु मिले।"

आज बहुतसे पत्र लिखे। चौथा वक्तव्य गया। शामको 'क्रॉनिकल' में सी० पी० रामस्वामीने त्रिवेन्द्रमके अे० पी० आअी० के प्रतिनिधिको जो मुलाक़ात दी अुसके बारेमें पढ़ा। अुन्होंने यह कहा था कि मन्दिर-प्रवेशके बारेमें पुराने विचारवालों पर दबाव नहीं डाला जा सकता और न अिस तरहकी आघात पहुँचानेवाली पद्धति ही चल सकती है।

९-११-'३२

वल्लभभाअी कहने लगे: "यह रोड़ा आया। अिस आदमीकी वृत्ति सरकारकी और ज़ामोरिन तथा त्रावणकोर दोनोंकी वृत्तियोंकी परछाअी है। बड़ी मुश्किल होगी।"

बापू कहने लगे: "कोअी मुश्किल नहीं होगी, बशर्ते सवर्णोंमें अुतना ही ज़ोर हो, जितना हमें बताया जाता है।"

वल्लभभाअी: "मगर ट्रस्टियोंका क्या होगा? दरवाज़े खोलना तो ट्रस्टियोंके ही हाथमें है।"

बापू बोले: "अुसका कुछ नहीं। जैसे पिछली बार हज़ारोंकी संख्यामें सवर्ण वहाँ पहुँच कर मन्दिर पर अधिकार करके बैठ गये थे और अन्दर अुपवास करने लगे थे अुसी तरह बैठ जायँ, तो तुरन्त खुल जाय। हाँ, सम्भव है कि ये लोग मन्दिरके दरवाज़े बन्द कर दें। वहाँ फ़ौज़ी क़ानून घोषित कर दें और परवाने लेकर जानेवालोंको ही जाने दें और हमें मरना पड़े। तो भी हर्ज नहीं। और भी बहुतेरे मरनेको तो तैयार ही हैं।"

रातको सोते समय कहने लगे: "मुझे अिस अुपवासके बारेमें पहले अुपवाससे भी ज्यादा निश्चिन्तता है। ज़बरदस्तीकी बात झूठ है; मैं किसीको धमकी थोड़े ही देता हूँ? सबको अपना मत प्रिय है। अुनके लिअे तो अितनी ही बात है कि वे अपनी भावनाके बजाय मेरी ज़िन्दगीको प्रिय मानते हैं या नहीं? न मानते हों, तो मुझे मरने दें।"

आज गुरुदेव, नटराजन और अंबालालको पत्र लिखा। गुरुदेवको लिखा: "अखबारवालोंको दिया हुआ मेरा वक्तव्य आपने देखा होगा। मेरे अिस विशेष प्रयासको आशीर्वाद दे सकते हों, तो मुझे ज़रूरत है। मालूम नहीं आपको अैसा लगता है या नहीं कि यह प्रयास, अगर यह सम्भव हो, तो पहलेसे भी ज्यादा पवित्र है। पिछला अुपवास तो कुछ-कुछ राजनैतिक रंगमें रंगा हुआ था और छिछले आलोचक यह कह सकते थे कि वह ब्रिटिश

१०-११-'३२

सरकारके ही विरुद्ध है। अिस बार अगर अग्निपरीक्षा हुअी, तो अिसे राजनैतिक रंग देना सम्भव नहीं। हाँ, आपको याद ही होगा कि पिछला अुपवास मैंने यथासंभव स्पष्ट चेतावनी देकर ही तोड़ा था कि कथित सवर्ण हिन्दुओंकी तरफ़से कुछ भी वचन भंग होगा, तो मुझे फिर अुपवास करना पड़ेगा। गुरुवायुरके मन्दिरके मामलेमें जिस अुपवासकी बात चल रही है, वह तो सिर्फ अिज्जतका सवाल है। सनातनी दलने अुसे हमलेका केन्द्र बनाया है और अुसे अखिल भारतीय महत्त्व दिया जा रहा है। मुझे तो यह पसन्द है। मगर अिसके साथ ही सुधारक शक्तियोंका संगठित हो जाना और अस्पृश्यता राक्षसीका नाश करनेके लिअे काममें लग जाना ज्यादा ज़रूरी हो जाता है। मेरी ही तरह आप भी महसूस करते हों, तो मैं आपका पूरा हार्दिक सहयोग चाहता हूँ।"

नटराजनको :

"मैं देखता हूँ और जैसा मुझे लगता है, अुसके मुताबिक गुरुवायुरकी लड़ाअीको अखिल भारतीय महत्त्व प्राप्त होगा ही और सनातनी शक्तियाँ अपना सारा गोला-बारूद अिस मन्दिर पर केन्द्रित करेंगी। मैं अिसका स्वागत करता हूँ। अिससे मैंने सोचा था अुससे भी ज्यादा शुद्धि होगी। मगर अिसका अर्थ यह हुआ कि हिन्दू धर्ममें जो अुत्तम शक्तियाँ हैं, अुन सबको भी संगठित हो जाना चाहिये और सनातनियोंके हमलेका सामना करना चाहिये। अिसलिअे आपके लिअे यदि सम्भव हो और जैसा मुझे महसूस होता है वैसा ही आपको भी होता हो, तो अिस लड़ाअीमें आप तन-मनसे पड़ें, अिसके लिअे मैं आतुर हूँ। मगर पिछले अुपवासके समयके आपके लेखों परसे मैंने देखा है कि आप अैसे अुपवासोंके विरुद्ध हैं। अिस बारेमें मेरे विचार बहुत दृढ़ हैं और मुझे लगता है कि यह केवल अुचित अुपाय ही नहीं है, बल्कि जिसे किसी भी रूपमें हिंसाका आश्रय नहीं लेना है, अुसके लिअे खास हालतोंमें वह अनिवार्य हो जाता है। अब चूँकि मुझे अिस आन्दोलनके सम्बन्धमें मुलाक़ातें करनेकी अिजाज़त मिल गअी है, अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि अगले सप्ताहमें फ़ुरसत निकालकर किसी भी दिन अेक बजेके क़रीब आप मुझसे मिल लें। प्रायश्चित्त स्वरूप सार्वजनिक अुपवासोंकी नीतिमत्ताके बारेमें हम चर्चा करेंगे और देखेंगे कि हम सहमत हो सकते हैं या नहीं। आप मुझे जिस हद तक जानते हैं, अुससे आपको मेरे बारेमें यह विश्वास होगा कि हमारी चर्चामें मुझे अपनी भूल समझमें आ जायगी, तो अपना क़दम पीछे हटा लेनेमें मुझे ज़रा भी संकोच नहीं होगा।"

अंबालालको बतलाया :

"अस्पृश्यताके बारेमें तुम्हारे बहुतसे विचारोंके साथ मैं सहमत होता हूँ। मगर जिस कारणसे तुमने समितिमें शामिल होनेसे अिनकार किया है, वह कारण मेरे

गले नहीं अुतरा। मैं यह मानता हूँ कि जो सनातनी माने जाते हैं, वे हिन्दू अुसमें शरीक होने चाहियें। लेकिन अैसा करनेमें यदि करनेका काम ही रुक जाय, तो अैसे हिन्दुओंके बिना भी काम चला लेना चाहिये। और अैसे हिन्दू अुसमें हों या न हों, जो धार्मिक वृत्तिके होनेके कारण धार्मिक दृष्टिसे वांछनीय सुधार भी चाहते हैं, अुन्हें तो अुसमें रहना ही चाहिये।"

मंडलमें शामिल होनेका महत्त्व समझाते हुअे लिखा :

"किसी मंडलमें शामिल होनेसे ज़िम्मेदारीका जो खयाल मनुष्यको रहता है और जो बन्धन वह सहज ही स्वीकार करता है, वह ज़िम्मेदारी और बन्धन बाहर रहनेवालेको कोशिश करने पर भी महसूस नहीं हो सकता।

"अब रही मतभेदकी बात। मैं सभाओं, जुलूसों, व्याख्यानों और सम्मेलनों वगैराका असर स्वीकार करता हूँ और अुनकी आवश्यकता समझता हूँ, फिर भी रचनात्मक कामके बिना अस्पृश्यताकी जड़ नहीं अुखड़ेगी। अितना ही नहीं, मैं तो यह मानता हूँ कि अछूतपनके प्रति असंख्य हरिजनोंमें नफ़रत नहीं पैदा होगी। अिस काममें बहुतसे सेवक, सेविकाअें और बहुत धन तो चाहिये ही; मगर अिस कामकी आवश्यकताको स्वीकार करते हो, तो अिस डरसे कि शायद रुपया नहीं मिलेगा और बड़ी तादादमें सेवक-सेविकाअें नहीं मिलेंगी, यह काम छोड़ा नहीं जा सकता। मुझे तो अैसा लगता है कि अिस महान आन्दोलनमें अुसके अेक भी अंगको हम नहीं छोड़ सकते।" अिस प्रकार लिखकर सारी चर्चा करनेके लिअे मिलने बुलाया।

तलेगाँवकर और जेधे वगैरा आये। वे 'विजयी मराठा' और 'ज्ञानप्रकाश' के प्रतिनिधि हैं।

सवाल — गुरुवायुरका अुपवास मुलतवी नहीं रह सकता?

बापू — केलप्पनके साथ बँधा हुआ हूँ, अिसलिअे करना पड़ेगा। वह न करे तो मुझे दुःख हो, और अुसे करना पड़े, तो मुझे भी करना पड़ेगा। जो मन्दिर खोलनेमें विश्वास रखते हैं अुन्हें तो कोशिश करनी चाहिये। हमने अुपवास किया अिसलिअे मन्दिर खोलो, यह तो मूर्खता होगी। मनुष्य कितना ही बड़ा क्यों न हो, अुसके अुपवाससे दबनेका कोअी कारण नहीं। किसीकी धमकीके कारण मनुष्य धर्म नहीं छोड़ सकता। लेकिन अुनकी बुद्धि और हृदय जाग्रत हो जाय, तो ही वे मंदिर खोलें। अपने अुपवासके समय मैंने अपने मित्रों और स्वजनोंको अपनी सेवाके लिअे रखा है। परन्तु अुन लोगोंको मेरी मूर्खता लगे, तो मैं अुन्हें अपनी सेवा भी न करने दूँ और मुझे छोड़ देनेको कह दूँ। मेरी दृष्टिसे तो यह धार्मिक वस्तु है, अिसलिअे अुपवास छोड़नेकी बात कहें, तो वह

कालक्षेप है। कोअी मेरा अनुकरण करे — चाहे वह मूर्ख हो मगर दृढ़ मनवाला हो—तो भले ही करे।

स० — यह अुपवास मुल्तवी नहीं रखा जा सकता?

बापू— हाँ, रखा जा सकता है। अगर मुझे विश्वास हो जाय कि थोड़े दिन ठहरनेसे भी यह मन्दिर खुल जायगा, तो ठहर जाअूँ। केलप्पन मुझसे कहे कि पंद्रह दिन ठहरना चाहिये, तो ज़रूर ठहर जाअूँ। मगर यह बात बाहर कहनेकी नहीं है। आज यह कह सकता हूँ, मगर कब तक कह सकता हूँ यह नहीं कहा जा सकता। मगर आपको अिसका विचार नहीं करना है। यह बात तो दक्षिणके लोग कर सकते हैं। आपका कर्तव्य तो मेरा साथ देना है। आपको तो अपनी राय वहाँ भेजनी चाहिये कि मंदिर खोलो। मुझे वहाँसे तो किसीने लिखा नहीं कि यह मियाद थोड़ी है। पहली तारीख तक न हो, तो मुल्तवी रखनेसे भी नहीं होगा; अुपवासके दिनोंमें होना संभव है।

स० — मंदिर खुले तो क्या बराबरीके दर्जे पर खुलना चाहिये?

बापू० — हाँ, अेक ही दर्जे पर होना चाहिये। मुझे तो सवर्ण-अवर्ण विशेषण अच्छे नहीं लगते। दर्शन तो सबको अेकसे ही मिलें। अछूतपनका जड़से नाश तो तभी होगा, जब अछूतपनका नाम ही न रहे। मंदिरोंका प्रश्न हिन्दू जातिके अुद्धारकी बात है, आज तक किये गये पाप धो डालनेकी बात है, फिर भले ही अछूत मंदिरोंमें न भी जाना चाहें। हम सबने पाप किये होंगे, अछूतोंने भी किये होंगे, मगर अुनका बदला देनेवाले हम कौन? अुनके कर्मोंका फल भुगतानेके लिअे हम कौन ज़िम्मेदार?

स० — मूर्तिको छूनेका अधिकार केवल पुजारीको ही क्यों?

बापू० — मैं वर्णका झगड़ा नहीं निपटाना चाहता। औरोंको मूर्ति छूनेका अधिकार न हो, तो अस्पृश्य भी न छुअें। मगर अछूतोंको अछूतपनके कारण न रोका जाय। यह ब्राह्मणोंके अधिकारकी बात नहीं, परन्तु ज्ञानकी बात है।

स० — क्या आप सभी मन्दिरोंके लिअे अुपवास करेंगे?

बापू० — नहीं, गुरुवायुरके लिअे भी न करता। यह तो बीचमें ही धर्म आ पड़ा। मेरा अनशन तो अस्पृश्यता निवारणके लिअे है। मगर यह प्रसंग तो केलप्पनको रोकनेके कारण आ गया।

स० — केलप्पनकी तरह और कोअी अुपवास करे और आप अुसे रोकें, तो फिर अुसके लिअे अुपवास करेंगे?

बापू — नहीं, अैसा प्रसंग नहीं आयेगा।

स० — सनातनी बलात्कारकी बात कहते हैं। अुनका हृदय बदलता नहीं, अिसके लिअे क्या करें?

बापू — सनातनियोंको मैं नोटिस नहीं देता। अुन पर दबाव नहीं डालता। मैंने तो सारे हिन्दू जगतको नोटिस दिया है। ये लोग जाकर मन्दिर खोल दें, तो अुन्हें रोकनेका हक़ नहीं। अगर करोड़ों मनुष्य मुझे कहें कि हमारी भूल थी, हमें अिन लोगोंने धोखा दिया था, मन्दिर-प्रवेश हमने भी नहीं चाहा, तब तो मुझे जीनेकी ज़रूरत नहीं। अगर दूसरे हिन्दू, जिनकी प्रतिज्ञा मेरे पास है, मेरे साथ नहीं हों, तो मुझे जीनेकी ज़रूरत ही नहीं। सनातनी तो अिस मन्दिरमें नहीं जायँगे। बम्बअीके सनातनियोंने तो अैसी बात की भी है। मगर हिन्दू जाति तो वहाँ जायगी ही और अछूतोंको लेकर जायगी। मतगणना द्वारा हिन्दू जातिकी राय लेनेकी बात, अुसका हृदयमंथन करने जैसी है।

स० — सनातनी कहते हैं कि अछूतोंके लिअे अलग मन्दिर बनवाअिये।

बापू — नहीं, ये लोग अपने लिअे अलग बनायें। हाँ, सारी हिन्दू जाति कहे कि ये मन्दिर न खुलें, तो दूसरी बात है। फिर तो अछूत मेरे मरनेके बाद विचार करें।

स० — अस्पृश्यता निवारणमें मुख्य बात कौनसी है?

बापू — हरिजनोंको मंदिर-प्रवेशका हक मिले और जिन सार्वजनिक संस्थाओंमें जानेका दूसरे हिन्दुओंको हक है, अुनमें हरिजन भी जायँ और अुनका अुपयोग करें। हर जगह हिन्दुओंकी अलग-अलग मुश्किलें हैं। आपका गुरुवायुर जानेका धर्म नहीं, परन्तु आपके यहाँ जिस चीज़में अस्पृश्यता है अुसको दूर कीजिये। अपने आसपासके अछूतोंको अपनाना आपका काम है। मन्दिर-प्रवेशके लिअे मैंने सत्याग्रहकी मनाही की ही नहीं। वाअीकोमके लिअे मैं खुद ही गया था न?

स० — सहभोजनके लिअे बहिष्कार हो, क्या यह ठीक है?

बापू — नहीं। यह बहिष्कार करना अनुचित है। मगर जिसका बहिष्कार हो, अुसे अिससे डरना भी नहीं चाहिये। मैंने जहाँ तक हिन्दू धर्मका अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि अछूतपन महाकलंक है।

स० — मरे हुअे ढोरोंको घसीटना और चीरना हरिजन छोड़ देंगे तो?

बापू — मैं तो मुर्दार मांस खाना छुड़वाना चाहता हूँ, मगर काम छुड़वाना नहीं चाहता। आश्रममें यह काम सिखलाता हूँ। फिर भी वे छोड़ें तो हम करेंगे।

स० — मान लीजिये कि गाँवमें अेक बैल मर गया। अुसे ढेड़ न घसीटे तो कौन घसीटेगा?

बापू — हम घसीटेंगे . . . आज हम सब शूद्र हैं, क्योंकि सब गुलाम हैं।

'टाअिम्स आफ़ अिन्डिया' के मेक्रे के साथ:

बापू — ज़ामोरिन अैसा नहीं कहता कि मन्दिर खोलना असंभव है। वह अपनी मुश्किलें पेश करता है। अगर वह असफल हो जाय, तो मुझे और केलप्पनको अुपवास करना पड़ेगा। हाँ, जो दावा किया जाता है अुसमें मुझे कोअी स्पष्ट त्रुटि दिखाअी दे, तो दूसरी बात है। असलमें कोअी त्रुटि है ही नहीं। ज़ामोरिनके रास्तेमें मुश्किलें हैं, मगर वे अैसी नहीं जिन्हें पार न किया जा सके। सच्ची परीक्षा तो यह है कि मन्दिरमें जानेका हक़ रखनेवाले सवर्ण अछूतोंके मन्दिरमें जाने पर आपत्ति करते हैं या नहीं? मुझे जो हक़ीक़तें मिली हैं, वे सब यह बताती हैं कि मन्दिरमें जानेवालोंके बहुत बड़े भागको कोअी आपत्ति नहीं। सारे आन्दोलनका आधार यह खयाल है कि मन्दिरमें जानेवाले लोग यानी सवर्ण हिन्दू अिस सुधारके लिअे तैयार हैं। अगर ये लोग सुधारके लिअे तैयार न हों, तो हमारा अुपवास बेवक्तका होगा।

स० — अिस मन्दिरके मामलेमें कठिनाअी दूर कर दी जाय, तब तो अुपवास नहीं होगा?

बापू — अुपवास खास तौर पर यह मन्दिर खोलनेके बारेमें है। कारण यह है कि केलप्पनने नमूने और अुदाहरणके रूपमें अिस अेक मन्दिर पर अपने प्रयास केन्द्रित किये थे। अिन लोगोंने मन्दिर खुलवानेके लिअे अथक परिश्रम किया है। फिर जब मैंने अुपवास किया, तब केलप्पन अिस निर्णय पर पहुँचा कि अुसे भी अुपवास करना चाहिये। मगर अुसने नोटिस नहीं दिया था। यह कमी मैंने अुसे बताअी और अुसे अुपवास मुल्तवी करनेको कहा। अुसने यह मान लिया। अिसलिअे अब अुसके साथ शरीक होना मेरे लिअे अिज्ज़तका सवाल हो जाता है। गुरुवायुर मन्दिर पर केन्द्रित होनेका कारण यही है।

स० — ज़ामोरिन कहता है कि हज़ारों सनातनी मरनेको तैयार हैं।

बापू — अुसका यह कहना ठीक नहीं। मगर अपनेको सनातनी कहने वाले हज़ारों लोग अुपवास भी शुरू कर दें, तो मैं नहीं घबराअूँ। सत्य लाखों लोगोंके जीवनसे भी बढ़कर है। अुपवासके सम्बन्धमें मेरा खयाल यह है कि वह आत्मशुद्धिकी और अन्तरात्माको जाग्रत करनेकी अेक क्रिया है। अुसके पीछे बलात्कार कभी नहीं हो सकता।

स० — क्या अिस आन्दोलनसे हिन्दू समाजके टुकड़े नहीं हो जायँगे? बाक़ीके हिन्दुओंसे सनातनी अलग नहीं हो जायँगे?

बापू — मुझे अैसा कोअी डर नहीं है। अगर मुझे सन्तोष हो जाय कि सनातनी आन्दोलनके नामसे पुकारे जानेवाले आन्दोलनको बहुजन-समाजका दर असल समर्थन प्राप्त है, तो मैं स्वभावसे ही लोकतंत्रवादी होनेके कारण आज जिस ढंगसे विरोध करता हूँ, अुस ढंगसे विरोध नहीं करूँगा। अस्पृश्यता निवारणका

मारा आन्दोलन अिस मान्यता पर खड़ा है कि अुसके विरोधका सच्चा आधार नहीं है। अुसे नैतिक समर्थन नहीं है, यह तो सुप्रसिद्ध है।

स० — आपको अैसा नहीं लगता कि आप बाहर हों, तो ज्यादा असर डाल सकते हैं? क्या आप अस्पृश्यता निवारणको सविनयभंगसे कम महत्त्वका मानते हैं?

बापू — मैं दोनोंमें से अेकको भी कम या ज्यादा महत्त्व नहीं देता। मेरे लिअे दोनों धर्म-सिद्धान्त हैं। अिसलिअे मैं अेकसे दूसरेको गौण नहीं मान सकता। यहाँ मैंने सविनयभंगकी बात अेक सिद्धान्तके रूपमें कही है; आजकलके आन्दोलनके बारेमें नहीं। अभी जो सविनयभंग हो रहा है, अुस पर मैं कोअी राय नहीं दे सकता।

स० — जितने ज़ोरसे होना चाहिये अुतने ज़ोरसे यह आन्दोलन होता दिखाअी नहीं देता।

बापू — मैं यह कह नहीं सकता। मैं कुछ भी कहनेकी स्थितिमें नहीं हूँ। अखबारोंके ज़रिये मिली हुअी जानकारी पर मैं नहीं चल सकता। आपको बाहरके कार्यकर्ताओंसे संपर्क साधना चाहिये।

स० — अस्पृश्यता निवारण संघसे दिल्लीके अिस्तीफ़ोंके बारेमें आप क्या कहते हैं?

बापू — मुझे अिससे आश्चर्य हुआ है। मगर मैं आशा रखता हूँ कि अुसके पीछे कोअी खास बात नहीं होगी। संघकी जड़ काफ़ी मजबूत है। अुसे आदर्श अध्यक्ष मिले हैं और अुनसे भी ज़्यादा आदर्श मंत्री मिले हैं।

* * *

पंढरपुर मन्दिरके ट्रस्टियोंके लिअे मुझे अफ़सोस होता है। मैं अैसी आशा रखता हूँ कि तुकारामका प्रिय मन्दिर अिस आन्दोलनका नेतृत्व करे।

* * *

अिस महान सुधारमें सारे हिन्दुस्तानके अखबारोंकी मदद मुझे मिल सके, ब्रिटिश पत्रों तक की, तो मुझे अुसकी ज़रूरत है। मैं यह भी चाहता हूँ कि अिस आन्दोलन के पक्षमें तमाम दुनियाका लोकमत अेकत्रित हो जाय। अगर अिस आन्दोलनको अैसी विजय मिल जाय जो दिखाअी जा सकती है, तो अुसके परिणाम हिन्दू समाजके सिवाय दूसरे समाजों पर और हिन्दुस्तानके बाहर भी हुअे बिना नहीं रहेंगे।

हिंसासे सर्वथा मुक्त साधनों द्वारा और केवल लोगोंकी अन्तरात्माको जाग्रत करके चार करोड़ मनुष्योंका अुन्हें कुचल डालनेवाले बोझसे छुटकारा हो जाय,

तो नास्तिक लोगोंको भी प्रत्यक्ष ओीश्वरके बारेमें और मनुष्य स्वभावकी सहज अच्छाओीके बारेमें श्रद्धा हुओे बिना न रहे ।

स० — क्या आप अिसे हिंसासे मुक्त साधन कहते हैं? आप खुद अपने अूपर अपार हिंसा कर रहे हैं ।

बापू — तब तो हम अिस शब्दको शब्दकोशमें दिये हुओे शब्दसे अलग अर्थमें अिस्तेमाल कर रहे हैं । आप यह पूछ सकते थे कि क्या अिस अुपवाससे लोगोंपर बलात्कार नहीं होता? मैं कहता हूँ कि अुपवास किसी भी अर्थमें बलात्कार नहीं है । आपकी अिच्छाके अधीन होनेके लिओे आप मनुष्यके शरीर पर बलप्रयोग करें, तो अुसमें हिंसा है। अिसमें आप पर जो प्रेम रखते हैं, अुनकी आत्माको क्लेश पहुँचानेकी बात ज़रूर है । अिसमें अितने अधिक धर्मसिद्धान्त ओेक दूसरेके साथ गुँथ गये हैं कि आप अुनका अलग-अलग विचार नहीं कर सकते ।

वासन्तीदेवीको आजकल चल रहे हिन्दू धर्मकी शुद्धिके काममें पूरी तरह भाग लेनेका आमंत्रण देते हुओे पत्र लिखा :

११-११-'३२

"अगर आप अखबार पढ़ती होंगी, तो आपने देखा होगा कि शुद्धिकी प्रगतिको रोकनेके लिओे तमाम प्रतिक्रियावादी काली शक्तियोंका अुपयोग हो रहा है । अिसलिओे हिन्दू समाजमें जो भी शुद्ध और अूर्ध्वगामी शक्तियाँ हैं, अुन सबको संगठित होकर अनेक सिरोंवाली अस्पृश्यता राक्षसीका नाश करनेके लिओे ओेकत्रित हो जानेकी ज़रूरत है। क्या आप अिसमें भाग लेंगी? अगर आप पत्र लिखने लायक कष्ट नहीं अुठा सकती हों, तो मैं आप पर आलस्यका आरोप नहीं लगाअूँगा । मगर मुझे आशा है कि तार देनेकी तकलीफ़ तो ज़रूर करेंगी । पिछले ही हफ्तेमें केरलसे आओी माँगके जवाबमें मैंने अुर्मिलादेवीसे दक्षिणमें जानेको कहा था । अुन्होंने तारसे मंजूर कर लिया । आप भी ओैसा करेंगी? मैं आपसे दक्षिण जानेको नहीं कहता, मगर यह तो चाहता ही हूँ कि हरिजन सेवाके काममें अुचित भाग लेनेका वचन दें । सेवाका क्षेत्र भले ही आप पसन्द कर लें । यदि वह भी मुझ पर छोड़ देना चाहें, तो दूसरी बात है ।"

अुडीपीकी अस्पृश्यता निवारण समितिके मंत्रीको :

"मेरी साफ़ राय है कि आपके लिओे अभी सत्याग्रह करनेका प्रसंग नहीं है । आपको बहुत सौम्य अुपायोंसे लोकमत अपने पक्षमें करना चाहिये । आपको यह भी देखना चाहिये कि मन्दिरोंमें जानेवाले लोग जिन शर्तोंपर मन्दिरमें जाते हैं, अुन्हीं शर्तोंपर वे हरिजनोंको मन्दिरोंमें ले जानेके पक्षमें हैं या नहीं? आपको

यह भी याद रखना चाहिये कि अकेला मन्दिर-प्रवेशका ही काम नहीं करना है। आपके आसपासके हरिजनोंकी जीवनके हर क्षेत्रमें कैसी स्थिति है, यह आपको जानना चाहिये। आपको शास्त्रीय ढंगसे अध्ययन करना चाहिये और अुसके परिणाम मुझे बताने चाहियें। अिस बीच हरिजनोंके जो दु.ख दूर किये जा सकते हों, अुन्हें दूर करनेकी कोशिश तो आपको करनी ही चाहिये।"

लल्लुभाअी शामलदासकी मुलाक़ात। बहुत बूढ़े जान पड़े। फिर भी अितनी अुम्रमें अछूतपनके मामलेमें कुछ करनेकी वृत्ति और अुत्साह अच्छा लगा। अुन्होंने कहा: "अब तक मनमें तो मालूम था कि यह ग़लत है, मगर ज़ाहिर करनेकी हिम्मत नहीं थी। वह हिम्मत अिस बार आ गअी। वालपाखाड़ीके भोजमें मैं गया था।" अुपवासके बारेमें भी कहा: "यह मुझे भी लगता है कि आपने केलप्पनको रोका, अिसलिअे अब यह आपकी नैतिक ज़िम्मेदारी हो जाती है। आज 'सर्वेण्ट्स ऑफ़ अिंडिया' भी लिखता है कि अगर यह मान लिया जाय कि अुपवास अुचित वस्तु है, तो यह अुपवास पहले वालेसे ज्यादा मुनासिब है।" खुदने त्रावणकोर और कालीकट जानेकी हिदायतें लीं। नरसिंहरावकी शान्ति और धीरजकी बात करके कहने लगे: "मैं अुनके घर जाकर गद्‌गद हो गया। मगर वे तो बिलकुल शान्त थे। दशाह श्राद्धके दिन भी अुन्होंने शान्तिसे प्रार्थनामें भाग लिया, यह असाधारण बात है।" अपनी स्थिति वर्णन की: "मैं हाटकेश्वर मन्दिरका ट्रस्टी हूँ। दूसरा ट्रस्टी मन्दिर खोलने आया था। मैंने पूछा: 'क्यों, तुम्हारे पास कोअी आया है?'

"वह बोला: 'नहीं, मगर मुझमें अुमंग आ गअी है।'

"मैंने कहा: 'अभी चुप रहो, कोअी माँग करने आये तब आना।'"

अिसके बाद राजभोज, प्रो॰ आतुरकर, दातार, भाग्यवंत वग़ैरा आये।

बापू — अभी किसीको सत्याग्रह नहीं करना है। मैं जो प्रयत्न कर रहा हूँ, अुसका अिन्तज़ार करना चाहिये। सनातनियोंने गुरुवायुरको अखिल भारतीय प्रश्न बनाया है। हमें भी चुपचाप अिसका नतीजा देखना चाहिये।

स॰ — गुरुवायुर खुल जाय तो क्या दूसरे मन्दिर खुल जायँगे?

बापू — गारंटी नहीं। मगर अनुमान यह है कि खुलेंगे। क्योंकि सनातनी अभी जितना प्रयत्न कर रहे हैं अुतना फिर शायद ही करें।

स॰ — मगर दूसरे मन्दिर कैसे खुलें? सब जगह ट्रस्टी तो दूसरे ही होते हैं। आपकी सोने जैसी देह मन्दिरके लिअे क्यों नष्ट हो? सत्याग्रह करनेका फ़र्ज़ हमारा है।

बापू — मन्दिर खोलनेकी कोशिश तो हमें करनी चाहिये। यह हमारा कर्तव्य है। सवर्ण अपने कर्तव्यमें असफल रहें तब देखा जायगा। दूसरी बात

यह है कि गुरुवायुरके लिअे अिस तरहकी कोशिश हो रही है, मगर दूसरे मन्दिरोंके लिअे धीरे-धीरे प्रयत्न करेंगे। दूसरे मन्दिरोंके लिअे अनशन या सत्याग्रहका नोटिस न दिया जाय। व्यवहार-बुद्धि यह कहती है कि आज सत्याग्रहका मौक़ा नहीं है। अभी ही लल्लूभाअीसे अैसा मन्दिर खोलनेको कहा गया है।

स० — अछूतोंने बहुत किया है। जमनालालजी जैसे आदमीने हमसे समाधान कराये। हमने साम नीतिसे काम लिया, लोगोंसे मिले, जयकर-जमनालाल वग़ैरासे मिले। गुरुवायुरसे ज्यादा कोशिश की। अब हमें आपके प्राणोंकी ज़रूरत है, अिसलिअे आपको अुपवासके लिअे हमारी सम्मति नहीं मिलेगी।

बापू — सब बातोंकी तैयारी रखें, मगर छोटे कामोंमें लोगोंका ध्यान न लगायें। वहां यदि कुछ होगा तो और सब जगह तो होगा ही। और न होगा तो देख लेंगे।

स० — कितने ही मन्दिर खुल गये हैं, तो भी दूसरे क्यों नहीं खुलते?

बापू — मैं यह नहीं कहता कि खुलेंगे ही, मगर खुलने चाहियें अैसा अनुमान होता है।

स० — आप अस्पृश्यताके कामके लिअे बाहर क्यों नहीं आ जाते?

बापू — सविनयभंग छोड़नेका वचन कैसे दिया जा सकता है? सविनयभंगको भी मैं तो अुतना ही बड़ा धर्म मानता हूँ। अुपवासके समय भी मैंने शर्त पर छूटनेसे अिनकार कर दिया था।

स० — सार्वजनिक कुओंके लिअे हमें क्या करना चाहिये?

बापू — सवर्णोंको चाहिये कि अुन्हें हरिजनोंको काममें लेने दें। हरिजन अपने बरतन साफ़ रखकर वहाँ पानी भरने जायँ। मगर किसी जगह अुनका विरोध हो, तो अभी हरिजन खामोश रहें। मेरी यह सूचना है कि आज तक वे खामोश रहे, तो अब भी रहें। मेरा अुपवास डेढ़ महीने बाद तो हो ही रहा है। बादमें भी जब मुझे अीश्वर बतायेगा, तब हरिजनोंको न्याय दिलानेके लिअे मुझे मरना ही है।

हरिजनोंको मारपीट नहीं करनी चाहिये, हालाँकि अुन्हें अैसा करनेका अधिकार है। मगर अिस अधिकारको काममें लेनेसे हालत नहीं सुधरेगी। वह बिलकुल अनावश्यक है। किसी भी पक्षको मारपीट करनेका विचार करके हिन्दू धर्मको जोखममें नहीं डालना चाहिये। आपको मैं खामोश रहनेको कहता हूँ। पहले मेरी जान जायगी, फिर आपको जो करना हो सो करना।

हरिजनोंको औद्योगिक शिक्षाके लिअे छात्रवृत्तियाँ मिलनी चाहियें। और अुनके लिअे छात्रालय भी बनने चाहियें। लेकिन सवर्णों और हरिजनोंके संयुक्त छात्रालय हों तो ज्यादा अच्छा।

स० — आपको अुपवास न करना पड़े, अिसके लिअे हम क्या करें ?

बापू — सवर्णोंका कर्तव्य तो मैंने बता दिया। हरिजन शौचादिके नियमका पालन करें और मुर्दार मांस खाना छोड़ दें — मुर्दार जानवरोंको अुठानेकी फ़ीस माँगें, मगर खानेके बदलेमें ढोर न अुठायें।

स० — महाड़के ब्राह्मणकी भैंस मरनेका प्रसंग। बादमें हरिजनों पर बड़ा जुल्म हुआ। अब हम अुनकी सहायता किस तरह करें ?

बापू — यही कर्तव्य करते रहो और अस्पृश्यता निवारण सभाको अैसे किस्सोंकी खबर देते रहो।

पाखाने साफ़ करनेवाले कपड़े बदल कर साफ़ करें।

यह तो तूफान जैसा तेज़ कार्यक्रम है। अभी मुझे अिसकी मंज़िलें तैयार नहीं करनी हैं। जाग्रति होनेके बाद मुझे पता चलेगा कि कौनसा काम पहले हाथमें लूँ और कौनसा बादमें। आज धीमे-धीमे काम करनेका मौका नहीं है।

मेरी प्रामाणिकताका मुकाबला सनातनियोंकी प्रामाणिकतासे होगा। दोनों अपना प्राण देंगे। किसने अपने प्राण अुचित रूपमें अर्पण किये, अिसका फ़ैसला सिर्फ़ अीश्वर ही करेगा। . . . मेरे और करोड़ों आम लोगोंके बीच गँठबन्धन हो गया है। . . . मैं अपने निकटसे निकटके मित्रोंसे कहता हूँ कि तुम मेरे साथ सहमत न होते हो, तो मुझे मर जाने दो। मैं मूर्खताका काम करता होअूँ, तो मुझे मर जाने देना चाहिये। . . . मित्रके बलात्कारका तो स्वागत करना चाहिये। मेरी स्त्रीकी किसी मामले पर निश्चित राय न हो, मगर अुसको मुझसे प्रेम हो और मेरे कामके खिलाफ़ अुसके दिलसे कोअी आवाज़ न अुठती हो, तो मैं जो कहूँगा अुसका वह अनुमोदन करेगी। . . . मेरे अुपवाससे लोग अच्छा काम करनेको मजबूर होते हों और अुन्हें यह न लगता हो कि यह काम बुरा है, तो मेरा अुपवास बिलकुल अुचित है। . . . अहमदाबादके मिल-मज़दूर अपनी प्रतिज्ञा भंग करनेको तैयार हो गये थे। मैंने अुपवास किया और अुनमें जाग्रति आ गअी। . . . शरीर पर बलात्कार किया जाय, तो मनुष्यका अधःपतन होता है। . . . जो कभी मेरा सुननेवाले नहीं हैं, अुनके विरुद्ध मेरा अुपवास नहीं है। वे तो मुझे मरने ही देंगे। मेरा अुपवास तो अुनके लिअे है, जो मुझसे प्रेम रखते हैं और जो मुझे मरने नहीं देना चाहते। . . . स्वराज्यमें दफ़ा १२४अ राजद्रोहके लिअे नहीं होगी, परन्तु हरिजनोंको अछूत कहनेवालोंके विरुद्ध होगी। . . . समयकी मैंने कोअी मियाद मुक़र्रर नहीं की है। मैं जाँच करता रहूँगा। अगर मुझे यह मालूम होगा कि लोग आलसी हैं, लापरवाह हैं और कुछ करते नहीं, तो मैं प्राण अर्पण कर दूँगा। . . . अेक सालसे

आगेका विचार, मैं नहीं कर सकता। अेक सालमें अितनी शक्ति और श्रद्धा प्रगट होगी कि मुझे आशा है अछूतपन चला जायगा।

स० — आपने यह सवाल आज ही क्यों अुठाया?

बापू — अल्पसंख्यक समितिमें अीश्वरने मुझसे वह भाषण दिलवाया। मैं वहाँ अखबार पढ़े बिना ही गया था। वहाँ प्रधान मंत्रीने खड़े होकर अेलान किया कि ४६ फीसदी लोगोंके प्रतिनिधियोंके हस्ताक्षरोंसे अुन्हें पंचका काम सौंपनेकी प्रार्थना की गअी है। बादमें भाषण हुअे। मैंने भी अपना कार्ड भेजा। मैंने भाषण दिया। अुसमें आखिरी वाक्य किसी पूर्व विचारके बिना मेरे मुँहसे निकल गया। . . . जिस निर्णयका मुझे डर था, अुसके खिलाफ़ मार्चके महीनेमें मुझे नोटिस देना था। अिसके बाद निर्णय आया और मेरा अुपवास हुआ। . . . अीश्वरके भक्तोंको काम ढूँढ़ना नहीं पड़ता। वह अीश्वर पर भरोसा रखकर बैठे रहते है। अीश्वर हालत पैदा कर देता है। . . . अीश्वरको किसीने अुसके कामोंके सिवाय और किसी रूपमें देखा नहीं है। . . . मेरे लिअे अस्पृश्यता निवारणका काम शुद्ध धार्मिक काम है। अुसका कार्यक्रम मुझे राजनैतिक कामसे मिला। मगर मेरे लिअे अिस काममें राजनैतिक हेतु नहीं रहा। अिसीलिअे यरवदा-समझौतेसे अिस लड़ाअीका अन्त नहीं हो जाता। अिस समझौतेसे तो अिस लड़ाअीका आरंभ होता है। . . . लंदनमें कैसा विधान बनेगा, अिसकी मुझे चिन्ता नहीं है। लेकिन अस्पृश्यता निवारणकी मुझे ज़रूर चिन्ता है। . . . मर जानेकी मेरी अिच्छा नहीं है। मैं विविध प्रवृत्तियोंवाला आदमी हूँ और मुझे महत्वाकांक्षाअें भी हैं। . . . अीश्वरने मुझे चमार, जुलाहा, बढ़अी और अिसी तरह बहुत कुछ बनाया है। और करोड़ों मनुष्योंके साथ अेकताकी गाँठ बाँधनेकी अुसने मुझे शक्ति दी है। वे समझ सकें, अिस ढंगसे बोलनेकी अुसने मुझे भाषा दी है। यह सब मैं अीश्वरके चरणोंमें रख देता हूं। मैं अीश्वरका बन्दा हूँ। वह नचाता है अुसी तरह नाचता हूँ। मेरी ज़िन्दगीकी मुझे परवाह नहीं है। अच्छे कामके लिअे लाखों आदमियोंकी जान चली जाय, तो भी मुझे परवाह नहीं। यह तो जुआरीके खेल जैसा है। मैं अपनी ज़िन्दगीके साथ खेल खेल रहा हूँ।

राजभोजकी मुलाकातका सार फिर अुसे पत्र लिखकर बताया :

"आपसे और आपके साथ आये हुअे मित्रोंसे मिलकर मुझे बड़ा आनंद हुआ। मेरी सलाह आपको पसन्द आअी, अिसके लिअे आभारी हूँ। मुझे पूरा यक़ीन है कि जब तक जनताका सारा ध्यान गुरुवायुर पर केन्द्रित हो रहा है, तब तक मन्दिर-प्रवेशके लिअे सत्याग्रह न किया जाय और न कोअी अुपवास ही करे। अिसी तरह केलप्पनको और मुझे अुपवास करनेकी ज़रूरत पड़ ही

जाय, तो किसीको सहानुभूतिमें अुपवास करनेका विचार नहीं करना चाहिये। मगर गुरुवायुरके मन्दिरके सम्बन्धमे सारी शक्ति अेकाग्र हो रही है, तब तक सत्याग्रह मुल्तवी रखनेकी मेरी सलाहका यह अर्थ नहीं है कि दूसरे मन्दिरोंको खुलवानेके लिअे बिलकुल ही प्रयत्न न किये जायँ। यह प्रयत्न तो अविश्रान्त रूपसे करते रहना है। अभी तो यह सिर्फ़ सवर्ण हिन्दुओंकी ही अिज्ज़तका सवाल है। जब निश्चित रूपसे यह मालूम हो जायगा कि सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलवानेका कुछ भी प्रयत्न नहीं करेंगे, तब अिस सम्बन्धमें हरिजनोंके विचार करनेका समय आयगा। सौभाग्यसे हर रोज़ हरिजनोंके लिअे किसी-न-किसी मन्दिरके स्वेच्छासे खोल देनेके समाचार आते हैं। मुझे मिलनेवाली खबरोंसे जान पड़ता है कि ये प्रयास चालू हैं, हालाँकि अनशन-सप्ताहके अुत्साहसे यह नहीं हो रहा है। फिर भी सवर्ण हिन्दुओंका काम आसान करनेके लिअे हरिजनोंको अधिकसे अधिक भीतरी सुधारका — जैसे सफ़ाअीके नियमोंका पालन करने और मुर्दार मांस और शराब छोड़नेका — काम हाथमें लेना चाहिये। अिन बातोंकी चर्चा मैंने आपके साथ विस्तारसे की है।

"हरिजन बालकोंके लिअे औद्योगिक शिक्षाकी सुविधाअें और योग्य हरिजन युवकोंको छात्रवृत्तियाँ देनेकी बात मैं सेठ घनश्यामदास बिड़ला और अ० भा० अस्पृश्यता निवारण संघके दूसरे सदस्योंके साथ जब वे मिलने आयेंगे, तब करूँगा।"

राधाकान्तका पत्र आया। अुसने चिन्तामणि और कुंजरूसे पूछ लेनेकी अनुमति दे दी। अिसलिअे बापूने चिन्तामणि और कुंजरू दोनोंको अेक ही तरहका पत्र लिखवाया:

"अस्पृश्यता निवारण पर मेरे चौथे वक्तव्यमें जिस पत्रका अुल्लेख है, अुसका लिखनेवाला कौन है, यह अन्दाज आपने ज़रूर लगा लिया होगा। अुसमें जिन नामोंका ज़िक्र है, अुनमेंसे अेक आपका और दूसरा पंडित हृदयनाथ कुंजरूका है। मेरी प्रार्थना पर अुस पत्रके लेखक श्री राधाकान्त मालवीयने अपना नाम आप दोनोंको बता देनेकी मुझे अिजाज़त दे दी है। मैं कुछ भी कहूँ अिससे पहले आपसे यह जान लेना मेरा फ़र्ज़ है कि मेरे अुपवाससे क्या आपको सचमुच बलात्कार महसूस हुआ था? और आपने अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध आचरण किया था? मैं पंडित कुंजरूको भी लिख रहा हूँ।"

"यदि आपके सामने बहुतसे अुपवास करनेवाले लोग खड़े हो जायँ, तो आप क्या करेंगे?" यह सवाल पिछले दो-तीन दिनमें काफ़ी पूछा गया है। 'टाअिम्स' वालेको तो अिसका जवाब दिया था। कल प्रो० ओतुरकरको भी दिया था। आज माअिकल नामका व्यक्ति, जो अुपवासको बलात्कार समझता

है और दूसरेकी बुद्धिको हर लेनेवाला शस्त्र मानता है, पहली तारीखसे अुपवासकी धमकी देता है, अुसे लिखा :

"मेरे विचारे हुअे अुपवाससे यदि किसीका बुद्धिस्वातंत्र्य छिन जाता हो, तो मुझे ज़रूर अफ़सोस होगा। मैंने तो साफ़ शब्दोंमें ज़ाहिर कर दिया है कि मेरे अुपवासका मक़सद जनताके हृदय पर असर डालना है। जिन मित्रों और साथियोंको अस्पृश्यता निवारणमें विश्वास है, स्वाभाविक तौर पर ही वे जाग्रत होकर काममें लग जायँगे। यह चीज़ अफ़सोस करने लायक नहीं है। फिर भी अगर आपको अन्तरात्माका स्पष्ट आदेश मालूम होता हो, तो आप बेशक अुपवास कर सकते हैं। लेकिन जब तक मेरा यह खयाल बना रहेगा कि मैं भी अीश्वरके आदेश पर ही चल रहा हूँ, तब तक आप यह आशा मत रखना कि आपके अुपवासका मुझ पर कोअी असर होगा।"

'हिन्दू' पत्रके प्रतिनिधिको दी हुअी मुलाकात :

१२-११-'३२

स० — गुरुवायुरके प्रश्न पर आपने जो अुपवास करनेका अिरादा किया है, अुसके कारण समझायेंगे?

बापू — मेरा आगामी अुपवास केलप्पनके अुपवास पर आधार रखता है। मैं अैसी हालतकी कल्पना कर सकता हूँ, जब कि मुझे स्वतंत्र रूपसे भी अुपवास करना पड़े। अीश्वर न करे अैसा हो, लेकिन अगर केलप्पनका शरीर नष्ट हो जाय, तो फिर मुझे वह अुपवास पूरा करना पड़ेगा। मैंने तो अेक अन्तिम अुदाहरण लिया है। साधारण परिस्थितिमें केलप्पनसे अलग स्वतंत्र रूपसे कोअी अुपवास करनेकी मेरी अपेक्षा नहीं है।

स० — केलप्पनको यदि अैसा सन्तोष हो जाय कि सही दिशामें क़दम अुठाये जा रहे हैं और थोड़े समयमें — ठीक पहली जनवरीको तो नहीं, मगर मान लीजिये कि अेक-दो सप्ताह देरसे — मन्दिर खुले बिना नहीं रहेगा, तो फिर आपका क्या रुख होगा?

बापू — मान लीजिये कि केलप्पन अिस नतीजे पर पहुँचे, तो अुसे मेरे साथ चर्चा करनी होगी और मुझे यह यक़ीन दिलाना होगा कि अुपवासका प्रसंग नहीं है। मैं आपसे कहता हूँ कि केलप्पन कभी अैसा कहेगा, यह मैं मानता ही नहीं। लेकिन मान लीजिये कि केलप्पन फिसल जाय और अीश्वर व मनुष्यको साक्षी बनाकर ली हुअी प्रतिज्ञासे छूटना चाहे — अगर अैसी सहज भी शंका हो जाय, तो मैं अुससे कह दूँगा कि मेरी बुद्धिको सन्तोष कराओ। मगर मैंने केलप्पनको सदा अटल निश्चयवाला और सत्कार्यमें अडिग रहनेवाला माना है।

स० — आपके स्वभावके अनुसार अुपवासका निश्चय करनेसे पहले गुरुवायुर मन्दिर-प्रवेशके सवालकी सब बातोंकी जाँच आपने कर ली थी?

बापू — सवालकी सब बातोंकी जाँच कर लेनेका ढोंग मैं नहीं कर सकता। मैंने यह पूर्ण विश्वास रखा है कि केलप्पनने जाँच कर ली होगी। हाँ, मैंने अपने मनमें यह पूरा यक़ीन कर लिया है कि सामान्य रूपसे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलवा देनेका दावा सही है। मगर कोअी मुझे पूछे कि गुरुवायुरके मन्दिरके ट्रस्टका दस्तावेज़ हो, तो क्या आपने अुसे देखा है या अिस प्रसिद्ध देवालयकी व्यवस्थाकी चली आ रही प्रथाको आपने बारीकीसे जाँचा है, तो मुझे अपना अज्ञान स्वीकार करना पड़ेगा।

स० — ज़ामोरिनका 'हिन्दू' पत्रमें ७ नवम्बरको प्रकाशित हुआ आखिरी पत्र आपने देखा है? अुसमें ज़ामोरिनने कहा है कि केलप्पनने अुपवास शुरू किया, तब अुन्होंने वादा किया था कि अगर केलप्पन अुपवास छोड़ दें, तो वे खुद अिस सवालकी जाँच करेंगे; मगर केलप्पनने अिस बातकी अुपेक्षा की और अुपवास जारी रखा। अिसलिअे अब मैं अुस वादेसे बँधा हुआ नहीं हूँ।

बापू — यह बात समझमें ही नहीं आती कि ज़ामोरिनने केलप्पन पर अविवेकका आरोप लगाया है और अिस कारणसे अपना किया हुआ वादा पूरा करनेसे अिनकार किया है। यह सच है कि यह वादा अुन्होंने केलप्पनसे किया था। मगर यह वादा जनतासे भी किया माना जायगा, और अिसका अर्थ तो यह हुआ कि ज़ामोरिनने यह ज़ाहिर किया कि मैं निपटारा करनेकी पूरी कोशिश करनेके अपने धर्ममें जाग्रत हूँ। मैं मानता हू कि केलप्पनका व्यवहार चाहे जैसा भी हो, पर ज़ामोरिन अेक ज़िम्मेदार आदमी और ट्रस्टीकी हैसियतसे अुस वादेको पूरा करनेके लिअे बँधे हुअे हैं। हिन्दू मन्दिरोंके ट्रस्टियोंका फ़र्ज़ सिर्फ़ रूढ़िकी या किसी अेक वर्गके खास हक़ोंकी रक्षा करना नहीं है, मगर खुद हिन्दू धर्मकी शुद्धिकी रक्षा करना है और हिन्दुओंकी प्रतिदिन विकसित होनेवाली आध्यात्मिक आकांक्षाओंको सन्तोष देना है। अैसे ट्रस्टीके किसी अेक या अनेक मनुष्योंके अुसके विरुद्ध कुछ कहने पर अशान्त हो जानेसे काम नहीं चल सकता। क़ानूनके सवाल पर ज़ामोरिनकी बात मैं जानता हूँ। मगर क़ानूनी मुश्किलें जब बड़े नैतिक सुधारमें बाधक होती हों, तो अुनके खिलाफ़ लड़ना चाहिये और अुन्हें दूर करना चाहिये। अिसलिअे ज़ामोरिन या कोअी और आदमी मन्दिर खोलनेके विरुद्ध क़ानूनी मुश्किलें पेश करता है, तो वह सन्तोषजनक अुत्तर नहीं कहा जा सकता। अगर नीतिधर्मके खयालसे लोकमत ठीक हो, तो ज़ामोरिन जैसे ट्रस्टीको जनताकी अिस नैतिक

नहीं बोलूँगा। धर्मक्रियासे सम्बन्ध रखनेवाले ब्राह्मणोंकी ठेकेदारीके हक़ोंका सवाल बिलकुल अलग है; और अगर ठेकेदारी मिटानी हो, तो अिस सवालका विचार स्वतंत्र रूपसे करना पड़ेगा। कुछ खास क्रियाओंको किसी खास वर्गके हाथोंमें ही रखनेकी प्रथाकी मैं बिना विचारे निन्दा करनेको तैयार नहीं हूँ। यह सवाल हक़ोंका नहीं, बल्कि कर्तव्यका होगा। अुसमें अितनी ही बात है कि अमुक कर्तव्य अुसके लिअे ज़रूरी योग्यता रखनेवाले कुशल लोगोंका वर्ग ही करे।

स० — मद्रास हाअीकोर्टके जज श्री श्रीनिवास आयंगरने कहा है कि मन्दिर-प्रवेश राजनीतिमें हरिजनोंको मना लेनेके अेक अुपायके रूपमें सुझाया गया है। अिस बारेमें आप क्या मानते हैं?

बापू — श्री श्रीनिवास आयंगर हाअीकोर्टके जज हुअे, अुसके पहलेसे मैं अुन्हें जानता हूँ। अिसलिअे मन्दिर-प्रवेशको राजनैतिक सवाल बनानेकी कल्पना भी कैसे हो सकती है, यह मेरे लिअे आश्चर्यकी बात है। मैं तो यह समझ ही नहीं सकता। अगर हिन्दू धर्म बाहरी दखलके बिना अिस पुराने कलंकको धो सके, तो अुसका भला ही होगा। दूसरे धर्मवाले तुरन्त ही मानने लग जायँगे कि हिन्दू धर्ममें कोअी अजीब चेतना भरी है। मुझे लगता है कि अस्पृश्यता निवारण हिन्दू धर्ममें अैसा ज़बरदस्त सुधार है कि अुसका असर सारी दुनिया पर पड़े बिना नहीं रहेगा। अिस सवालको हल करनेका मेरा तरीक़ा असफल साबित हो, तो वह मेरी हस्तीकी संपूर्ण अवगणना हुअी मानी जायगी।

स० — मद्रास धारासभा सुधारके बिलको नामंजूर कर दे, तो आप क्या करेंगे?

बापू — अैसी असफलताका मुझे डर नहीं है। जिस धारासभाने डॉ० सुब्बारायनका प्रस्ताव पास किया, वह मौजूदा क़ानूनके सुधारका बिल पेश होने पर अुसे नामंजूर नहीं करेगी। मैं यह नहीं मानता कि मैं अपने निश्चित समयसे पहले मर जाअूँगा।

वासुकाका और हरिभाअूके साथ:

"मन्दिर हिन्दू जीवनके आवश्यक अंग हैं। हम शिक्षित लोगोंको अपने दिलमें अीश्वरकी मौजूदगी महसूस होती होगी और अिसलिअे मन्दिर जानेकी ज़रूरत नहीं मालूम होती होगी। लेकिन सारे हरिजनोंको यह अनुभव कराना असंभव है कि अीश्वर अुनके हृदयमें बसा हुआ है। अुन्हें तो यही लगता है कि मन्दिरोंके ज़रिये ही वे अीश्वरके साथ सम्बन्ध जोड़ सकेंगे।"

अिन लोगोंको श्रद्धा रखनेकी सलाह दी। मन्दिर खुलेंगे ही नहीं यह मानकर चलनेके बजाय, मन्दिर ज़रूर खुलेंगे अिस श्रद्धासे काम लेनेको कहा।

अेल्विनको अुनके आश्रमके लिअे यह सन्देशा भेजा :

१३-११-'३२ "स्वच्छ हवा, स्वच्छ पानी, सादा भोजन और स्वच्छ विचार याना अीश्वरके साथ सच्ची अेकता — ये चार मुख्य नियम हैं। चौथे नियममेंसे पहले तीन निकलते हैं। अिसी तरह तुम्हारी अंग्रेज़ी कहावत है — 'सादा जीवन और अुच्च विचार।' अिस वचनको मैं अिस तरह और भी सरल बनाता हूँ: 'स्वच्छ विचार और स्वच्छ जीवन'। अिस वचनके मेरे अर्थके अनुसार फोड़े-फुंसी होना अस्वच्छ जीवनकी निशानी है। तुम्हारे आश्रमवासियोंके शुरू करनेके लिअे यह मेरा सन्देश समझो।"

मद्रास प्रान्तमें अेक म्युनिसिपेलिटीने प्रस्ताव किया कि कॉफ़ी हाअुस हरिजनोंके लिअे खुले होने चाहियें। शिवस्वामी आयर अिसे ज़ोर-जुल्म और हिंसा बताकर अुस पर आलोचना करते हैं।

बापू बोले: "अिसमें कोअी ज़ोर-जुल्म नहीं। म्युनिसिपेलिटी समय देखकर यह प्रस्ताव करे, तो वह तो बधाअीकी पात्र है। हम यह माँग करते हैं कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियों और जूलुओंके लिअे होटल खुले होने चाहियें। यदि होटलवाले म्युनिसिपेलिटीसे लाभ अुठाते हैं, तो अुन्हें म्युनिसिपेलिटीकी हदमें रहनेवाले सबकी सेवा करनी ही चाहिये। हमारे दिल अैसे कठोर हो गये हैं कि अैसे अन्याय हमें खटकते ही नहीं। म्युनिसिपेलिटी अैसा प्रस्ताव कर सकती है कि जिसे हरिजनोंको यह सुविधा नहीं देनी हो, वह भारी सुपरटैक्स दे। अिस टैक्ससे म्युनिसिपेलिटी अछूतोंके लिअे अलग कॉफ़ी हाअुस खोल सकती है। यह बचाव नहीं किया जा सकता कि ये सब खानगी कॉफ़ी हाअुस हैं। ये सब सार्वजनिक सेवाके लिअे हैं। यों तो ताँगेवाले, मोटरवाले और ट्रामवाले अछूतोंको या और किसी वर्गको न बैठने दें, तो क्या यह चल सकता है?"

'संतमानां त्वमसि शरणं' बापूके बारेमें हर रोज़ छोटी छोटी बातोंमें भी साबित होता रहता है। अिसके लिअे अूपरका अुदाहरण तो काफ़ी है ही। दूसरा, अरुण दासगुप्ता (सतीशबाबूके लड़के) को बापूने अुसकी बीमारीमें आश्वासन देनेवाला जो पत्र लिखा था, वह (बंगाली) अखबारमें आ गया। अुसे बीमार होकर बिछौनेपर पड़े हुअे अेक मुसलमान युवकने पढ़ा। अुसने बापूको हृदयद्रावक पत्र लिखा कि "आपका प्रेम तो विश्वप्रेम है। क्या आप मुझे अैसा पत्र नहीं लिखेंगे, जिससे मेरा कलेजा ठंडा हो? और जेलसे छूटनेके बाद मुझे आप आश्रममें नहीं लेंगे? मैं तो बिलकुल अपंग हूँ।" बापूने अुसे अत्यंत मधुर पत्र लिखा :

" तू मेरे लिअे अरुण जैसा ही है और आश्रममें लिया जा सका, तो ले लूँगा। मगर अभी तो कलकत्तेमें अपंगोंके लिअे जो आश्रम है, अुसमें जाना चाहे तो अुसकी व्यवस्था कर दूँ।"

अिसके सिवाय, चूँकि यह युवक चाँदपुर जिलेका है, अिसलिअे हरदयालबाबूको पत्र लिखा कि आप अुसे देख आअिये और अुसकी देखभाल होती है या नहीं यह ध्यान रखिये।

सेंकीने बापूसे अपील की थी, अुसका खूब फटकारते हुअे जवाब दिया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "यह मुझे पसन्द आया।"

बापू बोले: "मसाला होता है, तब तुमको अच्छा लगता है, क्यों?"

जवाबका मसौदा देखकर मुझे सूझा कि अुसमें वाअिसरॉयको यहाँसे लिखे गये पत्रका ज़िक्र नहीं है। वह खास सुलहका अिशारा था। बापू खुश हुअे। तुरन्त वह पत्र निकलवाया। फिर अुसका और अुसके बाद भारतमन्त्रीको लिखे हुअे पत्रका अुसमें अुल्लेख किया।

गवर्नरके मारफत यह समुद्री तार (केबल) भेजा गया।

१४-११-'३२

आश्रमकी डाकके कारण अस्पृश्यताकी डाक बहुत नहीं थी। गीतासे 'यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य' अुद्धृत करनेवालोंको अिस प्रकारका अुत्तर दिया:

"आपकी दलील अैसी मालूम होती है: भगवद्गीता भक्तको शास्त्रविधिके अनुसार रहनेको कहती है। और शास्त्र अस्पृश्यताका समर्थन करते हैं। अिसलिअे यही कहा जायगा कि भगवद्गीता भी अस्पृश्यताका समर्थन करती है।

"तब सवाल यह होता है कि शास्त्र किसे कहें? मैं अिसका जवाब यह देता हूँ कि गीताकी मुख्य ध्वनिके विरुद्ध जो कुछ हो वह शास्त्र नहीं है, यह मानकर अुससे अिनकार किया जाय। गीताकी मुख्य ध्वनि है आत्माकी अेकता और सब जीवोंकी समानता। अिसलिअे गीतामें अस्पृश्यताके लिअे कोअी आधार नहीं है।"

'पंडिताः समदर्शिनः' का आश्रय लेनेवालोंसे कहा: "यह पंडितोंके लिअे ही है, यह कहकर सटक क्यों जाते हैं? जो पंडित करें वही साधारण लोग करें, तो कोअी अिनकार थोड़े ही करता है? मामूली लोग भी अैसा करें, तो बहुत ही अच्छा। अिस हद तक वे भी पंडितों जैसे हुअे।"

अेक आदमीने पूछा था कि "औरोंके विरुद्ध — जैसे कि अीसाअियों वगैराके विरुद्ध — भी तो अछूतपन मिटना चाहिये न?" अुसे लिखा:

"मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। किसीको भी अछूत नहीं मानना चाहिये। मुझे विश्वास है कि जब हम चार करोड़ हिन्दुओंको अछूत मानना छोड़ देंगे, तब ओसाअियों और मुसल्मानोंको भी अैसा समझना बन्द कर देंगे।"

अेक साधनहीन बालकको सेवा करनेका तरीका समझना था। अुसे लिखा:

"तुम यह समझते हो कि करोड़ों मनुष्योंके नसीबमें तो गरीबी ही है, अिससे मुझे खुशी है। श्रीकृष्णकी प्रार्थना करनेका सच्चा तरीका यह है कि जो हमसे कम भाग्यशाली हैं, अुनकी जो कुछ सेवा हो सके अुसके नामसे करें। जब हम अपने रोजमर्राके जीवनमें सेवाकी यह भावना प्रगट करेंगे, तब हमारे अश्रद्धालु पड़ोसी भी अीश्वर पर श्रद्धा करने लगेंगे। अछूतोंमें जाकर वे हमारे कुटुम्बीजन हों अैसा मानकर यथासम्भव अुनकी सेवा करनेसे तुम अस्पृश्यता निवारणका काम कर सकोगे। तुम्हें हिन्दी न आती हो, तो जल्दी सीख लेना चाहिये।"

हरिजनसेवाके कारण आश्रमके पत्र थोड़ेमें निपटाने पड़े। अेक पत्र अुल्लेखनीय है। अिसमें ट्रस्टीकी योग्यता और ज़िम्मेदारी समझाअी:

"तू अगर यह मानती हो कि ट्रस्टमें रहनेसे तू स्वतंत्र हो जाती है, तो यह भूल है। ट्रस्टका अर्थ ज़िम्मेदारी है और मुझे तो यह पसन्द है कि मनुष्य अपनी जायदादका ट्रस्टी बन जाय। जो ट्रस्टी बन जाता है, वह मालिक नहीं रह जाता। अुसे तो रक्षककी हैसियतसे सम्पत्तिका जो कमीशन मिले, अुसीसे गुज़र करना चाहिये। ट्रस्टका यही अर्थ है। जो ट्रस्टी रक्षक होकर भक्षक बन जाता है, अुसकी बात यहाँ नहीं है। यहाँ तो यह बताता हूँ कि ट्रस्टमें क्या धर्म है। तू लिखती है कि अपने पैरों पर खड़ी होनेकी तू शक्ति चाहती है। अिसका अर्थ तू समझी? अपने पैरों खड़े होनेका अर्थ है न बापकी कमाअी खाना, न ससुरकी और न पतिकी। अपनी ताक़तसे जो टुकड़ा मिल जाय, अुसीको खाकर रहना। अिस तरहसे रहनेकी शक्ति तूने कभी नहीं दिखाअी। तुझमें अैसी अिच्छा है यह मैंने कभी देखा नहीं।"

अिसी पत्रमें: "जिसकी चोरी हुअी है, अुसे मैंने बधाअी दी है। यही बात अिस चोरीके लिअे भी है। हमें अपने पास अेक कौड़ी भी रखनेका अधिकार नहीं है। हम जो कुछ भी रखते हैं, वह चोरीका माल है। दुनिया भी चोर है, अिसलिअे यह चोरी नहीं कहलाती। अिससे हम भ्रममें न रहें। जब हमारे पास चोरीका माल पड़ा है तो दूसरे चोर अुसे लूट ले जायँ, अिसमें आश्चर्यकी क्या बात? अिससे यह शिक्षा लेनी चाहिये कि चोरके लूटने लायक संग्रह हम अपने पास नहीं रखें, और थोड़ा बहुत भी रखा हो तो

जब तक अुसे दूसरे अुठाकर न ले जायँ, तब तक अुसका स्वामित्व भोग लें। अिस चोरीसे यदि तू अितना पाठ सीख ले तो तूने कुछ नहीं खोया, और अितना ज्ञान प्राप्त किया सो नफ़ेमें।"

कुनहप्पाका मेरे नाम पत्र आया था। अुसके जवाबमें :

"तुम्हारा पत्र तथा ज़ामोरिन और केलप्पनके बीच हुअे पत्र-व्यवहार और तारोंकी नक़लें तुमने मुझे भेज दीं, सो अच्छा किया। ये मेरे लिअे बहुत अुपयोगी साबित हुअे हैं। अगर अुपवास करना पड़ा, तो वह ज़ामोरिनके विरुद्ध नहीं होगा। अगर अधिकांश सवर्ण हिन्दू अवर्णोंके लिअे मन्दिर खोलनेके सचमुच पक्षमें हों, तो क्या तुम्हें अैसा नहीं लगता कि खुद ज़ामोरिन भी अुनके विरुद्ध मन्दिर बन्द नहीं रख सकता? मन्दिर कोअी ज़ामोरिनकी निजी सम्पत्ति नहीं है। यह याद रखना चाहिये कि वह खुद भी अैसा दावा नहीं करता और स्वीकार करता है कि वह सिर्फ़ ट्रस्टी ही है। अब थोड़ी देरके लिअे मान लिया जाय कि वह अकेले मन्दिर जानेवाले सवर्ण हिन्दुओंका ही ट्रस्टी है, तो यह कहा जायगा कि मन्दिरकी कुंजी अुस मन्दिरमें जानेवालोंके हाथमें है। ज़ामोरिन अुनकी तरफ़से कुंजी अपने पास रखता है। अब सवर्ण सचमुच ही मन्दिर खोलना चाहते हों, तो अुनके लिअे अपनी अिच्छा अचूक ढंगसे ज़ाहिर करनेके कअी रास्ते हैं। मन्दिरका अुपयोग करनेवाले सभी स्त्री-पुरुषोंकी मतगणना करनेका प्रयत्न कभी हुआ है? अगर स्थिति मैं मानता हूँ वैसी नहीं है, अगर सवर्णोंको कोअी हक़ न हों, अगर यह ट्रस्ट अुनके लिअे न हो, तो सही स्थिति क्या है यह मुझे बताना चाहिये। अुसके बाद तुम मुझे अपना निर्णय बदलनेको कह सकते हो। जैसे, अगर मन्दिर ज़ामोरिनकी खानगी जायदाद हो यानी अगर अुसे चाहे जब किसीको भी मन्दिरमें घुसनेसे रोकने और मन्दिरके दरवाज़े बन्द करनेका अधिकार हो, तो हरिजनोंके लिअे गुरुवायुरका मन्दिर खुलवानेका सारा आन्दोलन जड़मूलसे ही ग़लत था और हमें अुसे वापस ले लेना चाहिये। सब कार्यकर्ता अिस दृष्टिकोणसे सारी स्थितिकी अच्छी तरह जाँच करें। अगर भूल हुअी हो, तो अुसका खुला अिकरार कर लेनेमें कोअी शर्म न होनी चाहिये।"

'संततानां त्वमसि शरणं'का दूसरा अुदाहरण : अेक सज्जन लिखते हैं कि

१५-११-'३२

"मेरी छः बरसकी लड़की पर परिचित और मित्र जैसे माने जानेवाले पचास वर्षके पड़ोसीने नशेमें बलात्कार करनेकी कोशिश की। मेरी पत्नीको बड़ा दुःख है। अिस आदमीको मार डालनेका मन होता है। मगर आपका अनुयायी हूँ, अिसलिअे चुप होकर बैठा हूँ। अैसे दुष्टको कैसे छोड़ा जाय?" अुन्हें लिखा :

"आपकी पत्नी और आपके लिअे मेरा हृदय द्रवित हो रहा है। आपको कौनसा मार्ग ग्रहण करना चाहिये, यह मुझे तो दीयेकी तरह साफ़ दीख रहा है। आपको अुस आदमीको और अुसके कृत्यको भूल जाना चाहिये। अकेला अीश्वर ही सज़ा और अिनाम देता है। अपराधीके विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाअी करनेका आपको अधिकार था। अब भी है। मगर यह स्पष्ट दीखता है कि अैसा करनेका आपका अिरादा नहीं है। असलमें तो यह आदमी होशमें नहीं था। कौन जानता है किसी दिन अुसे अक़ल नहीं आयगी और वह अच्छा आदमी नहीं बनेगा? अुसका भला करनेका आपको कोअी मौक़ा मिले, तो अुसे हाथसे मत जाने दीजिये। अपनी पत्नीको आश्वासन दीजिये और अुसे अिस घटनाको भूल जानेके लिअे समझाअिये। आपकी लड़कीको तो यह प्रसंग याद ही नहीं रहने देना चाहिये। मैं सोचता हूँ कि अुसे शायद पता भी न होगा कि अुस पर क्या करनेकी कोशिश की गअी थी। मगर अुसे पता हो तो भी आपको अुसका लालन-पालन अिस तरह करना चाहिये कि वह अिस घटनाको बिलकुल भूल जाय।"

वसंतराम शास्त्री जागे: "सन् '२१ के और आजके महात्मा गांधी अेक ही हैं क्या? आप लाखों मनुष्योंको अपना अनुयायी मानते हैं, पर वे तो पाखंडी हैं और आपको धोखा देते हैं। आप जनता पर अत्याचार कर रहे हैं।"

अुन्हें जवाब दिया:

"अपनी दृष्टिसे तो मैं जैसा सन् '२१ में था वैसा ही हूँ। मगर अैसी आशा रखता हूँ कि मैंने अिसी दिशामें कुछ प्रगति की होगी। अिस जगतमें कोअी चीज़ स्थिर तो है ही नहीं। या तो आगे बढ़ती है या पीछे हटती है। जिन लोगोंके लिअे आपका यह खयाल है कि वे पाखंडी हैं, अुनके लिअे मैंने नहीं लिखा। पाखण्डी माने जायँ अैसे तो अिने-गिने ही होते हैं। मैंने तो असंख्य लोगोंके बारेमें लिखा है। अुनमें अज्ञान हो सकता है, मूर्खता हो सकती है, मगर पाखंड नहीं हो सकता। ज़रा गहराअीसे सोचेंगे तो आपको अिस बातकी प्रतीति हुअे बिना नहीं रहेगी। मैं चाहता हूँ कि आप अत्याचारके बारेमें ज़रा ज्यादा साफ़ लिखें।"

१६-११-'३२

'संतप्तानां त्वमसि शरणं' का आज अेक विचित्र अुदाहरण। . . . ने अत्यंत संताप, क्रोध और तिरस्कारसे भरा पत्र भेजा। अुसे बापूने शान्तिसे जवाब दिया:

"आपका पत्र मिला। आपका दुःख जानकर मुझे दुःख हुआ है। आपका क्रोध मैं समझ सकता हूँ। आपने सहन करनेमें कोअी

कसर नहीं रखी। अितने पर भी आपको और दूसरोंको मैंने जो सलाह दी, अुसका मुझे पछतावा नहीं है। ज्ञानपूर्वक दुःख सहन करनेसे दुनियामें आज तक किसीका बुरा नहीं हुआ। दुःख पड़े और अुसे सहन किया जाय, यह बुरा नहीं। मगर अिस वक्त मैं आपको कुछ नहीं समझा सकता। अीश्वर आपको शांति दे, आपका कल्याण करे! क्रोधमें भी आप लिखते रहेंगे, तो मुझे अच्छा लगेगा। बलसाड़में क्या करते हैं?"

आज गोसीबहन, नरगिसबहन, शीरीनबहन और जमनाबहन आअीं। अुन्होंने बम्बअीके अस्पृश्यताके कामकी कितनी ही तफ़सीलें पेश कीं और अुपवासके दिनोंका अेक प्रसंग बयान किया। अेक स्त्री माधवबागमें अच्छे कपड़े पहनकर दर्शन करने आअी और मन्दिरके आँगनके बीचमें खड़ी होकर चिल्लाने लगी: "मैं ढेढ़नी हूँ, ढेढ़नी। तुम सबने मुझे छू लिया है, यह याद रखना!"

आज शामको सातवीं पत्रिका लिखवाते समय 'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ' का अर्थ करनेका बापूने प्रयत्न किया और शास्त्रकी व्याख्या दी। सोलहवें और सत्रहवें अध्यायमें 'शास्त्र' का मैं जो अर्थ करता हूँ, वह मैंने बताया।

बापू कहने लगे: "तो तुम शास्त्रको अनासक्ति शास्त्र या कर्मयोग शास्त्र कहते हो?"

मैंने कहा: "हाँ; और यह शास्त्र अच्छी तरह बतानेके बाद गीताकार बाहरके शास्त्रोंको प्रमाण क्यों माने?"

बापू बोले: "यह अर्थ मेरे गले अुतरता है। मगर यह अर्थ रखनेसे बड़ा विवाद पैदा हो जायगा।" यह कहकर खुदने यह अर्थ किया कि 'गीताके सिद्धान्तों पर जीवनमें अमल करनेवाले पुरुषका आचरण ही शास्त्र है।' मैंने बापूको बताया कि अिसके लिअे तैत्तिरीय अुपनिषद्में प्रमाण है और विमर्शी, युक्त और धर्मकाम ब्राह्मणोंका आचरण कर्तव्याकर्तव्यकी कठिनताके समय प्रमाण है, यह बतानेवाला मंत्र अुद्धृत किया। बापूको वह बहुत योग्य लगा।

अेक मन्दिरके बारेमें खबर मिली कि मन्दिर-प्रवेशकी मतगणनामें ७००० मत प्रवेशके पक्षमें और ३० विरुद्ध थे। भैया लोग भी लोगोंके पीछे-पीछे चल रहे थे और कह रहे थे कि "सब हाँ बोलते हैं, तो हमको क्या है?"

आज सातवळेकरजीका वहाँके अस्पृश्यता निवारणके आन्दोलनके बारेमें बढ़िया पत्र आया।

नटराजनका कल सुन्दर पत्र आया था। अुन्हें बापूने नीचे लिखा जवाब भेजा:

"आपके दोनों पत्र मिल गये। यह जानकर खुशी हुअी कि डॉक्टरको दिल्लीमें अच्छी नौकरी मिल गअी। आपके दूसरे पत्रमें बुद्धिसे अपील की गअी

है, और वह ठीक है। मगर मेरे जैसोंके मामलेमें बुद्धिसे की जानेवाली अपीलमें दो मुश्किलें हैं। पहली मुश्किल तो यह है कि दलीलें पूरी तरह माकूल होनेपर भी अुनका अेक ही चीज़ पर आधार न होनेके कारण वे बातको मनवानेमें असफल साबित हो सकती हैं। दूसरे, जैसा आप खुदने ही कहा है, मेरे जैसोंका मामला बुद्धिसे परे है। फिर भी अैसे मामलोंमें अेकसे विचारके मित्रोंके साथ विचार-विनिमय करनेकी मैं हमेशा अिच्छा रखता हूँ। कारण, मैं मानता हूँ कि भूलें करनेवाले मनुष्यके लिअे अन्तर्नादकी प्रेरणाके मामलेमें भी संपूर्ण विश्वास जैसी कोअी चीज़ नहीं है। अीश्वर अपनी आवाज़ सुनानेके लिअे पवित्रसे पवित्र साधन पसन्द करता है। परन्तु हम पामर प्राणियोंके लिअे संपूर्णताके नज़दीक पहुँचना ही संभव है। जब तक हम यह शरीर धारण किये हुअे हैं, तब तक पूर्णता प्राप्त नहीं की जा सकती। अिसलिअे आपसे पूरी आज़ादीके साथ चर्चा कर लेना चाहता हूँ कि मैं किस प्रेरणासे यह काम कर रहा हूँ। वह अिस आशासे कि आप मेरा दृष्टिकोण समझें और मेरे कार्यका पूरी तरह समर्थन करें। अथवा आपकी दलील या आपका अेक शब्द अपनी जो भूल मैं न देख सका होअूँ, वह मुझे बता दे। हाँ, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि सोचे हुअे अुपवासकी नैतिकताके बारेमें मेरे मनमें ज़रा भी शक नहीं और अिसलिअे मेरे मनमें ज़रा भी अशान्ति नहीं है। मैं नहीं चाहता कि आप बम्बअी आनेकी ज़रा भी जल्दी करें। अुत्तरमें आपके खानगी या सार्वजनिक जो भी कार्यक्रम हों, अुन्हें पूरा कर लीजिये और जब बम्बअी लौट आयें, तब कुछ घण्टोंके लिअे पूना आ जाअिये। अुस समय हम विचार-विनिमय करेंगे।"

चमनने लिखा था: "आप 'मम हृदय भवन प्रभु तोरा' के माननेवाले होकर भी मन्दिरके लिअे अुपवासका यह अड़ंगा क्यों ले बैठे हैं? मन्दिरों और मस्जिदोंने तो सत्यानाश कर दिया है। लोग आपके कार्यका अनर्थ करेंगे। आप वहम बढ़ा रहे हैं। चरखा मर गया दीखता है। जापानका सस्ता कपड़ा गाँव-गाँव पहुँच गया है और ब्रिटिश कपड़ेकी तरह खादी अछूत बन रही दीखती है।" अुसे लिखा:

"जहाँ मस्जिद, मन्दिर और गिरजेका सैकड़ों पाखंडियोंने अवश्य दुरुपयोग किया है, वहाँ करोड़ोंने अुनका सदुपयोग भी किया है। अिस कथनकी सच्चाअीकी परीक्षा करनी हो, तो अपनी सुन्दर कल्पनाशक्तिका अुपयोग करो और कल्पनामें यह चित्र खींचो: अेक-अेक गिरजे, अेक-अेक मन्दिर और अेक-अेक मस्जिदको कोअी सुधारक अेक दिनके भीतर जमींदोज़ कर दे, तो फिर विचारो कि अुन करोड़ों भोले-भाले मनुष्योंका, जिन्हें अिस संसारमें रोज़ अिन मन्दिरों और मस्जिदोंसे सन्तोष मिलता था, यह जानकर क्या हाल होगा

कि वे अेकदम बन्द हो गये हैं? मैं तो अिस चीज़का रोज़ अनुभव करता हूँ। नापाकसे नापाक मन्दिरोंमें भी पाक दिलसे जानेवाले भावुकोंको ज़रूर अीश्वरके दर्शन होते हैं। यही अुसकी अजीब कुदरत है, या यों कहिये कि यही अुसकी माया है। लेकिन कोअी महाभक्त बोल अुठे :

'माया सौने मोह पमाड़े, हरिजनथी रही हारी रे।'

और अगर तुम्हारी कल्पनाने अितना देख लिया हो कि जब तक मन्दिर क़ायम हैं, तब तक तो हरिजनोंके लिअे भी वे खुले होने चाहियें, तो फिर तुम्हारी बुद्धि-शक्तिसे ही तुम अुपवासकी अुपयोगिता भी समझ जाओगे; क्योंकि यह अुपवास सनातनियोंके विरुद्ध नहीं, परन्तु अुन लाखों या करोड़ोंके विरुद्ध है, जिनका मेरे साथ प्रेम-सम्बन्ध हो गया है। अिस अुपवाससे अुनमें खलबली मच जाय, तो हरिजनोंके लिअे मन्दिरोंके दरवाजे खुले बिना न रहें।

"चरखेके बारेमें मुझे अटूट धीरज है। तुम्हारी देहातकी जानकारी कच्छ तक ही सीमित है। मगर कच्छके गाँवों और दूसरे लाखों गाँवोंके बीच बहुत कम साम्य है। और कच्छमें भी अपने ही खेतमें पैदा की हुअी कपाससे जो कपड़ा खुद ही तैयार किया जाय, अुससे सस्ता और कोअी कपड़ा नहीं हो सकता। यदि हो सकता हो, तो अुसे सर्दी और धूपसे बचानेवाला या अैब ढाँकनेवाला वस्त्र नहीं मानना चाहिये, बल्कि वह तो लाशको ढाँकनेवाला कफ़न है। पानीके बजाय पानी जैसा दीखनेवाला ज़हरीला पदार्थ कोअी मुझे मुफ़्त दे और जिस प्यालेमें दे वह भेंट करे, और असली पानी कोअी मेरी अंजलीमें ही डाले और अुसके चार पैसे भी माँगे, तो मुझे क्या पसन्द करना चाहिये? तुम अधीर हो, तुम्हारा मन बड़ा चंचल है, तुम्हारा विश्वास क्षणिक है, अिसलिअे जल्दी-जल्दी चिढ़ जाते हो। यह कोअी तुम्हारा स्वभाव नहीं है। यह तुम्हारी बीमारी है। अिस बीमारीको निकाल दो। तुम्हारा स्वभाव तो धीरज रखने और लोहेकी तरह मज़बूत बननेका है। किसी भी चीज़पर झटपट विश्वास कर लेनेकी ज़रूरत नहीं। मगर बारीकीसे जाँच करनेके बाद जिस चीज़पर विश्वास जम जाय, अुससे तो अुसी तरह चिपटे रहना चाहिये, जैसे मकोड़ा गुड़के घड़ेसे चिपटा रहता है। 'प्राण जाय अरु वचन न जाअी।' अब तो बहुत हो गया।"

माअिकल लिखता है कि "अगर आप मुझे यह यकीन दिला सकें कि आपके अुपवासमें बलात्कार नहीं है, तो मैं अपना अुपवास नहीं करूँगा!"

अुसे बापूने लिखा :

"किसीको भी सन्तोष देनेकी शक्ति रखनेका मैं दावा नहीं करता। मैं सिर्फ़ कोशिश कर सकता हूँ। केलप्पनने नोटिस दिये बिना अुपवास किया था, अिसलिअे अुसके कार्यमें शुरूसे ही दोष रह गया था। अब जो अुपवास

करनेका सोच रखा है, अुसपर यह दोष लागू नहीं होता। अगर मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुलेगा, तो वह ट्रस्टियोंके प्रति किसी बलात्कारके कारण नहीं खुलेगा, बल्कि मन्दिरमें जानेवालोंकी, जो अुसके असली मालिक हैं, अुपेक्षा न की जा सकने लायक माँगके कारण खुलेगा। अिससे अुलटी मिसाल लीजिये। अगर मन्दिरमें जानेवालोंका हृदय-परिवर्तन नहीं हुआ हो, तो ट्रस्टियोंपर कितना ही दबाव क्यों न डाला जाय, फिर भी क्या हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुल जायगा?

वसन्तराव शास्त्रीने अेक 'है' शब्द अुड़ाकर बापूके वाक्यके अर्थका अनर्थ कर दिया। अुसके बारेमें अुन्हें पत्र लिखा।

जीवनलाल, हीरालाल, सतीशबाबू, प्यारेलाल और चन्द्रशंकर मिल कर गये। सतीशबाबूके साथ बलात्कारके बारेमें बातें निकलीं।

१७-११-'३२

बापू कहने लगे: "किसी खास सिद्धान्त या धर्मके लिअे मनुष्य मरनेको तैयार है या नहीं। अगर सनातनी मानते हों कि अस्पृश्यता अुनका धर्म है, तो अुन्हें मुझे मरने देना चाहिये। मगर यह मानते हों कि वे मुझे नहीं मरने दे सकते, तो यह स्पष्ट है कि अुनके लिअे अस्पृश्यता धर्म या सिद्धान्त नहीं है। अैसा हो तो अुपवास, भले ही अुसे बलात्कार बताया जाय, अुचित है।"

शामको बातें करते हुअे मैंने कहा: "प्यारेलाल और बादमें जीवनलाल दोनों पूछते थे कि 'मतगणनाका परिणाम हमारे विरुद्ध आये तो?' मैंने कहा, 'तो अुपवास छोड़ देना चाहिये'।"

बापू कहने लगे: "ठीक है। तो अुपवास हरगिज़ नहीं हो सकता। अगर जारी रखूँ तो वह अुपवास हिन्दुओं पर बलात्कार ही होगा; और जो सचमुच बलात्कार है वह अुपवास हो ही नहीं सकता।"

अैसा लगता है कि यह चीज़ किसी मुलाकातके विवरणमें अच्छे ढंगसे रख दी जाय, तो अिससे अच्छा नतीजा निकलेगा और लोगोंकी बहुतसी ग़लतफ़हमी दूर हो जायगी।

मुलाकातोंमें कुछ हकीकतें अस्पृश्यतासे बाहरकी मिलीं। अुनकी बात चलनेपर शामको बापू बहुत बिगड़े। ". . . ने यह बात की ही कैसे? यह जानकारी दी ही क्यों? मुझे अिन लोगोंका आना बन्द करना पड़ेगा। . . . से कह दिया जाय कि अस्पृश्यताके बहाने मेरा मुँह देखने या भूलकर भी दूसरी बातें करनेको मेरे पास न आये। सरकारको दिये हुअे तारके आखिरी शब्द तुम हमेशा याद रखना: 'अिस विश्वासका कभी दुरुपयोग नहीं होगा।' यह भी याद रखना कि अुसके अक्षरोंका जरा भी भंग हुआ, तो हमारा

सब काम बिगड़ जायगा। यह तो कफ़न बाँधकर लड़नेकी लड़ाअी मोल ली गअी है। मैं तो बार बार कह चुका हूँ कि बाहर हमारी लड़ाअी शुद्ध रूपमें चलती होती, तो हम कभीके जीत गये होते। मगर हमारी लड़ाअीमें बहुतसी गन्दगी चलती ही रहती है। . . . से कह देना कि अुसे निश्चय कर लेना चाहिये कि लड़ाअीमें रहना है या अस्पृश्यता निवारणका काम करना है? फिर अिस निश्चयपर वह कायम रहे। अगर वह अस्पृश्यता निवारणके काममें ही पड़े, तो मुझसे मिल सकता है। मगर दोनों काम करते हुअे मुझसे नहीं मिल सकता।"

१८-११-'३२

पद्मजाका जन्मदिवस था। पद्मजाने लिखा था: "मुझे यही पता नहीं चलता कि मैं बड़ी कब दिखाअी दूँगी। आपके सामने बड़ी दिखनेके लिअे किसी भी दिन पर्याप्त गौरव प्राप्त करनेकी तमाम आशायें मैंने लगभग छोड़ दी हैं। और किस तरह 'बड़ी' दिखना चाहिये, अिस बारेमें आपसे सलाह लेना तो किसी कामका नहीं। महात्मापनकी अितनी भारी शोहरत पाकर भी आप खुद ही गंभीर दिखनेमें कभी सफल नहीं हुअे।

"मैं समझती हूँ कि गंभीर दिखनेकी कुंजी यह है कि बार बार हँसना नहीं। मगर बहुतसी चीज़ें अैसी होती हैं कि अनपर हमें रोना न हो तो हँसना ही चाहिये।"

बापूने अुसे मीठा पत्र लिखा:

"महात्मा बननेमें ज़रूर लाभ है। तुम्हारे जैसे गुलामोंसे अुनका जन्मदिन हो तो और मेरा हो तो भी मुझे फल और फूल मिलते हैं।"

जमनालालजीका अच्छे जलवायुमें तबादला कर देनेके बारेमें और मणिको डाह्याभाअीके दैनिक समाचार भेजनेके मानव अधिकारके बारेमें डोअिलको पत्र लिखे। वल्लभभाअीको यह बात अुचित नहीं मालूम हुअी। मेरी तो अभी तक समझमें ही नहीं आया कि बापू कुछ खास साथियोंके लिअे अिस तरह खास तौरपर कैसे लिख सकते हैं, जब कि दूसरे खूब परेशान हो रहे हैं और दुःख भोग रहे हैं।

आज सुपरिण्टेण्डेण्टने खबर दी कि ". . . ने 'बी' क्लासके लिअे अर्ज़ी देनेकी माँग की थी और मैंने अुसे अिनकार कर दिया; क्योंकि अुसके बारेमें जेल कर्मचारीकी राय खराब है और यह अर्ज़ी मंजूर नहीं होगी।"

मुझे तो खयाल आया कि जब हमारे आदमी अिस तरह नीचे गिर रहे हों, तब 'सी' का ही भोजन लेना चाहिये और 'सी' की ही तरह रहना

चाहिये। मगर यह क़दम अुठानेमें अभी तक संकोच रहता ही है। शायद अिसमें 'त्याग' की गंध आ जाय और यह 'नाटक' बन जाय!

राजाजी और देवदास आ गये। अुपवासके बारेमें बापू कहने लगे: "आपको मुझे भूल जाना चाहिये, और भूलकर सब काम करना चाहिये। लोगोंको भी भूलनेका अुपदेश देना चाहिये।"

राजाजी कहने लगे: "याद रखनेका सबसे अच्छा अुपाय यह है कि भूल जानेकी कोशिश की जाय।" फिर राजाजीने यह सवाल पूछा कि वे खुद क्या करें और लड़ाअी मुलतवी कर दें या नहीं? बापूने अिसका जवाब देनेसे अिनकार कर दिया — दो कारणोंसे: "(१) बाहरकी परिस्थितिके बारेमें निर्णय करनेमें मैं स्वभावसे ही असमर्थ हूँ; और (२) मैं सत्यका पुजारी हूँ। मैंने अपनेपर जो अंकुश लगाये हैं, अुनके मुताबिक़ मैं अिसकी चर्चा नहीं कर सकता। मगर मैं अितना कहूँगा कि अगर बाहर कोअी निर्णय किया जायगा, तो अुसमें किसीके भी कामकी मैं अपने दिलकी गहराअीमें भी निन्दा या स्तुति नहीं करूँगा।"

अिस अुपवासको बापूने और भी शुद्ध बताया, क्योंकि "(१) अिसके साथ ब्रिटिश सरकारको कोअी वास्ता नहीं। पहले अुपवासमें तो ब्रिटिश सरकारके लिअे कुछ-न-कुछ दबावका अंश था, हालाँकि अन्तमें तो अुसमें दबाव था ही नहीं; (२) यह अुपवास अुन सवर्णोंके खिलाफ है, जिनके बारेमें यह माना जाता है कि वे हमारे साथ हैं और अछूतोंका मन्दिर-प्रवेश चाहते हैं। अिसलिअे मतगणना करना बहुत सही तरीका है। अुससे अुपवासका औचित्य सिद्ध होगा और अवर्णोंको मन्दिर-प्रवेशकी छूट देनेका सवर्णोंका दावा खूब मज़बूत बनेगा। या यह दावेवाली बात, जो मेरे दिमागमें भरी हुअी है — यानी मेरी जो यह मान्यता है कि सवर्णोंका बहुत बड़ा भाग मेरे साथ है — खतम हो जायगी।"

राजाजी कहने लगे: "यदि मतगणना हमारे विरुद्ध हुअी, तो आप अुपवास नहीं करेंगे न?"

बापू बोले: "नहीं, मुझे अुपवास छोड़ ही देना होगा। मगर अितना ध्यानमें रखना कि मुझे लोगोंको चेतावनी दे देनी पड़ेगी कि अगर मुझे यह जान पड़ा कि कार्यकर्ता आज तक अपनेको और मुझे धोखा दे रहे थे और दलित वर्गके लिअे हम अितने वर्षोंसे जो काम कर रहे थे वह सब फ़िजूल था, तो मुझे अैसा नहीं लगेगा कि मेरे लिअे जीते रहनेका कोअी भी कारण है।"

मैंने कहा: "मगर आप यह तो हरगिज़ नहीं मान लेंगे कि गुरुवायुर न खुले, तो तीस बरसका काम मिट्टीमें मिल गया और सारे देशमें अस्पृश्यता निवारणके कामको तिलांजलि दे दी गअी?"

बापू बोले : "नहीं, यह बात तो नहीं है। तमाम देशके वातावरणका विचार करना पड़ेगा।"

आनंदशंकर भाअीको :

१९–११–'३२

"आपने अपने बारेमें सदा कम आत्म-विश्वास रखा है। काशी जाते समय भी आपको क्या कम संकोच था? मगर कितने साल निकाल दिये? और कौन जाने अभी कितने और निकालने पड़ेंगे! अिसलिअे यह न मान लीजिये कि आपके अविश्वासमें मैं भी फँस जाअूँगा। राजाजीने मालवीयजीके दक्षिणमें न जानेके बारेमें अेक सम्पूर्ण तर्क दिया है। जब तक वे काशी विश्वनाथका मन्दिर नहीं खुलवा देते, तब तक दक्षिणके शास्त्री अुनकी बात नहीं मानेंगे। वे यह कहेंगे कि पहले काशी विश्वनाथ खुलवाअिये, फिर हमारे यहाँ आअिये। आप और मैं अुन्हें अैसी विषम स्थितिमें न डालें। और अुनके स्वास्थ्यके बारेमें भी राजाजी तो कहते हैं कि अुनसे अितना लम्बा सफ़र नहीं कराना चाहिये। अिसलिअे मालवीयजी सहमत हों, तो आप अुनके प्रतिनिधिकी हैसियतसे निकल पड़िये, भले ही लोग आपकी न सुनें। मगर यह न होने जैसी बात है। यह तो हुआ आपकी दक्षिणकी यात्राके विषयमें।

"अब शास्त्रार्थके बारेमें। मुझे जो साहित्य दिया गया है, अुसमेंसे कुछ भेजता हूँ। अिसकी जाँच कीजिये, अुसे ध्यानमें रखकर अेक सुन्दर जवाब जल्दी ही तैयार कीजिये और जितने पंडित आपके साथ हो सकें, अुतनोंके हस्ताक्षर अुसपर करा लीजिये। यह जवाब संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेज़ीमें होना चाहिये। अेक तो प्रामाणिक सनातनी, दूसरे तटस्थ जिज्ञासु, तीसरे अस्पृश्यता निवारणका काम करनेवाले, जिनके लिअे सनातनियों वग़ैरासे भेंट करते समय आपका लेख सहायक हो सके और चौथे विधर्मी, जो समझ लें कि सच्चे सनातन धर्ममें जन्मसे कोअी अस्पृश्य नहीं और जो खास कारणोंसे अछूत माने जा सकते हों वे भी आसानीसे स्पृश्य बन सकते हैं — अिन चारोंको ध्यानमें रख कर आपको लिखना है। आपको यह भी बताना है कि आज जो अत्याचार अछूत कहलानेवालों पर हो रहे हैं, अुनके लिअे कोअी आधार नहीं है। जिनका आप, मैं और दूसरे हज़ारों आदमी आदर करते हैं, अुनका वाक्य अुद्धृत करता हूँ :

"'हिन्दुस्तानके अिस भागमें जबसे मन्दिरोंकी पूजा शुरू हुअी, तभीसे अिन वर्गोंको मन्दिरोंसे दूर रखा गया है। अैसा समय, जब अछूतोंको मन्दिरोंमें जानेकी आज़ादी थी, ढूँढ़ निकालनेमें विद्वानोंको मुश्किल पड़ेगी। मुझे डर है,

यद्यपि मैं अिसका गर्व नहीं कर सकता, कि जैसे धर्मका आचरण आज किया जा रहा है वैसे धर्ममें बहिष्कारका विधान है। जो धर्मका सिद्धान्त मानकर अुस पर क़ायम हैं, अुनके पक्षमें क़ानून, शास्त्र और रूढ़ि सब हैं। ये लोग सनातनी हैं।'

"अिन्हें आपको जवाब देना है। क़ानून यानी सरकारी क़ानून भले ही अुनके पक्षमें हो; रिवाज यानी आजकलके पतनकालका रिवाज भले ही अुनके पक्षमें हो, मगर शास्त्र अुनके पक्षमें नहीं हैं। हिन्दूकालका क़ानून अुनके पक्षमें नहीं था और सच्चा रिवाज यानी शुद्ध आचार भी हिन्दुओंके अुन्नति कालमें कभी अुनके पक्षमें नहीं था, यह प्रामाणिक तौर पर बताया जा सकता हो तो आपको निश्चयपूर्वक बताना है। आपका निर्णय डेल्फ़ीके देवताके निर्णय जैसा न होना चाहिये। अैसी ध्रुव-नीति जितनी जल्दी भेज सकें भेज दीजिये।"

हंसाबहन, जयश्रीबहन और दूसरी दो बहनें आज सुबह आ गअीं। अुन्होंने बम्बअीमें हरिजनोंके रहनेके लिअे मकानोंकी मुसीबतकी बातें कीं, मंदिरोंके बारेमें बातें कीं और ग्राम प्रचारके विषयमें चर्चा की। दोपहरको देवधर, मथुरादास विसनजी, जयसुखलाल महेता और चुन्नीलाल भगवानजी महेता आये। अुसके बाद चीतलिया और दूसरी दो बहनोंके साथ सूरजबहन आअीं। अुनके बाद सतीशबाबू आये।

बापूके पास बातें करनेके नोट तैयार ही थे और अपनी सूचनाओंसे अुन्होंने अिन लोगोंको मानो मात कर दिया: "रहनेके मकानोंका काम तो म्युनिसिपेलिटी द्वारा शुरू हो ही जाना चाहिये। पाँच रुपया किराया भी मैं तो ज्यादा मानता हूँ। सनातनी और कुछ न करें तो अिस काममें तो मदद करें। फिर ट्रस्ट फंडों, पाठशालाओं और अस्पतालोंका लाभ तो हरिजनोंको मिलने लग ही जाना चाहिये। यह स्कूल खुला है अैसा कहना अेक बात है और अुसमें अछूत आने लगे हैं या नहीं, यह देखना और अैसे लड़कोंको ढूँढ़ कर अुन्हें अिन संस्थाओंसे फ़ायदा अुठानेको प्रोत्साहित करना दूसरी बात है। भोजनगृह खुलवाये जायँ, न खोले जायँ तो अस्पृश्यता निवारण मंडल अस्पृश्यता निवारक भोजनगृह खोल दे और अुनमें सुधारक आग्रहपूर्वक जायँ। हरिजनोंको भी साफ़ होकर आनेकी सूचना दी जाय। हाँ, मैं वहाँ बैठा होअूँ और ये झाड़ू-टोकरी लेकर और मैले कपड़ोंमें भी आयें, तो भी अुन्हें नहीं निकालूँगा और खिलाअूँगा। बादमें दुबारा आयें तब अुन्हें साफ़ होकर आनेको मजबूर करूँगा। यह सब अिसलिअे कहता हूँ कि मेरे पास तो दक्षिण अफ्रीकाके अपने अनुभव हैं। अिन लोगोंको अपमान लगे, अैसी कोअी बात नहीं होनी चाहिये। प्रिटोरियाके अेक होटलमें अेक अमरीकनने मुझे मुश्किलसे अिस शर्त पर ठहरने दिया कि रातको मुझे अपने कमरेमें ही खाना दिया जायगा। आखिरमें दूसरे

खानेवालोंने ही कह दिया कि गांधी आ जाय तो हम भ्रष्ट नहीं होंगे। अिस पर मुझे मुश्किलसे खानेके कमरेमें खाना मिला। दूसरी तरफ़ हमें यह भी याद रखना चाहिये कि लोगोंको सूग आनेकी बात सही है। मुझे दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोगोंको समझाना पड़ता था कि होटलोंमें जानेका हक़ लेना हो, तो हमें सफ़ाअी सीखनी चाहिये और अिस तरहका बरताव नहीं करना चाहिये, जिससे अिन लोगोंको घिन आये। वहांके चित्र खींचूं तो आपको कै हो जाय। . . . को तो अेक बार कै आने ही लगी थी और वह अुठ गअी थी।"

मन्दिरोंमें कटहरे लगवानेकी पद्धतिके बारेमें कहा: "अिस चीज़में अीमानदारी हो तो मुझे आपत्ति नहीं है। मगर अिसमें अीमानदारी नहीं है। अिससे तो यह अच्छा है कि अिन मन्दिरोंका त्याग कराकर अस्पृश्योंके लिअे दूसरा मन्दिर अिन्हीं लोगोंसे रुपया लेकर बनवाया जाय और अुसमें सुधारक और अछूत जाया करें, या अेक ही मन्दिरमें अलग अलग समय पर जायँ।"

मथुरादास बोले: "यह कैसे हो सकता है? मन्दिरमें जाने और देवताको जगाने सुलानेका समय तो अेक ही होता है।"

बापू: "यह तो ठीक, मगर अिन लोगोंकी भावनाका आदर करके ही तो हम यह निश्चय करते हैं कि जो अेक दो घण्टे तय किये जायँ अुसी बीच ये लोग आवें।"

अिस अुपवासके बारेमें वल्लभभाअीका जी नहीं मानता था, मगर आज कहने लगे: "शास्त्रीका पत्र पढ़कर तो अैसा लगता है कि यह अुपवास हुआ तो अच्छा हुआ। शास्त्री जैसे लोग क्या कभी धर्म सुधार कर सकते हैं! जब बापू जैसे कोअी समर्थ व्यक्ति अुपवास जैसा हथियार अुठायें, तभी ये भयंकर अन्धकारके बादल बिखर सकते हैं।"

देवधरके साथ बातें करने पर बलात्कारकी बात निकली और बापूने फिर कहा कि "मतगणना मेरे विरुद्ध हो, तो मैं अुपवास छोड़ दूँगा।"

अिस पर देवधर कहने लगे: "मगर लोगोंको यह खबर लग जाय, तब तो आपका अुपवास छुड़वानेके लिअे भी वे मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध राय दे देंगे।"

बापू: "भले ही दे दें। लेकिन तब तो मुझे पता लग जायगा कि जिस हिन्दूधर्मसे मैं अिस तरह चिपटा हुआ हूँ, अुसी हिन्दू धर्मको जब अिन लोगोंने अैसा बना दिया है, तो मेरा मर जाना अच्छा है। दूसरे धर्मोंमें मैं जो विशालता चाहता हूँ वह मिलेगी नहीं, अिसलिअे मुझे तो मरना ही रहा न?"

अिससे बापूकी भावनाकी तीव्रता प्रकट होती है।

लोग अेकदम अंधे बनकर पत्र लिखते रहते हैं। नारणदास संघाणी अपनी सनातन धर्म पत्रिकामें बुरी तरह गालियाँ बरसा रहा है। दूसरे लोग सीधे

पत्र लिखकर मन्दिरोंमें खलबली मचनेकी खबर भी देते हैं। 'केसरी' में खबर है कि चिपलूणमें अेक सब-जजको कितनी विपत्ति अुठानी पड़ी। अुधर कोल्हापुरमें सत्य समाजके लोगों और अस्पृश्यों द्वारा अेक मन्दिरपर अधिकार जमाकर श्रद्धालु सनातनियोंको भगा देनेका भी अुदाहरण है। बापू यह सुनकर कहने लगे: "अैसा लगता है कि महाराष्ट्र तो तूफानका केन्द्र बन जायगा।"

सैंकीके पत्रके बारेमें बापूने 'हिन्दू' के सम्वाददाताको जो जवाब दिया, अुस सम्बन्धमें सरकारकी तरफसे आपत्ति आयी कि "यह अूपरसे देखते हुअे गांधीके दिये हुअे वचनका भंग करनेवाला लगता है, अिसलिअे पता लगा लिया जाय कि अिस बारेमें गांधीको क्या कहना है।" बापूने तुरंत लंबा पत्र लिखवाया और शामको ही भेज दिया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "भला कल तक तो राह देखिये।"

बापूने कहा: "नहीं, हम अैसे पत्रोंका अुत्तर देनेमें कहाँ राह देखते हैं?"

यह मामला पूरी तरह पार लग जाय तब है। सरकारको यह कड़वी घूँट पीनी पड़ी है, अिसलिअे वह समय-समयपर बिच्छूकी तरह डंक मारती ही रहेगी!

फिर भी बापूने मणिबहनको डाह्याभाअीके बारेमें रोज़ खबर देने और अुसे रोज़ डाह्याभाअीका संदेश भेजनेका मानव अधिकार प्राप्त कर लिया। आज ही सरकारका पत्र आया कि "गांधी भले ही रोज़ खबर दें और मणि भले ही रोज़ जवाब दे!" वल्लभभाअीको तो यह माँग ही अुचित नहीं लगती थी। अिसलिअे बापूने कहा: "क्यों, मानव अधिकार मनवा लिया या नहीं?" वल्लभभाअी चुप रहे।

२०-११-'३२

रातको डाकका ढेर पढ़ते-पढ़ते बापू सो गये। अुसमें त्रिवेन्द्रमके अेक कॉलेजके रसायनशास्त्रके सहायक प्रोफेसरका पत्र था। गाली और अपमानसे भरा हुआ! अिस आदमीने 'आत्मकथा' पढ़ी थी। अुसमेंसे अुसने जो ज्ञान प्राप्त किया था, वह यह है कि 'गांधी तो शुरूसे ही नास्तिक और भक्तिहीन है। जो अपने बापको विषयी बताकर बदनाम करे, जो चोरी करनेको ललचानेकी अप्रामाणिकताके लिअे अपने शिक्षककी निन्दा करे और जो काशी विश्वनाथके मन्दिरमें जाकर अेक पाअी रखकर पुजारीका अपमान करे, अुससे और क्या आशा रखी जा सकती है?' कलकत्तेके संस्कृत कॉलेजके अेक विद्यावागीश अेम० अे० का भी अैसा ही मूर्खता पूर्ण पत्र था। अेक भूदेव मुकरजी और हैं, जो सांख्य और वेदान्तके

अध्यापक हैं और तिगुनी अेम० अे०की अुपाधि वाले हैं। अुन्हें अछूतोंको अछूत रखनेमें कुछ भी अनुचित नहीं लगता!

मैंने बापूसे कहा: "हमारे धर्मका कूड़ा-करकट छँटकर सामने आ रहा है। यही हिन्दू धर्म है क्या?"

बापू बोले: "मगर शास्त्री जैसे भी तो हैं?"

मैंने कहा: "मगर जिन्हें अंग्रेज़ी या पश्चिमी शिक्षाने छुआ तक नहीं, अैसे पंडित और शास्त्री कहाँ अिस आन्दोलनमें शामिल हैं? क्या अिन सभी लोगोंका शास्त्राध्ययन अैसा ही अधःपतन करानेवाला होगा?"

बापू: "दयानन्द सरस्वतीको कैसे भूल रहे हो?"

यह चर्चा हो रही थी कि केरल प्रान्तके हिन्दी या अंग्रेज़ी न जाननेवाले आदमीका संस्कृत श्लोकोंमें लिखा हुआ पत्र आया, जिसमें अुसने गांधी और केलप्पनके अनशनकी स्तुति करके सफलता चाही थी।

बापू कहने लगे: "क्यों, तुम जैसा चाहते थे, वैसा ही यह अुदाहरण है कि नहीं?"

आज डाकमें छोटे-बड़े पत्र लिखवानेमें काफ़ी समय बीत गया और बापूके लिअे आश्रमकी सारी डाक लिखनी बाकी रही। अेक थॉर्नबर्ग नामका अमरीकी बापूसे मिलने आया था। नहीं मिल सकता था, अिसलिअे अस्पृश्यताके कामके लिअे मिलनेकी अिजाज़त माँगी। बापूने अिनकार कर दिया। फिर अुसने हस्ताक्षरके लिअे पुस्तकें भेजीं और बादमें अमेरिकाके लिअे संदेश माँगा। बापूने अिस प्रकार संदेश भेजा:

"आपके पत्रके लिअे धन्यवाद। आपसे मिल नहीं सका, अिसका अफसोस है। भीतरी सुधारका जो आन्दोलन यहाँ चल रहा है, अुसमें यदि अमेरिकाको कुछ मदद करनी हो, तो पहले अुसे अिस आन्दोलनको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये, अुसका अध्ययन करना चाहिये और अुसपर ज्ञानयुक्त राय देनी चाहिये। सनातनियोंपर भी आज बुद्धियुक्त रायका असर होता है, भले ही वह राय बाहरसे आयी हुअी हो। दूसरी बात यह करना चाहिये कि आर्थिक प्रश्नोंके बारेमें विशेषज्ञोंकी मदद सुधारकोंको मुफ्त मिल सके। अुदाहरणके तौरपर मुर्दार मांस खानेवालोंका प्रश्न बड़ा विकट है। जब तक मरे हुअे ढोरोंका कब्जा हरिजनोंको मिलता रहेगा, तब तक वे मुर्दार मांस खाना नहीं छोड़ सकेंगे। वे मरे हुअे ढोरकी चमड़ी अुतार लेते हैं और मांस खाते हैं। मरे हुअे ढोरोंके चमड़े स्वच्छ और अच्छे ढंगसे अुतारनेकी तथा ढोरके बाक़ीके भागका अुत्तमसे अुत्तम अुपयोग करनेकी पद्धति खोजनेकी मैंने कोशिश की है। लेकिन अिसके लिअे विशेषज्ञोंकी सहायता लेनेमें रुपया खर्च करनेकी अिच्छा न होने और

खर्च करनेकी शक्ति भी न होनेके कारण मुझे अंधेरेमें भटकना पड़ा है। अिस काममें अमेरिका आसानीसे हमें विशेषज्ञोंकी मुफ़्त मदद दे सकता है। अमेरिकाके धर्मपरायण आदमियोंको अगर यह समझाया जाय कि हिन्दू धर्म, अिस्लाम और दुनियाके दूसरे बड़े धर्म भी अीसाअी धर्मके बराबर ही सच्चे हैं और अिसलिअे अुन धर्मोंका नाश करनेकी नहीं, बल्कि जहाँ ज़रूरत हो वहाँ सुधार करनेकी आवश्यकता है, तो धर्मपरिवर्तन करनेका हेतु रखे बिना वे यह मदद दे सकते हैं। अमेरिकाके सयाने लोग अिस महान आन्दोलनका यदि अच्छी तरह अध्ययन करें, तो मैं जो कहता हूँ अुसके बारेमें अुन्हें विश्वास हो जायगा।"

'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' के सम्वाददाताके साथ मुलाकात:

स० — आपने अपना शेष जीवन अस्पृश्यता निवारणके

२१-११-'३२ काममें ही बितानेका निश्चय किया है?

बापू — मैं नहीं कह सकता कि अभी मेरा अैसा अिरादा है या कभी भी अैसा होना सम्भव है। यह कहना अधिक सत्य होगा कि मेरा जीवन हिन्दू धर्मके अिस अत्यंत आवश्यक सुधारके लिअे समर्पित है। मगर यों तो मेरा जीवन और बहुतसी बातोंके लिअे भी समर्पित है। मैं अपने जीवनको अेक-दूसरेसे अलग अनेक विभागोंमें नहीं बाँट सकता। मेरा जीवन अखंड है। मेरी तमाम प्रवृत्तियोंका मूल अेक ही दिखाअी देगा। जीवनके हर क्षेत्रमें, फिर वह छोटा हो या बड़ा, सत्य और अहिंसाकी अुपासना करना ही मेरा ध्येय है।

आज सुबह मैंने 'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' का अेक लेख पढ़ा। अुसके बारेमें मैं कुछ कहना चाहता हूँ। आजकी सम्पादककी तरफसे लिखी गयी टिप्पणीमें अेक भूल है, जिसे मैं सुधारना चाहता हूँ। यह कहना सही नहीं है कि हरिजनोंको सामाजिक हक़ दिलवानेसे सम्बन्ध रखनेवाले तमाम प्रश्न मन्दिर-प्रवेशके सवालमें समा जाते हैं। मन्दिर-प्रवेश तो और बहुतसे सवालोंमेंसे अेक सवाल है। आज अगर यह प्रश्न अितना आगे आ गया है, तो अिसकी ज़िम्मेदारी मेरी नहीं है। मेरी प्रार्थना पर केलप्पनने अपना अुपवास छोड़ दिया, अिसलिअे अुसे मदद देनेके लिअे मैं बँधा हुआ हूँ। अतः स्वाभाविक तौरपर गुरुवायुरकी तरफ़ मुझे लोगोंका ध्यान खींचना चाहिये और निश्चित की हुअी तारीख, यानी २ जनवरी, से पहले यह विख्यात मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुल जाय अिसके लिअे सारे अुपाय आजमाने चाहियें। अुपवास अिस मन्दिरको खुलवाने तक ही सीमित होगा, दूसरे किसी मन्दिरके लिअे नहीं। और अिस अुपवासकी कल्पना भी मेरी नहीं है। अगर केलप्पनको अुपवास करना

पड़े, तो मेरा भी अुपवास करनेका धर्म हो जाता है। हरिजनोंके लिअे अिस मन्दिरको खुलवानेके काममें समाजके किसी भी वर्ग पर ज़ोर ज़बरदस्ती करनेका ज़रा भी अिरादा नहीं है। मुझे जो जानकारी मिली है अुसके अनुसार तो — और अिस जानकारीकी सचाअीके बारेमें शंका करनेका कोअी कारण नहीं — बहुतसे सवर्ण अिस पक्षमें हैं कि यह मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया जाय। यदि अैसा हो, तो फिर यह नहीं माना जायगा कि ज़बरदस्ती की गयी। यह भी याद रखना चाहिये कि यद्यपि यह प्रश्न लोगोंके सामने अभी ही आया है, फिर भी केलप्पन और अुसके साथी अिसके लिअे बहुत सालसे काम कर रहे हैं; और अुन्होंने जो लोकमत अपने पक्षमें किया है वह कोअी पिछले थोड़े दिनोंमें ही नहीं हो गया है। बहुत वर्षोंसे अुन्होंने जो सतत आन्दोलन किया है, अुसीका यह परिणाम है।

स० — केलप्पनके प्रति क्या आपका धर्म अितना ज्यादा है कि अगर वह अुपवास करे, तो आपको भी अपनी ज़िन्दगी खतरेमें डालनी ही चाहिये?

बापू — मैं आत्म-प्रतिष्ठा खो बैठूँ तो तुरन्त ही किसी भी सेवाके लिअे बिलकुल अयोग्य बन जाअूँ। न्यायपूर्ण कामके लिअे ज्ञानपूर्वक दिये हुअे वचनके पालनको मैं अितना महत्त्व देता हूँ कि अुस वचनके पालनके लिअे अपनी जान भी खतरेमें डालनी पड़े, तो अिसे मैं कोअी बड़ी बात नहीं मानता।

स० — आप हरिजनोंका जो काम कर रहे हैं, अुससे भी क्या यह बढ़कर है?

बापू — वचनभंग करके बचायी हुअी मेरी ज़िन्दगी हरिजनोंके किसी भी कामके लायक नहीं रहेगी। अगर मैं वचन पालन करके अपने प्राण दे दूँ, तो मेरी रायमें यह सिर्फ़ हरिजनों या हिन्दूधर्मके लिअे ही नहीं, बल्कि मैं नम्रताके साथ कहता हूँ कि, सारे हिन्दुस्तानके और तमाम दुनियाके लिअे यह अेक अमूल्य वस्तु हो जायगी।

स० — आपको तो मूर्तिपूजामें श्रद्धा नहीं है, फिर हरिजनोंको मूर्तिपूजाका हक़ दिलवानेके लिअे आप क्यों अितना श्रम अुठा रहे हैं?

बापू — मुझे खयाल नहीं आता कि मैंने कभी यह कहा हो कि मुझे मूर्तिपूजामें श्रद्धा नहीं है। मुझे याद नहीं कि मैंने अपने लेखोंमें भी कभी अैसी कोअी बात कही हो। मैंने जो बार-बार कहा है, वह तो यह है कि मैं मूर्तिभंजक भी हूँ और मूर्तिपूजक भी हूँ। यह चीज अैसा कहनेसे तो अलग ही हुअी न कि मुझे मूर्तिपूजामें विश्वास नहीं? लेकिन कोअी यह कहे कि मैं शायद ही कभी मन्दिरमें जाता हूँ, तो यह बात ज़रूर सच होगी। मैं क्यों

नहीं जाता, अिसके कारणोंमें मैं नहीं जाअूँगा। मगर मैं अितना कहूँगा कि मेरा धर्म अितना विशाल है कि मैं हिन्दुओंके मन्दिरमें, मुसलमानोंकी मस्जिदमें, और अीसाअी और यहूदीके गिरजेमें अेक ही भक्तिभावसे जाता हूँ। अिन सबमें मैं नास्तिक या आलोचकके रूपमें कभी नहीं गया, बल्कि सदा भक्तिभावपूर्वक ही गया हूँ।

आश्रमकी डाकमें लिखते हुअे: "अैसा लगता है कि मुझे अुपवास करना ही नहीं पड़ेगा।"

सतीशबाबूसे कहा: "मुझे मिली हुअी यह जानकारी यदि सही हो कि लोकमत हमारी तरफ़ है, तो मन्दिर ज़रूर खुल जायगा।"

'केसरी'वालेके साथ:

"जो मन्दिर-प्रवेशको सही मानते हैं, अुनकी प्रवृत्तियोंमें तेजी लानेके लिअे यह अुपवास है। यदि यह साबित हो जाय कि मन्दिरमें जानेवालोंका विशाल बहुमत मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध है, तो मैं अुपवास नहीं करूँगा। दूसरा कोअी ढंग अपनाअूँगा। विरोधियोंका मत बदलवानेके लिअे अुपवास अुचित साधन नहीं है। विरोधीके खिलाफ़ मैंने अेक भी अुपवास किया हो, अैसा मुझे याद नहीं। यह अुपवास ट्रस्टियोंके विरुद्ध भी नहीं। अगर अुन्हें मन्दिरमें जानेवालोंकी रायका आधार मिल जाय, तो मैं अुपवास नहीं करूँगा। अुपवाससे लोगोंका ध्यान ज़रूर खिंचेगा, पर जो मन्दिर-प्रवेशके विरोधी हैं, वे अपना मत बदलेंगे अैसी मुझे आशा नहीं। मगर मैं चाहता हूँ कि सारे हिन्दुस्तानमें और सारी दुनियामें जो मन्दिर-प्रवेशको माननेवाले हैं, वे हरिजनोंकी मददके लिअे दौड़ें। मुझे यह जानकारी मिली है कि मन्दिरमें जानेवालोंका बहुमत मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है। संभव है कि मेरी यह जानकारी गलत हो। यदि गलत मालूम हो जायगी, तो मैं केलप्पनको अपना निर्णय बदलनेकी सलाह दूँगा।

"जो मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध हैं, अुनपर भी यदि मेरे अुपवासका असर हुआ, तो अुसके दो कारण हो सकते हैं: अुन्हें मेरे लिअे प्रेम हो या वे लोकमतसे डर जायँ। प्रेमका असर पड़े और प्रेमके कारण वे अपनी रायको ताक़में रख दें, यह भी डर है। अिस विधानमें जो तर्क है अुसकी हम जाँच कर लें। अिसका अर्थ यह हुआ कि अुनका प्रेम धर्मका रूप ले लेगा, यानी और सब विचारोंको अेक तरफ़ धर देगा। मान लीजिये कि मेरा बाप या मेरा लड़का यह कहे कि तू हिन्दूधर्म नहीं छोड़ेगा तो हम अुपवास करेंगे, तो मुझे अिन्हें मरने देना चाहिये। लेकिन जो अपनी धार्मिक मान्यताओंको मेरे खातिर गौण पद देते है, वे मेरे प्रति अपने प्रेमको धर्म बना लेते हैं। अर्थात अुनकी मान्यता अैसी नहीं जो न बदल सके; बल्कि बदल सकनेवाली है। मेरी स्त्रीने मेरे प्रति

अपने प्रेमके कारण ही अछूतोंके मामलेमें अैसा किया था। यही बात मेरे भाअीके सम्बन्धमें भी हुअी है। अुन्हें मेरे प्रति अितनी अरुचि हो गयी थी कि वे मुझे गालियाँ देते थे। लेकिन जब वे मृत्युशय्या पर पड़े, तब अुनका दिल बदल गया। और अुन्हें यह महसूस हुआ कि अुन्होंने अपने छोटे भाअीके प्रति घोर अन्याय किया है। अिससे अुल्टे अुदाहरण लीजिये। असहयोगकी लड़ाअीमें जो मेरे लिअे अपनी जान देनेको तैयार थे, अुन्हींने मेरे दूसरे कामोंके कारण मुझे गोली मारनेकी धमकी दी है। मेरे जीवनके अैसे कितने ही पन्ने हैं। दक्षिण अफ्रीकामें मीर आलमका भी बहुत बड़ा हृदय-परिवर्तन हुआ। ये सब अुदाहरण यह बताते हैं कि अुनका प्रेम अुनकी मान्यताओंसे अधिक बलवान था। अकसर देशभक्ति या देशप्रेम धर्मका रूप ग्रहण कर लेता है। धर्मका अर्थ है जो धारण करे। फिर भले ही वह धर्म नास्तिकका हो, मूर्तिपूजा करनेवालेका हो या निराकारकी अुपासना करनेवालेका हो।

"प्रेममें जबरदस्ती होती ही है। क्या प्रेमके दबावमें आकर मित्र कितने ही काम नहीं करते?"

स० — लेकिन क्या प्रेमसे प्रश्न हल हो जाता है?

बापू — हमेशा नहीं। लेकिन अगर प्रेम बादमें मान्यताका रूप ग्रहण कर ले, तो ज़रूर हल हो जाय। प्रेमकी शक्ति अजीब है। बलात्कारमें जिसपर वह किया जाता है, अुसको शारीरिक और मानसिक दुःख पहुँचानेकी बात रहती है। प्रेममें भी कष्ट तो है। मगर वह दूसरी ही तरहका होता है। वह बालकको धारण करनेवाली माताके कष्ट जैसा है। प्रसूतिकी पीड़ाका अेक बार अनुभव हो जानेके बाद भी वह दूसरा बालक किस लिअे धारण करती है?

पवित्रता सजीव वस्तु है। वह रोगके जन्तुओंसे भी अधिक चिपकनेवाली है। जिसकी अिच्छा न हो अुसपर भी रोगके कीड़े जिस तरह असर करते हैं, अुसी तरह पवित्रताका भी असर मनुष्य पर अुसकी अिच्छाके विरुद्ध होता है। अीथर या बिजलीसे भी वह अधिक बलवान है। ये तो भौतिक शक्तियाँ हैं। मगर पवित्रता नैतिक बल है, और नैतिक बल भौतिक बलसे अनंतगुना श्रेष्ठ है। कोअी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि वह अकेला ही शुद्ध है। अैसी शुद्धि तो धुली हुअी कब्र जैसी होगी।

स० — कुछ हद तक अैसा होता है।

बापू — किस लिअे? मन्दिरमें जमा होनेवाले लोग अेक दूसरेको पहचानते नहीं। अछूत खुद यह न कहें कि हम अछूत हैं, तो अुन्हें कौन पहचान सकता है? कितने ही हरिजन मुझे अैसे मिले हैं, जो काशीविश्वनाथके मन्दिरमें हो आये हैं। यह १९१५ की बात है। मैंने अुनसे कहा था कि

अैसा अुन्हें हरगिज़ न करना चाहिये । अगर आप यह स्वीकार करें कि हरिजन साफ़ रहें तो भले ही मन्दिरमें आयें, तो मुझे अितनेसे ही सन्तोष है । मगर चूँकि अुनकी गन्दगी हमारे पिछले अन्यायोंका परिणाम है, अिसलिअे अुन्हें सफ़ाअी सिखाना भी हमारा ही फ़र्ज़ है । अिसलिअे अगर सफ़ाअी रखनेका आग्रह किया जाय, तो मैं यह शर्त मान लूँ और अुन्हें साफ़ रहना सिखाअूँ । मैं यह नहीं कहता कि अुन्हें ठेठ मूर्तिके पास — निजमन्दिरमें — जाने दिया जाय । अुसमें भले सिर्फ पुजारी ही जाय ।

स० — अस्पृश्यता निवारणके लिअे आप क्या कोअी समयकी मर्यादा स्वीकार करेंगे ?

बापू — ज़रा भी नहीं । गुरुवायुरके मन्दिरके बारेमें जो समयकी मर्यादा है, वह तो परिस्थितियोंके कारण पैदा हो गयी है ।

स० — क्या यह नहीं कहा जा सकता कि यह झगड़ा बेपढ़े सवर्णों और बेपढ़े अछूतोंके बीचमें है ?

बापू — नहीं । पढ़े-लिखे सवर्ण ही मुझे विरोधके पत्र लिख रहे हैं । मैं तो मानता हूँ कि अपढ़ सवर्णोंका अेक बड़ा भाग मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है । गुजरात और महाराष्ट्रमें शायद न हो, मगर देशके बाकी हिस्सोंमें अधिक जन-समुदाय मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है । महाराष्ट्रमें भी रत्नागिरीका दत्तमन्दिर सबके लिअे खुला है ।

स० — सार्वजनिक कुओंसे अछूतोंको पानी भरने देनेकी बात समझानेके लिअे माते अिस्लामपुर गये थे ।

बापू — देशकी आबादीके पाँचवें भागको अछूत रखकर हिन्दू लोग संस्कार और नीतिमें बहुत ही गिर गये हैं । हम अगर हरिजनोंके साथ संसर्ग रखने लगें, तो वे साफ़ भी हो जायें और संस्कारी भी बन जायें । हरिजनोंकी त्रुटियाँ मैं अच्छी तरह जानता हूँ । अुनकी आदतें अैसी होती हैं, जो स्वच्छ मनुष्यको पसन्द नहीं हो सकतीं । मगर मुझे यक़ीन है कि धर्म समझकर हिन्दू अछूतपनको मिटा दें, तो अुनकी अपनी नैतिक अुन्नति होगी । हिन्दू धर्मकी छातीपर भयंकर स्वप्न जैसा यह जो बोझा है, वह अुठ जायगा और हिन्दू धर्म अेक सजीव बल बन जायगा । और फिर हिन्दू धर्ममें अेक नअी जाग्रति आ जायगी, अेक नअी शक्ति पैदा होगी और वह सारे समाजको अूँचा अुठा देगी । अगर हम अपने जीते जी यह चीज़ कर सके, तो यह हमारे लिअे और दुनियाके लिअे अेक महान वस्तु हो जायगी ।

स० — आप घोड़ेके आगे गाड़ी रखनेकी बात नहीं करते ?

बापू — नहीं, हरिजनोंको अलग रखकर सुधारा ही नहीं जा सकता। अुन्हें सुधारनेके लिअे अुनसे निकट सम्पर्क पैदा करना ही चाहिये। आप तो जब तक वे न सुधरें तब तक अुन्हें अछूत रखना चाहते हैं। लेकिन टॉल्स्टॉयकी भाषामें कहूँ, तो आपको अुनकी पीठ परसे अुतर जाना चाहिये। आप तो अुनकी पीठ पर बैठे-बैठे अुनका पसीना और मैल धोनेकी बात कर रहे हैं। लेकिन ज्यों ही आप अुनकी पीठ परसे अुतर जायँगे, त्यों ही अुनके शरीरसे सुगंध आने लगेगी। अुन्हें गंदा और अपवित्र रखकर आप गंदे और अपवित्र बनते हैं। अिस तर्कसे दूसरी तरह लोकमान्य तिलकने तर्क किया है: '(स्वराज्यके लिअे) मुझे लायक़ बननेका कहनेवाले तुम कौन? मैं तो लायक़ हूँ ही और अिसे (स्वराज्यको) अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता हूँ।'

स० — मगर अुन्हें जो नालायक़ बना दिया गया है, अुसका क्या हो?

बापू — कौन नालायक़ है, यह तो अेक अीश्वर ही जानता है। क्या आप अिस बातसे अिनकार कर सकते हैं कि कितने ही अछूत आपसे और मुझसे कहीं अधिक पवित्र होते हैं? सिर्फ़ बाहरी सफ़ाअीकी बात न कहिये! वह तो पलक मारते ही आ सकती है।

आपको अुन्हें स्वच्छ रहनेका मौक़ा देना चाहिये और प्रोत्साहन देना चाहिये। फिर तो वे आपसे ज्यादा साफ़ रहेंगे; जैसे धर्मपरिवर्तन करके बना हुआ अीसाअी जन्मसे अीसाअी माने जानेवालेके बनिस्बत बाअिबलकी दस आज्ञाओंका पालन ज्यादा अच्छी तरह करता है।

स० — लेकिन हम राजभोजको कहाँ अछूत मानते हैं?

बापू — नहीं मानते? क्या वह पार्वतीके मन्दिरमें जा सकता है? आम्बेडकर तो मुझे कहते थे कि अुन्हें पूनामें रहनेको मकान नहीं मिलता। वे पूना आये तब क्या आपमेंसे किसीने अुनसे कहा था कि हमारा घर आपका ही है? अिसलिअे आपने तो यह बहुत गलत अुदाहरण पसन्द किया है। अगर आप लोगोंने अिन (पढ़े-लिखे) लोगोंके लिअे भी अछूतपन मिटा दिया होता तो भी ठीक था। मगर आँखोंमें खटकनेवाले अिन लोगोंके अुदाहरण मेरे अुपवासके लिअे काफी हैं। मैं तो जब आम्बेडकरको जानता भी नहीं था, तब भी अुनकी ज़हरीली आलोचनाओंका बचाव करता था। पूना-क़रारमें मैंने अिसे क्यों अुड़ा दिया, यह आप जानते हैं? आम्बेडकरने मुझसे कहा कि मुझे तो सुरक्षित बैठकें अेक सज़ाके तौर पर चाहियें। अुनकी बात मैंने फ़ौरन मान ली। अुन्होंने कहा कि आप जो यह परिपाटी डाल रहे हैं सो तो मैं कुछ समझता नहीं। मैं तो अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि क़ानून न बना तो हमें कुछ नहीं मिलेगा। मेरे नाम जो बहुतेरे पत्र आते हैं, अुनसे मैं भी अिस रायका बन गया हूँ कि सुरक्षित बैठकें

होनी चाहिये। हम जब अिन लोगोंको अछूत समझना छोड़ देंगे, तब संस्कारोंमें हिमालय जैसे ऊँचे हो जायँगे। आज तो हमने अुन्हें गहरी खाअीमें डाल रखा है और अुन्हींके साथ हम भी खाअीमें पड़े हुअे हैं।

आप 'केसरी' का अेक कॉलम मुझे हरिजनोंके लिअे दीजिये। मगर यह अेक कॉलम पूरी तरह शुद्ध सौ टंचका सोना होना चाहिये। अुसमें कहीं भी बेसुरी आवाज़ न निकले।

मेरा वृत्तविवेचन दूसरी ही तरहका है। गोखलेने कहा था कि तेरे अखबारको समाचारपत्र कहा ही नहीं जा सकता, वह तो विचारपत्र है। हरिजनोंको ज़रा भी गलत रास्ता न दिखाना। अगर आप मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध हों, तो अुसे अैसी मान्यताके रूपमें न बताना, जिसमें कभी फेरबदल होनेका कुछ भी कारण हो।

के० सदाशिवके साथकी बातचीत:

सदाशिव: "जेलसे छूटकर केलप्पनसे मिला। पय्योली कालीकटसे छत्तीस मील दूर अेक गाँव है। वहाँ ज्यादातर आबादी मुसलमानोंकी है। केलप्पनको वहाँ सस्ती ज़मीन मिल गयी, अिसलिअे अुसने वहाँ आश्रम खोला है।

"सनातनी लोगोंने विरोधी आन्दोलन खड़ा किया है। ये लोग हमारा ही ढंग अपना रहे हैं। लोगोंसे हस्ताक्षर कराते हैं। मगर अुनकी सभाओंमें पाँच पचास आदमी जाते हैं। अुन्होंने पाँच लाख रुपये अिकट्ठे करनेके लिअे सनातनियोंकी अेक सभा की थी। अुसमें आठ सनातनी आये और रुपया कुछ भी जमा नहीं हुआ।

"केलप्पनने पूछा है कि क्या हम भी अैसा काम शुरू करें?"

बापू: "अिन लोगोंमें जो अच्छे आदमी हों, अुनसे ज़रूर मिलना चाहिये। देशमें दोनों वर्गोंकी संयुक्त परिषदें भी की जा सकती हैं। हम लड़नेके लिअे ही क्यों अिकट्ठे हों?"

सदाशिव: "केलप्पनको दुःख अिस बातका है कि लोग कहेंगे कि महात्माजीसे अुपवास कराये। १ नवम्बरको अुपवास शुरू करना था, अुसके बजाय २० सितम्बर क्यों कर दिया? कितने ही लोग २ जनवरीके अुपवाससे पहले आमरण अनशन करना चाहते हैं। दस आदमी केलप्पनके साथ अुपवास करनेवाले हैं।"

बापू: "अिसकी अिजाज़त किसीको नहीं दी जायगी। किसीको अिस क्रममें विक्षेप नहीं डालना चाहिये और न जल्दबाजी करनी चाहिये।"

सदाशिव: "केलप्पन कहते हैं कि अुन्हें तो अुपवास करना ही पड़ेगा।"

बापू: "अैसा हो तो केलप्पन जो यह दावा करता है कि मन्दिरमें जानेवालोंका विशाल बहुमत अुसके पीछे है, अुसके बारेमें मुझे शंका हो जायगी।"

सदाशिव: "मतगणना किस तरह होगी? किसान तो जमींदारोंके विरुद्ध मत नहीं देंगे।"

बापू: "तो ये सब प्रश्न अुपवासकी बात अुठाअी, अुससे पहले मेरे सामने रखने चाहिये थे।"

सदाशिव: "यह मन्दिर दस बरस पहले अेक मुख्त्यारके हाथमें था — कर्ज़में डूबा होनेके कारण। तब मैनेजर साहब और अुनका खानसामा मन्दिरमें जा सकते थे।"

बापू: "अगर लोकमत सक्रिय रूपमें हमारी तरफ़ न हो, तो मन्दिर नहीं खुलेगा और अुपवास वगैरा कुछ भी नहीं किया जा सकता। अैसे लुक छिपकर मन्दिर-प्रवेश करनेकी मिसालें मेरे सामने रखनेसे क्या फ़ायदा? ज़ामोरिनने तो अैसी बहुतसी बातें सहन कर ली होंगी। आप ये चोरी-चुपकेके अुदाहरण देते हैं, अिससे तो यह साबित होता है कि लोग डरपोक हैं। ज़ामोरिन भी डरपोक आदमी मालूम होता है। अुसके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ है, अुससे मेरी राय अिसके खिलाफ़ नहीं बनी।"

सदाशिव: "केलप्पनको लगता है कि केरल अकेला अिस लड़ाअीको नहीं लड़ सकेगा।"

बापू: "अगर वहाँका लोकमत तैयार न हो, तो बाहरकी ताक़तसे कुछ भी काम नहीं होगा। ज़ामोरिनको तो भूल ही जाओ। यदि लोकमत आपके पक्षमें हो, तो यह बिचारा तो आपके साथ हो ही जायगा। मगर आप बाहरके कार्यकर्ताओं पर आधार रखते हों, तो यही समझना कि टूटी हुअी लकड़ी पर आधार रखते हो।"

अेक आदमीने सुझाया कि "आप सरकारको लिखिये न कि आप हमें छोड़ते हों, साथियोंको छोड़ते हों और अच्छा विधान देते हों, तो मेरे लिअे सविनयभंग करनेकी ज़रूरत नहीं रह जाती।" अिसे बापूने लिखा: "आपका पत्र मिला। वो दिन कहाँ कि मियाँके पाँवमें जूती?"

अेक अेडवोकेटको अपनी कुरूप पत्नी पसन्द नहीं है। वह लंबे पत्र लिख-कर पूछता है, "मुझे रास्ता बताअिये कि कैसे अिस बलासे छूटूँ?" बापूने अुसे सूचना दी कि "अुस पर प्रेम करना आपका धर्म है। क्योंकि आपने नाबालिग अवस्थामें अुससे शादी नहीं की थी।" अुसका फिर पत्र आया कि "अैसी कोशिश करनेका अर्थ यह हुआ कि हम दोनों ही कअी वर्षों तक दुःखमय जीवन बितायें।" बापूने फिर अुसे लिखा: "गीताका श्लोक याद करो: 'यदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्'।"

'केसरी' के संचालकके साथ महत्त्वकी मुलाक़ातके बाद लौटने पर बापूने कहा: "विरोधियोंके सामने मैं जितनी स्पष्टतासे अपनी राय रख सकता हूँ, अुतना अपने ही विचारवालोंके सामने नहीं रख सकता।"

शामको पत्रोंका ढेर देखकर कहने लगे: "अब लंदन जैसी हालत हो गअी है। कितने ही पत्र तो मुझे पढ़े बिना ही छोड़ने पड़ेंगे! मगर क्या किया जाय?"

२२-११-'३२

कांचीके शंकराचार्यका आदमी — अेडवोकेट — हाथोंमें ही पत्र देनेका आग्रह करता है! महात्माजीके पवित्र दर्शनका लाभ पाँच मिनिट मिल जाय, यह लोभ भी है!

"चरखे परसे गयी हुअी श्रद्धा वापस आनेवाली ही है। मेरे दूसरे कामोंमें दोष हो सकते हैं। मगर अिसमें तो मेरा खयाल है दोषकी गुंजाअिश ही नहीं। अिस कामके पूरा होनेमें देर लगे, तो मेरे जैसेको अधीरता नहीं होगी। सत्यके सिद्ध होनेमें सम्भव है कि करोड़ों वर्ष बीत जायें। मगर अिससे मेरा हृदय या ज़बान यह कभी नहीं कह सकती कि सत्य नहीं है या सत्यके सिवाय और भी कुछ है। चरखा सत्यका अंश है, अिसीलिअे मैं अुसे सत्यरूपी भगवानकी अेक मूर्तिके तौर पर देखता हूँ। चरखेका भी व्यापक अर्थ करना ज़रूरी है।"

सदाशिवरावके साथ:

"मन्दिरमें जानेवालोंकी रोज़ सभाअें की जायँ और घोषणापत्र पर अुनके हस्ताक्षर लिये जायँ। यह न हो सके, तो मान लें और लिख भेजें कि बहुमत हमारे साथ नहीं है। तब मैं अुपवासकी बात छोड़ दूँगा।

"अुपवास करना ही काफी अुपद्रवकारी चीज़ है। और सरेआम रास्ते पर अुपवास किया जाय, तो वह और भी बड़ा अुपद्रव बन जाय। यदि मैं सिपाही होअूँ, तो अुसे तुरंत पकड़ लूँ। केलप्पनको कहना कि मंदिरके नज़दीक होनेका अुपवासके कारगर होनेके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं है।"

सतीशबाबू और हेमप्रभादेवी अेक पूजनीय जोड़ी है। हेमप्रभादेवीकी यह शिकायत है कि सतीशबाबू अुन्हें गीता पढ़ानेमें पूरा वक़्त नहीं देते। सतीशबाबू कहते हैं कि जिसने अपना जीवन गीतामय बना लिया है, अुसे गीता सिखानेकी क्या ज़रूरत? अपनी स्थितिका वर्णन करते हुअे सतीशबाबूने बापूसे कहा: "बात यह है कि अब यह पति है और मैं स्त्री हूँ!"

बापू: "अितना ज़माना हो गया, पुरुष स्त्री पर अपना स्वामित्व चलाता आया है और अुसने सरदारी भोगी है। तो अब किसी न किसी पुरुषको तो स्त्रीको पति बनाना ही पड़ेगा न?"

अिसके बाद यह बात चली कि अुन्हें पूना क्यों नहीं लाये। सतीशबाबूने अपनी कठिनाअी, खर्चकी कठिनाअी बताअी और धर्मशालामें ठहरना, जहाँ अेकान्त नहीं होता, आदि बातें भी कहीं। अिस पर बापू कहने लगे: "ठीक तो है, अिस मामलेमें तो वह पतिका काम नहीं कर सकती। वह फिर पत्नी हो जाती है!"

आज मिलनेवालोंमें अवंतिका बहन थीं, ... थे। अवंतिका बहनके प्रेमकी निशानी देखिये: अुन्होंने अपने साथ फूल ले लिये थे और रास्तेमें अुन्हें गूँथकर हार बनाती-बनाती आअीं।

. . . . ने मेरे साथ बहुत बातें कीं। वे सब मैंने प्रेमसे सुनीं। मगर मुझे यह न सूझा कि वे कहाँ ठहरे हैं, यह पूछ लूँ। मैंने यह मान लिया कि वे देवदासके साथ आये होंगे और अुन्हींके साथ ठहरे होंगे। मगर बापू तो आश्रमके पिता ठहरे, अिसलिअे अुनकी नज़रमें अैसी बात आये बिना रह ही नहीं सकती। अुन्होंने ब्योरेवार पूछताछ की।

अुन्होंने कहा: "अीसाअी सेवासंघमें ठहरा हूँ।"

"वहाँ क्यों ठहरे?"

"शामराव आश्रममें आये थे। जब वे खादीको माँड़ लगाना देखने आये तब अुन्होंने मुझसे कहा था कि आप जब पूना आयें, तब हमारे यहाँ ठहरना।"

बापूने हमसे कहा: "यह बात सुनकर मैं चौंका। मुझे अैसा लगा कि अिस मामलेमें नारणदास चूक गये। हमारे यहाँसे . . . . आये और अीसाअी सेवासंघके सिवाय अुन्हें कोअी दूसरा ठहरानेवाला न मिले, यह कितने दुःखकी बात है?" फिर कहने लगे: "और . . . . भी कैसा आदमी है? यह बेचारा ज़रा-ज़रासी बातोंमें भी नियम पालनेवाला है।"

मैंने अुनसे पूछा: "क्या खाया?"

अुस बेचारेने कहा: "पानी पिया, मगर खाया नहीं। वे लोग मांस-मदिरा अिस्तेमाल करनेवाले होंगे, वहाँ हम कैसे खायें?"

बापूने कहा: "मगर ये लोग शराब तो हरगिज़ नहीं पीते होंगे।"

. . . . कहने लगे: "मगर मैंने अुनके यहाँ अंडे देखे तो मुझे खयाल हुआ कि मांस भी खाते होंगे। अिसलिअे फिर मैंने कुछ नहीं खाया और पैदल चला आया, सो डेढ़ घंटेमें यहाँ पहुँचा।"

अेक समय मांस खानेवाला, मुर्दार मांस भी खानेवाला . . . . अिस तरह नियमोंपर क़ायम रहे, यह जानकर बापूको बहुत आनन्द हुआ। फिर तो गाड़ीमें जगह मिली या नहीं, कहाँ खाया और क्या खाया, वगैरा सभी बातोंकी चर्चा कर ली।

सुबह सुपरिण्टेण्डेण्टके साथ देवदासको कल मुलाक़ात न करने देनेके बारेमें बातें हुआीं।

२३-११-'३२ बापूने कहा: "मुझे बहुत बुरा लगा।"

अुसने समझाया: "देवदास अुद्धत बन गया था। अुपवासके दिनोंमें अुसने मुझे अविवेकी कहा था। अिसलिअे अब मुझे अुसे किसी भी तरहकी सुविधा देनेकी वृत्ति ही नहीं होती। मेजर मार्टिन होता, तो अिस तरह बरदाश्त नहीं करता और न अुसे जेलके दरवाजेमें घुसने देता। मेरे मातहतोंके सामने मेरा अपमान किया, यह मैं कैसे बरदाश्त करूँ?"

अिस नादानी पर हम तो दंग रह गये! मगर बापूने तुरन्त कहा: "देवदासका क़सूर होगा, तो ज़रूर माफ़ी माँगेगा। क़सूर न हुआ होगा, तो वह माफी नहीं माँगेगा और आना ही बन्द कर देगा।"

देवदासको अिस प्रकारका लम्बा पत्र लिखा और बताया:

"यह क़िस्सा खतम न हो जाय, तब तक तू आना बन्द कर दे। अेक दूसरेको पत्र लिखकर हम सन्तोष कर लेंगे। मुझसे मिलनेके लालचमें आकर माफ़ी नहीं माँगी जा सकती; और जहाँ माफ़ी माँगना धर्म हो जाय, वहाँ माफ़ी माँगनेमें ज़रा भी संकोच या शर्म न होनी चाहिये। अैसे छोटे-छोटे क़िस्सोंसे भी हमें तो प्रेमधर्मका पालन ही सीखना है।"

बारीकसे बारीक बातोंमें भी खुद कितने गहरे जा सकते हैं, अिसका नमूना: हीरालालने भंगियोंके पोशाक बदलनेके बारेमें कअी सूचनाअें की थीं; जेलमें तीन बार स्नान होता है और कपड़े बदले जाते हैं, अिस बारेमें अेक सुपरिण्टेण्डेण्टकी गवाही दी थी; और 'जैसे कि रंगरेज़के कपड़े रंगरेज़ बदल डालता है, वैसे ही ये लोग भी बदल सकते हैं', बापूकी दी हुआी अिस अुपमामें समानधर्म अेक हद तक ही है, अैसी आलोचना की थी। अुसे बापूने लिखा:

"यह बात मेरे ध्यानके बाहर नहीं थी कि रंगरेज़का दृष्टान्त पूरी तरह ठीक बैठनेवाला नहीं है। मगर वह कामचलाअू था। जेलमें तुम जो समझते हो कि अस्पृश्यताका निपटारा हो गया है, सो यह सब निपटारा किताबी ही है। जैसा तुम मानते हो अैसा कुछ भी नहीं होता। मैं तो आँखों देखी बात कहता हूँ। क्या जेलमें और क्या बाहर, सच बात तो यह है कि हिन्दुस्तानके काफी बड़े हिस्सेमें और अधिकसे अधिक समय तक तो भंगीकी पोशाकका अर्थ है अेक लंगोटी। मैं खुद भंगीका काम लगभग डेढ़ साल तक लगातार कर चुका हूँ। मैं तो यह काम मज़दूरोंकी पोशाक पहन कर ही करता था। आश्रममें यह काम

कच्छ पहनकर निपटाया जाता है। रंगरेज़ जितना मैला हो जाता है, अुतना मैल भंगीका काम करनेवालेको चढ़ता ही नहीं। शास्त्रीय ढंगसे वह सब सफ़ाअी करे, तो अुसके लिअे सिर्फ़ मृत्तिका-स्नान ही काफ़ी है। तुम तो शायद जानते भी होगे कि स्मृतिधर्ममें और अिस्लाममें मृत्तिका-स्नान पूर्ण स्नान है। मगर अैसे भी दूसरे धंधे हैं, जिनमें मृत्तिका-स्नान या पानी भी पूर्ण स्नान नहीं है। साफ़ होनेके लिअे साबुन और जंतुनाशक दवा वगैराकी ज़रूरत पड़ती है। अैसा धंधा चमार, डॉक्टर, रंगरेज़ और कोयलेका काम करनेवालेका है। और भी अैसे बहुतसे धंधे हैं। भंगीकी सफ़ाअी अस्पृश्यता निवारणमें बहुत कम महत्त्व रखती है। अिन सब बातोंका गहराअीसे विचार करना। प्रमाण नहीं भूलना चाहिये। अधिक चर्चा करनी हो तो मेरे पास आ जाना।"

'क्रॉनिकल' की अेक टिप्पणी पर आलोचना करते हुअे हीरालालने कहा: 'भंगियोंको स्वच्छ रखनेके बारेमें अहिन्दुओंकी भी अुतनी ही ज़िम्मेदारी है।' अिस सम्बन्धमें :

"'क्रॉनिकल' की टिप्पणी मुझे अनुचित नहीं लगी। अभी भंगी चाहे जिसका काम करते हैं, लेकिन हिन्दुओंने यदि अुनको अपनाया होता, तो अुनकी आज जो स्थिति है, वह कभी न होती। युरोपके भंगी या दुनियाके और किसी भी हिस्सेके भंगीकी हालत दूसरे मज़दूरोंसे ज़रा भी घटिया नहीं है। अुनके लिअे न तो खास मुहल्ले हैं और न विशेष पोशाक। भंगी जैसी जातिको हिन्दुस्तानसे बाहर कोअी नहीं जानता।"

सरलाबहन, शारदाबहन, विद्याबहन और नंदूबहन आअीं। आम्बेडकर सहभोजन क्यों नहीं चाहते यह समझाया। 'अतिथियज्ञ' करो, मगर अस्पृश्यताका फ़ैसला कर रहे हैं, यह मानकर न करो। जिसकी नाक बहती हो, जिसके कपड़े गन्दे हों और मुँहसे बदबू आती हो, अुसके साथ खानेमें तो कोअी सार ही नहीं। काम करनेवालोंको प्रीतिभोजमें भाग नहीं लेना चाहिये — खानगी जीवनमें तो ज़रूर बुलाया जा सकता है। मगर अिसका प्रचार जातियोंको चिढ़ानेके लिअे नहीं करना चाहिये।

मन्दिरोंके बारेमें मतगणना कराअी जाय और बादमें असहयोग कराया जाय। जिसमें नैतिक बल नहीं अुसमें अुपवास बल पैदा कर देगा। अुपवास करनेवाला भले ही कष्ट अुठायेगा, मगर दरअसल यह स्थिति होगी कि देखनेवाले ही जलेंगे।

श्रीमती कज़िन्स आ गयीं। जिनेवाकी सभाकी बात कही। "सब साधनहीन गरीब आदमी हैं, अिसलिअे ज्यादा तो क्या करें?"

बापू बोले : "गरीब हैं, अिसीलिअे तो ज्यादा अच्छे हैं।" वे यह पूछने आअी थीं कि स्त्रियाँ गुरुवायुरके लिअे क्या करें।

बापूने कहा : "मन्दिर जानेवाले प्रामाणिक मनुष्योंकी मतगणना करनेमें स्त्रियाँ मदद दे सकती हैं। यह पवित्र काम है और अिसमें जल्दबाज़ी या धाँधली न होनी चाहिये। अगर मैं अिस नतीजे पर पहुँचा कि लोग तैयार नहीं हैं या अुनके विचारोंमें कोअी परिवर्तन नहीं हुआ है, तो ज़ामोरिन पर कोअी दबाव नहीं डालूँगा। सनातनियों पर मैं कोअी अैसा दबाव नहीं डालना चाहता कि वे मन्दिरोंको हमारे हवाले करनेके लिअे अुनका त्याग करके चले जायँ। सनातनी अपने बच्चोंको पाठशालाओंमें से अुठा लें, तो भले ही अुठा लें, पर अुन्हें निकालकर मन्दिरों पर कब्जा नहीं किया जा सकता।"

श्रीमती कज़िन्सने नरम विरोध बताते हुअे कहा : "आप जल्दबाज़ी या धाँधली नहीं चाहते। मगर अुपवासमें अधीरता नहीं मानी जायेगी?"

बापू : "अिसमें अनुचित जल्दबाज़ी नहीं। अुपवासमें भी नम्रता और सद्भाव है। लोग अपने खुदके प्रति अधीर हों, दूसरोंके प्रति नहीं।"

श्रीमती कज़िन्स समझ गयीं और बोलीं : "मुझे लगता है कि सारे देशको वहाँ जाकर अिकट्ठा हो जाना चाहिये।" जाते-जाते मुझसे कहने लगीं : "अिस पुरुषके साथ यहाँ रहनेको मिले, यह कितना बड़ा सौभाग्य है! आप अपने पूर्व सत्कर्मोंका फल भोग रहे हैं।"

सरलादेवीको और कितने ही सवाल पूछने थे। मगर अिस विचक्षण स्त्रीने पहले सवाल पूछनेकी अिजाज़त माँगी। बापूने कहा : "भले ही राजनैतिक सवाल न हों, फिर भी न पूछो तो ज्यादा अच्छा। यह तो असिधारा-व्रत है। अिसका अच्छी तरह पालन करें, तब ही हमारी शोभा है।"

२४-११-'३२

. . . .का पत्र कल आया। अिसमें अुन्होंने स्वीकार किया था कि वे पूना-क़रार और अुपवासके विरुद्ध थे, मगर बताया : "मैंने अन्तःकरणके खिलाफ़ कुछ भी नहीं किया और न कुछ बोला ही। क्योंकि मैं बम्बअीकी सभामें मौजूद नहीं था और पूनाकी बैठकमें भी मौजूद नहीं था! और . . .को मैंने लिख दिया था कि अुपवासके सार्वजनिक असर पर लिखना, मगर पूना-क़रार पर न लिखना!" बापूको बहुत दुःख हुआ। अुसके जवाबमें लिखा :

"प्रिय मित्र,

"आपके पत्रसे मुझे आघात पहुँचा है। आपने बम्बअी छोड़ते समय मुझे जो पत्र लिखा था, अुससे तो मुझ पर यह असर पड़ा था कि मेरे सब

कामों और विचारोंसे आप पूरी तरह सहमत हैं। मुझे लगता है कि आपने लोगोंको भी यह मानका मौका दिया कि आप बहुमतके साथ हैं। आप अपने मनमें जो विरोध रखे हुअे थे, अुसका किसीको पता नहीं था। और कुछ नहीं तो कम-से-कम मेरे मार्गदर्शनके लिअे तो आपको अपने विचार मुझे बता ही देने चाहिये थे। आप जानते हैं कि आपकी रायका मैं कितना आदर करता हूँ। आपका मौन सम्मति-सूचक नहीं था, जिससे सत्यको आघात पहुँचता है। मित्रता तो ठोस चीज़ है। वह अैसी होनी चाहिये जो सख्त चोट बरदाश्त कर सके। आअिंदा मुझे बचानेका विचार न करके सीधी बात कहकर ही आप कामकी और मेरी मदद कर सकेंगे।

"राधाकान्तने मुझे यह कहकर सावधान कर दिया था कि मैं सुरंग पर खड़ा हुआ हूँ। मैं सोचता हूँ कि अुसकी बात ठीक थी।

"लेकिन यह सब मैं आपके लिअे ही लिख रहा हूँ। आपके पत्रका कुछ भी अुपयोग न करनेकी आपकी अिच्छाका आदर करूँगा। यह पत्र मैं फाड़ रहा हूँ।

स्नेहाधीन
मो० क० गांधी"

शास्त्री और गुरुदेवको भी अुनके पत्रोंके जवाब लिखे। कल रातको स्वामी, मोहनलाल भट्ट, रामदास और छगनभाअी, अिनमेंसे किसी अेक आदमीको मददके लिअे देनेका बापूने सरकारको लिखा।

अेक अमेरिकन स्त्रीको लिखा :

"अीश्वरके अस्तित्व या प्रार्थनाके असरको साबित करनेके लिअे दैवी अुपचारका प्रयोग करनेका खयाल मुझे पसन्द नहीं है। आज अगर अीसा मसीह पृथ्वी पर लौट आयें, तो जिस रोगमुक्त करनेकी शक्ति और दूसरे चमत्कारोंका अुनके सम्बन्धमें आरोपण किया जाता है, अुनका आज जो अुपयोग हो रहा है अुसे देखकर वे क्या सोचेंगे, यह कहना मुश्किल है।"

वाअीके सीताराम और कृष्णाजी नलवड़े वगैरा लोग आये। अस्पृश्यताका काम कैसा हो रहा है अुसका वर्णन : (१) दर्शन करनेवालोंके तीन दर्जे कर दिये गये हैं। (२) अछूतोंका काम करनेके लिअे रुपया माँगते हैं। (३) सार्वजनिक धनसे बने हुअे मन्दिर खानगी कैसे हो सकते हैं? जिन लोगोंका बहिष्कार हो, वे क्या करें? मुर्दार मांस न खानेवालों और मरे हुअे ढोर न अुठानेवालों पर जुल्म होता है। भोर राज्यके अछूतोंको अिस तरह ढोर न खींचने पर माफ़ीकी ज़मीन खो देनी पड़ी है।

आज रातको देर तक बैठकर बहुतसे पत्र लिखवाये। वल्लभभाअी भी अब मन्त्रीके पद पर पहुँच गये हैं और ढेरों पत्र निपटानेमें मदद करने लगे हैं। फिर अुनके लिअे तो यह मनचाहा काम ठहरा। अुनके विनोदका फव्वारा चलता ही रहता है।

किसीके पत्रमें देखा कि स्त्री कुरूप है असलिअे पसन्द नहीं, तो तुरन्त बापूसे कहने लगे: "लिखिये न कि आँखें फोड़कर अुसके साथ रहे, फिर कुछ कुरूप नहीं दिखेगा!"

अेक आदमीने अपनेको फिर दुबारा शादी करनेका आग्रह करनेवालेकी यह दलील दी थी कि 'अुसने मुझ पर अुपकार किया है और अुसे तीन लड़कियोंकी शादी करना है। जातिमें वरोंकी कमी है, असलिअे मुझसे आग्रह करता है।' वल्लभभाअी बोले: "तब तीनों ही लड़कियोंसे ब्याह कर ले तो क्या बुरा है?"

आज . . . की खुली चिट्ठी आअी। अुसमें अिस बेचारेने अन्तमें लिखा है कि आपके ज़मानेमें जीनेका दुर्भाग्य प्राप्त करनेवाला . . .

बापू कहने लगे: "कहो, अिसे क्या जवाब दिया जाय?"

वल्लभभाअी बोले: "कहिये कि ज़हर खा ले।"

बापू: "नहीं, अैसा नहीं। यह क्यों न लिखें कि मुझे ज़हर दे दो?"

वल्लभभाअी: "मगर अिससे अुसके दिन कहाँ पलटेंगे! आपको ज़हर दे दे तो आप गये; और अुसे फाँसीकी सजा मिलेगी, तो अुसे भी जाना होगा! तब फिर आपके ही साथ जन्म लेनेका भाग्यमें बदा रहेगा न! अिससे तो यही अच्छा कि वह खुद ही ज़हर खा ले!"

आज बापूने विलायतकी डाकके बहुतसे पत्र निकाल दिये। हरअेक पत्र बड़े ध्यानसे और काफ़ी समय देकर लिखाया।

हॉरेस अॅलेक्ज़ेण्डरकी पत्नीके पिताकी मृत्युके समाचार सुनकर लिखाया:

"कितने ही वर्ष हो गये, मैं मौतके समाचारोंसे शोकमग्न नहीं होता। साथीको गँवा बैठने पर मुझे आघात लगता है, मगर यह सिर्फ आसक्तिके कारण होता है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो स्वार्थके कारण होता है। मगर मैं तुरन्त सावधान हो जाता हूँ और अनुभव करता हूँ कि मृत्यु तो अेक छुटकारा है। जैसे किसी मित्रका हम स्वागत करते हैं, अुसी प्रकार वह भी स्वागत योग्य है। मृत्युसे शरीरका ही नाश होता है, अन्दर रहनेवाली आत्माका नहीं। मगर मैं तत्त्वज्ञान नहीं बघारूँगा। हाँ, मुझे अपने प्रति और वैसे ही आपके प्रति सच्चा रहनेके लिअे मैं जो अनुभव करता हूँ, वह कह देना चाहिये। साथ ही

यह भी बता दूँ कि महादेव, मैं और यहाँके आपके दूसरे मित्र, आपके क्षेत्रमें जो घटनाअें होती हैं अुनके प्रति अुदासीन नहीं रहते।"

जॉन हाअिलेण्डने रूसका जो असर अुन पर पड़ा, वह अेक छोटेसे पत्रमें लिख भेजा। अिससे बापू आश्चर्यचकित हुअे और अुसे लिखा:

"अिस बारका आपका पत्र तो अेक नोटपेपरमें समाअी हुअी पुस्तकके समान है। रूसके बारेमें मैंने अिधर-अुधरसे जितना भी पढ़ा है और यात्रियोंके मुँहसे सुना है, अुसके बनिस्बत आपके अिस पत्रमें मुझे ज्यादा मिल गया। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आपके पत्रके प्रति मेरे पक्षपातका मुख्य कारण यह है कि आपके निरीक्षणकी सावधानी और आपकी सत्यप्रियता पर मेरी श्रद्धा है।"

अगले अुपवासके बारेमें अिसी पत्रमें लिखा:

"मेरे दूसरे अुपवासकी चर्चा चल रही है। मैं चाहता हूँ कि अिस बारेमें आप और दूसरे मित्र क्षुब्ध न हों। शायद मुझे अिस कसौटीमें से नहीं गुज़रना पड़ेगा। मगर यह कसौटी हो या न हो, अेक ही बात है। मैं भगवानकी गोदमें सुरक्षित हूँ और अनेक देशोंमें अनेक मित्र मेरे लिअे जो प्रार्थनायें कर रहे हैं, वह अिस बातका अचूक प्रमाण है कि मैं पूरी तरह अुसके आधीन हूँ।"

अिटलीकी बहनों — संत फ्रांसिसके लार्क पंछियों (Larks of St. Frances) को लिखते हुअे लिखा:

"....तो सचमुच ही अुड़ाअू है। जहाँ-तहाँ अपना प्रेम बिछाता है और लड़का बनकर बड़ी अुम्रके आदमियोंका दिल जीत लेता है। अलबत्ता, आप अितना तो जानती होंगी कि यद्यपि वह हिन्दुस्तानमें है, तो भी हम अेक-दूसरेसे अधिक नहीं मिल सकते। मगर अिससे क्या? अुसका शरीर पास न होने पर भी मैं अुसकी आत्माका अपने पास होना अनुभव कर सकता हूँ। आध्यात्मिक सम्बन्ध नहीं टूट सकता। आध्यात्मिक सान्निध्यमें फ़र्क़ नहीं पड़ सकता। आप लिखती हैं कि आप सब प्रार्थनाकी शक्तिको न भूलनेकी भरसक कोशिश कर रही हैं। अिसे भूल जायँ, तो आफत ही आ जाय न?"

२५-११-'३२

हिन्दू-मुस्लिम अेकताके चाहनेवाले नटराजन जैसे साफ व्यक्ति बहुत कम होंगे। अपने पत्रमें वे आगरेकी अेक मुलाक़ातका चित्र खींचते हैं: "हमने कलका दिन आगरेमें बिताया। अकबरका मक़बरा देखकर मुझ पर बड़ा असर हुआ। दूसरे मक़बरोंमें खुदाअीका काम बहुत ही होता है। अुनके मुक़ाबलेमें यह बिलकुल

सादी किन्तु आलीशान अिमारत कही जा सकती है। मुझे मूक प्रार्थना करनेकी भावना हो आअी कि अितिहासके हमारे पहले महान् राष्ट्रविधायककी आत्मा अिस समय हमारा मार्गदर्शन करे। रानडेने अेक बार कहा है कि हमारे देशमें अंग्रेजोंके आनेसे पहले हिन्दू-मुस्लिम अेकताका काम काफ़ी हो चुका था। जब तक ये आलीशान अिमारतें न देखें, तब तक अिसका अन्दाज़ नहीं आता। आगरेके किलेके बीचके हिस्सेमें हिन्दू रानीका महल है और अुसमें अुसका मन्दिर है। हमारा मुसलमान पथ-प्रदर्शक, जो दूसरे महलोंमें हमारे आगे-आगे चल रहा था, यहाँ अेक तरफ़ खड़ा हो गया और हमें अन्दर जानेका अिशारा किया। अेक-दूसरेकी धार्मिक भावनाओंके प्रति रहे परस्पर आदरसे पुष्ट हुअी गाढ़ सांस्कृतिक और सामाजिक अेकताके तथा संगीत, स्थापत्य और दूसरी ललित कलाओंमें हुअे सहज सम्मिश्रणके दर्शन हमें अिन स्मारकोंमें होते हैं। जो अेक बार हो गया है, वह फिर ज़रूर होगा।

"यह लिख रहा था कि विजयराघवाचार्य आये और मैंने अपने मन पर पड़े हुअे असरकी बातें अुन्हें सुनाअी। अुनके अूपर अिसका बड़ा असर हुआ। हमारे बहुतसे दक्षिणवासियोंकी तरह अिन्हें भी यह बहुत विचित्र लगा।"

सावित्री और सत्यवानके धर्मसंकटके वर्णन आते रहते हैं। जवाबमें फिर बापूने दोनोंको दृढ़ रहनेके लिअे सन्देश भेजा :

"सत्यवानकी पवित्रताकी कुंजी शायद तेरे हाथमें है। तुझे हिमालय जैसी धैर्यवान और सागर जैसी अुदार बनना है। किसी भी कारणसे तुझे अुसे गुस्सा नहीं दिलाना चाहिये। वह विकारवश हो जाय, तो अुसका न्याय करने नहीं बैठना। तुझे कोअी प्रयत्न नहीं करना पड़ता, क्योंकि तू विकारको जानती ही नहीं। अिसलिअे तेरा ब्रह्मचर्य तेरे लिअे गुण नहीं है, मगर सत्यवानके लिअे है। क्योंकि अुसे सदा शैतानसे लड़ना पड़ता है। और अगर वह अन्तमें अुसे हरा देगा, तो यही साबित होगा कि अुसने बड़ा पराक्रम करके अेक बड़ी बात सिद्ध कर ली। अिसलिअे हम सब प्रार्थना करें कि अुसे दुश्मनको पछाड़नेके लिअे आवश्यक बल मिले।

स्टोक्सको अेक पत्रमें :

"यह कितने आनन्दकी बात होगी कि लोग यह समझ जायँ कि धर्म बाहरी कर्मकाण्डमें नहीं है, बल्कि मनुष्यकी अूँची-से-अूँची वृत्तियोंका अधिकसे अधिक अनुसरण करनेमें है।"

रामन्नी मेननने सनातनी सभा, गुरुवायुर शाखाकी तरफसे लिखा है कि "आपने यह कैसे जाना कि लोकमत आपके साथ है? वह हमारे साथ है।"

अुसे लिखा :

"मन्दिरमें जानेवालोंकी ठीक-ठीक मतगणना करनेमें कोअी मुश्किल न होनी चाहिये । आप जितनी दृढ़तासे कहते हैं कि लोकमत मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध है, अुतनी ही दृढ़तासे सुधारक मुझे विश्वास दिलाते हैं कि लोकमत अुनके पक्षमें है । मेरा यह सुझाव है कि दोनों पक्ष अपना अेक-अेक प्रतिनिधि चुनें और किसी भी पक्षकी तरफ़से अनुचित दबाव डाले बिना अीमानदारीसे मतगणना की जाय । जिस मुद्दे पर मत लेना है, वह साफ़ तौर पर तय कर लिया जाय और मतदाताओंको समझा दिया जाय । यह शुद्ध धार्मिक मामला है; अिसमें ज़रा भी गरमागरमीकी गुंजाअिश नहीं ।"

जयसुखलाल और मथुरादास विसनजी वग़ैरा आये । नानाभाअी और परीक्षितलाल भी आये । . . .की अच्छी तरह खबर रखने, अुसे अुलाहना देने और न समझे तो अुसके अखबारको मदद देना बन्द कर देनेकी सलाह दी । हरिजनोंके लिअे आबादीका नक़्शा तैयार करनेकी सूचना दी ।

अुनकी शिक्षाका प्रबन्ध करनेको कहा । अछूत स्त्रियोंसे भयंकर बदबू आती है और अुनके पास बैठना असम्भव हो जाता है; अिसका अिन्तज़ाम करना चाहिये और अुसके बारेमें अच्छी तरह जान लेना चाहिये ।

दक्षिण अफ्रीकामें हमारा नाम 'लहसन प्याज़' (garlic and onion) पड़ा हुआ है ।

जिन अछूत विद्यार्थियोंकी छात्रवृत्तियोंके लिअे अर्ज़ियाँ आती हैं, अुन्हें दी जा सकती हैं? अिस सवालके जवाबमें : "अुनसे पूछा जाय कि तुम कोअी सेवा करोगे या नहीं? हमें अिन लोगोंमें से अन्त्यज सेवक पैदा करने हैं, अिसलिअे अुनके साथ यह शर्त करना ज़रूरी हो जाता है । जहाँ आवश्यक होगा वहाँ अुदार बनकर भी देंगे । हममें यह कहनेकी ताक़त होनी चाहिये कि यदि दस हज़ार भी योग्य लड़के अिस तरहकी छात्रवृत्तियाँ माँगनेवाले मिल जायँगे, तो सबको देंगे ।"

बम्बअीवालोंके साथकी चर्चामें : "गुरुवायुर न खुले और हमें मरना पड़े, तो सारा देश अस्पृश्यतासे सड़ जायगा ।"

गुरुदेवके मन्त्रीको लिखा :

"अितनी दूरसे भी मुझे गुरुदेवकी वेदना मालूम हो रही है । मगर मेरा खयाल है कि यह अनिवार्य है । गुरुदेव अिस समय जिस वेदनामें से गुज़र रहे हैं, वैसी ही वेदनामें से जब तक हमारे देशकी अनेक विशुद्ध आत्माअें नहीं गुज़रेंगी, तब तक सनातनियोंके दिल नहीं पिघलेंगे और न अछूतपनका कलंक मिटेगा ।

हम प्रार्थना करें कि अीश्वर अुन्हें सही सलामत और बहुत वर्षों तक जीवित रखे ।

"गुरुदेवने ज़ामोरिनको जो कड़ा पत्र लिखा है, अुसका अुस पर असर होना ही चाहिये । मेरे अिन कष्टके दिनोंमें गुरुदेवका आशीर्वाद और अुनकी मदद मेरे लिअे अमूल्य है । मैं अुन्हें अपना प्रेम भेजता हूँ ।"

अेक बंगाली असिस्टेण्ट अेकाअुण्टेण्ट जनरल सदा पत्र लिखते रहते हैं । अुन्होंने अिस बार लिखा कि "आपका शरीर धरोहर है, अुससे बार-बार अुपवास करवानेका अधिकार आपको नहीं है ।" अुसे लिखा :

"आप मेरे शरीरकी बहुत चिन्ता रखते हैं, अिसकी मैं क़दर करता हूँ । आप जो यह कहते हैं कि यह राष्ट्रकी सम्पत्ति है, अिसे मैं पूरी तरह मंजूर करता हूँ । मगर राष्ट्र अीश्वरका है और अीश्वर यदि अिस शरीरका अैसा कोअी अुपयोग करना चाहता हो, तो अुसका विरोध कैसे किया जा सकता है ?"

रतलामसे पाँच-सात आदमियोंके हस्ताक्षरोंका बारह सवालोंवाला अेक पत्र आया । बापूने अुनका विस्तारसे जवाब दिलवाया :

१. महान् वस्तुओंका दुरुपयोग अनादिकालसे होता आया है और होता रहेगा । अिसलिअे अुनका त्याग नहीं किया जा सकता । धर्मके नाम पर जितना ढोंग अिस दुनियामें हुआ है, अुतना और किसी चीज़का नहीं हुआ होगा । फिर भी यदि धर्मको छोड़ दें, तो जगतका नाश हो जाय ।

२. केलप्पनकी भूल साधारण थी । वह दूर की जा सके अैसी थी और दूर हो गयी । अगर अुपवास अुपवासके रूपमें त्याज्य होता, तो मैं अुसका हरगिज़ साथ नहीं दे सकता था । अुसने सौ फी सदी अुस भूलका प्रायश्चित्त कर लिया, अिसलिअे अेक साथीके नाते और अिस वस्तुके अुत्पादकके नाते अुसका साथ देना मेरा स्पष्ट धर्म था ।

३. ज़ामोरिनका धर्म न मेरा साथ देना है और न सनातनी अुपवासियोंका । अुसका स्पष्ट धर्म केवल न्यायका साथ देना है । दो आदमी अेक दूसरेके विरुद्ध अुपवास करते हों, फिर भी दोनोंके अुपवास न्याय-विरुद्ध हो सकते हैं । और अैसा हो, तब सत्यधर्म और अहिंसाधर्म यह सिखाते हैं कि दोनों अुपवासियोंको मरने दिया जाय, और न्याय ही देखा जाय । जन्म-मरणके कर्ता हम नहीं हैं । ये दोनों बातें अीश्वरके हाथमें हैं । अुपवास करने पर भी लोग बच गये हैं और अुपवास न करनेवाले जीवोंको अनेक कारणोंसे मरते हुअे हम प्रतिक्षण देखते हैं ।

४. मेरे व्यक्तित्वका असर पड़ता ही है, यह मुझे मालूम है । मगर अिसलिअे मैं धर्म कैसे छोड़ दूँ ? और मेरे व्यक्तित्वके असरमें आकर भी कोअी अस्पृश्यताका त्याग कर देगा, तो यह कोअी अधर्माचरण तो नहीं माना जायगा ।

५. मुझसे सत्यका त्याग करानेके लिअे अेक अरब मनुष्य अुपवास करने लगें, तो भी मैं अपने दिलको पत्थर जैसा सख्त बनाकर सत्यका त्याग न करूँ, यही प्रार्थना मैं ओीश्वरसे करता हूँ और अैसी आशा भी रखता हूँ। यह सब विचार करते समय अेक बात नहीं भूलनी चाहिये। अन्यायको क़ायम रखनेके लिअे अुपवास करके मर जानेवाले बहुत लोग नहीं निकलेंगे। सच बात तो यह है कि न्यायके लिअे मरनेवालोंका भी ज्यादा निकलना कम ही संभव है।

६. अेक करोड़ मनुष्य आत्म-प्रेरणाका नाम लेकर काम करें, तो भी वे झूठे या मूर्ख हो सकते हैं; और अेक आदमीको सचमुच ही आत्म-प्रेरणा हुअी हो, तो वह बेचारा क्या करे? दूसरे आत्म-प्रेरणाका गलत दावा करेंगे अैसा डर होनेसे ही क्या वह भी आत्म-प्रेरणाको दबाकर झूठा बन जाय और नास्तिक हो जाय?

७. सनातनियोंके पीछे ताक़त नहीं है, अैसा मेरा खयाल हो तो अिसे मैं कैसे छिपाअूँ? लेकिन अुनके पास ताक़त हो, तो अुसे दबा देनेका मेरे पास कोअी साधन नहीं। और अुनके पास यह ताक़त हो, तो अुसे साबित करना अुनके लिअे आसान है।

८. प्रथम तो मेरे राजनैतिक विचार, धार्मिक विचार और सामाजिक विचार सब अेक ही वृक्षकी अलग-अलग शाखाअें हैं। अिसलिअे वे परस्पर विरोधी नहीं हैं। मगर जिसे वे केवल अलग ही लगते हों, वे मेरी राजनैतिक शक्तिका अुपयोग करनेके लिअे अपना धर्म न छोड़ें। लेकिन कोअी मूर्ख या भीरु बनकर धर्मरूपी हीरा बेचकर राजनैतिक कंकर लेने लगे, तो क्या मैं अपना धर्म छोड़ दूँ? अिस संबंधमें बलात्कार शब्दका अुपयोग करना भाषा पर बलात्कार करने जैसा है। व्यक्तिगत प्रभाव आदि शक्तियाँ तो दुनियामें काम करती ही रहेंगी। अिन्हें हम बलात्कारमें शुमार कर लें, तो पुरुषार्थ जैसी चीज ही नहीं रहे।

९. अनुचित है।

१०. प्रीतिभोजन अस्पृश्यता निवारणका अंग है ही नहीं।

११. भारतभूषण पंडितजीके और मेरे विचारोंमें थोड़ा भेद ज़रूर है, मगर अिस अुपवासके बारेमें कुछ भेद है, यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन हो तो लोग क्या करें, यह लोगोंके सोचनेकी बात है। जो विचार अुनकी बुद्धि और अुनका हृदय स्वीकार करे, अुसीका वे अनुसरण करें।

१२. रूढ़िवादी सनातनियोंके विचार बदलनेके लिअे अुपवासकी योजना नहीं है, बल्कि जो रूढ़ियोंको पार करके अस्पृश्यताको पाप समझने लगे हैं,

अर्थ है कोअी न सोची हुअी मुश्किली, जैसे क़ानूनकी कठिनाअी; जिसे निश्चित अवधिमें दूर करना अिन्सानके लिअे अशक्य हो ।

"मुझे जो जानकारी मिली है अुसके अनुसार आसपासके मन्दिरमें जानेवाले सवर्ण हिन्दू अिस बातके अधिक पक्षमें हैं कि हरिजन अुनके जैसे हक़ोंके साथ ही मन्दिरमें जायँ । अिस जानकारीके बारेमें शंका अुठानेवाले पत्र भी मन्दिरके पास रहनेवाले लोगोंकी तरफ़से आये हैं । मैंने यह सूचना दी है कि मन्दिरके दस मीलके विस्तारके भीतर रहनेवाले सवर्ण हिन्दुओंकी मतगणना पंचोंके सामने की जाय । अेक पंच सुधारकोंकी तरफ़से और अेक सनातनियोंकी तरफ़से मुक़र्रर किया हुआ हो । ज़रूरत हो तो अेक सरपंच भी रख दिया जाय । ये लोग मत देनेके कामकी अच्छी तरह देखरेख रखें, जिससे अनुचित दबाव काममें न लाया जा सके, कोअी झूठे नामसे मत न दे या और किसी तरहका धोखा न हो । मेरे लिअे तो यह शुद्ध धार्मिक प्रश्न है। अिसलिअे सुधारकोंके काममें कुछ भी धोखा मालूम होगा, तो मुझे असह्य वेदना होगी । मैं चाहता हूँ कि सनातनी अिस बातकी क़दर करें और अिसमें अन्तःकरणपूर्वक भाग लें । मुझे विश्वास है कि अगर अधिकांश लोकमत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हुआ, तो वे विरोध करना नहीं चाहेंगे । अिस मतगणनाके परिणामस्वरूप अैसा मालूम पड़े कि मेरी जानकारी ग़लत थी, तो मैं ज़रा भी हिचकिचाये बिना केलप्पनको सलाह दूँगा कि वे अुपवास मुलतवी कर दें और गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल देनेके लिअे लोकमत तैयार करें । मेरे अुपवासका अेकमात्र बचाव यही है कि मन्दिरके नज़दीक बसनेवाले बहुतसे लोग हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हैं ।"

डॉ० नवले नामका अेक अत्यन्त साहसी आदमी मिलने चला आया । ग़रीबीसे बढ़ते-बढ़ते अिस आदमीने प्रेस खड़ा कर लिया और आजकल अपनी बुद्धिके अनुसार अस्पृश्योंकी सेवा कर रहा है । अिसे मोण्टेग्यूने 'The most pushing man in India' — 'हिन्दुस्तानमें सबसे साहसी आदमी' कहा था । अिसे अुसने बड़ा प्रमाण-पत्र माना और बापूके सामने ज़िक्र कर दिया! महात्मा फूले नामके मालीकी भी बात कही, जिसने साठ बरस पहले अछूतोंके लिअे पहली पाठशाला खोली और अछूतोंको ही अपनी सारी सेवा अर्पण की थी । पूनामें दूसरी जातियों और ब्राह्मणोंके बीच झगड़ेकी जड़ें कितनी गहरी हैं, यह बात अिस आदमीसे और महात्मा फूलेके जीवनचरित्रसे मालूम होती है । डॉ० नवलेने कोअी डॉक्टरी परीक्षा पास नहीं की है, बल्कि वह अपने आप डॉक्टर बन बैठा है । मगर है बड़ा साहसी । अपनी आत्मकथा 'प्रयत्नान्ते परमेश्वर' नामसे लिखी है और अुसे अंग्रेज़ीमें लिखवाकर अमेरिकामें छपवाने वाला है!

अुर्मिलादेवी मलाबार जानेके लिअे बापूसे बिदाअी ले गयीं। बापूने अुनके सामने मलाबारके लोगोंके शब्द-चित्र खींचे; पुलया, नायाडीके जीवनचरित्र खड़े किये और फिर 'God be with you' — भगवान तुम्हारी मदद करे, कहकर पीठ थपथपाअी! अुनकी आँखोंमें आँसू आ गये।

कल रातको बापूने नवाँ वक्तव्य लिखवाया। अिसमें अनेक आलोचनाओंका जवाब आ जाता है और यह बहुत महत्त्वका वक्तव्य बन जाता है। 'गार्डियन' में बापूकी अस्पृश्यता प्रवृत्ति और अुपवासके बारेमें बहुत सुन्दर लेख है; अिसी तरह मद्रासके 'हिन्दू धर्म' में।

चिन्तामणराव वैद्य कहते हैं कि अछूतपन बौद्ध धर्मके अस्तके बाद शुरू हुआ और अुसकी जड़ अहिंसा है। जो पशुओंको मारनेवाले और काटनेवाले थे, वे अछूत बन गये! अिसके लिअे कोअी सबूत नहीं मिलता। और क्षत्रिय मात्र तो स्पृश्य ही रह गये, सो कैसे? सनातनियोंको वे सलाह देते हैं कि देवलकी स्मृतिका आधार लेकर अस्पृश्योंको वे मन्दिरोंमें प्रवेश करने दें! कुछ पढ़े-लिखोंके गलेमें पुस्तकाधारका अितना बड़ा पत्थर बँधा रहता है कि वे आज़ादीके साथ आगे बढ़ ही नहीं सकते!

बीमारोंको बापू कैसे पत्र लिखते हैं अिसके नमूने:

डाह्याभाअीको लिखा:

"कल मैं लिख चुका हूँ कि बीमार भी सेवा कर सकते हैं। वह अिस तरह। मिली हुअी शान्तिका अुपयोग भगवानके चिन्तनमें करें। अपने क्रोध और अपनी अधीरता पर काबू पाकर अिस शान्तिका अुपयोग सेवा करनेवालोंमें प्रेम फैलाकर करें। अेक पश्चिमका और अेक यहाँका अुदाहरण मेरे पास है। फ्रांसकी अेक अठारह वर्षकी लड़कीने अपनी मरणासन्न बीमारीमें अितनी सुगंध फैलाअी कि अब अुसे 'सन्त' की पदवी मिली है। अुसने तो अखंड निद्रा ले ली। पोरबन्दरके पास बिलखाके लाधा महाराजको कोढ़ हो गया था। वे बिलखाके शिवालयमें आसन जमाकर बैठ गये। नित्य रामनाम जपते और रामायण पढ़ते। अन्तमें रोगमुक्त हुअे और प्रख्यात कथाकार बन गये। मैंने अुन्हें देखा था और कथा भी सुनी थी।

"जो अीश्वरभक्त है, वह तो बीमारीका भी सदुपयोग कर सकता है। बीमारीसे हारता नहीं।"

कुसुमको:

"बीमार सेवा लेते हैं और सेवा नहीं कर सकते, अिस बातका अफसोस करते हैं। यह बड़ी भूल है। बीमार शुद्ध विचारोंसे सेवा करते हैं। कमसे कम सेवा लेकर सेवा करनेवालोंको अपने प्रेमसे नहलाकर सेवा करते हैं;

खुद प्रफुल्लित रहकर भी सेवा करते हैं। हमें यह कभी न भूलना चाहिये कि भगवानका शुद्ध चिन्तन भी सेवा ही है।"

माधवन नायरके पत्रके जवाबमें लिखा :

"आपका पत्र अच्छा है। मैं आज जो बयान प्रकाशित कर रहा हूँ अुसे ध्यानसे देखना। जब मैं साथियों और सुधारकोंकी भयंकर लापरवाहीकी बात कहता हूँ, तब कोअी खास व्यक्ति मेरे ध्यानमें रहता है अैसा नहीं। अगर हम सच्चे हैं और काममें जुटे हुअे हैं, तो असत्यकी दीवारें अवश्य ही टूट जानी चाहियें। यह कहना व्यर्थ है कि ज़ामोरिन सख्त बनता जा रहा है। आप देखेंगे कि मन्दिरमें जानेवाले लोग हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशकी माँग करें, तो अुन्हें रोक सकनेकी ताक़त दुनियामें किसीमें नहीं है। सच बात तो यह है कि हमारा अान्दोलन अभी शुरू ही हो रहा है। वह बहुत अुत्कट होना चाहिये, लेकिन सौम्य। ज़ामोरिनके विरुद्ध तो अेक शब्द भी नहीं कहना चाहिये। बेशक, क़ानून सचमुच हमारे खिलाफ़ ही हुआ, तो अुसे सुधारना होगा। और अगर लोकमत स्पष्ट और जोरदार हुआ, तो यह करनेमें भी अड़चन नहीं आयेगी। अपने प्रति या अिस कार्यके प्रति हमारी श्रद्धा डगमगानी नहीं चाहिये। यह बात समझमें आती है न? मेरे कहनेमें कुछ भी संदिग्ध हो, तो निःसंकोच होकर फिर लिखना।"

आश्रमके पत्रोंमें नारणदासभाअीके पत्रमें तकलीकी महिमा गाअी :

"तकलीके बारेमें सबसे अितना कह देना। चरखा राजा है, पर तकली रानी है। रानीके बिना राजाकी शोभा नहीं और राजाके बिना रानीका काम नहीं चलता। यह भी समझाना चाहिये कि रानीके बिना वंशवृद्धि तो हो ही नहीं सकती। चरखा हज़ारोंके लिअे है, तो तकली करोड़ोंके लिअे है। जब भाअूने यह बता दिया है कि तकलीकी कितनी शक्ति है, तब भी अुसका अुपयोग सब नहीं सीख लेते, यह आश्चर्यकी बात है। पहले बारीक-से-बारीक सूत तकलीसे ही काता जाता था। यह तकली बाँसकी होती थी। आज भी मद्रासमें जनेअूका बहुत बारीक सूत ब्राह्मण तकली पर ही कातते हैं। चरखा बनानेमें समय लगता है, मगर तकली तो जहाँ बनानी हो वहीं बनाअी जा सकती है। अुसमें न बिगड़नेकी बात है और न आवाज़ करनेकी। यह बिलकुल संभव है कि कभी तकलियाँ चरखेको हरा दें। हम तो दोनोंमें से अेककी भी हार नहीं चाहते। हम तो दोनों पर ही अेकसा और अच्छा क़ाबू पाना चाहते हैं।"

हरिभाअू फाटकके साथ बातें करते हुअे :

"खाने-पीने और विवाहके साथ वर्णका कोअी भी सम्बन्ध नहीं है। मैंने शास्त्रोंका अध्ययन नहीं किया, मगर मैंने यह जान लिया कि शास्त्रोंके

गर्भमें क्या है और अुसे मैंने बहुत पहलेसे प्रकट कर दिया है। और मैं देखता हूँ कि शास्त्रके वचन मेरे वचनोंकी पूरी तरह पुष्टि करते है। अिसका कारण मैं नहीं समझता; सम्भव है कि यह पूर्वजन्मका संस्कार हो। परन्तु शास्त्रोंके अध्ययनके बिना ही यह चीज़ मेरी समझमें आ गअी है।

"अस्पृश्यता निवारणका काम करो, तो पूरे जोशके साथ करो। मोहम्मद पैगम्बरके जैसे जोशके साथ और अुन्हींके जैसे विश्वासके साथ। अबूबकरने कहा: 'हम दो आदमी हैं और हमारे दुश्मन हमारा कचूमर निकाल देंगे।' अिसपर पैगम्बर साहब बोले: 'मूर्ख, हम दो नहीं, तीन हैं। खुदा हमारे साथ है।' अैसा हुआ कि अुनके पीछे लगे हुअे आदमी जब अुधरसे निकले, अुस समय गुफा पर मकड़ीने जाला बुन रखा था या चींटियाँ चल रही थीं। अिसलिअे वे बोले: 'यहाँ कोअी नहीं हो सकता।' मोहम्मदने ये शब्द सुन लिये और कहा: 'देख, खुदा गुफाके सामने खड़ा है या नहीं!' अिस आदमीकी श्रद्धाकी बराबरी तो हो ही नहीं सकती। और यह बात तो तेरह सौ वर्ष पहले हुअी अैतिहासिक घटना है। हम कृष्णके बारेमें और दूसरोंके बारेमें बहुत पढ़ते हैं, मगर वे सब पौराणिक कालकी बातें है, जब कि यह तो अैतिहासिक कालकी बात है।"

२९-११-'३२

"मूर्तिपूजाको नहीं माननेवाले आप अस्पृश्योंको यह कैसे लिख सकते हैं कि मन्दिर खुल जायँगे, तो मूर्तियोंमें भगवान दिखाअी देंगे?" अैसा मिस मेरी बारने पूछा था। अुसे जवाब तो मिल ही गया था। अुसका फिर पत्र आया:

"हमें तो यह समझमें ही नहीं आता था कि आप यह कैसे कह सकते हैं कि अीश्वरका निवास मामूली पत्थरसे मूर्तिमें विशेष रूपसे है! खुद आपको तो मूर्तियाँ कुछ भी सहायक नहीं होतीं। लोगोंको जैसा वे चाहें, पूजा करने देना अेक बात है, और यह खयाल देना कि अिस क़िस्मकी पूजाकी आप भी हिमायत करते हैं दूसरी बात है।"

अुसे जवाब दिया:

"अमुक चीज़ मुझे सहायक नहीं होती, अिसलिअे दूसरोंके बारेमें मैं लापरवाह रहूँ और यह जाननेका कष्ट न करूँ कि वह अुनके लिअे सहायक होती है या नहीं, यह ठीक नहीं। मैं जानता हूँ कि अमुक प्रकारकी मूर्तिपूजा करोड़ों मनुष्योंको सहायक होती है। अिसका कारण यह भी नहीं कि अुनका विकास मुझसे कम हुआ है, मगर अुनका मानस मुझसे दूसरी तरहका बना हुआ है। मेरे बारेमें भी अितनी बात न भूलनी चाहिये कि मैं मूर्तिपूजाको पाप

नहीं मानता। अितना ही नहीं, मैं यह भी मानता हूँ कि किसी न किसी रूपमें वह हम सबके लिअे आवश्यक हो जाती है। अलग-अलग प्रकारकी पूजाओंमें फ़र्क़ प्रमाणका ही होता है, तत्त्वका नहीं। मस्जिदमें जाना और गिरजेमें जाना भी अेक तरहकी मूर्तिपूजा है। बाअिबिल, क़ुरान, गीता या अैसे किसी और ग्रंथके प्रति पूज्यभाव रखना भी मूर्तिपूजा ही है। आप किसी ग्रंथ या मकानका अुपयोग न करें और अपनी कल्पनामें ही परमेश्वरका कोअी खास चित्र खींच लें व अुसमें कुछ खास गुणोंका आरोपण करें, तो यह भी मूर्तिपूजा हुअी। जो पत्थरकी मूर्तिकी पूजा करते हैं, अुनकी पूजा अिन दूसरी पूजाओंसे ज्यादा स्थूल है, यह भी मैं नहीं कहूँगा। बड़े विद्वान न्यायाधीश भी अपने घरोंमें मूर्तियाँ रखते पाये गये हैं। पंडित मालवीयजी जैसे तत्त्वज्ञानी अपने गृहदेवताका पूजन किये बिना मुँहमें अन्न नहीं डालते। अैसी पूजाको वहम माननेमें अज्ञान और अभिमान दोनों हैं। पूजा करनेवालोंकी कल्पनामें तो अीश्वरका अधिष्ठान मंत्रपूत पत्थरमें है, आसपास पड़े हुअे दूसरे पत्थरोंमें नहीं। मन्दिरमें भी जहाँ मूर्ति रखी जाती है, वह स्थान मन्दिरके दूसरे स्थानोंसे ज्यादा पवित्र माना जाता है। अिस प्रकारके अुदाहरण आप कितने ही ढूँढ़ सकेंगी। मेरी यह दलील विचारों या पूजामें शिथिलता लानेके लिअे नहीं है। किसी भी स्वरूपकी सच्चे दिलसे की गअी पूजा, पूजा करनेवालेके लिअे अेकसी अच्छी और फलदायक है। वह ज़माना अब चला गया कि कोअी व्यक्ति या समूह अिस मामलेमें विशेष अधिकार भोगे। पूजाकी खास विधि या शब्दोंकी तरफ़ अीश्वर नहीं देखता। वह तो हमारे कृत्यों और हमारी वाणीके आरपार देख सकता है। और हम खुद ही अपने जिन विचारोंको नहीं समझ सकते, अुन्हें भी वह जानता और समझता है। अुसके सामने तो हमारे विचार ही असली चीज़ हैं।"

बहुतसे लोग मन्दिरोंकी अपवित्रताका सवाल अुठाते हैं। अुनमें से अेकको लिखा:

"कोअी संस्था अैसी नहीं जिसमें कोअी न कोअी बुराअी न घुसी हुअी हो। परन्तु मेरी राय यह है कि मन्दिरोंमें अिनकार न की जा सकने लायक कितनी ही बुराअियोंके होनेपर भी वहाँ जो करोड़ों मनुष्य जाते हैं, अुन पर अिन बुराअियोंका कोअी असर नहीं होता और अुन्हें अिन मन्दिरोंसे आवश्यक आश्वासन मिल जाता है।"

अेक बंगाली युवक लिखता है: "मैं पापमें डूबा हुआ हूँ। स्त्रियोंको देखकर मेरी विषयेच्छा जाग्रत हो जाती है। चोरी भी करता हूँ। मुझे बचाअिये।"

अुसे लिखा :

"तुम अच्छे बननेका दृढ़ संकल्प कर लो। तुम्हें अच्छा बनानेकी भगवानसे सदा प्रार्थना करो, तो तुम अच्छे बन जाओगे।"

वसन्तराम शास्त्री ज़हर बरसा रहा है। अुसने 'साठीके साठ सूत्र' के नामसे बापूके लेखोंमें से कथित अुद्धरण देकर बापूको गिरानेका नीच प्रयत्न किया है। अुसके बारेमें शिकायतें भी आअी हैं। अुसे बापूने अेक पर्चा लिखा :

"आपकी पत्रिका किसीने मुझे भेजी है। अुसे थोड़ा पढ़ा। मैंने सपनेमें भी यह आशा नहीं की थी कि आप अितना असत्य लिख सकते हैं। मुझे तो अिससे नुकसान नहीं होगा। मगर वैष्णव धर्मका क्या होगा?"

अेक सिन्धी डॉक्टरने लिखा : "आत्मसमर्पण किस तरह होता है? मुझे दवाअियाँ बहुत गुप्त रखनी पड़ती हैं। अुन्हें गुप्त न रखूँ, तो मेरी कमाअी मारी जाती है।"

अुसे लिखवाया :

"गीताका अर्थ करनेमें हमारे बीच मतभेद है। लड्डू पूरा-का-पूरा रहे और खा भी लें, ये दोनों बातें नहीं हो सकतीं। लेकिन गीताकी बात जाने दीजिये। अगर आपको लोगोंके भलेके लिअे नहीं, परन्तु अपनी कमाअीके लिअे अपने अिलाज गुप्त रखने पड़े, तो अिसमें कुछ अीश्वरार्पण नहीं है और न अपनेको शून्य बनानेकी ही बात है। भंगियोंको ही लीजिये। समाजके लिअे वे गंदा काम करके अपनी रोजी कमाते हैं। आपको अगर शून्य बन जाना है, तो स्वेच्छासे और आनन्दपूर्वक जिस प्रकारका काम भंगी करता है, अुसी तरहका काम आपको भी करना चाहिये और साथ ही साथ अपनी डॉक्टरीके ज्ञानका लाभ गरीबों और रोगियोंको मुफ्त देना चाहिये। अिस बातको अव्यावहारिक मत मानना। कितने ही लोगोंने सफलतापूर्वक अैसा किया है।"

आज मुलाक़ात करनेवालोंमें अजीब-अजीब आदमी आये। धारवाड़से बसवप्पाके दो शिष्य आये — त्रिपुंड और त्रिशूलधारी, जिनमेंसे अेक तो म्युनिसिपल पाठशालाका मुख्य शिक्षक था। खानगी सन्देश दिया : "मेरे गुरु मुझे प्रत्यक्ष होते हैं, दर्शन देते हैं, सन्देश देते हैं। अुनका सन्देश आया है कि अुन्होंने मुझे जो रुद्राक्ष और अिष्टलिंगम् दिये हैं वह आपको दे दूँ, तो आपको अिस काममें सफलता मिलेगी।"

बापूने प्रत्यक्ष होनेके बारेमें थोड़ी बातें कीं। फिर कहा : "अिन्हें लेनेको मैं तैयार हूँ। मगर लेनेका अर्थ मुझे अुन्हें पहनना चाहिये, यही न?"

अुन्होंने कहा : "हाँ"

बापूने कहा : "यह मुझसे नहीं हो सकता। अेक समय था, जब मैं रुद्राक्षकी माला पहनता था, मगर अब नहीं पहनता। और अिनके पहननेके बारेमें जब तक मुझे औश्वरका आदेश न मिले, तब तक कैसे पहन सकता हूँ?"

वे समझ गये और बोले : "ठीक है, मैं अपने गुरुको बता दूँगा। मगर आपको अैसा सन्देश मिले तो?"

बापू : "तो ज़रूर पहनूँगा।"

कोटवाका ताल्लुकेदार जगन्नाथ — अेक भोलासा युवक — यह सलाह लेने आया था कि अस्पृश्यताके काममें ताल्लुकेदार क्या मदद दे सकते हैं। स्कूल, कुअें, मन्दिर वग़ैरा खोल देने और अिन लोगोंमें खूब घुलमिल जाने अित्यादिकी बापूने सलाह दी। अिस कामसे वह अितना खुश था कि बोला : "महात्माजी, अिस कामके कारण लोगोंकी जानमें जान आ गअी है। हमने अेक मंडल क़ायम किया है जिसमें कालाकांकर और राघवेन्द्र हैं और हम यही काम करनेवाले हैं। फिर मिलने आअूँगा। आजकल बाराबाँकी रहता हूँ। वहाँ सब मन्दिर खुल गये हैं।" युवक सुन्दर मालूम हुआ।

बादमें नरगिस बहन और शीरीन बहन आअीं। ये खूब काम कर रही हैं। हिंगणेमें दो अछूत लड़कियोंको रखवा आअीं। त्रावणकोरकी रानीके पास स्त्रियोंका अेक डेप्युटेशन ले जानेकी तजवीज़ कर रही हैं और हस्ताक्षर करवा रही हैं। अहिन्दू कितना काम कर सकते हैं, अिसके जवाबमें बापूने कहा : "अस्पृश्यता निवारणकी संस्थाओंको जितनी ज़रूरत हो। यह सूत्र तुम्हें पसन्द आयगा न?"

अिसके बाद प्रो॰ दांडेकर और कुछ दूसरे लोग पंढरपुरके मन्दिरके विषयमें बातें करने आये। पंढरपुरके मन्दिरका चित्र — सालमें दो पखवाड़े चौबीसों घंटे खुले दर्शन, फ़ी घंटा बारह सौ दर्शनार्थियोंकी भरमार, पासवाले, स्त्रियाँ, बिना बालोंवाली हिन्दू विधवायें, सिरघुटों और पुलिसवालोंका पहरा और मूर्तियों पर माथा टेकनेवालोंको बाहें पकड़ कर खींचनेकी पद्धति। अिसकी हिमायत सुनकर मुझे तो कंपकंपी आ गअी। फिर प्रश्न कैसे पेचीदा हो गया है, अिसका कारण बताया। अिस मन्दिरमें जाते हुअे चोखामेलाकी मूर्ति है, अुसे महार छूते भी नहीं और दूसरे किसीको अिस मूर्तिके पास जाने भी नहीं देते। जब तक ये सुधार नहीं होते, तब तक मन्दिरकी स्थिति कैसे सुधरे? वग़ैरा बातें कहीं। बादमें जाते-जाते कहने लगे कि "आपके अुपवाससे दंभ बहुत बढ़ेगा।"

अिस पर बापूने कहा : "किसमें दंभ बढ़ेगा? संभव है कुछ लोग दंभसे कुछ करें। मगर जिन हज़ारों और लाखों मनुष्योंका मुझपर पूरा विश्वास है

अुनका क्या होगा ? जिनकी मैंने चालीस वर्ष पहलेसे सेवा शुरू की, और दक्षिण अफ्रीकामें जिनको मैंने कुछ काम करके दिखाया, तामिल प्रान्तके वे गरीब लोग तो मुझे धोखा देंगे ही नहीं । वे लोग तो अिस थोड़ेसे कामको भी चमत्कार मानते होंगे । चमत्कार तो कुछ था ही नहीं । लेकिन शुद्ध कार्यको लोग अनेक गुना बढ़ा-चढ़ा कर देखते हैं । क्या ये लोग दंभ करेंगे ? आज ही अेक ज़मींदार युवक कह गया है कि बाराबाँकीमें सारे मन्दिर खुल गये हैं । क्या यह खबर झूठी होगी ? अंजनगाँवसे तार आया है कि अमुक मन्दिर खोलनेकी बाक़ायदा क्रिया हुअी और अेक बहनने मन्दिरको चालीस अेकड़ ज़मीन भेंटमें दी । अिसमें क्या दंभ हो सकता है ? "

जमनालालजीसे ज़्यादा मिलने देनेकी अिजाज़तके लिअे सरकारको पत्र लिखा ।

अप्पासाहब रत्नागिरीमें भंगीके कामके लिअे अल्पाहार कर रहे हैं । अिसके बारेमें जो पत्र लिखा था, अुसका डोअिलका अुद्धत जवाब आया । लगे हाथों बापूने सख्त जवाब लिखवाया और अुसमें यह बता दिया कि अगर अप्पाकी माँग नहीं मानी गअी, तो मैं भी अुनके साथ शामिल हो जाअूँगा, भंगीका काम माँगूँगा और शनिवारसे अुपवास करूँगा ।

आम तौर पर अैसे मामलोंमें बापू हमारी राय लेते हैं । आज बोले : " अिस मामलेमें तुम्हारी राय लेनेकी मुझे ज़रूरत नहीं है । यह बिलकुल स्पष्ट धर्म है । "

३०-११-'३२

सतीशबाबू, प्रेमलीला बहन, श्रीमती प्रधान और दोड्डामती आअीं । श्रीमती प्रधानको अछूतोंको घरमें रखनेके बारेमें और यह न हो सके तो नौकरके तौर पर रखनेके बारेमें और यह भी संभव न हो तो रात्रि पाठशाला चलाने और अछूतोंके मुहल्लोंमें जाने वगैराके काम करनेको कहा ।

लेडी ठाकरसीसे कहा : " आपको अिसमें पूरा हाथ बटाना चाहिये । "

वे बोलीं : " शक्तिके अनुसार हो सकता है । ढेड़को घरमें रखनेकी बात दो साल पहले कहते, तो मुझसे नहीं बनता । लेकिन आज तो मन अिस बातके लिअे तैयार है, यद्यपि अभी शक्ति नहीं आअी । "

बापू : " मगर शक्ति कब आयेगी ? काम करने लगो तभी शक्ति आती है । आपको अधिक सहन भी नहीं करना पड़ेगा । मेरी तो आपसे यह सूचना है कि अेक अछूत मेहमानको खिलाये बिना आप न खानेकी या अैसी ही कोअी प्रतिज्ञा ले लीजिये । "

सतीशबाबूके साथ फिर पहले दिनकी चर्चा शुरू की। विषय यह था कि मनुष्य चिन्तनसे कैसे सेवा कर सकता है। बापूने कहा: "चिन्तनका अर्थ निष्क्रियता नहीं है। 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' का यह अर्थ नहीं कि चित्त निष्क्रिय हो जाय। चित्त व्यर्थ प्रवृत्ति करना बन्द कर दे, यही योग है। अेक भी विचार अैसा नहीं आना चाहिये, जिसका अमल न हो सके। यानी शुद्धसे शुद्ध मनुष्य तो अधिकसे अधिक अमल करनेवाला होगा। जैसे जैसे मनुष्य ज्यादा पवित्र होगा, वैसे वैसे वह अधिक प्रवृत्तिमय होगा। अधिक-से-अधिक कर्मशील मनुष्य ज्यादासे ज्यादा संयमी होता है। अिसे तुम समाधिकी हालत भी कह सकते हो। फिर भी जान बूझकर समाधि प्राप्त करनेकी कोशिश नहीं हो सकती। समाधि तो अपने आप प्राप्त होती है, अर्थात् तुम अिसका विचार न किया करो; वह अपने आप आयेगी। अिसी तरह योगकी शारीरिक क्रियासे शरीरकी शुद्धि और शारीरिक ब्रह्मचर्यको भी मदद मिलती है, मगर प्रपत्ति प्राप्त नहीं होती। शारीरिक क्रियाओंसे मूल वस्तु नहीं मिलती। मूल वस्तु तो पूरी तरह प्रपत्ति — अपने आपको शून्य बना देना — है।

"मेरा ही अिस बातका अुदाहरण ले लो कि मनुष्य अपनी मौजूदगीसे क्या कर सकता है। अगर मैं लोगोंकी सभामें जाअूँ, यानी भीड़में भटकने लगूँ, तो मेरा कचूमर ही निकल जाय। मगर मैं अैसा नहीं करता। मैं तो बीचमें बैठकर लोगोंसे माँग करता हूँ और रुपया आने लगता है।

"मुझे आश्चर्य होता है कि जब तक मैं बैठा रहता हूँ तब तक रुपया आता है, और जहाँ अुठकर चलने लगा कि लोग रुपया देना बंद कर देते हैं। अिसमें कोअी चमत्कार नहीं, मगर यह अुत्कट अेकाग्रताका — किसी कामके बारेमें विचार करनेकी अुत्कटताका परिणाम है।

"अिसी तरह अुपवासका है। अुपवास यदि अीश्वर-प्रेरित होगा, तो वह लाखों आदमियोंके हृदय हिला देगा। अैसा नहीं होगा तो वह बेकार जायगा।

"मगर अिसके लिअे भी पूर्व तैयारी चाहिये। शुद्ध सेवाभावसे लम्बे समय तक काम किया हुआ हो, तभी यह शक्ति आती है। दक्षिण अफ्रीकामें छः-छः पौण्ड वसूल करनेके लिअे मैं चालीस-चालीस मील चला हूँ। कोअी आदमी तीन पौण्ड देने लगता तो हम नहीं लेते। कहीं बीचके स्थान पर सारी रात बैठे रहते। सुबह वह नाश्ता कराता और छः पौण्ड देता। अब्दुल्ला सेठके यहाँ जाता, तो वे मेरी तरफ ध्यान ही नहीं देते और अपने ग्राहकोंको निपटाते रहते। दुकान बन्द होनेका वक्त होता, तब तक मैं बैठा रहता। अब्दुल्ला सेठने कहा कि पच्चीस पौण्ड लिये बिना जानेवाला नहीं हूँ। अन्तमें वे गुमाश्तेसे कहते कि २५ पौण्डका चेक काट दो। मैंने जितनी लगनसे और अपार कठिना-

अियोंका सामना करके मज़दूरीका और भंगीका काम किया है, अुतना और किसीने नहीं किया होगा। अेक आदमीको अंग्रेज़ी पढ़ानेके लिअे मैं मीलों पैदल जाता था। लगनके साथ की हुअी अैसी मेहनतसे काम करनेकी शक्ति प्राप्त होती है।"

डोअिलका यह सन्देश आया कि अप्पाके विषयका आपका पत्र सरकारके पास भेज दिया है। छगनलाल जोशीको यहाँ लानेका हुक्म हो गया है और रंगूनवाली मंडलीको मिलनेकी अिज़ाजत मिल गअी है। कल सेकीके पत्रके बारेमें जो झगड़ा हो रहा था, अुसके विषयमें पत्र आया। अुसमें सरकार अपने वचनका पालन करेगी, अिस सम्बन्धमें शंका नहीं दीखती। फिर भी बापूके अस्पृश्यता सम्बन्धी जिस लेखके लिअे सदानंदको रु० २०,००० देने पड़े, अुस लेखका पार्लियामेण्टमें अुल्लेख करके सेंकी अुसे पढ़े बिना ही अुद्धततासे कहता है: "यह लेख बिलकुल विधिनिषेध रहित होना चाहिये, मगर आप भेज देंगे, तो मैं पढ़नेको तैयार हूँ।" और यह कहकर अुसका अुपहास किया कि विल्किन्सन और मॅटर्स वाले प्रतिनिधि-मंडलने यह सब नाटक किया है। सभाओं और जुलूसोंका नाटक किया होगा, मगर पुलिसके लाठी प्रहारका नाटक कैसे किया होगा!

१–१२–'३२

आज देवदास, मणिलाल, हरजीवन और शारदा आ पहुँचे। दोपहरको भोले, भोंसले और जाधव वगैरा पूना कॉलेजके पाँच विद्यार्थी मिलने आये। सब अस्पृश्य थे और अुनके बात करनेके ढंग और होशियारी वगैरासे अैसा लगा, जैसे वे अुदीयमान आंबेडकर हों। बापूसे खूब सवाल पूछे। विद्यार्थियोंके लिअे छात्रवृत्तियों और दूसरी सुविधाओंका क्या हुआ? अिसके जवाबमें कहा गया कि अिन सब माँगों पर अस्पृश्यता-निवारण मंडल विचार कर रहा है। तब फिर अस्पृश्योंके लिअे अलग छात्रालय नहीं खुल सकते? यह माँग की।

बापू कहने लगे: "अलग छात्रालय किसलिअे? अभी जो छात्रालय हैं, वे ही तुम्हारे लिअे खुल जायँ, अैसी व्यवस्था हो जाय तो क्या तुम्हें वह पसन्द नहीं? तुम्हारे लिअे अलग छात्रालय हों, यह तो तुम्हें अछूत ही रखने जैसी बात होगी।"

अिस पर अिन विद्यार्थियोंने कहा: "सवर्ण विद्यार्थी तो साठ-साठ रुपये तक खर्च करते हैं। यह खर्च हम कहाँसे कर सकते हैं? हमारा जीवनका मापदंड अिन लोगोंके बराबर नहीं है।"

बापू : "मगर तब तो तुम्हें किफ़ायतसे रहनेवाले लड़कोंको ढूँढ़कर अुनके साथ भोजनालय चलाना चाहिये।"

अुन्होंने कहा : "हमें स्कूलों, कॉलेजों और छात्रालयोंकी फ़ीस क्यों न माफ़ करा दें?"

बापू कहने लगे : "अिसलिअे कि मैं तुम्हें अपंग नहीं बनाना चाहता। मैं तो तुम्हें अेक छात्रालय दे दूँ और अुसे तुम अपनी मेहनतसे किफ़ायतके साथ चलाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम अमेरिकाके विद्यार्थियोंकी तरह स्वावलम्बी बनो। अपना काम करते रहो और कुछ ट्यूशन करके, कोअी न कोअी सेवा करके, खर्च निकालते रहो। तुम दान लो, और कोअी आदमी तुम्हें दयाधर्मसे आश्रयदाता बन कर दान दे, यह मैं नहीं चाहता। अिसमें तुम्हारा अधःपतन होगा।"

अिस पर अेक विचक्षण विद्यार्थी कहने लगा : "पढ़ाअीके साथ-साथ यह होना हमारे लिअे कठिन है। आपसे अितना और कह दूँ कि हम भिक्षा पर भी नहीं रहना चाहते। मगर अेक बात पूछूँ : आप हमें अस्पृश्यता-निवारण मंडलकी कार्यसमितिमें क्यों नहीं रखते? अैसा क्यों न करें कि आधे सवर्ण और आधे अछूत हों?"

बापू : "तुमने यह ठीक पूछा। आम्बेडकरने भी यही बात पूछी थी। मैंने अुन्हें समझाया था कि यह नहीं हो सकता। तुम्हें यह माँग नहीं करनी चाहिये। यह माँग तो तब हो जब तुम स्वतंत्र हो। यह मंडल तुम्हारे लिअे प्रायश्चित्त धर्मके भावसे स्थापित न हुआ हो, और किसी मामूली फंडकी तरहका फंड हो, तब तो मैं यह कहूँ कि अिसमें तुम्हारे ५० फ़ीसदी ही नहीं, बल्कि सौ फ़ीसदी आदमी हों। मगर ये लोग तो कर्ज़दार हैं। कर्ज़दारको समझना चाहिये कि अुसे अपना ऋण कैसे चुकाना है। अिन लोगोंको तुमसे यह हिदायत नहीं लेनी चाहिये कि यह कर्ज़ कैसे चुकाया जा सकता है। प्रायश्चित्त तुम्हें नहीं करना है, हमें करना है। हम अैसा काम करेंगे जो हमें लगातार प्रायश्चित्त मालूम हो।"

भोले (विद्यार्थियोंके डेप्युटेशनका नेता) : "ठीक, मगर यह क़र्ज़दारकी भावना तो आपमें है; हम नहीं मानते कि यह भावना और लोगोंमें भी है। दूसरे तो मेहरबानी ही दिखाते मालूम होते हैं, ग़रीबोंको दान ही देना चाहते हैं। और हमारी यह सूचना अिसीलिअे है कि हम यह हाल जानते हैं।"

बापू : "अिसीलिअे मैं कहता हूँ कि अैसा होने दो जिससे अिन लोगोंको अपने कर्ज़का खयाल आये। मुझे अुनमें यह खयाल पैदा करने दो। यह खयाल जाग्रत नहीं होगा, तब तक मैं जानता हूँ तुम परेशान होगे। मगर अिसके

लिअे मैं तुम्हारी भी परीक्षा लेना चाहता हूँ। मैं जब स्पृश्योंके साथ बात करता हूँ तब अुनसे कहता हूँ कि कितना ही मैला-कुचैला भंगी आये अुसे भी मंदिरमें जाने दिया जाय, अुसे भी अपने भोजनालयमें आने दिया जाय। मगर हरिजन भाअियोंसे कहता हूँ कि तुम स्वच्छ बनो, शराब छोड़ो और मुर्दार मांस छोड़ो। अिसका कारण यह है कि मैं हरिजनोंके साथ हरिजनकी हैसियतसे बातें करता हूँ। तुम्हें अपने दुःख जितने महसूस होते हैं अुससे कहीं अधिक मुझे होते हैं, क्योंकि मैंने ढेड़की स्थिति भुगती है। कुछ मामलोंमें अुनके स्वाभिमानका ह्रास होता है अैसा अुन्हें न भी लगता हो, लेकिन मुझे तो अुन बातोंमें भी अुबाल आ सकता है। अिसलिअे हरिजनके नाते मैं तुम्हें यह सलाह देता हूँ कि तुम अिन लोगोंको अपना कर्ज़ चुकाने दो। वह अदा न हो और तुम पर संकट आते ही रहें, तो तुम देखोगे कि मैं तो मरूँगा ही, लेकिन तुम भी मरना। और मर न सको तो मारना, मगर पामरकी तरह बैठे न रहना। अगर हिन्दू जनता समझे ही नहीं, तो तुम लोग कहाँ तक बरदाश्त करोगे? या तो तुम मर कर अुनके दिल पिघलाओगे या अेक-अेक सवर्णका पृथ्वी परसे सफ़ाया कर दोगे।"

वे विद्यार्थी: "मगर मारनेसे क्या लाभ होगा? मरनेसे ज्यादा लाभ नहीं होगा?"

बापू: "तुमने यह जो सवाल पूछा, वह मुझे पसन्द है। मरनेसे ज्यादा लाभ होता है यह बात नहीं, बल्कि मरनेसे ही लाभ होता है। मारनेमें तो मरना शामिल ही है। कहा है न कि तलवार धारण करनेवाला तलवारसे ही मरेगा? तुम तमाम सवर्ण हिन्दुओंका संहार करोगे, तो तुम्हारा भी अैसा ही अन्त होगा।"

अिसके बाद लड़कोंने गुरुवायुरके बारेमें सवाल पूछे। जबरदस्तीका प्रश्न निकला, तो अुसका तो बापूने हमेशाका अुत्तर दे दिया। मगर लड़के अिस तरह हारनेवाले नहीं थे। अुन्होंने कहा: "आपको चाहनेवालोंमें भी अैसे लोग मौजूद होंगे, जिनके लिअे अिस मामलेमें सिद्धान्तका सवाल नहीं होगा और होगा भी तो वह मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध होगा। अिसका क्या अुपाय है?"

बापू: "तुम्हारे कहनेका मतलब यह हो कि अिन लोगोंके अपने खुदके कोअी विचार ही नहीं, तो मैं कहूँगा कि अुन्हें तो मुझे जगाना ही चाहिये। अैसे झटके दिये बिना ये लोग जागनेवाले नहीं हैं। जो दुर्बल हैं अुनका धर्म ही क्या?"

लड़कोंसे बापू बहुत खुश हुअे।

गुरुवायुरके बारेमें लल्लूकाकाने शास्त्रीको पत्र लिखा होगा कि आप, सी० पी०, शिवस्वामी और मैं ज़ामोरिनसे और त्रावणकोरके महाराजासे मिलें। अिसका लल्लूभाअीको कैसा जवाब मिला वह देखने लायक़ है।

“सर सी० पी० कुछ सप्ताहसे त्रिवेन्द्रममें हैं। मुझे निश्चित मालूम नहीं या मुझे शक है कि वे आपके साथ होंगे या नहीं। मैं तो नहीं हो सकता। शिवस्वामी आयर भी साथ नहीं हो सकेंगे।

“भले ज़ामोरिन बहुत भला आदमी हो और पूरी तरह सुधारके पक्षमें हो, मगर कानून, रूढ़ि, शास्त्र और लोकमत (समाजके अेक छोटेसे वर्गका भी) विरुद्ध हों, तो वह मजबूर हो जायगा। अुसके साथ काफ़ी या बहुत बातें हो चुकी हैं। धमकी, खुशामद और दलील सब कुछ काममें लिया जा चुका है। अब दो चीज़ें बाकी रही हैं: अेक, लोगोंका हिंसक अुत्पात। मगर केलप्पन और गांधीजी दोनों ही अिस चीज़को नापसन्द करते है। दूसरी चीज़ है वहम। अुदाहरणार्थ ज़ामोरिनके परिवारमें कोअी भयंकर बीमारी आ जाय। मगर अैसा हो, यह हममेंसे कोअी भी नहीं चाहेगा। यह प्रसंग अैसा विषाद पैदा करता है कि दिमागमें अैसे विचित्र विचार आते है। मुझे तो कोअी रास्ता दिखाअी नहीं देता।

“गांधीजी कहते है कि अुनके अिस अुग्र निश्चयके पीछे अीश्वरका हाथ है। अिसलिअे अब दलीलोंके लिअे तो गुंजाअिश ही नहीं रह जाती। मगर मेरी बुद्धि मुझे कहती है कि गांधीजी भयंकर भूल कर बैठेंगे। राजाजी, जिनकी बुद्धि बहुत तीव्र और विचक्षण है, मानते हैं कि केलप्पन अिस चीज़को छोड़ दे, यही अेक रास्ता है। हम यह कामना करें कि आखिरी वक्त महात्माजीके मरनेका कारण बननेकी भयंकर ज़िम्मेदारी अुसे विचलित कर दे।”

२-१२-’३२

सवेरे बिड़लाजी और अुनके मित्र आ पहुँचे। अुन्होंने पिछले अुपवासके सम्बन्धकी सभी भीतरी बातें सही तौर पर बताअीं। अुन्हें रत्ती-रत्ती हकीकतका पता था। अस्पृश्यता-निवारण संघकी तरफ़से वाअिसरॉयसे मिलना चाहिये या नहीं, अिस बारेमें चर्चा की। बादमें बिड़लाजीने बापूसे पूछा कि क्या वे अपनी तरफसे वाअिसरॉयको यह कह सकते हैं कि गांधीजीको छोड़ दीजिये और अुन पर विश्वास रखिये?

बापूने कहा: “अीश्वरने मुझे हर मौक़ेसे निपट लेनेकी शक्ति दी है। मान लीजिये मुझे छोड़ दिया, तो मैं चुप रहनेवाला थोड़े ही हूँ? छोड़ा कि तुरन्त ही मैं तो सविनयभंगके बारेमें कोअी न कोअी बयान दूँगा। हाँ, यह बात सही है कि मैं दो काम साथ-साथ नहीं कर सकूँगा। मगर सरकारको अितना समझ ही लेना चाहिये कि बाहर निकलनेके बाद

ही मैं कह सकता हूँ कि क्या किया जा सकता है। यहाँ बैठे-बैठे पता नहीं लग सकता कि मुझे क्या करना है।"

स० — "सरकारसे आप यह नहीं कह सकते कि मुझ पर विश्वास रखो?"

बापू: "यह कहनेकी ज़रूरत ही न होनी चाहिये। अितना तो अुसे समझना ही चाहिये। मैं यदि सरकारका मित्र न होअूँ, तो 'मैं हूँ आपका विश्वासी मित्र' यह क्या शिष्टाचारके लिअे लिखता हूँ? सरकारको यह समझना ही चाहिये कि मैं अैसा मानता हूँ अिसीलिअे लिखता हूँ।"

बिड़लाने पूछा: "आपके सरकारके नामके पत्रोंमें — अस्पृश्यताके सिलसिलेमें मुलाकातोंकी सुविधाअें प्राप्त करनेके बारेमें — मैंने पढ़ा है: 'मुझे जीनेमें कोअी दिलचस्पी नहीं रह जायगी', क्या अिसका अर्थ यह है कि जेलमें पड़े रहना आपको असह्य हो गया है और अब बुढ़ापा आ गया है, अिसलिअे जितनी जिन्दगी रही है अुसमें जितना हो सके अुतना काम कर लिया जाय?"

बापू: "नहीं, मैं तो मानता हूँ कि जो आदमी जेलमें आता है, अुसका जेलमें आना और रहना ही सेवा है। लेकिन जब मैंने यह काम यहाँसे शुरू किया और अुसे दिशा प्रदान की, तो फिर अिसे पूरा किये बिना मुझे जीवनमें रस कैसे हो सकता है? और बुढ़ापेके लिअे तो मैं क्या करूँ। मुझे तो खयाल भी नहीं आता कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। जिस आदमीको अैसा लगता हो, वह क्या पाठशालाके अेक विद्यार्थीकी तरह अुर्दूका अध्ययन करेगा? तामिल, तेलगु और बंगलाका अध्ययन करनेके सपने देखेगा? हाँ, यह कह दूँ कि अगर मुझमें यह निर्णय करनेकी शक्ति हो कि किस तरह मरना चाहिये, तो मैं बीमारीसे या साँपके काटनेसे मरना नहीं चाहता। मुझमें अैसी शक्ति नहीं, यह तो स्पष्ट ही है।"

अुपवासके बारेमें पूछा: "बहुत बड़ी तादादमें लोग यह प्रतिज्ञा कर लें कि हम गुरुवायुरमें कभी नहीं जायेंगे, तब भी क्या आप अुपवास नहीं छोड़ेंगे?"

बापू: "अुपवास रहित प्रतिज्ञाका कोअी मूल्य नहीं रहता। अुपवासकी बात बन्द हुअी कि तुरन्त ही वे ढीले हो जायेंगे।"

सतीशबाबूके बारेमें बात करने पर बिड़ला कहने लगे: "सतीशबाबू बहुत बढ़िया आदमी हैं। मगर चक्रम हैं।"

बापू: "वह तो कुन्दन जैसा है। और कुन्दनके क्या कभी जेवर बने हैं? सोनेके गहने बनते हैं, क्योंकि सोनेमें थोड़ी कुधातु मिली हुअी होती है। अिस तरह काम देनेके लिअे थोड़ी कुधातुकी ज़रूरत पड़ती है, मगर सुधातु सोना तो अपने आप ही शोभा देता है।"

काठियावाड़के अस्पृश्यताके कामकी कठिनाअियोंके बारेमें रामजीभाअी और दूसरे लोगोंने करुण चित्र अुपस्थित किया। कीकाभाअी और दूधाभाअी वगैरा हरिजनोंने गुजरातके हरिजन कार्य सम्बन्धी कठिनाअियाँ बताअीं और गाँवोंकी करुण दशाका वर्णन किया।

अहमदाबादकी म्युनिसिपल पाठशालाओंमें अछूत बच्चोंके लिअे पानीकी व्यवस्था खराब थी। अन्तमें अुन लोगोंने अिस बारेमें फटकार कर कहा: "आपको यहाँ पानीके बारेमें भी भेदभाव रखना हो तो अुस बड़े भंगी, महात्मा गांधी, की जो तस्वीर हॉलमें रखी है अुसे हटा दीजिये, फिर हम चुप हो जायेंगे।"

अेक और हरिजनने अपनी जातिके अज्ञानकी बातें कहीं: "हम बच्चोंकी आँखें धोने जाते हैं तो वे भाग जाते हैं, और जब मैं अपनी आँख खोलकर अन्दर दवा डालकर बताता हूँ तब वे लोग पास आते हैं।"

३-१२-'३२

सुबह यह जानकर कि मैंने अुपवास और गीतापाठकी तैयारी की है, बापू कहने लगे: "आज अुपवास करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। मेरा मन तो अभी तक अुपवासी बना ही नहीं। अगर अुपवास करना ही पड़े, तो तुम कल अुपवास करना और गीतापाठ भी कल ही करना।"

सवेरे डॉक्टर मेहताने आकर सरकारका सन्देश सुनाया: "गांधीको अपना हरिजन-कार्य करना हो तो भले ही करे, मगर क़ैदी अप्पाके बारेमें गांधीका दखल सरकार बरदाश्त नहीं कर सकती।"

अिस पर बापूने जवाबमें तुरंत ही कड़ा पत्र लिखवाया।

सुबह बिड़ला, ठक्कर वगैरा आये। पत्र लिखने थे अिस कारण अुनसे मिलनेमें देर हो गअी। अुन्होंने यह खबर दी कि पूना करारके बारेमें पंडितजी सन्तुष्ट नहीं हैं। बापू कहने लगे: "और भी बहुतसे लोग असंतुष्ट हैं; और वे असन्तुष्ट हैं, अिसलिअे मैं खुश हूँ। मगर अिस बारेमें मैं चर्चा करूँ, तो सारे दिन चर्चा करनी पड़े।"

बिड़ला कहने लगे: "अिस समझौतेसे मुसल्मानोंको बड़ी चोट लगी है। अिसका सबूत मुझे जहाँ तहाँ मिलता रहता है। अिटलीसे स्कार्पा आया। अुसने कहा कि . . . की योजना तो यह थी कि हरअेक मुसलमान चार-चार अछूत लड़कियोंसे शादी कर ले, तो छः करोड़ अस्पृश्य हिन्दू नहीं रहेंगे। ये तो सब जगह यही कहते हैं कि ये लोग हिन्दू हैं ही नहीं।"

बापू: "हम अिसी लायक़ हैं, अिस बारेमें मुझे शक नहीं। हम जैसा कर रहे हैं, वैसा भर रहे हैं।"

आम्बेडकरके बारेमें बातें करते हुअे कहने लगे: "अिसमें त्यागशक्ति है, कुरबानी करनेकी शक्ति है। यह दावानल तो सुलगेगा ही। हम हिन्दू यदि सच्चे होंगे, तो यरवदा समझौतेकी तो स्वर्णभस्म बना सकेंगे। नहीं तो चार करोड़ अस्पृश्य सारे हिन्दुस्तानका भक्षण कर जायँगे।"

"अस्पृश्यता-निवारण संघमें अस्पृश्योंको लेनेकी आम्बेडकरकी बात मैंने मंजूर की थी, मगर अब मुझे लगता है कि यह ठीक नहीं। प्रायश्चित्त हमें करना है, अिन लोगोंको नहीं। ये लोग सलाहकार मंडल भले ही बनायें और सूचनाअें दें। मगर हम तो अेकको भी न लें।"

बिड़ला बोले: "मैं तो कारकुन वर्गमें लेनेकी बात कह रहा था।"

बापू बोले: "यह तो भले ही करो। लेकिन अिसमें सवर्ण लोग त्याग करके आयें या अवैतनिक रूपमें काम करें, तब अस्पृश्योंके साथ खास रियायत की जाय। यानी सवर्णोंको बाहर सौ मिलते हों, तो यहां पचास लेनेको कहें, जब कि अस्पृश्योंको बाहर पचास मिलते हों, तो यहाँ पचहत्तर दें।"

कानिटकरका अेक पत्र था, जिसमें अुसने दलील दी थी कि "शास्त्रियोंने शास्त्राज्ञाका खूब भंग किया है। फिर सिर्फ अिसी अेक बात पर क्यों डटे हुअे हैं?" बापूने अुसे लिखा:

"आप लिखते हैं कि हरिजनोंको मन्दिरोंमें अिसलिअे जाने देना चाहिये कि शास्त्रोंका भंग तो सभीने किया है। मैं अिस पद्धतिको अनैतिक मानता हूँ। निन्नानवे मामलोंमें शास्त्रोंका भंग हुआ हो, तो अिससे सौवें मामलेमें भी भंग नहीं किया जा सकता। यह सुधार नहीं हुआ, बल्कि बिगाड़ हुआ। मेरा मुद्दा तो यह है कि हरिजनोंको मन्दिरोंमें जानेसे रोकना अन्याय है और धर्म-विरुद्ध है। धर्ममें जो सड़ाँध घुस गअी है, अुसे दूर करनेका यह धार्मिक आन्दोलन है।"

व्यवहारसे धर्मको अलग किया ही नहीं जा सकता, या अव्यवहार्य धर्म जैसी कोअी चीज़ ही नहीं है, यह बात मणिको लिखे हुअे पत्रमें बताअी:

"हमने धर्मके बारेमें जो कुछ सीखा है, अुसकी कसौटी तो अैसे ही समय होती है। पढ़ा और सोचा हुआ किसी कामका न रहे, तो जान लेना चाहिये कि हम कुछ भी नहीं सीखे। वकील-डॉक्टर खूब पढ़ें और पांडित्य बघारें, मगर अेक भी मामला हाथमें न ले सकें, तो वे कहने भरके ही वकील-डॉक्टर हैं। अिसी तरह यदि कोअी बड़े धर्मधुरंधर हों, मगर अुनका धर्म सिर्फ़ पुस्तकोंमें और दिमागमें ही चक्कर काटता रहे, तो वे कहनेके ही धर्मपंडित हैं।"

. . . ने अस्पृश्यताका बचाव 'येऽपि स्युः पापयोनयः', 'शुचीनां श्रीमतां गेहे' और 'यं यं वापि स्मरन् भावं' परसे किया। महा जड़ आदमी है। खुद कितना बड़ा आदमी है, यह बतानेके लिअे वह 'सूर्य संहिता' में से अपने

सम्बन्धका फलादेश पढ़नेके लिअे ले आया था और सारा पढ़कर सुनानेकी अुसकी अिच्छा थी ।

'फ्री प्रेस' के प्रतिनिधिके साथ :

१. सवर्ण हिन्दुओंके फ़र्ज़के खयालसे सोचें, तो गुरुवायुरका प्रश्न छोटा-मोटा नहीं है । हरिजनोंका अुद्धार तो बिलकुल ग़लत प्रयोग है । मेरी रायमें अस्पृश्योंके प्रति सवर्ण हिन्दुओंका पहला कर्तव्य यह है कि औरोंकी तरह ही हरिजनोंके लिअे भी मन्दिर खोल दिये जायँ ।

२. मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नका बोझा मैं अस्पृश्यता-निवारण संघ पर नहीं डालता । गुरुवायुरका प्रश्न लोगोंके सामने अिस संघके जन्मके पहलेसे ही था । अलबत्ता, संघको अिसके लिअे भी जितना हो सके अुतना तो करना ही चाहिये । मगर निश्चित समयके भीतर मन्दिर न खुले, तो संघ और किसी संस्थासे अधिक अुलाहनेका पात्र नहीं माना जायगा ।

३. अगर यह साबित हो जाय कि गुरुवायुर खानगी मन्दिर है, तो अुपवास नहीं हो सकता ।

४. अगर सुधारक सच्चे हों और विनम्र हों, तो वे सनातनियोंका हृदय-परिवर्तन कर सकते हैं । अुन्हें याद रखना चाहिये कि सुधारक होनेसे पहले वे और सनातनी अेक ही गाड़ीमें थे ।

५. सुधारक लोकमत बदलनेके लिअे पच रहे हैं । और अेक सुधारककी हैसियतसे मैं मानता हूँ कि लोकमत अिस सुधारके पक्षमें काफ़ी बदला है । मैं यह ज़रा भी नहीं मानता कि अधिकांश हिन्दू धर्माचार्योंके असरमें हैं । ये शंकराचार्य और दूसरे आचार्योंकी अुतनी ही बात सुनते हैं, जितनी अुनके अनुकूल पड़ती है । मान लीजिये शंकराचार्य अैसा फ़तवा दे दें कि कोअी शराब न पीये, तो क्या आप मानते हैं कि सभी अुस फ़तवे पर अमल करेंगे ? धर्माचार्य खुद संयमका पालन करें, तभी लोगोंसे करा सकते हैं ।

६. अुपवास शुरू करनेसे पहले मेरा शरीर पूरी तरह ठीक हो जाय, अिसका मैं अिन्तज़ार नहीं कर सकता । मैं मानता हूँ कि अुपवास अन्तर्यामीकी आज्ञाके अनुसार होगा । जब मेरा शरीर दुर्बल होता है, तब तो मैं अुपवास अच्छी तरह सहन कर सकता हूँ ।

७. करोड़ों लोगोंको — अगर वे मुझे चाहते होंगे तो – मेरे अुपवाससे दुःख होगा । वे अपनी आवाज़ अितने जोरसे बुलन्द करेंगे कि वह आवाज अचूक हो जायगी । मेरे और अस्पृश्यताके बीच संग्राम है । मुझे जिलाना हो, तो अस्पृश्यताको मरना होगा । अस्पृश्यताको जिलाना हो, तो मुझे मरना होगा ।

अेक आदमीके साथ बातचीतमें प्रगट किये हुअे अुद्गार :

"जैसे सूर्यके प्रकाशका प्रतिबिम्ब चन्द्रमा पर पड़ता है, वैसे ही हरिजनों पर हमारी पवित्रताका प्रतिबिम्ब पड़ेगा। आज तो अुन पर हमारी अपवित्रता और गंदगीका ही प्रतिबिम्ब पड़ रहा है।"

४-१२-'३२

आज अस्पृश्यता-निवारण संघकी बैठक जेलमें होनेवाली थी। अधिकारियोंने पच्चीस आदमियोंको मिलनेकी अिजाज़त कल देनेके बजाय आज देनेकी मूर्खता की। पहले दिन दे दी होती, तो अुपवासकी गुप्त बातें गुप्त ही रहतीं और किसीके सामने सफ़ाअी देनेकी ज़रूरत ही न रहती। मगर आज अुपवासका दूसरा दिन था, अिसलिअे शरीरकी अशक्ति अितनी ज्यादा थी कि बापू चार बजेकी प्रार्थनाके बाद तुरंत बिस्तरमें सो गये, और सुबह आठ बजे तक बिछौनेमें ही थे। तेल मलवाकर और अेनिमा लेकर नहानेके बाद फिर बिस्तरपर चले गये थे। वज़न तो कल ही सो हो गया था — यानी चार दिनमें छः पौण्डकी कमी हो गअी थी और अशक्ति बेहद मालूम होती थी। नहानेके लिअे भी स्ट्रेचर पर ले जाना पड़ा था और कमेटीके सामने भी स्ट्रेचर पर ही जाना था! कमेटीकी बैठक साढ़े ग्यारह बजे थी। सब लोग कभीसे दरवाजेपर आकर अिंतजारमें बैठे थे। अितनेमें आअी. जी. पी. आये। सबने अखबारोंमे तो देख ही लिया था। कल शामको 'मराठा' में चार लकीरें आअी थीं, जिनमें बताया था कि अप्पा पटवर्धनकी खातिर गांधीजी अुपवास कर रहे हैं। 'फ्री प्रेस' वाला यह कतरन लेकर मेजर महेताके पास गया था, अुसने अुससे कहा था: "मैं नहीं जानता; आपको अिनकार करना हो तो कीजिये।" आअी. जी. पी. लंगड़ाते-लंगड़ाते आये तो बापू कहने लगे: "तब आपसे तो मैं अच्छा हूँ!"

वह हँसते-हँसते कहने लगा: "मगर आप यह क्या कर बैठे?"

बापू बोले: "आपने तो राअीका पर्वत बना दिया।"

तब डोअिल कहने लगा: "मैं वह राअी ढूँढने आया हूँ। देखूँ, कहाँ है?"

सारे सवालकी चर्चा हुअी। बापूने कहा: "मेरा हेतु तो अितना ही है कि अप्पा जैसे धर्म-बुद्धिवाले मनुष्योंको यह अिजाज़त मिल जाय — आप अिस बड़े सवालका निर्णय करें, यह मैं नहीं चाहता।"

फिर कर्नलने अपनी मुश्किलें समझानेका प्रयत्न किया। बापूने ये सब मुश्किलें स्वीकार करने पर भी कहा: "फिर भी जो आदमी स्वेच्छासे अैसा काम करना चाहे, अुसे तो आपको अिजाज़त देना ही चाहिये, बजाय अिसके कि ज़बरदस्ती बेगार कराअी जाय।"

अिस पर वह कहने लगा : "आपके आदमी आज हैं और कल नहीं, हमें तो आखिर अिन अपराधी क़ैदियोंसे ही काम लेना है न ? अिसलिअे आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप बड़ा सवाल न अुठायें, फ़िलहाल अप्पा और अुसके मित्रोंको भंगी-काम करनेकी छूट मिल जाय, अिसीमें सन्तोष मान लीजिये। मुझे लगता है कि अितनी बात मैं सरकारसे करा भी सकता हूँ। मैं सरकारके पास जाता हूँ और अधिक-से-अधिक बुधवारकी सुबह तक आ पहुँचूँगा। और आपको जवाब पसन्द न आये, तो आप फिर अुपवास करें। तब तकके लिअे सुलह रही।"

बापूने मान लिया और अुससे कहा : "अगर आप असफल हुअे तो मैं आपको असफल बैरिस्टर मानूँगा और आपको भी मेरे साथ अुपवास करना पड़ेगा !"

वह बोला : "नहीं भाअी, यह हमारा काम नहीं।"

बापूने अुपवासके बारेमें हर किसीसे कहनेकी अिजाज़त माँगी। वह बोला : "ज़रूर, सारे देशमें तो खबर पहुँच गअी है। अब बाकी क्या रहा ?"

अिसके बाद स्ट्रेचर पर 'आंबा भुवन' में आये और अस्पृश्यता-निवारण संघके सदस्योंको सारे मामलेका सार सुनाया और प्रार्थनाके विशुद्ध रूपका रहस्य समझाया। मैंने जो नोट लिये थे, वे सारे अे. पी. आअी. ने देश भरमें तारसे फैला दिये।

वल्लभभाअी शामको कहने लगे : "कभी-कभी अिन लोगोंकी मूर्खता समझमें नहीं आती। दो दिन पहले अितना ही चुपचाप कर देते तो कुछ न होता। अब फिर यह दुनियाभरको अुपवासका संदेश मिला और अपनी कलअी खुलवाअी !"

सबके चले जाने बाद खुद बापूने डोअिलको सुबहकी बातचीतका सार लिख भेजा और अप्पाको अेक पत्र लिखा। शामको डोअिलका पत्र आया कि यह सार तो बढ़िया है, मगर अेक बात आपने छोड़ दी है। अुसके बारेमें थोड़ा स्पष्टीकरण कर दें तो अच्छा है — वह यह कि आप अभी अपराधी क़ैदियोंमें नीचे कहलानेवाले वर्णके क़ैदियोंका सवाल नहीं अुठायेंगे। अुसे 'हाँ' में जवाब देते हुअे बापूने अपनी बात फिर सामने रखी : "चूँकि यह सवाल अभी नहीं अुठाया जा सकता, अिसीलिअे अैच्छिक कार्यको प्रोत्साहन देना चाहिये।"

वल्लभभाअी कहने लगे : "जवाब देनेमें तो आपकी कोअी भी बराबरी नहीं कर सकता। अब बेचारे केलप्पनकी बातें दुनियाके सामने होतीं अुससे पहले अप्पाकी बातें होने लगेंगी !"

मैंने कहा : "केलप्पनको तार दे दें कि 'अप्पाने तुम्हें पीछे पटक दिया है'।"

नीला नागिनीका सुन्दर पत्र आया। बापूने सत्रहवें अध्यायका अुल्लेख किया था, अुसे वह पी गअी दीखती है। तेअीस सालकी अुम्रमें अितना संस्कार असाधारण लगता है। अिसने मिल्सका अेक वाक्य अपने पत्रमें अुद्धृत किया है, वह नोट करके रखने लायक़ है।

५-१२-'३२

आज अस्पृश्यताकी व्याख्या पर बहुत अूहापोह हुआ। कुंजरूने कहा: "हमारी अिस व्याख्याका ठिकाना नहीं, अिसलिअे अंग्रेज़ हमारी निन्दा किया करते हैं। असली अस्पृश्यता मद्रास, बम्बअी और मध्यप्रान्तमें ही है, अुसके बजाय सारे देशमें कही जाती है और चार करोड़के बजाय छः करोड़की संख्या बताअी जाती है।"

बापू और दूसरोंके बीचका फ़र्क़ अिस चर्चामें अच्छी तरह दिखाअी दे रहा था। बापूको अछूतोंके प्रति किये हुअे पापका घाव हर क्षण दुःख दे रहा था, जब कि और लोग न्यायकी दृष्टिसे ही बातें कर रहे थे। प्रायश्चित्तकी भावना शायद ही किसीके हृदयमें हो। ठक्कर बापाने मधुसूदनदासके बारेमें मज़ेदार पत्र लिख भेजा।

डोअिल आ गया और सरकारका फ़ैसला ले आया। अप्पाका सवाल कोअी अकेलेका ही सवाल नहीं है, मगर जेलके नियमोंमें सुधार करनेका सवाल होनेके कारण वह अखिल भारतीय सवाल बन जाता है। अिसलिअे भारत सरकारको अुस पर विचार करना पड़ेगा। सरकार मंज़ूर करती है कि अप्पाका सवाल विचार करने लायक़ है, मगर अितने महत्त्वका सवाल पाँच मिनिटमें तय नहीं हो सकता, अिसलिअे अिस सुलहकी मियाद बढ़ा दी जाय। आज अप्पाको यह छूट दे दी जाय, तो दूसरोंको भी माँगने पर देनी ही चाहिये, और अैसा करनेके साथ ही यह सवाल विशाल बन जाता है। अिसलिअे सरकारका सुझाव है कि आप अप्पाको खबर भेजें कि वे अपना अल्पाशन छोड़ दें और अिस सवालका निपटारा होने तक मुलतवी रखें। अगर अनुकूल निर्णय न हो, तो वे फिर अल्पाशन शुरू कर दें और बापू अनशन शुरू कर दें! बापूको यह फ़ैसला ठीक लगा। अिसलिअे अप्पाको तुरंत तार दिया कि तुम्हारे बारेमें जो हालात मालूम हुअे हैं, अुन्हें देखते हुअे यह फ़ैसला ठीक लगता है, अिसलिअे अब तुम्हें पूरा आहार लेना शुरू कर देना चाहिये।

६-१२-'३२

बादमें बात करने पर बापू कहने लगे: "वह अैसी हिदायत लेकर आया होगा कि अगर मैं खींचूँ तो बात छोड़ दी जाय। मगर हम खींचें, यह ठीक नहीं। अिन्हें यह भी मालूम होना चाहिये कि मौक़ा पड़ने पर हम झुक सकते हैं।"

आजके पत्रोंमें दो-तीन अुल्लेखनीय थे। रामदास पर तो बापूका प्रेम बरसता ही रहता है। "रामगीता समझमें आती है? अुसका रहस्य यह है: भक्ति और अुसका फल। शुद्ध भक्तिसे अनासक्ति और ज्ञान पैदा होते ही हैं। न हों तो वह बकवास है, भक्ति नहीं। ज्ञानका अर्थ है सारासारका विवेक। जिस अक्षरज्ञानके परिणामस्वरूप यह विवेकशक्ति न आये वह ज्ञान नहीं, पठित मूर्खता है। तू देखता है कि अिस तरह समझनेसे रामगीताके गले अुतर जानेके बाद चिन्ता और अधीरता चली जाती है।

"यह पत्र सुबहकी प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूँ। लिखना था अुपवासके विषयमें। शुरू हो गया रामगीताके विवेचनसे। अुपवास तो बहुत पुराना हो गया। डेढ़ ही दिनका था, अिसलिअे कुछ मालूम नहीं होता। कमज़ोरी तुरंत आअी और तुरंत ही चली भी गअी। अुपवासके दिन और रविवारको भी काम खूब किया था। खुराकमें दूध अच्छी तरह शुरू हो गया है। अिसलिअे मेरे अुपवासोंकी फ़िक्र करनी ही न चाहिये। अितना समझ लेना चाहिये कि अुपवास मैं नहीं करता। वे भगवानकी प्रेरणासे होते हैं, अिसलिअे वही करता है, यह कह सकते हैं। अुसका शोक न करना चाहिये, परन्तु कुछ हो जाय तो हर्ष होना चाहिये कि मैं अितना धर्मपालन करता हूँ। अिसीके साथ यह भी याद रखना चाहिये कि मेरी होड़में कोअी अुपवास न करे। मुझसे सम्बन्ध रखनेवाले तो मुझे पूछ कर ही करें, तो ठीक होगा। अैसे अवसरोंकी कल्पना की जा सकती है, जब मुझसे पूछनेका समय ही न रहे, या अन्तःप्रेरणा स्पष्ट हो। मुमुक्षु जीवोंकी परम्परा यह है कि जब तक अपना माना हुआ अधिक अनुभवी अपने पास हो, तब तक अुससे पूछ कर नया क़दम अुठाया जाय। अन्तर्नाद सभीको सुनाअी नहीं देता। अन्तर्नादका आभास मात्र ही हो सकता है और सच पूछा जाय तो 'मैं' का ही नाद होता है। 'मैं' का अर्थ है शैतान, रावण और दैत्य। हमारे भीतर राम बोल रहा है या रावण, अिसका पता हमेशा नहीं लग सकता। रावण अकसर साधुके भेसमें ही आता है और अुस समय राम जैसा लगता है। अिसलिअे जो अधिक अनुभवी हो अुससे पूछा जाय। यह तो ज़रासा लिखते-लिखते बहुत लिखा गया। सबको पढ़वाना।"

शान्तिनिकेतनमें पढ़नेवाले अेक गुजराती विद्यार्थीने पूछा: "क्या गुरुवायुरका यह अुपवास मुंडचिरापन नहीं कहा जा सकता? मान लीजिये सनातनी बहुत थोड़े हों। तो क्या अुन्हें मन्दिरोंमें अपने ढंगसे पूजा करनेका हक़ नहीं है? मेरे दादा पुराने विचारके हैं और अस्पृश्यता पालना अुन्हें धर्म प्रतीत होता है, तो क्या वे मुझे घरसे निकाल सकते हैं? मैं प्रायश्चित्त न करूँ, तो मेरी स्त्री मेरे साथ रहनेसे अिनकार करती है।"

अुसे लिखा :

"मेरा अुपवास जान या अनजानमें भी मुंडचिरापन न मान लिया जाय, अिसी दृष्टिसे तो मन्दिरके आसपास रहनेवालोंके मत लिये जा रहे हैं। अगर बहुमत सुधारके पक्षमें हो, तो सुधार होना ही चाहिये। यह धर्म है। अल्पमत वालोंके साथ अिसमें कहीं भी अन्याय नहीं होता। वे चाहें तो अुनके लिअे अलग समय निकाला जा सकता है या वे अपना मंदिर अलग बना लें। चार भाअी शामिल रहते हों और अुनमेंसे तीन भाअी यदि अपना धर्म बदलकर जायदादके मालिक बन जायँ व चौथेको अुसका हिस्सा दे दें, तो चौथेके साथ न्याय ही हुआ माना जायगा। यहाँ अल्पमत अधिकसे अधिक कुछ माँग सकता है, तो यही कि अुनके लिअे नया मन्दिर बने अुतना रुपया अुन्हें मिल जाय। लेकिन अगर अकेले अुन्हींको अलग पूजा करनेका समय दे दिया जाय, तो रुपया माँगनेका भी अुनका हक़ नहीं रह जाता। यह विचारधारा तुम्हारे मामलेमें लागू करने पर अभिप्राय यह होता है: पितामहको अपना धर्मपालन करनेकी छूट होनी चाहिये और तुम्हें अपना धर्म पालन करनेकी; और अिसी कारण तुम्हें वे घरसे निकाल दें, तो तुम्हें यह बहिष्कार चुपचाप सह लेना चाहिये। शुद्धि किये बिना पत्नी तुम्हारे साथ रहनेसे अिनकार करे, तो अुसकी तरफ़का बहिष्कार भी तुम्हें सहन कर लेना चाहिये। तुम्हें अुसके साथ जबरन न रहना चाहिये। पतिको पत्नी पर बलात्कार करनेका कोअी हक़ नहीं है। मगर यह संभव है कि पत्नी अैसा कहे : "तुम शुद्धि न करो तो मैं और क्या कर सकती हूँ? मैं तो तुम्हारे साथ रहूँगी।" अैसा कहे तो अिसका अर्थ यह हुआ कि अस्पृश्यताके बनिस्बत तुम्हारा साथ अुसे अधिक प्रिय है, यानी अस्पृश्यताके मुक़ाबलेमें अुसने तुम्हारे साथको धर्म माना है। यह चुनाव हमें लगभग रोज़ असंख्य बातोंमें करना पड़ता है। मगर चूँकि यह स्वाभाविक रूपमें होता है, अिसलिअे हमें अुसका ज्ञान नहीं होता। अितनेमें तुम्हारे प्रश्नोंका अुत्तर आ जाता है। समझमें न आया हो तो फिर पूछ लेना। दूसरे सवाल पूछने हों, तो ज़रूर पूछना।"

'फ्री प्रेस ऑफ अिंडिया':

बापू — अुपवास अेक खास तरहका अुपाय है। जब तक भीतरसे साफ़ तौर पर आवाज़ न आये, तब तक किसीको अुपवास न करना चाहिये। अिसलिअे अनुकरण करके तो अुपवास हो ही नहीं सकता। मैं यह कहनेकी धृष्टता तो नहीं करूँगा कि जिस किसीको अस्पृश्यताके सिलसिलेमें अुपवास करना हो, अुसे मुझसे पूछना चाहिये और मेरी सम्मति लेनी चाहिये। मगर सामान्य तौर पर मैं यह ज़रूर कहूँगा कि गुरुवायुरके अिस मुद्दे पर केलप्पनके और मेरे सिवाय और कोअी अुपवास न करे। मगर हरअेक मनुष्यको जिस तरह सूझे

अुस तरह अिस मामलेमें मदद करनी चाहिये । सेवा करनेके अनेक और तरह-तरहके तरीके हैं । मैं अपनी तमाम शक्ति हरिजनोंकी सेवामें केन्द्रित कर रहा हूँ ।

स० — आप जेलमें तो यह काम कर रहे हैं, मगर बाहर निकलनेके बाद यही काम क्यों न जारी रखें ?

बापू — मैंने अैसा कहा ही नहीं कि बाहर भी मैं अपनी शक्ति हरिजन सेवामें केंद्रित नहीं करूँगा । मगर दूसरा कोअी काम न करनेके लिअे मैं पहलेसे नहीं बँधता । मेरा जीवन केवल हरिजनोंके लिअे है, यह कहना अर्ध सत्य है । पूरा सत्य तो यह है कि मेरा जीवन अीश्वरार्पित है । हरिजनोंके लिअे भी है । यों तो सारी सृष्टिके लिअे है । अीश्वर ही मुझे जिलायेगा या अुठा लेगा ।

स० — क्या आप ज़ामोरिनसे मिलनेवाले हैं ?

बापू — वे यहाँ आयें, अिसके सिवाय तो मैं मिल ही कैसे सकता हूँ ?

रामचन्द्ररावके साथ :

स० — अस्पृश्यता माननेवालोंको क्या सज़ा हो सकती है ?

बापू — कोअी हरिजनको कुअेंसे पानी भरनेसे रोकेगा, तो स्वराजमें वह अपराधी माना जायगा । अलबत्ता, यह हो तभी सकेगा जब अधिकांश हिन्दू अिस तरहका क़ानून बननेके पक्षमें होंगे ।

स० — बहिष्कार भी जुर्म समझा जायगा ?

बापू — हालात मालूम हुअे बिना मैं यकायक जवाब नहीं दे सकता ।

अेक सवालके जवाबमें : मनुस्मृतिके कुछ भाग नीतिसे भरे हैं, जब कि कुछ साफ़ तौर पर अनीतिवाले भी हैं ।

पश्चात्तापका रहस्य . . . के पत्रमें बताया :

“ दोषी मनुष्य अपने साथ बेअिन्साफ़ी होनेकी बात लिखे, यह पश्चात्तापका लक्षण नहीं है । आजतक दुनियामें जिसने पश्चात्ताप किया है, अुसने अपनेको मिली हुअी सज़ाको सज़ा माना ही नहीं; मगर यह माना है कि वह कम हुअी है । तुमने तो अपनी तुलना . . . के साथ की है और अुसके मुक़ाबलेमें तुम अपनेको कम अपराधी समझते मालूम होते हो । . . . के अपराधकी तो मुझे कुछ खबर ही नहीं । तुम्हें तो अितना भी भान नहीं कि तुम्हारे चरित्र पर पहलेसे ही दाग था और आश्रममें भी कितनी ही बार भूलें हुअी हैं । भूलोंकी मुझे चिन्ता नहीं, हम सब भूलें करते हैं । मुझे दुःख तो यह है कि भूलोंका तुम्हें शुद्ध पश्चात्ताप नहीं है । और जब तक यह नहीं होता, तब तक तुम्हारा आश्रममें वापस जानेका विचार करना भी मुझे तो अनुचित लगता है । मुझे भय है कि शुद्ध पश्चात्ताप तुम्हारे स्वभावके विरुद्ध ही

मालूम होता है। फिर भी तुम नारणदास पर अच्छा असर डाल सको और वह तुम्हें स्वीकार कर ले, तो मैं बीचमें नहीं आअूँगा।

दुःखी बापूके आशीर्वाद"

राजाजीने अपने राजनैतिक ओहदेका चार्ज राजेन्द्रबाबूको सौंप दिया, अिस बारेमें 'टाअिम्स ऑफ़ अिंडिया' का मेकूरे पूछने आया।

बापू — मैंने सुना था कि राजाजी अपना ओहदा छोड़नेवाले है। मैंने मनमें अिसे नोट कर लिया था। यह समाचार तो मुझे कल ही पढ़कर सुनाया गया।

स० — क्या अिस परसे यह नहीं माना जायगा कि अस्पृश्यताके आन्दोलनके कारण बहुतसे लोग कांग्रेसकी लड़ाअीसे हट जायँगे?

बापू — सीधे तौर पर या और किसी तरह मैं लड़ाअी पर असर नहीं डाल सकता, अथवा मेरे निर्णय पर अुसका कोअी असर नहीं होता। राजनैतिक लड़ाअीका मार्गदर्शन न करनेके लिअे मैं नीतिसे बँधा हुआ हूँ। मेरा स्वभाव ही अैसा बन गया है।

स० — मेरा अखबार तो आपकी स्थिति अिस तरह बयान करता है कि आपने विचार बदल लिये हैं।

बापू — मैं तो अभीकी घटना पर ही कुछ कह सकता हूँ। मेरे सामने दूसरी परिस्थिति आये तब मैं क्या करूँगा, यह नहीं कह सकता। लम्बे समयके लिअे निश्चित योजनापूर्वक कार्यक्रम देना मेरे लिअे संभव नहीं। अैसा करने लगूँ तो मेरा कचूमर बन जायगा। मैं जो टिका हुआ हूँ, अिसका कारण ही यह है कि कल मुझे क्या करना है, अिसका विचार मैं आज नहीं करता। अिस बारेमें कोअी गड़बड़ न हो, अिसीलिअे तो मैंने वह वक्तव्य निकाला है। जो युक्ति-प्रयुक्तिसे मुझे बचाना चाहते हों, वे जान लें कि अैसा करनेसे तो वे मेरी ज़िन्दगीको ज्यादा खतरेमें डाल देंगे।

पूनाके सनातन धर्मियोंकी प्रश्नावलिका जवाब :

"मन्दिर-प्रवेशका प्रश्न केवल धार्मिक है। मैंने अुसे व्यावहारिक बुद्धिका प्रश्न कभी माना ही नहीं। मेरे लिअे तो धर्म ही व्यवहार है।

"मन्दिरमें हर हिन्दूको जानेका अधिकार है। शौचादि नियम सबको लागू होते हैं। अेक ही तरहके हिन्दुओंके प्रवेश करनेका रिवाज बहुत वर्षोंसे चला आ रहा है। मगर अमुक हिन्दू जा सकते हैं और दूसरे हिन्दू नहीं जा सकते, यह धर्मका प्रश्न नहीं। हिन्दू जनताके लिअे बने हुअे मन्दिरोंके बारेमें तो जानेवालोंसे ही पूछना चाहिये। धर्मशास्त्रियोंको दखल नहीं देना चाहिये। थोड़े लोग रह जायँ तो अुन्हें दूसरों पर बलात्कार नहीं करना चाहिये। अुन्हें अपने

लिअे दूसरा मन्दिर बनाना चाहिये। मैंने अपने धर्मका जहाँ तक अनुभव और अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि जो लोग दूसरे मन्दिरोंमें जा ही नहीं सकते, वे मर्यादावाले बन जायँ और वह मन्दिर अुनके लिअे कुछ घण्टे खुला रहे। धार्मिक वस्तु वह है जिससे आध्यात्मिक अुन्नति हो और जिसके लिअे हम सर्वस्व त्याग करें। थोड़ेसे स्पृश्योंके लिअे तो मन्दिर थोड़े समयके लिअे खोला जा सकता है; मगर सुधारक थोड़े हों, तो अस्पृश्योंके लिअे मन्दिर नहीं खोला जा सकता।

"अल्पमत और बहुमतका प्रश्न मेरे अुपवाससे पैदा हुआ। बहुतसे लोग अछूतोंका मन्दिर-प्रवेश चाहते हैं, अिसमें शंका करनेवालोंके जवाबमें यह मत-गणनाका सवाल आया।

"आप मुझे विश्वास करा दें कि अस्पृश्योंका मन्दिर-प्रवेश शास्त्र विरुद्ध है, तो मेरी कुछ नहीं चलेगी।

"मैं तो मानता ही हूँ कि जो काम कर रहा हूँ वह धार्मिक है। मगर आप यह सिद्ध कर दें कि यह अधर्म है, तो मुझे अपना प्रयत्न छोड़ देना पड़ेगा।"

बादमें अुनके साथ सवाल जवाब हुअे :

स० — अिक्कावन फी सदी मत मिलें अुसके बाद क्या आप शास्त्रियोंकी बात सुननेका अभिवचन देंगे?

बापू — आप अिसे अधर्म सिद्ध कर दें, तो मैं तो आज ही अुपवास छोड़ दूँ।

स० — तो क्या आपने शास्त्रियोंके साथ चर्चा करनेका मौका प्राप्त कर लिया है?

बापू — मेरा सौभाग्य कहिये या दुर्भाग्य, आपने यहाँ आनेका कष्ट किया सो मेरे अुपवासके कारण ही। मैंने अपने लिअे तो निश्चय कर लिया है कि मन्दिर खोलना धर्म है। यह निश्चय कअी वर्ष पहले किया था। वाअिकोममें मैं शास्त्रियोंके पास गया था। अुन्होंने मुझे शंकरस्मृति बताअी। अुसका अनुवाद भी करवाया। मगर वे शास्त्री जो कहते थे, अुसका समर्थन शंकरस्मृतिमें भी नहीं मिला। आज आप आकर कहते हैं कि हम कुछ नया प्रकाश डालना चाहते हैं, तो मैं सुन लेता हूँ। मगर अिस चर्चाके दरमियान अुपवासका निश्चय नहीं छोड़ सकता।

अनेक ग्रंथ पढ़े, अनुवाद देखे और अन्तमें निश्चय किया कि जो अहिंसा और सत्यकी कसौटी पर खरा अुतरे वही धर्म है। गीताके पास मैं नहीं गया, परन्तु गीता ही मेरे पास आ पहुँची। गीता मेरे लिअे स्वतंत्र

आधार है, और अनेक टीकाओंकी झंझटसे बचनेके लिअे मैंने अपनी श्रद्धा, बुद्धि और भक्तिका आश्रय लिया।

आप जो बात कह रहे हैं वह मेरी बुद्धि पर असर डाले, तो मैं कहूँगा कि मैं बुद्धिसे हार गया। फिर मैं हृदय पर आधार रखूँगा। आपको मेरे हृदयको सन्तुष्ट करना होगा।

स० — आपका हृदय समझ जाय, तो वह आपका धर्म नहीं हो जायगा?

बापू — हर व्यक्तिको जो चीज़ हृदयंगम हो गअी है, वह अुसके लिअे धर्म है। धर्म बुद्धिगम्य वस्तु नहीं, हृदयगम्य है। अिसीलिअे धर्म मूर्ख लोगोंके लिअे भी है।

मन्दिर-प्रवेशका प्रश्न शुद्ध धार्मिक स्वरूपका है। मेरी मान्यता बदलना बहुत कठिन काम है। कारण मेरी मान्यताके पीछे भूतकाल है। मन्दिर-प्रवेशके मामलेमें धर्म क्या है और क्या नहीं है, यह साधारण आदमी तय नहीं कर सकता। मैं अगर यह मानता होअूँ कि मन्दिर-प्रवेश अधर्म है, तो लोगोंके सामने यह बात कहना मेरी भूल होगी। मगर कितने ही सालके अध्ययन और अनुभवसे मेरा विश्वास हो गया है कि हरिजनोंका मन्दिर-प्रवेश कराना धार्मिक कर्तव्य है। मैंने अपने लिअे जो शास्त्र निश्चित किया है, वह मैं दूसरों पर लादना नहीं चाहता। मगर मैं कहता हूँ कि आपके दिल आजकलकी रूढ़िके विरुद्ध बगावत नहीं करेंगे, तो मुझे अुपवास करना पड़ेगा। अगर बगावत करें तो मेरे लिअे अुपवास करनेका कारण नहीं रह जाता। मैंने तो मेरे लिअे निर्णय कर लिया है। लोग अपने लिअे निर्णय करें।

यह शास्त्रियोंकी मंडली अैसी थी, जो किसी चित्रकारकी कलमके लिअे बढ़िया विषय बन सकती थी। तरह-तरहकी पोशाकोंवाली यह रंगबिरंगी टोली थी। अेक आदमी तो बातें करता-करता मालाके मनके गिनता जा रहा था। अेक व्यक्ति लँगोटधारी और जटा व दाढ़ीसे सुशोभित अवधूत था। अेक-दो लाल शाल ओढ़कर आये थे। चौदहमें से अेक ही आदमी खादी पहने हुअे था।

"आपके दिलको कैसे विश्वास करायें?" अिसके जवाबमें बापूने अिन लोगोंसे विनोदमें कहा: "शिष्यके हृदयमें पाठ अुतारना शिक्षकका फ़र्ज़ है। कैसे अुतारे, यह शिक्षक जाने। यह न जाने तो शिक्षक काहेका? गुरुकी खोजमें मैं कहाँ भटकता फिरूँ? गुरुको मुझे ढूँढ़ लेना चाहिये। मैं ढूँढ़ने निकलूँ, तो कहीं न कहीं ठोकर खाकर गिर जाअूँ। परमेश्वरकी तलाश करने मनुष्यको नहीं जाना पड़ता। अगर खोजमें निकलनेसे परमेश्वर मिल सकता हो, तो क्या वह परमेश्वर है? परमेश्वर तो खुद अपने दासको, अपने भक्तको ढूँढ़ निकालता है।

अेक शास्त्री कहने लगे: "संस्कृतमें बातें कीजिये न।"

बापू : "मैं तो अपढ़ अज्ञानी ठहरा। आपके जैसा पंडित होता, तो आपको यहाँ आने ही न देता या आपको यहीं बन्द कर देता। आपसे कहता, 'जाअिये, मेरा शास्त्रका अध्ययन आपसे अलग है'"।

वे कहने लगे : "भले ही शास्त्र न पढ़े हों। आपको सारा देश पूजता है। आप क़ैदी नहीं, आपने सारे देशको क़ैदी बना रखा है। सब आपके प्रेममें क़ैद हुअे हैं, और आप औरोंको स्वतंत्र करनेके लिअे क़ैदी बनकर बैठे हैं।"

. . . की घटनाके बारेमें . . . को लिखते हुअे :

८-१२-'३२ "अगर अिसमें दोष हो, तो वह भले ही मेरा माना जाय। क्योंकि तुम सबको मैंने अेक महा प्रयोगमें डाला है। मेरा प्रयोग साँपके बिलमें हाथ डालने जैसा है। मुझे अिसका कोअी पश्चात्ताप नहीं है। यह प्रयोग तो जारी ही रहेगा। अिसका परिणाम शुभ ही होगा। अुसके लिअे बलिदानोंकी ज़रूरत पड़ेगी तो दूँगा।"

मीराको :

"अुपवास मेरे जीवनकी अेक मामूली बात हो गअी है। कुछ रोग अिस तरहके अिलाजसे ही मिटते हैं। अुनके लिअे समय-समयपर आध्यात्मिक औषधिकी जरूरत पड़ती है। सबमें यह शक्ति अेकदम नहीं आ जाती। मुझमें वह आ गअी हो, तो बहुत लम्बी तालीमके परिणामस्वरूप ही आअी है। साथियोंको मेरे अुपवासकी बात सुनकर घबराना नहीं चाहिये या अस्वस्थ भी नहीं होना चाहिये। अगर वे मानते हों कि मैं पवित्र हूँ और समझदार भी हूँ, तब तो अुन्हें मेरे अुपवाससे आनन्द होना चाहिये। क्योंकि अैसी धार्मिक प्रवृत्तिसे तो हम सबका और सारी दुनियाका कल्याण ही होगा। अैसे प्रसंग पर हम सबको अधिक आत्म-निरीक्षण करने और अधिक आत्मशुद्धि करनेका अुत्साह होना चाहिये।"

मुन्शीके 'ब्रह्मचर्याश्रम' प्रहसनके बारेमें अेक युवकने बापूसे शिकायत की थी। अुस परसे बापूने मुन्शीको पत्र लिखा था। मुन्शीको बापूकी रायसे बहुत दुःख हुआ। अुन्होंने तुरन्त अुसका प्रचार बन्द कर देने और अुसका खेलना रोक देनेका वचन दिया, मगर साथ ही अपना विरोध भी प्रदर्शित किया। कलाके बारेमें अपने विचार बताये। वास्तविक सौन्दर्यको चित्रित करना ही कलाकारका काम है। अिसके अनुसार ब्रह्मचर्यका आदर्श पालन करनेकी अिच्छा रखनेवाले, पर अुसमें बार-बार असफल होनेवालोंकी अुसमें हँसी अुड़ाअी गअी है। अुसमें अश्लीलता नहीं, अेक शब्द भी अश्लील नहीं और पात्र मेरे सहित सभी मित्र हैं, जिन्होंने प्रहसनके बारेमें अपनी पसन्दगी जाहिर की है। अुनकी सफ़ाअीका

सार यही है। बापूने अुन्हें अभयदानका तार दिया कि "मैंने किसीको खुली राय नहीं दी है, पुस्तक पढ़ लूँगा।"

अिसके बाद अपने हाथसे पत्र लिखा:

"मेरा तार मिला होगा। अुससे तुम्हारा घाव भर गया होगा। तुम्हारे दुःखसे मैं भी दुःखी हुआ। मगर साथ ही यह जानकर कि मेरे प्रति तुम्हारी अितनी ममता है, खुश भी हुआ। सुख-दुःख तो स्नेहियोंकी बातसे ही होता है न?

"तुम्हारा यह भय मिथ्या था कि मैंने तुम्हें अपनी जो राय बताअी, वही अुस आलोचकको भी बताअी होगी। अुसे तो मैंने यह लिखा था कि यहाँ बैठकर राय देनेका मुझे हक ही नहीं। यह भी पूछा था कि नाटक कौन खेलनेवाले हैं। अिसका अुस युवकने वापस अुत्तर नहीं दिया। मेरी तरफसे तुम सदा ही निर्भय रहना। तुम्हारे साथ चर्चा किये बिना मैं तुम्हारी कृतियोंकी आलोचना नहीं करूँगा। तुम दोनोंके प्रति मुझे मोह है। मैंने तुम्हें कहा ही है कि मुझे तुम दोनोंसे बहुत कुछ लेना है। तुम्हारे दिल चुरा सकूँ, तभी तो वह मिल सकता है न? समुद्रके किनारेका वह प्रभातकालीन दृश्य मैं कभी नहीं भूल सकता।

"मुझे समय मिलेगा तो तुम्हारा प्रहसन पूरा पढ़ूँगा। तुम्हारी दृष्टिसे पढ़ूँगा और लिखने जैसा कुछ होगा तो लिखूँगा। तुम्हारी दी हुअी छूटका अुपयोग नहीं करूँगा। तुम भी अुसकी बिक्री बन्द न करना। तुमसे मुझे स्नेहके बलपर भी अैसा नहीं कराना है। यह सही है कि मैंने तुम्हारी अेक भी पुस्तक नहीं पढ़ी। तुम जिसकी सिफ़ारिश करोगे, वह पढ़नेकी कोशिश करूँगा।

"कलाके बारेमें जब कभी अीश्वर मिलायेगा, तब बात करेंगे। तुम्हारा पत्र थोड़ा बहुत समझा हूँ।

"अस्पृश्यताके बारेमें क्या लिखूँ? बहुरूपी होते हुअे भी मेरे जीवनको अेकरूपमें देखनेकी कलाको साधना। तुम समझ जाओ तो साथियोंको भी समझाना। मेरी सभी प्रवृत्तियोंकी जड़ अेक ही है।

"तुम्हारे पत्रसे कुछ ही दिन पहले लीलावतीका मज़ेदार पत्र आया था। अुसका जवाब बाकी है।

"दाहिनी कोहनी ज़्यादा खराब हो जानेके कारण बायें हाथसे लिखा है। सबको हम सबका यथायोग्य।"

अप्पा पटवर्धनके बारेमें आज डोअिलको पत्र लिखा। अुसमें 'तुरुंगांत भंगीकाम' (जेलमें भंगीका काम) शीर्षक पेम्फलेट रखा और २५ तारीख तक भारत सरकारका निश्चय माँगा। दूसरा पत्र छगनलाल जोशीको जल्दी भेजनेके बारेमें डोअिलको लिखा।

शास्त्रियोंके साथ फिर साढ़े तीन बजेसे मगजपच्ची :

स० — मन्दिर-प्रवेश धर्म है। यह आप किस आधार पर मानते हैं; यह समझाअिये। अिसके बाद हम यह समझानेका प्रयत्न करेंगे कि वह अधर्म है।

अुन्हें अपना सारा धार्मिक विकास — बचपनसे लगाकर आज तकका — समझाया। अिसपर वे सारे समय यही बात कहते रहे कि आपके हृदयको विश्वास हो वही धर्म हो, तब तो फिर लाख आदमियोंके लाख धर्म होंगे! 'हृदयेनाभ्यनुज्ञातो अेष धर्मः सनातनः' अिसके बारेमें अिन शास्त्रियोंके पास क्या कहनेको होगा!

राधाकान्त मालवीय : आपके साथ लोकमत नहीं है।

९-१२-'३२

१. आपको मन्दिरमें नियमित जानेवालोंकी मतगणना करानी चाहिये।

२. अिस मन्दिरमें दूर-दूरसे आनेवालोंका मत लेना चाहिये।

राधाकान्तको जब बापूने समझाया कि अैसे मन्दिरमें जानेवालोंकी ही राय ली जाती है, तब अुसने कहा : 'मुझपर गलत असर था। मैंने अैसी खबरें पढ़ी थीं कि हर किसी हिन्दूका मत लिया जा रहा है।' अुसे सन्तोष देनेके लिअे बापूने गोपाल मेननको तार दिया कि सिर्फ़ अैसे ही मनुष्योंके मत लिये जायँ। यह भी समझाया कि आज जो अस्पृश्यता पाली जाती है, अुसका मैं नाश चाहता हूँ। अिससे भी अुसके मनपर नया ही प्रकाश पड़ा।

शास्त्रियोंके साथ बातचीत :

बापू — अस्पृश्य किसे मानते है? अस्पृश्य जन्मसे या कर्मसे? जन्मसे मरण तकके अस्पृश्य शास्त्रोंमें हैं?

ज० — आप जिनके लिअे आन्दोलन कर रहे है, वे अस्पृश्य हैं। जन्मसे मरण तकके अस्पृश्य भी किसी-किसी प्रसंग पर स्पृश्य बन जाते हैं। ये लोग निषाद वगैरा हैं।

बापू — आप कल मुझसे कह रहे थे कि अछूत पाठशालाओंमें जायँ और दूसरे सार्वजनिक स्थानोंमें जायँ तो हर्ज नहीं, मगर मन्दिरोंमें प्रवेश न करें।

ज० — यह सवाल अप्रस्तुत है।

बापू — अस्पृश्यों और सुधारक-स्पृश्योंके लिअे मन्दिरोंका रुपया देनेको आप तैयार हैं? और अिस तरह मन्दिर बनाना आप धर्म मानेंगे?

ज० — हाँ। जो अस्पृश्यताको धर्म मानते हैं वे नहीं बनायेंगे, अधर्म मानते हैं वे अुनमें प्रतिमा-प्रतिष्ठा करेंगे। हम रुपया देंगे।

बापूने कहा : "मुझे नहीं लगता कि हमारे बीच कोअी समझौता हो सकता है।"

शास्त्रियोंकी कथित परिषदमें चलते हुअे झगड़ेको निपटानेके लिअे बापूने अिन लोगोंको यह परिषद मुल्तवी रखनेका सन्देश देनेको कहा। मगर अिस मामलेमें अुन लोगोंने सच्ची हक़ीकत छिपा रखी थी। अिसलिअे गंभीर गलत-फहमी हो गअी थी। दूसरे दिन बापूने यह सन्देश वापस ले लिया।

१०-१२-'३२

आज नटराजन अपनी लड़की और लड़केके साथ आये। बहुत बूढ़े हो गये दीखते हैं। वे कहने लगे: "आप सब कुछ हक, नीति, मानवता और न्याय (right, equity, humanity and justice) की बुनियाद पर क्यों नहीं रख देते? अिन शास्त्रियोंके साथ कब तक लल्लो-चप्पो करते रहेंगे? जो झगड़ा हमने चालीस वर्ष पहले निपटा दिया था, अुसे आप फिरसे क्यों ताजा कर रहे हैं?"

अुन्होंने पूछा: "कानूनी कठिनाअियाँ हों तो अुपवास नहीं करूँगा, अिसका क्या मतलब?"

बापू बोले: "लोगोंको अपनी सारी शक्ति अिकट्ठी करनी चाहिये। मन्दिर-प्रवेशको संभव बनानेके लिअे कानूनमें जो ज़रूरी हो वह सब करना चाहिये।"

नटराजन बोले: "मगर वाअिसरॉय अिजाजत न दे, तो अुसके विरुद्ध अुपवास कैसे करेंगे?"

बापू: "साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें जो स्थिति प्रधान मंत्रीकी थी, वही स्थिति अिस मामलेमें वाअिसरॉयकी है। लोकमतके बलकी अुपेक्षा वाअिसरॉय नहीं कर सकता। लोकमतकी शक्ति पर मुझे जो विश्वास है अुसका असर आपको भी हो। फिर यह अुपवास अेक आध्यात्मिक वस्तु है और अुसके आध्यात्मिक असरका आपको विचार करना चाहिये।"

नटराजन: "मगर वाअिसरॉय अिनकार कर दे, तो वरिष्ठ सत्तासे अपील करनेका तो आपको हमें समय देना चाहिये न? आप अुपवासकी बात न करें। करने जैसा सब कुछ हो ही रहा है। अुपवासमें आध्यात्मिक दृष्टिसे जबरदस्ती नहीं होती, मगर निश्चित की हुअी मियादमें ही आप यह कराना चाहते हैं, अिसमें तो जबरदस्ती है ही।"

जाते जाते कहते गये: "अिन शास्त्रियोंके पीछे समय खराब न करें।"

हरिभाअू, देवधर और माते कुछ दिन पहले आये थे और मातेके साथ सभामंडपमें हरिजनोंको ले जाकर सन्तोष देनेके बारेमें जो बातें हुअी थीं, वे मातेने छापी हैं और अुसने यह बतानेकी कोशिश की है कि गांधीजी कोअी समझौता नहीं कर सकते। सारी बातचीतकी अेक पत्रिका छापी है। यह पत्रिका सच है या नहीं, अिस बारेमें अखबारवाले पूछने आये थे। बापूने अितना ही

कहा कि यह पत्रिका मुझे नहीं बताअी गअी थी। मगर दलीलबाज महाराष्ट्री मुत्सद्दियोंमें अिस पत्रिकाने खासा असर किया हो और यह वहम मजबूत बनाया हो कि बापू कहीं भी नहीं झुकेंगे, तो कोअी आश्चर्य नहीं।

शामको पूना म्युनिसिपेलिटीके अेक मांग जातिके सदस्य सोनावणे आये। अुनके साथ दूसरे स्पृश्य सदस्य भी थे। सोनावणे कहते थे: "हमें मन्दिरोंमें नहीं जाना है। हमें तो आपका चरणस्पर्श मिले तो काफी है।"

बापू बोले: "मगर आपको हम मन्दिरोंमें खींच कर ले जायँ, तो भी आप अिनकार करेंगे?"

वे बोले: "नहीं, तब तो आयेंगे।"

अुन्हें यह डर हो गया था कि पूना-करारके अनुसार महार ही सब सीटें ले जायँगे। बापूने यह डर दूर करनेका प्रयत्न किया। अिस बातसे ही अुनके आनन्दका पार नहीं था कि वे बापूके पास आ सके।

बादमें लेडी विठ्ठलदास आअीं। वे अपनी देरानीके साथ राजभोजके विद्यार्थी भवनमें हो आअी थीं। जहाँ अेक समय अुन्हें जानेमें बड़ा संकोच होता था, वहाँ अब निःसंकोच जाती हैं और नहाती नहीं। अपने बापट शास्त्रीकी भी बात की। ये बहन कहती थीं कि अिसे भी अिस जमानेकी अेक खूबी ही कहना चाहिये कि वे यह स्वीकार करते हैं कि अुन्होंने किसीको भी अछूत मानना छोड़ दिया है।

११-१२-'३२

प्रज्ञानेश्वर यतिने लिखा: "यह दुःखद है कि आप किसी भी बातमें समझौता नहीं करते और न मान कर अुपवास तो खड़ा ही रखते हैं। आपसे कैसे काम लिया जाय?"

अिन्हें जवाब दिया:

"आपके स्पष्ट पत्रके लिअे धन्यवाद। मेरे लिअे बहुत चिन्ता न कीजिये। मैं चालीस वर्षसे लगातार सेवाकार्य कर रहा हूँ। अिस अरसेमें दूसरोंके लिअे अुपवास करनेके आप मुश्किलसे बारह प्रसंग बता सकेंगे। मेरी मान्यताके अनुसार अुपवास करनेकी योग्यता जबसे मुझमें आअी, अुसके बादसे ही यह चीज़ मेरे जीवनमें आअी है। कोअी जल्दबाजीमें तो अुपवास कर ही नहीं सकता। और मेरा दावा तो आप जानते ही हैं। मैं अपने आप कोअी अुपवास नहीं करता, अन्तर्यामीकी आवाज़के अनुसार ही करता हूँ। यह आवाज़ हमेशा अीश्वरकी होती है या फिर शैतानकी, यह कहना आसान नहीं है। अितने पर भी यह कहा जा सकता है कि यह अन्तर्यामीकी आवाज़ होनेका अपना दावा मैंने सच्चा साबित किया है। मेरे और श्री मातेके बीच हुअी बातचीत जैसी अुन्होंने

दी है, अुस परसे आपका किया हुआ अनुमान बहुत जल्दबाजीका माना जा सकता है। अिस मामलेकी सफाअी तो शायद रूबरू ही हो सके। मैं . . . तारीखको . . . बजे आपकी राह देखूँगा।"

सनातन धर्मियोंका पत्र आया था कि हम पण्डितोंकी परिषद करनेको तैयार हैं। लेकिन फिर आप अुसका मत स्वीकार करेंगे न? बापूने अुन्हें जवाब दिया: "आप मेरा मत बदल सकें तो बदलिये। लेकिन यह नहीं हो सकता कि मुझे धर्मके मामलेमें परिषदका मत मान लेना चाहिये।"

वल्लभभाअीको और मुझे यह बात अनुचित लगी। अगर हम परिषदकी सूचना स्वीकार करें, तो फिर अुसका अेकमत हमें मंजूर होना चाहिये।

बापू कहने लगे: "धर्मके मामलेमें कोअी किसीका मत स्वीकार नहीं करेगा। अपने हृदयकी प्रतीति पर ही आधार रखना चाहिये।"

मैंने कहा: "तो हमें यह परिषद बुलवानेमें हिस्सा नहीं लेना चाहिये।"

बापू: "हिस्सा नहीं, परिषद तो ये लोग स्वेच्छासे बुला रहे हैं। मैं कहता हूँ कि अगर वे मुझे यह विश्वास करा दें कि मेरी भूल है, तो मैं भूल सुधार लूँगा।"

मैंने कहा: "तो यह परिषद अेकमत हो या न हो अिसकी बात ही न कीजिये। अितना ही कहिये कि मेरे मस्तिष्कके द्वार बिलकुल खुले हैं। बस अितना काफ़ी है।"

यह समझमें नहीं आ सकता कि बापू जैसी मनःस्थिति रखकर कोअी आदमी पंडित-परिषदमें कैसे भाग ले सकता है।

बापूने फिर और अधिक स्पष्टीकरण किया: "देखो न, वह अेक आदमी मुझसे कहता है कि आप शंकराचार्यकी तरह दिग्विजय क्यों नहीं करते? अुसे मैं कहता हूँ कि यह मेरी शक्ति नहीं। मेरी शक्ति दूसरी तरहकी है, अुसका अुपयोग मैं कर रहा हूँ। मैं अपना धर्म औरोंके मतोंके अनुसार कैसे बदल सकता हूँ?"

नानाभाअी (अकोलावाले) ने अुपवासके बारेमें घबराहट दिखलाअी। "आप अिस तरह अपने चाहनेवालोंको दुःख देते हैं, अिसमें दबाव ज़रूर है। मन्दिर-प्रवेशमें भी दबाव है।"

अुन्हें विस्तारसे लिखाया:

"पहले तो अप्पा साहबके बारेमें। अछूतोंकी सेवा जहाँ वे हों वहीं करनी चाहिये, और जो अस्पृश्य नहीं हैं वे ज़बरदस्ती अस्पृश्य बना दिये जायँ, तो अस्पृश्योंके सेवक अिसके साक्षी नहीं बन सकते। अप्पाकी अिस मामलेकी तपश्चर्या आजकलकी नहीं थी, और प्रश्न यह नहीं था कि अमुक कामके बजाय

अमुक काम दो, बल्कि अमुक धर्मसे विमुख न रहनेका था। अिसमें अिससे ज्यादा मैं नहीं जाअूँगा। मगर अप्पा साहबके या अपने क़दमके अुचित होनेके बारेमें मुझे अेक क्षणके लिअे भी शंका नहीं हुअी थी और यह क़दम अुठा लेनेके बाद भी कोअी शंका नहीं है।

"अब मन्दिर-प्रवेशके बारेमें। ट्रस्टी अपनी मर्यादाके बाहर जाकर कुछ भी करें, तो वह गैरक़ानूनी ही होगा। यह आन्दोलन ट्रस्टियोंसे अेक भी गैरकानूनी क़दम अुठवानेके लिअे नहीं है। परन्तु वे जिस समाजके ट्रस्टी हैं, वह समाज चाहे तो क़ानूनकी अनुकूलता करा लेना अुनका धर्म हो जाता है। अगर समाज प्रतिकूल हो, तो वहाँ अुपवास करना मुँडचिरेपनका रूप धारण कर लेता है, और यह साबित करनेके लिअे कि यह अुपवास अैसा न होगा मत लिये जा रहे हैं। अगर बहुमत प्रवेशके विरुद्ध होगा, तो अिस निमित्तसे अुपवास नहीं होगा। अैसी स्थितिमें दूसरे सूक्ष्म धर्म पैदा होंगे। अिसकी चर्चा अिस समय गैरज़रूरी है। सम्प्रदायका मंदिर हो, तो यह आग्रह नहीं हो सकता कि अुसमें दूसरे सम्प्रदायके लोग जा सकें, परन्तु अुसी सम्प्रदायके हरिजनोंको अुस मन्दिरमें दाखिल होनेका हक़ होना चाहिये। गुरुवायुरके बारेमें अैसा सवाल अुठता ही नहीं। अुपवासकी सारी कल्पना आध्यात्मिक है। अिसके बिना हमारी जड़ता दूर नहीं हो सकती। हमेशा जब-जब धर्ममें जड़ता आअी है, तब-तब तीव्र भावनावाले लोगोंने प्रचण्ड तपस्या की है। अुसके बिना धर्मजाग्रति हो ही नहीं सकती। अगर कोअी गायब होकर जंगलमें बैठकर अनशन व्रत ले, तो अुसके विरुद्ध कोअी बात कहनेकी नहीं रहती। कोअी मोहके वश होकर अैसा क़दम अुठाये, तो अुसकी गिनती मूर्खतामें होगी यह दूसरी बात है। परन्तु कोअी ज्ञानपूर्वक अैसा करे, तो वह क़दम निरपवाद कहलायेगा। मेरे जैसेके लिअे अिससे हलका क़दम अभी तो अुचित ही होगा। 'हलका' अिसलिअे कि मेरा अनशन बिना शर्त नहीं है। अमुक शर्त पूरी हो जाय, तो यह अुपवास रुक जायगा। शर्त लगानेमें विवेक और मर्यादा होनी चाहिये और मैं मानता हूँ कि वह यहाँ पूरी तरह है। जिस हद तक शर्त है, अुस हद तक लोगोंको कम आघात होता है। लोगोंके साथ मेरा सम्बन्ध कौटुम्बिक जैसा बन गया है। मैंने मुद्दतसे अपनेको अिसी तरह बनाया है, और यह मैंने अनुभवसे देखा है कि कौटुम्बिक संबंधमें अमुक मात्रामें अुपवासके लिअे स्थान ज़रूर है। अिसमें भी मर्यादा तो होनी ही चाहिये। छोटेसे कुटुम्बमें प्रयोग करनेके बाद मैं आगे बढ़ा हूँ। यह तो मैंने बुद्धिके द्वारा समझानेकी कोशिश की, मगर सच बात यह है कि अैसा अेक भी अुपवास मैंने बुद्धिके वश होकर नहीं किया, परन्तु हृदयकी आवाज़को मानकर किया है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि अिसमें कोअी भूल नहीं हो

सकती। हृदयमें देवासुर संग्राम चलता ही रहता है। कब हमें असुर भरमाता है और कब देव रास्ता बताता है, यह हम सदा नहीं जान सकते। अिसीलिअे धर्म सिखाता है कि जो देवको जगाना चाहता है, अुसे यमनियमादि रूपी तलवारकी धार पर चलना पड़ेगा।"

अुर्मिलादेवीको पत्र लिखा :

१२-१२-'३२

"मेरे अुपवाससे तुम्हें घबराना नहीं चाहिये। यह यमनियमका अेक अंग है। यह बड़े आध्यात्मिक प्रयत्नसे कमाया हुआ अधिकार है। सत्य और अहिंसाके पुजारीके शस्त्रभण्डारमें यह सबसे बलवान अस्त्र है। अिसलिअे अिसका प्रयोग बहुत सँभल-सँभलकर विरले ही अवसरों पर किया जाता है। और हरअेक आदमी अिस हथियारको काममें नहीं ले सकता। मुझमें अिसके अिस्तेमाल करनेकी योग्यता है, अिससे तो तुम्हें आनन्द होना चाहिये। अितना तो मान ही लो कि मैं अिसका अुपयोग आध्यात्मिक दृष्टिसे ही करता हूँ। मेरी आत्मवंचना हो, तो भगवान मुझे और मुझपर श्रद्धा रखनेवाले तुम सबको बचाये। मगर मेरे बारेमें अिसकी आध्यात्मिकता तुम मान लेती हो, तो दबाव डालनेवाले मेरे अिस अुपवाससे तुम्हें आनंद ही आनंद होना चाहिये और तुममें नया बल प्रकट होना चाहिये। मुझ पर प्रेम रखनेवाले सभीमें अिससे अपना फ़र्ज़ ज्यादा अच्छी तरह पूरा करनेका जोश आना चाहिये। मैं जानता हूँ कि मैंने यह जो कुछ लिखा है, वह सब आसानीसे तुम्हारी समझमें आ जायगा और भविष्यमें अुपवासकी बात सुनकर तुम मेरे खिलाफ़ कोअी शिकायत न करोगी। दूसरा अुपवास कब आयेगा, यह कौन जानता है!"

प्रस्तावना (introduction), प्राक्कथन (foreword), अुपोद्घात (preface) और आशीर्वाद (blessings) के बहाने चार महापुरुषोंकी तरफ़से अपनी पुस्तकके लिअे कुछ न कुछ प्राप्त करनेवाले अेक हिन्दुस्तानी युवकको लिखा (हिन्दीमें) :

"'Bleeding wound' (ब्लीडिंग वुंड) देखा। मुझे पसन्द नहीं आया। अितने अभिप्राय मँगवाकर और छापकर क्या अर्थ सरा? वैद्य लोग जैसा अपनी औषधिके लिअे करते हैं, वैसा क्या हम अैसे पुस्तकोंके लिअे करें? यदि किसीकी प्रस्तावनाकी आवश्यकता थी, तो अेक चिन्तामणिजीकी काफ़ी थी। अितने बहुत अभिप्राय लेनेसे अुनकी प्रस्तावनाका महत्व कम हुआ। अिन सब वचनोंको छापनेके लिअे जो टाअिप चुने गये, अुनमें भी कोअी कला देखनेमें नहीं आती। प्रत्येक लेखके पीछे तारीख, स्थान, अित्यादि नहीं दिया गया।

और भी त्रुटियाँ हैं। लेकिन अितनी काफ़ी होनी चाहियें। मेरी टीकाका हेतु तुमको हतोत्साह करनेका कभी नहीं है, भविष्यमें सावधान रहनेको बतानेका है। अपने कार्यमें हमको आत्मविश्वास होना चाहिये। और जिसको आत्मविश्वास है, वह प्रस्तावना न ढूँढ़े; और जिसको नहीं है, वह अेकके तरफसे लेकर सन्तुष्ट रहे।"

कमलनयनने पूछा: "आत्मा निर्लेप है, अक्लेद्य और अदाह्य है; तो फिर अुसे अच्छे-बुरे कर्मोंका लेप कैसे लगता है?"

अुसे जवाब:

"आत्माके विषयमें जो कुछ कहा गया है, वह विशुद्ध आत्माके बारेमें है। जैसे कोअी पानीके गुणोंका वर्णन करे, तो विशुद्ध पानीका ही किया जाता है। मैले पानीका वर्णन अेकसा हो ही नहीं सकता। पानीको ज्ञान हो, तो पानीका हर खड्डा तेरे जैसा ही सवाल पूछे। अुनमेंसे कोअी शुद्ध पानीके गुण वर्णन करके अपने सब साथियोंसे शुद्ध बननेकी विनती करे। ठीक यही काम शुद्धात्माको जाननेवाले श्रीकृष्णने किया है। आत्माके गुणोंको जानकर अुसके जैसे बननेकी कोशिश करनी चाहिये। अगर तू यह पूछे कि आत्मा अशुद्ध कैसे हो जाती है, तो वह मैं नहीं जानता। वह जाननेकी ज़रूरत भी नहीं। अशुद्धि है, शुद्धिके गुण कैसे हैं और अशुद्धि कैसे मिट सकती है, अितना हम जानते हैं। यह हमारे कामके लिअे काफ़ी होना चाहिये। तेरे प्रश्नका जवाब न मिला हो, तो फिर पूछना।"

पूनाके श्री दिवेकर और दूसरे शास्त्रियोंको:

"यदि अस्पृश्य यह कहते है कि हमें मन्दिरोंमें नहीं जाना है, तो यह हमारे लिअे दुःख और शर्मकी बात है, खुश होनेकी बात नहीं। मनुष्य मात्रमें थोड़ी-बहुत भक्ति रहती है, अिसलिअे वह किसी न किसी रूपमें भगवानकी अुपासना कर लेता है। अिन लोगोंको हमने समझाया है कि तुम नहीं जा सकते। अिन्हें डरा दिया है कि फलाँ जगह अछूतोंने प्रवेश किया अिसलिअे पिट गये। अिसलिअे वे डरते हैं। हमारा कर्तव्य है कि अुन्हें खींच लायें। मगर अैसा न करें तो मन्दिर तो खोल डालें, फिर भले ही वे आयें या न आयें। सनातनियोंकी आँखें बन्द हो गअी हैं। अितना विरोध कर रहे हैं अिसके कारण जिसे मन्दिरमें नहीं जाना है अुसे भी जानेकी अिच्छा होगी। वह भी आग्रह करेगा, हठ करेगा, अधिकार जतायेगा, जो प्रश्न राजनैतिक नहीं है अुसे राजनैतिक प्रश्न बनायेगा और अुसका प्रतिपादन करनेके लिअे बलात्कार करेगा। मैं हिन्दू धर्मको अिससे बचा लेना चाहता हूँ। अिसीलिअे कहता हूँ कि आज जितने मन्दिर खुल सकते हों, अुतने खोल डालने चाहियें और फिर शिक्षा वगैराके लिअे अुनके बीचमें जाना चाहिये। अितना भी न किया तो हमारे

बीचमें मुसलमानोंसे भी ज्यादा घोर युद्ध होगा। हम कहेंगे कि पाखाने हम साफ़ कर लेंगे। भले ही कर लें। मगर हममें से चौथे हिस्सेके लोग मर जायँ तो कितनी हानि होगी? बात यह है कि ये मरेंगे तो नहीं, मगर दुश्मन बन जायँगे; और जब मनुष्य दुष्ट बन जाता है, तब क्या नहीं करता? कुओंमें ज़हर डाल देंगे, तो आप क्या करेंगे? यह चीज़ मैं किस तरह समझाअूँ? यह कहूँ तो भी आग लग जाय। अभी मैंने नासिकके कालारामके लिअे अुन्हें सत्याग्रह करनेसे रोक दिया है। अभी तो वे अैसी हालतमें हैं कि रोकनेसे रुक जाते हैं, मगर फिर बात हाथमें से निकल जायगी। आज सनातनियोंके तीन भाग हैं। कुछ लोग भोले हैं, कुछ स्वार्थी हैं और कुछ सरकारी लोग हैं। अगर भोलोंको समझा लें, तो दूसरे समझ जायँगे। जो सो रहे हैं, अुन्हें जगाया जा सकता है। मगर जान-बूझकर आँखें बन्द करनेवाले स्वार्थियोंको नहीं जगाया जा सकता।

"लोगोंमें संघर्ष पैदा होगा, अिस अेतराज़के बारेमें तो अितना ही कहना है कि संघर्ष तो होगा ही। जो कर्तव्य है अुसके पालनमें किसीको दुःख हो, तो वह दुःख देना ही पड़ेगा।

"अब मैं जिस कलंककी बात कहता हूँ वह समझाता हूँ। तुलसीदासजी अपने लिअे अधमताके वचन कहते हैं, वे हमें अच्छे लगते हैं। मगर कोअी किसीको कहे, तो क्या अच्छा लगेगा? अिसी तरह आज हम अपने दोषोंका दर्शन कर लेंगे, तो ही दूसरे दोष निकालनेवाले लोग रुके रहेंगे। आज अिस कलंककी निन्दा जितने सख्त शब्दोंमें मैं करता हूँ, अुतनी कड़ी भाषा अीसाअियोंने भी अिस्तेमाल नहीं की। जब तक अीसाअी और दूसरे लोग हमारी आलोचना करते थे, तब तक तो हमें अपने कलंकका पता नहीं था। अिस प्रकार हम दुनियाके सामने निन्द्य बनते हैं। जब संसार यह जानता है कि हमें अपने दोषोंका भान है, तब हम कम बदनाम होते हैं, मगर हमलेके शिकार ज्यादा बनते हैं।"

हरिभाअू — लेकिन क्या हम बार-बार यही कहा करें? अिस तरह तो हम अपने बापदादोंकी निन्दा करते हैं।

बापू — नहीं, बापदादोंके लिअे तो कुछ कारण भी था। हमारे पास तो कोअी कारण नहीं, फिर भी हम अिस पापसे चिपटे हुअे हैं।

अेक समय ध्रुव प्रदेशमें रहनेवाले मनुष्योंको नहानेकी मनाअी थी, वह आज तक चली आये और हम अुस पर क़ायम रहें तो हम बेवकूफ कहलायेंगे — 'वेदवादरताः' शब्दके लायक होंगे।

स० — 'हिन्दू धर्मके सिर पर कलंक' का क्या अर्थ है?

बापू — मैंने जवाब दे दिया है। जब अस्पृश्यता शुरू हुआी, तब अुसके लिअे शायद कोअी कारण रहा होगा। आज तो यह निरी मूर्खता है, मानवताके हर अेक सिद्धान्तके विरुद्ध है।

दिवेकर शास्त्री — हम यही कहते हैं। नीतितत्त्व, तत्त्वज्ञान और आचार — ये धर्मके तीन अंग हैं। पहले दो सनातन हैं, मगर आचार कालानुसार बदलता है। अिसीलिअे हम यह कहते हैं कि यह आचार आज नहीं चल सकता। यानी युगह्रासानुरूप धर्मकी ज़रूरत है। लेकिन हमारे सनातनी शास्त्री तो श्रुति, स्मृति, पुराण वग़ैरा तमामको अपौरुषेय ही ठहराते हैं। वे यह मानते हैं कि वैदिक विधि कह दी कि अुसका फल आना ही चाहिये। हमारे ये जड़ लोग कहते हैं कि तीन बार मिट्टीसे सफाअी करनी है, तब दो बार लगाअी तो पाप लगेगा और चार बार मिट्टी लगाअी तो भी पाप लगेगा! नरकमें जाना होगा! भिन्न-भिन्न समयोंकी स्मृतियाँ अपौरुषेय कैसे हो सकती हैं? 'श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः' अिस चीज़का वे रहस्य ही नहीं समझते।

श्रीधर शास्त्री पाठकने वेदोंको पढ़कर बड़ा बढ़िया अर्थ निकाला है। वे कहते हैं कि देवालय-प्रवेश धर्मका प्रश्न ही नहीं है। क्योंकि वेद-अुपनिषद् कालमें तो मन्दिर थे ही नहीं। मन्दिर तो आजकी अुत्पत्ति हैं, अिसलिअे यह सिर्फ़ देशकालका ही प्रश्न है। यह दृष्टि बढ़िया मिली — अितने बूढ़े शास्त्रीसे।

बापू — सनातनियोंके विरोधसे डरनेकी ज़रूरत नहीं है। यह सिर्फ़ क्षणिक है, क्योंकि अिसमें नीति नहीं, धर्म नहीं और व्यवहार नहीं; अिसलिअे अिसका अपने आप नाश होगा। ये लोग ज़रूर अपने आप समझ जायँगे कि लाखों लोगोंमें जो जाग्रति आअी है वह अच्छी है।

स० — आज आप वर्णसंकर चाहते हैं?

बापू — आज वर्ण कहाँ हैं? आश्रम कहाँ हैं?

'टाअिम्स' का मेक्रे आया। सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक मामलोंमें अुपवासके तरीक़ेकी निन्दा करनेवाले प्रस्तावकी बात कही। यह कहा कि मन्दिर-प्रवेशका प्रस्ताव ३३४ के विरुद्ध २७९ मतसे पास हुआ।

बापू — मुझे अभी कोअी खास कहने जैसी बात नहीं लगती। मेरा खयाल है, कुओंकी बात अभी रहने दें। मैं कुछ कह सकता हूँ तो अुपवासके विषयमें; अिस बारेमें आप पूछिये।

स० — अिस अुपवाससे आप समाज पर अपने विचार लाद देते हैं, अिस आक्षेपके बारेमें आप क्या कहते हैं?

बापू — अिसका जवाब देनेमें मेरे अुपवासके बारेमें पास हुअे प्रस्तावकी जो बात आपने कही, अुसका जवाब भी आ जायगा। श्री जमनादास मेहताने

अितना ही कहूँगा कि केलप्पनको या मुझे अपने अन्तर्यामीकी प्रेरणासे किये हुअे निश्चयसे कोअी डिगा नहीं सकेगा ।

श्री मेहताने लोगोंका पहलेसे सावधान रहनेके लिअे जो ध्यान खींचा है, अुसकी मैं क़दर करता हूँ ।

मुझे तो आश्चर्य और दुःख अिस बातका होता है कि जो मतगणनाके काममें लगे हैं, अुन पर ज़ामोरिन अिस तरहके विचित्र आक्षेप किसलिअे करते हैं? मैं तो ज़ामोरिनको बहुत सज्जन मानता हूँ । वे जानते हैं कि माधवन नायर, जो मतगणना समितिके अध्यक्ष हैं, सारे केरलमें सम्मान प्राप्त अेक प्रसिद्ध वकील हैं । सारी समितिको राजाजी मदद दे रहे हैं । वे वहाँ रहकर सब कामोंकी देखरेख कर रहे हैं । ये आदमी अैसे नहीं हैं कि ज़रा भी झूठ चलने दें । कार्यकर्ताओंने आपत्तिजनक ढंग अख्तियार किये हों, तो अुनके अुदाहरण अिन लोगोंके ध्यानमें लाना ज़ामोरिनका फ़र्ज़ है । यह प्रश्न शुद्ध नैतिक और धार्मिक है। अुसमें पक्षपात या राग-द्वेषकी ज़रा भी गुंजाअिश नहीं हो सकती। सनातनी और सुधारक मिल्जुलकर काम करेंगे, तो सत्य सामने आ जायगा । मैं फिर अिस बातका आश्वासन देता हूँ कि लोकमतके मामलेमें मैंने भूल की है अैसा मालूम होते ही मैं अुपवासकी बात छोड़ दूँगा । मैं सिर्फ़ सत्यकी ही पूजा करना चाहता हूँ । अिसके सिवाय मेरा और कोअी अुद्देश्य नहीं है ।

अेक स्वदेशी कपड़ेके गुजराती व्यापारी शास्त्रीके साथ :

स० — कलह पैदा करे अैसा मन्दिर-प्रवेशका सवाल क्यों अुठाया है? गुरुवायुरके स्वामित्वके बारेमें अितनी धांधली क्यों मचाअी है? आपने तो कहा है कि मैं शास्त्री नहीं हूँ, तब आपने शास्त्रियोंकी समिति बुलाकर अुनका निर्णय लेकर अुपवासकी बात ज़ाहिर की होती तो अच्छा नहीं होता?

बापू — धारासभाओंमें जगहें देनेका मामला हाथमें लिया था, तब मन्दिरोंकी बात भी थी । मैंने तो समझौता करनेवालोंसे कहा था कि आज आप अस्पृश्यता दूर करनेकी प्रतिज्ञा कर रहे हैं । अिस प्रकार अुसी दिन अिस चीज़की बुनियाद पड़ी । अिसी अरसेमें केलप्पनने आमरण अनशन किया । वह अुसकी भूल थी । मैंने अुसे अुपवास बन्द करनेको कहा। अुसको वचन दिया । अुसका प्रयत्न गुरुवायुरके लिअे था । मैं दूसरे मन्दिरोंके प्रश्नको कैसे मिलाअूँ? मुझसे दूसरे मन्दिरोंके प्रश्नको अिसीके साथ मिलानेकी माँग की जाती है । और अुपवासकी भी माँग कर रहे हैं । मैं अुनसे कहता हूँ कि तुम शान्त रहो, यह अेक चीज़ पूरी हो जाय, तो फिर दूसरी देखेंगे । यह काम क्रमबद्ध हुआ है। धर्म जैसे मार्ग बताता जाय, वैसे काम करते जाना चाहिये ।

अब आप शास्त्रकी बात पूछते हैं। मैंने कहा है कि शास्त्रीकी दृष्टिसे मैंने वेदादिका अध्ययन नहीं किया, मगर जिज्ञासु और मुमुक्षुकी दृष्टिसे अध्ययन किया है। और जितना पढ़ा है, अुसे अनुभवसे सिद्ध किया है। मैंने जितना पढ़ा, सोचा और ठीक लगा, अुसपर अमल किया। अिस प्रकार अमलकी कसौटी पर सही अुतरी हुअी चीज़पर अमल करनेमें संकोच नहीं होना चाहिये। हिन्दू धर्ममें जो मुमुक्षु हो गये हैं, अुन्होंने यही किया है। लेकिन अिससे मैं शास्त्रियोंके साथ बहस नहीं कर सकता। यह शोभा नहीं देगा। मैंने कोअी अुपाधि नहीं ली है, अिसलिअे यह तो छोटे मुँह बड़ी बात हो जायगी। आपको विश्वास हो कि मैं पाखण्ड नहीं करता, तो मेरी भूल देखने और सुधारनेकी शक्तिका विश्वास रखकर मेरी भूल सुधारिये। आपके आनेसे पहले दो शास्त्री ही बैठे थे। मुझे पंढरपुरके शास्त्री कहने लगे कि तुम जो शर्त करो अुसी पर तुमको समझायें। मैंने कहा कि आप वैद्य हैं, वैद्यके तौर पर दवा दीजिये। वैद्य बीमारको थोड़े ही पूछते हैं? यहाँ तो मुझे बीमारी भी नहीं है। वैद्य अगर कहता है कि बीमारी है, तब तो फिर वही दवा बतायेगा न?

शास्त्री — अस्पृश्योंकी संख्याके बारेमें मतभेद है। आपको अितना ही देखना है कि आप जिसे धर्म कहते हैं, वह अुपवास करके नहीं लादा जा सकता। शास्त्रोंने तो कहा है कि परिषद ही परिवर्तन कर सकती है। सनातन हिन्दुओंके शास्त्रमें आप जिसे धर्म मानते हैं, वह क्या यह है कि मन्दिरोंमें अस्पृश्योंको जाना चाहिये?

बापू — हाँ, मैं जानता हूँ कि यह शास्त्रमें है।

शास्त्री — शास्त्रोंने अन्त्यजोंके बारेमें जो व्यवस्था की है, अुसमें क्या यह कहा है कि अुनका मन्दिरोंमें जानेसे ही अुद्धार होगा?

बापू — नहीं, मंजूर —

शास्त्री — तो फिर आपने यह धांधली किसलिअे मचाअी?

बापू — आपने तो शुरुआत ही ग़लत की है — 'अन्त्यजोंको भेजना ही, यह बात नहीं है।' मैंने तो यह कहा है कि मन्दिरोंके द्वार खोल दिये जायँ, अस्पृश्य आयें या न आयें। अिसमें दो बातें हैं। मैं तो स्पृश्योंकी तरफ़से साफ़ कराना चाहता हूँ कि जब तक अछूत नहीं आवें, तब तक मन्दिर मन्दिर ही नहीं हैं। अिसलिअे वे खोल दिये जायँ। स्पृश्य अपना धर्म पालन करें अिसके लिअे यह प्रयास है।

शास्त्री — क्या अिस व्याख्याके लिअे कोअी आधार है कि जब तक द्वार बंद रखा है तब तक वह अधर्म है?

बापू — हाँ।

शास्त्री — क्या अन्त्यजोंके लिअे गुरुवायुरके द्वार कभी भी खुले हुअे थे ?

बापू — अिसका अितिहास किसीके पास नहीं है। अिस ज़मानेके आदमी ज़रूर कहते हैं कि अुसके द्वार अछूतोंके लिअे नहीं खुले। अिस मन्दिरके आरंभ कालकी बात हम लोग नहीं जानते। अिसीलिअे मैंने तो साधारण सिद्धान्तका आश्रय लेकर कहा है कि अगर मन्दिर हिन्दू समाजके लिअे है, तो वह अछूतोंके लिअे खुला होना चाहिये।

शास्त्री — तो वेदकालसे मन्दिरोंकी जो व्यवस्था की गअी है, अुसे बदलवा कर मंदिर खुलवानेसे आप अन्त्यजोंका क्या भला करेंगे ?

बापू — अुद्धार तो स्पृश्योंका है और अुनके द्वारा अन्त्यजोंका भी है। दोनोंका साथ-साथ अुद्धार है। अिसमें मुख्यामुख्यका निर्णय नहीं हो सकता। मान लीजिये कोअी आदमी मेरे बच्चोंको दबाकर बैठ गया है — या मान लीजिये कि मेरे बाप और काका लड़ते हैं। मुझे दोनोंमें मेल कराना है। कोअी मुझसे पूछे कि तुम किसका ज्यादा हित चाहते हो, तो मैं कहूँगा कि दोनोंका। बाप काका पर चढ़ बैठा है, तो वह अुसे छोड़ दे अिसीमें अुसका ज्यादा श्रेय है। जुल्म करनेवाला जुल्म छोड़े तो अुसका श्रेय होता है और दबाया हुआ अपने आप छूट जाता है।

शास्त्री — तो भी यह कहा जा सकता है कि आप मुख्यतः दबानेवालेका अुद्धार चाहते हैं।

बापू — आपको अैसा कहना हो तो कहिये।

शास्त्री — आपने अधर्मका निर्णय शास्त्रके आधार पर किया है ? किस ग्रंथके आधार पर ?

बापू — वेदसे लगाकर गीता तक।

शास्त्री — कोअी वचन बतायेंगे ?

बापू — गीताकी ध्वनि ही यह है कि मनुष्य मनुष्यके बीचमें कोअी भेद नहीं है।

शास्त्री — ‘सर्वं खलु अिदं ब्रह्म’। मगर यह किस अवस्थामें ?

बापू — यह मन्दिर धर्मसे स्थापित की हुअी चीज़ है। जहाँ धर्मकी प्रतिष्ठा है, वहाँ यह भेदभाव रखा जाय तो धर्मका खण्डन होता है।

शास्त्री — जिसने अिसे स्थापित किया, अुसे अिस अधर्मका भान नहीं होगा ?

बापू — मैं यह कहता हूँ कि जिसने मन्दिर बनाया, अुसने गीताधर्मका अवलम्बन करके नहीं बनाया। यह तो मर्यादाका धर्म है।

शास्त्री — शास्त्र क्या यह नहीं कहते कि स्त्रीको स्त्री मानो और माँको माँ? अिसी तरह जो शास्त्र यह कहते है कि अंत्यज मन्दिरका दरवाजा देखते हैं, तो अुनका अुद्धार हो जाता है, अुसका क्या?

बापू — मैं अिस चीज़को मानवकृत कहता हूँ। यह धर्म नहीं है।

शास्त्री — गीतामें अैसा वचन है?

बापू — श्लोकमात्रमें — जहाँ हम भेदका साक्षात्कार करें वहाँ देखें। यह भेद ही मुश्किल चीज़ है।

शास्त्री — जो बात मुश्किलकी है अुसे निश्चित कैसे कहते हैं? धर्मकी मर्यादा मनुष्यकृत नहीं है — वेदमें 'प्रतिष्ठया सार्वभौमम्' शब्द हैं — अर्थात् वेदोंमें मंदिर नहीं थे अैसा नहीं है। जेलमें किसे जाना चाहिये और किसे नहीं जाना चाहिये, अिसका नियम नहीं होता?

बापू — हाँ, अिसी तरह मंदिर बनानेवाले नियम बनायें।

शास्त्री — या तो अितिहाससे यह बताअिये कि अन्त्यजेतरोंके मन्दिरोंमें अन्त्यज जाते थे, या शास्त्रियोंकी परिषद करके वर्ष भरके भीतर निर्णय कीजिये। वे सब चाहते हैं कि आपके व्यक्तित्वकी 'यथाकथं च' रक्षा की जाय। अिसलिअे आप अपने व्यक्तित्वसे लोगोंको मत दबाअिये। समय भी जल्दी लगता है।

बापू — यह चीज़ मेरे जीवनमें पैंतालीस वर्षसे है। तबसे मानता आया हूँ और संशोधन करता रहा हूँ। मेरे अुपवासको कोअी दबाव माने तो लाचार होना पड़ता है। जो यह मानते हैं कि मन्दिर भ्रष्ट हो जायगा, अुन पर तो मेरे अुपवासका कोअी असर नहीं होगा।

शास्त्री — आपके अनुयायियों पर तो दबाव पड़ेगा ही। हमारा यह कहना है कि साधारण आदमी हलका काम करे, तो अुसका कोअी असर नहीं पड़ता। कृष्ण कहते हैं कि 'वर्तअेव च कर्मणि'। अंत्यजोंका तिरस्कार मत करो, अुनके लिअे मन्दिर बना दो। मगर आप तो 'परस्योत्सादनार्थं वा' कर रहे हैं। आप तो जल्दबाज़ी कर रहे हैं। आजकल जिस ढंगसे काम हो रहा है, अुससे सत्य नहीं मिलेगा। आपकी दृष्टि आपके अनुयायियोंमें आ गअी हो, अैसा नहीं दीखता। अुपवास किसलिअे?

बापू — मैंने तो शास्त्रियोंको भी अिकट्ठा करनेकी तजवीज़ की है। आनन्दशंकर आ रहे हैं, दूसरे शास्त्री भी आ रहे हैं।

शास्त्री — क्या आप मध्यस्थ बनकर अनेक अर्थोंमें से अर्थ नहीं कर सकते? क्या पंडितोंके वाद-विवादसे नहीं जान सकते?

बापू — मैंने तो कुशल टीकाकारोंकी बातें पढ़कर जो तत्व निकाला है, वह मध्यस्थ दृष्टिसे ही निकाला है।

शास्त्री — 'महात्मानस्तु मां पार्थ', 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः' अिसमें सब कुछ आ जाता है। विलायती–मिल–स्वदेशी और फिर खादी। रोज़ सौ गाँठें खादीकी बेचता था!

बापू — विट्ठलदाससे भी आगे बढ़ गये?

शास्त्री — हाँ। मगर व्यापार कैसे जाता रहा? मेरे बेटे मुसलमानोंके हाथमें सारा व्यापार चला गया। दिल्लीमें स्त्रियाँ हिन्दुओंकी दुकानोंपर पिकेटिंग करती हैं, मगर . . . की दुकानपर पिकेटिंग नहीं करतीं।

बापू — आपने तो गीताकी भद्दी प्रस्तावना दी। यह बात मुझसे सुनी भी नहीं जाती। आप जिस तरीकेसे बात करते हैं, वह भी गीताका खण्डन करता है। गीताकी पद्धतिका भी खण्डन होता है।

१३–१२–'३२

अप्पा साहबका पत्र कल शामको आया। सम्पूर्ण पत्र है। अिससे समझमें आया कि डोअिलने जो बातें कही थीं, वे सब झूठी थीं। अप्पाने अपनी अर्ज़ीमें सारा मामला अितनी नम्रतासे रखा था कि अुसे कोअी अिनकार कर ही नहीं सकता था। अिन लोगोंने ठेठ सितम्बर तक भंगीका काम किया था। यह भी अन्दर लिखा था और अर्ज़ीमें भी लिखा था। पत्र पढ़कर बापूको डोअिलके बारेमें बड़ी निराशा और दुःख हुआ। सवेरे खानगी और व्यक्तिगत पत्र में अुसे लिखा कि मुझे दुःख है कि आपने मुझे धोखा दिया। अगर आपने मुझे धोखा न दिया होता, तो मैंने कोअी और ही कदम अुठाया होता।

पत्र पहुँचा कि तुरन्त डोअिल साहब दौड़े-दौड़े आये। यह खानगी पत्र भी अुसने मेहता और भण्डारीको बताया और फिर कहा: "सचमुच ये लोग भंगीका काम करते थे यह मुझे पता नहीं। अर्ज़ीमें हो तो भी मुझे पता नहीं। अर्ज़ी मैंने अच्छी तरह पढ़ी न होगी।"

और अिस बारेमें सुपरिण्टेण्डेण्टसे स्पष्टीकरण और सही हालात क्या हैं, यह जाननेके लिअे पत्र लिखा। यह सब होनेपर भी वल्लभभाअीको और मुझे तो यही लगता है कि डोअिल साहब झूठ बोले थे।

बापू बोले: "कुछ कहा नहीं जा सकता, देखेंगे आगे ज्यादा पता लगेगा।"

शोलापुर मिलके आदमी आये। मन्दिर-प्रवेशके बारेमें पाषाणकर वगैरा आ पहुँचे।

दफ्तरी (नागपुरसे) और पुरन्दरे आये। अिनके साथ बातें हुअीं। शास्त्रियोंके साथ कैसी बातें हुअीं सो समझाया।

“ मुझे अपने ज्ञानका प्रदर्शन नहीं करना है। मगर शास्त्रोंका मैंने जो कुछ अध्ययन किया है, अुस परसे बने हुअे मेरे विचार, मैं मानता हूँ, पूरी तरह तर्क-शुद्ध हैं। मैं यह नहीं मानता कि वेदोंका प्रत्येक शब्द अीश्वरप्रेरित है। कारण आखिर तो वेद भी मनुष्यके मुखसे ही अुच्चारित हुअे हैं। फिर हमारे पास तो वेदोंके बहुत ही थोड़े भाग हैं। बादके ग्रंथोंसे अुनकी पूर्ति की जा सकती है। अिसलिअे जो वेदोंमें न हो, अैसी बातें कहनेकी भी मेरे लिअे काफी गुंजाअिश है। मैं तो मूल मुद्दे पर जाता हूँ और कहता हूँ कि सारी दुनियाके माने हुअे मूल सिद्धान्तोंसे जो विरुद्ध हो, अुसका हमे त्याग करना चाहिये। आप कहें या ग्रन्थोंमें से वचन निकालकर बता दें, अिसलिअे तो मैं नहीं मान लूँगा।, आपकी बातका औचित्य आपको मेरे दिलमें ठसाना चाहिये। और मेरा हेतु और मेरी मान्यता प्रामाणिक है यह आपको मानना चाहिये, मुझे नास्तिक बताकर बदनाम नहीं करना चाहिये। मन्दिरोंमें जाने वालोंमेंसे अधिकांश, अुनके ट्रस्टी और पुजारी भी अिससे भिन्न विचार रखते हों, तब भी आप यह कहें कि शास्त्र अछूतोंके लिअे मन्दिर-प्रवेशका निषेध करते हैं, तो यह घूंट मेरे गले कैसे अुतरे?

“ अुन्होंने कहा कि अलग मन्दिर बनानेको रुपया दे देंगे। मैंने कहा कि आप मन्दिर बनाकर तो देते नहीं और मेरी तरफ रुपया फेंकते हैं, यह मुझे नहीं चाहिये। फिर अुन लोगोंने कहा कि अस्पृश्यता केवल जन्मसे ही नहीं है, मगर पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है और अिसका निवारण ही नहीं है।”

कांचन और कामिनीके परिग्रह पर रामचन्द्ररावके साथ बातें कीं: “स्त्रीका परिग्रह — अगर आप कामवासनाकी तृप्तिके लिअे करते हों, तो यह बुरेसे बुरा परिग्रह है।”

कोरा फ्राय आअी। अपने साथ अेक हरिजन लड़कीको लाअी। बापूने अुसे मुलाकातोंकी शर्तें सुनाअीं। फिर बातें हुअीं:

१४-१२-'३२

कोरा: “भगवानके पुत्र अीसा और अुनके बलिदानके जरिये अस्पृश्यता पलभरमें नष्ट हो जायगी। आप अिसे अपना लें तो अस्पृश्यता रहने न पाये। मैंने तो वाअिसरॉय और गवर्नरको भी लिखा था कि अगर महात्मा गांधी अीसाको स्वीकार कर लें, तो अस्पृश्यता मिट जाय।”

बापू: “अिसके लिअे मुझे आपके साथ लम्बी चर्चामें पड़ना पड़ेगा और मुलाकातोंकी जो शर्तें मैंने मंजूर की हैं, अुनमें अिस तरहकी चर्चाकी छूट नहीं है। यह तो बहुत पुराना सवाल है। दक्षिण अफ्रीकामें मैं अीसाअी मित्रोंके सम्पर्कमें आया था। अुन्होंने भी मुझसे यही बात कही थी। मुझे अीसाअी बनानेकी

अुन्होंने बहुत कोशिश की थी। चूँकि मुझे सत्यके सिवाय और किसीकी पूजा नहीं करना है, अिसलिअे अुनकी बात समझनेका मैंने भी प्रयत्न किया था। मगर वे असफल रहे।"

कोरा: "मगर सत्य तो आपके सामने अपने आप प्रकट हो जायगा। अुसके लिअे मेरी आत्मा और आपकी आत्मा अेक ही है। अगर आप अुसके प्यारे न होते, तो मैं यहाँ आती ही कैसे?"

बापू: "हाँ, अैसे पत्र हर हफ्ते मेरे पास आते हैं।"

कोरा: "भगवान अीसा मसीह आपको संपूर्ण विजय दिलायेंगे। मुझे मुश्किलोंके कितने ही पहाड़ लाँघने थे, मगर अीसाके बलिदानसे मैं अुन्हें पार कर गअी। अगर आप अीसाको मान लें, तो सभी स्पृश्य हो जायँ। अीसाने कहा है: 'तुम सब कुछ मुझ पर छोड़ दो और मेरी तरफ देखो।' अुसके प्रेमसे सब कुछ हो जायगा। अुसका प्रेम है तभी तो भगवानने अपने पुत्रको भेजा। आप अुसको स्वीकार कर लें, तो अिस जेलमेंसे भी छूट जायँ।"

बापू: "मैं यहाँ हूँ, अिसका मुझे कुछ भी दुःख नहीं है।"

कोरा: "तब तो ठीक। मेरा यहाँ आना अुचित माना जाय, अिसके लिअे आपको मुझसे जो कुछ कहना हो वह कहिये।"

बापू: "आप अस्पृश्यता-निवारण संघसे मिलिये। अिस बारेमें मुझे कुछ लिखना हो तो लिखिये।"

बम्बअीके आर्यसमाजी:

"हमारे पास सब प्रमाण हैं। 'नास्ति पंचमो वर्णः'। जिन संकर जातियोंका वर्णन है, वे तो आज हैं ही नहीं।"

बापू: "अिसका तो आप ज़रूर प्रचार कर सकते हैं कि अस्पृश्यता किसी भी धर्ममें नहीं है। मगर जिन मन्दिरोंको आप नहीं मानते, अुन मन्दिरोंमें प्रवेश करनेका प्रचार आप कैसे कर सकते हैं? मुझे तो कहा जाता है कि आप अिन लोगोंको अिस पापधाममें किसलिअे ले जाते हो? अेक आदमी कहता है कि आप अिन्हें नरकधाममें ले जाते हैं! अिसलिअे आपके जैसे बड़े समाजको — जो धार्मिक है — अिस प्रश्नमें हाथ नहीं डालना चाहिये। हाँ, अेक बात है कि आर्यसमाजमें अेक बड़ा परिवर्तन हो गया है। पहले ज़हरीली बातें आती थीं, अब आर्यसमाजियोंको हिन्दू कहलानेमें अड़चन नहीं होती। मैं तो अुम्मीद लगाये बैठा हूँ कि जिस युगमें दयानन्द महाराजने मन्दिरोंके विरुद्ध लिखा था, अुस समय वह ठीक था। जैसे मुहम्मदने कहा कि अिन मूर्तियोंमें खुदा नहीं है और काबाके लिअे दूसरा अुपयोग सोचा। यह दृष्टि ठीक थी, मगर आज अिन गिरजोंको तोड़ा जाय तो धर्मान्धता होगी। आज अैसे घोर आक्रमणकी

मुझे चिन्ता नहीं; फिर भी अुग्र सुधारकोंको में रोक लेता हूँ। केरलमें मन्दिर-प्रवेशको माननेवालोंके मत लिये जा रहे हैं। सनातनियों पर क्रोध किये बिना अुनके साथ शान्ति और विनयका बरताव करेंगे, तो सब झगड़ा अपने आप शान्त हो जायगा। **आप केवल संयम और खामोशीसे सेवा कर सकेंगे।** सनातनियोंमें तीन वर्ग हैं — (१) सरल वर्ग: मैं जो कुछ कर रहा हूँ, अुसे घोर पाप माननेवाले, (२) स्वार्थी वर्ग, (३) सरकारके प्रिय बननेवाले। दूसरा और तीसरा वर्ग भयंकर है। मुझे अुसकी परवाह नहीं है। मुझे तो पहले ही वर्गसे काम है। अुसे शान्तिसे समझानेकी ही बात है। लोगोंको जब यह मालूम हो जायगा कि जो झूठे आरोप अिस आन्दोलन पर हो रहे हैं वे झूठे हैं, तब ये लोग ठिकाने आ जायँगे। गुरुवायुरमें आपकी कोअी नहीं सुनेगा। हाँ, आप ज़ामोरिनके पास जा सकते हैं और शायद अुसके हाथ मज़बूत करेंगे। मुझे तो लगता है कि लोकमत हमारे साथ होगा, तो अुसे मन्दिर खोलना ही पड़ेगा। आप अस्पृश्योंमें रचनात्मक कार्य अवश्य कीजिये। अिन लोगोंको समझाना चाहिये कि हम किसी भी स्वार्थके बिना तुम्हारी मदद करना चाहते हैं, अपने पापका प्रायश्चित्त करना चाहते हैं। मन्दिरोंके बारेमें आपको अितना ही समझना चाहिये कि हमने अिन लोगोंको दूर रखनेका जो पाप किया है, वह धो डालना है। फिर भले ही ये लोग मन्दिरोंमें न जायँ। मन्दिर-प्रवेशकी झंझटमें आप न पड़ें, आपसे और बहुतसा काम लिया जायगा।"

मणिबहनने अस्वाद व्रतके बारेमें और दूसरे कअी अैसे सवाल पूछे, जिनका जवाब देते हुअे बापूजीने लिखा:

"जिसका स्वास्थ्य अच्छा है, अुसके मुँहमें स्वाभाविक भोजनसे पैदा होनेवाले रस तो पैदा होने ही चाहियें और अुनकी पहचान यानी स्वाद तो बड़े संयमीको भी रहेगा और रहना चाहिये, परन्तु अिस स्वादका राग न होना चाहिये। किसी भी कारणसे अनुचित वस्तुका त्याग अच्छा लगे तब शरीरके लाभके साथ-साथ आत्माको भी लाभ होता है; क्योंकि पदार्थकी लोलुपता मिट जाती है। पूरे या अधूरे अुपवासका असर अलग-अलग प्रकृतियों पर और अेक ही प्रकृति पर अलग-अलग समयमें अलग-अलग होता है। अुसमें शरीर और मन दोनों या दोनोंमें से अेक कारणीभूत होता है। अैसे दृष्टान्त तो अनेक अनुभवोंसे तू अिकट्ठे कर सकेगी।

"मुझे मौन कठिन नहीं लगता। अितना ही नहीं, मगर हर हफ्ते रविवारके अेक बजेकी राह देखता रहता हूँ। बात यह है कि जिस चीज़के लिअे हमारा मन तैयार नहीं होता, अुसे करनेमें मुश्किल होती है। जिस कामके लिअे मन तैयार होता है या तैयार किया जा सकता है, वह सहज हो जाता है। मौनमें

ही जिसका ध्यान लग जाता है, अुसे आसपासकी गपशप नहीं सुनाअी देती। किशोरलालभाअीके लिअे अेकान्तमें झोंपड़ी बनाअी थी, वह तुझे याद होगा। वहाँ तो मौन और शान्ति ही हो सकती है। दो तीन दिन अुन्हें रेलकी खड़खड़ाहट असह्य जान पड़ी। मैंने कानमें रूअीके फोये डालनेकी सूचना की थी। अुसके बाद दूसरे दिन सुबह जब मैं अुनके पास गया, तब मुझे कहा: 'आज मैंने न तो गाड़ीकी सीटी सुनी और न गाड़ीकी खड़खड़ाहट ही।' ये दोनों क्रियाअें तो होती ही थीं, मगर अुन्होंने अुसमेंसे ध्यान खींच लिया था, यानी मौन सध गया था। फोयोंकी मेरी सूचनाने अुन्हें जाग्रत कर दिया, क्योंकि स्वेच्छासे अेकान्त और मौन खोजनेवालेको अैसी कृत्रिम सहायता अरुचिकर ही होगी। जिसे मौन भा गया है, वह अन्तमें दिव्य संगीत सुनने लगता है और अुसमें अितना अधिक मग्न हो जाता है कि आसपास जो आवाज़ें होती हैं, वे अुसे सुनाअी नहीं देतीं।

"हमारा बिल्ली-परिवार तीनका है। रोज़ खानेके समय दोनों बार बिना घंटी और बिना बुलाये हाज़िर हो ही जाता है। जिस नियमसे ये तीनों साथी समयका पालन करते हैं अुसी तरह हम सब करने लगें, तो करोड़ों घंटे बच जायँ और हमने सीखा तो है ही कि समय ही धन है। बात भी बिलकुल सच है; अिसलिअे जो समय बचाते हैं वे धन बचाते हैं, और बचाया हुआ धन कमाये हुअेके बराबर है। अिसलिअे जिन्हें समयका मूल्य नहीं, वे दुनियाका कितना धन खो देते होंगे, अिसका हिसाब कौन लगा सकता है?

"अस्पृश्यताके लिअे काम करनेवालोंकी संख्या कृत्रिम ढंगसे बढ़े, यह मैं बिलकुल ही नहीं चाहता। जिनके लिअे अपना कर्त्तव्य स्पष्ट है, वे अस्पृश्य सेवाका काम प्रिय होनेपर भी अपना कर्तव्य छोड़ें, यह मैं कभी चाहूँगा ही नहीं।"

अेक बंगाली बालकने पूछा कि "मैं पापी पाप कैसे धोअूँ? अपने पिताके सामने आपने अपराध मंजूर किया था, वैसे मंजूर करनेकी हिम्मत मुझमें कैसे आये? मैंने आपकी आत्मकथा पढ़ी है। मुझमें पाप स्वीकार करनेका बल किस तरह आये?"

अुसे लिखा:

"मुझे स्पष्ट लगता है कि तुम्हें अपनी सब बात अपने माँ-बापसे दिल खोलकर कह देनी चाहिये। शर्म तो तुम जिन पापोंको करना मंजूर करते हो, अुन पापोंके करनेमें थी। माँ-बापके सामने अुनका साफ़ अिक़रार करनेमें कोअी शर्म नहीं है। साफ़ दिलसे अैसा करोगे, तो तुम अपनेमें नअी शक्तिका संचार देखोगे और अैसा बल अनुभव करोगे जैसा तुममें पहले कभी नहीं था।"

नागपुरवाले दफ्तरी, हरिभाअू और दूसरोंके साथ बातचीत। दफ्तरीसे बापूने कहा : "आपका लेख मुझे पसन्द आया, परन्तु आखिरी वाक्य अच्छा नहीं लगता।

"मुझे लगता है कि अिस अुपवासके पीछे आध्यात्मिकता होगी तो अुसका असर होगा। मेरे सन्देशमें कुछ भी जीती जागती शक्ति होगी, तो लोग अुसे सुनेंगे। जो सच्चा और पवित्र मनुष्य अपनी बातके लिअे मरनेको तैयार है, अुसके वचन ही शास्त्र हैं। लोगोंके सामने आप यह व्याख्या रख सकते हैं।

"लोगों पर मैं दबाव डाल रहा हूँ, अिस आक्षेपका मेरा जवाब 'टाअिम्स' ने छापा है। लोग मुझ पर श्रद्धा रखते हों, तो अिसमें मेरा क्या क़सूर? मेरे विचार लोगोंको बुद्धिमत्तापूर्ण और स्वीकार करने जैसे लगते हैं और मेरी हिमालय जैसी भूलें होनेपर भी लोग अुन्हें मानते हैं, तों मैं क्या करूँ? यह कहना कि मैं अपने विचार लोगोंपर लादता हूँ, वाहियात है। लाठीके ज़ोरसे कोअी अैसा करे, तो विचार लादे हुअे कहे जा सकते हैं। दुनियामें यदि किसीपर मैंने अपने विचार लादे हों, तो वह अपनी पत्नी पर ही। अपना यह अपराध मैं स्वीकार करता हूँ। मेरा त्याग करनेकी अुसे छूट थी, मगर अिस छूटका कोअी अर्थ नहीं था।"

स० — "मगर अिस तरह विचार लादना क्या ज़रूरी नहीं है? खास तौर पर हमारे देशमें?"

बापू — "नहीं। यह विचार तो बड़ा घातक है। हमने क्या धीरजका दिवाला निकाल दिया है? हाँ, सेवा करके दूसरेके हृदयको अपनी दीन प्रार्थना सुनाकर विचार बदले जा सकते हैं। विचार लादनेकी बात भरसक टालनेकी ही नहीं है, बल्कि किसी भी क़ीमत पर टाल्नी ही चाहिये।"

स० — "अपने वक्तव्यमें आपने अपनी स्थिति बहुत साफ़ तौर पर रखी है।"

बापू — "मेरी बुद्धि या मेरा हृदय स्वीकार न करे, अैसे बहुमतके निर्णयको मैं कैसे स्वीकार कर सकता हूँ? मुसलमानों और दूसरोंकी तरह आज अेक अीसाअी बहन भी मुझे समझाने आअी थीं।"

सवाल — "आप अपना जीवन भीतरसे जो प्रकाश मिलता है अुसके अनुसार बिताते हैं। यदि यह प्रकाश बदला जा सके अैसा हो, तो फिर अिस प्रकाशकी क़ीमत ही क्या रही?"

बापू — "अिस प्रकाशकी कीमत तो यह है कि पिछले पैंतालीस बरसोंमें अुसमें तब्दीली नहीं हुअी। कहते हैं कि अिन्सान सारी अुम्र अीश्वरका अिनकार

करता रहा हो, मगर अन्तिम क्षणमें अीश्वरका नाम ले ले, तो अुसके पाप जलकर खाक हो जाते हैं। यह बात मैं अक्षरशः मानता हूँ। ठेठ आखिरी घड़ीमें अीश्वर हृदयके भीतर घुस जाता है। मैं दैवीपनका दावा नहीं करता और मेरा यह भी दावा नहीं है कि मैं कभी भूल नहीं करता; फिर भी अिस मामलेमें तो लोगोंको जान लेना चाहिये कि मेरे विचारोंमें कोअी फेरबदल होना संभव नहीं है।

"सनातन धर्मकी रक्षा आप असत्यसे कभी नहीं कर सकेंगे। . . . . शास्त्री और बिहारके कितने ही दूसरे शास्त्री अैसी कोशिश कर रहे हैं।"

हरिभाअूने पानवाले अगासेकी बात कही। वह महार मंडलमें गोमांस-त्यागका प्रचार करता है।

बापू: "मेरी ज़िन्दगीमें कितनी ही चीज़ें अैसी हैं, जिनके बारेमें मैं किसीकी श्रेष्ठता स्वीकार करनेको तैयार नहीं हूँ। अैसी अेक बात है गायके प्रति मेरा पूज्यभाव। अिसलिअे मेरे सामने गोमांस-त्यागकी दलील देनेकी ज़रूरत नहीं हो सकती। लेकिन सही अिलाज जाननेवाले अेक अुत्तम वैद्यके नाते मैं कहता हूँ कि मांग और महार लोगोंके मन्दिर-प्रवेशके लिअे आप गोमांस-त्यागकी शर्त नहीं रख सकते। अेक बार मन्दिर खोल दो, फिर मैं अुनसे गोमांसका त्याग करनेको कहूँगा। क्या मैं आज गोमांसभक्षी ब्राह्मणोंको मन्दिरोंमें जानेसे रोकता हूँ? अिसी तरह मांग और महार लोगोंको नहीं रोक सकता। मगर जब मन्दिर सबके लिअे खुले हो जायँ, तो बादमें मैं अैसी घोषणा ज़रूर करूँ कि गोमांसभक्षी मन्दिरमें नहीं जा सकता।"

'मन्दिरमें जानेवालों' की व्याख्याके बारेमें राजगोपालाचार्यके पत्र परसे फिर चर्चा खड़ी हुअी। राजाजी कहते हैं कि जिनका मन्दिरोंमें जानेका अधिकार है, वही मन्दिरोंमें जानेवाले हुअे। बापू कहते हैं कि जिन्हें आस्था हो और जो समय-समय पर मन्दिरमें जाते हों वे हैं। राजाजीका पत्र आते ही बापूने तुरंत अपनी व्याख्या बतानेवाला तार दिया। बापूके हाथके नीचे काम करनेवालोंकी कैसी कमबख्ती है, अैसा क्षण भरके लिअे लगा और आह भरी।

श्री शिवप्रसाद गुप्तका बड़ा करुण पत्र आया: "जो चीज़ सदियोंसे किसीकी सम्पत्तिके रूपमें चली आ रही है, क्या वह अुससे ले ली जा सकती है? और वह बलात्कार न होगा? गोमांस खानेवाले आदमीको मन्दिरमें प्रवेश करनेसे रोकनेका हिन्दू समाजको हक्क नहीं है? आपको अपना शरीर छोड़ देनेका क्या अधिकार है? वह तो समर्पित ही है।" अित्यादि।

अिन्हें बापूने लिखा: "मन्दिर किसीकी निजी सम्पत्ति हो और अुसे खुलवानेकी अिच्छा की जाय, तो यह सही है कि वह बलात्कार ही है।"

शिवप्रसादकी 'निजी' मन्दिरकी व्याख्या दूसरी है, बापूकी दूसरी है। बहस करनेवाले दो पक्ष अेक ही चीज़के दो अलग-अलग अर्थ करें (ambiguous middle काममें लें) अिसका यह अुदाहरण है।

मैंने बापूसे अेक मजेदार बात कही। देवदासने अेक बार पूछा था कि "मतगणनामें बापू, वल्लभभाअी, आप, मैं और बा हों, तो हम मन्दिर-प्रवेशके लिअे मत दे सकते हैं?"

बापू कहने लगे: "वल्लभभाअीके सिवाय हम सब मतदाता हो सकते हैं।"

वल्लभभाअी: "आप कोअी नहीं मगर मैं तो हो सकता हूँ, क्योंकि मैं तो मन्दिरोंमें बहुत गया हूँ। आप तो मन्दिरोंमें जानेका दावा अिसी परसे करते होंगे कि यरवदा जैसे मन्दिरमें हमेशा आनेको आप अपना धर्म बना चुके हैं और औरोंको भी भेजते हैं। यही न?"

आश्रममें छारा जातिके चोरी आदिके अुपद्रवका क्या अुपाय किया जाय, अिस बारेमें काफ़ी चर्चा हुअी। बापू बोले: "मावलंकर अेक वकीलकी हैसियतसे नारणदासकी दी हुअी जानकारी परसे कलेक्टरको ज़रूर लिख सकते हैं, मगर अंबालाल कमिश्नरसे कहे, यह तो सिफ़ारिशकी बात होगी। वह सिफ़ारिश करे, अिसके बजाय तो हम खुद ही अर्ज़ी दें यह क्या बुरा है? अंबालाल हमारे कहे बिना या सूचनाके बिना खुद ही कमिश्नरसे कहे यह दूसरी बात है। मेरा अपना धर्म तो यह कहता है कि हमें चाहिये कि हम अिन लोगोंसे जाकर मिलें, अुनके बीचमें रहें, अुनसे लूटे जायँ और वे मारें तो मरें। मगर यह हिम्मत मैं यहाँ बैठे हुअे किसीको नहीं दे सकता।"

१५-१२-'३२

आज मेजर भंडारीने आकर सन्देश दिया कि जिन क़ैदियोंको भंगीका काम करनेकी अिच्छा हो, अुन्हें यह काम देनेके बारेमें भारत सरकारने प्रान्तीय सरकारोंकी राय माँगी है। हरअेक कमिश्नर और आअी० जी० पी० को लिखना है। जवाब देनेसे पहले आअी० जी० पी० ने भंडारीको अुसे देखनेको बुलवाया था। आअी० जी० पी० ने यह खबर देनेको कहा कि भारत सरकारकी राय बापूसे मिलती है और अधीर न होनेका संदेश दिया। हाँ, खुदने तो यह सिफ़ारिश की थी कि बाहर जो भंगीका काम करते हों और अन्दर अिस कामको करनेकी माँग करें, अुन्हें वह करने दिया जाय। मेजरने आग्रहपूर्वक यह वाक्य निकलवा दिया। यह कहकर कि अिससे तो स्थिति ज़रा भी नहीं सुधरती।

मीराने पत्रमें लिखा था: "अुपवासका तत्त्वज्ञान बुद्धि स्वीकार करती है, मगर हृदय धड़के बिना नहीं रहता कि क्या होगा?"

अिसपर बापूने बुद्धि और हृदयका योग साधनेवाली श्रद्धा पर विवेचन किया :

"हृदय बुद्धिका अनुसरण नहीं कर सकता या बुद्धिके साथ सहयोग नहीं कर सकता, अिसका क्या कारण ? श्रद्धाका अभाव हो सकता है ? यद्यपि मैं किसी आखिरी निर्णयपर नहीं पहुँचा हूँ, मगर मेरी राय अुसी दिशामें बनती जा रही है। अगर मुझमें प्रेम भरा है, तो मेरी बुद्धि कहती है कि मुझे साँपसे भागना नहीं चाहिये। फिर भी मुझमें अितनी श्रद्धा नहीं होगी, अिसीलिअे मैं साँपको अपने पास नहीं आने देता। अैसे अुदाहरण बहुत दिये जा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि तू अिस दिशामें खोज कर और हृदय और बुद्धिके बीचके विरोधके बारेमें जितनी मिसालें याद आयें अुनकी खोज करनेकी कोशिश कर। अैसा करनेसे तेरे लिअे बुद्धि और हृदयका मेल बैठाना संभव होगा। मैं जो अुपवास करता हूँ वह मेरे लिअे और दूसरे सबके लिअे अच्छा हो, तो फिर अुससे दिलको खुश होनेसे क्यों अिनकार करना चाहिये ? मैं तन्दुरुस्त होता हूँ तो हृदयको आनन्द होता है, मगर किसी खास मामलेमें मेरे तन्दुरुस्त रहनेके बजाय मेरा अुपवास करना ज्यादा अच्छा हो सकता है। बुद्धि यही कहती है, फिर भी बुद्धिकी स्पष्ट गवाहीसे हृदय अिनकार करता है। क्या हृदय श्रद्धाके अभावमें अैसा करता है ? या अिसमें आत्मवंचना होती है ? वस्तुतः क्या बुद्धिने शरीरकी रक्षा करने लायक अुपवासकी आवश्यकता स्वीकार की ही नहीं है ? मैंने यह प्रश्न कोअी निर्णय करनेका प्रयत्न किये बिना तेरे सामने रखा है। मैं चाहूँ, तो भी निर्णय करने लायक सामग्री मेरे पास नहीं हो सकती। कुछ नहीं तो अभीके लिअे तो मैं यह सवाल यहीं छोड़ देता हूँ।"

आम्बेडकरकी मंडली — चित्रे, 'जनता' के प्रधान संचालक वगैरा आये। अुनकी शिकायत :

मंडली — अस्पृश्यता-निवारण संघकी कार्रवाअी और कामकाजके विवरणमें डॉ० आम्बेडकरके पत्रका कोअी अुल्लेख नहीं है।

बापू — आपकी शिकायत यह होनी चाहिये कि अुसमें अुठाये हुअे प्रश्नका कोअी विचार नहीं किया गया।

मेरे खिलाफ़ कोअी शिकायत कहिये। मैं आपसे कह देता हूँ कि मैं कितनी तरहसे आपकी मदद कर रहा हूँ।

मंडली — देवलखकरसे आपने यह कहा है कि 'अिन लोगोंको प्रेमसे जीतिये'। मगर अिनमें प्रेम हो तब न ?

बापू — तब आप अिस बातको अुलट दीजिये और आप अिन्हें प्रेमसे जीतिये।

मंडली — नहीं, नहीं; ये तो गौरीशंकर पर्वत जैसे बड़े हैं। हम अिनके विरुद्ध अच्छी तरह लड़ ज़रूर सकते हैं, मगर हमारी हिंसाकी भी हद है।

बापू — मेरा पक्का विश्वास है कि पक्षपातको टालना ही चाहिये। सवर्णोंमें से अिस वृत्तिको निकाल देनेकी मैं जीतोड़ कोशिश करूँगा।

मंडली — अिन लोगोंको सामाजिक सुविधाअें देनेके बारेमें क्या?

बापू — यह काम हर प्रान्तमें हो रहा है। लोगोंको समझाया जा रहा है। यह काम ढिलाअीमें तो डाला ही नहीं गया है। आप मलाबारमें जाकर देखिये कि वहाँ कितना बड़ा परिवर्तन हो रहा है।

मंडली — मगर अिस वर्गके अुद्धारके लिअे आपके पास क्या कार्यक्रम है?

बापू — ठीक अिसीके लिअे तो मैंने यह मंदिर-प्रवेशका प्रश्न अुठाया है। सनातनी अिसीसे घबरा अुठे हैं। ये लोग कहते हैं कि और सब कुछ करो, कुअोंसे पानी भरवाओ, परन्तु मन्दिरोंको न छुओ। यह तो अभी सेरमें पहली ही पूनी है। यह काम ज्यादा आगे चलेगा, तब दूसरे सभी प्रश्न सुलझ जायँगे। मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नके साथ खूब ही प्रचार कार्य करना है। और मलाबारमें यह काम अच्छी तरह हो रहा है।

मंडली — अस्पृश्योंके दुःख दूर करने और स्पृश्योंकी तरफ़से अुनको होनेवाली परेशानीका अुपाय करनेके लिअे वकीलोंका अेक मंडल बना दीजिये।

बापू — हम स्वयंसेवक वकीलोंकी सेवा लेंगे।

मंडली — स्वयंसेवकोंसे काम नहीं होगा।

बापू — मेरे जैसे स्वयंसेवक हों तो भी?

मंडली — अिन्हें मिलोंके बुनाअी विभागमें भरती करना चाहिये। आज तो भोजनालयों और पानीके सार्वजनिक नलों पर भी अस्पृश्यता है। मजूर महाजनकी चायकी होटलोंमें भी अस्पृश्यता है। क्या आप चेम्बर ऑफ़ कॉमर्सको हिदायत नहीं करेंगे कि हमाल वगैरा भी अछूत लोगोंमें से ही लें?

आपके चातुर्वर्ण्यके विचारोंमें भी कोअी परिवर्तन हुआ है क्या?

बापू — नहीं भाअी, मैं तो चातुर्वर्ण्यको मानता ही हूँ। रोटी-बेटी व्यवहारमें कोअी बंधन न होने चाहिये। यह कहनेके लिअे शास्त्रोंका कोअी आधार नहीं कि अलग-अलग वर्णोंमें शादी नहीं हो सकती। मेरे जीवनमें मैंने अिस बातपर अमल किया है। मगर अिस वक्त मैं अिसका प्रचार हाथमें नहीं लेना चाहता। जाति-पाँतिके सुधारका काम मैं अभी हाथमें लूँ, तो अस्पृश्यता निवारणका काम बिगड़ जाय। सभी धंधे वंशपरंपरागत होने चाहिये। करोड़ों लोग प्रधानमंत्री और वाअिसरॉय नहीं बनेंगे। जब तक आश्रम-धर्म जीवित नहीं होगा, तब तक यह वर्ण-धर्म भी जीवित नहीं होगा।

मंडली — आपको हम अपना आदमी किस हद तक मान सकते हैं ?

बापू — आम्बेडकर पैदा हुअे अुसके पहलेसे ही मैं तो अिन्हींका आदमी हूँ। मेरे पुराने लेखोंमें अुन्हें पसन्द हों, अैसी बहुतसी बातें मिल जायँगी। मेरे जितनी कड़ी भाषामें किसीने अस्पृश्यताका विरोध नहीं किया।

मंडली — मगर यह तो 'माला' पत्रका संचालक भी कहता है।

बापू — जो सच्चाअीके साथ करे वह कह सकता है। मगर सोलनके शब्दोंमें कहें, तो मनुष्यकी मृत्यु होनेके बाद अुसे प्रमाणपत्र देना चाहिये। कौन जानता है कि मैं बुरेसे बुरे प्रकारका सनातनी न निकलूँ ?

प्रज्ञानेश्वर यति और अगासे आये।

अुन्हें बापूने कहा — राजाजी तो सोना हैं। अुनकी बात दुनियाके किसी भी हिस्सेमें मानी जायगी।

सवर्णोंके अत्याचार सहते-सहते अछूतोंका मन अितना नाजुक हो गया है कि आप अुनके आगे कोअी भी शर्त रखेंगे तो वे तिलमिला अुठेंगे। लेकिन आप मन्दिर खोल दीजिये और फिर अुन्हें गोमांस छोड़नेको कहिये तो वे तुरंत सुनेंगे। आप ही बताअिये, गोमांस भक्षीको हिन्दू कहा जा सकता है ? मगर कितने ही हिन्दू गोमांस खाते हैं।

अगासे — मैं तो गोमांस भक्षीको ब्राह्मण या हिन्दू नहीं कहूँगा।

बापू — ठीक। मगर आप और मैं टेढ़े-मेढ़े ढंगसे गोमांस भक्षण करते हैं, अुसका क्या ? आप मेरे हाथमें बन्दूक देकर मुझसे छुड़वायें तो कौन ज़िम्मेदार होगा, आप या मैं ? अिसी तरह हमने अिन लोगोंका कुचल डाला है। हमारी मरी हुअी गायें अुठा कर ले जाने, अुनका चमड़ा अुधेड़ने और अुनका मुर्दार मांस खानेको अुन्हें हम ही मजबूर करते हैं। अिसलिअे दर असल हम ही ज़िम्मेदार हैं। महाड़का अुदाहरण सुना है न ? वहाँ अंत्यजोंने मुर्दार मांस खाना छोड़ दिया और मरे हुअे ढोर अुठानेसे अिनकार कर दिया।

अगासे — मगर मरा हुआ न खानेको कहा, तो कहते हैं कि हम गाय मार कर खायँगे।

बापू — मगर आप मेरी पूरी बात सुन लीजिये। महाड़के सवर्णोंको तो यह डर लगा कि अब मरे हुअे ढोर कौन अुठायेगा। अिसलिअे अुन्होंने अुन लोगोंको खानेके लिअे मजबूर किया और न खानेपर मारा।

अगासे — अगर वे हिन्दू हों, तो अुन्हें शुद्ध करना और मन्दिरोंमें लेना है न ? मगर अछूत तो गोमांस खानेके कारण हिन्दू ही नहीं हैं।

बापू — अरे आपके मन्दिर सच्चे होंगे, तो अिन लोगोंको पवित्र कर देंगे। तुलसीदासने कहा है कि सुधातु कुधातुको सुधातु बना देती है। मन्दिरोंके बारेमें

यह भावना होगी, तभी सच्ची प्राणप्रतिष्ठा होगी। क्या आज ये मन्दिर निकम्मे नहीं हैं? यह भावना कहाँ है? दिल्लीमें मुझे अेक पुजारीने कहा था: 'यह मन्दिर मुसलमानोंने तोड़ दिया।' मैंने पूछा: 'तू कहाँ था?' वह बोला: 'मैं यहाँ रहता तो मर चुका होता।' मैंने कहा: 'तूने ही यह मन्दिर तोड़ा है, मुसलमानोंने नहीं। तू वहाँ मर गया होता, तो मन्दिर बच जाता।'

अगासे — यह भावना हिन्दुओंमें पैदा करनेके लिअे क्या करना चाहिये?

बापू — मेरे जैसेको अुपवास करना चाहिये।

भाअी अगासे अेक सज्जन व्यक्ति हैं। यह वहम होने पर भी कि पानवालोंमें अन्त्यजोंको काम करने नहीं रखना चाहिये, अुन्हें रखते हैं। महारों और मांगोंकी बस्ती बसाअी है और अुन्हें अच्छी तरह रखते हैं। मगर अुन्हें प्रायश्चित्तकी भावनासे बसाना चाहिये, यह समझाना लगभग असंभव हो गया। सन्यासी समझ गये, मगर अगासे नहीं समझे!

तळेगांवकर और दूसरोंके साथ:

१६-१२-'३२

बापू — अछूत खुद मांस छोड़ें यह ज़रूरी है, मगर यह शर्त हम नहीं रख सकते। आन्दोलनको गाँवोंमें पहुँचाना ही चाहिये। सब नल खुल जाने चाहियें। अछूतोंकी सेवाके लिअे खर्च करनेकी म्युनिसिपल फंड पर पहली जिम्मेदारी हो। मन्दिरके बाहर ज़रूर अैसा तख्ता लगाया जा सकता है कि गोमांस खानेवाले अिसके भीतर नहीं जा सकते। वेद भी नीतिविरुद्ध हों, तो वे मेरे लिअे त्याज्य ही हैं। और अिसी कारणसे शास्त्रियोंको न आना हो तो वे न आयें। सत्यके बारेमें महाभारतमें कहा गया है कि सत्यके मुकाबलेमें कोअी भी चीज़ रख दीजिये, सत्य ही ज्यादा भारी होगा। अगर वेद सत्यके विरुद्ध हों, तो वेद त्याज्य हैं; क्योंकि सत्य ही परमेश्वर है।

बी० आर० जोशी और दूसरे पाँच-छः आदमियोंके साथ:

स० — अकेले हिन्दुओं पर किसलिअे सारी जिम्मेदारी होनी चाहिये? अस्पृश्य तो निष्क्रिय हैं। क्या आप यह कहते हैं कि ये लोग कुछ न करें, तो भी हमें तो करना ही चाहिये?

बापू — क्या आप यह नहीं समझ सकते कि आप अिन लोगोंकी सेवा करने लग जायँगे, तो ये लोग भी कुछ न कुछ करने लगेंगे? छोटे बच्चेसे कुछ कराना हो तो आप किस तरह काम लेते हैं? हमने अन्याय किया है, अतः हमें प्रायश्चित्त करना ही चाहिये।

स० — मगर अस्पृश्य क्या कोअी बच्चे हैं?

बापू — बच्चेसे भी बुरी हालतमें हैं। दिन प्रतिदिन अुन्हें अधिक निराधार बनाया जा रहा है। बच्चा तो बड़ा भी हो जायगा, मगर अस्पृश्योंको तो बढ़ने ही नहीं दिया जाता। सवर्ण हिन्दू अपने कर्तव्यके बारेमें जाग्रत हो जायँगे, तो अस्पृश्योंकी तरफसे भी जवाब मिलेगा। यह तो विज्ञानका मामूली नियम है।

स० — आप मन्दिर-प्रवेशकी बात कहते हैं। मगर किसी भूखे आदमीको खानेको चाहिये, तो वह घरमें भी घुस जाय यह क्या अुचित है? अस्पृश्योंका यही हाल है। अुन्हें भोजन छीन लेनेका आग्रह क्यों रखना चाहिये? अुन्हें दी जाय वही खुराक वे स्वीकार कर लें।

बापू — मगर आप अुन्हें खुराक देते भी हैं?

स० — अुन्हें तो सिर्फ दर्शन चाहियें न? हम अपने ढंगसे अुन्हें दर्शनोंकी सुविधा दे देंगे। मगर अुन्हें मन्दिरमें जानेवाले दूसरे लोगोंकी भावनाको क्यों दुखाना चाहिये?

बापू — किसी पर जबरदस्ती करनेका यहाँ प्रश्न ही नहीं है।

स० — पूनामें मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें प्रस्ताव पास हुआ। मगर मत गिननेमें धोखा किया गया था। अस्पृश्योंमें बगावत कराना ठीक है? तिलक महाराजने कहा है कि 'लोगोंको साथ लेकर काम करना चाहिये।' आप अिससे सहमत हैं? लोकमान्य कहते थे कि 'किसी भी नेताका, जहाँ तक लोग जा सकते हैं अुससे आगे जाना ठीक नहीं।'

बापू — लोकमान्यने तो यह भी कहा है कि 'आपको मार्गप्रदर्शनकी ज़रूरत हो, तो अपने नेताका अनुसरण करना चाहिये।'

स० — मगर यह तो अुस वक्त, जब हमें अिस तरह मार्गप्रदर्शनकी ज़रूरत हो। हम तो यह चाहते हैं कि आप हमारे साथ रहें और हमारा मार्गप्रदर्शन करें।

बापू — तब तो आपका आभार मानता हूँ और कहता हूँ कि आपके साथ रहनेकी शर्त पर मुझे आपका मार्गप्रदर्शन नहीं करना है। अगर आपको मार्ग-प्रदर्शन चाहिये, तो मैं अपनी शर्त पर ही आपका मार्गप्रदर्शन कर सकता हूँ।

अिस तरह अनेक सवाल जवाब हुअे। बापू बहुत थके हुअे थे। तंग आ गये। कहने लगे: "तब तो आप मुझे कष्ट दे कर शिक्षा लेने आये हैं।"

अिसपर वह कहने लगा: "हाँ, साहब, हमारा यह हक है न?"

जो बातें अखबारोंसे भी मिल जाती हैं, अैसी अनेक बातें वह पूछता ही जा रहा था। वह अेडवोकेटकी परीक्षाके लिअे तैयार हो रहा था। अुसकी सवाल पूछने और समझनेकी शक्ति देखकर बापूको कहना पड़ा: "अिस तरह तो आप अपने बहुतसे मुवक्किलोंको बरबाद कर देंगे।"

मगर महाराष्ट्रमें तर्क-वितर्क करनेमें आनन्द पानेका गुण विशेष है। कअी महाराष्ट्री डाकोरका सवाल पूछते हैं। क्योंकि अेक अखबारने यह दलील की थी कि 'गांधी डाकोरका मन्दिर छोड़कर गुरुवायुरको खुलवानेके लिअे अुपवास करने चले हैं, अिसका कारण यह है कि गुजरातियोंका राजकाजमें सहारा चाहिये और अुनका विरोध मोल लें, तो वह सहारा वे खो बैठें!'

बापू कैसे-कैसे आदमियोंको कितनी शान्तिसे जवाब देते हैं, अिसका नमूना: आज त्रिवेन्द्रमके दीवान पेशकारका चौदह सवालोंका जवाब तफ़सीलसे दिया। अैसा ही अुत्तर अेक और सनातन धर्म अेजेंसी वालेको दिया, जिसके पत्रोंमें अुसके दयाजनक अज्ञानके सिवाय और कुछ नहीं होता था। अेक आदमीने बापूको सुझाया कि 'जैसे शंकराचार्यने दिग्विजय किया था, अुसी तरह आप क्यों नहीं करते? अुपवास तो ठीक अुपाय नहीं है।' अैसे विरोधियोंको भी जवाब देना क्या दिग्विजयका अेक भाग नहीं कहा जायगा?

आज ज़रूरी अंग्रेज़ी पत्रोंके सिवाय कितने ही छोटे-छोटे ज़रूरी पत्र भी लिखवाये। वढ़वाणमें अस्पृश्यता-निवारण सम्बन्धी जुलूसकी

१७-१२-'३२

फज़ीहत हो गअी। अुसका वर्णन करनेवाले कीरचंदको जवाबमें बापूने लिखा: "आम तौर पर कह सकता हूँ कि जहाँ हुल्लड़ होनेकी सम्भावना हो वहाँ और सत्ताकी भी मदद न मिले वहाँ, सम्मेलन और जुलूस वगैरा छोड़ देने चाहियें। धीरे-धीरे लोकमत तैयार करना चाहिये। सेवाकार्य तो करते ही रहना चाहिये। अैसा करते-करते कुछ लोगोंको हरिजन मुहल्लोंमें रहनेके लिअे भी जाना चाहिये।"

बापूको प्रेम-बाण कैसे मारते आते हैं! प्यारेलालका पत्र नहीं आता। अुसे लिखा: "तुमने न लिखनेका निश्चय किया लगता है। या तो भगवान रखे वैसे रहना या प्यारेलाल रखे वैसे। शरीर अच्छा हो और मुझे कुछ लिखनेको ही न हो, तो मुझे सन्तोष है।"

परशरामको लिखा:

"...बहन दुधारू गाय है। अुसके दोषोंका पार नहीं। अुसके गुण दोषोंसे भी ज्यादा हैं। तुलसीदासका पाठ याद रखकर गुणोंको ग्रहण करना और दोषोंका त्याग करना। हम सब दोषोंसे भरे हैं, यह जानकर साथीके दोष सह लें!"

बालकोंको लिखा:

"नारणदासका कहना है कि खादी-कार्य, बढ़अीका काम, खेती, चर्मालय, और दुग्धालयका काम जिसने नहीं सीखा, अुसने कुछ सीखा ही नहीं। यह बिलकुल

ठीक है। अभी तक तुम आश्रमकी अेक खास बात समझे हो, अैसा नहीं मालूम होता। वह यह है। खेती, बढ़अीगिरी वगैरा भी शिक्षा है और अुससे भी बुद्धिका और साथ ही दूसरी कितनी ही अिन्द्रियोंका विकास होता है। अगर ये धन्धे शिक्षाके अंगके रूपमें सिखाये जायँ, तो अुसकी क़ीमत अक्षरज्ञानसे ज्यादा है। यह बात मैं आश्रमको भेजे हुअे किसी पत्रमें बता चुका हूँ। यदि याद न हो या यह लेख तुम्हारे हाथमें तुरन्त न आये तो पूछ लेना। मैं फिर लिखूँगा। क्योंकि यह बात तुम सबके समझने लायक़ है। अिस लिखनेका यह अर्थ न करना कि मैं अक्षरज्ञानका दर्जा गिरा देना चाहता हूँ। **अक्षरज्ञानका मूल्य मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मुझसे अधिक अच्छा अुसका अुपयोग करनेवाले बहुत आदमी अेकाअेक नज़र नहीं आयेंगे। मेरा हेतु धन्धोंकी शिक्षाको अक्षरज्ञानकी बराबरीमें रख देना है।** अितनी बात जो समझ लेंगे, वे धन्धोंकी शिक्षाका त्याग करके अक्षरज्ञान सीखनेका लोभ कभी नहीं करेंगे। अैसे लोगोंका अक्षरज्ञान ज्यादा चमक अुठेगा। अितना ही नहीं बल्कि जनताको भी अुससे अधिक लाभ होगा। यह बात अच्छी तरह समझ गये होगे, तो तुम सब ढोर चरानेको तैयार रहोगे।"

बीमारोंको रोज़ दवाओंकी गोलियाँ भेजते ही रहते हैं। कुसुमके लिअे आजकी गोली: "हरअेक बीमारके जीनेकी कुंजी, जहाँ तक सम्भव है वहाँ तक, अुसके अपने हाथमें होती है। वह निराश होकर बैठ जाय, तो किसी भी डॉक्टरकी दवा काम नहीं आती, और वह हिम्मत न हारे तो कोअी भी फंकी अमूल्य दवा बन जाती है। अिसलिअे तीन नियम याद रखना। अेक, हिम्मत हारना ही नहीं। दूसरा, जिसके हाथमें नब्ज़ दे दी हो, वह जैसा कहे वैसा करना। और तीसरा, कैसा भी दुःख होता हो तो भी रामनाम रटना और प्रफुल्लित रहना, रोना नहीं।"

हरिभाअू, बाबासाहब पोद्दार और धुंधीराज शास्त्री बापट आये।

स० — वेद अीश्वरकी स्फूर्ति हैं, अिसलिअे अब जो स्फूर्ति होगी अुसकी भी वही कीमत होगी, जो नीतिके विरुद्ध होगा अुसे मैं बिलकुल नहीं मानूँगा। क्या आपके ये वचन ठीक हैं?

बापू — हाँ।

पोद्दार — तब तो वैदिक धर्मकी सारी जड़ हिल जाती है। हिन्दू धर्मका आधार वेदों पर है, जैसे अीसाअी धर्मका बाअिबल पर और अिस्लामका कुरान पर। अगर स्फूर्तियाँ समय-समय पर बदलती हों, तो प्राचीन वैदिक धर्म सनातन माना ही नहीं जा सकता।

बापू — तो क्या हम ओीश्वरकी शक्तिकी मर्यादा बाँध देंगे? मैं मानता हूँ कि वेद ओीश्वरप्रेरित हैं। मगर मान लीजिये कि ओीश्वर दूसरे वचनोंकी भी प्रेरणा करे और लोग अुन्हें स्वीकार कर लें तब? यह कहनेका कोओी अर्थ ही नहीं कि ओीश्वरमें दूसरे वेदोंकी प्रेरणा करनेकी शक्ति ही नहीं। यह तो निरीश्वरवादी वचन हुआ। परन्तु अिससे मैं यह भी नहीं कहना चाहता कि ओीश्वर किसी दूसरे ग्रन्थकी प्रेरणा अभी करनेवाला है।

पोद्दार — मगर वेद ओीश्वरप्रेरित हों, तो भविष्यमें अुनके विरुद्ध प्रेरणावाला ग्रंथ कैसे आयेगा?

बापू — दस हज़ार वर्ष पहले जो काला हो वह आज सफ़ेद नहीं हो सकता। मूलभूत सिद्धांत शाश्वत काल तक अेकसे ही रहते हैं। मगर वेदोंमें तो मूलभूत सिद्धांतोंके सिवाय और भी बहुत कुछ है। अगर अैसा नहीं हो तो गीताके चौथे अध्यायमें जो कहा है कि ओीश्वर समय-समय पर अवतार लेता है, अुसका क्या अर्थ?

ओीश्वर तो वेदोंका और अिस मानव-कुलका भी संहार कर सकता है। और कोओी दूसरी ही जाति और दूसरे ही वेद अुत्पन्न कर सकता है। आप तो कहेंगे कि ओीश्वर खुद अपने साथ असंगत है।

स० — मगर किसी सन्तने अभी तक वेदके ओीश्वरप्रेरित होनेके बारेमें शंका नहीं की है।

बापू — मैं भी नहीं करता। मैं तो अितना ही कहता हूँ कि वेदोंमें ओीश्वरकी कोओी आख़िरी प्रेरणा नहीं है। अन्तमें तो ओीश्वर भी हम दोषपात्र मनुष्योंके द्वारा ही बोलता है न? और हमारे पास जो वेद ग्रन्थ हैं, वे भी कोओी पूर्ण रूपमें नहीं। बहुतसे हिन्दू मानते हैं कि अकेले वेद ही ओीश्वर-प्रेरित ग्रन्थ हैं। मैं कहता हूँ कि अैसे और भी ओीश्वरप्रेरित ग्रन्थोंकी सम्भावना है। वेद और ज्ञानेश्वरी प्रकट हो गओी, तो ओीश्वरने कोओी हाथ नहीं धो लिये। हिन्दू धर्मकी विशेषता तो यह है कि अुसने सभी ओीश्वरप्रेरित ग्रन्थोंमें अेकवाक्यता और मेल साधनेकी कोशिश की है। अेक ही सिद्धांत अलग-अलग संयोगोंमें अलग-अलग ढंगसे अमलमें लाये जा सकते हैं।

वे — अब हम समझ गये।

हरिभाअू — श्रीधर शास्त्री पाठक कहते हैं कि महात्माजी वेदोंको नहीं मानते हों, तो अुनसे मिलनेका कोओी अर्थ नहीं।

बापट शास्त्री — अस्पृश्यता नित्य नहीं। संस्कृत लोग और असंस्कृत लोगोंका ही अर्थ स्पृश्य और अस्पृश्य है। अस्पृश्यता निवारणके लिअे शास्त्रोंमें सुविधा है। दोनों पक्षोंको हठ छोड़ देना चाहिये।

स० — अस्पृश्यताकी भावनाका ही नाश चाहते हैं?

बापू — आज जिसे हम अस्पृश्यता मानते हैं, असकी जड़ अुखड़ जानी चाहिये। मगर कामके सिलसिलेमें अुस कामके करते समय जो अस्पृश्यता ज़रूरी है, वह हरगिज़ न मिटनी चाहिये, मिटेगी भी नहीं। मगर अिस भावनाका नाश होना चाहिये कि भंगी तो हमेशाके लिअे भंगी ही है।

स० — क्या यह नाश तुरन्त ही हो सकता है?

बापू — यह असंभव है। सर्वथा नाश तुरन्त हो ही नहीं सकता। भावना बदल सकती है।

स० — अस्पृश्य चाहते हैं अिसलिअे? या हममें अनुकंपा आ गअी है अिसलिअे?

बापू — जो सवर्ण हिन्दू हैं, अुन्होंने जबरन मन्दिरोंसे हरिजनोंका बहिष्कार किया है। दूसरे अत्याचार भी किये हैं। अिसके लिअे प्रायश्चित्त करना चाहिये। हम प्रायश्चित्त नहीं करेंगे, तो अस्पृश्य हमला करेंगे। अपने दोषको देख कर अुसे धो डालना हमारा कर्त्तव्य है।

स० — शास्त्रोंमें अस्पृश्यताका निषेध भी है और अुसका बचाव भी है। जो बचाव पक्षके वचन संग्रह करते हैं, क्या अुनकी भावनाके लिअे आपको कोअी आदर नहीं?

बापू — है। मगर आज तो लोगोंके मनमें खलबली मच गअी है। और मैं जिस विनय और विवेकके साथ बात करता हूँ, अुसे ये लोग नहीं समझते। मैं कितना समझा रहा हूँ, कितना लिख रहा हूँ, और कितना समाधान सुझा रहा हूं, अिसे कोअी नहीं सुनता।

जहाँ सिद्धान्तोंका सवाल होता है, वहाँ मैं लाभालाभकी गिनती नहीं करता। रोटी-बेटी व्यवहारके साथ अस्पृश्यताका कोअी वास्ता नहीं। हिन्दू समाजमें आज तो रोटी-बेटी व्यवहारके बंधन व्यापक हैं। मगर अिसे मैं अिस सुधारका अंग नहीं मानता। हाँ, यह सुधार भी होगा ज़रूर। वर्ण तो वैज्ञानिक सिद्धान्त है। हाँ, अुसमें आज बेशुमार खराबियाँ आ गअी हैं। अमलमें अुसके साथ रोटी-बेटी व्यवहारका कोअी संबंध नहीं। आप वेदोंको नीचे न अुतारिये, मगर स्मृतियोंको वेदोंके समकक्ष अूपर चढ़ाअिये। बादके ग्रंथोंका अर्थ वेदोंके अनुसार करना चाहिये। स्मृतियोंमें भोजन-व्यवहार संबंधी कोअी नियम हों, तो वे अुस समय ज़रूरी रहे होंगे, मगर आज अुनका कोअी अुपयोग नहीं रहा। वर्ण हमारे पेशोंको नियंत्रित करते हैं। वर्णधर्मसे धंधे वंशपरम्परागत हो जानेके कारण मनुष्यकी शक्तिका बचाव होता है। हिन्दू धर्मने आनुवंशिकताके नियमोंका पूरी तरह लाभ अुठाकर कहा है कि बापदादेका धंधा करना चाहिये। भोजन सम्बंधी

और विवाह सम्बंधी नियम मनुष्य-जाति अपनी समय-समयकी ज़रूरतोंके अनुसार बनायेगी। मनुष्य अपनी अभिरुचि और सुविधाके मुताबिक भोजन व्यवहारको नियंत्रित करता है। अिसी तरह मनुष्य अपने आसपासमें या बाहरसे कन्याका चुनाव करता है। आजकल तो वर्णव्यवस्था है ही नहीं। समाज पूरी तरह संकर हो गया है। अिसलिअे नहीं कि हम मिश्र-विवाह और मिश्र-भोजन करते हैं, बल्कि अिसलिअे कि हम मूल सिद्धान्तोंको भूल गये हैं। आज तो हम सभी शूद्र हैं। समाजकी पुनर्रचनामें हम अूँच-नीचका भेद मिटा देंगे। मेरे पास अगर समय और शक्ति हो, तो देशके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक जाकर मैं ज़ाहिर करूँ कि वर्णव्यवस्था तो है ही नहीं, हम सब शूद्र हैं।

स० — यह मन्दिर-प्रवेश तो अेक भावनाका प्रश्न है। अछूतोंको हमारे मन्दिरोंका मोह नहीं है। अुनके अपने मन्दिर हैं। आपके अुपवाससे अिस प्रश्नको कृत्रिम महत्त्व मिल गया है। अछूतोंको मन्दिर-प्रवेशका आग्रह किसलिअे रखना चाहिये? अिससे झगड़े खड़े होते हैं और मराठों व महारोंमें खून बहेगा। ज्ञानेश्वरके मन्दिरके लिअे आम्बेडकरने धमकी दी और फिर फज़ीहत हुअी।

बापू — मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन अछूतोंके कहनेसे नहीं अुठाया गया। यह हमारे प्रायश्चित्तका ही अेक भाग है। अगर हम यह आन्दोलन अुचित रूपसे चलायेंगे, तो कोअी झगड़ा नहीं होगा। मैं अछूतोंसे कहता हूँ कि अभी तुम ठहर जाओ। अिस प्रायश्चित्तकी दृष्टि पर ज़ोर देकर मैं झगड़ोंको टाल रहा हूँ।

मिस बार आअीं। अुन्होंने देहातमें जानेकी बात कही। बापूने पहले अुनकी शान्तिनिकेतनके बारेमें अुठाअी गअी शंकाके जवाबमें कहा:

१८-१२-'३२

"शान्तिनिकेतन हिन्दुस्तानमें अेक अनन्य स्थान है। शायद अिस पृथ्वी पर भी वह अनन्य हो। हाँ, वहाँ कुछ चीज़ें अैसी हैं, जो मुझे पसन्द नहीं। मगर किसीको देहातका काम देखनेकी अिच्छा हो, तो और जगहोंके साथ-साथ शान्तिनिकेतन देखनेकी मैं अुसे खास सलाह देता हूँ। वहाँ वे लोग अीमानदारीसे कोशिश कर रहे हैं। देहातके काममें जिसे दिलचस्पी हो, अुसे शान्तिनिकेतन देखना ही चाहिये।"

अिसके बाद आश्रममें जानेकी सलाह दी और कहा: "आश्रमको देखकर मेरी क़ीमतका अंदाज़ लगाना। मुझमें झूठी नम्रता नहीं। मैं जैसा हूँ अुससे मेरा दूसरा ही चित्र-खींचनेवाले मित्र भी है। मगर मनुष्यके मूल्यका अन्दाज़ अुसकी बनाअी हुअी संस्था परसे लगाना चाहिये। जैसे कविका मूल्य शान्ति-निकेतन परसे लगाया जा सकता है, वैसे ही मेरी क़ीमत आश्रम परसे लगाअी जा

सकती है। मनुष्यको यह बता देना चाहिये कि अुसके अिरादे कोअी क्षण-क्षणमें आने जाने वाले विचार नहीं, परन्तु स्थायी रूपसे अमलमें लानेके होते हैं। मैं अहिंसाके बारेमें जो लिखता हूँ, अुसे अमलमें लाकर दिखाना है।"

फिर छारोंकी बात करते हुअे कहा : "आश्रमकी कमज़ोरीका यह अेक विचित्र अुदाहरण है। छारोंका धंधा चोरी करना है। अब हमें अिनके बीचमें रहनेका निश्चय कर लेना चाहिये। पुलिससे हम शिकायत नहीं कर सकते और अुन्हें आनेसे रोकनेके लिअे बल प्रयोग भी नहीं कर सकते। अुनका कोअी विरोध नहीं होता, अिसलिअे वे ज्यादा-ज्यादा ढीठ होते जा रहे हैं। अिसका अुपाय ज़रूर है। मगर अुस अुपाय पर अमल करनेकी हममें शक्ति नहीं है। अुपाय तो यही है कि हम कोअी भी माल-असबाब न रखें, और जो हो अुसे जो ले जाना चाहे, अुसे ले जाने दें। अहिंसाका पालन करना हो तो अिस सवालका तुरंत जवाब ढूँढ़ना चाहिये।

मिस बार — कुछ भी मुश्किल न हो, तब तो अिस पृथ्वी पर सत्ययुग आ जाय।

बापू — यह तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु मरुभूमिमें हरियाली हो सकती है और आश्रम वैसा बननेकी आशा रख सकता है।

अिसके बाद नटराजन और देवधर आये।

नट० — आपने अिंग्लैण्डमें जिस चीज़के होनेको रोकनेका प्रयत्न किया, वह यहाँ हो रही है। हमारे समाजमें सनातनी और सुधारक अैसे दो बड़े भाग हो गये हैं। हमारे समाजको छिन्न भिन्न होनेसे रोकनेके लिअे यह ज़रूरी है कि आप बाहर आ जायँ। मुझे बहुत ही आवश्यक मालूम होता है कि अिस आन्दोलनको चलानेके लिअे आपको बाहर आ ही जाना चाहिये। आपके शब्दोंमें कहूँ, तो झगड़ा रोकनेके लिअे आपको ज़ामिन बनना है। मगर मैं नहीं जानता कि आप किस तरह बाहर आ सकते हैं।

बापू — मैं भी नहीं जानता। जिन्हें अकेला यही काम करना हो अुन पर कोअी अंकुश न होना चाहिये। जेलमें पड़े हुअे लोग भी यह कह कर बाहर जा सकते हैं कि हम अपनी प्रवृत्तियाँ अकेले अस्पृश्यता निवारणके काम तक ही सीमित रखेंगे। लेकिन अुन्हें अैसा करना चाहिये या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। मैं यह भी नहीं कह सकता कि वे अैसा करें, तो मुझे वह अच्छा लगेगा। लेकिन यह बात नहीं है कि कोअी सविनय-भंगकी लड़ाअी छोड़ दे, तो वह मेरा साथी नहीं रहेगा या मुझे कम प्रिय हो जायगा। मान लीजिये मैं बिना किसी शर्तके बाहर चला जाअूँ, तो संभव है कि मैं लोगोंको सविनय-भंग छोड़ देनेकी सलाह दूँ। लेकिन आज यहाँसे अैसी किसी शर्तमें मैं बँधना नहीं चाहता।

नट० — क्या सविनयभंग फिलहाल मुलतवी कर देनेकी संभावना नहीं है?

बापू — मैं बिना शर्त बाहर चला जाअूँ, अुसके बाद अिसका विचार किया जा सकता है।

नट० — यह तो मैं आपसे नहीं कह सकता कि आप किसी तरहका आश्वासन दें। लेकिन जब आपने यह कहा है कि अिस कामके लिअे मेरा जीवन समर्पित है, तो अुसका अर्थ यह होता है कि और सब काम छोड़कर अब आप यही काम करेंगे। आप यह तो नहीं चाहते कि समाजके टुकड़े हो जायँ। आप यही चाहते हैं कि सवर्ण हरिजनोंको अपना लें। सवर्ण हिन्दुओं और विरोधी वर्ग दोनोंका आपमें विश्वास है।

बापू — टुकड़े होना तो ज़रूर रोका जा सकता है।

देवधर — कुछ बातोंकी सफाअी कर दी जाय तो कटुता टल सकती है।

बापू — मुझे यह डर नहीं कि टुकड़े हो जायँगे। गुरुवायुरके मामलेमें कुछ कटुता हो सकती है, मगर अिस प्रश्नको मैंने और सबसे अलग रखा है।

देवधर — हम धीरे-धीरे काम करें तो सनातनी भी हमारे साथ हो जायँ।

बापू — ज़रूर हो जायँ। अिसीलिअे तो मैं दूसरे मन्दिरोंके मामलेमें कितनी ज्यादा मर्यादाअें रखता हूँ। मगर वाअिसरॉयकी मंजूरी प्राप्त करनेमें हमारी तरफसे ढिलाअी होगी, तो मुझे अुपवास करना पड़ेगा।

नट० — मगर मंजूरी लेनेमें तो दो महीने लगेंगे, क्योंकि वाअिसरॉयके पास बिल दो महीने रहता है।

देवधर — आप सरकारको अेक पत्र क्यों नहीं लिखते कि जो यह कहते हैं कि हम सिर्फ अस्पृश्यता निवारणका ही काम करेंगे अुन्हें छोड़ देना चाहिये? आपको यह भी जाहिर कर देना चाहिये कि आपके अनुयायियोंमें से जो सिर्फ अस्पृश्यता निवारणका काम करेंगे वे आपको कम प्रिय नहीं होंगे।

बापू — मैं यह तो नहीं कह सकता कि जेल जानेके बजाय अुन्हें अिस कामको पसन्द करना चाहिये। अैसा हो तो मुझे खुद ही आश्वासन देकर बाहर निकल जाना चाहिये। अुसके बाद ही मैं औरोंको अैसा करनेको कह सकता हूँ

देवधर — आपको सचमुच ही अैसा लगता हो कि यह काम आपकी सारी जिन्दगीका तमाम समय ही माँगता है, तो किसी भी तरहके मानसिक संकोचके बिना आप बाहर निकल सकते हैं।

बापू — नहीं, मुझे अगर अैसा लगता तो मैं कभीसे सरकारको अैसा लिख चुका होता। आज तो मुझे पक्का विश्वास है कि अैसा करके बाहर आ जाअूँ, तो काम करनेकी सारी शक्ति खो बैठूँ।

देवधर — क्या अिसीलिअे कि लोग आपको राजनैतिक नेता मानते

बापू — नहीं, मैं जैसा हूँ, लोग मुझे पूरी तरह वैसा ही देखते हैं। लोग जानते हैं कि मेरी राजनीति मेरे जनसेवाके समग्र कार्यका अेक भाग है। लोग सहज वृत्तिसे ही समझ गये हैं कि मेरा सारा जीवन समग्र जनसेवाके लिअे है।

यह तो मानसिक प्रामाणिकताका प्रश्न है। जिस क्षण मैं बाहर जाअूँ अुसी क्षण मुझे यह विचार आ सकता है कि अिस महान आफतमें मुझे क्या करना है? मैं शायद अकेले सविनयभंगका ही विचार करूँ, और किसी बातका नहीं। मगर यहाँ पड़ा-पड़ा यह काम कर रहा हूँ, अिससे मुझे पूरा सन्तोष है।

देवधर — अैसा कोअी नुसखा ढूंढ़ निकालिये न, कि जिससे आप अिन लोगोंको छुड़वा सकें।

बापू — अभी जो नुसखा मैंने पेश किया है, अुसका सरकार पर असर पड़ना चाहिये। सरकारको आसानीसे यह समझमें आना चाहिये कि अिस आन्दोलनमें सारा देश लगा हुआ है।

देवधर — आप यह नहीं कह सकते कि यह काम अुतने ही महत्त्वका है और कार्यकर्ताओंको अिसमें पड़ना चाहिये?

बापू — जमनालालजीका अुदाहरण लीजिये। वे अैसी कोअी शर्त करके बाहर नहीं जायँगे। मैं अुनसे अैसा करनेको कहूँ तो वे मान ज़रूर लेंगे, मगर मैं अुनसे अिस तरह बाहर जानेको कह ही नहीं सकता। अिस आन्दोलनके लिअे पुराने कार्यकर्ताओंकी, जो जेलमें हों अुनकी ज़रूरत नहीं है। नया कार्यकर्ता वर्ग निकल आया है और वह मुझे पसन्द है। जमनालालजी जैसे आदमीको खुद ही महसूस हो, तो मेरे आशीर्वादके साथ वे बाहर जा सकते हैं। मगर मैं अुन्हें अैसा करनेको नहीं कहूँगा। मुझसे हर पखवाड़ेमें कुछ कैदी मिलते हैं। अुन्हें मैंने कहा है कि तुम्हें भीतरसे अैसा लगता हो कि अस्पृश्यता निवारणका काम करनेका आश्वासन देकर बाहर जायँ, तो मैं यह नहीं कहूँगा कि तुमने कोअी बुरा काम किया है।

कोतवालको पत्र :

"अगर धर्मसंकट पैदा ही न होते, तो धर्मपालन असिधारा जैसा न माना जाता। आम तौर पर त्याज्य मानी जानेवाली चीज़ ज़रासे परिवर्तनके कारण कर्तव्य बन जाती है। यह रसायनके मिश्रण जैसी वस्तु है। आपाकी माँग अधिकारके लिअे नहीं थी। स्वार्थके लिअे नहीं थी। आपाकी माँग अपना धर्मपालन करनेकी थी। जो परिस्थिति पैदा हुअी अुसमें अैसे अुपवास हो सकते हैं, यह राय हम सब बाहर थे तब मैं दे सकता था। अिसलिअे आपाका साथ देना मेरा धर्म हो गया और मुझे अिस बारेमें कोअी शंका नहीं है। मैंने जो कुछ कहा है वह बुद्धिसे समझा जा सकता है। अिसलिअे यहाँ मेरे वचन पर श्रद्धा रखनेकी ज़रूरत नहीं। जब तक बुद्धि स्वीकार न करे तब तक

अपवास-धर्मको जहाँ तक तुम समझ पाये हो वहीं तक रहना। विचारोंके चक्करमें न पड़ना। मैंने जो कुछ समझाया है, वह स्पष्ट न हुआ हो तो फिर पूछना। न पूछो तो भी कोअी हर्ज़ नहीं। मेरे लिअे जो परिस्थिति अुत्पन्न हुअी, वह असाधारण थी। असाधारण बातोंके बारेमें बहुत विचार करनेकी भी मनाअी है।

"केलप्पनको अुपवास छोड़नेके लिअे कहनेवाला मैं था; अिसलिअे अब अगर केलप्पनके लिअे अुपवास करनेका समय आये तो मुझे अुसका साथ देना ही चाहिये, यह स्पष्ट धर्म लगता है। अिसमें बहुतसे छोटे-छोटे प्रश्न भरे हैं। वह सब समझानेका समय नहीं है। जो कुछ मैं लिख चुका हूँ, वह सब ध्यानसे पढ़ जाओगे तो कुछ पूछनेको नहीं रहेगा।"

देवधर, नटराजन और बापूके संवादका सार वल्लभभाअीको सुनाने पर वे बोले: "बाहर जानेका नुसखा क्यों नहीं बता दिया? मैं होता तो बता देता।"

मैंने कहा: "क्या?"

वल्लभभाअी कहने लगे: "शास्त्रीसे कहा जाय कि तुम बापूकी जगह ले लो, देवधरसे कहा जाय कि तुम मेरी जगह आ जाओ और नटराजन जमनालालजीकी जगह ले ले। फिर हम तीनों अस्पृश्यताका काम करेंगे। अिन लोगोंको कुछ भी विचार क्यों नहीं होता? यहाँ यह कहनेको आते हैं कि तुम्हें छूट जाना चाहिये, मगर कोअी सरकारके पास भी जाकर अुसे कुछ कहता है? श्रीमती कज़िन्सका सारा मामला 'सोशियल रिफॉर्मर' में छपा है, परन्तु अिस मामलेसे भी कुछ शिक्षा लेते हैं? अिस बहनको ऑर्डिनेन्स राज्य असह्य हो गया, मगर हमें असह्य होता है?"

१९-१२-'३२

आर्यसमाजी मिल कर गये थे। अुन्होंने मुलाक़ातका जो हाल अखबारमें दिया, अुसमें दो-तीन बातें अुलटी ही लिखीं। सत्यार्थप्रकाशके अनुयायी 'सत्य' का अैसा पालन करते हैं, अिससे बापूको बड़ा दुःख हुआ। अेक दिन शास्त्रीने और दूसरे सनातनियोंने अैसा ही किया था, तब बापू अुबल पड़े थे। आर्यमित्रोंकी मुलाक़ातका विवरण देखकर बापूने कहा: "ये अिन सनातनी मित्रोंसे क्या कम हैं?" फिर अुन्हें अेक अत्यन्त नम्र पत्र लिखा:

"आप भाअियोंकी मुलाक़ातकी जो रिपोर्ट प्रकाशित हुअी है, अुसे देखकर मुझे दुःख हुआ। सत्यार्थप्रकाश मैं अपने साथ लिये लिये नहीं फिरता। मैंने यह कहा था कि आश्रममें अेकसे अधिक प्रतियाँ हैं। (मुलाक़ातकी रिपोर्टमें अिस तरहका वाक्य था: सत्यार्थप्रकाशकी अेक प्रति वे हमेशा अपने पास

रखते हैं।) पुस्तकें मैंने नहीं माँगी थीं, महादेवने माँगी थीं। (रिपोर्टमें 'माँग करने पर' शब्द थे।)

"आपने मन्दिर-प्रवेशके काममें मदद देनेको कहा, तब मैंने आपको अिसमें दखल न देनेको कहा था। मेरी सूचना भी आपने मान ली, फिर भी रिपोर्टमें अिस तरहसे दिया है, जिसका अैसा अर्थ निकलता है कि मौजूदा आन्दोलनमें मैंने आपका हस्तक्षेप चाहा है। अैसे अर्थसे कामको हानि पहुँचती है। अिसलिअे सत्यकी खातिर और कामकी खातिर मैं अिसमें तुरन्त सुधार करनेकी जरूरत समझता हूँ। मैं चाहता हूँ आप फ़ौरन सुधार करें। झूठी रिपोर्टसे किसी भी कामको मदद नहीं मिलती। धर्मकी तो हानि ही होती है, अिसलिअे सुधार करनेमें हर तरहसे लाभ ही समझें।"

अिस लड़ाअीमें कैसी-कैसी कुर्बानियाँ की गअी हैं, यह नासिकके मुक़दमेके जो हालात रोज़ प्रकट हो रहे हैं, अुनसे मालूम होती हैं। सब कहते हैं कि अेक अमृतलालने सैकड़ोंके लिअे हमेशाका सुख कर दिया है। क्योंकि नासिकमें या और कहीं अब जेलरोंने चूँ-चाँ करना छोड़ दिया है। कल बहन अिन्दुमती जरीवालाकी अपने पति अीश्वरलाल जरीवालाकी, जो वीसापुरमें मर गये, अुत्तरक्रियाके लिअे १५ दिनके पेरोल पर छूटनेकी खबर पढ़ी। पति-पत्नीको जेल, घरमें सगे-संबन्धियोंकी घबराहट अलग, अुस पर वैधव्य, और फिर वैधव्यका दुःख लेकर वापस जेलमें जाना! बापूने अिस बहनको सुरबालाके मारफ़त पत्र लिखा।

गोपीकृष्ण नामके अेक भाअीको पत्र लिखा (हिन्दीमें):

"यदि हम हैं तो अीश्वर है, क्योंकि जीवमात्रका समूह अीश्वर है, जैसे किरणोंका समूह सूर्य है। अिस अीश्वर पर श्रद्धा होनेके लिअे आत्मश्रद्धा होनी चाहिये और वह श्रद्धा अनासक्तिपूर्वक सेवा करनेसे आती है। श्रद्धा रखनेका दूसरा तरीका यह है कि सारा जगत श्रद्धा रखता है तो हम भी रखें।

"स्वाधीन भारतके लक्ष्यका खयाल तक मैं तो नहीं करता हूँ। स्वाधीनताके साथ ही लक्ष्यका पता चल जायगा। और तो मेरे लेखोंसे देख लेना।"

मोतीबाबू दो साथियोंके साथ और हरिभाअू शास्त्रियोंके साथ आये।

श्रीधर शास्त्री पाठकने पहले खातिरी कर ली कि बापू धर्मशास्त्रोंको मानते हैं, बादमें अपना वक्तव्य प्रकाशित किया: "मैंने शास्त्रोंमें यह देखा है कि जातिसे कोअी अस्पृश्य नहीं, गुण-कर्मसे ही मनुष्य अस्पृश्य बनता है। चाण्डाल जाति आज है ही नहीं।"

बापू — अगर कर्म और गुणसे अस्पृश्यता आती है, तो भंगी जब तक भंगीका काम करता है तभी तक वह अछूत है और काम छोड़कर नहा-धोकर

शुद्ध हुआ कि वह स्पृश्य बन जाता है। अैसा आप मानते हैं?

पाठक — ठीक है।

बापू — तब अिन लोगोंको दूसरे हिन्दुओंके बराबर ही देव-दर्शनका अधिकार है न?

पाठक — अधिकार है। मगर अिस अधिकारको काममें लेनेसे भयंकर संघर्ष हो जाय, तो व्यवहारमें कुछ समझदारी करनी चाहिये।

बापू — अिसीलिअे मैंने कहा है कि जनताका बड़ा भाग अिसे मान ले, तभी अछूतोंके लिअे देव-दर्शन खुलना चाहिये।

पाठक — मैं भी यही कहता हूँ। लोक-कल्याण देखकर रूढ़ियोंमें परिवर्तन किया जा सकता है। ज्ञानेश्वर महाराजने १३वें अध्यायमें यज्ञ-हिंसाका जो निषेध किया है, वह अिसी दृष्टिसे किया है। अितना तो मैं आपको सभी शास्त्रियों द्वारा कबूल करवा दूँगा।

बापू — पंढरपुरवाले शास्त्री तो अुलटे ही चले हैं! वे कहते हैं कि अस्पृश्यता वंशसिद्ध है, और जनता स्वीकार कर ले तो भी शास्त्र विरुद्ध है। अिसलिअे मन्दिर नहीं खुल सकता! फिर मैंने अुनके समझौतेकी बातका विश्लेषण किया और अुनसे कह दिया कि आपकी हमारी नहीं बनेगी। अस्पृश्योंके लिअे अलग मन्दिर बनवानेको मुझे आपका रुपया नहीं चाहिये।

पाठक — बजाजका मन्दिर खुला तब बहुतसे शास्त्रियोंने बधाअियाँ भेजी थीं। भले ही धारूरकर शास्त्री न मानें। . . .

मोतीबाबू — तपःशक्ति और रक्षणशील समाजका विरोध चल रहा है। अिन दोनोंका समन्वय न हुआ तो देशका भला नहीं होगा। बम्बअीमें हमने महात्माजीके बारेमें जो कटु वचन सुने, अुन्हें सुनकर हमारे कानोंके कीड़े झड़ गये। हमें तो लगता है कि महात्माजीमें भगवानका सच्चा आविर्भाव हुआ है। वे कहते हैं कि महात्माजीमें छद्मवेषमें असुर शक्ति आअी है। अिस दुष्प्रभावमें से पंचानन तर्करत्नको अुठा लाया हूँ। यह आदमी स्वीकार करता है कि मुझमें तपःशक्ति जरा भी नहीं है, परन्तु महात्माजीके वचनोंसे बड़ा आघात पहुँचा है। हमारा कहना यह है कि सनातनी और सुधारक अपना-अपना पक्ष पेश करें। फिर परामर्श महात्माजी करें।

पाठक — जिन लोगोंने रूढ़िसे अस्पृश्यता बनायी है, अुन लोगोंको रूढ़ि बदलनेका अधिकार है। श्रुति, स्मृति, महाभारत, भगवद्गीता — 'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति तत्र क्वचित्', अितना जो स्वीकार करे अुसे अिस रूढ़िका त्याग करना ही चाहिये।

लक्ष्मण शास्त्री (वाअी): पापयोनि — तरुगुल्मलतादि-वैश्य-स्त्री-शूद्र — यानी दुःखी योनि हैं, अस्पृश्य योनि नहीं। यह मूल कर्मविपाक प्रकरणमें से ही है।

यह तो वेद-अुपनिषद्‌में है। स्मृतियोंका तो कोअी ठिकाना नहीं। वे तो लोभसे भी लिखी गयी हैं, अनेक हेतुओंसे लिखी गयी हैं।

बापू — तो अुन्हें अीश्वरप्रणीत कैसे माना जाय?

चित्राल शास्त्री — धारूरकर आदि शास्त्री स्मृतियोंसे ही चिपटे रहकर बात करते हैं। और जिस ढंगसे ये लोग विचार करते हैं, अुसी ढंगसे जवाब देना चाहिये।

बंगाली भाअियोंके साथ:

बापू — आज जो दो भाग हो गये हैं, अुनका आधार सत्य पर नहीं है। अुनकी जड़में ज़हर है। आज अेक शीघ्रगामी विष हिन्दू समाजको खाये जा रहा है। समाजके अिस तरह टुकड़े न होने देनेके लिअे हमें अपनी सारी शक्ति खर्च कर देनी होगी। बम्बअी पर तो सनातनियोंका काबू नाम मात्रका है। वे संगठित होनेकी कोशिश कर रहे हैं। यदि हमारे लोग अुद्धत हो जायेंगे, असभ्य बन जायेंगे और सज्जनता छोड़ देंगे, तो यह फूट और भी अुग्र हो जायगी। मगर मेरे अुपवासकी बात सिर पर लटक रही है, अिसलिअे हमारे लोग अैसी कोअी बात करनेकी हिम्मत हरगिज़ नहीं करेंगे। मैंने जब केलप्पनको वचन दिया, तब मेरा सारा हृदय अुसके विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। फिर राजाजी आये। अुन्होंने कहा कि ज़ामोरिनका तार आया है कि आपको केलप्पनको बचाना चाहिये। मैंने मनमें विचार किया कि केलप्पनको बचानेका अेक यही अुपाय है कि मुझे अपनी जानकी बाज़ी लगा देनी चाहिये। अिस तरह यह चीज़ हुअी है। मेरी रायमें तो सत्यको व्यक्त करनेकी अुत्तम रीति अुपवास है। टुकड़े होनेसे रोका जा सकता है। मगर कोअी अंग अितना सड़ गया हो कि अुसे काटे बिना काम ही नहीं चले, तो फिर टुकड़े होनेसे रोका नहीं जा सकता।

मैं यह नहीं मानता कि बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म पर आक्रमणकर्ताके रूपमें आया। मैं तो मानता हूँ कि बौद्ध धर्म न आया होता, तो हिन्दू धर्म बहुत पहले नष्ट हो गया होता। आज हिन्दू धर्म मृतप्राय है। वह हमारे जीवनको स्पर्श नहीं करता। अीश्वर, आत्मा और पुनर्जन्म, अिन तीन पर श्रद्धा होना हिन्दू धर्मका मुख्य लक्षण है। अस्पृश्यताका नाश करनेसे अिस श्रद्धामें कौनसी बाधा पड़ेगी?

बंगाली — अछूतोंका अुद्धार करनेके लिअे अुनमें आध्यात्मिक संस्कार पैदा करने चाहियें।

बापू — किसीने अैसा प्रयत्न किया है ?

बंगाली — अव्यवस्थित रूपमें कुछ अैसी प्रवृत्ति हुअी है ।

बापू — सनातनियोंने तो हरगिज़ नहीं की । सुधारक सम्प्रदायोंने की होगी । अींट पर अींट रखकर अिमारत खड़ी करनेवाले आपको बहुतसे सुधारक मिलेंगे ।

बंगाली — रामानुजने तो अींट पर अींट नहीं रखी । अुन्होंने तो तोड़-फोड़ की थी । बंगालमें अितने ज्यादा हिन्दू मुसलमान कैसे बने ?

बापू — क्योंकि हिन्दू धर्मके ह्रासकी क्रिया शुरू हो चुकी थी । चैतन्य पैदा न हुअे होते, तो सारा बंगाल मुसलमान हो गया होता । धर्मगुरुओंकी हठधर्मी और वहमोंके विरुद्ध बौद्ध धर्मने सिर न अुठाया होता, तो हिन्दू धर्मका नाश हो गया होता । शंकराचार्यको प्रच्छन्न बौद्ध कहते हैं न ? क्योंकि अुन्होंने बौद्ध धर्मके सिद्धान्तोंको हिन्दू धर्ममें पचा लिया । बुद्धने अपना काम कर दिया मगर अुनके अनुयायियोंमें अुनके जितनी विद्वत्ता और तपस्या न होनेसे बौद्ध धर्मकी अवनति हुअी और वह भी आचार्योंकी गुरुशाहीका धर्म बन गया ।

बंगाली — मगर सुधारक प्रवृत्तियोंने तो हमारे राष्ट्रका बहुत नुकसान किया है ।

बापू — हमें यदि सच्चे बनना हो, तो झूठके खिलाफ़ बग़ावत करनेका सुधार करना ही चाहिये । आगे जाकर अुसमें खराबियाँ पैदा हो जायँ, यह दूसरी बात है । मगर सुधार अनिवार्य होते हैं और अुनसे भला ही होता है । मैं आपसे बिलकुल सहमत नहीं हो सकता । असत्यके साथ समझौता करनेके लिअे मुझे समझाना तो आपके लिअे पत्थरकी दीवारसे सिर टकराने जैसा होगा ।

बंगाली — हम बुद्धिसे सत्य और असत्यका भेद करते हैं । असलमें तो निष्ठा और आत्म-समर्पण द्वारा यह करना चाहिये । हमें अिस प्राकृत जीवनके अुस पार जाना है । मनुष्यको देव बननेके लिअे अनेक जन्म लेने पड़ते हैं । जन्मान्तरमें किसी भी जातिका मनुष्य देव बन सकता है ।

बापू — अिस विचारके आधार पर हम काम करें, तो अुससे संघर्ष ही पैदा होगा और अुस संघर्षका फ़ैसला किसी तीसरेको ही करना होगा ।

बंगाली — मगर सत्य तो अेक ही है ।

बापू — मगर यह 'अेक सत्य' तो अवर्णनीय और अगोचर है । हमारे सामने तो सापेक्ष सत्य होता है । मनुष्य अपनी समझके अनुसार सत्यपूर्वक किसी नतीजे पर पहुँचता है, मगर वह सापेक्ष सत्य होता है ।

बंगाली — अिसीलिअे शास्त्रोंकी ज़रूरत पड़ती है ।

बापू — मगर शास्त्र किसे कहें ? फिर हम घानीके बैलकी तरह वहीं के वहीं आ खड़े होंगे ?

बंगाली — हिन्दू तो मानते हैं कि वेद शाश्वत सत्य हैं और वेदोंमें कोअी परस्पर विरोधी बात हो ही नहीं सकती। शास्त्र और आत्म-साक्षात्कारका मेल होता ही है। जैसे, कृष्णमें अिन दोनों चीज़ोंका मेल था। बुद्धकी बात दूसरी है।

बापू — मैं अितिहासका अैसा अर्थ नहीं करता। बुद्धने हिन्दू धर्मकी अपार सेवा की है।

बंगाली — हिन्दू धर्म बौद्ध धर्मको मान्य नहीं करता।

बापू — मगर वह बुद्धको तो मानता है न?

बंगाली — यों तो आदमी तपस्वी हो सकता है, मगर अुसकी शक्ति और तपस्या शास्त्रोंके साथ सुसंगत न हो, तो वह कल्याणकारी नहीं होती। हिन्दू धर्ममें आत्मज्ञानका सत्य है। हिन्दू धर्मका आधार ही वेद हैं और वेद अीश्वर प्रणीत हैं। अिसलिअे जब हम किसी रूढ़िसे अिनकार करें, तब हमें अच्छी तरह देख लेना चाहिये कि हमारा अैसा करना वेद-विरुद्ध तो नहीं है।

बापू — मगर आत्मज्ञानका सत्य कोअी हिन्दू धर्मका ही ठेका नहीं हो सकता। हमारे पास जो ग्रन्थ हैं वही वेद हैं, यह अर्थ नहीं। मगर वेदका अर्थ है अशरीरी वाणी यानी पवित्र मनुष्योंका अनुभव-ज्ञान। अिसीलिअे महाभारतमें कहा है कि शास्त्र पवित्र मनुष्योंके जीवनमें मूर्तिमंत होते हैं। अिसलिअे आपको अिन लिखे हुअे शब्दोंसे परे जाना होगा।

चिन्तामणिका पत्र आया था कि कितने ही प्रसंग अैसे होते हैं जहाँ मौन सम्मति सूचक नहीं होता। मुझे आपके अुपवासके प्रसंग पर न बोलनेमें कोअी सत्य-त्याग नहीं लगा। और 'लीडर' में पूना-करारके बारेमें कुछ नहीं लिखा था, अिसलिअे लोगोंने कुछ न कुछ अनुमान भी किया ही होगा। अिन्हें वापस जवाब लिखा:

"मैं अपने मित्रोंका न्याय करने नहीं बैठता। अपनी राय मैं अुन्हें बता देता हूँ और वह यदि अुन्हें सही लगे, तो वे अुसके अनुसार सुधार कर लें। आपको लगता हो कि बम्बअीमें आपने अपने कृत्यसे अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध कुछ नहीं किया, तो मुझे सन्तोष है। मगर आपसे मैं अेक वचन माँग लेता हूँ। जाहिरा तौर पर जब आप मेरा विरोध न करें, तब भी खानगीमें तो आपको मुझे सावधान कर ही देना चाहिये। अिस चेतावनीका मुझ पर जाहिरा कोअी असर न भी हो। मगर मेरा मन विचारोंको ग्रहण करनेवाला है, अिसलिअे अैसी चेतावनियोंसे हमेशा मुझे मदद मिली है।"

अेक पत्रमें से:

"मैंने खुद अण्डे लेनेसे अिनकार किया यह बात सच है, फिर भी मैं मानता हूँ कि मछलीका तेल निषिद्ध है, दूध अुससे कम निषिद्ध है और अुससे

भी कम निषिद्ध निर्दोष (बाँझ) अण्डे हैं। मगर मछलीके तेलकी लोगोंको आदत पड़ गअी है और अण्डोंकी आदत न होनेके कारण निर्दोष अण्डे भी त्याज्य माने जाते हैं।

"'कुर्ता माँगे अुसे कोट भी दे दो' अिस वाक्यमें कुर्ता माँगनेकी योग्यता अध्याहार है। अिसी वाक्यका दूसरा अर्थ यह है कि हमसे कोअी कुछ भी जबरदस्ती छीननेको आये, तब अैसे आदमीका विरोध करनेका धर्म न हो, तो वह जितना छीनना चाहे अुससे ज्यादा छिन जाने देना ही सरल मार्ग है। अिस सबके पीछे जो स्वर्ण नियम छिपा है, वह है अपरिग्रहका। अपरिग्रहकी पूर्णता तक तो कोअी पहुँच नहीं सकता। मगर यह नियम समझमें आ गया हो, तो अिसका पालन यथाशक्ति अुत्तरोत्तर बढ़ाते रहना चाहिये।"

कृष्णन नायरको (हिन्दीमें):

"मेरी कोअी नअी बातसे न घबरानेकी आवश्यकता है और जब तक नअी बात हज़म न हो जाय, तब तक न अुसका अमल करनेकी आशा है। अंग्रेजी शब्द assimilation (अेसिमिलेशन) का अनुवाद 'हज़म करना' किया है। हमेशा बगैर हजम किये हम जब किसी बात पर अमल करते हैं, तब या तो फँस जाते हैं या तो दुःखित होते हैं। जो चीज़ बुद्धिगम्य है, अुसको श्रद्धासे माननेकी कोअी आवश्यकता नहीं है। अैसा करना मानसिक आलस्यकी निशानी है।"

पंचानन तर्करत्न 'शुभं भवतु, शुभं भवतु' करते हुअे दाखिल हुअे और हिन्दू धर्म पर जो भारी विपत्ति आअी है अुसकी बातें करते-करते बूढ़े का गला भर आया। बापूने अुन्हें सान्त्वना देनेका बड़ा प्रयत्न किया।

डा० मैत्र — आरोग्य और सफाअी पर भाषण देनेवाले — आये।

बापू — मैं अपने साथियोंको और किसी कार्यक्रमके साथ बाहर भेजूँ, तो वह मेरा विश्वास-भंग कहा जायगा। अस्पृश्यता निवारणके कार्यक्रममें रोटी-बेटी व्यवहारकी बात नहीं आती। ये दो कार्यक्रम अेक दूसरेके साथ नहीं जोड़े जा सकते। मगर आपको अपने कार्यक्रमके रूपमें यह काम करना हो, तो मैं आपको नहीं रोकूँगा।

मैत्र — अगर मैं दूसरी तरह समान दर्जा रखता हूँ, तो जातिके कारण मेरे अधिकारमें क्यों कमी आये?

बापू — मगर अिस वक्त हम दूसरा प्रश्न हल करनेकी कोशिश कर रहे हैं। हम तो पंचम वर्णको हिन्दू समाजमें समा लेनेकी कोशिश कर रहे हैं।

हर चीज़के अीश्वर प्रणीत होनेका दावा किया जाय, तो किसे माना जाय यह बड़ा मुश्किल होता है।

अेक कॉलेजकी लड़की अपने कॉलेजके प्रोफ़ेसरकी दुर्दशा बताती है।

अेक केम्ब्रिजका ग्रेजुअेट, जो अपनेको नास्तिक कहता था, आजकल सनातनियोंका समर्थन करने निकल पड़ा है!

पूनामें यह मुश्किल है कि लोगोंमें सच्ची धार्मिक वृत्ति नहीं है। विद्यार्थियोंमें पक्ष खड़े कर दिये गये हैं। अुन्हें समझाया जाता है कि गांधीका आन्दोलन धर्मका सत्यानाश करनेवाला है।

बम्बअीके हिम्मतराम शास्त्री और बादमें चिन्तामणराव वैद्य:

शास्त्री — सनातन धर्मका अर्थ सुधारक शास्त्री नहीं कर सकते। ये लोग तो अपनी पोल आपके सामने ढकनेकी कोशिश करनेवाले हैं। जो कुछ करना हो सनातनियोंकी बात सुनकर ही कीजिये। यह विषय राग-द्वेष छोड़कर विचार करनेका है, आप तो राग छोड़ते ही नहीं।

बापू — हृदय और बुद्धि पर प्रहार करना आपका काम है। मैं तो कहता हूँ कि जो कुछ करूँगा, सत्यको बीचमें रख कर ही करूँगा। मैं आपसे कहूँगा कि वेद, स्मृति, महाभारत और रामायणको मैं मानता हूँ। मगर साथ ही कहूँगा कि सबको अक्षरशः माननेवाला नहीं हूँ। गीताके कअी भाष्य मैंने पढ़े हैं, परन्तु अुनमें मुझे अपनी बुद्धिका अुपयोग तो करना ही पड़ेगा न? अनेक मनुष्य अलग-अलग अर्थ निकालते हैं, अिसका क्या किया जाय? गीताका तारतम्य अस्पृश्यताके विरुद्ध है।

शास्त्री — गीतामें पापयोनि और पुण्ययोनि है या नहीं?

बापू — है।

शास्त्री — पापयोनि अेक परिस्थिति है। अुसमेंसे तीन गुणोंको पार करके अूपर चढ़े तब यह पापयोनि मिटे। जन्म-जन्मके नीच कर्मोंके कारण यह योनि प्राप्त होती है। यह कुदरतके बनाये नियमोंके अनुसार है। गीतामें पाप और पुण्ययोनि लिखा है सो किसलिअे? अुन्नति क्रमशः होनी चाहिये। सब अपने-अपने गुणोंके अनुसार अपनी-अपनी हालत भोगते हैं। मल नीचेके रास्तेसे जाता है और भोजन मुँहमें आता है।

आज तो व्यवहारको मानिये। शास्त्रज्ञानके बिना आप तो समाजका अैसा नाश करने चले हैं कि समाज सौ वर्ष तक अुठ नहीं सकेगा। सांसारिक सुख-भोग, द्रव्यकी लालसा और पाश्चात्य संस्कृतिके प्रभावके विरुद्ध लड़ना है।

अब अुत्तरायण नजदीक आ रहा है। अेक महीना और लम्बाअिये। वैश्यके साथ ब्राह्मणकी बुद्धिको स्वीकार कीजिये।

चिन्तामणराव वैद्य और यह शास्त्री किसी नाटकके सुन्दर पात्रोंके रूपमें पेश किये जा सकते हैं। अपना पुराने ज़मानेका काला कोट और पगड़ी, मैली

खादीकी धोती और कुर्ता पहने हुअे चिन्तामणराव अपने ही छोटे-छोटे विनोदों पर बच्चोंकी तरह अट्टहास करते थे, जिससे अुनके प्रति सहज ही प्रेम अुत्पन्न होता था। सनातनी हिन्दूकी हैसियतसे वेद, स्मृति आदि अीश्वर-प्रणीत हैं और अितिहासकार और वकीलकी हैसियतसे ये सब मनुष्य-प्रणीत हैं और देशकालावच्छिन्न हैं — अिस विधानके बचावमें वे ज़रा भी संकोच किये बिना बोलते ही जाते थे।

बापू बोले: "देवल स्मृति कब लिखी गअी?"

चिन्तामणरावने कहा: "यह आप न पूछिये! यह मानना कि सभी स्मृतियाँ अनादि हैं, झूठी कल्पना है। वेदोंमें अेक देवल ऋषिका नाम है! वेदोंके वसिष्ठ और स्मृतिकालके वसिष्ठ अेक ही हैं। ऋषि तो पाँच-पाँच और दस-दस हज़ार वर्ष जीते थे, यह कहा जाता है न? यद्यपि वेदोंमें तो सौ वर्षकी ही आयु कही गअी है।" यह कहकर खिलखिलाकर हँसते थे। "क़ानून बनाकर धर्म-रूढ़ि नहीं बदली जा सकती, मगर आप जिस ढंगका सुधार करना चाहते हैं अुसके लिअे शास्त्राधार खोज दूँगा।" बापूको अैसा आश्वासन दिया।

शामको बापू बोले: "मुझे हँसी तो आती थी, परन्तु भीतर ही भीतर मैं जल रहा था।"

दूसरे शास्त्री अिनके मुक़ाबलेमें मामूली आदमी थे। अुन्हें अपने दंभका और अज्ञानका भान नहीं था। चिन्तामणरावको तो अपनी दोहरी स्थितिका भान था। अितना ही नहीं बल्कि अुन्हें यह लगता था कि हिन्दू धर्मकी रक्षाके लिअे यह ज़रूरी है। ये दूसरे शास्त्री तो अपने अज्ञानके बराबर ही बापूका अज्ञान मानते थे। अिसे देखकर भद्रंभद्र सजीव हो अुठते थे। अुनकी पगड़ी, अुनका 'रागद्वेष विमुक्तैस्तु' श्लोकका ही बार-बार अुच्चारण, बापूको गीतामें से अस्पृश्यता निकाल कर बतानेकी अुनकी मुराद और अन्तमें अुनका फाअुन्टेन-पेनका अुपयोग, धूलसे दाग साफ़ करना और धोती-कोट बिगाड़ना आदि अैसा था, जो रमणभाअीकी आत्माको भी खुश कर दे।

कल रातको वढ़वाणके कीरचंदने १८ तारीखको अस्पृश्यता दिवस किस ढंगसे मनाया गया, यह बताने वाली अपनी निकाली हुअी दो पत्रिकाअें भेजी थीं। बापूने अुन्हें पढ़ा। पढ़ते-पढ़ते पेट पकड़कर हँसे, मगर वह भी दिलमें जो आग लगी हुअी थी अुसे ढकनेको ही।

वल्लभभाअी रोज़ कुछ न कुछ दिल्लगी तो करते ही हैं। अिस दिल्लगीका मसाला अुन्हें रोज़की डाकमें से मिल जाता है। जमनादास द्वारकादासका चिढ़से भरा पत्र आया था। अुसमें लिखा था कि अस्पृश्यताका ही काम करना हो, तो

"अिन शास्त्रोंको बंद कीजिये न!" अिस पर वल्लभभाअी अुसे याद करके कहने लगे: "अब अिन शास्त्रोंको बन्द कीजिये न!"

बापू बोले: "ये वढ़वाणकी पत्रिकायें बन्द करा दें, तो आश्चर्य नहीं!"

२२-१२-'३२

विरोधकी हर अेक पंक्तिके शब्द बापू बहुत ध्यानसे पढ़ते हैं। साथियोंके पत्र पढ़ना अकसर मुल्तवी भी कर देते हैं। राधाकान्तकी सलाहसे बापूने मन्दिरमें जानेवालोंके ही मत लेने चाहियें, अैसा तार राजाजीको देकर अुनको बेचैन कर दिया।

कल अेम० के० आचार्यने गोपाल मेननकी प्रकाशित की हुअी अेक पत्रिका यह बतानेके लिअे भेजी कि मतगणना तो आपको मरनेसे बचानेके मुद्दे पर ली गअी, मगर मन्दिर-प्रवेश पर नहीं ली गअी। बापूको बड़ा दुःख हुआ। रातको अिसीकी बात करते-करते सोये। मुझे बार-बार पूछा: "अिसी पर मत लिये गये हों, तो मतगणनाको रद्द करना ही चाहिये न?"

मैंने कहा: "यह क्यों मानते हैं कि मत अिसी पर लिये गये होंगे? यह तो अनेक पत्रिकाओंमें से अेक हो सकती है। यह पत्रिका किसीके जवाबमें भी हो सकती है। सब कुछ यहीं कल्पना कर लेनेसे काम नहीं चल सकता। यह अुपवास ही बड़े विचित्र संयोगोंमें ज़ाहिर हुआ है। हज़ारों मील दूर बैठकर मतगणना कराना और फिर साथियोंको बार-बार टोकना ठीक नहीं।"

फिर बापू बोले: "मगर लोगोंको अितनी ही बात सुनाअी गअी हो, तब तो मतगणना निकम्मी हो जाती है न?"

सुबह गोपाल मेननको पत्र लिखवाया। अुसमें लिखा कि "तुमने मुद्देको छिपाया हो, तब तो मतगणना रद्द ही करनी चाहिये। मुझे अपनी भूल स्वीकार करनी चाहिये और अुसका प्रायश्चित्त करना चाहिये!"

मैंने वल्लभभाअीसे बात की। वल्लभभाअी अुबल पड़े और कहने लगे: "अिस तरह यहाँ बैठे-बैठे आप अपने साथियोंको सतायें, यह ठीक नहीं। यह पत्र हरगिज़ नहीं भेजा जा सकता। आप अिस आचार्यकी पत्रिका परसे कोअी राय न बाँधें।"

बापू मान गये अिसलिअे मैंने कहा: "अब यह ठीक हो गया।"

बापू बोले: "ठीक तो नहीं हुआ, मगर जैसे सनातनियोंको सन्तोष देता हूँ, वैसे अिन नये सनातनियोंको भी तो सन्तोष देना चाहिये न?"

अिसके बाद सुबह अेक पत्रमें लिखवाया:

"अुपवास मुल्तवी करानेके लिअे बहुतसी चीज़ें काम कर रही हैं।" बादमें यह वाक्य रद्द करा दिया, अिसलिअे कि शायद यह आगाही ज़रूरतसे

ज्यादा जल्दी हो जाय! मगर और कुछ नहीं तो कम-से-कम अहिंसाकी दृष्टिसे बापू अुपवास बन्द रखें, तो आश्चर्य नहीं होगा। दो तारीखको किसी न किसी असाधारण और अकल्पित घटनाके होनेकी सम्भावना मालूम हो रही है।

सनातनियों और सुधारकोंका अखाड़ा।

बापू — मैं तो बच्चोंकी बात भी सुनता आया हूँ, तो शास्त्रियोंकी बात तो ज़रूर सुनूँगा। मैंने अिन लोगोंसे जो थोड़े प्रश्न पूछे, अुनके जवाब सन्तोषजनक नहीं मिले, अिसलिअे मैंने कहा कि हमारी नहीं पटेगी। अिस पर डावरेने कहा कि कुछ न कुछ समझौता होना चाहिये। फिर परिषदकी गड़बड़ हुअी। बादमें २३ तारीखको यह चर्चा करनेका तय हुआ। मैंने कहा कि मेरे हृदय पर अिसका जो परिणाम हो अुसे होने दिया जाय। झगड़े या हार-जीतका सवाल नहीं।

मेरा खयाल तो यह था कि हम सब मित्र हैं। धर्म-जिज्ञासासे आये हैं। मुझे विश्वास है कि मैं अिसी भावनासे काम करने वाला हूँ। आप सब अेक हैं, यह समझकर बातचीत कीजिये।

धारूरकर — अगर हमें आपको समझाना है, तो अिन लोगोंकी यहाँ क्या ज़रूरत है?

जोशी शास्त्रीने समझाया कि हमारे संवादका अिन पर क्या असर होता है वह देखना है।

धारूरकर — तब आपको तो अिसे वाद-विवाद कहना नहीं है फिर भी वाद-विवाद करना है? यह तो अैसी बात हुअी कि दोनोंमें बहस हो और महात्माजी निर्णय दें। अर्थात् महात्माजी फ़ैसला करें और बादमें यह कहा जाय कि सनातनी हार गये, हार गये!

बापू — यह तो आपने मैं जो कह रहा हूँ, अुसका अनर्थ कर दिया। मुझे आप जज बनाना चाहते हैं। जज बनायेंगे तो आप हारेंगे। मगर मुझे तो जिज्ञासु भावसे सुनना है। आपको अितना तो आत्मविश्वास होना चाहिये कि आप धर्मके बारेमें मुझे जो कुछ सुनायेंगे अुसका मुझ पर कुछ न कुछ असर पड़े बिना नहीं रहेगा। आपको यह विश्वास होना चाहिये कि आप मुझे सत्य समझाना चाहते हैं।

धारूरकर — मुझे तो आपके साथ बात करनी है। अिन लोगोंके साथ तो बात करनी ही नहीं।

बापू — भीरुतासे धर्मसेवा कैसे होगी? लोग अनर्थ करें, यह तो क्षणिक बात है।

मेरे मनमें शंका नहीं है। शंका हो तो अुपवास किसलिअे घोषित करता? लेकिन आप यह मानते हों कि मुझमें रोग घुस गया है, तो आप अुसे निकाल दीजिये।

घारूरकर — व्यक्तिगत दृष्टिसे नहीं, लेकिन धार्मिक दृष्टिसे शंकित हैं असा आप कहें, तो हम बात करें, नहीं तो क्या बात की जाय?

षड्दर्शनाचार्य — हमारे पास अुपाय है। आपके मनमें जो हो सो कहिये। हम अुसका जवाब देंगे।

बापू — ध्रुवजी, भगवानदास आदि सच्ची धर्मसेवा करनेके लिअे आये हैं। ये लोग यहाँ कोअी अखाड़ा खेलने नहीं आये। शास्त्री क्या नहीं जानते हैं कि यहाँ दूसरे पंडित भी आये हैं। आप चाहें तो मैं यहाँसे चला जाता हूँ और आप लोग ही चर्चा करें तथा समाधान कर लें; और वह समाधान मेरे आगे रखें। मैं असा कोअी वचन नहीं देता कि अुसे मैं मानूँगा ही। क्योंकि मैंने कोअी आनन्दशंकर ध्रुवके हाथमें अपनी लगाम नहीं सौंप दी है।

घारूरकर — आपको मैं जज बनानेके लिअे तैयार हूँ; मगर आप जो फैसला दें, अुसके कारण हमारी पद्धतिसे बताने चाहियें।

बापू — बीमार वैद्यकीय दृष्टिसे कैसे कह सकेगा कि फलाँका निदान मुझे मंजूर है? आपने तो मुझसे अधर्मकी बात माँगी। आप यह चाहते हैं कि आप अमुक पंडितगण मिलें और जो निर्णय दें, अुसे मैं मान लूँ। यह तो अधर्मकी बात हुअी। जब वह मेरे स्वीकार करने लायक़ हो तभी मैं स्वीकार कर सकता हूँ न?

मोतीबाबूने सबको सुनाकर कहा: "मैं तो मानता हूँ कि गांधीजीको अीश्वर-प्रेरणा होती है। अिस प्रेरणाके बिना वे कुछ नहीं करते। मेरी आपसे यह अपील है कि आपको अिस प्रेरणाके अनुकूल शास्त्र खोजना चाहिये!"

अिसी हेतुसे वे पंचानन बाबूको भी यहाँ तक घसीट लाये थे। मगर वे तो अब सनातनियोंकी तरफ लुढ़क गये हैं।

२३-१२-'३२

खुरशेदका कल दुःखभरा पत्र आया था: "क्या आप निराश होकर अुपवास करेंगे? क्या हम सब फूटी कौड़ी साबित हुअे? मैंने अपनी कलाप्रवृत्तिको सेवाकी वेदी पर चढ़ा दिया, सो आपके और आपके कामके लिअे। आपको निराशा क्यों हो गअी है?" बापूने अुसे सुन्दर तार दिया। मेज़रने कहा कि यह तार सरकारके मारफत ही भेजा जा सकता है, और किसी तरह नहीं। बापूने अुसे भेजनेको मना कर दिया और कहा कि मुझे लौटा दीजिये। आज खुरशेदको पत्र लिखा:

(३) अुन्हें मनुष्यके सब अधिकार हैं — सिर्फ़ धार्मिक नहीं।

(४) जो नैमित्तिक अस्पृश्य हों, अुनकी अस्पृश्यता दूर न हो जाय, तब तक वे मन्दिरमें नहीं जा सकते। दूसरे जो औत्पत्तिक अस्पृश्य हैं, वे नहीं जा सकते।

(५) औत्पत्तिकोंकी अस्पृश्यताका निवारण नहीं है। चिन्तामणराव वैद्य और मालवीयजी वगैराके मंत्र काम नहीं आ सकते।

वैद्य — अत्रिस्मृति आपको मान्य है, तो फिर अत्रिवाक्य स्पृष्टास्पृष्टिको रद्द करता है, अुसका क्या?

धारूरकर — अिसका अर्थ यह है कि अस्पृश्यता जैसी चीज़ आप स्वीकार करते हैं।

संग्रामे हट्टमार्गे च यात्रा देवगृहादिषु।
तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे।
स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते।

षड्दर्शनाचार्य — जिन शास्त्रोंमें देवगृहकी स्थापनाके बारेमें लिखा है, अुन्हीं शास्त्रोंमें यह लिखा हुआ है। पूजाके समय पुजारी दूसरोंको स्पर्श नहीं कर सकते। अिस श्लोकका अर्थ तो यह है कि जिन्हें मन्दिरमें आनेका अधिकार है, अुनके बीच छुआछूत नहीं हो सकती। बाहरके आदमियोंका यानी चातुर्वर्ण्यसे बाहरके आदमियोंका यहाँ विचार ही नहीं है!

भगवानका विशेष संनिधान प्रतिष्ठित मूर्तियोंमें है। देवताओंका सान्निध्य लानेवाला शास्त्र — वैखानसागम शास्त्र — मानते हैं, तो अुसके दूसरे आदेश भी मानने चाहियें। अिस शास्त्रका ही अिस बारेमें पूरा अधिकार है।

बापू — मद्रासमें प्रत्येक मन्दिरके लिअे भिन्न आगम हैं। क्या ये सब अीश्वर-प्रणीत हैं?

शास्त्री — आप सब अीश्वर-प्रणीतको ही मानते हैं या दूसरोंको भी?

बापू — आप मुझसे यह न पूछिये कि मैं किस शास्त्रको मानता हूँ। आपको जिन शास्त्रोंका प्रमाण देना हो, वह दीजिये। मुझे यह मंजूर है कि जिन-जिन सम्प्रदायोंके जो-जो शास्त्र हैं, वे अुन्हें मान्य होने चाहियें। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि अीश्वरने प्रत्येक समाजके लिअे मन्दिरोंके विषयमें शास्त्र बनाया है? मद्रासमें अेक नया मन्दिर बना कि तुरन्त अुसका आगम बन जाता है। अिन आगमोंको माननेवालोंको यह अधिकार है या नहीं कि हरिजनोंको अन्दर जाने दें?

शास्त्री — आप अिन लोगोंको मनाअिये कि अुनके पास नया आगम है, अैसा वे हमें समझायें।

बापू — मैं तो यह पूछता हूँ कि भागवतको प्रमाण माननेवाले लोग खुद यह निश्चय करें कि हमें अमुक मनुष्योंको लेना है, तो वे अैसा कर सकते हैं या नहीं?

शास्त्री — तो अिन लोगोंको कहना पड़ेगा कि आजकी परिस्थितिके कारण अमुक आदेशोंका अर्थ बदलना चाहिये।

बापू — नहीं; वे तो कहेंगे कि मैं आज तक संकुचित अर्थ करता था; अब अुसका विस्तृत अर्थ करना चाहिये।

शास्त्री — आगमको प्रमाण माननेवाले यह मान लें कि अिसी आगमका अर्थ विस्तृत करना चाहिये, तो वह तो अधर्म हो जायगा।

अिस तरह सनातनी शास्त्रियोंके बदलते हुअे रंग देखे। मोतीबाबूसे पता चला कि ये शास्त्री — खास कर अुनका अेजेण्ट डावरे — बापूको असत्यवादीके रूपमें प्रसिद्ध कर रहे हैं। जो संदेशा ये लोग गलत बात समझा कर परिषद्के लिअे ले गये थे, अुसे वापस ले लेनेके कारण वे बापू पर असत्यका आरोप करते हैं।

वे सब जानेको तैयार हो रहे थे कि बापूने अुनके आगे दिलका दुःख प्रकट किया: "अगर आप मुझे झूठा और दंभी समझते हों, तो मेरा त्याग कर दीजिये। आप मुझे समझाने आते हैं, यह आप धर्माचरण करते हैं। मेरे सामने आप मुझे कहते हैं कि आपकी सत्यनिष्ठाके कारण आते हैं और पीठ पीछे कहते हैं कि मैं पाखंडी और असत्याचरणी हूँ, यह आपको शोभा नहीं देता। हाँ, अेक शर्त पर आप मुझे पाखंडी मानते हों तो भी आ सकते हैं। वह यह है कि आप मेरा पाखंड मिटाने और मुझे सत्यके मार्ग पर ले जानेके शुभ हेतुसे आयें। मगर अुसका समय आज नहीं है। आज तो आप मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये और बादमें समय आवे तब मेरा पाखंड मिटाने आअियेगा। अिसलिअे आज मैं आपसे यह जान लेना चाहता हूँ कि आप यहाँ किस भावनासे और किस लिअे आते हैं।"

धारूरकर शास्त्री तो कहने लगे: "नहीं, नहीं; आपकी सत्यनिष्ठा पर हमें संपूर्ण भरोसा है, अिसीलिअे हम आते हैं।" फिर भी डावरेने तो कहा कि यह सन्देश भेज कर दूसरे दिन महात्माजीने वापस ले लिया, यह बात तो मैं अब भी कहता हूँ। हरिभाअूने डावरेको जब बुरी तरह डाँटा, तो वह चुप हो गया।

मोतीबाबूने ये दावपेंच देख लिये और बापूसे कहा: "ये लोग मेरी निष्ठाको कलुषित नहीं कर सकते। अिनके मनमें कितना ही मैल क्यों न हो, मगर वह मेरे हृदयको स्पर्श कर ही नहीं सकता।"

अेक ब्रह्मचर्यका प्रयास करनेवालेको लिखा :

"जो दोष हो चुके हैं अुनसे शिक्षा लेना। . . .

२५-१२-'३२ बहनके साथ अेकान्त सेवन नहीं होना चाहिये। सूक्ष्म नियमोंका भी सख्तीसे पालन करना। अिद्रासन मिलता हो, तो भी झूठ न बोलना। अनशन लेकर मरना मंजूर करना, मगर स्त्रीसंग मत करना।"

नरदेव शास्त्रीने भी नये कदमका विरोध किया था। अुन्हें लिखा (हिन्दीमें):

"मेरा बंदीवान रहना और हरिजनोंका काम करना अुसीमें सब शंकाओंका समाधान हो जाता है। अधिक लिखना मर्यादाके बाहर होगा। कोअी कांग्रेसका आदमी अिस काममें जुत जानेके लिअे बाध्य नहीं है। कोअी अिस कार्यके लिअे स्वधर्म न छोड़े।

"अेक वर्तुल बना लो और किसीको पूछो अुसका आदि कहाँ, अंत कहाँ? यदि वर्तुल सही बना होगा, तो कोअी बता नहीं सकेगा। यदि मनुष्य कृतिके लिअे यह सही है, तो अीश्वर कृतिका क्या कहा जाय? मैं तो तुम्हारे प्रश्नोंका अुत्तर देनेके लिअे असमर्थ हूँ। क्योंकि कोअी अुत्तर सम्पूर्ण नहीं है।"

. . . . को: "तू गीताका मनन करनेवाला है। तू देखेगा कि शुद्ध चित्तको सदा ही प्रसन्नचित्त रहना चाहिये।"

. . . . को: "तू चिन्ता छोड़ सके तो मैं तुरंत छोड़ दूँ। यह तू जानती है न कि अिस वक्त तेरी गीताकी परीक्षा हो रही है? तुझे अर्थ सहित अुच्चारण आये और कंठस्थ भी कर ले, तो अिससे तू सचमुच पास हो गअी अैसा मैं नहीं मानूँगा। गीताको अमलमें लायेगी, अुसके अनुसार अंक मिलेंगे। चरखा शास्त्रको जो मुँहसे चटपट बोल जाय, वह अुसका सच्चा जाननेवाला नहीं, मगर अुस पर अमल करनेवाला यानी पींजने और कातने वाला ही असली जानकार है। अिसी तरह गीताका है। सब रोगोंकी यह अेक सही दवा है। यह दवा तू बराबर काममें ले, तो मुझे तेरे बारेमें बहुत चिन्ता नहीं रहे।"

आज यह खबर आअी कि बारडोली आश्रमके मकान बेचना तय किया है। वल्लभभाअी बोले: "अच्छा है बिक जायँ तो। हमारे हाथमें सत्ता आयेगी, तब ये सब वापस दिये बिना चारा नहीं। सत्ता न आये तो अिन सब मकानों (जेलों) का कब्जा तो हमारे पास ही है न?"

मेक्रेके साथ :

बापू — पैंतालीस सालसे जो विचार मैं दृढ़तासे रखता चला आ रहा हूँ, अुनमें परिवर्तन कराना कोअी हँसी-खेल नहीं। मैं हर बात खुले दिलसे सुनता हूँ। सब चर्चाअें बंधन-रहित होती हैं। परिषदके कारण अुपवासके बारेमें मेरी राय बदलनेका प्रश्न ही नहीं है। गोपालनकी तरफसे समाचार आये हैं कि मत बड़ी संख्यामें हमारे पक्षमें हैं। मगर अिस बारेमें अधिक समाचार कल आयेंगे।

२६-१२-'३२

प्रश्न — तो क्या दो जनवरीका कार्यक्रम निश्चित है?

बापू — मैं दो जनवरीको क्या करूँगा, यह मेरे मनमें कुछ तय नहीं है। सरकारी वक्तव्य तो अैसा निकला है कि भारत सरकार अपना निर्णय जनवरीके बीचमें देगी। शास्त्रियोंकी परिषदसे मैं किसी खास नतीजेकी अुम्मीद नहीं रखता; सिवाय अिसके कि मैंने अपना विरोध करनेवाले किसीको वापस नहीं भेजा, अितना मानसिक सन्तोष मुझे मिल जायगा। परिषद पूरी हो जानेके बाद मेरा विचार अेक वक्तव्य देनेका है।

शास्त्र चर्चा :

घारूरकर पक्ष कहता है कि हमारे प्रतिपादनके दोष हमारे सामने बताअिये, ताकि हम आपको जवाब दें।

बापू — मुझे अब आपसे कुछ नहीं सुनना है। आपने जो साहित्य ला दिया है अुसे पूरा पढ़ लूँगा।

बादमें मद्रासी पंडितने वृद्धहारित स्मृतिमें से कुछ पढ़कर सुनाया और कहा कि विविध प्रकारकी शुद्धि करनी पड़ती है।

बापू — तो अस्पृश्य वहाँ जा तो ज़रूर सकते है। मगर बादमें शुद्धि करनी पड़ती है।

शास्त्री — मगर प्रायश्चित्त बताया है, अिसलिअे निषेध तो है ही।

बापू — हमारे यहाँ कोअी आता है — मुसलमान वगैरा — तो आने देते हैं और अुसे बताये बिना घरकी शुद्धि कर लेते हैं। मगर अुसके आनेकी तो मनाअी नहीं होती। मेरा कहना यह है कि अिसमें यह नहीं लिखा कि अिन आदमियोंको मन्दिरमें आते ही निकाल दो। मैंने अेक और बात यह भी देखी है कि बाह्य चिन्होंसे छुआछूतका विचार किया गया है। मगर व्यभिचारी और खूनीका क्या? व्यभिचार करनेवाले भी वैष्णव मन्दिरोंमें जाते पाये गये हैं। क्या ये लोग अछूत नहीं हैं? अिनके प्रवेशसे अशुद्धि होती है, अितना तो सही है न? कर्मसे अस्पृश्य हो वह तो स्पृश्य बन सकता है न?

शास्त्री — लेकिन कर्मसे अस्पृश्य और जन्मसिद्ध अस्पृश्यकी भ्रष्टतामें कोअी भेद नहीं है।

बापू — प्रायश्चित्त किसे करना है? चांडालको करना है या स्पृश्योंको?

वैद्य — वृद्धहारित स्मृति अठारह मान्य स्मृतियोंमें से नहीं है।

अिसके बाद सनातनियोंने वैद्यके सवालोंके जवाब दिये। अिसमें अुन्हें काफ़ी छकाया।

आनंदशंकर दूर बैठे-बैठे तमाशा देखते रहे। बूढ़ा गोते खा रहा था तब अुसे बचानेको न दौड़कर वे खिलखिलाकर हँसते रहे। आज अैसा मालूम होता था कि हमारा पक्ष अव्यवस्थित है, जब कि सनातनियोंका समूह व्यवस्थाबद्ध था। सनातनी बापूके सवालोंका जवाब नहीं दे सके, मगर वैद्यको तो पछाड़ दिया और बता दिया कि 'स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते' वाले श्लोक अछूतोंके लिअे नहीं, मगर साधारण जनसमूहके लिअे हैं और शौचप्रकरणके सिलसिलेमें हैं।

अछूतोंको निकाल देनेकी बात कहीं नहीं है — बापूके अिस विधानका जवाब शास्त्री न दे सके।

वैद्यकी स्थिति बड़ी दयाजनक थी। पछाड़ खाने पर भी कहते जाते थे कि मैं जवाब दूँगा, जवाब दूँगा और थोथा बचाव करते जाते थे। आखिरमें दिनके अन्तमें जब सुधारक शास्त्रियोंको दूसरे रोज़ अेक संयुक्त घोषणापत्र तैयार करनेका न्योता दिया गया, तब बापूसे कानमें कहने लगे: "मैं कल नहीं आ सकूँगा; आया भी तो घोषणापत्र पर मुझसे दस्तखत नहीं हो सकेंगे, क्योंकि कानून बनानेके मामलेमें मेरी दूसरी ही स्थिति है!" फिर कहने लगे कि "आगमसे बने हुअे मंदिरोंमें मैं हरिजन-प्रवेशके पक्षमें नहीं हूँ"! हालाँकि आज तक अुसके पक्षमें दलीलें देते रहे हैं!

अैसा सुना था कि . . . बापूको सविनयभंग मुल्तवी करनेको समझाने आये हैं, मगर बापू कहने लगे: "अुनसे अैसा अेक भी वाक्य नहीं सुना। सिर्फ़ अेक बार अुन्होंने यह ज़रूर कहा था कि 'आप बाहर आ जायँ तो ओटावा बिल पर तो आप कैसी अच्छी लड़ाअी लड़ सकते हैं? . . . बेचारेका बूता ही क्या? दाँडी-कूचके समयके आपके भाषणोंने मुझे हिला दिया था। अुसी तरह अिस बार भी आप बाहर रहें, तो यह बिल बनने ही नहीं पाये।'

"मैंने अुन्हें समझाया कि आपको यह समझ लेना चाहिये कि मैं बाहर निकलूँ भी, तो अिस बिलके खिलाफ़ लड़नेकी शक्तियाँ खोकर निकलूँगा। मैंने अुन्हें यह भी समझाया कि अभी लोगोंमें जो खलबली मची है अुसके दो कारण हैं: (१) लोग डर गये हैं और अब कुछ करनेको सूझता नहीं है; (२) लोग सत्याग्रहके चमत्कार नहीं समझे हैं। मैं खुद ही अभी तक अुसका पूरा चमत्कार नहीं

जानता, तो बेचारे लोग कैसे जानें ? मैं सत्याग्रहको लेकर नहीं जन्मा था। अिस चीज़का विकास मेरे जीवनमें दिन प्रतिदिन होता गया है और होता जा रहा है, अिसलिअे मैं अुसकी नअी-नअी शक्तियाँ अनुभव कर रहा हूँ और अिसीलिअे अुसके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती जा रही है। लेकिन अुसकी पूरी चमत्कार-शक्तिकी अवधि तो मेरे ज्ञानसे भी बाहर है। आज जो परेशान हो रहे हैं, अुनमें से जो बहादुर हैं वे सिर्फ़ अेक ही बात देखेंगे कि यह आदमी खुद तो अभी जेलमें पड़ा है और जेलमें रहते हुअे जो कुछ अुससे बनता है, सो कर रहा है। जो थक गये हैं, वे यह देखेंगे कि यह आदमी अब और सब काम छोड़कर केवल अस्पृश्यताका काम लेकर बैठ गया है।"

अिसके बाद बापू बोले: "मुझे छुड़ानेका प्रयत्न करनेवालोंको तो अिस मुलाकातमें कुछ नहीं मिलेगा, अुल्टे . . . तो यह खबर दे सकता है कि यह तो जैसा था, वैसाका वैसा ही है। अिसके विचारोंमें ज़रा भी तबदीली नहीं हुअी है, और न किसी भी तरहकी शर्त पर बाहर निकलने की ही बात सुननेको तैयार है।"

हमारे शास्त्रियोंके साथ बारह बजे बातचीत। वासुकाका का पत्र था कि अभी मन्दिर-प्रवेशकी बात बन्द रखिये।

२७-१२-'३२

बापू — क्या रिलीजियस अेण्डाअुमेण्ट अेक्ट ही हमारे धर्मके मामलोंमें दखल नहीं देता ? तो फिर क़ानूनका विरोध करनेकी बात क्यों करते हैं ? अिस रिलीजियस अेण्डाअुमेण्ट अेक्टकी बात शारदा बिल जैसी नहीं है। सम्मति-वयका जो क़ानून बना, वह प्रचलित प्रथामें दखल देनेके लिअे था। आज जो क़ानून हम चाहते हैं वह अैसी प्रथामें दखल देनेके लिअे नहीं है, बल्कि जो क़ानून दखल देनेवाला है अुस क़ानूनका सुधार करनेके लिअे है।

आनंदशंकर — सम्मति-वयका क़ानून भी क़ानूनका परिवर्तन था, तब आप क्या भेद करते हैं ? अर्थात् तिलक महाराज जैसे लोग, जो सम्मति-वयके क़ानूनके विरुद्ध थे, अिसके भी विरुद्ध होंगे।

बापू — जब सम्मति-वयका क़ानून बना, तब लोगोंके सामने धारासभाका कोअी क़ायदा या क़ानून नहीं था, जिसकी रुकावट दूर करनेके लिअे वह बना हो। वह क़ानून तो हिन्दू धर्ममें सुधार करनेके लिअे था, जब कि आज जो क़ानून हम चाहते हैं वह मौजूदा क़ानूनको सुधारनेके लिअे है।

मैं तो सम्मति-वयके क़ानूनके विरुद्ध होने वालोंसे भी कहता हूँ कि हिन्दुओंके हाथमें पूरी सत्ता हो, तो अुन्हें हिन्दू धर्ममें सुधार करनेका हक़ है।

आनंदशंकर — तब तो आप हिन्दुओंके हाथमें सत्ता आये, तब तक रुक ही क्यों न जायँ ?

बापू — हाँ; मुझे आज कोअी यह बता दे कि मौजूदा प्रान्तीय और केन्द्रीय धारासभाके हिन्दू सदस्य अिस क़ानूनके विरुद्ध हैं, तो मैं अिस क़ानूनकी बात छोड़ देनेको तैयार हूँ।

शास्त्रियोंसे घोषणापत्र लेनेके लिअे बापूने मुद्दे लिख दिये :

(१) अस्पृश्योंके साथ जो बरताव सवर्ण करते हैं, अुसके लिअे हिन्दू धर्ममें क्या प्रमाण हैं ?

(२) हिन्दू धर्ममें अस्पृश्यता है, मगर वह कर्मके कारण है, जन्मके कारण नहीं। अुसका निवारण शौचादिके नियम पालनेसे हो सकता है। दूसरे अस्पृश्य जन्मके कारण भी शास्त्रोंमें माने गये हैं, अैसे दृष्टान्त मिलते हैं। अैसे अस्पृश्योंका अस्तित्व आजकल समाजमें नहीं है। आजकल जिन्हें अस्पृश्य माना जाता है, वे अैसे अस्पृश्य नहीं हैं। तीसरे अस्पृश्य महापातक और अुसके जैसे पापोंके कारण बनते हैं। अिनकी अस्पृश्यता अिस जगह अप्रस्तुत है, क्योंकि अुसका अेक भी प्रत्यक्ष लक्षण नहीं है। अैसे अस्पृश्य सवर्णोंमें भी मिल जाते हैं। जो सर्वसामान्य अधिकार सवर्णोंको हैं, वे अवर्णोंको भी होने चाहियें। अिन लोगोंको मन्दिर-प्रवेशादि सब अधिकार होने चाहियें।

कृष्णन नायरके साथ जो लम्बी बातें कीं, अुनका आखिरी हिस्सा :

बापू — यदि कोअी मेरे दिमागकी गहराअी ढूँढ़नेकी कोशिश करेगा तो वह ठोकर खायेगा। वह तो तिजोरीमें पड़ी हुअी गुप्त चीज़ है। कोअी यह कल्पना करे कि मैं अमुकसे अमुक काम कराना चाहता हूँ, तो वह बड़ी भूल करता है। मेरा निर्णय अुसके लिअे अप्रस्तुत है। दूसरी बात। आजकल कांग्रेसका काम गुप्त रूपमें किया जाता है। यह आत्मघातक है। शुरूमें शायद मेरा मन अिसे पसन्द करनेकी तरफ़ झुकता। मगर मैंने अपनी भूल देख ली है।

यह बात प्रकाशित कर देता, मगर सरकार अिसका दुरुपयोग करे, अिसलिअे मैंने सरकारसे नहीं कहा। मैं जो बात यहाँ कहता हूँ, अुसे प्रकाशित करनेवाले मनुष्यको मैं मूर्ख ही कहूँगा।

अेक चीज़ खुल्लमखुल्ला करना और साथ ही दूसरी चीज़ छिपे तौर पर करना सत्याग्रहके नियमोंके विरुद्ध है। अगर सब चीज़ें खुले तौर पर की गअी होतीं, तो आज तुम जो शिथिलता आयी हुअी देखते हो, वह न आअी होती। छिपे तौर पर करना होता, तो मुझे अैसा करनेसे कौन रोकता था ? मैं खुद ही छिपे तौर पर लड़ाअीका संचालन करनेके लिअे बाहर रहा होता, या श्यामजी कृष्ण वर्माकी तरह युरोपमें जाकर वहाँसे लड़ाअी चलाता। समुद्रमें डूब मरनेके

लिअे मुझे अेक हज़ार लड़कोंकी सेना खड़ी करनी हो तो कर सकता हूँ। क्योंकि अितना भोला विश्वास तो मैं अुनमें पैदा कर ही सकता हूँ।

प्रश्न — परन्तु अिस संशयात्मक दशामें हम क्या करें?

बापू — जो पक्का सत्याग्रही है, अुसके लिअे संशयात्मक दशा है ही नहीं।

बापूकी राय यह है कि मन्दिर-प्रवेशका निषेध नहीं है, प्रायश्चित्त है।

२८-१२-'३२ आनंदशंकर कहते हैं कि हरअेक प्रायश्चित्तमें निषेध तो है ही। बापू कहते हैं, हाँ। मगर जिस प्रायश्चित्तमें दुष्कृत्य करनेवालेके लिअे सज़ा है, अुसमें निषेध है, औरोंमें निषेध नहीं है।

आनंदशंकरका कहना है कि शास्त्रोंका अर्थ करनेका नियम यह है कि जहाँ-जहाँ निन्दा हो, वहाँ-वहाँ निषेध गृहीत ही है। जहाँ स्तुति हो वहाँ विधि है।

बापू — चांडालका निषेध हो अैसे वचन आप मुझे बताअिये। मैं जानता हूँ कि अुनके लिअे परलोकमें सजाअें हैं।

आनंदशकर — मगर चांडाल मन्दिरोंमें जायँ, यह चीज़ ही कल्पनाके बाहर है। वैसे ही, जैसे ये वेद पढ़ें यह कल्पनाके बाहर है। अिसलिअे अुसके बारेमें कोअी निषेध नहीं किया।

राजाजी, केलप्पन और माधवन नायर।

राजाजी — लोगोंके दिलसे आपके अुपवासकी बात हटानेका असंभव काम मैंने कर दिया।

माधवन — बेचारे लोगोंको भरोसा नहीं था कि हमारे 'हाँ' कहनेसे अुपवास रुकेगा या 'ना' कहनेसे।

राजाजी — अुन्हें मत देनेका मौक़ा आये अुससे पहले हमने अुन्हें समझानेका काम किया। फिर तो बाअीस दिनमें बाअीस हज़ार मत ले लिये।

मन्दिरमें कौन जा सकता है? सिर्फ़ नायर और ब्राह्मणोंको ही जाने दिया जाता है। चलियान, कम्मलान वग़ैरा नायर नहीं माने जाते। जो मन्दिरके ठेठ गर्भगृहमें न जा सकते हों, अुन सबको हमने तो मत देनेसे अलग रखा। अिस बुराअीकी भयंकरता तो यह है कि ये सब जातियाँ स्पृश्य मानी जाती हैं, फिर भी अुन्हें मन्दिरमें नहीं जाने देते।

बापू — वाअिसरॉयने जो बयान प्रकाशित किया है, अुसे देखते हुअे अब हमें क्या करना है? आपका क्या खयाल है?

राजाजी — अुपवास छोड़ देना चाहिये।

बापू — कैसे?

राजाजी — आपका सत्याग्रह तो आपके अपने लोगों और कार्यकर्ताओंके विरुद्ध था। अुसका अैसा असर भी होता, जिससे आपको और मुझे सन्तोष हो। मैं आशा रखता हूँ कि जिन्होंने आपके पक्षमें मत दिये हैं, अुनका आप खयाल करेंगे। अुनके अिस कामको आपके गारंटी मानना चाहिये। मगर अैसा बहुमत होने पर भी मन्दिर क्यों न खुले? ज़ामोरिन चाहे तो वह मन्दिर खोल सकता है। मगर कोअी भी अेक आदमी अुनके खिलाफ़ मनाहीका हुक्म ला सकता है। आप ज़ामोरिनके विरुद्ध सत्याग्रह नहीं करते। अिस काममें हमें सरकारी क़ानूनसे मदद मिलेगी। मगर अुसके लिअे आप अुपवास नहीं कर सकते। लोगोंका हृदय परिवर्तन करना था; सो जितना हो गया है, अुस हद तक यह मन्दिर खुल ही गया है। यह दुर्भाग्यकी बात है कि वस्तुतः वह नहीं खुला। मगर अुसके लिअे हमें मेहनत करनी चाहिये।

बापू — मुझे अिसमें शक नहीं कि गुरुवायुरके आसपासके लोगोंने मेहनत की है। क़ानूनके मामलेमें आपको अैसा नहीं लगता कि लोग अपने हक़ोंके मामलेमें सो रहे हैं और क़ानून बनवानेके लिअे मेहनत नहीं करते, अिसलिअे मंजूरी नहीं मिलती? आपने यह काम क्यों नहीं शुरू किया?

राजाजी — क्या हुआ अिसका वर्णन करूँगा, तो आपको अिसका जवाब मिल जायगा। गवर्नर अिस बातसे सहमत हो गये हैं और अुनकी अनुकूल रिपोर्टके साथ बिल गया है। मतगणना पूरी हो जाने तक हमने राह देखी, क्योंकि ज़्यादातर प्रश्नोंका अुत्तर अुसीसे मिल जाता था। मंजूरी हासिल करनेके लिअे अब हम अच्छी स्थितिमें हैं। हालाँकि, बहुत अच्छी हालतमें तो नहीं हैं, क्योंकि लोगोंका विरुद्ध प्रचार अभी जारी है और वह तो रहेगा ही।

बापू — तब मुझे आपके विरुद्ध अुपवास करना चाहिये। हृदय परिवर्तनके लिअे तो मैं अुपवास नहीं कर सकता।

राजाजी — लोकमत मन्दिर खोलनेके पक्षमें है, यह बात मतगणनासे मालूम हो गअी। मगर हमें यह सब बाक़ायदा और शान्तिसे करना है। लोगोंने आपत्ति की होती, तो भी मुझे लगता है कि मंजूरी तो ज़रूरी ही थी।

बापू — मतगणनामें क़ानूनकी माँग नहीं आती। क़ानूनकी माँग करनेसे लोकमत व्यक्त होता है।

राजाजी — देशभरमें आन्दोलन होगा। वाअिसरॉय मुश्किलें खड़ी कर रहा है, हमें भारत-मंत्रीसे अपील करनी पड़ेगी। मगर आप अुपवासकी तलवार सिर पर लटकती रखें, तो हम यह सब काम कैसे कर सकते हैं!

बापू — मुझे लाभालाभका विचार नहीं करना है। मेरे पास तो नैतिक कसौटी ही निर्णायक कसौटी है। मेरा रवैया यह है: आपको मुझे अुत्तम

न्यायाधीशके रूपमें स्वीकार करना चाहिये। मैं वाअिसरॉयका दोष नहीं निकालता।

राजाजी — अुन्होंने मियाद मुक़र्रर की है, यह तरीका बहुत असाधारण ज़रूर है, मगर अिसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि अुसके पीछे कोअी हेतु है। मैं तो आग्रह करता हूँ कि अब अुपवास मुल्तवी करनेका प्रश्न ही नहीं है। आपको अुपवासका विचार ही छोड़ देना चाहिये।

बापू — लोगोंकी अिच्छा क्या है, यह तय करनेके लिअे यह अुपवास नहीं था। वह तो अिसलिअे था कि मंदिर खुलवानेके लिअे लोग मेहनत करें।

राजाजी — लोग तो कहते हैं कि हमारी जायदाद बाँट दीजिये। लेकिन रिसीवर जायदाद लेकर चुपचाप बैठ जाय तो क्या हो?

हिंसासे काम चल ही नहीं सकता, यह अगर निरपवाद सत्य हो, तो मुझे कुछ नहीं कहना है। मान लीजिये कि अेक सिंह भेड़को खाये जा रहा है। आपकी अहिंसा अुस सिंहको नहीं रोक सकती।

बापू — मगर मेरी अहिंसाकी बात नहीं है। लोगोंकी सामूहिक अहिंसाका प्रश्न है। लोगोंने तो अपनी माँगका औचित्य साबित कर दिया। अब अुसका विरोध करना हिंसा है। मैं तो पॉवर हाअुसकी तरह हूँ। लोग अुससे शक्ति लेते हैं।

राजाजी — मैं यह समझता हूँ। जो कुछ करने लायक़ है वह सब हो रहा है। लोग मंजूरीके लिअे मेहनत करें, अिसके लिअे अुपवासकी सचमुच कोअी ज़रूरत नहीं है।

बापू — तो हम अुपवास मुल्तवी रखें।

राजाजी — मंजूरीके लिअे तो अुपवास है ही नहीं। अिसलिअे मैं तो कहता हूँ कि आप अिसकी बात ही बन्द कर दीजिये। ज़रूरत पड़े तो अुस समय आप कहाँ नहीं कर सकते?

बापू — मगर जब तक मेरी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो जाती, तब तक मुझसे अुपवासकी बात कैसे छोड़ी जाय? गुरुवायुर मंदिरके खुलते ही अुपवासकी बात खतम हो जायगी।

राजाजी — मंजूरी मिली और क़ानून पास हुआ कि गुरुवायुरका मन्दिर खुला ही समझिये।

बापू — लेकिन मैं तो लोगोंके विरुद्ध अुपवास करता हूँ, धारासभाके सदस्योंके खिलाफ़ कहाँ करता हूँ?

राजाजी — जब आपकी प्रतिज्ञा गुरुवायुरके मन्दिर तक ही सीमित है, तब तो मंजूरी मिलनेके साथ ही वह पूरी हो जाती है। मगर जिसे यह खोलनेकी सत्ता देनेका अधिकार है, वह अुस सत्ताको काममें न ले, तो आप कह सकते हैं कि यह काम कराना मेरी शक्तिके बाहर है।

बापू — नहीं; मैं तो जब प्रतिज्ञा पूरी होगी तभी अुपवासकी बात छोड़ूँगा। अुसकी भाषा आप मुझ पर छोड़ दीजिये। पहले तो हम यह निर्णय करें कि अुपवास अमुक मियादके लिअे मुलतवी करना है या बेमियादके लिअे? गुरुवायुर मन्दिरके लिअे मेरी प्रतिज्ञा है। मुझसे अुपवास तो छोड़ा ही नहीं जा सकता। मुल्तवी करूँ, तो वह प्रतिज्ञाका अेक अंग हुआ। मुलतवी न करूँ तो मेरी भूल होगी। सवाल यह है कि मुझे अुपवास निश्चित अवधि तक मुल्तवी करना चाहिये या अनिश्चित अवधि तक? मैं अुपवासकी बात छोड़ ही दूँ, तो यह प्रतिज्ञाके अक्षरोंके विरुद्ध जाता है और प्रतिज्ञाके भावके तो और भी विरुद्ध जाता है।

राजाजी — आप अनासक्तिकी बातें करते हैं। मगर आप यह कहें कि अमुक परिणाम न निकले तो मैं अपने प्राण दे दूँगा, अिससे ज्यादा आसक्ति और क्या हो सकती है?

बापू — मैं यह कह सकता हूँ कि अुपवास मुल्तवी करता हूँ, क्योंकि मन्दिर खोलनेमें अैसी मुश्किलें हैं, जिनका अुपाय करना लोगोंके हाथमें नहीं है। अिन मुश्किलोंकी मैंने कल्पना कर ली थी। मैं कोअी तारीख निश्चित नहीं कर सकता, क्योंकि यह अुपवास सरकारके खिलाफ नहीं है। मगर लोगोंको तो साफ़-साफ़ कह देना चाहिये कि मन्दिर खोलना ही पड़ेगा। मैं अपने प्रयोग पूरे कर लूँ और मेरा जीवन भी खतम हो जाय, अुसके बाद आप न्याय कर सकते हैं कि मैं सच्चा था या झूठा।

राजाजी — मगर मुझे कहना चाहिये कि अिस अुपवासकी बातसे सद्भाव फैलनेके बजाय बहुत दुर्भाव फैला है।

बापू — हाँ, वहीं मेरी अनासक्ति आ जाती है। अगर यह प्रतिज्ञा अीश्वर-प्रेरित होगी, तो ज़रूर सद्भाव फैलेगा।

राजाजी — अिसमें हमारी जो कसौटी हो रही है, अुसके आगे सविनय-भंगके दुःख तो कुछ भी नहीं हैं।

बापू — जो आदमी अुल्टे रास्ते चल पड़ा हो और फिर भी अपने ही विचार पर डटा रहे, तो वह झक्की कहलाता है और अुसके मित्रोंको अुसे समझाना चाहिये।

राजाजी — हाँ, आप दूसरोंके बनिस्बत कम झक्की हैं।

बापू — आपका यह प्रमाणपत्र मैं मान लेता हूँ। भगवानदासने मुझे कहा था कि 'जहाँ और लोग लट्ठकी तरह अक्खड़ होते हैं, वहाँ आप बहुत बार समझौता करते हैं। आप हृदयके अनुसार ही चलते हैं, और किसीके नहीं।' मेरे बराबर हृदयके अनुसार चलनेवाले बहुत कम लोग होंगे।

राजाजी — मुझे तो लगता है कि आप बुद्धिके अनुसार चलते हैं।

बापू — हाँ; अिसका अर्थ यह है कि मेरी बुद्धि हृदयको अपील करती है। मुझे अेक बार गोखलेने पूछा था कि तू यह स्वीकार करेगा या नहीं कि दलीलें मिलें अुससे पहले तुझे प्रतीति हो जाती है? मैंने कहा: हाँ, अेकाध किसी न किसी शब्दका दिल पर असर पड़ जाता है और बादमें दलील काम करती है।

अिस बारेमें जो कड़ीसे कड़ी हक़ीक़तें आपकी जानकारीमें आअी हों, वे आपको मुझसे कहनी पड़ेंगी।

राजाजी — तो मैं कहता हूँ कि लोग जो यह क़दम अुठानेको तैयार हुअे हैं, अुसके पीछे दबाव है। लोगोंकी अन्तरात्माको जाग्रत करनेके लिअे अुपवासकी भी हद होती है। आपने तो अुपवासको गाजर-मूली बना डाला है।

बापू — जो चीज़ आवश्यक है अुसे गाजर-मूली कहा ही नहीं जा सकता।

राजाजी — आपने अप्पाके मामलेमें जो अुपवास किया था, वह किसीको अच्छा नहीं लगा।

बापू — क्योंकि कोअी सारी हक़ीक़त जानता ही नहीं था। लोगोंके सामने मैं सारी हक़ीक़त तो नहीं रख सकता। अुसके परिणाम आपसे भी नहीं कह सकता। यदि मैं कहूँ, तो आप स्वीकार करेंगे कि यह अुपवास बिलकुल ज़रूरी था।

राजाजी — तब तो यह छूतका रोग माना जायगा।

बापू — अैसी दलीलें देनेवाले यह नहीं जानते कि अुपवासका क्या असर होता है। आध्यात्मिक अुपवासका आध्यात्मिक असर तो लोग जितना समझते हैं अुससे कहीं अधिक होता है। अुपवास बहुत अदृश्य रूपमें काम करता है। लोगोंमें वह खलबली मचा देता है और अक्सर लोगोंमें अुसके कारण भारी जाग्रति आ जाती है। अैसा होनेका कारण अुसके पीछे रही तपस्या होती है। शास्त्रोंकी जो बात मेरी समझमें आ जाती है, अुस पर मैं अेकदम अमल करने लगता हूँ। अिस तपस्याका असर मेरे संसर्गमें न आनेवाले मनुष्यों पर भी होता है।

राजाजी — आप तो गूढ़ बातोंमें चले गये।

बापू — यह वस्तु गूढ़ ही है। क्या आप जानते हैं कि अध्यात्मके यात्रीको शंका-कुशंकाओंकी कितनी मंजिलें पार करनी पड़ती हैं?

राजाजी — किसी भी चीज़को सच साबित करनेके लिअे कोअी भी मनुष्य शास्त्रोंके वचन अुद्धृत कर सकता है।

आपने चिनगारी रख दी है। अब ज़रा अिसे अवकाश दीजिये। वैसे आप अिस तरहकी गूढ़ भाषामें बातें करेंगे, तब तो अिसका अन्त ही नहीं आयेगा।

बापू — अैसी बातें तो मैं आपके ही साथ करता हूँ। कहीं सबके साथ होती हैं? विलायतमें अेक शुक्ल था। वह मांसाहारकी अुपयोगिता समझानेके लिअे मेरे सामने बेन्थनके पोथेके पोथे लेकर बहस करने लगा था। मैंने कह दिया कि तुम्हारे साथ मैं बहसमें नहीं पड़ सकता। मगर यहाँ यह बात नहीं। मुझे नहीं लगता कि मैंने अुपवासको सस्ता बना दिया है। मुझे तो जब हृदय कहता है कि तुझे अैसा करना ही चाहिये, तब मैं वैसा करता हूँ।

आप जानते हैं कि अिस गुरुवायुरके अुपवासके लिअे असली ज़िम्मेदार तो आप ही हैं।

मैंने (महादेवभाअीने) कहा — वल्लभभाअी तो हमेशा कहते हैं कि यह अुपवास राजाजीने ही मत्थे मढ़ा है।

फिर बापूने सारी परिस्थिति समझाअी और राजाजीसे कहने लगे: "आपने मुझसे कहा कि केलप्पनको बचाना चाहिये। मैंने तार दिया। वह तार भी आपकी ही प्रेरणासे दिया था। आपने ही कहा था कि तार अभी देना चाहिये। मुझे यदि अपना अभिमान होता तब तो मैं बुद्धिका अुपयोग करता। मगर मैं तो हर क्षण अीश्वर जैसा कराता है वैसा करता हूँ। जब गोलमेज़ परिषदमें मैंने कहा था कि अलग निर्वाचनका मैं जानकी बाज़ी लगाकर विरोध करूँगा, तब मैं यह नहीं जानता था कि अपनी अिस प्रतिज्ञाका पालन किस तरह करूँगा।"

केलप्पनने पूछा — कितने ही मित्र अिस अुपवासका अनुकरण करनेकी धमकी दे रहे हैं, तो क्या मैं अुपवास छोड़ भी सकता हूँ।

बापू — नहीं, नहीं। मगर मैं तुमसे अितना कहूँगा कि राजाजी जो कहते हैं वह तुम्हें सही लगता हो, तो तुम अुपवास छोड़ सकते हो। मैं तो कहूँगा कि मैं अुपवासकी बात छोड़ नहीं सकता, मुल्तवी ज़रूर कर सकता हूँ।

बादमें जब अैसे संयोग पैदा हो जायँ, तब करूँगा। लेकिन तुम अुपवास तभी छोड़ सकते हो जब कि अुपवासके पीछे जो आध्यात्मिक अर्थ मुझे लगता है, वह तुम्हें न लगता हो।

२९-१२-'३२

आज सुबह बापू बोले: "गोलमेज़ परिषदमें जो हुआ है, वह अिस ज़मानेकी बड़ीसे बड़ी करुण कथा है। अिसका कारण यह नहीं है कि वहाँ गये हुअे आदमी खाली हाथ आने पर भी यह मानते हैं कि कुछ लेकर आये हैं, बल्कि सबसे करुण बात यही है कि अिन लोगोंने गोलमेज़ परिषदमें भाग लिया। अिन लोगोंको वहाँ जाकर आरंभमें ही कह देना चाहिये था कि जब तक कांग्रेसके प्रतिनिधि नहीं आते, क़ैदी छूट नहीं जाते और आर्डिनेंस-राज्य जारी है, तब तक हम अिसमें भाग नहीं ले सकते। यह न करके भाग लिया, तो अब ये लोग क्या कर सकेंगे? पाँच-सात वर्ष तक तो अिस लड़ाअीका मुझे अन्त ही नहीं दीखता।"

केलप्पनके साथ बातें:

केलप्पन — मैंने जब मेरे बोझेमें हाथ बँटानेको कहा, तब मैंने अुपवासकी बात नहीं की थी।

बापू — औरोंसे जो दिया जा सकता था वह अुन्होंने दिया। मेरे पास अुपवासके सिवाय और क्या देनेको था? तुम्हें अितना तो समझना ही चाहिये था कि मैं अैसा ही किसी तरहका हिस्सा बँटा सकता हूँ। अिसमें कुछ भी बुरा नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों मैं अधिक विचार करता हूँ, त्यों-त्यों मुझे लगता है कि मैंने जो परेशानी खड़ी की है, वह ज़रूरी थी। हिन्दू धर्म मेरी आँखोंके सामने मर रहा है। अिसे सजीवन करना हो, तो मैं और क्या कर सकता हूँ? तुम नहीं जानते कि आज मुझ पर क्या बीत रही है। तुम राह देखो, जाँच करते रहो, और सहन करो। मुझे अुपवास करना पड़े तो तुम्हें बरदाश्त करना चाहिये। अभी तो अुपवास मुल्तवी हो गया है। भविष्यके गर्भमें क्या है, यह मैं नहीं जानता। अुपवास अनावश्यक भी हो सकता है, या मुझे यह लग सकता है कि गुरुवायुरके लिअे अुपवास करना तो मूर्खता और शक्तिका दुर्व्यय है। तुम्हें मैं जिस परेशानीमें डाल रहा हूँ, अुससे तुम्हारा कुछ भला ही होगा। कलके राजाजीके प्रश्नोंने मुझे विचारमें डाल दिया है और अैसा लगता है कि मेरा वक्तव्य कोअी विचित्र स्वरूप लेगा। मगर तुम्हें तो अिस बातको यहीं रहने देकर काममें भिड़ जाना है। अुपवासकी, अस्पृश्यता निवारणकी और मन्दिर-प्रवेशकी लड़ाअीका आन्तरिक अर्थ समझनेकी कोशिश करो। मुझे तो लगता

है कि हम सही तरीके पर अस्पृश्यता मिटा दें, तो अिसमें हिन्दू समाजकी मुक्ति है। नहीं तो सवर्ण हिन्दू और कथित अस्पृश्योंके बीच तुमुल युद्ध होगा। अछूत पागलपन और द्वेषसे लड़ेंगे और निराश होकर पृथ्वीतल परसे हिन्दू धर्मका नाश करनेकी कोशिश करेंगे। वे हिन्दू धर्मसे अिनकार नहीं करेंगे। अिसी तरह दूसरा धर्म भी अंगीकार नहीं करेंगे। मगर अीश्वरसे अिनकार करेंगे। ब्राह्मण-अब्राह्मणके झगड़ेसे भी यह झगड़ा ज्यादा भयंकर होगा। क्योंकि अछूतोंको ज्यादा कष्ट होता है। मेरा अुपवास अैसे झगड़ेको रोकता है, हालाँकि मैं जानता नहीं। शायद अुसका असर न भी हो। मगर मैं यह अुपवास ढूँढ़ने नहीं गया था। मैं तो बिस्तरमें पड़ा-पड़ा सरकारके अेक भद्दे प्रस्तावका विचार कर रहा था कि तुम्हारा प्रश्न मेरे सामने आया और मैं अुसमें कूद पड़ा। अुस समय मैं नहीं जानता था कि अिसमें अुपवासकी बात आ जायगी। तुमने मुझे सारी हकीकत बताअी, यह तुम्हारे लिअे बिलकुल अुचित था। अिसी तरह दूसरे मित्रोंने तार दिये, यह भी अुनके लिअे ठीक ही था। जो कुछ भी हुआ, सो सब ठीक ही हुआ है।

अमरेलीके आखिरी कहे जानेवाले समाचार सुनकर बापू बोले: “मालूम होता है ये सनातनी अपने असली रूपमें प्रकट हो रहे हैं। अब तक अैसी भद्दी अतिशयोक्ति सरकारके खिलाफ़ थी, अब हमारे विरुद्ध हो रही है। सनातनी यहाँ तक बढ़ जायँगे, यह देखकर मुझे जो वेदना हो रही है, अुसकी तुम्हें कल्पना नहीं हो सकती। यह आदमी लिखता है कि जो धर्म और मन्दिरोंको भ्रष्ट कर रहे हैं, अुन्हें सज़ा देनेको अीश्वर अवतार धारण करेगा। अिसे लगता है कि वह खुद हिन्दू धर्मकी रक्षा कर रहा है। मगर वह क्या कर रहा है, अिसका अुसे खुदको पता नहीं और अपने कार्यके समर्थनमें महाभारतके वचन अुद्धृत करता है। महाभारत तो मनुष्य-जातिका सनातन अितिहास है। वह तो रत्नोंकी खान है। खानमें तो रत्नोंके साथ पत्थर भी मिलते हैं।”

राजाजी — मैं आपसे जो कहना चाहता हूँ वह तो यह है कि आपको शक्तिका संग्रह करना चाहिये। अुसका बड़ा मूल्य है।

बापू — संग्रह नहीं, मगर कंजूसकी तरह काममें लेना चाहिये। मगर कभी-कभी कंजूस भी अपना धन अुड़ाअूकी तरह खर्च करता है।

राजाजी — अिस तरह गोल-गोल चक्करमें बहस करना तो आसान है।

बापू — मेरी तो प्रतीति बढ़ती जा रही है कि मेरा यह अुपवास आखिरी नहीं हो सकता। मेरे पीछे मेरी तरह हज़ारों मनुष्योंको प्राण निछावर करने पड़ेंगे। मद्रासके ‘वेद धर्म’ ने अनशनके समर्थनमें प्राचीन वचन अिकट्ठे किये हैं।

राजाजी — हमारे पुराने मित्र कट्टर दुश्मन बन गये हैं, क्या यह दुःखद नहीं है ?

बापू — अिसमें कुछ भी असाधारण नहीं। युरोपियन मित्र भी तो दुश्मन बन गये हैं न ?

राजाजी — अर्विन ?

बापू — वह अभी अितना खराब नहीं हुआ। मगर सारी चीज़ ही महा दुःखद है।

राजाजी — अिस सबसे हमें चेतावनी लेनी चाहिये।

बापू — मैं तो लेता ही हूँ। मगर मैं यह नहीं कह सकता कि यह चेतावनी किससे मिलती है। मैं तो सबसे कहता हूँ कि मुझ पर दया मत करना। यदि तुमने मेरी दया की, तो मुझे मिलनेवाला प्रकाश तुम रोक दोगे। ठेठ अंतिम घड़ीमें भी प्रकाश लेनेकी मुझमें शक्ति है।

राजाजी — आपके हेतुओं और अिरादोंके बारेमें तो शंका ही नहीं है। आपत्ति आपकी पद्धति पर है। आप कहते हैं कि समय-समय पर अैसी करुण घटनाअें होती हैं। अिसलिअे आपको समय-समय पर यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि आखिरी नतीजा ये करुण घटनाअें या कड़वाहट ही होगा। आप अखीरमें सबका हिसाब लगाने बैठें यह नहीं हो सकता। बीच-बीचमें हिसाब लगाते रहना चाहिये।

बापू — मैं कहता हूँ कि जब तक हमारे अंतिम ध्येयको कोअी आँच नहीं आती, तब तक हानि-लाभका हिसाब लगाते रहना गैर ज़रूरी है। हमें तो अितना ही देखना चाहिये कि हम जो कर रहे हैं वह शुद्ध है या नहीं ? हम जो बो रहे हैं, वह प्रेम है या और कुछ ? हमें द्वेषकी खेती नहीं करनी है। आप जो बताते हैं अुस तरह समय-समय पर अन्दाज़ लगाते रहना सम्भव ही नहीं है। दिमाग़ खुला रखें अितना काफ़ी है। आसपास जो घटनाअें हों, अुनका अुसपर असर पड़ने देना चाहिये। मैं तो हमेशा अैसा ही करता हूँ। १९१९ के ६ अप्रैलका अुदाहरण लीजिये। या प्रिन्स ऑफ वेल्स आये अुस समयके बम्बअीके दंगोंकी मिसाल ले लीजिये। दास दौड़ते हुअे आकर मुझे अुलाहना देने लगे कि हमारे साथ सलाह-मशविरा किये बिना यह क़दम कैसे अुठाया ? मैंने कहा कि मैं अिन्तज़ार कैसे कर सकता हूँ ? मैं अधिक ट्रामें कैसे जलने दे सकता हूँ और अधिक पारसी लड़कियों पर कैसे अत्याचार होने दे सकता हूँ ? अुसके बादका बड़ा अुदाहरण बारडोलीके प्रस्तावसे सत्याग्रहकी लड़ाअी बन्द करनेका है।

राजाजी — ये सब अुदाहरण तो करुण घटनाअें बनें अुससे पहले पाल बाँधनेके है।

बापू — इसमें तो सदा जागते रहना है। पता लगते ही फ़ौरन चेत जायँ।

केलप्पन — मुझे कोअी बहस नहीं करनी है। मुझे कितना दुःख होता है, वह आप नहीं समझ सकते।

बापू — मैं सब समझता हूँ। मगर कलेजा कड़ा कर लिया है। अिस गुरुवायुरके मामलेमें हम सब अुलझे हुअे हैं। अिससे हम छूट नहीं सकते। यदि हम छूटनेकी कोशिश करें तो वह बहुत बुरा होगा। गुरुवायुर तो हवाका रुख बतानेवाला तिनका है। आजकल सनातनी गन्देसे गन्दे अुपाय काममें ले रहे हैं। अिन लोगोंका कोअी सिद्धान्त नहीं है। अिनके कितने ही काम तो अितने भद्दे हैं कि अुन पर मानहानिका दावा किया जा सकता है। शंकराचार्य आज नामके ही शंकराचार्य हैं। वे अपनी गद्दीको लजाते हैं। हमारे सामने अेक बात कह जाते हैं और खुलेमें दूसरी ही बात कहते हैं।

गुरुवायुरके मामलेमें तुम्हें यह देखते रहना है कि जिन्होंने तुम्हें हस्ताक्षर दिये हैं, वे कहीं वहाँ भी तो हस्ताक्षर नहीं करते? तुम्हें घोषणाअें निकालनी चाहियें। अर्ज़ियाँ भेजनी चाहियें। ज़ामोरिनको अभी छेड़नेकी ज़रूरत नहीं। अिस मंडलीमें ज़ामोरिन अुत्तम मनुष्य है। वह चारित्र्यवान है। अपनी समझके अनुसार वह काम कर रहा है।

शेशु आयर, अेक गणितशास्त्री और अुसकी गणितशास्त्री पुत्री।

शेशु — आपसे मिलने आया हूँ, क्योंकि आप 'यस्मान्नोद्विजते लोको' वाले श्लोकके दृष्टान्त हैं। मैं अस्पृश्यता निवारणको मानता हूँ। संस्थाओंको मदद देता हूँ। मगर आप जिस तेज़ीसे यह काम करना चाहते हैं, अुसमें मेरा विश्वास नहीं है। क्योंकि अिससे बड़ा कलह होनेकी सम्भावना है। मैं चाहता हूँ कि मेलसे काम हो। अुपवास तो बलात्कार है। सवाल यह नहीं है कि आप क्या चाहते हैं, मगर यह है कि लोग अिसे क्या समझते हैं। यह बात ही अैसी है कि अुसके लिअे समय चाहिये। आपको मनुष्योंसे काम लेना है। अुनके साथ धीरज रखना चाहिये। जल्दबाज़ीसे काम बिगड़ेगा। हमने तो सुना था कि केलप्पन छिपे तौर पर खाते थे।

बापू — तब तो अुनके अुपवाससे आपको कोअी कष्ट नहीं था। अैसे अुपवासका कोअी असर ही नहीं पड़ता। आप तो गणितशास्त्री हैं, अिसलिअे गणितकी रीतिसे समझ सकते हैं कि अैसे अुपवासोंसे लोगों पर कोअी दबाव नहीं पड़ता।

मन्दिरमें सचमुच जानेवालोंके ही मत लिये गये हों, तो यह मतगणना सच्ची मानी जायगी।

राजाजी — आप यह तो नहीं कहना चाहते न कि योनानीमें सभी भौतिकवादी और बुद्धिवादी बन गये हैं और मन्दिरोंको वे भूल ही गये हैं?

शेशु — मैं तो अपनी ज़िन्दगीमें अेक ही बार गुरुवायुरमें गया हूँ। अिसलिअे मैं अपनेको मत देनेका अधिकारी कैसे मान लूँ?

बापू — मान लीजिये मेरे जैसा आदमी मंदिरमें विश्वास रखता हो, मगर कअी कारणोंसे मन्दिरमें नहीं जाता हो, फिर भी अुसकी पूरी श्रद्धा हो सकती है।

शेशु — अैसे लोगोंके लिअे पूजाकी दूसरी पद्धति होगी।

बापू — नहीं, मत देनेका अधिकार तो मंदिरोंको माननेवाले सभी लोगोंको होना चाहिये, फिर भले ही वे मंदिर न जाते हों। आप जो कहते हैं अुसके कितने चौंकानेवाले परिणाम हो सकते हैं, यह आपको मालूम है? जो मन्दिर जानेमें विश्वास ही न रखते हों, वे भी मत देने आ जायँगे। अिसलिअे हमने तो लोगोंकी अीमानदारी पर छोड़ दिया कि जो मन्दिरोंको मानते हों, वे राय दें।

राजाजी — मैं तो अिनके सामने सब किताबें रख देनेको तैयार हूँ। ये मन्दिरमें न जानेवालोंके नाम काट दें। मैं मानता हूँ कि अेक फ़ी सदी नाम भी नहीं काटे जा सकते।

शेशु — आखिर तो हम सब हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशको मानते हैं। थिया बड़े साफ़ होते हैं, चेरुमा बहुत गंदे होते हैं। क्या हम अिनके साथ भी घुलें-मिलें?

राजाजी — गुरुवायुरमें तो नहा कर गीले कपड़ोंसे जाना पड़ता है। धोबीके धुले कपड़ोंसे भी काम नहीं चलता। और कअी जगह तो चल जाता है। खैर। मगर थिया लोगोंको तो आप मन्दिरमें जाने देंगे न?

शेशु — हाँ, मैं अुन्हें जाने दूँगा। मगर आप हरिजनोंके लिअे अलग मंदिर बनवाअिये न? और अिसके लिअे रुपया सनातनियोंसे दिलवाअिये।

बापू — आप यह कहना चाहते हैं कि सनातनी रुपया खर्च करके शान्ति खरीद लें। मैंने तो यह सुझाया है कि बहुमत मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हो, तो हरिजन मन्दिरमें जायँ। सनातनियोंको अपने लिअे नया मन्दिर बनाना हो तो बनायें। मगर हरिजन और सुधारक दोनों अल्पमतमें हों, तो अुनके लिअे नया मन्दिर बने।

शेशु — मुझे मंजूर है। मगर मुझे लगता है कि सही मतगणना करना ही असंभव है।

मद्रासमें अीसाअी बने हुअे अछूतोंके साथ अीसाअी देवालयोंमें भी अस्पृश्यता रखते हैं। अुन्हें दूर रखनेके लिअे कठघरे बना

३०–१२–'३२

दिये हैं। आज पढ़नेमें आया कि अुसके विरोधमें कुछ अीसाअियोंने मद्रासके बिशपको अनशन करनेका नोटिस दिया है। बापूको यह मनोरंजक लगा।

वल्लभभाअी — वे कठघरोंको क्यों नहीं अुखाड़ देते?

बापू — शायद आपके खयालसे तो यह अहिंसा ही होगी?

वल्लभभाअी — अिन कठघरोंको अुखाड़कर क्या वे किसीको मारेंगे? अुखाड़कर फेंक देनेकी ही तो बात है!

'ज्ञानप्रकाश' में यह पढ़कर कि दो शास्त्री पूनामें वेदसंहिताका पारायण करते-करते ग्यारह दिनका अनुष्ठान कर रहे हैं, बापूने अिन लोगोंको लिखा कि: "अगर आप मेरे विरोधमें अैसा कर रहे हों, तो आपने मुझे तो अिस बारेमें नहीं लिखा। मगर मेरे खिलाफ़ न हो और केवल भूतमात्रके प्रति करुणासे प्रेरित होकर और हिन्दू धर्मकी रक्षाकी खातिर अैसा किया हो, तो आपकी तपश्चर्यासे हिन्दू धर्मका श्रेय हो।"

अिस पर वल्लभभाअी कहने लगे: 'जब सैकड़ों हिन्दू अीसाअी और मुसलमान हो गये, तब ये अनुष्ठान करनेवाले कहाँ चले गये थे?'

बापूका अुपवास सम्बन्धी बयान तैयार हुआ। अिस पर खूब चर्चा करके राजगोपालाचार्यके साथ बैठकर अेकबार फिर सारा जाँच लिया। अिसमें अेक जगह अुस प्रस्तावका अुल्लेख था, जो बापूने पूना-करार पर हस्ताक्षर करनेवालोंकी बम्बअीमें सभा करके पास किया था। बापूको अैसा मालूम था कि यह प्रस्ताव बिड़लाके दफ़्तरमें होगा। मेरा खयाल था कि 'अेपिक फास्ट' में से निकाल लेंगे। मगर राजाजीने कहा: "अिस प्रस्तावकी नकल कहीं नहीं है। मद्रासमें जब-जब मैंने अिस प्रस्तावकी और मन्दिर-प्रवेशकी बात कही है, तब-तब लोगोंने मुझसे कहा है कि तुम यह घरकी बात कर रहे हो। सच बात यह है कि यह प्रस्ताव पूरा किसी भी अखबारमें नहीं आया। अुसकी नक़ल मैंने बिड़लासे और जयसुखलालसे मँगवाअी तो नहीं मिली, और आज मुझे अुसे तैयार करना पड़ रहा है! मगर अिसके लिअे भी बापूने खुद जो समझौता तैयार किया था अुसकी नक़ल चाहिये। वह नक़ल हो, तो चूँकि मैंने अुसे तैयार किया था, अिसलिअे अुस परसे वही की वही भाषा मैं लिख सकूँगा।"

मैंने कहा: "फिर भी वह भाषा अैसी तो नहीं हो सकती, जिसे अवतरण चिन्होंमें रखा जा सके! अिसलिअे हमें यह लिखना चाहिये कि अिस आशयका प्रस्ताव हुआ था।" हमने अैसा ही किया। राजाजीको खयाल आया कि सब

जगह तलाश किया, मगर 'टाअिम्स' की फाअिलमें तलाश नहीं किया था। लेकिन अुस वक्त जाँच कैसे हो? वह बयान भावात्मक प्रस्तावके साथ अखबारोंमें गया। बादमें जब शामको राजाजीने 'टाअिम्स' की फ़ाअिल देखी और मूल प्रस्ताव ढूँढ़ निकाला, तो अुनकी बनाअी हुअी भाषा लगभग अुससे मिलती-जुलती ही थी! तुरन्त ही अिसके तार दे दिये गये और बयानमें प्रस्तावकी निश्चित भाषा आ गअी।

अिस बयानमें से राजाजीने अेक पैरा निकलवा दिया। अिस पैरेमें बापूका सिद्धान्त था, परन्तु बापूने यह कहकर अुसे निकाल दिया: "अिस वक्त तुम्हें समझानेका समय नहीं है। नहीं तो समझा सकता हूँ कि यह बात बिलकुल सच है और अुसे कहना जरूरी है, मगर निकल जाय तो हर्ज़ नहीं।" अिस पैरेका सार यह है: "जहाँ अैसा मालूम हो कि लोगोंने अपने सिद्धान्तोंको ताक पर रखकर मत दिये हैं, वहाँ गहरी जाँचसे पता लगेगा कि अुनका सिद्धांत मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध नहीं था, परन्तु मेरी ज़िन्दगी बचानेका था। सिद्धान्त तो वह है जिसके लिअे मनुष्य अपना सर्वस्व और प्राण त्यागनेको तैयार हो जाय। भगवान क्वचित् ही मनुष्यको अैसी कसौटी पर चढ़ाता है। सच बात यह है कि अनशन अैसा अदृश्य असर करनेवाली शक्ति है, जो करोड़ों मनुष्योंको अज्ञात रूपसे हिला देती है। अैसे अनशनसे किसी पर न चाहते हुअे भी दबाव पड़ता हो, तो भी अुसे छोड़ा नहीं जा सकता।"

राजाजीको यह गूढ़ प्रभावकी बात अच्छी नहीं लग रही थी और अिसी कारण अुन्होंने यह पैरा निकलवा दिया।

आज अुपवास छोड़ देनेके सम्बन्धमें और सुब्बारायनके बिलको मंजूरी देनेके बारेमें वाअिसरॉयको तार गया। वल्लभभाअीने यह तार न देनेके लिअे काफ़ी दलीलें दीं। मेरे विरोधको तो बापूने अुड़ा ही दिया और तार भेज दिया। अिसमें भी अल्टीमेटम (अंतिम सूचना) तो था ही। बापूने बताया: "अिसमें जो दलील है वह किसीने नहीं की और वह मुझे अुनके आगे रखनी ही चाहिये।"

३१-१२-'३२

बाबू भगवानदास और अिन्दिरारमण शास्त्री आज चले गये। दोनों केवल बापूजीके प्रति तीव्र भक्तिसे प्रेरित हो कर आये थे। भगवानदासकी भक्तिकी तो बात ही क्या? हर रोज़ फल लाते, बापूके चरणोंमें रखते, साष्टांग प्रणिपात करके चरणस्पर्श करनेकी कोशिश करते, पर बापू अैसा नहीं करने देते। गये अुस समय अुनका गला भर आया: "आपकी आज्ञा हो तो ठहर जाअूँ!" अिन्दिरारमण बड़ा

दर्शनशास्त्री है। मगर वह बेचारा अिस तरह व्यवहार करता था मानो कुछ जानता ही नहीं। बापूने अुसका परिचय माँगा तो अेक पत्र लिख कर दे गया। वह बिहारकी नम्रताकी मूर्ति है।

अिन लोगोंके सामने राजाजीकी भक्ति दूसरी ही तरहकी थी।

चिन्तामणराव वैद्यको राजाजी मद्रास प्रान्तमें ले जाना चाहते थे। वैद्य बाबा बोले: "नहीं भाअी, वहाँ मद्रासके पंडित-शास्त्रियोंका मुक़ाबला मुझसे नहीं हो सकता। अुन लोगोंके अजीब दिमाग़ हैं। देखिये न ये राजगोपालाचार्य, क्या अिनकी दलीलोंकी कोअी बराबरी कर सकता है? कल अुन्होंने जो भाषण दिया, अुसमें अेकके बाद अेक कड़ी कसकर बिठाते गये और अेक अटूट ज़ंजीर बना दी। अुन दलीलोंका जवाब कौन दे सकता है?

वही राजगोपालाचार्य अनशन वगैराके बारेमें बापूसे लड़ते-झगड़ते हैं और अन्तमें बुद्धिसे नहीं, पर हृदयसे बापूकी बात मानकर जाते हैं, और अुसके लिअे फिर अपनी अकाट्य युक्तियाँ अुपस्थित करते हैं!

रामानुजम् गणित-शास्त्रीको प्रसिद्धि देनेमें अुनका हाथ था। जब मैंने यह सुना तो अुनसे पूछा: "आपका अैच्छिक विषय क्या था, गणित?"

राजाजी बोले: "नहीं भाअी, भौतिक विज्ञान था। मगर यह कहिये कि मेरा कोअी अैच्छिक विषय था ही नहीं। मेरा अैच्छिक विषय अपनी अिच्छाओंको परवश बनाकर चलनेका था।"

बापूके साथ आज भी बार-बार तर्क करते थे कि अुपवासका विचार छोड़ दीजिये। वचन माँगते थे कि अब लम्बे समय तक अुपवास नहीं करेंगे।

बापूने हँसते-हँसते कहा: "तीन वर्ष तक न करूँ तो!" मगर बापू सब हँसीमें अुड़ा रहे थे और राजाजीको शंका बनी ही रही। वाअिसरॉयके तारमें यानी ठेठ आखिरी लेखमें फिर यह बात आकर खड़ी हो गअी थी!

जाते-जाते कहा: "बापूसे कह दो कि अब हमसे पूछे बिना अुपवास किया, तो हम अुस पर कोअी ध्यान नहीं देंगे।" बादमें बापूसे कहने लगे: "बा ने मुझसे आपके विरुद्ध अेक शिकायत की है। बा मुझे हमेशा पूछती हैं कि 'हम असहयोग करते हैं, तब फिर यह वाअिसरॉयको तार कैसा और बिल मंजूर करानेकी प्रार्थना करनेवाले प्रस्ताव कैसे?'"

बापू बोले: "यों कहिये न कि आपको ही यह खटकता है? बेचारी बा पर क्यों डालते हैं?"

बा सामने ही बैठी थीं। राजाजीने बा से गवाही दिलवाअी। बा ने तुरन्त कहा: "हाँ, हम यह कैसे कर सकते हैं?"

राजाजी कहने लगे: "बहुतसे लोग पूछते हैं।"

बापूने बा को समझाया : "असहयोग किया है, तो क्या हम अपने पैर काट लें ? बिहारमें अेक आदमी चरखा संघको ठगता था, अुसके बारेमें मैंने ही कह दिया कि अुसके खिलाफ़ दावा करो। असहयोगका यह अर्थ ही नहीं है। रीडिंगके पास भी तो गया था न?"

फिर राजाजीसे बोले : "आपको विलिंग्डनको तार देना चाहिये कि कहीं आप पर अिस कृत्रिम आन्दोलनका असर न पड़ जाय, अिसलिअे मुझे आपको समझानेके लिअे आना है, और अुससे मिलनेकी माँग कर लीजिये!"

राजाजी बोले : "बापूने अप्रत्यक्ष रूपसे सूचना तो कर ही दी है कि मुझे अुससे मिलना चाहिये।"

ये हैं राजाजी! अनशनका सख्त विरोध करनेके बावजूद अिसी अनशनकी भव्यता और अुससे होनेवाले अदृश्य असाधारण परिणामों पर वे भाषण दे सकते हैं! अकसर अैसा खयाल होता है कि अुनमें किसी भी मामलेको लेकर अुसका बचाव करने की वकीलकी मूल वृत्ति अभी तक मौजूद है। बापूने आज ही कोअी बात करते हुअे कहा : "मुझसे बहसके लिअे बहस हो ही नहीं सकती। मुझे तो अपना मामला झूठा लगे तो मैं जजसे कह दूँ। और अिस तरहसे मैंने कितनी ही बार मुक़दमे छोड़ दिये हैं और मुवक्किलोंको रुलाया है।"

क्या राजाजीमें तत्त्वनिष्ठासे व्यक्तिनिष्ठाका प्राबल्य होगा? व्यक्तिनिष्ठा और तत्त्वनिष्ठाको अलग करनेवाली रेखा अितनी बारीक है कि अकसर दोनों अेक दूसरेमें मिल जाती हैं।

'फ्री प्रेस' ने कल 'डेली हेरल्ड' की यह गप मोटे शीर्षकोंमें छापी थी कि पहली तारीखको गांधीजीको छोड़ देंगे। बापूने कहा था : "'फ्री प्रेस' में है, अिसलिअे जो कोअी अैसी गप आये तो अुससे अुलटा समझना चाहिये।" मगर आज तो यह अखबार अुससे भी आगे बढ़ गया और दूसरी कअी गप्पें छापी हैं।

१-१-'३३

आज सवेरे चक्कर काटते हुअे कल अखबारोंमें आअी हुअी खबरोंकी चर्चा चली। बापू बोले : "अिन लोगोंको छोड़ना पुसा ही नहीं सकता। कैसे छोड़ें! मैं भारत-मंत्री होअूँ तो मैं भी अैसा ही करूँ। संभव है कि सप्रू-पोलाकको मुझसे मिलनेकी अिजाज़त दी हो। मगर सरकारने या अिन लोगोंने हरगिज यह झूठी आशा न रखी होगी कि ये लोग मुझे समझा सकेंगे। और सेम्युअल होर बराबर अीमानदारीसे मानता है कि हमारी सेना हट जाय, तो हिन्दुस्तानमें अंधाधुंधी मच जाय, हमारा नाम बदनाम हो, वग़ैरा।"

मैंने कहा : “यह तो ठीक है, मगर ये लोग निःस्वार्थताका दावा करते हैं अुसका क्या? वे तो कहते हैं कि हमारा भला करनेके लिअे ही आये है!”

बापू : “हमारे सनातनी क्या कहते हैं! कल वारकरी संप्रदायके प्रति देशमुखकी लिखी हुअी पत्रिका तुम्हींने तो पढ़कर सुनाअी थी। अुसमें वह बेफिकरीसे कहता है कि अछूतोंको क्या दुःख है? अुन्हें खाने-पीने और पहननेको मिलता है, वे समाजके अेक अंग हैं और अंगके रूपमें काम देते हैं। हम अिनके प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। हमें नया कर्तव्य बतानेवाला कौन है? अिसी तरह ये लोग भी मानते हैं कि हम हिन्दुस्तानका भला कर रहे हैं। मगर अिन लोगोंका किसलिअे विचार करें? अेण्ड्रूज़को ले लो। यह बात नहीं कि दिल ही दिलमें अेण्ड्रूज़ भी यह न मानते हों कि अंग्रेज़ी राज्यने अिस देशका कुछ न कुछ भला ही किया है। पोलाकसे बढ़कर अीमानदार अंग्रेज़ और तुम्हें कहाँ मिलेगा? तुम अुसके समागममें खूब आये हो। यह आदमी तो साफ़ मानता है कि अंग्रेज़ोंने अिस देशका भला ही किया है। फिर दूसरे अैसा मानें तो अिसमें आश्चर्य ही क्या? यह तो अीसाअी मिशनकी वृत्ति है। यह समझमें आने लायक बात है कि ये लोग नहीं छोड़ेंगे। कांग्रेसके साथ समाधान हो तो छोड़ें, समझौता अुन्हें करना नहीं है। फिर किसलिअे छोड़ें? कल मैंने झीणाभाअी जोशीको साफ़ कह दिया। जो थक गये हों वे निकल जायँ, कमसे कम आदमी जेलमें रहें और आयें। अिसीमें हमारा श्रेय है। सम्भव है कि सारा देश हमें भूल जाय। यह बात तो स्वागत करने लायक़ है। देखो न वह शंकराचार्य भी तो कहता है कि अिन लोगोंको हिन्दू धर्मसे निकल जाना चाहिये? भले ही तमाम हिन्दू हमारा त्याग करें! भगवान तो त्याग नहीं करेगा न? आज मोतीबाबूसे मैंने कहा, ‘आप अीश्वर पर भरोसा रखनेकी बात करते हैं और डरते रहते हैं। पर अिससे काम कैसे चलेगा?’ अुन्हें डर है कि हिन्दू धर्ममें फूट पड़ जायगी। फूट पड़नी हो तो पड़े। हमारी फूट डालनेकी अिच्छा थोड़े ही है? और अमुक बात हो जायगी, अिसके लिअे हम धर्मका त्याग कैसे कर सकते हैं! धर्मके धुरंधर बन बैठे लोगोंने आज गुण्डेबाजीको धर्म बना डाला है। यह कैसे सहन किया जा सकता है?”

हमारे आदमियोंकी बात करते हुअे कहने लगे : “मुझे तो दरबारकी बात अच्छी लगी। अुन्होंने निश्चय कर लिया है कि हमें लड़ाअीमें पड़ना है, अिस-लिअे वे मुझे किस तरह मिलने आ सकते हैं? . . . ने भी निश्चय कर लिया कि मुझे अस्पृश्यताका ही काम करना है। यह भी सीधी बात है। अिन दोनों चीज़ोंमें अीमानदारी है। मगर जो दो घोड़ों पर सवारी करनेकी बात करते हैं वह गलत है।”

आज नये सालके अुपलक्ष्यमें सरोजिनी देवीने वल्लभभाअीके लिअे मिठाअी और बापूके लिअे नीचे लिखा सन्देश भेजा :

"हम सबकी तरफसे कातनेवाले छोटेसे योगीको अिस प्रार्थनाके साथ कि अुसके हाथों शान्ति और मुक्तिके लिअे सच्चे, मज़बूत और सुन्दर भावीके तार कतें।"

विनोबाका हृदयस्पर्शी पत्र आया :

"पू० बापूजीकी पवित्र सेवामें,

"नालवाड़ी वर्धासे डेढ़ मील दूर केवल हरिजनोंकी आबादीवाला गाँव है। २५ तारीखसे हरि-स्मरण करके वहाँ रहनेवाला हूँ। वर्धाके आश्रमको स्थापित हुअे अब बारह वर्ष हो जायँगे। अेक सत्र समाप्त हुआ। अनुभव अच्छा मिला। कर्तापनकी भावना चली गअी। अीश्वर ही है, अैसी प्रतीति हो गअी। अितने वर्ष मैं वर्धामें नहीं रहा, आपकी आज्ञामें रहा हूँ। अिस दुनियामें आपके आशीर्वादके बिना और सब शून्य है। मैं यह कह सकता हूँ कि अिन बारह वर्षोंमें व्रतोंका पालन करनेका मैंने सतत प्रयत्न किया है। फिर भी अपनेमें बहुत अपूर्णता पाता हूँ। अीश्वरके प्रति मेरी जितनी भक्ति है, अुससे कहीं अधिक अीश्वरकी कृपा मैंने अपने अूपर देखी।

"मैं जानता हूँ कि आपके आशीर्वादसे तो मैं पूरी तरह ओतप्रोत हूँ। फिर भी अुसीकी याचना करनेके लिअे यह पत्र लिख रहा हूँ। अपने तुच्छ सेवककी सँभाल रखिये। आपके महायज्ञकी आहुति बन जानेकी पात्रता अुसे अीश्वरसे दिलवाअिये। भविष्यके लिअे कोअी सूचनाअें देनी हों, तो वे भी दीजिये।

विनोबाके दंडवत प्रणाम।"

वज्रसे भी कठोर दीखनेवाले विनोबाके कुसुमसे भी अधिक कोमल हृदयमें से निकलनेवाली भक्तिके सुपुष्पसे ज्यादा मधुर और क्या हो सकता है! 'धर्म मणि मीन' वाला भजन गाते-गाते अक्सर बापूकी भक्तमालके मणि गिननेका मन हो जाता है, और अुसमें तपोधन विनोबाको प्रथम स्थान देनेमें बहुत संकोच नहीं होता। अैसे लोग मौजूद हैं तब तक बापूका झंडा फहराता रहे अिसमें क्या शंका है? बेचारे कितने हरिजन विनोबाको जानते होंगे? लेकिन हरिजन न जानें तो भी हरि जानता है, तब फिर चिन्ता क्या!

बापूने भी अिसके जवाबमें वत्सलताके आँसुओंसे भीगा हुआ पत्र भेजा :

“चि० विनोबा,

“तुम्हारी भक्ति और श्रद्धा आँखोंमें हर्षके आँसू लाती है। मैं अिस सबके योग्य हाअूँ या न होअूँ, परन्तु तुम्हें तो यह फलेगा ही। तुम बड़ी सेवाके निमित्त बनोगे। नालवाड़ी चले गये, यह ठीक ही है।

“भविष्यकी सूचना अभी तो अितनी ही है: दूध-त्यागका आग्रह न रखते हुअे शरीरकी रक्षा करना। अभी स्वधर्म है अस्पृश्यता-निवारणादि। मैं जो लिखता रहता हूँ, अुसे पढ़नेके लिअे समय निकाल लेना। बहुत नहीं होता। मुझे पत्र लिखते रहना। सप्ताहमें अेक भी लिखो तो काफी है।”

परिशिष्ट

१. संकल्प
२. अग्निशय्यासे
३. हिन्दू धर्मकी कसौटी

अनुक्रमणिका

१. संकल्प

२. अग्निशय्यासे

३. हिन्दू धर्मकी कसौटी

परिशिष्ट १

संकल्प

१

" जानकी बाजी लगा कर विरोध करूँगा। "

[१३ नवम्बर १९३१ के दिन लंदनमें अल्पमत-समितिकी आखिरी बैठकमें गांधीजीके दिये हुअे भाषणसे]

दूसरे अल्पमतोंने जो दावे पेश किये हैं, अुन्हें मैं समझ सकता हूँ। मगर अस्पृश्योंकी तरफसे जो दावा पेश किया गया है, वह मेरे लिअे वज्राघातकी तरह है। अिसका अर्थ होता है अिस भद्दे भेदभावको स्थायी बनाना।

अपने देशकी आज़ादीके लिअे भी मैं 'अछूतों' के प्राणसमान हितोंको बेचना नहीं चाहूँगा। मैं 'अछूत' समुदायके प्रतिनिधि होनेका दावा करता हूँ। यह मैं सिर्फ कांग्रेसकी तरफसे नहीं, मगर अपनी निजी हैसियतसे बोलता हूँ। मेरा दावा यह है कि 'अछूतों' के मत लिये जायँ, तो मुझे सबसे ज्यादा मत मिलेंगे। हिन्दुस्तानके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक घूमकर मैं अछूतोंसे कहूँगा कि अलग निर्वाचन और अलग सुरक्षित बैठकें तुम्हारे प्रति रही हुअी भद्दी सामाजिक पाबन्दियोंको दूर करनेका सही रास्ता नहीं है।

यह कमेटी और सब दुनिया जान ले कि आज अैसे हिन्दू सुधारक मौजूद हैं, जिन्हें लगता है कि यह 'अछूतों' का नहीं, परन्तु सनातन हिन्दू धर्मका अेक कलंक है। अस्पृश्यताके अिस दागको मिटा देनेकी अुनकी प्रतिज्ञा है। हमारे मतपत्रकों और हमारे मर्दुमशुमारीके कागज़ातोंमें 'अछूतों' को अेक अलग वर्ग माना जाय, यह हमें नहीं चाहिये। सिक्ख लोग भले ही हमेशाके लिअे अलग रहें। मुसलमान और युरोपियन भी भले ही अलग रहें। मगर क्या 'अछूत' भी हमेशाके लिअे अलग रहने चाहियें? अस्पृश्यता जीती रहे अिसके बजाय मैं यह अधिक पसन्द करूँगा कि हिन्दू धर्मका नाश हो जाय।

अिसलिअे डॉ० आम्बेडकरके प्रति और 'अछूतों' का अुद्धार करनेकी अुनकी अिच्छाके प्रति मेरा सद्भाव और अुनकी होशियारीके प्रति आदर होनेके बावजूद भी मुझे कहना चाहिये कि वे अिस मामलेमें बड़ी भयंकर भूल कर रहे हैं। अुन्हें कड़वे अनुभवोंमें से गुजरना पड़ा है, शायद अिस कारण अभी अुनकी विवेक-बुद्धि अिस चीज़को नहीं समझ पा रही है। अैसे शब्द कहते मुझे दुःख होता है। मगर मैं यह न कहूँ तो प्राणोंसे प्यारे अिन 'अछूतों' के हितोंके प्रति मैं वफादार नहीं रह सकता। सारी दुनियाके राज्यके लिअे भी मैं अुनके हक्कोंकी कुरबानी नहीं करूँगा। डॉ० आम्बेडकर तमाम हिन्दुस्तानके 'अछूतों' की तरफसे बोलनेका दावा करते हैं, मगर अुनका यह दावा सही नहीं है, यह बात मैं पूरी जिम्मेदारीके साथ कहता हूँ। अुनके कहनेके अनुसार तो हिन्दू समाजमें बड़ी फूट पड़ जायगी। अिसे शान्तिसे देखते रहना मेरे लिअे संभव नहीं है।

'अछूत' भले ही मुसलमान या अीसाअी हो जायँ। अुसे मैं सहन कर लूँगा, मगर अिस तरह हिन्दू समाजकी होनेवाली खानाखराबी मुझसे बरदाश्त नहीं हो सकती। अुनके कहनेके अनुसार तो गाँव-गाँवमें दो दल हो जायँगे। जो 'अछूतों' के राजनैतिक हक्कोंकी बात करते हैं, वे हिन्दुस्तानको जानते नहीं, और यह भी नहीं जानते कि हिन्दू-समाजकी रचना कैसी है। अिसलिअे मैं जितने आग्रहके साथ कह सकता हूँ अुतने ही आग्रहसे कहता हूँ कि अगर अिस चीज़का विरोध करनेवाला मैं अकेला भी रहा, तो भी मैं अिसका अपनी जानकी बाज़ी लगाकर विरोध करूँगा।

२

सर सेम्युअल होरको गांधीजीका पत्र

यरवदा सेंट्रल प्रिज़न
११ मार्च, १९३२

प्रिय सर सेम्युअल,

शायद आपको याद होगा कि गोलमेज़ परिषदमें अल्पमतोंका दावा पेश किया गया, तब मैंने अपने भाषणके अन्तमें कहा था कि अगर अंत्यजोंको अलग निर्वाचन दिया गया, तो मैं जानकी बाज़ी लगा कर विरोध करूँगा। यह मैंने क्षणिक आवेशमें या भाषाकी छटा दिखानेके लिअे नहीं कहा था। वह पूरी-पूरी गंभीरतासे कहा हुआ वचन था। अिस वचनके अनुसार हिन्दुस्तान लौटकर अलग निर्वाचनके और खास कर अछूतोंके अलग निर्वाचनके विरुद्ध लोकमत संगठित करनेकी मैंने आशा रखी थी। मगर अैसा होना बदा नहीं था।

मुझे जो अखबार पढ़नेको दिये जाते हैं, अुन परसे मैं देखता हूँ कि अिस मामलेमें ब्रिटिश सरकार किसी भी क्षण अपना निर्णय प्रगट कर सकती है। पहले मैंने यह सोचा था कि अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचन मंडल बनानेवाला प्रस्ताव जब प्रकाशित होगा, तब मैं अपनी प्रतिज्ञाको पूरी करनेके लिअे जो कदम ज़रूरी मालूम होगा अुठाअूँगा। परन्तु मुझे लगता है कि पहलेसे सूचना दिये बिना मैं कुछ करूँ, तो वह ब्रिटिश सरकारके साथ अन्याय होगा। स्वाभाविक है कि मेरे अिस वचनको जो महत्व मैंने दिया है, वह महत्व सरकारने न दिया हो।

अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचक मंडल बनानेके विरुद्ध मेरी सारी आपत्तियाँ दोहरा देना शायद ही ज़रूरी होगा। मैं अैसा महसूस करता हूँ कि मैं अंत्यजोंमें से ही अेक हूँ। दूसरी जातियोंकी अपेक्षा अुनका मामला बिलकुल दूसरी ही तरहका है। मैं अिस बातके विरुद्ध नहीं हूँ कि धारासभाओंमें अुन्हें प्रतिनिधित्व मिले। औरोंके लिअे मताधिकारका पैमाना ज्यादा कड़ा हो, तो भी मैं अिस बातकी तरफदारी करूँगा कि हरिजनोंमें शिक्षा या जायदादकी योग्यताके किसी भी प्रतिबंधके बिना सभी बालिग स्त्री-पुरुषोंको मताधिकार मिले। मगर अलग निर्वाचक मण्डल केवल राजनैतिक दृष्टिसे कैसे भी माने जाते हों, तो भी अुनके और हिन्दू समाज दोनोंके लिअे अपार हानि करनेवाले हैं। अलग

निर्वाचक मंडलोंसे अुन्हें कैसा और कितना नुकसान हो सकता है, अुसे समझनेके लिअे यह जानना ज़रूरी है कि वे कथित सवर्ण हिन्दुओंके बीचमें किस तरह फैले हुअे पड़े हैं और अुन पर कितने अधिक अवलंबित हैं। जहाँ तक हिन्दू समाजसे सम्बंध है वहाँ तक तो अलग निर्वाचक मंडलोंसे अुन्हें जीते जी चीरने और अुनके टुकड़े-टुकड़े करने जैसी बात होगी।

मेरे विचारसे यह प्रश्न मुख्यतः नैतिक और धार्मिक है। अुसका राजनैतिक पहलू अवश्य महत्वपूर्ण है, फिर भी अुसके नैतिक और धार्मिक महत्वसे तुलना करने पर वह नाम मात्रको रह जाता है।

अिस मामलेमें मेरी भावनाअें समझनेके लिअे आपको यह याद रखना चाहिये कि अिन लोगोंमें मैं ठेठ बचपनसे दिलचस्पी लेता रहा हूँ और अुनकी खातिर मैंने कअी बार सर्वस्वकी बाजी लगाअी है। मैं यह ज़रा भी अभिमानसे नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि हिन्दू कितना ही प्रायश्चित्त करें, तो भी सदियोंसे अुन्होंने हरिजनोंका जानबूझकर जो अधःपतन किया है, अुसका बदला नहीं चुकाया जा सकता।

मगर मैं जानता हूँ कि अुनके अलग निर्वाचक मंडल बनाना अुसका प्रायश्चित्त नहीं है; अिसी तरह अुन्हें कुचल कर अुनकी जो अधम स्थिति बना दी गअी है अुसका भी यह अुपाय नहीं है। अिसलिअे ब्रिटिश सरकारको मैं नम्रतापूर्वक जता देता हूँ कि अंत्यजोंके लिअे अगर वह अलग निर्वाचक मंडल बनानेका निर्णय देगी, तो मुझे आमरण अुपवास करना पड़ेगा।

क़ैदी होकर मैं अैसा कदम अुठाअूँ, तो अुससे ब्रिटिश सरकारको सख्त परेशानी होगी और मेरे जैसी हैसियतवाले आदमीका राजनैतिक क्षेत्रमें अैसी पद्धति, जिसे ज्यादा बुरी नहीं तो पागलपन भरी तो कहा ही जा सकता है, दाखिल करना बहुत अनुचित माना जा सकता है — अिसका मुझे खयाल है और दुःख भी है। अिसकी सफ़ाअीमें मैं अितना ही कह सकता हूँ कि मैंने जो कदम अुठाना सोच रखा है वह कोअी पद्धति नहीं है, मगर मेरे जीवनका अेक अंग है। वह अन्तरात्माका आदेश है, जिसकी मैं अवज्ञा नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि समझदार आदमी होनेकी मेरी जरा भी साख हो, तो अुसे अिस कार्रवाअीसे धक्का पहुँच सकता है। अभी तो जहाँ तक मैं देख सकता हूँ जेलसे मेरा छुटकारा हो जाय, तब भी अुपवास करनेका मेरा फ़र्ज़ अुससे जरा भी कम नहीं हो जाता। फिर भी मैं आशा रखता हूँ कि मेरे सब अन्देशे बिलकुल बेबुनियाद निकलेंगे और अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचक मण्डल बनानेका ब्रिटिश सरकारका जरा भी अिरादा न होगा।

मेरे दिमागमें चक्कर काटनेवाला अेक और मामला भी, जो मुझसे अैसा ही अुपवास करा सकता है, यहाँ मैं आपको बता दूँ तो शायद ठीक होगा। यह मामला है आजकल हो रहे दमनका। अिससे मुझे कब अैसा आघात पहुँचेगा कि जब मुझे बहुत बड़ा बलिदान देनेको मजबूर होना पड़ेगा, अिसका मुझे खयाल नहीं है। आजकल मालूम होता है कि दमन हदसे बाहर हो गया है। सारे देशमें सरकारका दमनचक्र चल रहा है। अंग्रेज और हिन्दुस्तानी कर्मचारियोंको पशु समान बना दिया गया है। बड़े और छोटे हिन्दुस्तानी कर्मचारियोंका अधःपतन तो अिस कारण हुआ है कि जनताके प्रति बेवफा होने और अपने देश भाअियोंके साथ अमानुषिक बरताव करनेको सरकार अच्छा काम समझती है। जनताको पूरी तरह दबा दिया गया है। वाणीकी स्वतंत्रता कुचल दी गअी है। कानून और व्यवस्थाके नाम पर गुंडागिरीका बोलबाला हो रहा है। लोकसेवाके लिअे बाहर निकली हुअी स्त्रियाँ बेअिज्जत होनेके खतरेमें आ पड़ी हैं।

मुझे लगता है कि यह सब कांग्रेसकी पैदा की हुअी ताकतको दबा देनेके लिअे किया जा रहा है। कानूनके सविनयभंगकी सजा देने तक ही दमन सीमित नहीं रहा। ज्यादातर लोगोंका अपमान करनेके लिअे ही बनाये गये मनमाने तंत्रके रोज निकलनेवाले नये-नये फतवोंका भंग करनेके लिअे मानो लोगोंको कील भोंक-भोंककर मजबूर किया जा रहा है।

अिन सब कृत्योंके बारेमें पढ़ते हुअे मुझे अुनमें प्रजातंत्रकी वृत्ति जरा भी नहीं दिखाअी देती। अिंग्लैण्डकी मेरी हालकी यात्राके दरमियान मेरी अिस रायकी पुष्टि हुअी है कि आपका प्रजातंत्र केवल दिखावे भरका और गोलमोल भाषामें लपेटा हुआ है। अधिक महत्वके मामलोंमें तो कोअी अेक व्यक्ति या गुट पार्लियामेण्टसे जरा भी पूछे बिना निर्णय करते हैं, और पार्लियामेण्टके सदस्योंको वे क्या कर रहे हैं अिसके अस्पष्ट विचारके साथ अुसे मंजूरी देनी पड़ती है। मिस्रके मामलेमें और १९१४ में युद्धकी घोषणा करते समय अैसा ही हुआ था। हिन्दुस्तानके मामलेमें भी आजकल यही हो रहा है। तेंतीस करोड़ प्राचीन लोगोंके भविष्य पर असर डालनेकी निरंकुश सत्ता कथित प्रजातंत्रीय पद्धतिमें केवल अेक ही आदमीके हाथमें हो, और अुसके निर्णयोंका अमल महाभयंकर विनाशके बलोंको संगठित करनेमें होता हो, तो अिस चीज़के खिलाफ मेरी आत्मा विद्रोह करती है। मैं अिसे प्रजातंत्रकी हत्या कहता हूँ।

अिस दमनको जारी रखनेका परिणाम हमारे दो देशोंके लोगोंके बीच कड़वे बने हुअे सम्बन्धोंको और भी कड़वे बनानेके अलावा और कुछ नहीं हो सकता। अिसे रोकनेके लिअे मैं क्या कर सकता हूँ? सविनयभंग बन्द कर

देना अिसका अुपाय नहीं है। मेरे लिअे यह धर्मसिद्धान्त है। मैं अपनेको स्वभावसे लोकतंत्रवादी मानता हूँ। अपनी अिच्छाका अमल करानेके लिअे शरीर-बलका अुपयोग करना मेरी कल्पनाके लोकतंत्रके साथ सर्वथा असंगत है। अिसलिअे जहाँ-जहाँ शरीरबलका अुपयोग आवश्यक और अुचित माना जाता है, वहाँ-वहाँ मैंने अुसके मुनासिब अेवज़के रूपमें सविनय विरोधका तरीका निकाला है। अुसमें खुदको कष्ट सहन करना पड़ता है। सविनय विरोध करनेवालेके लिअे अमुक हालतोंमें अन्त तक अुपवास करके अपने प्राण त्याग करना मेरी योजनामें आता है। मेरे लिअे अभी वह वक्त नहीं आया। अैसा कदम अुठानेके लिअे जिसे रोका न जा सके अैसा भीतरी आदेश मुझे अभी नहीं मिला। मगर बाहर जो कुछ हो रहा है, वह अितना भयानक है कि मैं अपने मनकी शांति खो चुका हूँ। अिसलिअे अछूतोंके मामलेमें अुपवासकी संभावनाके बारेमें लिखते हुअे मुझे लगा कि यदि मैं आपको यह न बताअूँ कि अैसे अुपवासकी सम्भावना अेक और कारणसे भी अधिक दूर नहीं है, तो आपके प्रति मैं सच्चा नहीं ठहरूँगा।

कहनेकी ज़रूरत नहीं कि आपके साथ होनेवाले तमाम पत्र-व्यवहारमें मेरी तरफसे पूरी तरह गुप्तता रखी गअी है। अलबत्ता सरदार वल्लभभाअी पटेल और महादेव देसाअी, जिन्हें हालमें ही मेरे साथ रखा गया है, अिस बारेमें सब कुछ जानते हैं। मगर आप तो आपकी जैसी अिच्छा हो वैसा अिस पत्रका अुपयोग ज़रूर कर सकते हैं।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

३

सर सेम्युअल होरका जवाब

अिण्डिया ऑफिस, व्हाअिट हॉल,
१३ अप्रैल, १९३२

प्रिय श्री गांधी,

मैं यह पत्र आपके ११ मार्चके पत्रके जवाबमें लिख रहा हूँ। मैं पहले ही यह कह दूँ कि अछूतोंके लिअे अलग निर्वाचन सम्बन्धी आपकी भावनाकी तीव्रताको मैं पूरी तरह समझता हूँ। हम जो कुछ फैसला देनेका अिरादा रखते हैं, वह केवल अुसके गुण-दोष पर ही होगा। आप जानते हैं कि लोथियन कमेटीने अभी अपना हिन्दुस्तानका सफर पूरा नहीं किया है। अुसके निर्णय हमें मिलनेमें कुछ समय लगेगा। यह रिपोर्ट मिलनेके बाद अुसकी सिफारिशों पर हम सावधानीसे गौर करेंगे। अिसके सिवाय आपके और आपकी रायके दूसरे लोगोंके, जिन्होंने अपने विचार बड़े जोशके साथ प्रगट किये हैं, विचारोंको ध्यानमें रखे बिना हम फैसला नहीं देंगे। मुझे विश्वास है कि आप हमारी स्थितिमें हों, तो आप भी हमारी ही तरह करेंगे। आप कमेटीकी रिपोर्टका अिन्तज़ार कीजिये। मिलनेके बाद अुस पर पूरी तरह विचार कीजिये, और आखिरी निर्णय पर पहुँचनेसे पहले दोनों तरफकी दलीलों पर ध्यान दीजिये। अिससे अधिक मैं कुछ कह नहीं सकता। अधिककी आप मुझसे आशा भी न रखते होंगे।

आर्डिनेन्सोंके सम्बन्धमें अब तक सार्वजनिक और खानगी तौर पर जो कुछ कहा है वही फिर कहता हूँ। मुझे यक़ीन हो गया है कि व्यवस्थित सरकारकी जड़ें हिला देनेवाले जानबूझकर किये गये हमलेके खिलाफ आर्डिनेन्स जारी करना ज़रूरी था। मुझे यह भी यक़ीन हो गया है कि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारें अपनी विशाल सत्ताओंका दुरुपयोग नहीं करतीं और अमर्यादित और द्वेषपूर्ण कृत्योंसे परहेज़ रखनेकी भरसक कोशिश करती हैं। कानून और व्यवस्था कायम रखनेके लिअे और अत्याचारी आन्दोलनोंसे हमारे कर्मचारियों और दूसरे लोगोंकी रक्षा करनेके लिअे ज़रूरी मालूम होनेसे अेक क्षण भी अधिक हम अिन असाधारण सत्ताओंको ज़ारी नहीं रखेंगे।

आपका सेवक
सेम्युअल होर

४

प्रधानमन्त्रीको गांधीजीका पत्र

यरवदा सेन्ट्रल प्रिज़न
१८ अगस्त, १९३२

प्रिय मित्र,

अछूतोंके प्रतिनिधित्वके प्रश्नके विषयमें मैंने सर सेम्युअल होरको जो पत्र लिखा था, अुन्होंने वह आपको और मन्त्रि-मंडलको ज़रूर बताया होगा। मेरी प्रार्थना है कि वह पत्र अिस पत्रका हिस्सा माना जाय और अिस पत्रके साथ ही पढ़ा जाय।

अल्पमतोंके प्रतिनिधित्वके मामलेमें ब्रिटिश सरकारका फैसला मैंने पढ़ा है। अपने विचारोंको पकने देनेके लिअे रात भी गुजरने दी है। जैसा सर सेम्युअल होरके पत्रमें मैंने बताया है, सेंट जेम्स पैलेसमें १३-११-१९३१ के दिन गोलमेज़ परिषदकी अल्पमत-समितिकी बैठकमें मैंने ज़ाहिर किया था कि मुझे आपके फैसलेका विरोध जानकी बाज़ी लगाकर करना पड़ेगा। वैसा करनेका अेक ही रास्ता है और वह यह है कि नमक और सोडेके साथ और अुसके बिना सिर्फ पानीके सिवाय और किसी तरहकी खुराक न लेकर आमरण अुपवास किया जाय। अिस बीच अगर ब्रिटिश सरकार अपने आप या लोकमतके दबावसे अपना फैसला बदल देगी, अछूतोंके लिअे अलग निर्वाचनकी योजना रद्द कर देगी और सामान्य निर्वाचन द्वारा — भले ही अुन्हें बड़े विशाल पैमानेपर मताधिकार दिया जाय — अछूतोंके प्रतिनिधियोंका चुनाव कराना तय कर देगी, तो मेरा अुपवास रुक जायगा। यदि अूपर बताये अनुसार फैसलेमें सुधार नहीं किया गया, तो साधारण परिस्थितिमें अिस अुपवासका आरम्भ २० सितम्बरकी दोपहरसे होगा।

मैं अपना यह पत्र आपको तारसे पहुँचा देनेकी अधिकारियोंसे प्रार्थना कर रहा हूँ, जिससे आपको काफी समय पहले नोटिस मिल जाय। मगर यह पत्र आपको धीमेसे धीमे तरीकेसे भी पहुँचाया जाय, तब भी वह आपको समय पर मिल जायगा।

मेरी यह भी प्रार्थना है कि मेरा यह पत्र और सर सेम्युअल होरको लिखा हुआ पहला पत्र, दोनों जल्दीसे जल्दी प्रकाशित कर दिये जायँ। अपनी तरफसे तो मैंने जेलके नियमोंका कड़ा पालन किया है और अिन दो पत्रोंकी

बात या मेरी अिच्छा मेरे साथी सरदार वल्लभभाअी पटेल और श्री महादेव देसाअीके अलावा और किसीको भी नहीं बताअी है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अिन दोनों पत्रोंको प्रकाशित होने दें, ताकि लोकमत पर असर पड़े। अिसलिअे मैं अुनके जल्दी प्रकाशनके लिअे प्रार्थना करता हूँ।

मैंने दुःखके साथ यह निर्णय किया है। मैं अपनेको धार्मिक आदमी मानता हूँ। अुसके मुताबिक मेरे लिअे अिसके सिवाय और कोअी मार्ग ही नहीं था। सर सेम्युअल होरके नाम अपने पत्रमें मैंने जो बताया है, अुसके अनुसार यदि ब्रिटिश सरकार अपनी अड़चनसे बच जानेके लिअे मुझे छोड़ देनेका निर्णय करेगी, तो भी मेरा अुपवास जारी रहेगा। क्योंकि अब और किसी भी तरह अिस फैसलेका विरोध कर सकनेकी मुझे आशा नहीं है और स्वाभिमानपूर्ण मार्गके सिवाय दूसरी किसी भी तरह अपना छुटकारा करा लेनेकी मेरी अिच्छा नहीं है।

यह हो सकता है कि मेरी बुद्धि भ्रमित हो गअी हो और यह माननेमें मैं भूल कर रहा होअूँ कि अलग निर्वाचक मंडल अछूत वर्गोंके लिअे या हिन्दू समाजके लिअे भी हानिकारक है। यदि अैसा हो तो मैं अपने जीवनके तत्त्वज्ञानकी दूसरी बातोंमें भी सच्चा नहीं हो सकता। अैसा हुआ तो अुपवाससे होनेवाली मेरी मौत मेरी भूलका प्रायश्चित्त हो जायगी और असंख्य स्त्री-पुरुष, जो मुझ पर बच्चोंकी तरह श्रद्धा रखकर काम करते हैं, अुन परसे अेक बड़ा बोझा दूर हो जायगा। लेकिन मेरा निर्णय यदि सही होगा, और अुसके सही होनेमें मुझे जरा भी सन्देह नहीं है, तो पच्चीससे भी अधिक वर्षोंसे जिस जीवनप्रणालीका मैं स्पष्ट रूपमें काफी सफलतापूर्वक आचरण करता आया हूँ, अुसकी मेरे अुठाये जानेवाले कदमसे अुचित सिद्धि हो जायगी।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

५

प्रधानमंत्रीका जवाब

१०, डाअुनिंग स्ट्रीट
८ सितम्बर, १९३२

प्रिय श्री गांधी,

आपका पत्र मिल गया। अुससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है और बहुत दुःख भी हुआ। मुझे अैसा लगता है कि आपने यह पत्र अछूतोंके मामलेमें ब्रिटिश सरकारके फैसलेके असली तात्पर्यके बारेमें गलतफहमीके कारण लिखा है। हम सदा यह समझते रहे हैं कि अछूत वर्गोंको हिन्दू समाजसे स्थायी रूपमें अलग किया जाय, तो अुस पर आपका अटल विरोध है। गोलमेज़ परिषदकी अल्पमत समितिके सामने आपने अपनी स्थिति बहुत ही साफ कर दी थी और ११ मार्चको सर सेम्युअल होरको लिखे गये पत्रमें आपने वह फिरसे बता दी थी। हम यह भी जानते थे कि अधिकांश हिन्दू लोकमत आपके विचारोंसे सहमत है। अिसीलिअे अछूत वर्गोंके प्रतिनिधित्वके सवालका विचार करते समय हमने अिस चीज़ पर खूब ध्यानपूर्वक गौर किया था।

अछूत वर्गकी अनेक संस्थाओंकी तरफसे हमें मिली हुअी बहुसंख्यक अर्जियोंको देखते हुअे और अुन्हें आम तौर पर जो सामाजिक मुश्किलें भोगनी पड़ती हैं, जिन्हें सभी मानते हैं और आपने भी बहुत बार माना है, अुन्हें देखते हुअे हमें लगा कि धारासभाओंमें अुचित मात्रामें प्रतिनिधित्व प्राप्त करनेके अुनके हकको सही-सलामत रखना हमारा फर्ज़ था। अिसके साथ ही हमने अैसी कोअी बात, जिससे अुनकी जाति बाकीके हिन्दू समाजसे कटकर अलग पड़ जाय, न करनेकी खूब ही सावधानी रखी है। ११ मार्चके अपने पत्रमें आपने खुद लिखा है कि धारासभाओंमें अुन्हें प्रतिनिधित्व मिले, अिसके विरुद्ध आप नहीं हैं।

सरकारी योजनाके अनुसार अछूत वर्ग हिन्दू समाजका हिस्सा रहेंगे ही और हिन्दू मतदाताओंके साथ समानताके आधार पर मत देंगे। मगर हिन्दू समाजके साथ रहकर मताधिकार भोगते हुअे भी पहले बीस साल तक मर्यादित संख्यामें अलग निर्वाचक मंडलोंके ज़रिये अपने हक और हित सुरक्षित रखनेका साधन अुन्हें हमारे निर्णयसे मिलता है। अैसे निर्वाचक मंडल बनने पर भी, साधारण हिन्दू मतदाताओंके साथ मत देनेके अधिकारसे अछूतोंको वंचित नहीं रखा जायगा। परन्तु अुन्हें दो मत मिलेंगे, जिससे कि हिन्दू समाजके सदस्यकी हैसियतसे अुनका हक कायम रहेगा।

जिन्हें आप साम्प्रदायिक निर्वाचक मण्डल कहते हैं, अैसे अछूतवर्गोंके निर्वाचक मण्डल न बनानेका हमने जानबूझकर निर्णय किया है और तमाम अछूत मतदाताओंको साधारण या हिन्दू निर्वाचक मण्डलोंमें शामिल कर लिये हैं। अिसलिअे चुनावके समय सवर्ण अुम्मीदवारोंको अछूतोंके मत माँगने जाना पड़ेगा या अंत्यज अुम्मीदवारोंको सवर्णोंके मत माँगने जाना पड़ेगा। अिस प्रकार हिन्दू समाजकी अखण्डता सब तरह कायम रह जाती है।

परन्तु हमें लगा कि जिम्मेदार राज्यतंत्रके शुरूके ज़मानेमें, जब धारा-सभाओंमें जिनका बहुमत होगा अुन्हींके हाथमें प्रान्तोंकी सत्ता आयेगी अुस वक्त, अछूत वर्गोंके लिअे यह आवश्यक है कि नौमें से सात प्रान्तोंकी धारासभाओंमें वे केवल अपनी ही पसन्दके खास सदस्य भेज सकें, जिससे वे अपनी शिकायतें और अपनी माँगें पेश कर सकें, सरकार और धारासभाओंमें अपना मामला सुनाये बिना अुनके विरुद्ध होनेवाले निर्णयोंको रोक सकें; सार यह कि अुन्हें अैसी स्थितिमें रख दिया जाय, जिससे वे अपना मामला पेश कर सकें। कोअी भी न्यायी मनुष्य स्वीकार करेगा कि अैसा करना ज़रूरी है। आपने खुद सर सेम्युअल होरके नाम पत्रमें यह लिखा था कि सवर्ण हिन्दुओंने सदियोंसे अुन्हें अधम दशामें रखा है। आजकी हालतमें मताधिकारकी किसी भी पद्धतिसे सुरक्षित बैठकों द्वारा अुनका सच्चा प्रतिनिधित्व करनेवाले और अुनके प्रति जिम्मेदार हों अैसे अुनके विशेष प्रतिनिधि चुननेकी प्रथा हमें व्यावहारिक नहीं लगी। कारण अैसे सदस्य अन्तमें तो सवर्ण हिन्दुओंके बने हुअे बहुमतसे ही चुने जायँगे।

साधारण हिन्दू निर्वाचक मण्डलोंमें अछूतोंको भी मत देनेका अधिकार देनेके अुपरांत मर्यादित संख्यामें अलग निर्वाचक मण्डल देनेकी हमारी योजनाके शुरूमें अछूतोंको जो विशेष लाभ दिये गये हैं, वे अुस लाभसे योजनामें और परिणाममें बिलकुल ही दूसरी तरहके हैं, जो मुसलमानों जैसे अल्पमतको साम्प्रदायिक निर्वाचक मण्डलों द्वारा प्रतिनिधित्व देनेकी प्रथासे दिया गया है।

अुदाहरणके लिअे कोअी मुसलमान साधारण निर्वाचक मण्डलोंमें मत नहीं दे सकता और न अुसमें अुम्मीदवारके रूपमें खड़ा हो सकता है, जबकि अछूत वर्गका कोअी भी मतदाता साधारण निर्वाचक मंडलोंमें मत दे सकता है और अुम्मीदवारके रूपमें भी खड़ा हो सकता है।

प्रान्तोंकी धारासभाओंमें मुसलमानोंको अुनके लिअे निश्चित की गअी बैठकोंके सिवाय और कोअी बैठक मिलना सम्भव नहीं है। अिसलिअे बहुतसे प्रान्तोंमें अुन्हें अुनकी आबादीसे ज्यादा बैठकें दी गअी हैं, जबकि अछूतोंके अलग निर्वाचक मण्डलोंके द्वारा दी गअी विशेष बैठकोंकी संख्या अनुपातमें थोड़ी हैं। सारी अछूत आबादीके पूरे प्रतिनिधित्वके लिअे जितनी संख्या चाहिये अुतनी

देनेकी दृष्टिसे यह तय नहीं किया गया है, बल्कि सिर्फ अछूत वर्गोंके द्वारा धारासभाओंमें चुने हुओ अुनके खास मुखियोंकी कमसे-कम संख्याकी गारन्टी देनेके हेतुसे यह संख्या निश्चित की गओी है। अुन्हें दी गओी विशेष बैठकोंका अनुपात हर प्रान्तमें अुनकी आबादीके प्रतिशतसे कम है।

जहाँ तक मैं आपकी बात समझता हूँ, आप जो अुपवास करके मरनेका आखिरी कदम अुठानेका कह रहे हैं, वह अिसलिअे नहीं कि दूसरे हिन्दुओंके साथ अछूतोंको संयुक्त निर्वाचक मण्डल मिले, क्योंकि अुसका प्रबन्ध तो अिस निर्णयमें है ही; हिन्दुओंकी अखण्डता बनी रहे अिसलिअे भी नहीं, क्योंकि अुसकी व्यवस्था भी है; मगर सिर्फ अिसलिअे कि आज भयंकर अधिकारहीनतायें भोगनेवाले अछूतोंको, भविष्यमें अुनके जीवन पर बड़ा असर डालनेवाली धारासभाओंमें अुनकी तरफसे बोलनेवाले अुनकी पसन्दके जो थोड़ेसे आदमी मिलते हैं, अुन्हें रोका जाय।

मेरा निर्णय अितना न्यायपूर्ण और सावधानीसे भरा है, फिर भी आपने अैसा निर्णय कैसे किया अिसका कारण मैं बिल्कुल नहीं समझ सकता। मैं यह मानता हूँ कि सच्ची हकीकतकी गलत फहमीके कारण ही अैसा हुआ होगा।

जब हिन्दुस्तानी किसी भी समझौते पर आनेमें असफल रहे, तब अुनकी प्रार्थना पर ही सरकारने अपनी अिच्छा न होते हुअे भी अल्पमतके प्रश्न पर निर्णय देना मंजूर किया। यह निर्णय देनेके बाद अब अुसकी बताओी हुओी शर्तोंके सिवाय और किसी तरह अुसमें फेरबदल करना अुसके लिअे सम्भव नहीं है। अिसलिअे मेरा जवाब यह है कि सरकारका फैसला तो जैसा है वैसा ही रहेगा। हाँ सरकारने परस्पर विरोधी दावोंके गुण-दोष पर सच्चे दिलसे विचार करके प्रतिनिधित्व देनेकी जो योजना तैयार की है, अुसके अेवजमें सब जातियाँ आपसमें समझकर दूसरी अेक सर्वसम्मत नओी योजना पेश करें तो और बात है।

आप चाहते हैं कि सर सेम्युअल होरको लिखे पत्रोंके साथ आपका सारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित हो जाय। आप अभी नज़रबन्द हैं, अिसलिअे जनताको आपके अुपवासका कारण समझानेका मौका आपको न मिले, यह मुझे ठीक नहीं लगता। अिसलिअे आप मुझे लिखेंगे, तो मैं आपकी प्रार्थना ज़रूर स्वीकार करूँगा। फिर भी मैं आपसे दुबारा आग्रह करता हूँ कि सरकारी निर्णयकी वास्तविक हकीकतों पर आप फिरसे विचार करें और अपने आपसे गंभीरतापूर्वक पूछें कि आपने जो कदम अुठानेका विचार किया है अुसके अुठानेके अुचित कारण हैं या नहीं!

आपका सेवक
जे० रॅम्से मैकडोनल्ड

६

प्रधानमंत्रीको गांधीजीका अंतिम अुत्तर

यरवदा सेंट्रल प्रिज़न
९ सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

आपका साफ और विस्तृत पत्र मुझे आज तारसे मिला। अिसके लिअे मैं आपका कृतज्ञ हूँ। यद्यपि मुझे अफसोस है कि मेरे सोचे हुअे कदमका कभी मेरी कल्पनामें भी नहीं आया अैसा अर्थ आपने किया है। आपने मुझ पर यह आक्षेप किया है कि जिस वर्गकी तरफसे बोलनेका मैं दावा कर रहा हूँ, अुस वर्गके हितोंको नुकसान पहुँचानेके लिअे मैं आमरण अुपवास करनेको तैयार हुआ हूँ। आशा तो यह रखी जाती है कि यह अुग्र कदम ही अैसे किसी अर्थको रोकनेके लिअे काफी होना चाहिये। परन्तु किसी बहसमें न पड़ कर मैं कहता हूँ कि मेरे लिअे यह चीज़ शुद्ध धर्मकी है। अछूतोंको दोहरे मत मिल जायें, तो अिससे अुनकी या हिन्दू समाजकी रक्षा नहीं हो जाती और वे छिन्न-भिन्न होनेसे रुक नहीं जाते। अछूतोंके लिअे अलग निर्वाचक मंडल बनानेकी योजनामें हिन्दू समाजका नाश करनेवाला ज़हर अुसे दिया जा रहा है और अिससे अछूतोंका ज़रा भी भला नहीं होता। आपसे मैं नम्रतापूर्वक अितना कहूँगा कि आप, कितने ही सहानुभूतिवाले हों तो भी, जो वस्तु प्रस्तुत पक्षोंके लिअे जीवन-मरणके समान और धार्मिक महत्वकी है, अुसके बारेमें सही निर्णय पर पहुँच ही नहीं सकते।

अछूत वर्गोंको ज़रूरतसे ज्यादा प्रतिनिधित्व मिले, अिसके विरुद्ध मैं हो ही नहीं सकता। मेरा विरोध तो यह है कि जब तक वे हिन्दू समाजमें रहना चाहते हैं, तब तक अुन्हें मर्यादित रूपमें भी हिन्दू समाजसे अलग करनेकी बात कानूनसे नहीं होनी चाहिये। क्या आप यह समझ सकते हैं कि आपका फैसला कायम रहे और विधान अमलमें आ जाये, तो हिन्दू सुधारकोंने जीवनके हर क्षेत्रमें अपने दलित भाअियोंके अुद्धारके लिअे जीवन अर्पण करके जो अद्‌भुत कार्य किया है, वह सब धूलमें मिल जायगा?

अिसलिअे मैंने अपना जो निर्णय आपको बताया है, अुस पर मजबूरन डटे रहना मेरा फर्ज़ हो जाता है।

आपके पत्रसे अेक गलतफहमी पैदा होना संभव है। अिसलिअे मैं यह बता देना चाहता हूँ कि आपके निर्णयके दूसरे भागोंसे अछूतोंके सवालको जो

मैंने खास तौर पर अलग कर दिया है, अुसका यह अर्थ किसी भी तरह नहीं होता कि आपके निर्णयके दूसरे भागोंको मैं पसन्द करता हूँ, या अुन्हें स्वीकार करनेको मेरा दिल मानता है। मेरी रायमें और बहुतसे भाग भी गंभीर रूपसे आपत्तिजनक हैं। सिर्फ अछूतोंके मामलेमें मेरी अंतरात्माने मुझे अिस तरहका प्राणार्पण करनेकी प्रेरणा दी है। अैसा कोअी कदम दूसरे भागोंके विरुद्ध अुठाना मुझे ज़रूरी मालूम नहीं होता।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

७

बम्बअी सरकारको भेजा हुआ गांधीजीका बयान

[गांधीजीने अुपवास करनेके अपने निर्णयके बारेमें १५ सितम्बरको बम्बअी सरकारको नीचे लिखा बयान भेजा था। यह बयान २१ सितम्बरको अखबारोंमें छपनेके लिअे भेजा गया था।]

नज़दीक आ रहे मेरे अुपवासका निर्णय अीश्वरके नाम पर, अुसके कामसे और, जैसा मैं नम्रतापूर्वक मानता हूँ, अुसके आदेशानुसार किया गया है। कुछ मित्रोंने मुझसे आग्रह किया है कि लोगोंको तैयारी करनेका समय देनेके लिअे मुझे अुपवासकी तारीख आगे बढ़ा देनी चाहिये। मुझे अफसोस है कि प्रधान-मंत्रीके नाम अपने पत्रमें मैंने जो कारण बताया है, अुसके सिवाय और किसी कारणसे अेक घंटेके लिअे भी मैं अुपवासको मुलतवी नहीं कर सकता। जिन लोगोंको मुझ पर श्रद्धा है, फिर वे हिन्दुस्तानके हों या विदेशके, यह अुपवास अुनके विरुद्ध है। जिन्हें श्रद्धा नहीं है, अुनके विरुद्ध नहीं है। अिसलिअे अंग्रेज़ अधिकारियोंके विरुद्ध मेरा अुपवास नहीं है, परन्तु अधिकारीवर्गके विरुद्ध प्रचार करनेके बावजूद भी जो अंग्रेज़ भाअी-बहन मुझ पर और मेरे शुरू किये हुअे कामके न्यायपूर्ण होनेके प्रति विश्वास रखते हैं, अुनके विरुद्ध है। अिसी तरह मेरे अुन देश भाअियों, फिर वे हिंदू हों या और कोअी, जिनका मुझ पर विश्वास नहीं है, अुनके विरुद्ध यह अुपवास नहीं है; बल्कि अुन असंख्य हिन्दुस्ता-नियोंके विरुद्ध है, फिर वे किसी भी जाति या धर्मके हों, जो यह मानते हैं कि मैंने जो काम हाथमें लिया है वह न्यायपूर्ण है। अिस अुपवासका मुख्य हेतु तो सच्चा धार्मिक कार्य करनेके लिअे हिन्दुओंकी अन्तरात्माको सतेज बनाना है।

यह अुपवास सिर्फ भावनाको अपील करनेके लिअे नहीं है। मेरा कुछ भी वज़न हो, तो अुस तमामको मैं अिस अुपवासके द्वारा शुद्ध और सादे

न्यायके पलड़ेमें रख देना चाहता हूँ। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि मेरी जिन्दगीको बचानेकी भारी चिन्तामें अनुचित जल्दबाज़ी न की जाय। जगन्नियंताकी अिच्छाके बिना घासका अेक तिनका भी नहीं हिल सकता, अिस वचनको मैं सौ फी सदी मानता हूँ। अुसकी अिच्छाके विरुद्ध कोअी मेरी जिन्दगी नहीं बचा सकेगा। मनुष्यके नाते कहूँ, तो मैं मानता हूँ कि थोड़े दिन तो मेरा शरीर अिस अुपवासमें टिका रहेगा।

अलग निर्वाचक मण्डल तो सिर्फ आखिरी निमित्त है। सवर्ण हिन्दू नेताओं और विरोधी अंत्यज नेताओंके बीच जैसा-तैसा कामचलाअू समझौता हो जायगा, तो अुससे काम नहीं बनेगा। समझौता सच्चा वही माना जायगा, जो सच्चे दिलसे होगा। आम हिन्दू जनताका मानस अस्पृश्यताका जड़से नाश करनेको तैयार न हो, तो ज़रा भी संकोच किये बगैर अुन्हें मुझे मर जाने देना चाहिये।

जो संयुक्त निर्वाचक मण्डलोंके विरुद्ध हों, अुनके खिलाफ ज़रा भी जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये। अुनके कड़े विरोधको मैं समझ सकता हूँ। मुझ पर अविश्वास करनेका अुन्हें पूरा अधिकार है। मैं भी तो अुसी हिन्दू वर्गका हूँ न, जो गलत तौर पर अूँचे वर्णके या सवर्ण हिन्दू कहलाते हैं और जिन्होंने कथित अस्पृश्योंको कुचल डाला है! आश्चर्य तो यह है कि अितना होने पर भी ये 'अछूत' अभी तक हिन्दू धर्ममें कायम हैं। अुनके विरोधका अिस तरह बचाव किया जा सकता है, फिर भी मैं मानता हूँ कि अुनकी माँग भूलभरी है। अुनका बस चले तो वे अछूतोंको हिन्दू समाजसे बिलकुल अलग करके अुनकी अेक अलग जाति बना देना चाहते हैं। अैसा हो जाये तो हिन्दू समाज पर अमिट और जीता-जागता कलंक लग जाये। अितना होने पर भी यदि अैसा करनेसे अुनका सचमुच हित साधन होता हो, तो मैं अुन्हें अैसा भी करने दूँ। परन्तु अस्पृश्यताके भी कअी भेद हैं, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूँ। अुस परसे मुझे यक़ीन हो गया है कि जिन सवर्ण हिन्दुओंके बीचमें वे रहते हैं और जिनकी वे सेवा करते हैं, अुनके साथ अुनके जीवन अितने अधिक गुँथ गये हैं कि अुनसे अुन्हें अलग करना असम्भव है। वे अविभाज्य कुटुम्बके अेक अंग हैं। वे जिन सवर्ण हिन्दुओंके साथ रहते हैं, अुनके विरुद्ध विद्रोह करें और हिन्दू धर्मसे अिनकार करें, यह मैं समझ सकता हूँ। परन्तु मैं देखता हूँ कि वे अैसा नहीं करेंगे। हिन्दू धर्ममें अैसी कोअी सूक्ष्म और अवर्णनीय बात है, जो अुनकी अिच्छा न होने पर भी अुन्हें हिन्दू धर्मसे जुड़ा हुआ रखती है। मेरे जैसे आदमीके लिअे तो, जिसे अिस चीज़का प्रत्यक्ष अनुभव है, यह अनिवार्य हो जाता है कि अपनी जान कुरबान करके भी दोनोंको अलग करनेकी योजनाका विरोध किया जाय।

अिस विरोधमें बहुत बड़े अर्थ समाये हुअे हैं। जिस समझौतेसे अछूत वर्गोंको हिन्दू समाजके भीतर पूरी-पूरी स्वतंत्रता मिलनेका विश्वास न हो, वह समझौता अुनको अलग करनेकी योजनाके अुचित अेवज़के रूपमें खड़ा नहीं रह सकता। अिसलिअे अिस मामलेमें जरा भी विश्वासभंग होगा, तो अुससे मेरे आत्मविसर्जनका दिन कुछ मुलतवी भर हो जायगा। फिर तो मेरे जैसे विचारके और बहुतसे लोग आत्मविसर्जनके लिअे तैयार हो जायँगे। जिम्मेदार हिन्दुओंको अिस प्रश्नका विचार करना है कि अछूत वर्गों पर सामाजिक और राजनैतिक जुल्म कायम रखकर मेरे जैसे अेक सुधारकके ही नहीं, परन्तु संख्यामें बढ़ते जानेवाले अनेक सुधारकोंके आमरण अुपवासके सत्याग्रहका सामना करनेको वे तैयार हैं या नहीं ? मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तानमें अैसे बहुतसे हिन्दू सुधारक मौजूद हैं, जो अिस वर्गकी मुक्तिके लिअे और अुसके मारफत हिन्दूधर्मको युगोंसे चले आ रहे पुराने वहमोंसे छुड़वानेके लिअे अपनी जान देनेमें कुछ भी परवाह नहीं करेंगे।

अिसलिअे मेरे साथ जिन्होंने काम किया है, वे सुधारक साथी भी अिस अुपवासमें रहे हुअे पूरे अर्थको समझ लें।

यह या तो मेरा भ्रम होगा, या मुझे मिला हुआ प्रकाश होगा। अगर भ्रम हो तो शान्तिसे मुझे अपना प्रायश्चित्त पूरा करने देना चाहिये। हिन्दू समाज और धर्म मुझ जैसे जड़ आदमीके बोझसे मुक्त हो जायगा। अगर यह मुझे मिला हुआ प्रकाश हो, तो मेरी तपश्चर्यासे हिन्दूधर्म विशुद्ध बने और जो लोग अभी मुझ पर अविश्वास कर रहे हैं, अुनके हृदय पिघलें।

मेरे अुपवासके अुद्देश्यके विषयमें गलतफहमी मालूम होती है, अिसलिअे मैं फिर कहता हूँ कि मेरा अुपवास दलित वर्गोंको किसी भी रूपमें कानूनसे अलग निर्वाचक मण्डल देनेके विरोधमें है। यह धमकी हमेशाके लिअे दूर होते ही मेरा अुपवास बन्द हो जायगा। सुरक्षित बैठकोंके बारेमें और अिस सारे प्रश्नका निपटारा करनेकी अुचित पद्धतिके बारेमें मैं बहुत कड़े विचार रखता हूँ। मगर मैं मानता हूँ कि कैदी होनेके कारण मुझे अपनी तजवीजें पेश करनेका अधिकार नहीं है। लेकिन सवर्ण हिन्दुओं और अछूत वर्गोंके जिम्मेदार नेताओंके बीच संयुक्त निर्वाचक मण्डलके आधार पर जो समझौता होगा और जो तमाम हिन्दुओंकी आम सभामें मंजूर कर लिया जायगा, अुससे मैं अपनेको बँधा हुआ मानूँगा।

अेक और चीज मुझे साफ कर देनी चाहिये। अछूत वर्गके प्रश्नका सन्तोषजनक निपटारा हो जाय, तो अुसका किसी भी तरह यह अर्थ हरगिज़ नहीं होना चाहिये कि साम्प्रदायिक प्रश्नोंके दूसरे मामलों पर ब्रिटिश सरकारने जो

निर्णय दिया है, अुसे माननेको मैं बँध गया हूँ। मैं खुद अुसके बहुतसे हिस्सोंके विरुद्ध हूँ। मुझे अैसा लगता है कि अुससे कोअी भी स्वतंत्र और लोकतंत्री विधान चलाना असम्भव हो जाता है। और यह भी न माना जाय कि अिस प्रश्नका सन्तोषजनक निपटारा हो जाय, तो अिससे जो विधान तैयार किया जायगा वह माननेको मैं बँध गया हूँ। ये सब राजनैतिक प्रश्न हैं और राष्ट्रीय कांग्रेस ही अुन पर विचार और निर्णय कर सकती है। मेरे व्यक्तिगत अधिकारके क्षेत्रसे यह बिलकुल बाहर है। और अिस सवाल पर मैं अपने निजी विचार नहीं बता सकता।

मेरे अुपवासका अुद्देश्य मर्यादित है। अछूत वर्गोंका सवाल मुख्यतः धार्मिक प्रश्न होनेके कारण मैं अिसे खास अपना प्रश्न मानता हूँ। क्योंकि अुम्रभर मैंने अपना ध्यान अिस पर अेकाग्र किया है। मेरे लिअे यह पवित्र, निजी थाती है, जिसकी जिम्मेदारी मैं नहीं छोड़ सकता।

प्रकाश और प्रायश्चित्तके लिअे अुपवास करनेकी प्रथा बहुत पुरानी है। मैंने वह अीसाअी धर्ममें और अिस्लाममें भी देखी है।

विशुद्धि और प्रायश्चित्तके लिअे किये गये अुपवासके अुदाहरण तो हिन्दू धर्ममें अपार हैं। वह जैसे कर्तव्य है, वैसे ही अधिकार भी है। और अपनी समझके अनुसार तो मैंने अुसका शास्त्र बना दिया है। अिसलिअे निष्णातके रूपमें अपने मित्रों और सहानुभूति रखनेवालोंको मैं चेतावनी देता हूँ कि बगैर विचारे या गलत और आवेशमय सहानुभूतिमें मेरा कोअी अनुकरण न करे। 'अछूतों' की निःस्वार्थ सेवा करके और खूब काम करके अुन्हें योग्यता प्राप्त करनी चाहिये। और अुपवास करनेका जब अुनका वक्त आयेगा, तब अुन्हें स्वतंत्र रूपमें प्रकाश मिलेगा।

अन्तमें मैं बता दूँ कि जहाँ तक मैं अपने अन्तरको देख सकता हूँ, वहाँ तक मैंने यह अुपवास अधिक-से-अधिक शुद्ध हेतुसे और अेक भी मनुष्यके प्रति मनमें द्वेष या क्रोध रखे बिना अंगीकार किया है। मेरे लिअे यह अहिंसाका अेक प्रकार है और अहिंसा पर आखिरी मुहर है। अिसलिअे किसीको भी मेरे या मेरे हाथमें लिये हुअे कामके विरुद्ध समझकर, अुसके विरुद्ध जो आदमी अिस मौक़े पर हिंसाका अुपयोग करेगा, वह मेरे अन्तको अधिक नज़दीक लायेगा। सब मामलोंमें अैसा न माना जाता हो, तो भी अिस मामलेमें तो सफलताके लिअे विरोधियोंके प्रति सम्पूर्ण सभ्यता और आदरभाव बिलकुल ज़रूरी है।

परिशिष्ट २

अग्नि शय्यासे

१

[२० सितम्बरको दोपहरके बारह बजे अुपवास शुरू करनेसे पहले गाया गया भजन।]

अुठ जाग मुसाफिर! भोर भअी,
  अब रैन कहाँ जो सोवत है!
जो सोवत है वह खोवत है,
  जो जागत है वह पावत है।

टुक नींदसे अखियाँ खोल जरा,
  ओ गाफिल! रबसे ध्यान लगा।
यह प्रीत करनकी रीत नहीं,
  रब जागत है तू सोवत है।

अय जान भुगत करनी अपनी,
  ओ पापी! पापमें चैन कहाँ!
जब पापकी गठड़ी सीस धरी,
  फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है!

जो काल करे वह आज कर ले,
  जो आज करे वह अब कर ले,
जब चिड़ियन खेती चुग डारी,
  फिर पछतावे क्या होवत है!

२

सैकड़ों आहुतियाँ दी जायँ तो भी ज्यादा नहीं

[२० सितम्बरको गांधीजीका अुपवास शुरू होनेके बाद अखबारोंके प्रतिनिधियोंको जेलमें अुनसे मिलने दिया था। अिस मुलाकातका हाल २१ सितम्बरके 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' में अिस प्रकार प्रकाशित हुआ था।]

गांधीजीको यरवदा जेलमें रखनेके बाद नौ महीनेमें पहली ही बार अुन्हें पत्रोंके संवाददाताओंसे मिलने दिया गया था। शामको साढ़े पाँच बजे अत्यन्त गंभीर विचारप्रेरक चीज़ सुननेका सौभाग्य अुन्हें प्राप्त हुआ था। आमरणान्त अुपवास शुरू करनेके पाँच ही घण्टे बाद गांधीजीके साथ वार्तालाप करनेका संवाददाताओंको मौका मिला, अिसका स्वभावतः ही अुनके दिल पर गहरा असर हुआ।

हमें अेक लम्बे तंग कमरेमें ले जाया गया। अुसके दोनों तरफ जेलमें बुनी हुअी शतरंजियों, कम्बलों और दूसरी चीज़ोंसे भरे हुअे लकड़ीके स्टेन्ड थे। वहाँ कुरसी पर हमारा हँसकर स्वागत करनेवाला अेक व्यक्ति बैठा हुआ था, जिसकी तरफ केवल हिन्दुस्तानकी ही नहीं, बल्कि पश्चिम और पूर्व दोनोंके कितने ही देशोंकी आज टकटकी लगी हुअी है।

अुनसे पूछा गया कि आप अैसी आशा तो रखते हैं न कि अिस प्रकरणका सुखद अंत आयेगा? अिसके जवाबमें अुन्होंने कहा, "मैं अदम्य आशावादी हूँ। अीश्वरने मेरा त्याग कर दिया हो तो दूसरी बात है, नहीं तो मैं आशा रखता हूँ कि मुझे मरण पर्यन्त अुपवास नहीं करना पड़ेगा।"

गांधीजीने कहा कि अुनके नाम बहुतसे लोगोंके अैसे तार आये हैं कि अुन्होंने सहानुभूतिमें अुपवास करनेका निर्णय किया है या वे अुपवास करना चाहते हैं। "मगर मैं हरअेकसे आग्रह करता हूँ कि कोअी सहानुभूतिमें अुपवास न करे। मैंने यह अुपवास अीश्वरके आदेशसे अंगीकार किया है। अिसलिअे अिन लोगोंको अैसा निश्चित आदेश न मिला हो, तो अुनके लिअे अुपवास करनेका कोअी कारण नहीं है। आत्मशुद्धिके लिअे या अिस कार्यके साथ अेकता दिखानेके लिअे अेक दिनका अुपवास किया जाय तो वह ठीक है। परंतु अितना काफी होना चाहिये। अैसा अुपवास जैसे कर्तव्य है, वैसे ही अेक अधिकार भी है; और यह अधिकार अुसीको प्राप्त होता है, जिसने यम-नियमवाले जीवनसे अिसके लिअे योग्यता प्राप्त कर ली हो।"

फिर आजके अिस मुख्य प्रश्न पर बात चली कि अछूत वर्गोंको कितना प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये। पहले तो गांधीजीने अिस बात पर अपना आश्चर्य प्रगट किया कि बम्बअी सरकारको भेजा हुआ अेक वक्तव्य पाँच दिन हो जाने पर भी प्रकाशित नहीं किया गया। अगर वह वक्तव्य आज फिर लिखना पड़े, तो अुसके बाद हुअी घटनाओंके प्रकाशमें वह दूसरा ही होगा। मुलाकातके अंतमें अुन्होंने बताया कि अुनके अिस नये बयानको अुस बयानका पूरक माना जाय, परंतु अुस पर आधार रखनेवाला न माना जाय।

अुन्होंने आगे बताया, "मेरे पन्ने तो खुले हुअे ही हैं। परंतु प्रस्तुत विषयमें जेलकी सींखचोंके भीतरसे मैं कुछ नहीं कह सकता था। अब अंकुश हटा लिये गये हैं, तो अखबारवालोंको मैं यह पहली ही मुलाकात दे रहा हूँ। मेरा अुपवास कानूनसे निश्चित की हुअी सुरक्षित बैठकोंके खिलाफ नहीं है, परंतु अलग निर्वाचक मण्डलोंके विरुद्ध है। यह कहना ठीक नहीं है कि कानूनसे सुरक्षित बैठकें रखी जायँ, तो अुसके विरुद्ध अपने अुग्र विरोध द्वारा मैं अछूतोंके हितोंको हानि पहुँचा रहा हूँ। सुरक्षित बैठकोंके विरुद्ध मैं था ज़रूर और आज भी हूँ। परंतु सुरक्षित बैठकोंकी योजना स्वीकार या अस्वीकार करनेके लिअे मेरे सामने कभी रखी ही नहीं गअी। अिसलिअे अिस मुद्दे पर मेरे लिअे कोअी निर्णय करनेका सवाल ही नहीं था। अिस प्रश्न पर जब मैंने अपने विचार अपने आप प्रगट किये, तब ज़रूर अिस विषयमें मैंने अपनी निराशा बताअी। मेरी नम्र रायमें अिस तरहकी सुरक्षित बैठकोंसे अछूतोंकी कोअी सेवा होनेके बजाय अुलटा नुकसान ही होता है। क्योंकि अिससे अुनका स्वाभाविक विकास रुक जाता है। किसी भी जातिको क़ानूनसे सुरक्षित बैठकें देनेका मतलब है मनुष्यको सहारा देकर चलाना। वह जिस हद तक अिस सहारे पर आधार रखने लगता है, अुस हद तक वह अपंग बन जाता है।

"अगर लोग मुझ पर हँसें नहीं, तो मैं नम्रतापूर्वक यह दावा पेश करना चाहता हूँ कि यद्यपि जन्मसे मैं 'स्पृश्य' हूँ, तथापि मैंने 'अस्पृश्य' बनना पसंद किया है। और 'अस्पृश्यों' में भी अूपरके दस फ़ीसदीका प्रतिनिधि बननेका मैंने प्रयत्न नहीं किया, परंतु मेरी महत्वाकांक्षा 'अस्पृश्यों' की ठेठ नीचेकी सतहके लोगोंके साथ अेकरूप हो जानेकी और अुनका प्रतिनिधि बननेकी है। अछूतोंके लिअे यह शर्मकी बात है कि अुनमें भी जातिभेद और अूँच-नीचके भेद हैं। अुनमें 'अदृश्य' और 'अगम्य' माने जानेवाले वर्ग भी हैं। जहाँ-जहाँ मैं जाता हूँ वहीं मेरे मनःचक्षुके सामने ये लोग आकर खड़े हो जाते हैं, क्योंकि अुन्हें ज़हरके प्यालेका आकंठ पान करना पड़ा है। मैंने अुन्हें मलाबारमें देखा है, अुड़ीसामें देखा है। मुझे विश्वास हो गया है कि यदि किसी भी दिन

अुनका अुद्धार होगा, तो वह सुरक्षित बैठकोंसे नहीं, मगर हिन्दू सुधारकोंके अुनके बीच जाकर जी-तोड़ काम करनेसे होगा। मुझे जब यह लगा कि अिस तरह अुन्हें अलग करनेसे अुनमें सुधार करनेकी सारी आशायें धूलमें मिल जायँगी, तभी मेरी समस्त आत्माने अिस निर्णयके विरुद्ध बगावत की। यहाँ मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि अलग निर्वाचक मण्डल रद्द होनेसे मेरी प्रतिज्ञाके शब्दार्थका पालन हो जायगा, मगर अुसके पीछे जो भाव है अुसका पालन कभी न होगा। और 'स्पृश्य' और 'अस्पृश्यों' के बीच जैसे-तैसे कामचलाअू समझौता हुआ, तो अिससे स्वेच्छासे बने हुअे 'अस्पृश्य' की हैसियतसे मुझे जरा भी संतोष नहीं होगा और न मैं निश्चिन्त होकर चुप बैठनेवाला हूँ।

"मुझे जो चाहिये, जिसके लिअे मैं जी रहा हूँ और जिसके लिअे मैं खुशीसे मरनेको तैयार हूँ, वह यह है कि अस्पृश्यताका जड़से नाश हो। मुझे तो यह चाहिये कि दोनोंके बीच सच्चा समझौता हो जाय। अिसका जीवनप्रद असर सुदूर भविष्यमें नहीं, परन्तु आज ही दिखाअी देना चाहिये। अिस समझौते पर सारे हिन्दुस्तानके 'स्पृश्य' और 'अस्पृश्य' दोनोंको मिलकर अपनी मुहर लगानी चाहिये। अुनका यह मिलन केवल नाटकीय दिखावा न हो, मगर बंधुताकी सच्ची भावनाका होना चाहिये। मैं यह सपना पिछले पचास बरससे देख रहा हूँ और अुसीको सिद्ध करनेके लिअे मैंने आज यह अग्निप्रवेश किया है। ब्रिटिश सरकारका निर्णय तो आखिरी निमित्त था। समाजके शरीरमें फैले हुअे महाभयंकर रोगकी यह अचूक निशानी थी। अैसे मामलोंमें मैं सच्चा वैद्य होनेका दावा करता हूँ। अैसे वैद्यकी अमोघ दृष्टिसे मैंने अिस रोगकी निशानी पहचान ली है। अलग निर्वाचक मंडल रद्द कर दिये जायँ, यह तो मेरे खयालसे अिस कार्यका आरंभ है। अिसलिअे बम्बअीमें और दूसरी जगह अिकट्ठे हुअे नेताओंको मैं सावधान कर देना चाहता हूँ कि वे किसी भी तरहके जल्दबाजीके निर्णय पर न पहुँचें।

"मैं अपनी जिन्दगीकी परवाह नहीं करता। सवर्ण हिन्दुओंने अपने सहधर्मी किन्तु लाचार स्त्री-पुरुषों पर जुल्मकी जो झड़ी बरसाअी है, अुसके प्रायश्चित्तके तौर पर अिस अुम्दा काममें सैकड़ों प्राण दिये जायँ तो भी काफी नहीं। अिसलिअे मैं तो अुनसे आग्रह करूँगा कि वे सोलह आने न्यायके मार्गसे तिलभर भी पीछे न हटें। मैं अपने अुपवासको न्यायके पलड़ेमें रखना चाहता हूँ। अिससे अगर सवर्ण हिन्दुओंकी नींद खुलेगी और अुनमें अपने कर्तव्यका भान जाग्रत होगा, तो मेरे अुपवासका अुद्देश्य पूरा हो जायगा। अिसके विपरीत, यदि वे मेरे प्रति अंधे प्रेमके वश होकर अलग निर्वाचक मंडल रद्द करनेके लिअे ही जैसा-तैसा अूपरी समझौता कर डालेंगे और फिर सो जायँगे, तो

वे बड़ी भूल करेंगे और मेरा जीवन भी बरबाद कर देंगे। कारण अलग निर्वाचक मंडल रद्द होनेसे मेरे अिस अुपवासका अंत तो हो जायगा, मगर जिस जीवित समझौतेके लिअे मैं जूझ रहा हूँ वह नहीं होगा, तो मेरे लिअे यह जीतेजी मौत होगी। अिसका अर्थ यही होगा कि यह अुपवास बन्द करके मुझे तुरंत ही दूसरे अुपवासकी सूचना देनी होगी, ताकि मेरी प्रतिज्ञाके भावका पूरा-पूरा पालन हो।

"यह चीज़ दूसरे लोगोंको नादानी भरी लगेगी। मगर मुझे अैसी नहीं लगती। मेरे पास कुछ अधिक देनेको हो, तो वह भी मैं अिस शापको मिटानेके लिअे दे दूँ। मगर अपनी जिन्दगीसे अधिक मेरे पास और कुछ नहीं है।

"मैं मानता हूँ कि अगर अस्पृश्यता सचमुच जड़से नष्ट हो जायगी, तो हिन्दू समाज परसे भयंकर कलंक दूर हो जायगा। अितना ही नहीं बल्कि अुसका असर सारी दुनिया पर होगा। अस्पृश्यताके विरुद्ध मेरी यह लड़ाअी सारे मानव समाजमें बसी हुअी अशुद्धिके विरुद्ध लड़ाअी है। अिसलिअे जब मैंने सर सेम्युअल होरको पत्र लिखा, तब मेरे दिलमें पूरी श्रद्धा थी कि अगर मैं अिस काममें अितने स्वच्छ हृदयसे पड़ा हूँ, जो किसी भी तरहकी अशुद्धिसे मुक्त और किसी भी किस्मके द्वेष और किसी भी प्रकारके क्रोधसे मुक्त मनुष्यके लिअे संभव है, तो मानवकुलके समस्त अुत्तम तत्त्व मेरी सहायताके लिअे अवश्य ही दौड़ पड़ेंगे। अिस प्रकार आप देख सकेंगे कि मेरा अुपवास हिन्दू समाजके प्रति श्रद्धा पर, मनुष्य स्वभावके प्रति श्रद्धा पर और अधिकारी वर्गके प्रति भी श्रद्धा पर स्थित है।"

अपनी मुलाकात जारी रखते हुअे गांधीजीने कहा, "अस्पृश्यताको चुनौती देनेमें मैं मामलेकी जड़ तक पहुँचता हूँ। अिसीलिअे महत्त्वमें यह प्रश्न राजनैतिक स्वराज्यके सवालसे भी कहीं बढ़कर है। दलित वर्गके करोड़ों लोगोंके हृदयोंमें आशाका अुदय हुआ है कि अुनके कंधेका यह कुचल डालनेवाला बोझा दूर होगा। मैं तो कहता हूँ कि अिस आशाके नैतिक आधारके बिना स्वराज्यका विधान जड़ बोझ जैसा होगा। चित्रके अिस सजीव पहलूको अंग्रेज कर्मचारी नहीं देख सकते, अिसीलिअे वे अपने अज्ञानमें और आत्मसंतोषमें जो प्रश्न करोड़ों लोगोंके मूल अस्तित्व पर असर करता है — यहाँ मैं सवर्णों और अस्पृश्यों यानी जुल्म करनेवाले और जुल्मका शिकार होनेवाले दोनोंकी बात कर रहा हूँ — अुस प्रश्न पर न्याय देनेकी धृष्टता करते हैं। अिस अधिकारी वर्गको अुसके घोर अज्ञानसे — कोअी अपराध किये बिना मैं अैसा शब्द प्रयोग कर सकता हूँ तो — जगानेके लिअे भी मेरे अन्तर्नादने अपनी समस्त शक्तिसे अिस चीज़का विरोध करनेकी मुझे प्रेरणा की है।"

अुन्होंने खास तौर पर यह भी बताया कि वे अिस प्रसंगके लिअे नियुक्त की हुअी समितिके सदस्योंसे भी कल मिले थे और अुन्हें निश्चित सूचनाअें दी थीं। अुनका खयाल था कि वे आज बम्बअीमें अखबारवालोंको बता दी जायँगी।

गांधीजीका फोटो लिया जा सकता है या नहीं, यह पूछा जाने पर अुन्होंने विनोदमें अपने अग्नि-संस्कारकी बात कही। अिस पर मैंने पूछा कि भगवान न करे, अगर कहीं अैसा अनिष्ट हो जाय, तो आपके लड़के देवदासको, जो आपसे कल मिलकर गये हैं, अिसके बारेमें आपने कोअी सूचनाअें दी हैं या नहीं। अिसका मुझे चमत्कारिक अुत्तर मिला: "अपने लड़केसे मैंने कह दिया है कि अुसे बम्बअीकी परिषदमें जाहिर कर देना चाहिये कि पागलपन भरी जल्दबाज़ीमें अछूत वर्गके हितोंको नुकसान पहुँचानेवाली कोअी बात होनेके बजाय वह अपने पिताकी जिन्दगी खतम होने देनेके लिअे तैयार है।"

यह अुपवास कितना लम्बा चलनेकी संभावना अुन्हें लगती है, अिस प्रश्नके अुत्तरमें बताया, "औरोंकी तरह मेरी भी जीनेकी खूब अिच्छा है। पानीमें जीवनको कायम रखनेकी अपार शक्ति है। जब पानीकी ज़रूरत मालूम होगी, मैं पानी तो लूँगा ही। आप मुझ पर अितना विश्वास रखिये कि प्राणोंको कायम रखनेके लिअे मैं यथासम्भव तमाम प्रयत्न करूँगा, ताकि हिन्दू और अंग्रेज़ लोगोंका भी अन्तःकरण जाग्रत हो जाय और अिस वेदनाका अन्त हो। मेरी पुकार सर्वशक्तिमान परमात्माके सिंहासन तक पहुँचेगी।"

३

अमेरिकासे

[अमेरिकन पत्रकार मि० विलियम शिरेरेने तारसे गांधीजीको अुनके अुपवासके बारेमें कुछ प्रश्न पूछे थे। वह तार और अुसका दिया हुआ गांधीजीका जवाब नीचे दिया जाता है।]

शिरेरेका तार

अमेरिकाके लोगोंको यद्यपि आपकी अन्तरात्माके प्रति और आपकी गहरी धार्मिक भावनाओंके प्रति बड़ा आदर है, फिर भी वे आपके अुपवाससे बड़ी अुलझनमें पड़ गये हैं। क्या आप अैसा कोअी निश्चित स्पष्टीकरण कर सकेंगे, जिसे अमेरिकाके लोग आसानीसे समझ सकें?

मि० मेक्डोनल्डको दिये हुअे आखिरी जवाबमें आपने बताया है कि आप अछूत वर्गोंको अधिक प्रतिनिधित्व दिये जानेके विरुद्ध नहीं हैं। आप यह किस तरह करना चाहते हैं? क्या आप यह भी मानते हैं कि

आपकी योजनामें अछूतवर्गके नेताओंके विचार भी ध्यानमें रखने चाहियें ? अुनके साथ आप कहाँ तक समझौता करनेको तैयार हैं ?

अमेरिकाके लोग यह भी नहीं समझ पाते कि अिस तरह अुपवास करके मर जानेसे हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीयताका अपना निर्विवाद नेतृत्वपद आप जानबूझकर क्यों फेंक रहे हैं ? और जबकि राष्ट्रीयता अपने स्वराज्यके ध्येयकी सिद्धिके नजदीक आअी हुअी दीखती है, अुस वक्त अुसे किस लिअे मरने दे रहे हैं ? और क्या अिस समय आप हिन्दुस्तानियोंके केवल अेक ही वर्गके लिअे प्राण अर्पण नहीं कर रहे हैं ? आपका दावा तो यह था कि आप सारे राष्ट्रके प्रतिनिधि हैं। अिसलिअे आप प्राण भी अर्पण करें, तो वह सारे राष्ट्रके लिअे कीजिये। आपने अेक बार मुझसे कहा था कि स्वराज्यकी लड़ाअी तमाम धर्म-सम्प्रदायोंसे परे है और कांग्रेसके नेताकी हैसियतसे आप राष्ट्रीय हिन्दुओं, मुसलमानों, पारसियों और अीसाअियों — सबके प्रतिनिधि हैं। अेक धार्मिक प्रश्नकी खातिर, जिसका निर्णय करनेका अब हिन्दुओंको हक नहीं रहा, क्या आप अिस समय अपने नेतृत्वपदका त्याग नहीं कर रहे हैं ? हिन्दुस्तानमें और अिंग्लैण्डमें प्रगट किये गये आपके विचार अमेरिकाके लोगोंके सामने अन्तःकरणसे पेश करनेका प्रयत्न करनेवालेकी हैसियतसे मैं आपके जवाबकी कदर करूँगा।

गांधीजीका अुत्तर

धन्यवाद। अमेरिकाके लोगोंकी अुलझनसे मुझे आश्चर्य नहीं होता। दुनियाको मैं आश्चर्यमें डालता हूँ, यह मेरा दुर्भाग्य हो सकता है या सद्भाग्य भी। नये-नये प्रयोग करने या पुराने प्रयोगोंको नये ढंगसे करनेके कारण अक्सर गलतफहमी हो जाया करती है। शिष्टाचारके नियमोंके कारण सरकारको लिखे हुअे पत्रोंमें मुझे अपने आप पर बहुत कड़ा अंकुश रखना पड़ा था। जेलके नियमोंके अनुसार बाहरकी दुनियाके साथ मैं पत्रव्यवहार नहीं कर सकता। मैंने अिन नियमोंके शब्द और भाव दोनोंका पालन किया है।

जो समझौता अभी तैयार हो रहा है, अुसके अनुसार अछूतोंको ब्रिटिश निर्णयसे ज्यादा अच्छा और ज्यादा विशाल प्रतिनिधित्व मिलेगा। अछूतोंके नेताओंके मतसे निरपेक्ष रूपसे अछूतोंके आम वर्गके मतका मुझे विश्वास न होता, तो जिस ढंगसे मैंने अुपवास किया है अुस ढंगसे मैं नहीं कर सकता था। और जहाँ तक मैं जानता हूँ, अछूत नेताओंमें से भी विशाल बहुमतका समर्थन मुझे प्राप्त है। मैं तो अुनके साथ भी अछूत वर्गके सर्वोपरि हितोंकी रक्षा करके समझौता करनेमें यथाशक्ति ज्यादा आगे जाअूँ। अछूत नेताओंकी अपेक्षा अछूत वर्गका हित ज्यादा जाननेका दावा करनेकी मेरी धृष्टतासे आप चौंकें

नहीं। यद्यपि जन्मसे मैं 'स्पृश्य' हूँ फिर भी पिछले पचास वर्षसे मैं स्वेच्छा-पूर्वक 'अस्पृश्य' बन गया हूँ।

अमेरिकाके लोग यह जान लें कि मेरी राजनीति मेरे धर्मसे निकली हुआी है। अीश्वरने मेरी मौत भूखों मरनेसे ही सोच रखी होगी, तो मैं जानता हूँ कि अिससे मेरे राजनैतिक नेतृत्व पर आखिरी मुहर लग जायगी। मेरी प्राणाहुतिसे राष्ट्रीय भावना अधिक बलवान बनेगी। अिस अुपवासकी सचाअी और अुसका सारा रहस्य हिन्दुस्तानियोंका बहुत बड़ा भाग अंतःप्रेरणासे समझ गया है।

अिस तपश्चर्यासे सच्चा स्वराज्य और अधिक नजदीक आया है, अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है। और शरीरसे या मनसे विचलित हुअे बिना अिस अुपवासको पार कर लेनेकी अीश्वर मुझे शक्ति देगा, तो स्वराज्य अिससे भी अधिक नजदीक आ जायगा। समत्वमें बीता हुआ अेक-अेक दिन और किसी भी अुपायकी अपेक्षा स्वराज्यको अधिक निकट लाता है।

अस्पृश्यताके लिअे मरनेकी तैयारी समस्त भारतके लिअे मरनेकी शुद्ध तैयारी है। क्योंकि अस्पृश्यता-निवारण स्वराज्यका अविभाज्य अंग है। अधमसे अधम और पापीसे पापी हिन्दुस्तानीको भी अुसके आरोग्यप्रद और शांतिदायक रससे वंचित रखा जाय, तो वह स्वराज्य मेरे कामका नहीं। मेरे लिअे मूल धर्म अेक ही है, यद्यपि अुसकी शाखायें अनेक हैं। मैं अुसकी हिन्दू शाखाका होकर असली तनेके प्रति अपने कर्तव्यमें चूकूँ, तो मैं अिस अेक और अविभाज्य धर्मका नालायक अनुयायी बनूँ। अिस मान्यताके अनुसार तो मेरा बलिदान किसी भी रूप या प्रकारकी अस्पृश्यतामें से मानव-जातिकी मुक्तिको आगे बढ़ाता है।

अिसलिअे अमेरिकासे, जिसने मेरे प्रति सहानुभूति रखनेवाले अपने ज्ञात और अज्ञात निवासियोंके जरिये मेरे दुःखमें अितनी हमदर्दी बताअी है, मैं यह आशा रखता हूँ कि अिस बलिदानके प्रति वह दुनियाका लोकमत संगठित करे। हालांकि यह बलिदान दुनियाके अेक भागको ध्यानमें रखकर किया जा रहा है अैसा दिखाअी देता है, फिर भी दरअसल तो यह सारी दुनियाको समा लेता है। मेरी नम्र कारगुजारीको अूपरी तौर पर भी समझनेवाले अितना देखे बिना नहीं रहे होंगे कि मेरे जीवनका अेक भी काम अैसा नहीं है, जिससे किसी व्यक्ति या जातिका नुकसान हुआ हो। मेरी राष्ट्रीयता और मेरा धर्म किसीका विरोधी नहीं, पर सबका संग्राहक है, और प्राणीमात्रके कल्याणके साथ सुसंगत है। मुझसे भूल हो ही नहीं सकती, अैसा दावा मैं नहीं करता। हिमालय जैसी भूलें करनेका मुझे भान है। परन्तु मुझे खयाल नहीं कि वे जानबूझकर की गअी हों या मैंने किसी भी व्यक्ति या जातिके प्रति या किसी मनुष्य या दूसरे प्राणीके प्रति द्वेष रखा हो।

४

यरवदा-करार

[अछूत वर्गोंकी तरफके नेताओं और बाकी हिन्दू जातिके बीच, धारासभाओंमें अछूत वर्गके प्रतिनिधित्वके बारेमें और अुनके कल्याण सम्बन्धी कुछ और बातोंके बारेमें हुअे अिकरारनामेका मजमून ।]

१. साधारण निर्वाचक मण्डलोंमें अछूत वर्गोंके लिअे निश्चित बैठकें सुरक्षित रखी जायँगी । प्रान्तीय धारासभाओंमें नीचे लिखे अनुसार बैठकें सुरक्षित रखी जायँगी :

मद्रास	३०
बम्बअी, सिन्ध सहित	१५
पंजाब	८
बिहार और अुड़ीसा	१८
मध्यप्रान्त	२०
आसाम	७
बंगाल	३०
युक्तप्रान्त	२०
कुल	१४८

प्रधानमंत्रीके फैसलेमें जो प्रान्तीय धारासभाओंकी कुल बैठकें घोषित की गअी हैं, अुनके आधार पर यह संख्या निश्चित की गअी है ।

२. अिन बैठकोंके लिअे चुनाव संयुक्त मताधिकारके आधार पर किया जायगा; परंतु वह नीचे लिखे तरीकेसे होगा :

साधारण निर्वाचक मण्डलके मतपत्रकमें दर्ज अछूत वर्गके तमाम मतदाताओंका अेक निर्वाचक मण्डल बनेगा । अछूत वर्गके अुम्मीदवारोंमें से अुनके लिअे सुरक्षित रखी गअी हर बैठकके लिअे चार-चार अुम्मीदवार, हरअेक मतदाता अेक-अेक मत दे अिस पद्धतिसे, चुन लेंगे । अिस तरहके प्रारम्भिक चुनावमें चुने गये अुम्मीदवार साधारण चुनावमें अुम्मीदवारके रूपमें खड़े होंगे ।

३. केन्द्रीय धारासभामें अछूत वर्गका प्रतिनिधित्व संयुक्त निर्वाचक मण्डल और सुरक्षित बैठकोंके सिद्धान्तके अनुसार होगा और प्रान्तीय धारासभाओंमें अुनके प्रतिनिधियोंके चुनावके लिअे अूपरकी कलम २ में बताअी गअी पद्धतिके अनुसार रखा जायगा ।

४. केन्द्रीय धारासभामें ब्रिटिश भारतके साधारण निर्वाचक मण्डलोंके लिअे जो बैठकें दी गअी हैं, अुनकी १८ फ़ीसदी बैठकें अछूत वर्गोंके लिअे सुरक्षित रखी जायँगी।

५. केन्द्रीय और प्रान्तीय धारासभाओंके चुनावके लिअे प्रारम्भिक निर्वाचन द्वारा कुछ ज्यादा अुम्मीदवार चुननेकी प्रथा दस वर्षके बाद बन्द हो जायगी, बशर्ते कि वह नीचेकी कलम ६ में बताये अनुसार आपसके समझौतेसे अिससे पहले बन्द न कर दी जाय।

६. प्रान्तीय और केन्द्रीय धारासभामें सुरक्षित बैठकों द्वारा अछूत वर्गोंके प्रतिनिधित्वकी प्रथा, जिसका बंदोबस्त कलम १ और ४ में किया गया है, अिस समझौतेके साथ सम्बन्ध रखनेवाली जातियोंके परस्पर समझौतेसे बंद हो जाय तब तक अमलमें रहेगी।

७. केन्द्रीय और प्रान्तीय धारासभाओंमें अछूत वर्गोंका मताधिकार लोथियन कमेटीकी रिपोर्टमे बताये अनुसार रहेगा।

८. स्थानीय संस्थाओंमें निर्वाचनके बारेमें और सरकारी नौकरियोंमें नियुक्तिके बारेमें, कोअी व्यक्ति अछूत वर्गका होनेके कारण अुस पर किसी भी प्रकारकी अधिकारहीनता लागू नहीं होगी।

सरकारी नौकरियोंमें नियुक्तिके लिअे शिक्षाकी जो योग्यताअें रखी गअी होंगी, अुन्हें मानकर अिन मामलोंमें अछूत वर्गोंको वाजिब हिस्सा दिलानेके लिअे हर तरहकी कोशिश की जायगी।

९. अछूत वर्गके लोगोंको शिक्षा लेनेकी सुविधाअें देनेके लिअे हर प्रान्तमें शिक्षाके लिअे तय की गअी सरकारी ग्रान्टमें से अुचित रकम खास तौर पर अलग रखी जायगी।

मदनमोहन मालवीय	बी. अेस. कामत
तेजबहादुर सप्रू	जी. के. देवधर
अेम. आर. जयकर	अे. वी. ठक्कर
बी. आर. आम्बेडकर	आर. के. बखले
श्रीनिवासन	पी. जी. सोलंकी
अेम. सी. राजा	पी. बालू
सी. वी. महेता	गोविन्द मालवीय
सी. राजगोपालाचार्य	देवदास गांधी
राजेन्द्रप्रसाद	बिस्वास
जी. डी. बिड़ला	बी. अेन. राजभोज
रामेश्वरदास बिड़ला	गवाअी
शंकरलाल बैंकर	

हिन्दू परिषदकी आखिरी बैठकमें बम्बअीमें २५ सितम्बरको नीचे लिखे हस्ताक्षर और बढ़ाये गये थे :

लल्लूभाअी शामलदास
हंसा महेता
के. नटराजन
कामकोटी नटराजन
पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास
मथुरादास विसनजी
वालचंद हीराचंद
अेच. अेन. कुंजरू
के. जी. लिमये
पी. कोदंडराव
जी. के. गाडगिल
मनु सुबेदार
अवन्तिकाबाअी गोखले
के. जे. चितलिया
राधाकान्त मालवीय
अे. आर. भट
कोलम
प्रधान

५

हिन्दू समझौतेका समर्थन करते हैं

[२५ सितम्बरको बम्बअीमें हुअी हिन्दू परिषदकी अन्तिम बैठकमें नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया गया था ।]

१. सवर्ण हिन्दुओं और अछूत वर्गोंके नेताओंके बीच २४ सितम्बर १९३२ को पूनामें हुअे समझौतेका यह परिषद समर्थन करती है और विश्वास रखती है कि ब्रिटिश सरकार हिन्दू जातिके भीतर अलग निर्वाचक मण्डल बनानेवाला अपना निर्णय बदल देगी और अिस समझौतेको पूरी तरह मंजूर कर लेगी । परिषद आग्रह करती है कि सरकार अिस मामलेमें जल्दी कदम अुठाये, ताकि महात्मा गांधी अपनी प्रतिज्ञाकी शर्तोंके अनुसार और बहुत देर होनेसे पहले अपना अुपवास छोड़ सकें । परिषद सम्बन्धित जातियोंके नेताओंसे अपील करती है कि वे समझौतेके और अिस प्रस्तावके सारे परिणामोंको समझें और अुन्हें पूरा करनेकी सच्चे दिलसे कोशिश करें ।

२. यह परिषद निश्चय करती है कि अब अिसके बाद जन्मके कारण किसीको भी अछूत नहीं माना जायगा; और आज तक जिनको अछूत माना गया है, अुनके सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक रास्तों और सार्वजनिक संस्थाओंके अुपयोग सम्बन्धी अधिकार दूसरे हिन्दुओंके बराबर ही माने जायेंगे । अिन अधिकारोंको जल्दीसे जल्दी कानूनी मान्यता दे दी जायगी और अगर वह मान्यता जल्दी नहीं मिली, तो अिस सम्बन्धका कानून स्वराज्य पार्लियामेण्टके पहलेसे पहले कानूनोंमें से अेक होगा ।

३. यह निश्चय खास तौर पर किया जाता है कि प्रचलित रूढ़िके अनुसार आजकल कथित अछूतों पर मन्दिर-प्रवेशके प्रतिबन्ध तककी जो सामाजिक पाबन्दियाँ लगाओ जाती हैं, वे सब न्यायपूर्ण और शांतिमय अुपायों द्वारा जल्दीसे जल्दी दूर हों, यह देखना तमाम हिन्दू नेताओंका फर्ज होगा।

६
ब्रिटेनका सच्चा मित्र

[अिंडिया लीगके प्रतिनिधि मंडलकी मिस अेलन विल्किसन और श्री वि० के० कृष्णमेननने गांधीजीसे यरवदा जेलमें मुलाकात की थी। गांधीजीने २५ सितम्बरको अिस प्रतिनिधि मंडलको ब्रिटेनके लिअे नीचे लिखा सन्देश दिया।]

अिस अुपवासका प्रत्येक दिन मुझे अिसमें औश्वरका हाथ होनेका अचूक प्रमाण दे रहा है। अस्पृश्यताके विरुद्ध जाग्रतिका जो महान ज्वार प्रगट हुआ है, अुसके लिअे औश्वर और अुसकी दयामें अपार श्रद्धा रखनेवाला मैं भी तैयार नहीं था। कितने ही बड़े मन्दिरोंमें किसी भी विरोधके बिना अछूतोंको अपने आप जाने दिया गया है। अिसे मैं अेक आधुनिक चमत्कार मानता हूँ। अिन मन्दिरोंमें सच पूछा जाय तो अब औश्वरका निवास हुआ है। अब तक ये मूर्तियाँ, जिनमें पुजारी गलत तौर पर और अपने अभिमानमें औश्वरका अस्तित्व मानते थे, औश्वर-विहीन थीं।

ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलके फैसलेसे मुझे औश्वरके द्वारा यह चेतावनी मिली कि वह मेरे द्वार खटखटा रहा था और मुझे अपनी नींदसे जगा रहा था। जो समझौता हुआ है वह मेरे खयालसे तो शुद्धिके कार्यका आरम्भ ही है। जब तक अस्पृश्यताका नाम-निशान नहीं मिट जाता, तब तक हृदयकी वेदनाका अन्त नहीं होगा। मैं यह नहीं चाहता कि ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल किसी जल्दबाजीके फैसले पर पहुँचे। मेरी जान बचानेकी खातिर या दुनियाके आगे सच्चे दीखनेकी गरजसे असन्तोषसे वे अिस समझौतेको स्वीकार करें, यह मैं नहीं चाहता। समझौतेका असली मर्म वे न समझे हों, तो अुन्हें अिसे तुरन्त नामंजूर कर देना चाहिये। परन्तु वे समझ गये हों, तो कथित सवर्णों और कथित अछूतोंने औश्वरकी साक्षीमें अपने पूरे दिलसे जिस बड़े समझौतेको किया है, अुसके अेक भी शब्दमें या अेक भी विराम चिन्हमें फेरबदल किये बिना अुसकी अेक-अेक शर्तको वे अमली रूप दें।

मैं आशा रखता हूँ कि वे और दुनिया समझ लेगी कि यह समझौता, मैं नम्रतापूर्वक अैसा कह सकता हूँ तो, मन्त्रि-मण्डलके निर्णयसे कहीं बढ़कर है,

अैसा कहनेमें कोअी अभिमान नहीं है। ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल विदेशियोंका होनेके कारण हिन्दुस्तानकी हालतके बारेमें या अस्पृश्यता क्या चीज़ है, अिस विषयमें अुन्हें किसी तरहकी निजी जानकारी नहीं हो सकती। असलमें यह काम अुनके बूतेसे बाहरका था। यद्यपि कुछ हिन्दुस्तानियोंने ही यह काम अुन्हें सौंपा था, फिर भी अपनी शक्तिसे बाहरका मानकर अुन्हें अिस जिम्मेदारीको लेनेसे अिनकार कर देना चाहिये था।

प्रायश्चित्तकी शय्या पर सोया हुआ मैं ये वचन किसी भी तरहके कटाक्ष या गुस्सेमें नहीं बोल रहा हूँ।

ब्रिटिश जनताका और ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलका भी मैं सच्चा मित्र होनेका दावा करता हूँ। अिस अवसर पर मैं अपनी राय, जो प्रस्तुत है, दबाकर रखूँ, तो अुनके प्रति, अपने खुदके प्रति और अपने कामके प्रति झूठा साबित होअूँ। अन्तमें ब्रिटेनको मैं विश्वासके साथ यह कहना चाहता हूँ कि मेरे शरीरमें प्राण रहेंगे तब तक हिन्दूधर्म परसे यह असह्य कलंक दूर करनेके लिअे जितने अुपवास करने पड़ेंगे, करूँगा। हम अीश्वरकी कृपा समझें कि अिस आन्दोलनमें सिर्फ अेक ही आदमी नहीं, परन्तु मैं मानता हूँ कि अैसे हज़ारों मनुष्य हैं, जो अिस सुधारके लिअे अपनी जान देनेको तैयार हैं।

७

सरकार समझौता मंजूर करती है

[२६ सितम्बरको होम मेम्बर मि० हेगने केन्द्रीय धारासभामें नीचे लिखा बयान दिया।]

सम्राटकी सरकारके ४ अगस्तके साम्प्रदायिक निर्णयमें बताअी गअी साधारण निर्वाचक मण्डलकी पद्धतिके बजाय नअी बननेवाली धारासभाओंमें अंत्यज वर्गोंके प्रतिनिधित्वके मामलेमें और अुनके कल्याण सम्बन्धी कुछ और बातोंमें अंत्यज वर्गोंके नेताओं और बाकी हिन्दू जातिके नेताओंके बीच समझौता हो गया है, यह जानकर सम्राटकी सरकारको बड़ा सन्तोष हुआ है।

समझौता यह हुआ है कि अंत्यज वर्गोंके लिअे कुछ बैठकें सुरक्षित रखकर निर्वाचक मण्डल संयुक्त रहें। सुरक्षित बैठकोंका चुनाव करनेके ढंगके बारेमें कुछ महत्वपूर्ण शर्तें निश्चित की गअी हैं।

जातियोंके बीच कोअी समझौता न हो सकनेके कारण सरकारने अपना निर्णय दिया था। सरकारका हेतु नअी धारासभाओंमें अंत्यज वर्गोंके हितोंकी रक्षाके लिअे अुचित संरक्षण देना था।

अब अंत्यज वर्ग और दूसरे हिन्दू प्रतिनिधि मानते हैं कि अुन्होंने मिलकर जो योजना तय की है और सम्राटकी सरकारको भेज दी है, वह अूपर बताये हुअे हेतुके लिअे ठीक है, अिसलिअे सरकार अपने निर्णयके चौथे पैरेमें बताये हुअे ढंगके अनुसार अपने निर्णयके नवें पैरेमें की गअी व्यवस्थाके बजाय प्रान्तीय धारासभाओंके प्रतिनिधित्वसे सम्बन्ध रखनेवाली अिस समझौतेकी शर्तोंको मंजूर करनेकी पार्लियामेण्टसे सिफारिश करेगी।

यह स्पष्ट है कि अिस समझौतेकी रूसे अंत्यज वर्गोंको दी गअी बैठकोंके साथ साधारण बैठकोंकी कुल संख्या हर प्रान्तमें माननीय सरकारके निर्णयसे अंत्यज वर्गोंको दी गअी बैठकों तथा साधारण बैठकोंके कुल जोड़के बराबर ही रहेगी।

सरकार नोट करती है कि अिस समझौतेमें कुछ अैसी बातें तय हुअी हैं, जो ४ अगस्तके अुनके निर्णयके क्षेत्रसे बाहर की हैं। समझौतेकी कलम ८ तथा ९ में तय हुअे मुद्दे अैसे हैं, जिन्हें पूरा करना मुख्यतः अिस बात पर निर्भर रहेगा कि विधानका ठीक-ठीक अमल कैसे किया जाता है। परन्तु माननीय सम्राटकी सरकार अिन कलमोंको अिस तरह नोट करती है कि वे अंत्यज वर्गोंके प्रति सवर्ण हिन्दुओंकी निश्चित प्रतिज्ञाके रूपमें हैं।

दूसरे दो मुद्दे भी सरकारी निर्णयके क्षेत्रसे बाहरके हैं :

(१) समझौतेमें यह मान लिया गया है कि अंत्यज वर्गोंका मताधिकार, मताधिकार समितिकी सिफारिशोंके अनुसार रहेगा। यह तो स्पष्ट ही है कि अंत्यज वर्गोंके (और आम तौर पर सभी हिन्दुओंके) मताधिकारका ढंग अुसी वक्त तय हो सकता है, जब दूसरी जातियोंके मताधिकारका ढंग तय किया जायगा। यह सारा सवाल माननीय सम्राटकी सरकारके विचाराधीन है।

(२) केन्द्रीय धारासभामें अंत्यज वर्गके प्रतिनिधियोंके चुनावके सम्बन्धमें समझौतेमें अेक खास पद्धतिकी व्यवस्था है। यह चीज़ भी निर्णयके क्षेत्रसे बाहर की है और केन्द्रीय धारासभाके चुनावकी सारी योजनाके अेक भागके तौर पर यह भी विचाराधीन है। अुसके सम्बन्धमें टुकड़े-टुकड़े करके निर्णय नहीं किया जा सकता।

अिन दो मुद्दोंके बारेमें जो कहा गया है, अुसका यह अर्थ करनेकी ज़रूरत नहीं है कि माननीय सम्राटकी सरकार समझौतेमें जो सुझाया गया है अुसके विरुद्ध है। कहनेका तात्पर्य अितना ही है कि ये प्रश्न अभी विचाराधीन हैं। गलतफहमी न हो अिसलिअे अितना स्पष्टीकरण अुचित है कि ब्रिटिश भारतकी साधारण बैठकोंकी संख्या की १८ फ़ी सदी बैठकें अंत्यज वर्गोंके लिअे सुरक्षित रखनेका जो सुझाव दिया गया है, वह बात अंत्यज वर्गों और दूसरे हिन्दुओंके बीच तय करनेकी है।

८

‘जीवन जखन शुकाये जाय’

[गांधीजीने पारणा किया अुस समय गुरुदेवका गाया हुआ भजन।]

जीवन जखन शुकाये जाय, करुणा-धाराय अेशो,
सकल माधुरी लुकाये जाय, गीत-सुधारसे अेशो ।
कर्म जखन प्रबल आकार
गरजि अुठिया ढाके चारिधार
हृदय-प्रान्ते हे जीवन-नाथ! शान्त-चरणे अेशो ।
आपनारे जबे करिया कृपण
कोने पड़े थाके दीनहीन मन
दुआर खुलिया हे अुदारनाथ! राज-समारोहे अेशो ।
वासना जखन विपुल धूलाय
अंध करिया अबोधे भूलाय
ओ हे पवित्र! ओ हे अनिद्र! रुद्र आलोके अेशो ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

[गुरुदेवके भजनका महादेवभाअी द्वारा किया हुआ अनुवाद]

जीवन जब सुकाअी जाय
करुणा वर्षन्ता आवो!
माधुरी मात्र छुपाअी जाय
गीत-सुधा झरन्ता आवो!

कर्मनां ज्यारे काळां वादळ
गरजी गगडी ढांके सहु स्थळ
हृदय-आंगणे हे नीरवनाथ!
प्रशान्त पगले आवो!

मोटुं मन ज्यारे नानुं थअी
खूणे भराये ताळुं दअी,
ताळुं तोडी हे अुदारनाथ!
वाजन्ता गाजन्ता आवो!

कामक्रोधनां आकरां तुफान
आंधळा करी भुलावे भान,
हे सदा जागन्त, पाप धुवन्त!
वीजळी चमकन्ता आवो!

९

यह आग कभी नहीं बुझेगी

[२६ सितम्बरको पारणा करनेके बाद गांधीजीका प्रकाशित किया हुआ बयान।]

अीश्वरके नाम पर शुरू किये हुअे अुपवासका पारणा मैंने अुसीके नाम पर और गुरुदेवकी तथा अुनके सामने बैठे हुअे कोढ़के बीमार और विद्वान पंडित श्री परचुरे शास्त्रीकी और मेरे आसपास घेरा डालकर बैठे हुअे अनेक प्रियजनोंकी मौजूदगीमें किया है। पारणा करनेसे पहले कविने अपना अेक बंगाली भजन गाया, फिर परचुरे शास्त्री अुपनिषदोंके मंत्र बोले और बादमें मेरा प्यारा भजन 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' गाया गया। अुपवासके सप्ताहमें देशके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक भावनाके जिस भव्य ज्वारके दर्शन हुअे, अुसमें अीश्वरका हाथ साफ़ दिखाअी देता था। दुनियाके अनेक भागोंसे अुपवासको आशीर्वाद देनेवाले जो तार मिले, अुन्होंने मुझे अिन सात दिनोंमें शरीर, मन और हृदयकी जिस वेदनामें से मैं गुज़र रहा था अुसमें टिका रखा।

और काम भी अिस वेदनामें से गुज़रने लायक़ ही था। अेक बार प्रगट हुअी यह अग्नि हिन्दू धर्ममें जब तक अस्पृश्यताका जरा भी नाम-निशान रहेगा, तब तक नहीं बुझेगी। अीश्वरकी अैसी ही मर्ज़ी होगी और मेरे जीवनमें अस्पृश्यताका नाश न हुआ, तो मुझे विश्वास है कि अैसी लगनवाले हज़ारों सुधारक मौजूद हैं, जो अिस भयंकर कलंकसे हिन्दू धर्मकी शुद्धि करनेकी खातिर अपने प्राण दे देंगे।

जो समझौता किया गया है, अुसमें, जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, सब पक्षोंकी अुदारता है। अिसमें हृदयोंका मिलन है। अेक तरफसे डॉ० आम्बेडकर, रा. ब. श्रीनिवासन और अुनकी संस्थाका तथा दूसरी तरफसे रा. ब. अेम. सी. राजाका अेक हिन्दूकी हैसियतसे मैं आभारी हूँ। कथित सवर्ण हिन्दू युगोंसे जो अन्याय करते आ रहे हैं, अुन्हें सजा देनेके लिअे भी वे बिलकुल असमाधानकारी और विरोधी रवैया अख्तियार कर सकते थे। अुन्होंने अैसा किया होता तो और किसीको नहीं, लेकिन मुझे अुनके रवैयेसे जरा भी बुरा न लगता; और कितने ही युगोंसे हिन्दू समाजसे बहिष्कृत हुअे अिन लोगोंको जो तकलीफ़ें अुठानी पड़ी हैं, अुनके लिअे मेरी जान तो बिलकुल नाम-मात्रकी कीमत होगी। परन्तु अुन्होंने अधिक अूँचा मार्ग पसंद किया और अैसा करके सब धर्मोंमें सिखाये हुअे क्षमाके सिद्धान्तका अनुसरण किया। मैं आशा रखता हूँ कि

सवर्ण हिन्दू अिस क्षमाके लायक साबित होंगे और समझौतेकी हरअेक कलमका और अुससे फलित होनेवाली तमाम बातोंके शब्दका और अुसी तरह भावका अमल करेंगे ।

यह चीज़ जरा भी पीछे हटे बिना हाथमें न ली जाय और मर्यादित समयमें पूरी न की जाय, तो अभी छोड़ा हुआ अुपवास फिरसे करनेकी मेरी प्रतिज्ञा अुसमें निहित है । यह चेतावनी मैं साथी सुधारकोंको और आम तौर पर सभी सवर्ण हिन्दुओंको न दूँ, तो विश्वासघात करनेका दोषी बनूँ । मुझे तो मियाद मुकर्रर करनेका खयाल आया था, परन्तु मुझे लगता है कि भीतरसे निश्चित आदेश मिले बिना मैं अैसा न करूँ । मुक्तिका संदेश हरअेक "अछूत" घरमें पहुँचना चाहिये । यह तभी हो सकता है जब सुधारक गाँव-गाँव पहुँच जायँ । अुत्साहके ज्वारमें और दुबारा वेदनासे मुझे बचा लेनेकी अत्यधिक अिच्छाके कारण कोअी जब्र न होना चाहिये । अज्ञानी और वहमी लोगोंको हमें धीरजके साथ मेहनत करके और खुद कष्ट अुठाकर समझाना है, जबरदस्तीसे अुन्हें मजबूर करनेकी कोशिश कभी नहीं करनी है ।

मैं चाहता हूँ कि यह जो करीब-करीब आदर्श निपटारा हुआ है, अुसका अनुसरण दूसरी जातियाँ भी करेंगी और परस्पर विश्वास, लेन-देन और तमाम जातियोंकी बुनियादी अेकताके नवयुगका प्रभात हम सत्वर देख पायेंगे ।

यहाँ मैं अकेले हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख प्रश्नका ही ज़िक्र करूँगा । मैं १९२०-२२ में मुसलमानोंके प्रति जैसा था वैसा ही आज भी हूँ । दोनों जातियोंके बीच हृदयकी अेकता और स्थायी शान्तिके लिअे दिल्लीमें जैसे मैं अपनी जान जोखिममें डालनेको तैयार हुआ था, वैसे ही आज भी तैयार हूँ । अिस समय आअी हुअी बाढ़के कारण अिस दिशामें अपने आप प्रयत्न होंगे अैसी मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ । अैसा हो तो और जातियाँ भी बहुत समय तक अलग नहीं रह सकेंगी ।

अंतमें मैं सरकारका, जेलके अधिकारियोंका और मेरी देखभालके लिअे सरकार द्वारा नियुक्त डॉक्टरोंका आभार मानता हूँ । मेरी चिन्ता करने और सँभाल रखनेमें कोअी कसर नहीं रखी गअी । करने जैसा कुछ भी बाकी नहीं रखा गया । जेलके कर्मचारियोंको तिहरे दबावके नीचे काम करना पड़ा है; और मैंने देखा है कि जो परिश्रम अुन्हें करना पड़ा, अुसके लिअे अुन्होंने कोअी कोताही नहीं की । मैं छोटे-बड़े सबका आभार मानता हूँ ।

अिस समझौते पर जल्दी निर्णय करनेके लिअे मैं ब्रिटिश मंत्रि-मंडलका आभार मानता हूँ । अुनके निर्णयकी जो शर्तें मुझे भेजी गअी हैं, अुनके बारेमें

मेरे दिलमें अंदेशा नहीं रहा हो सो बात नहीं। अुन्होंने स्वाभाविक रूपमें ही समझौतेके जिस भागका ब्रिटिश मंत्रि-मंडलके साम्प्रदायिक निर्णयके साथ वास्ता है अुतना ही स्वीकार किया है। मैं समझता हूँ कि सारे समझौतेको खुली मंजूरी देनेमें अुन्हें वैधानिक कठिनाअी होगी।

परंतु हरिजन मित्रोंको — अबसे मैं अुनके लिअे यही शब्द काममें लेना पसंद करूँगा — मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि अपने तर्अी तो मैं अिस सारे समझौतेके साथ बँधा हुआ हूँ और अुसके ठीक-ठीक पालनके लिअे मेरी जिन्दगी वे गिरवी समझें। हाँ, हम सब अपनी स्वेच्छासे किसी दूसरे और ज्यादा अच्छे समझौते पर आ जायें, तो दूसरी बात है।

परिशिष्ट ३

हिन्दू धर्मकी कसौटी

गांधीजीको अस्पृश्यता-निवारणके कामके लिअे चिट्ठी-पत्री लिखने, कार्यकर्ताओं और अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे मुलाकातें करने और बयान जारी करनेकी छूट देनेके बाद अुन्होंने जो बयान प्रकाशित किये और मुलाकातें दीं, वे अिस परिशिष्टमें दी गअी हैं।

१

हिन्दू समाजकी कसौटी*

अुपवास छोड़नेके बाद अस्पृश्यताके सवालकी चर्चा करनेका मेरा पूरी तरह अिरादा था, परन्तु यह बात मेरे हाथकी न होनेसे मैं अैसा नहीं कर सका। अब सरकारने मुझे अिस कामके सम्बन्धमें खुला प्रचारकार्य करनेकी अिजाज़त दे दी है। अिसलिअे जो बहुतसे भाअी-बहन यरवदा करारकी आलोचना करने या मुझसे मार्गदर्शन चाहने या अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें खड़े होनेवाले विविध प्रश्नोंके बारेमें मेरे विचार जाननेके लिअे मुझे पत्र लिख रहे हैं, अुन्हें मैं जवाब दे सकूँगा। अिस प्रास्ताविक लेखमें मैं सिर्फ़ मुख्य प्रश्नोंकी ही चर्चा करना चाहता हूँ; जिन सवालोंके तात्कालिक हलकी ज़रूरत नहीं, अुन्हें अभी मुलतवी रखता हूँ।

अन्तर्यामीकी प्रेरणा

पहला सवाल यह है: क्या यह सम्भव है कि मैं फिर अुपवास करूँ? कितने ही पत्रलेखक कहते हैं कि मेरे अुपवासमें बलात्कारकी गंध है, अिसलिअे वह बिलकुल ही नहीं करना चाहिये था, और अिसलिअे वह फिरसे तो किया

---

* पहला बयान, ता० ४–११–१९३२

ही नहीं जा सकता। कुछ लोगों ने यह दलील दी है कि मेरे अुपवासके लिअे हिन्दू धर्ममें या और किसी धर्ममें जरा भी स्थान नहीं है। अिस सवालके धार्मिक पहलूकी चर्चा करनेकी मेरी अिच्छा नहीं है। अितना ही कहना बस है कि पिछला अुपवास मैंने अन्तर्यामीकी प्रेरणासे किया था और फिर कभी करूँगा, तो जब अुसकी प्रेरणा होगी तभी करूँगा। लेकिन पहले पहल जब मैंने अिसकी प्रतिज्ञा की थी, तब अिसका अुद्देश्य अस्पृश्यताको जड़से अुखाड़ना था, अिसमें शक नहीं। अुसने अैसा रूप पकड़ा यह कोअी मेरी पसन्दकी बात नहीं थी। मंत्रि-मंडलके निर्णयने अेकाअेक जल्दी ही मेरे जीवनमें यह अैन मौका ला दिया; यद्यपि मैं जानता था कि ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलका निर्णय वापस लिवाना अिस यज्ञकी पूर्णाहुति नहीं थी, बल्कि अुसका आरम्भ था। अगर अितनी प्रचण्ड शक्तिके पीछे अैसा कोअी अति गूढ़ मर्म न हो, जो अुसके संचालकोंको भी अज्ञात हो, तो केवल अेक राजनैतिक निर्णयको बदलवानेके लिअे अैसी शक्ति काममें नहीं ली जा सकती। जिन लोगोंका अिसके साथ सम्बन्ध था, अुन्होंने स्वयंस्फूर्तिसे अिस मर्मको पहचान लिया और अुसका जवाब दिया।

अुपवासका अुद्देश्य

जहाँ तक आज कलके जीवित मनुष्योंकी स्मृति पहुँचती है वहाँ तकके समयकी बात करें, तो हिन्दुस्तानके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक शायद किसीने न किये हों अुतने सफ़र मैंने किये हैं। कितने ही गाँवोंमें मैं गया हूँ और करोड़ों मनुष्योंके समागममें आया हूँ। अुन सबने मेरा जीवन देखा है। अुन्होंने देखा है कि मैंने 'छूत' 'अछूत' के बीच या जाति-जातिके बीच कोअी भेद नहीं माना है। अुन्होंने मुझे अकसर अुनकी अपनी भाषामें बोलते, अस्पृश्यताकी कड़ी निंदा करते, और अुसे शापके रूपमें और हिन्दू धर्मके कलंकके रूपमें वर्णन करते हुअे सुना है। कुछ विरले अपवादोंके सिवाय हिन्दुस्तानके तमाम हिस्सोंमें अैसी सार्वजनिक या खानगी सभाओंमें अस्पृश्यताके विरुद्ध रखे गये मेरे विचारोंका कोअी विरोध नहीं किया गया। विशाल जन-समूहोंने अस्पृश्यताकी निंदा करनेवाले और अपने यहाँकी अस्पृश्यता दूर करनेकी प्रतिज्ञा करनेवाले प्रस्ताव पास किये हैं। अुन्होंने अनेक अवसरों पर अीश्वरको अपनी प्रतिज्ञाओंका साक्षी रखा है और अीश्वरसे आशीर्वाद माँगे हैं कि वह अुन्हें अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेका बल दे।

मेरा अुपवास अुन करोड़ोंके खिलाफ था। अुनके प्रेमके ज्वारने पाँच दिनमें परिवर्तन कर दिखाया और यरवदा-करार अस्तित्वमें आया। अब अगर वे अिस समझौतेका पूरी तरह पालन नहीं करेंगे, तो अुनके विरुद्ध नया

अुपवास किया जायगा। अब सरकार अिसमें से लगभग निकल गअी है। अुसने तो अिस समझौतेके जिस भागसे अुसका सम्बन्ध था, अुस पर जल्दी ही अमल किया है। यरवदा-समझौतेका बड़ा हिस्सा तो अुन करोड़ोंको, मेरी अूपर बताअी हुअी सभाओंमें समूहके समूह आनेवाले कथित सवर्ण हिन्दुओंको पूरा करना है। अुन्हें दलित भाअी-बहनोंको अपने ही भाअियोंकी तरह अपनाना है, और अपने मन्दिरोंमें, घरोंमें, स्कूलोंमें अुनका स्वागत करना है। देहातके अंत्यजोंमें अैसी भावना पैदा करनी चाहिये कि वे अब दूसरे ग्रामवासियोंसे जरा भी घटिया नहीं हैं। जिस भगवानको और लोग भजते हैं, अुसीको वे भी भज सकते हैं; और जो हक़-सुविधाअें दूसरे भोगते हैं, वे सभी अुन्हें भी भोगनेका अधिकार है। लेकिन अगर सवर्ण हिन्दू समझौतेकी प्राण-स्वरूप अिन शर्तोंका पालन नहीं करेंगे, तो क्या मुझसे अीश्वर और मनुष्यको मुँह दिखानेके लिअे जिन्दा रहा जायगा! मैंने तो डॉ० आम्बेडकर, राव बहादुर राजा और दूसरे दलित वर्गके मित्रोंसे भी यह कहनेकी हिम्मत की है कि समझौतेकी शर्तोंका सवर्ण हिन्दुओंके हाथों पालन करानेके लिअे आप मेरी जिन्दगीको जमानत मानिये।

अब अगर अुपवास करना पड़ेगा, तो वह अिस सुधारके विरोधियोंको दबानेके लिअे नहीं होगा, परन्तु मेरे जो साथी बने हैं और जिन्होंने अस्पृश्यता-निवारणकी प्रतिज्ञा ली है, अुन्हें सतेज करके कर्तव्यपरायण बनानेके लिअे होगा। अगर वे अपनी प्रतिज्ञाओंके प्रति बेवफा साबित हों या अपनी प्रतिज्ञाओंका पालन करनेका अुनका कभी अिरादा ही न हो, और अुनका हिन्दू धर्म महज़ हँसी-खेल हो, तो मुझे जीनेमें कोअी रस ही नहीं रहेगा। अिसलिअे सुधारके विरोधियों पर मेरे अुपवासका कोअी असर न होना चाहिये; या जिन साथियों तथा करोड़ों आदमियोंने मेरे मनमें यह खयाल पैदा किया था कि वे अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें मेरे और कांग्रेसके साथ हैं, परन्तु जो बादमें अिस नतीजे पर पहुँचे हों कि अस्पृश्यता अीश्वर और मानव-जातिके प्रति अपराध नहीं है, अुन पर भी मेरे अुपवासका कोअी असर न होना चाहिये।

मेरी राय यह है कि अपनी और अुसी तरह दूसरोंकी भी शुद्धिके लिअे अुपवास करना युगों पुरानी प्रथा है; और जब तक मनुष्य अीश्वरके बारेमें आस्था रखता है, तब तक यह प्रथा जारी रहेगी। वह आर्तहृदयकी परमात्माके प्रति प्रार्थना है। परन्तु मेरी दलीलोंमें समझदारी हो या बेवकूफी, जब तक मैं अपने रवैयेमें बेवकूफी या भूल नहीं पाता, तब तक मुझे अिससे डिगाया नहीं जा सकता। अगर अन्तरात्माकी आज्ञा होगी तो ही, और यरवदा-समझौतेकी शर्तोंका पालन करनेकी सवर्ण हिन्दुओंकी अक्षम्य लापरवाहीके कारण यह समझौता

टूटता जान पड़ेगा तो ही, मुझे फिरसे अुपवास करना पड़ेगा। अैसी लापरवाही हिन्दू धर्मका द्रोह है। अिसका साक्षी बननेके लिअे जीते रहनेकी मेरी अिच्छा नहीं है।

यह संभव है कि कुछ समय बाद केरल देशमें गुरुवायुरके मन्दिरको खुलवानेके सम्बंधमें अेक और अुपवास करना पड़े। मेरी जोरदार प्रार्थना पर श्री केलप्पनने अपना अुपवास तीन महीनेके लिअे मुल्तवी किया है। अिस अुपवाससे वे लगभग मौतके द्वार पर पहुँच गये थे। अब अगर अिस मंदिरमें जनवरीकी पहली तारीख तक या अुससे पहले हरिजनोंको 'स्पृश्य' हिन्दुओंके बराबर ही छूटसे प्रवेश न मिला और श्री केलप्पनको फिर अुपवास करना पड़ा, तो मैं अुनके साथ अुपवास करनेके लिअे वचनबद्ध हूँ। अिन संभावित अुपवासोंकी अितनी लम्बी चर्चा मुझे अिसलिअे करनी पड़ी है कि मुझे दो-तीन जगहोंसे क्रोधभरे पत्र मिले हैं। जो संभावित घटना हमें अच्छी न लगती हो अुसके बारेमें घबराहटमें पड़ जानेका नतीजा यह होता है कि अकसर वह घटना सचमुच हो जाती है। अुसे टालनेका अुत्तम अुपाय यह है कि अुसके साथ सम्बन्ध रखनेवाले सभी व्यक्ति अपनी सारी शक्ति अुस काममें लगा दें, जिससे वह घटना असंभव हो जाय।

स्वतंत्र सुधार

कितने ही पत्रलेखक पूछते हैं कि क्या वर्णान्तर-भोजन और वर्णान्तर-विवाह भी अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनके अंग हैं? मेरी रायमें नहीं हैं। यह बात जितनी हरिजनोंको अुतनी ही सवर्णोंको भी लागू होती है। अिसलिअे अस्पृश्यता-निवारणका काम करनेवाले स्त्री या पुरुष वर्णान्तर-भोजन और वर्णान्तर-विवाहके सुधार-कार्यमें पड़नेके लिअे बँधे हुअे नहीं हैं। मेरी अपनी राय यह है कि यह सुधार हमारी अपेक्षासे जल्दी हो रहा है। वर्णान्तर रोटी-बेटी व्यवहारका प्रतिबंध हिन्दू धर्मका अंग नहीं है। यह अेक सामाजिक रूढ़ि है। जब हिन्दू धर्मकी गिरी हुअी हालत होगी, तब शायद यह घुस गअी होगी और हिन्दू समाजके छिन्न-भिन्न हो जानेके डरके विरुद्ध कामचलाअू संरक्षण देना अिसका अुद्देश्य होगा। आज ये दोनों प्रतिबंध हिन्दू समाजको निर्बल बना रहे हैं और अिन पर जोर देनेके कारण जनसमूहका मानस जीवनके विकासके लिअे अति आवश्यक मूल तत्त्वोंसे चिपटे रहनेके बजाय अुल्टे रास्ते चला गया है। अिसलिअे जहाँ जहाँ 'छूत' और 'अछूत' तथा हिन्दुओं और दूसरे धर्मवालोंके संयुक्त भोजनोंमें लोग स्वेच्छासे भाग लेते हैं, वहाँ वहाँ मैं अुसे शुभ चिन्ह मानकर अुसका स्वागत करता हूँ। परंतु ये सुधार स्वतंत्र रूपमें कितने ही अिष्ट हों, फिर भी अस्पृश्यता-निवारणका लम्बे समयसे जो राष्ट्रव्यापी सुधार करना रह गया

है, अुसमें अिन्हें मिला देनेका मैं स्वप्नमें भी विचार नहीं करूँगा। अस्पृश्यताको जिस रूपमें हम सब जानते हैं, वह हिन्दू धर्मके मर्मस्थलोंको कुतर कर खा जानेवाला कीड़ा है, जबकि भोजन और विवाहके प्रतिबंध हिन्दू समाजके विकासमें रुकावट डालनेवाली बाधाअें हैं। मैं मानता हूँ कि यह भेद मौलिक है। अैसे आँधी जैसे आन्दोलनमें मुख्य प्रश्न पर हदसे ज्यादा बोझा डाल कर अुसे जोखिममें डालना समझदारी नहीं है; और जनसमूहको अब तक अस्पृश्यता-निवारणका जो स्वरूप समझाया गया है, अुससे अेकाअेक अब दूसरा ही स्वरूप बताया जाय, तो वह जनसमूहके साथ विश्वासघात भी होगा। अिसलिअे जहाँ लोग खुद ही वर्णान्तर-भोजनके लिअे तैयार हों वहाँ वह भले ही हो, परन्तु अिसे राष्ट्रव्यापी आन्दोलनका अंग नहीं बनाना चाहिये।

सनातनी कौन ?

अपनेको सनातनी कहनेवाले कुछ सज्जनोंकी तरफसे मुझे पत्र मिले हैं। कुछने अुनमें अपना रोष दिखाया है। अुनके खयालसे अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका आवश्यक अंग है। अुनमें से कुछ मुझे धर्मभ्रष्ट हुआ मानते हैं और कुछ यह मानते हैं कि अस्पृश्यता-विरोधी और अैसे दूसरे विचार मैंने अिसाअी धर्म और अिस्लामसे लिये हैं। दूसरे कुछ लोग अस्पृश्यताके समर्थनमें शास्त्रोंके वचन अुद्धृत करते हैं। अुन्हें मैंने अिस लेखके द्वारा जवाब देनेका वचन दिया है। अिसलिअे मैं अिन पत्रलेखकोंसे कहना चाहता हूँ कि मैं खुद सनातनी होनेका दावा करता हूँ। 'सनातनी'की अुनकी व्याख्या मेरी व्याख्यासे भिन्न है। मेरे खयालसे सनातन धर्म अैतिहासिक कालसे भी पहलेकी पीढ़ियोंसे विरासतमें आया हुआ और वेद तथा अुसके बादके ग्रन्थों पर रचा हुआ प्राणवान धर्म है। मेरे विचारसे वेद अीश्वर और हिन्दू धर्मके समान ही अव्याख्येय हैं। छपे हुअे चार ग्रंथोंको ही वेद कहना अर्ध-सत्य है। ये ग्रंथ तो अज्ञात द्रष्टाओंके प्रवचनोंके अवशेष मात्र हैं। बादके आदमियोंने अिस मूल पूँजीमें अपने ज्ञानके अनुसार वृद्धि की है।

बादमें अेक 'विशाल बुद्धि' पुरुष — गीताका प्रणेता पैदा हुआ। अुसने हिन्दू समाजको गहरे तत्त्वज्ञानसे भरा हुआ, लेकिन मुग्ध जिज्ञासुओंके सहज ही समझमें आने लायक हिन्दू धर्मका दोहन दे दिया। हिन्दू धर्मका अध्ययन करनेकी अिच्छा रखनेवाले हर हिन्दूके लिअे यह अेकमात्र सुलभ ग्रंथ है। और दूसरे सब धर्मशास्त्र जलकर खाक हो जायँ, तो भी अिस अमर ग्रंथके सात सौ श्लोक यह बतानेके लिअे काफी हैं कि हिन्दू धर्म क्या है और अुसे जीवनमें कैसे परिणत किया जाय। मैं सनातनी होनेका दावा करता हूँ, क्योंकि चालीस सालसे अिस ग्रंथके अुपदेशोंको अक्षरशः जीवनमें चरितार्थ करनेकी मैं

कोशिश करता रहा हूँ। गीताके मुख्य सिद्धान्तोंके विरुद्ध जो भी हो, अुसे मैं हिन्दू धर्मके विरुद्ध मानकर अस्वीकार करता हूँ। गीतामें किसी भी धर्म या धर्मगुरुसे द्वेष नहीं है। मुझे यह कहते अत्यंत आनंद होता है कि जितना पूज्यभाव मैंने गीताके बारेमें रखा है, अुतने ही पूज्यभावसे मैंने बाअिबल, कुरान, ज़न्द-अवस्ता और दुनियाके दूसरे धर्मग्रंथ पढ़े हैं। अिस वाचनने गीता संबंधी मेरी श्रद्धाको दृढ़ किया है। अिससे मेरी दृष्टि और मेरा हिन्दू धर्म विशाल बना है। जरथुस्त, अीसा और मुहम्मदके जीवनचरित्र जैसे मैंने समझे हैं, अुनसे गीताके बहुतसे वचनों पर प्रकाश पड़ा है। अिसलिअे अिन सनातनी मित्रोंने मुझे जो ताना मारा है, वह मेरे लिअे तो आश्वासनका कारण बन गया है। मैं अपनेको हिन्दू कहनेमें गौरव समझता हूँ, क्योंकि मेरे खयालसे यह शब्द अितना विशाल है कि वह पृथ्वीकी चारों दिशाओंके पैगम्बरोंके अुपदेशोंके प्रति सहिष्णुता रखता है; अितना ही नहीं, बल्कि अुन्हें आत्मसात् कर सकता है। मैं नहीं देखता कि अिस जीवन-संहितामें कहीं भी अस्पृश्यताके लिअे स्थान हो सकता है। बल्कि अिसके विपरीत चुम्बककी तरह चित्ताकर्षक वाणीमें वह मेरी बुद्धिको स्पर्श करके और अिससे भी अधिक गहरा मेरे हृदयको स्पर्श करके मेरे मनमें यह आस्था पैदा करती है कि प्राणीमात्र अेकरूप हैं और सब अीश्वरसे पैदा हुअे हैं और अुसीमें विलीन हो जानेवाले है। भगवती गीतामाताके सिखाये हुअे सनातन धर्मके अनुसार जीवनकी सफलता बाह्य आचार और कर्मकाण्डमें नहीं, परंतु सम्पूर्ण चित्तशुद्धिमें और शरीर, मन और आत्मा सहित समस्त व्यक्तित्वको परब्रह्मके साथ अेकाकार कर देनेमें है। गीताके अिस संदेशको अपने जीवनमें ओतप्रोत करके मैं करोड़ोंके जनसमूहके पास गया हूँ। मुझे विश्वास है कि अुन्होंने मेरी बात सुनी है, तो वह मेरे किसी राजनैतिक सयानेपनके कारण या मेरी भाषाकी छटाके कारण नहीं, बल्कि मुझे हृदयसे अपना और अपने धर्मका आदमी मानकर सुनी है। और समय बीतनेके साथ-साथ मेरी यह श्रद्धा अधिकाधिक दृढ़ होती गअी है कि मैं सनातनधर्मी होनेका दावा करूँ तो वह गलत नहीं है; और अीश्वरकी अिच्छा होगी, तो वह मुझे अिस दावे पर अपनी मृत्युकी मुहर लगाने देगा।

२

पापका प्रक्षालन*

अुपकार नहीं, प्रायश्चित्त

अेक भाअी शिक्षित होने पर भी सूचना देते हैं कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंकी पंक्तिमें रखा जाय, अिससे पहले अुन्हें अैसे स्वागतके लायक बनना चाहिये, अपनी गंदी आदतें छोड़नी चाहियें और मुर्दार मांस खाना छोड़ देना चाहिये। अेक दूसरे भाअी तो यहाँ तक कहते हैं कि भंगी और चमारोंको वे धंधे, जिन्हें ये भाअी 'गंदे काम' समझते हैं, छोड़ देने चाहियें। ये आलोचक भूल जाते हैं कि हरिजनोंमें जो भी कुटेवें पाअी जाती हैं, अुनके लिअे सवर्ण हिन्दू ही जिम्मेदार हैं। अूँचे माने जानेवाले वर्णोंने अुनकी साफ रहनेकी सुविधाअें छीन ही नहीं ली हैं, बल्कि अुनकी सफ़ाअीकी वृत्तिको ही मार डाला है। भंगी और चमारके धंधे तो मैं बताअूँ अुन कअी धंधोंसे जरा भी गंदे नहीं हैं। यह बात मंजूर है कि ये धंधे और कअी धंधोंकी तरह गंदे ढंगसे किये जाते हैं। अिसका कारण भी 'अुच्च वर्णों' की अुद्धततापूर्ण लापरवाही और अक्षम्य अुपेक्षा ही है। मैं अपने अनुभवसे कह सकता हूँ कि भंगी और चमार दोनोंका काम पूरी तरह निरोगी और स्वच्छ तरीकेसे किया जा सकता है। हरअेक माता अपने बच्चोंके संबंधमें भंगी है, और आधुनिक वैद्यकका हरअेक विद्यार्थी चमार है; क्योंकि अुसे मनुष्यके शव चीरने पड़ते हैं और अुनकी चमड़ी अुतारनी पड़ती है। परन्तु अुनके धंधोंको हम पवित्र मानते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि साधारण भंगी और चमारके धंधे माता और डॉक्टरोंके धंधेसे जरा भी कम पवित्र या कम अुपयोगी नहीं हैं। सवर्ण हिन्दू अगर अपनेको हरिजनों पर अुपकार करनेवाले आश्रयदाता मानेंगे, तो हम बड़ी भूल करेंगे। अभी तो सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिअे जो कुछ करेंगे, वह हरिजनोंके प्रति पीढ़ियोंसे किये जानेवाले अन्यायोंका, देरसे ही सही, प्रायश्चित्त ही होगा। आज हरिजन जैसे हैं वैसे ही अुन्हें अपनाना चाहिये। अैसी स्थितिमें अुन्हें अपनाना पड़ता है, यह हमारे पिछले अपराधकी सजा है, और हम अिस सजाके लायक हैं। मगर अिसमें अितना संतोष ज़रूर है कि हम खुले दिलसे अुनका स्वागत करेंगे, तो अिसीसे अुनमें स्वच्छ होनेकी अिच्छा पैदा होगी और

* दूसरा बयान, ता० ५-११-१९३२

सवर्ण हिन्दू अपनी ही सुख-सुविधाकी खातिर हरिजनोंके साफ़ रहनेका बन्दोबस्त कर देंगे।

घोर अन्याय

हरिजनों पर हमने कैसे-कैसे अन्याय किये हैं, अिसका हमें खयाल रहे तो अच्छा है। सामाजिक दृष्टिसे वे कोढ़ी हैं। आर्थिक दृष्टिसे वे गुलामोंसे भी बदतर हैं। धार्मिक दृष्टिसे अुन्हें अुन स्थानोंमें, जिन्हें हम 'देव-मन्दिरों' के गलत नामसे जानते हैं, घुसनेकी मनाही है। अुन्हें सवर्ण हिन्दुओंके बराबर ही आज़ादीके साथ आम रास्तों, सार्वजनिक पाठशालाओं, सार्वजनिक अस्पतालों, सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक नलों, सार्वजनिक बाग-बगीचों और अैसी अन्य जगहोंका अिस्तेमाल करनेकी मनाही है। कितने ही स्थानों पर तो वे अेक खास दूरीसे नजदीक आवें, यह सामाजिक अपराध माना जाता है; और कहीं-कहीं तो, नहीं काफ़ी जगहों पर, अुनके दर्शनमात्रसे ही मनुष्य अपवित्र हो जाते हैं! अुन्हें रहनेके लिअे शहरों और गाँवोंके खराबसे खराब हिस्से दिये जाते हैं और वहाँ लगभग किसी भी तरहकी सामाजिक सुविधाअें नहीं होतीं। सवर्ण हिन्दू वकील और डॉक्टर समाजके दूसरे मनुष्योंकी जैसी सेवा करते हैं वैसी अुनकी नहीं करते। ब्राह्मण अुनके यहाँ धार्मिक विधियाँ नहीं करते। वे किसी-न-किसी तरह गुजर चला लेते हैं या अब तक हिन्दू धर्ममें रहे हैं, यही आश्चर्यकी बात है। वे अितने दब गये हैं कि जालिमोंके खिलाफ़ बलवा करनेकी भी ताकत अुनमें नहीं रही। ये दुःखद और शर्मभरी हकीकतें मैंने अिसलिअे याद दिलाअी हैं कि कार्यकर्ताओंके सामने यरवदा-करारकी शर्तोंके गर्भित अर्थका हूबहू चित्र खड़ा हो। सतत अविश्रांत प्रयत्नसे ही अिन दलित लोगोंका पतित दशासे अुद्धार हो सकेगा, हिन्दू धर्म शुद्ध हो सकेगा और समस्त हिन्दू समाजका और अुसके साथ सारे हिन्दुस्तानका अुद्धार किया जा सकेगा।

मुक्तिका संदेश

अिन अन्यायोंकी गिनती मात्रसे हम भड़क न जायँ। अनशन सप्ताहका दृश्य अगर सवर्ण हिन्दुओंके पश्चात्तापका सच्चा प्रदर्शन हो, तो सब कुछ ठीक हो जायगा और हरअेक हरिजन स्वतंत्रताका प्रकाश अनुभव करेगा। मगर अिस अत्यंत अिष्ट परिणामके आनेसे पहले आज़ादीका सन्देश दूरसे दूरके गाँवोंमें भी पहुँचाना पड़ेगा। सचमुच गाँवोंका काम शहरोंसे बहुत ज्यादा कठिन है; क्योंकि शहरोंमें तो लोकमत अेकदम संगठित किया जा सकता है। अब अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघ कायम हुआ है, अिसलिअे कार्यकर्ताओंको अिस संघके साथ मेल रखकर काम करना चाहिये। यहाँ मैं डॉ॰ आम्बेडकरकी मुझसे कही गअी बात याद करना चाहता हूँ। अुन्होंने मुझसे कहा था,

“पुरानी पद्धतिमें सुधारक यह दावा करते थे कि वे दलितोंकी ज़रूरतें दलितोंसे ज्यादा समझते हैं। अैसा फिर नहीं होना चाहिये। अिसलिअे आप अपने कार्यकर्ताओंसे कहिये कि वे हरिजनोंके प्रतिनिधियोंसे जान लें कि अुनकी पहली ज़रूरत क्या है और अुन्हें किस तरह संतोष हो सकता है। संयुक्त भोजन प्रदर्शनके लिअे अच्छे हैं, मगर अिसमें अतिशयता होना संभव है। अिसमें दयाकी गंध है। मैं स्वयं अिनमें जाना नहीं चाहता। अधिक अिज्ज़तकी बात तो यह है कि बिना किसी धांधलीके हमें सामाजिक सम्मेलनोंमें बुलाया जाय। यद्यपि मन्दिर-प्रवेश अच्छा और ज़रूरी है, मगर वह रुक सकता है। तात्कालिक ज़रूरत तो आर्थिक स्थिति सुधारने और रोजमर्राके व्यवहारमें सभ्य बर्ताव रखनेकी है।” अुन्होंने अपने कड़वे अनुभवोंसे जो दुःखद घटनाअें बयान कीं, वे यहाँ बतानेकी मुझे ज़रूरत नहीं है। अुनकी बातें मुझे अचूक मालूम हुअीं और पाठकोंको भी मालूम होंगी, अैसी मुझे आशा है।

सुधारक क्या करें?

सुधारक क्या करें, अिस विषयमें मेरे पास बहुतसी सूचनाअें आअी हैं। अेक सूचना, जो स्वामी श्रद्धानन्दजी कअी बार देते थे, यह है कि हर हिंदूको अपने घरमें अेक हरिजन रखना चाहिये और अुसे सब तरहसे कुटुम्बीजनकी तरह मानना चाहिये। दूसरी सूचना करनेवाले मित्र हिंदू तो नहीं हैं, परन्तु हिंदुस्तानके कल्याणमें गहरी दिलचस्पी रखते हैं। वे कहते हैं कि हर धनवान हिंदूको अेक हरिजन युवक या युवतीको, हो सके तो अपनी देखरेखमें, अुच्च शिक्षा देनी चाहिये, ताकि शिक्षा पूरी करनेके बाद वह अपने हरिजन भाअी-बहनोंके अुद्धारके लिअे काम करे। ये दोनों सूचनाअें विचार करने लायक और अमलमें लाने योग्य हैं। जिनके पास अमल करने जैसी अुपयोगी सूचनाअें हों, अुन्हें अपनी सूचनाअें नव स्थापित संघको भेज देनेकी सूचना देता हूँ। पत्रलेखकोंको मेरी मर्यादाअें समझनी चाहियें। जेलमें रहते हुअे तो मैं संघ और जनताको सिर्फ सलाह ही दे सकता हूँ। योजनाओंके व्यावहारिक अमलमें मैं कोअी भाग नहीं ले सकता। अुन्हें यह भी समझना चाहिये कि मेरी राय अधूरी हकीकतों पर और कअी बार परोक्ष रूपमें मिली हुअी खबरों पर बनी हुअी होगी। नअी हकीकतें मालूम होने पर अुसमें फेरबदल होनेकी संभावना रहती है और अिसीलिअे अुसे स्वीकार करनेमें सावधानी रखनी पड़ती है।

ऋणमुक्ति

यद्यपि यह भूतकालकी बात है, फिर भी अेक पत्रलेखकने जो अेतराज अुठाया है और जिसका हल्का-सा आभास अखबारोंमें भी हुआ है, अुसके बारेमें

दो शब्द लिखना चाहता हूँ। समझौतेके राजनैतिक भागके बारेमें वे पूछते हैं: ‘अिससे आपको क्या लाभ हुआ? हरिजनोंको अिसमें प्रधानमंत्रीके दिये हुअेसे बहुत ज्यादा मिल गया।’ मेरा जवाब यह है कि दरअसल यही लाभ है। सरकारी निर्णयके विरुद्ध मेरा अेतराज यह था कि अुसने रोटीके बदले पत्थर दे दिया था। अिस समझौतेने रोटीके टुकड़े दिये हैं। हिंदुओंके हिस्सेकी सारी बैठकें हरिजनोंको मिल गअी होतीं, तो डॉ० मुंजेके साथ मैं भी राज़ी होता। यह सवर्ण हिन्दुओं और हिन्दू धर्मके लिअे बड़े-से-बड़ा लाभ होता। मुझे जो चाहिये था और अब भी चाहिये, वह तो यह है कि हरिजन सवर्णोंमें और सवर्ण हरिजनोंमें अेकाकार हो जायँ। मेरी यह निश्चित राय है — और किसी भी नअी हकीकतके सामने आनेसे अिसमें कोअी फर्क पड़ना सम्भव नहीं है — कि दलितोंको ज़ालिम जितना ज्यादा देते हैं, अुतना ही अुन्हें अधिक लाभ होता है। लम्बे समयसे चढ़े हुअे कर्ज़में से वे अुस हद तक मुक्ति पाते हैं। सवर्ण हिन्दू अगर नम्रतापूर्वक पश्चात्तापकी धार्मिक और सच्ची भावनासे अिस सवालको हाथमें नहीं लेंगे, तो अनशन-सप्ताहमें जो भावना हिंदू समाजमें फैली थी, अुसके अनुसार समझौतेके बाकीके भागका पालन कभी नहीं होगा।

राजाओंको बधाअी

जिन राजाओंने अपने राज्यके मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिये हैं और दूसरी तरह अस्पृश्यताको अपने राज्यसे निर्वासित करनेकी घोषणा की है, अुन्हें मैं बधाअी देना चाहता हूँ। मैं कहता हूँ कि अैसा करके अुन्होंने अपनी तरफसे और प्रजाकी तरफसे कुछ न कुछ प्रायश्चित्त किया है। मुझे आशा है कि अिन राज्योंमें रहनेवाले हिंदू अिस घोषणापत्रकी शर्तों पर अमल करेंगे और हरिजनोंको अिस ढंगसे अपनायेंगे कि अुन्हें यह लगे ही नहीं कि वे कभी हिंदू समाजमें तिरस्कृत और बहिष्कृत थे।

सब धर्मोंकी अेकता

हम अिस करुण कांडके बहुत ही नज़दीक होनेके कारण यह नहीं देख सकते कि अस्पृश्यताका यह ज़हरीला कीड़ा अपनी मुकर्रर की हुअी मर्यादाको पार करके कितना आगे बढ़ गया है और सारे राष्ट्रवृक्षकी जड़को किस तरह चूस रहा है। अस्पृश्यताकी भावना वातावरणमें व्यापक हो गअी है। अिसलिअे अिस दीमकको यदि जड़से नष्ट कर दिया गया, तो मुझे विश्वास है कि हम बहुत ही थोड़े समयमें जाति-जाति और धर्म-धर्मके भेदभाव भूल जायँगे और मानने लगेंगे कि जैसे सब हिन्दू अेक और अखण्ड हैं, वैसे ही तमाम हिन्दू, मुसलमान,

सिक्ख, पारसी, यहूदी और अीसाअी अेक ही वृक्षकी शाखाअें हैं। सम्प्रदाय बहुत हैं, परन्तु धर्म तो अेक ही है। मैं चाहता हूँ कि अस्पृश्यताके खिलाफ चलनेवाली अिस लड़ाअीसे हम यह पाठ सीखें। अगर हम यह लड़ाअी धार्मिक भावना और अटल निश्चयके साथ चलायेंगे, तो यह पाठ सीख लेंगे।

३

वचन पालनका सवाल*

अचूक कसौटी

मन्दिर-प्रवेशके सवालको डॉ० आम्बेडकर जैसा तुच्छ समझते हैं, वैसा मैं नहीं समझता। मेरी रायमें यह अिस बातकी अचूक कसौटी है कि कट्टर हिन्दू मानसने युग-धर्मको पहचाना है या नहीं और वह हिन्दू धर्मके माथेसे अस्पृश्यताका काला टीका मिटा डालनेको तैयार है या नहीं। मुझे लगता है कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंके बराबर आज़ादीके साथ ही तमाम सार्वजनिक मन्दिरोंमें प्रवेश करने दिया जाय, तो अुसका जितना असर आम हिन्दू जनताके और हरिजनोंके मन पर पड़ेगा, अुतना और किसी चीज़का नहीं पड़ सकता। डॉ० आम्बेडकर अिस सम्बन्धमें अुदासीन हैं, यह मैं समझ सकता हूँ। मगर मैं हरिजनोंके थोड़ेसे संस्कारी मनुष्योंका विचार नहीं करता, बल्कि संस्कारविहीन मूक समुदायका विचार करता हूँ। चाहे जो भी हो, हिन्दू मन्दिरोंका आम लोगोंके जीवनमें बड़े महत्वका हाथ है। और मैं ठहरा सारी जिन्दगी अधिकसे अधिक अज्ञान और दलित लोगोंके साथ अेकता साधनेका प्रयत्न करनेवाला आदमी; अिसलिअे जब तक हिन्दू समाजके 'बहिष्कृतों' के लिअे तमाम मन्दिर नहीं खुल जाते, तब तक मुझे संतोष नहीं होगा।

मगर अिसका अर्थ यह नहीं कि हरिजनोंको जो दूसरी कठिनाअियाँ अुठानी पड़ती हैं, अुनकी मैं किसी भी तरह अुपेक्षा करता हूँ। अिस सम्बन्धकी मेरी भावना डॉ० आम्बेडकरके जैसी ही तीव्र है। मुझे सिर्फ यह लगता है कि अिस बुराअीकी जड़ अितनी गहरी पहुँच गअी है कि हमें अलग-अलग कठिना-

* डा० आंबेडकरने सार्वजनिक रूपमें जो यह कहा था कि मन्दिर-प्रवेश गांधीजीकी जिन्दगीको जोखिममें डालने जैसा महत्वका सवाल नहीं है, अिसके बारेमें और हिन्दू धर्मसे असंख्य स्त्री-पुरुष किस तरह चिपटे हुअे हैं अिसके बारेमें गांधीजीसे अेसोशियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिने जो सवाल पूछे थे अुनका जवाब।

अियोंके बीच चुनाव नहीं करना चाहिये, परन्तु सभीको अेक साथ हल करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अस्पृश्यता-निवारण संघके साथ मैं जो पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ, अुसका सार भी यही है। गुरुवायुरका सवाल अचानक मेरे सामने आ पड़ा है और मेरे पास कोअी दूसरा रास्ता ही नहीं रहा। श्री केलप्पन मेरी रायमें भारतवर्षके अच्छेसे अच्छे मूक सेवकोंमें से अेक हैं। अुन्हें कभी भी प्रतिष्ठित पद मिल सकता था। मलाबारके वे प्रसिद्ध लोकसेवक हैं। परन्तु वे जानबूझकर 'दूरित' और 'अस्पृश्य' लोगोंकी सेवामें कूद पड़े हैं। वाअीकोम सत्याग्रहके समय मुझे अुनके साथ काम करनेका आनंद और सम्मान प्राप्त हुआ था। अुसके पहले लम्बे समयसे और अुसके बादसे अुन्होंने दलित वर्गकी अुन्नतिमें अपना जीवन लगाया है। जनता जानती है कि लम्बे समय तक राह देखनेके बाद गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुलवानेके प्रयत्नमें अुन्होंने प्राणार्पण करनेका अटल निश्चय कर लिया था।

श्रद्धाकी वेदी पर

मगर मुझे अुनके अुपवासमें अेक त्रुटि जान पड़ी, जो मैंने अुन्हें तुरंत ही बता दी; और अुन्होंने अपनी विजय बिलकुल ही निकट दिखाअी देने पर भी अुदारतासे मेरी बात मान ली और हाथमें आअी हुअी विजय छोड़ दी, अपना कदम वापस ले लिया और अुपवास मुलतवी कर दिया। मैंने जब अुन्हें तार दिया, तब मैं वचनमें बँध गया कि अगर अुनका दिया हुआ तीन महीनेका नोटिस पूरा होने पर अुन्हें फिर अुपवास करना पड़े, तो मैं अुनके साथ अुपवास करूँगा।* अब अगर मैं अपनी बातसे फिर जाअूँ और

---

* यहाँ जिस त्रुटिका अुल्लेख है, अुसका स्पष्टीकरण गांधीजीके श्री केलप्पनको भेजे हुअे नीचेके दो तारों परसे हो जायगा:

यरवदा, २९ सितम्बर

"ज़ामोरिन मुझे तारसे कह रहे हैं कि मैं तुमसे कुछ महीनोंके लिअे अुपवास मुलतवी करनेकी प्रार्थना करूँ। वे कहते हैं कि अभी हरिजनोंको प्रवेश करने देनेसे पुराने विचारके लोगोंकी अन्तरात्मा दुखेगी और अिस तरह अुनका जी दुखाना बलात्कार होगा। तुम अपनी अन्तरात्मासे पूछ लो कि अिस प्रस्तुत कारणसे अुपवास मुलतवी रखनेकी गुंजाअिश तुम्हें है या नहीं? और ज़ामोरिनके तारकी दृष्टिसे अिस अंतिम कदमका तुमने नोटिस काफी समय पहले दिया था या नहीं?"

यरवदा, २ अक्तूबर

"तुम्हारा तार मिला। तात्कालिक परिणामोंकी जो आशा हो, अुसका निर्णय पर असर नहीं होना चाहिये। केवल धर्मकी दृष्टिसे मैं अपनी राय फिर बताता हूँ कि तुम्हें अुपवास मुलतवी करना चाहिये और मेरे तारमें बताये अनुसार नोटिस देना चाहिये। अीश्वर मदद करेगा, तो मैं अिस बोझेमें हिस्सा बटाअूँगा। सम्मतिका तार भेजो।"

केलप्पनका जो होना हो वह होने दूँ, तो हिन्दुस्तानके सेवकके नाते और अेक साथीके नाते नालायक ठहरता हूँ। मगर अिसमें अेक साथीकी जिन्दगी या मेरी अपनी साखसे बड़ी बात दूसरी भी है। हर आदमी मंजूर करता है कि हरिजनोंका सवाल अभी ही हल कर लेना चाहिये, नहीं तो कभी नहीं होगा — कमसे कम मौजूदा पीढ़ीके जीते जी या भविष्यकी अनेक पीढ़ियों तक तो वह हल होगा ही नहीं। अैसे हज़ारों स्त्री-पुरुष हैं जो हिन्दू धर्ममें सिर्फ अिसी कारण हैं कि अुनकी मान्यताके अनुसार हिन्दू धर्ममें मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकासके लिअे पूरी गुंजाअिश है। लगभग चार करोड़ मनुष्योंके विरुद्ध यह पापपूर्ण प्रतिबंध हिन्दू धर्मके अिस दावेके खिलाफ अेक स्थायी प्रदर्शन है। मेरे जैसे आदमी मानते हैं कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका अंग नहीं है। वह 'अतिरिक्त अंग' है। परन्तु यदि हालत अिससे अुलटी जान पड़े और यदि आम हिन्दू जनताका मानस सचमुच अस्पृश्यताको रखना चाहता हो, तो मेरे जैसे सुधारकोंके लिअे अपनी श्रद्धाकी वेदी पर आत्म-बलिदान देनेके सिवाय और कोअी रास्ता नहीं रह जाता।

अंतिम बलिदान

अैसा अुपवास आत्मघातमें शामिल है, यह ताना मैं धीरज और शान्तिसे सुन रहा हूँ। मैं अिसे आत्मघात नहीं मानता। अुल्टे, जब और सब कोशिशें बिलकुल बेकार साबित हो जायँ, तब गहरी धर्म-श्रद्धावाले मनुष्योंके लिअे अिस अंतिम बलिदानके सिवाय आत्माकी मुक्तिका कोअी और द्वार नहीं रह जाता। अिस-लिअे मेरी रायमें हिन्दू धर्मके लिअे मैंने जो दावा किया है, अुसकी यह कड़ी कसौटी है। और जो वचन मैंने गोलमेज परिषदमें कहे थे, वही यहाँ भी कहता हूँ कि अगर अस्पृश्यता जिन्दा रही, तो हिन्दू धर्म मर जायगा, और हिन्दू धर्मको जीना हो, तो अस्पृश्यताको मरना पड़ेगा। आज मैं हिम्मतके साथ कहता हूँ कि हिन्दुस्तानमें हज़ारों नहीं, तो सैकड़ों स्त्री-पुरुष अैसे हैं जो केलप्पन और मेरी तरह प्राणोंकी आहुति देकर यह सिद्ध करनेको तैयार हैं कि हिन्दू धर्म तंग चार-दीवारी या सम्प्रदाय नहीं, परन्तु जीता-जागता धर्म है, और कड़ीसे कड़ी अन्तरात्माको, गहरेसे गहरे विचारकको और पवित्रसे पवित्र मनुष्यको सतोष और शान्ति देनेमें समर्थ है।

४

साधनशुद्धि*

अेक सज्जनने, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूँ और जो अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे सहानुभूति रखते हुअे भी अुसके सारे कार्यक्रमसे सहमत नहीं हैं, मुझे हिन्दीमें अेक लम्बा पत्र लिखा है। अुसका सार नीचे देता हूँ:

"मुझे डर है कि देशके तमाम भागोंमें आन्दोलनकी मर्यादा नहीं रखी जाती। मुझे खबर मिली है कि कितनी ही जगहों पर अपनेको कार्यकर्ता कहनेवाले पुरानी प्रथाके अनुयायियोंको गालियाँ देने और पवित्र नामोंका अुपहास करने जैसे शंकास्पद साधन काममें लेते हैं। अगर कोअी आपके वचनोंका पृथक्करण करनेकी हिम्मत करता है या आन्दोलन — जो अतिशयताका रूप धारण कर रहा है — के विरुद्ध आपत्ति करता है, तो तुरंत अुसकी हँसी अुड़ाअी जाती है, धर्मद्रोही कहकर अुसकी निन्दा की जाती है और अिससे भी बुरे परिणामोंकी धमकी दी जाती है। अिन लोगोंको अंत्यजोंके आर्थिक या नैतिक कल्याणकी परवाह नहीं है। वे मानते हैं कि अठारह वर्णोंको अिकट्ठा खिलाने और ट्रस्टियोंकी अिच्छाकी परवाह न करके भी मन्दिरोंकी तरफ हरिजनोंकी भीड़को कूच कराकर ले जानेमें अुनके कर्तव्यकी अितिश्री हो जाती है। मुझे विश्वास है कि आपकी यह अिच्छा हरगिज़ न होगी कि यह आन्दोलन हरिजनोंकी जरा भी सेवा किये बिना सिर्फ पुराने विचारके लोगोंकी भावनाओंको ठेस पहुँचानेके अिरादेसे किये गये आडम्बरपूर्ण दिखावोंका रूप पकड़े।"

पिछले महीने मुझे अस्पृश्यताके बारेमें कोअी सौ पत्र मिले होंगे। अुनमेंसे कार्यकर्ताओंके हिंसक माने जानेवाले बर्तावके बारेमें शिकायतका यह पहला ही पत्र है। फिर भी और कुछ नहीं, तो लिखनेवाले सज्जनके प्रति आदरके कारण मैं यह पत्र कार्यकर्ताओंको चेतावनी देनेके लिअे प्रकाशित कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि ये सज्जन जानबूझकर अतिशयोक्ति हरगिज़ नहीं कर सकते। धर्मके मामलेमें — मैं तो कहता हूँ कि किसी भी मामलेमें — जबरदस्ती नहीं की जा सकती। किसी भी आदमीके प्रति, फिर वह किसी भी जातिका, धर्मका या देशका हो, किसी भी किस्मकी हिंसा करनेके विरुद्ध मेरे अत्यंत दृढ़ विचार जनता जानती है। अिसलिअे अिस आन्दोलनको चलानेवाले समझ लें कि

---

* तीसरा बयान, ता० ७-११-११३२

आगामी अुपवाससे मुझे बचा लेनेकी अधीरतामें भी वे शंकास्पद साधनोंका अुपयोग करके आन्दोलनका वेग नहीं बढ़ा सकेंगे। अैसे साधन काममें लेकर तो वे सिर्फ़ मेरा ही अन्त जल्दी लायेंगे। जिस आन्दोलनके लिअे मैं मानता हूँ कि अीश्वरने अुस छोटे-से अुपवासकी प्रेरणा की, अुस आन्दोलनके अधःपतनका साक्षी बनना मेरे लिअे जीते जी मरनेके समान है। हुल्लड़बाजीसे हरिजनोंकी और हिन्दू धर्मकी सेवा नहीं होगी। दुनियामें नहीं तो शायद हिन्दुस्तानमें यह सबसे बड़ा धार्मिक सुधारका आन्दोलन होगा, क्योंकि अिसमें गुलामीमें रहनेवाले चार करोड़ मानव प्राणियोंके कल्याणका प्रश्न है। पुराने विचारवालोंका जो वर्ग अिससे असहमत हो, अुनके प्रति हमें पूरी तरह नम्रताके साथ बर्ताव करना चाहिये। हमें अुन्हें प्रेमसे, आत्म-त्यागसे, अपने शुद्ध जीवनका अुनके हृदय पर मूक प्रभाव पड़ने देकर जीतना है। हममें यह श्रद्धा होनी चाहिये कि हमारा सत्य और प्रेम विरोधियोंको हमारी रायका बना लेगा।

अितना तो निःसंशय है कि चार करोड़ मनुष्योंको युगों पुरानी दलित दशासे सिर्फ आडम्बर भरे प्रदर्शनों द्वारा मुक्त नहीं किया जा सकता। चारों तरफसे हमला करनेवाले संगीन रचनात्मक कार्यक्रम तैयार करने और पूरे करने पड़ेंगे। अिस साहसके लिअे अूँची-से-अूँची धर्मभावनासे प्रेरित हज़ारों स्त्री-पुरुषों, लड़कों और लड़कियोंकी अेकाग्र शक्तिकी ज़रूरत है। अिसलिअे जो लोग अिस आन्दोलनका शुद्ध धार्मिक स्वरूप न समझ सकते हों, अुनसे मैं आदर-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि वे अिसमें से निकल जायँ। जिनमें यह श्रद्धा और लगन हो, वे थोड़े हों या बहुत, परंतु वे ही अिस आन्दोलनका काम करें।

अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे बड़े राजनैतिक परिणाम निकल सकते हैं, अितना ही नहीं, बल्कि ज़रूर निकलेंगे। परंतु यह राजनैतिक आन्दोलन नहीं है। यह पूरी तरह सिर्फ हिन्दू धर्मकी शुद्धिका आन्दोलन है और यह शुद्धि सिर्फ शुद्ध-से-शुद्ध साधनों द्वारा ही हो सकती है। और यह प्रभुकी कृपा है कि तमाम हिन्दुस्तानमें अैसे सैकड़ों नहीं, परन्तु हज़ारों साधन काम कर रहे हैं। अधीर और शंकाशील लोग देखें, अिंतजार करें। मगर अुन्हें अच्छे-से-अच्छे हेतुसे भी जल्दबाजीमें या अविचारपूर्वक दखल देकर आन्दोलनको बिगाड़ना नहीं चाहिये।

५

अुपवासका औचित्य*

अेक सज्जन लिखते हैं :

"आपके पिछले अुपवासको मैं बुरे-से-बुरा बलात्कार मानता हूँ। यरवदा-करारके बारेमें मैं अपनी भावना आपसे छिपाना नहीं चाहता। मैं जानता हूँ कि मेरे जैसी भावना कितने ही नेताओंकी भी है। आपके व्यक्तित्वके कारण और यरवदा जेलमें बंद होनेके कारण यह समझौता करनेके आपके कदमके बारेमें अुन्हें कुछ भी कहना पसंद नहीं था। मैं अिस समझौतेको जनताका दुर्भाग्य मानता हूँ। और आपने अुपवास न किया होता, तो यह दुर्भाग्य जनताके सिर नहीं मढ़ा जाता। आपके अेक मान्यवर मित्रने जो कहा था वह मैं जानता हूँ कि अिनकार करनेका अर्थ आपकी निश्चित मृत्यु न होती, तो वे समझौतेके लिअे कभी सम्मति न देते। बहुतसे विचारशील हिन्दू अैसे हैं, जिन्हें अिसका दुःख है कि अुन्हें समझौता मंजूर करना पड़ा; क्योंकि अुन्हें लगता है कि आपने अब जो मंजूर किया, वह लंदनमें किया होता, तो अिस समझौतेकी कोअी ज़रूरत नहीं पड़ती।

"अपने लेखमें आपने कहा है, 'मेरा अुपवास अिन करोड़ोंके विरुद्ध था'। मैं मानता हूँ कि आपका यह अिरादा तो था, परन्तु दर असल परिणाममें 'अिन करोड़ों' को नहीं, बल्कि औरोंको अिस मामलेमें अपनी बुद्धि और भावना ताक पर रखकर अिन शर्तोंको कबूल करनेके सिवाय और कोअी रास्ता ही नहीं रहा था। अुनके 'अिनकार' का अर्थ आपके कीमती जीवनका अंत न होता, तो दुनियामें और कोअी चीज़ अुनसे अिसे मंजूर नहीं करा सकती थी।

"और आपने लिखा है : 'अिनके स्वयंभू प्रेमने पाँच दिनमें परिवर्तन करके दिखा दिया और यरवदा-समझौतेको अस्तित्वमें ला दिया'। क्या यह सही हक़ीक़त है? क्या यह कहना अधिक सच नहीं है कि अनशनसे आपकी मृत्यु होनेके डर ने ही यह समझौता कराया? जिन परिस्थितियोंमें वह हुआ अुन्हें याद करने पर मुझे लगता है कि आप मानेंगे कि अिस समझौतेका यदि पूरा अमल न हो, तो अधिक संताप नहीं करना चाहिये। अिसके लिअे आप दूसरे अुपवासकी बात सोचें, यह तो अिससे भी कम वाजिब होगा।

---

*चौथा बयान, ता० ९-११-१९३२

“आपके जैसे प्रतिष्ठित नेताकी आलोचना करनेमें मुझे खुशी नहीं होती, परन्तु प्रसंग अैसा है कि चुप रहनेमें पूरी अीमानदारी नहीं है। आपने जिन जन-समूहोंके सामने अस्पृश्यताके सवाल पर भाषण दिये, अुन्होंने खुले तौर पर आपके विचारोंका विरोध नहीं किया, सिर्फ़ अिसी कारणसे आप यह मान लें कि अुन्होंने आपके विचार स्वीकार कर लिये हैं तो यह ठीक नहीं है। आपके महान व्यक्तित्वके प्रति आदरके कारण और राजनैतिक मामलोंमें आपके नेता होनेके कारण वे आपकी बात चुपचाप सुन लेते हैं, और आपके विचारोंका कितना ही विरोध करते हों — और मैं जानता हूँ कि अुत्तर हिन्दुस्तानमें तो बहुतसे लोग विरोध करते हैं — तो भी आपकी बात आदरपूर्वक सुनना अपना फर्ज समझते हैं। आप जानते हैं कि ये लोग वाचाल नहीं होते और अपनेसे अलग विचारवालेके प्रति विरोध करनेका खास प्रयत्न नहीं करते; और खास कर जब वे विचार आपके जैसे प्रतिष्ठित पुरुष प्रगट करें, तब तो वे विरोध कर ही नहीं सकते।”

समझौतेमें बुरा क्या था?

अिस पत्रमें से बेकार अंश और नेताओंके नाम मैंने निकाल दिये हैं। अिस भाअीने जिन नेताओंके नाम दिये हैं, अुन्होंने अपनी राय दबा दी हो, और अुन्होंने अैसी शर्तें मानी हों जो मेरी मौतकी धमकीके सिवाय और कभी न मानी होतीं, तो अिस बातसे मुझे बड़ा दुःख होगा। अगर अुन्होंने अैसा ही किया हो जैसा कि यह भाअी कहता है, तो अुन्होंने देशकी बड़ी कुसेवा की है और वे अुपवासका शुद्ध धार्मिक रूप नहीं पहचान सके हैं। सार्वजनिक जीवनमें कअी बार मनुष्यको सत्य अथवा लोक-कल्याणके लिअे मित्रोंको खोना पड़ता है। और अिस समझौतेमें अैसा क्या था, जो अिन मित्रोंको अितना अधिक बुरा लगा? सुरक्षित बैठकें? संयुक्त निर्वाचक मंडल? या ‘प्रारंभिक चुनाव’ द्वारा अुम्मीदवारोंका चुनाव? यह सब तो हो ही नहीं सकता। हरिजनोंके जो सामाजिक और धार्मिक हक युगों तक क्रूरताके साथ छीन लिये गये थे, अुन्हें वापस देनेके प्रस्तावके विरुद्ध तो वे अेतराज़ कर ही नहीं सकते। रहा सवाल सिर्फ अुन्हें दी गअी बैठकोंकी संख्याका। मगर अिससे ज्यादा बैठकें तो राजा-मुंजे करारमें दी गअी थीं। और जैसा कि मैं किसी पिछले लेखमें कह चुका हूँ, सवर्ण हिन्दू अगर सचमुच मानते हों कि हरिजन हमारे ही भाअीबंधु हैं और हमने अुन्हें आज तक कुचला है, तो वे हरिजनोंको कितनी ही बैठकें दे दें, तो भी वे कभी ज्यादा नहीं होंगी। समझौतेमें अुन्हें जो मिला है, वह अुनकी योग्यताके बिना व सवर्ण हिन्दुओंकी अनिच्छाके बावजूद मेरे अुपवासके कारण छीनी हुअी राहत है, यह माना जाय तो हरिजनोंका बुरा हाल होगा।

झूठके बीच नहीं जी सकता

अिसलिअे अगर अिस पत्रलेखककी दी हुअी खबर सही निकले, तो मैं अपने अुपवासको दुगुना अुचित मानूँगा। जो समाज बिना कसूर बहिष्कृत किये गये अपने लोगोंके साथ देरसे भी ज़रासा न्याय करनेमें नाराज़ है, अुस समाजका अंग बनकर जीनेकी मैं परवाह नहीं करता। और अिस पत्र-लेखककी लिखी हुअी दूसरी बात सही हो कि जिन करोड़ोंके बारेमें मैंने लिखा है, अुन्होंने अस्पृश्यताकी मेरी कड़ी निन्दाका सममुच कभी समर्थन नहीं किया था, परन्तु मेरे 'महान व्यक्तित्व' या मेरे 'राजनैतिक नेतृत्व' के प्रति आदरके कारण वे चुप रहे थे या अुन्होंने समर्थन भी किया था, तो मेरे अुपवासके औचित्यका यह तीसरा कारण हुआ। अैसे झूठके बीच जिन्दा रहना मेरे लिअे भार स्वरूप हो जायगा। नेता और लोग मेरे जैसे 'महात्मा' ओंका भी विरोध करने और अपनी बात पर कायम रहनेकी ज़रूरत जितनी जल्दी समझ जायँ, अुतना ही अुनके खुदके लिअे, देशके लिअे और मेरे जैसे आदमियोंके लिअे अच्छा है। वातावरणको अैसा शुद्ध करनेके लिअे भी मैं खुशीसे अुपवास करूँगा।

अिस भाअीने यह पत्र लिखकर आन्दोलनमें समय पर मदद दी है। आन्दोलनमें लगे हुअे लोगोंको अुस अुपवासका और आगामी अुपवासका भी मर्म समझना चाहिये। जितना जोर मैं दे सकता हूँ अुतना जोर देकर मैं बार-बार कहता हूँ कि मेरा अुपवास किसी भी मनुष्य पर, जिसे वह समाज या देशका हित मानता हो अुसके विरुद्ध करनेकी जबरदस्ती करनेके लिअे है ही नहीं। मेरा अुपवास अैसे लोगोंके विरुद्ध भी नहीं है, जिनके नाम या संख्या मैं बता सकूँ। अुसका अुद्देश्य जो करोड़ों मेरी आँखोंके सामने हैं और जिनके और मेरे बीचमें मैं अटूट प्रेमग्रंथि मानता हूँ, अुन करोड़ों पर अदृश्य और अज्ञात रूपसे असर डालना और अुन्हें जाग्रत करना है। मैं नहीं जानता कि अैसे अुपवासका असर किस तरह होता है। असर होता है, यह मैं अपने कअी बारके निजी अनुभवसे जानता हूँ।

यह पत्रलेखक कहता है कि 'मैंने अब जो मंजूर किया वह लन्दनमें कर लेता, तो अिस समझौतेकी कोअी ज़रूरत नहीं पड़ती।' गड़े मुर्दे अुखाड़नेकी मेरी अिच्छा नहीं है। मैं अितना ही कहूँगा कि मैं जो हिन्दुस्तानमें कर सका, वह लन्दनमें नहीं कर सकता था। यह पत्रलेखक अुस समय लन्दनमें था, फिर भी जो हकीकतें मैं जानता हूँ, अुन्हें वह हरगिज़ नहीं जानता।

फिर भी जनता यह खयाल न बनाये कि समझौतेका विरोध करनेवाले बहुतसे पत्र मेरे पास आये हैं। जहाँ तक मुझे याद है, अिस किस्मका यह पहला ही पत्र है। जबरदस्तीकी शिकायतके दो-तीन पत्र आये हैं, परन्तु अेक

भी पत्रमें यह नहीं कहा गया है कि अिसीलिअे हरिजनोंको जो दिया गया है अुसे प्राप्त करनेका अुन्हें हक नहीं था। साथ ही अिस अेक विरोधी पत्रके विरुद्ध अुपवास और समझौतेका सम्पूर्ण समर्थन करनेवाले सैकड़ों पत्र मेरे पास आये हैं। मेरे यहाँके और पश्चिमके भी निकटसे निकटके साथियोंने अेक-दो अपवादके सिवाय अिससे सहमति प्रगट की है और अुन्होंने खुद अुसका आध्यात्मिक असर महसूस किया है। मगर अपने रिवाजके मुताबिक और सीधे रास्ते पर रहनेके लिअे तथा जिस आन्दोलनको मैंने अपनाया है, अुसे निर्दोष रखनेके लिअे मैं विरोधी आलोचनासे भरे हुअे पत्र प्रकाशित करता हूँ। खास तौर पर, जो आदमी मित्रताके हेतुसे प्रेरित होते हैं, अुनके पत्र मैं ज़रूर प्रकाशित करता हूँ। अिसमें शक नहीं कि अिस पत्रके लिखनेवाले सज्जन भी अैसे ही हैं।

यह लेख मैं भेज ही रहा था कि मुझे अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके सदा जाग्रत रहनेवाले मन्त्रीका तार मिला कि समस्त भारतवर्षमें हरिजनोंकी कुल आबादी छः करोड़ नहीं, परन्तु चार करोड़से कम है। ठक्कर बापाने अुपवासके दिनोंमें मेरी भूल सुधारी थी, तो भी गलत संख्या दी गअी अिसके लिअे मुझे अफसोस है।

६

हरिजनोंके प्रति*

यह पाँचवाँ लेख अखबारोंको भेजते समय मैं अुनको धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो मेरे लेखों और अिस आन्दोलनका प्रचार करते हैं। श्री राजभोज और अुनके मित्र पिछले सप्ताह लगभग सारे आन्दोलनकी चर्चाके लिअे मुझसे मिले थे। मैंने अुनसे जो चर्चा की थी, अुसके अेक भागका सार मैं अिस लेखमें देना चाहता हूँ। अुनका अेक प्रश्न अिस बारेमें था कि अिस आन्दोलनकी मदद करनेके लिअे हरिजन क्या कर सकते हैं? वे अिस दिशामें बहुत कुछ कर सकते हैं। कितने ही सवर्ण हिन्दू अुनके साथ पूरी तरह समानताके नाते मिलनेसे अिनकार करनेके जो कारण बताते हैं, अुनका वे पहलेसे ही अुपाय कर सकते हैं। मैं साफ शब्दोंमें कह चुका हूँ कि हरिजनोंके बहुत ही बड़े समुदायकी जाहिरा दुर्दशाका सारा कसूर सवर्ण हिन्दुओंका ही है। और अस्पृश्यता चली जायगी, तो अुसके साथ ये सुधार अपने आप हुअे बिना नहीं रहेंगे। अैसे अस्पृश्यता-निवारणकी शर्त तो हरगिज़ नहीं बनानी चाहिये।

---

* पाँचवाँ बयान, ता० १४-११-१९३२

भीतरी सुधार

अितने पर भी आजकी हालतमें जहाँ तक हो सके अुस हद तक भीतरी सुधार करना हरिजन कार्यकर्ताओंका स्पष्ट कर्तव्य है। अिसलिअे हरिजन कार्यकर्ताओंको अपनी सारी शक्ति नीचे लिखे कामोंमें लगा देनी चाहिये :

१. हरिजनोंमें स्वच्छता और सफाअीका प्रचार।

२. भंगी और चमारके जैसे गन्दे माने जानेवाले धन्धोंको करनेकी सुधरी हुअी पद्धति।

३. मांस मात्रका नहीं, तो मुर्दार मांस और गोमांसका त्याग।

४. शराब वगैरा नशीली चीज़ोंका त्याग

५. जहाँ दिनकी पाठशालाओंकी सुविधा हो वहाँ बच्चोंको अुन पाठशालाओंमें भेजनेको और जहाँ रात्रि पाठशालाअें खोल दी गअी हों, वहाँ अुनमें खुद माँ-बापोंको जानेके लिअे समझाना।

६. हरिजनोंमें जो आपसमें छुआछूत है अुसे मिटाना।

स्नान और सफ़ाअी

अिन कलमोंका क्या अर्थ है, यह बतानेके लिअे अुन्हें फिरसे देख लें। हमारी आबहवामें रोज नहाना ज़रूरी है और साफ कपड़े तो सभी जलवायुओंमें आवश्यक हैं। हरिजनोंके मुहल्लोंमें पानी आसानीसे नहीं मिलता, यह मुझे मालूम है। अुन्हें सार्वजनिक कुअें-तालाब पर भी जानेकी छूट नहीं होती और वे अितने गरीब होते हैं कि बदलनेके कपड़े रख ही नहीं सकते। बहुतेरे यह नहीं जानते कि लोटे भर पानीसे भी साफ स्नान किया जा सकता है। साफ अँगोछेको पानीमें पूरी तरह भिगो कर अुससे सिर तक सारे शरीरको जोरसे मल लें और बादमें कोरे अँगोछेसे शरीर पोंछ लें। हर रोज स्नान होता हो, तो भीगे हुअे अँगोछेसे सारा पानी निचोड़नेके बाद यही अँगोछा शरीर पोंछनेके काम भी आ सकता है। हमारी आबहवामें लंगोटी पहनकर वे ही कपड़े आसानीसे धोकर जहाँके तहाँ सुखाये जा सकते हैं। मैं जानता हूँ कि जो मैं कह रहा हूँ, अुसमें नया कुछ नहीं है। फिर भी मुझे ये प्रारम्भिक बातें सैकड़ों कार्यकर्ताओंको समझानी पड़ी हैं। ग्रेजुअेटों तकमें मैंने सफाअीके अिन मूल तत्त्वोंका अज्ञान पाया है।

दूसरी बात सुधरे हुअे ढंग पर पाखाने साफ करनेकी है। स्वार्थी और अज्ञानी सवर्ण हिन्दू मनुष्यका मैला सफाअीसे अुठाना लगभग असम्भव बना देते हैं। अस्पृश्यताके कारण पाखाने बेहद गंदे होते हैं। वे अन्धेरे और जिनमें हवा व रोशनी न आ सके अैसे और अिस ढंगके बने हुअे होते हैं कि अुनका कुछ ही हिस्सा, और वह भी गंदे ढंगसे ही, साफ किया जा सकता

है। अिन पाखानोंको अिस्तेमाल करना रोज नरकमें जानेके बराबर है। अगर जलवायु सुन्दर न होती, तो आजसे कअी हजार ज्यादा मनुष्य जल्दी ही श्मशान पहुँच गये होते। जिन हरिजनोंको यह अति आवश्यक समाज-सेवा करनी पड़ती है, वे आजकी प्रतिकूल परिस्थितियोंमें भी पाखाने साफ करके तुरन्त ही स्नान कर सकते हैं; और सफाअीके लिअे वे जो थोड़ा-सा घास काममें लेते हैं, अुसके बजाय सूखी मिट्टी अिस्तेमाल कर सकते हैं। मैं कुशल भंगी होनेका दावा करता हूँ और मेरा दावा सच्चा है। अिसलिअे खास तौर पर अगर ग्रामवासी और नगर-निवासी मदद करें, तो मैं यह काम करनेकी बहुत सस्ती, अच्छी और पूरी तरह स्वच्छ तरकीबें बता सकता हूँ। मगर अिस दिलचस्प विषयकी चर्चा अिस साधारण लेखमें मैं नहीं कर सकता। जिज्ञासुको सफाअीके बारेमें और खास तौर पर देहातकी सफाअीके बारेमें मेरे लेख* पढ़नेकी मेरी सिफारिश है। भंगी जब सफाअीका काम करें, तब अुन्हें अुस धन्धेकी विशेष पोशाक पहननी चाहिये। भंगियोंको रखनेवाले घर-मालिक या घर-मालिकोंके समूहको अपने भंगीके लिअे यह पोशाक जुटा देनी चाहिये।

चमार-काम

साफ ढंगसे चमड़ा कमानेका काम अिससे कहीं मुश्किल है। हमारे चमार मुर्दार चमड़ा अुतारने या चमड़ा कमानेकी आधुनिक पद्धति नहीं जानते। 'कमाना' शब्द मैंने यहाँ व्यापक अर्थमें अिस्तेमाल किया है। अुच्च कहे जानेवाले वर्णोंने अपने स्वधर्मियों और स्वदेशवासियोंके अिस अुपयोगी वर्गके प्रति जो अक्षम्य लापरवाही दिखाअी है, अुससे मुर्दा ढोरोंको अुठा कर ले जानेसे लेकर चमड़ा कमाने तककी सारी क्रिया अनाड़ीपनसे होती है। परिणामस्वरूप देशको बेहद आर्थिक हानि होनेके साथ-साथ चमड़ा हलकी किस्मका बनता है। श्री मधुसूदन दास अत्यन्त परोपकारी सज्जन हैं। अुन्होंने खुद चमड़ा कमानेकी क्रियाअें सीखी हैं। अुन्होंने आँकड़े देकर बताया है कि धर्मके नाम पर अस्पृश्यताका वहम रखनेसे देशको हर साल कितना नुकसान होता है। हरिजन कार्यकर्ता यह नया तरीका जितना सीख सकें, सीख लें और अुसे चमारोंको सिखा दें।

घर-मालिक जो जूठन अत्यन्त निर्दयताके साथ डालते हैं, अुसे न लेनेकी भंगियोंको शिक्षा देनी चाहिये। वर्षोंकी आदतसे भंगियोंकी सुरुचिकी भावना कुंठित हो गअी है, अिसीलिअे अुन्हें दूसरोंकी थालीकी जूठन खानेमें कुछ भी बुरा नहीं लगता। वे अपने मालिककी थालियोंकी अच्छी-अच्छी बानगियाँ

---

* ये लेख नवजीवन प्रकाशन मन्दिरकी तरफसे 'गामडांनो वहारे' नामसे पुस्तकाकार छप गये हैं। कीमत चार आना।

खानेके लिअे तरसते हैं। मेरी जानकारीमें अैसे अुदाहरण आये हैं कि भंगियोंके बच्चोंको अिस जूठनको न छूने और घरमें पकाअी हुअी जुवार-बाजरीकी रोटियोंसे संतोष करनेकी शिक्षा देनेके कारण अुनके माँ-बापोंने अुन्हें पाठशालासे अुठा लिया है।

मुर्दार मांस और गोमांस

चमारोंको मुर्दार मांस और गोमांस छोड़नेको समझाना चाहिये। शाकाहारीकी हैसियतसे मुझे तो यही अच्छा लगेगा कि हरिजन मांस मात्रका त्याग करें। बहुतोंने अैसा त्याग किया भी है। परन्तु अिस सुधारके लिअे वे तैयार न हों, तो अुन्हें मुर्दार मांस और गोमांसका त्याग करनेको समझाना चाहिये। क्योंकि मुर्दार मांस अस्वच्छ होनेके अलावा बाकीकी सारी मानव-जातिने अुसे छोड़ रखा है और गोमांसका हिन्दू धर्मने निषेध किया है। मुझे मालूम है कि मुर्दार मांस मुर्दा ढोरोंको अुठानेकी कीमत माना जाता है। डॉ० आम्बेडकरने मुझसे कहा कि कितनी ही जगहों पर गाँवके लोगोंने मुर्दार मांस छोड़नेवालोंको मारा और कहा कि अिसे खाना तुम्हारा धर्म है! हकीकत यह थी कि अुन्हें डर लगा कि अगर चमार मुर्दार मांस खाना छोड़ देंगे, तो अुसकी कीमतके बराबर दाम माँगेंगे या मुर्दा जानवर अुठानेसे अिनकार करेंगे। कुछ भी मुश्किल हो, लेकिन मुर्दार मांस और गोमांसका त्याग तो होना ही चाहिये। यह अेक ही संयम हरिजनोंको सवर्णोंकी नजरमें अेकदम चढ़ा देगा और अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें सवर्ण सुधारकोंका काम आसान कर देगा।

चौथी और पाँचवी कलमके बारेमें कुछ भी कहनेकी ज़रूरत नहीं है। ये अपने आप समझमें आ जाती हैं।

आखिरी बात है 'अस्पृश्यों' के अपनेमें से अस्पृश्यता निकाल देनेकी। यह तात्कालिक ज़रूरत है। यह दोहरी अस्पृश्यता अगर अेक ही सपाटेमें न मिटा दी गअी, तो अस्पृश्यता-निवारणका काम निहायत मुश्किल हो जायगा। परंतु अगर वे यह समझ लेंगे कि यह आन्दोलन मुख्यतः धार्मिक है और हिन्दू धर्ममें जो मैल घुस गया है, अुसे धो डालना अिसका अुद्देश्य है, तो अुनमें यह बड़ा सुधार पूरा करनेका साहस और आत्मविश्वास आ जायगा। अिस बात पर मुझे जोर देनेकी ज़रूरत नहीं होनी चाहिये कि अैसे आन्दोलनमें कार्यकर्ता निःस्वार्थ और शुद्ध चरित्रवाले होने चाहियें।

सत्याग्रह नहीं किया जा सकता

मैंने यहाँ अैसा कार्यक्रम दे दिया है, जिससे हरिजनोंमें बड़ी-से-बड़ी महत्वाकांक्षावाले सुधारकको भी संतोष हो और अुसकी सारी शक्ति व समय लगे। मगर अेक-दो बातें तो वे और हरिजन हरगिज़ न करें। अिस कसौटीके

समय कोअी भी हरिजन किसीके विरुद्ध अुपवास न करे और न सत्याग्रह ही करे। सवर्ण हिन्दुओंकी जो कसौटी हो रही है अुसे वे देखें, और यह देखें कि सवर्ण हिन्दू अपनेको हरिजनोंसे अलग रखनेवाला प्रतिबन्ध दूर करनेके लिअे क्या करते हैं। वे स्थानीय सवर्ण हिन्दुओंके साथ कलह न करें। अुनके बर्तावमें हमेशा, और अब तो ज्यादा, विवेक और गौरव होना चाहिये। धर्मकी रक्षा खुद कष्ट सह कर ही की जा सकती है, जालिमोंके प्रति हिंसा करके कभी नहीं। जबरदस्तीसे शायद वे बहुत-सी चीज़ें ले सकते हैं, मगर अुनकी शोभा तो सवर्ण हिन्दुओंके हृदय बदल कर ही अपने हक हासिल करनेमें है। और आज तो हज़ारों सवर्ण हिन्दुओंके मनमें अपने अपराधका भान पैदा हो गया है और वे हरिजनोंको अुसका मुआवज़ा देनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं, यह जानकर हरिजनोंके लिअे आशा रखनेका काफ़ी कारण है। वे अपने पक्षके पूर्ण न्याय्य होने और विजय प्राप्त करनेकी अपनी कष्टसहनकी शक्ति पर पूरी तरह भरोसा रखें।

७

सवर्णोंका धर्म*

हृदय-परिवर्तन

हरिजन अिस आन्दोलनको आगे बढ़ानेके लिअे क्या करें, यह प्रश्न तो हरिजनोंमें से अभी तक अकेले श्री राजभोजने ही पूछा है। परन्तु हिन्दुस्तानके तमाम हिस्सोंसे सवर्ण हिन्दुओंके — पुरुषों और स्त्रियों, विद्यार्थियों और दूसरोंके — ढेरों पत्र मुझे मिले हैं, जिनमें पूछा गया है कि हम अपने व्यवसायोंमें खलल डाले बिना किस तरह मदद दे सकते हैं? चूँकि अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनका अुद्देश्य आम लोगोंके बारेमें तो केवल अुनका हरिजनोंके प्रति रवैयेमें हृदय-परिवर्तन कराना ही है, अिसलिअे अधिकांश सवर्ण हिन्दुओंको हरिजनोंकी सेवा करनेके लिअे अपनी नित्यकी प्रवृत्तियोंमें खलल डालनेकी ज़रूरत नहीं है। पहली बात तो यह है कि हर स्त्री पुरुष समझ ले कि अस्पृश्यता-निवारणका अुसके जीवनमें क्या अर्थ है; और अगर अैसा जवाब मिले कि हरिजन सार्वजनिक मन्दिरोंमें प्रवेश करें, पाठशालाअें, धर्मशालाअें, रास्ते और दवाखाने जैसी सार्वजनिक जगहें अिस्तेमाल करें — गरज यह कि धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मामलोंमें हरिजनोंको अुनके बराबरका ही दर्जा मिले — तो अुन्हें

* छठा बयान, ता० १५-११-१९३२

अिसमें कोअी आपत्ति नहीं; अितना ही नहीं, — परन्तु अुनकी अैसी अिच्छा भी है — तो यह माना जायगा कि अुस स्त्री या पुरुषने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया।

सवर्णोंमें प्रचार

मगर प्रश्न पूछनेवालोंको अितना ही नहीं चाहिये और न मुझे ही अितनेसे सन्तोष होता है। वे जानना चाहते हैं कि अितनी दूर तक चले जानेके बाद अिस कामको आगे बढ़ानेके लिअे वे खुद क्या कर सकते हैं। अैसे स्त्री-पुरुषोंको अपने नज़दीकी पड़ोससे बाहर अपनी प्रवृत्ति बढ़ानेकी ज़रूरत नहीं है। वे हर रोज जिनके संसर्गमें आते हैं, अुन सबके मत अिकट्ठे करें और अगर पड़ोसियोंको अस्पृश्यता-निवारणकी आवश्यकताके बारेमें यक़ीन न हुआ हो और अगर अुन्होंने खुदने आन्दोलनका सूक्ष्म अध्ययन किया हो, तो यह बात अुनके गले अुतारनेकी कोशिश करें; या अगर वे खुद समर्थ न हों, तो ज़रूरी साहित्य जुटायें, अुसे पड़ोसियोंको दें और अैसे प्रचारकार्यके लिअे खास योग्यतावाले, सारा समय देनेवाले कार्यकर्ताओंके साथ अुनका समागम करा दें। अैसा मालूम हो कि पड़ोसियोंको अिस आन्दोलनकी भावनाने स्पर्श नहीं किया है और अुनका कोअी असर हो, तो सार्वजनिक भाषणों और सम्मेलनोंका प्रबंध करें और अिन सभाओंमें वक्ताओंको बुलायें। यह तो हुआ सवर्ण हिन्दुओंके भीतर काम करनेके बारेमें।

हरिजनोंकी सेवा

मगर अिसमें शक नहीं कि वास्तवमें अिन स्त्री-पुरुषोंका बड़ा समुदाय काम तो हरिजनोंमें ही कर सकता है। जिन सवर्ण हिन्दुओंने मेरा पाँचवाँ लेख पढ़ा होगा, वे यह देखे बिना नहीं रहे होंगे कि सवर्ण हिन्दुओंको कितनी अधिक मूक और अुपयोगी सेवा करनी है। समय, शक्ति या रुपयेके ज्यादा खर्चके बिना सवर्ण हिन्दू ज़रूरी पानीकी सहूलियत प्राप्त करके हरिजन कार्यकर्ताओंके सफ़ाअीकी आदतें डालनेके प्रयत्नकी ठीक-ठीक पूर्ति कर सकते हैं। वे हरिजनोंके मुहल्लोंके पासके सार्वजनिक कुअें-तालाब ढूँढ़कर अुन्हें अिस्तेमाल करनेवाले सवर्ण हिन्दुओंके मत संग्रह करें और अुन्हें बतायें कि अैसी सब सार्वजनिक सुविधाअें प्राप्त करना हरिजनोंका कानूनी हक है। साथ-साथ वे यह भी निगाह रखें कि हरिजनोंको ये सहूलियतें अिस्तेमाल करनेकी सवर्ण हिन्दू सम्मति दे दें, अुसके बाद हरिजन अिनका अुपयोग अिस तरह न करें कि जिससे सवर्णोंको घिन हो।

पाखानोंकी सफाअीके मामलेमें पड़ोसके जिन घरोंके पाखाने हरिजन साफ करते हों, अुनके मालिकोंसे वे मिलें और अुन्हें हरिजनोंको यह सफाअीका काम साफ ढंगसे करनेकी सुविधा देनेकी ज़रूरत समझायें। अिसके लिअे अुन्हें पाखाने बनाने

और मैला हटानेकी शास्त्रीय पद्धतिका अध्ययन करना ही होगा। वे घर-मालिकोंसे भंगियोंको खास पोशाक भी दिलवा सकते हैं और खुद निस्संकोच होकर पाखाने साफ करके हरिजनोंको बतायें कि अैसी सेवा करनेमें जरा भी हलकापन या बेअिज्जती नहीं है। अैसे सेवकोंको सवर्णों द्वारा भंगियोंको जूठन देनेके विरुद्ध प्रचार करना चाहिये और जहां अुन्हें बहुत ही कम वेतन मिलता हो, वहाँ घर-मालिकोंको काफी मेहनताना देनेके लिअे समझाना चाहिये। फुरसतके समय काम करनेवाले अैसे स्वयसेवकोंमें से किसीमें मुर्दार चमड़े अुतारनेकी स्वच्छ पद्धति सीखकर अिस प्रकार प्राप्त किये हुअे ज्ञानका चमारोंमें प्रचार करने लायक दयावृत्ति और लगन न हो, तब तक चमारोंके कामके मामलेमें ज्यादा मदद नहीं की जा सकती। फिर भी अेक चीज़ तो वे ज़रूर कर सकते हैं। वे अैसे मुर्दार जानवरोंको ठिकाने लगाने सम्बन्धी रिवाजोंकी खोज करें और यह निगाह रखें कि चमारोंको अुनकी सेवाके बदलेमें काफी मेहनताना मिलनेका भरोसा रहे। जिनके पास शक्ति और समय हो, वे दिन और रातकी पाठशालाअें चलायें। छुट्टीके दिन या जब-जब मौका मिले, तब हरिजन बच्चोंको वनभोजनके लिअे और सुन्दर दृश्य दिखानेके लिअे ले जायँ। हरिजनोंके घर जाकर अुनसे मिलें, ज़रूरत हो वहाँ अुन्हें डॉक्टरी मदद दिलायें और आम तौर पर अुनमें अैसी भावना अुत्पन्न करें कि अुनके जीवनका नया पन्ना खुल गया है और अुन्हें अपनेको हिन्दू समाजके अुपेक्षित और तिरस्कृत अंग माननेकी ज़रूरत नहीं है। मैंने जो कुछ बताया है अुसे विद्यार्थीवर्ग बहुत ही आसानीसे और कुशलतासे कर सकता है।

अगर यह काम स्त्री-पुरुषोंका बड़ा समूह मूक अुत्साह, संकल्प और चतुराअीसे करे, तो अिसमें जरा भी शक नहीं कि हम अपने ध्येयकी दिशामें कअी कदम आगे बढ़ जायँगे और यह भी अनुभव होगा कि मैंने बताअी हैं अुनसे ज्यादा चीज़ोंकी तरफ ध्यान देनेकी ज़रूरत है। मैंने तो अपने प्रवासोंमें नज़र आअी हुअी बहुतसी बातोंमें से थोड़ी-सी चुनकर यहाँ दी हैं।

८

सनातनियोंसे*

अिस लेखमें मैं जिन प्रश्नोंका जवाब देनेका प्रयत्न करनेवाला हूँ, अुनका थोड़ा-बहुत समावेश पिछले लेखमें हो जाता है। फिर भी ये प्रश्न बार-बार पूछे जाते हैं, अिसलिअे मुझे लगा कि जितने हो सकें अुतने सवालोंको अिकट्ठा करके अेक लेखमें अुनकी चर्चा कर लूँ तो अच्छा हो।

जबरदस्तीका डर

अिनमें से अेक सवाल यह है: "आप लोगोंको अुनकी मरज़ीके खिलाफ चलनेको मजबूर नहीं करते?" मेरा तो अैसा अिरादा नहीं है। मेरे सोचे हुअे अुपवासका अुद्देश्य निर्बलको बलवान बनाना, ढीले-ढालोंमें अुत्साह भरना और शंकाशीलोंमें आस्था अुत्पन्न करना है। जो कोअी अिस बारेमें जरा भी विचार करे, अुसे साफ समझना चाहिये कि सुधारके विरोधियों पर अिस अुपवासका असर नहीं पड़ेगा; अितना ही नहीं, बल्कि अुपवाससे मेरी मौत हो जाय, तो शायद वे अुसका स्वागत करेंगे और कदाचित् यह अुनके दृष्टिबिन्दुसे अुचित होगा। अेक क्रोधभरे पत्रलेखक यह बात अिन्हीं शब्दोंमें कहनेमें नहीं सकुचाये।

मगर अेक दूसरे भाअी कहते हैं: "आप जो यह कहते हैं कि आपका अमुक वस्तु करनेका अिरादा नहीं, सो तो सब ठीक है। पुराने विचारके अैसे बहुतसे लोग हैं, जो आपके अति अुत्साही अनुयायियोंके हाथों शारीरिक हानि होनेके डरसे ही लोकसमूहका अनुसरण करेंगे।" अैसी दलील तो किसी भी परिस्थितिमें दी जा सकती है। मैंने अपनी जिन्दगीमें अैसे बहुतसे आन्दोलन किये हैं, जिनमें अुपवासकी ज़रूरत नहीं पड़ी। परन्तु जिस आरोपका जवाब मैं अिस वक्त दे रहा हूँ, वह मुझ पर कअी बार मुझे अपने ध्येयसे विचलित करनेके लिअे किया गया है। आगामी अुपवासके न सोचे हुअे परिणाम कुछ भी हों, यह वचनपालनका सवाल होनेके अलावा यदि मौका आ जाय, तो मुझे अुसे अिसलिअे भी करना चाहिये कि मुझ पर विश्वास रखनेवाले हज़ारों लोगोंको अुससे शुभ प्रयत्न करनेकी अचूक प्रेरणा मिलेगी। धार्मिक स्वरूपवाले हर आन्दोलनमें अैसा ही होगा।

---

* सातवाँ बयान, ता० १६-११-१९३२

नाममात्रका मतभेद

दूसरा सवाल यह है: "क्या आप हिन्दुओंके अेक वर्गको दूसरे वर्गसे नहीं लड़ाते?" हरगिज़ नहीं। हर सुधारमें कुछ न कुछ विरोध तो होगा ही, मगर समाजमें अेक हद तक विरोध और क्षोभ तंदुरुस्तीकी निशानी है। परन्तु मुझे सनातनियों और सुधारकोंके बीच स्थायी फूट पड़नेका ज़रा भी डर नहीं है। मेरे हाथों सनातनियोंके विरोधका अनादर करना या अुनकी भावनाओंकी अुपेक्षा करना हो ही नहीं सकता। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं कि अुनमें से कितनों को ही तीव्र रूपमें अैसा लगता है कि सनातन धर्म खतरेमें है। तो भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि सनातनी और सुधारकके बीच सिद्धान्तमें कितना नाममात्रका मतभेद है।

सनातनी क्या करें?

सनातनियोंकी तरफसे मुझे मिलनेवाले लगभग हरअेक पत्रमें नीचे लिखी चौंकानेवाली स्वीकृतियाँ हैं: "(१) हम मानते हैं कि हरिजनोंकी हालत सुधारनेके लिअे बहुत कुछ करना ज़रूरी है; (२) हम मानते हैं कि सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके साथ बुरा बर्ताव करते हैं; (३) हम मानते हैं कि अुनके बच्चोंको शिक्षा मिलनी चाहिये और अुन्हें रहनेको अच्छे घर मिलने चाहियें; (४) हम मानते हैं कि अुन्हें नहाने और पानी भरनेकी पूरी सुविधा मिलनी चाहिये; (५) हम मानते हैं कि अुन्हें संपूर्ण राजनैतिक हक मिलने चाहियें; (६) हम मानते हैं कि अुन्हें देव-दर्शन और पूजाकी पूरी सहूलियत मिलनी चाहिये; और (७) हम मानते हैं कि प्रजाजनोंके जो हक औरोंको मिलते हैं, वे सब अुन्हें मिलने चाहियें।" परंतु ये सनातनी कहते हैं: "अुन्हें छूने या अुनके साथ घनिष्ठता रखनेको — खासकर जब तक ये आजकी हालतमें हों तब तक — हमें मजबूर न करना चाहिये।" तब मैं अुनसे कहता हूँ: आप अुन्हें समान दर्जे पर रखनेकी ज़रूरत तो स्वीकार करते हैं। तब फिर दूसरे सवर्ण हिन्दू अगर अेक कदम आगे बढ़ें और जिन शास्त्रोंको आप मानते हैं, अुन्हीं शास्त्रोंके आधार पर वे यह मानें कि हरिजनोंको अस्पृश्य न माना जाय; अितना ही नहीं, जो हक और सुभीते आप हरिजनोंको देना कबूल करते हैं लेकिन यह चाहते हैं कि अिन्हें वे लोग आपसे अलग रहकर भोगें, अुन्हीं हकों और सुभीतोंको हरिजनोंको साथ रखकर भोगना चाहिये, अैसा यदि सुधारकोंको लगे तो आप अितना शोरगुल क्यों मचाते हैं? आप जब आचार-स्वातंत्र्यकी रक्षा करना चाहते हैं और बलात्कारके विचार मात्रका अुचित विरोध करते हैं, तब आप यह तो हरगिज़ नहीं चाहेंगे कि जिन सुधार योजनाओंको आप ज़रूरी मानते हैं, अुनको आप पसन्द करें अुसी तरह पूरा

करनेके लिअे सुधारकों पर बलात्कार करना चाहिये। हरिजनोंकी हालत सुधारनेकी ज़रूरत स्वीकार करनेमें आप अिन सुधारकोंके साथ सहमत हैं; परंतु आपने अिस दिशामें अैसा कोअी काम नहीं किया, जो दिखाअी दे। अिसलिअे मैं अेक अधिक अच्छा रास्ता बतानेकी हिम्मत करता हूँ। सुधारक जो चन्दा अिकट्ठा करते हैं, आप अुसमें अुदारतासे दान दीजिये और यह सर्वसम्मत योजना पूरी करनेके लिअे अपने दलाल समझकर अुनसे काम लीजिये। और जैसे आप यह चाहते हैं कि वे हिन्दूधर्मके आपके अर्थके प्रति आदर रखें, वैसे ही अुनके किये हुअे अर्थके प्रति आप भी आदर रखिये।

अब तकके व्यवहारमें हरिजनोंके साथ घुलमिल जानेके सुधारकोंके कदम पर आपने अेतराज नहीं किया। आपने अुन्हें अपने रास्ते जाने दिया है। आपने अुनका बहिष्कार नहीं किया। तो अब जब कि यह आन्दोलन पहलेसे ज्यादा वेगवान और अधिक विशाल बन गया है, तब आप विरोध करें, अिसका कोअी अर्थ नहीं।

अेक कठिनाअी अभी सामने है: "जो सार्वजनिक मंदिर और दूसरी सार्वजनिक संस्थाअें आज मौजूद हैं, और जहाँ आज कअी जगह बाकायदा और दूसरी बहुत-सी जगह बेकायदा तौर पर हरिजनोंको प्रवेश करनेकी मनाही है, अुन मंदिरों और संस्थाओंका अुपयोग करनेका हक किसका है?" अिस कठिनाअीको दूर करनेका अेक बहुत ही सीधा अुपाय है। अगर हरअेक पक्ष क्रोध और परस्पर अनादर छोड़ दे, तो हर गाँवमें या ग्रामसमूहमें और हर शहरमें व शहरके हर मुहल्लेमें लोकमतकी गिनती की जा सकती है, और जिस पक्षके विचारोंकी तरफ बहुमत हो, वह अिन सार्वजनिक मंदिरों और संस्थाओंका अुपयोग करे। और अगर सनातनियोंका बहुमत हो, तो सुधारकों और हरिजनोंके लिअे अेक-सी सुविधाअें मुहैया करनेके खर्चमें सनातनी सुधारकोंका हाथ बटायें। मैं सुधारकोंको हरिजनोंके साथ गिनता हूँ, क्योंकि अगर अुनमें तेजस्विता हो और अुसे वे अपनी श्रद्धाके आचरणमें लाना चाहते हों, तो आये दिन अुन पर यह फर्ज़ आनेवाला है कि जो सुविधाअें हरिजन सवर्ण हिन्दुओंके साथ पूरे समान भावसे न भोग सकते हों, अैसी सब सुविधाअें वे खुद छोड़ दें। अैसी अलग और समान सुविधाअें जुटा देनेका सारा खर्च सनातनियोंको भुगतना चाहिये; क्योंकि मैंने अुनके पत्र जिस ढंगसे समझे हैं और जिस तरह मैंने विवरण दिया है, अुसे देखते हुअे सनातनी मंजूर करते हैं कि जो सुविधाअें अब तक अुन्होंने भोगी हैं और जिनसे अब तक हरिजनोंको अलग रखा गया है, वे सब सुविधाअें प्राप्त करनेका हरिजनोंका हक है। जिस स्थितिकी कल्पना वे कर लेते हैं परंतु जो दर असलमें है नहीं, अुसका चित्र मनमें खड़ा करके सनातनियोंको

भागना नहीं चाहिये। वे साफ समझ लें कि यरवदा-समझौतेके अनुसार और अभी स्थापित हुअे अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके घोषणा-पत्रके अनुसार अस्पृश्यता-निवारणमे मैंने जो बातें बताअी हैं, अुनसे ज्यादा बातोंका समावेश नहीं होता। अिसमें वर्णान्तर रोटी-बेटी व्यवहारका समावेश नहीं होता। बहुतसे हिन्दू और मैं खुद अिससे बहुत आगे बढ़ें, तो सनातनियोंको क्षोभ न होना चाहिये। वे व्यक्तिगत बुद्धि और व्यक्तिगत आचरणको दबा देना तो हरगिज़ नहीं चाहेंगे; और अुन्हें अपनी मान्यताके बारेमें गहरी श्रद्धा हो, तो भावीकी कल्पनासे अुन्हें भड़कना न चाहिये। किसी खास सुधारमें अगर भीतरी प्राण होंगे और वह युगधर्मके अनुसार आया होगा, तो दुनियाकी कोअी ताकत अुसके अमोघ प्रवाहको रोक नहीं सकेगी।

राजनैतिक मुक्तिमें रुकावट?

तीसरा सवाल यह है: "अपने सामाजिक और धार्मिक प्रश्नोंके विचारोंकी तरफ जनताका ध्यान खींचकर और जनतासे अुन्हें स्वीकार करानेके लिअे प्रचंड आन्दोलन करके क्या आप राजनैतिक मुक्तिको रोक नहीं रहे हैं?" अस्पृश्यता-निवारणका आन्दोलन चलानेके लिअे मैंने क़ैदीकी हैसियतसे जो मर्यादाअें स्वीकार की हैं, अुनका अुल्लंघन किये बिना अिस सवालका विस्तृत जवाब नहीं दिया जा सकता। परंतु मैं अितना कह सकता हूँ कि मुझे पहचाननेवालोंको समझना चाहिये कि मैं राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और दूसरे सवालोंके बीच अमिट भेद नहीं मानता। मैंने हमेशा माना है कि ये सवाल अेक दूसरे पर आधार रखनेवाले हैं और अेकके हलसे दूसरोंका हल नज़दीक आता है।

मेरे पास आनेवाले पत्र अब अितने अधिक बढ़ गये हैं कि मुझे जो थोड़ी-बहुत मदद मिल सकती है अुतनी मददसे अुन्हें नहीं निपटा सकता। अिन पत्रोंमें से मैंने जो सवाल अिकट्ठे किये हैं, वे यहाँ पूरे नहीं हो जाते। बाक़ीके प्रश्नोंकी चर्चा मुझे बादके लेखमें करनी होगी। मैं यहाँ पत्र लिखनेवालोंको मुझ पर दया रखनेकी प्रार्थना करना चाहता हूँ। अब तक मैंने अपने पास आये हुअे लगभग सभी पत्रोंकी ध्यानपूर्वक पहुँच लिखी है। लेकिन अबसे मैं अिस लेखमाला द्वारा जो कुछ जवाब दे सकूँ, पत्रलेखक अुससे संतोष मान लेनेकी कृपा करें। और अगर वे थोड़ेमें, खासकर जब कुछ नया कहना हो या आंदोलनके सम्बंधमें खड़े होनेवाले किसी प्रश्न पर निर्णय करनेसे पहले अुन्हें अपने प्रश्नोंके जवाब मुझसे लेने ज़रूरी हों तभी लिखेंगे, तो वे अपनी और मेरी भी बड़ी मदद करेंगे।

९

दूसरी समस्याअें*

शास्त्रका अर्थ क्या ?

बहुतसे पत्रलेखकोंने यह अेक दूसरा सवाल पूछा है: "आप कहते हैं कि मैं शास्त्रको मानता हूँ। शास्त्रका आप क्या अर्थ करते हैं, यह हम नहीं जानते। क्योंकि शास्त्रोंने जिसका समर्थन किया है, अुसे आप मनमाने तौर पर अस्वीकार करते हैं। आप जिस गीताको मानते हैं, वह भी कहती है कि शास्त्रके अनुसार चलना चाहिये।"

मैंने पिछले अेक लेखमें जो कहा है, अुसे यहाँ फिर कह देना चाहिये कि गीताके मुख्य सिद्धान्तसे असंगत कोअी चीज़ कहीं भी छपी हुअी मिल जाय, तो वह मेरे खयालसे शास्त्र नहीं है। मेरे कट्टर रूढ़िवादी मित्रोंको आघात न पहुँचे, तो मैं अपना अर्थ अभी और स्पष्ट करना चाहता हूँ। सदाचारके विश्वमान्य मूलतत्त्वोंसे असंगत किसी चीज़को मैं शास्त्र-प्रमाण नहीं मानता। शास्त्रोंका अुद्देश्य मूलतत्त्वोंको अुखाड़ना नहीं, परन्तु अुन्हें कायम रखना है। और गीता मेरे लिअे सम्पूर्ण है, अिसका कारण यह है कि वह अिन मूलतत्त्वोंका समर्थन ही नहीं करती, बल्कि अुनपर हर हालतमें डटे रहनेके लिअे हमें ठोस कारण देती है। मेरा बताया हुआ स्वर्ण-नियम न हो, तो परस्पर विरोधी वचनोंके जंगलमें और सुन्दर ढंगसे छपे हुअे और अुतनी ही खूबसूरत जिल्दोंवाले संस्कृत ग्रंथोंके ढेरमें, जिन्हें विरोधी पक्षके पण्डित अपौरुषेय मानते हैं, मेरे जैसे मामूली आदमी गोते ही खाते रहें। स्मृतियाँ अनेक हैं और अुनमें से कुछ तो, जिस छोटेसे अिलाकेमें थोड़ेसे लोग अुन्हें मानते होंगे अुस अिलाकेसे बाहर, परिचित ही नहीं होतीं। अुनका मूल या अुनके बननेकी तारीख कोअी नहीं बता सकता। अैसा अेक ग्रंथ मैंने दक्षिणमें देखा था। अिस ग्रंथके बारेमें जब साक्षर मित्रोंसे पूछा, तो अुन्होंने कहा कि अुन्हें अिसकी कुछ खबर नहीं है। आगमोंकी संख्या भी कुछ कम नहीं है। अुनकी जाँच करने पर मालूम होता है कि वे परस्पर विरोधी होते हैं और जिस छोटे क्षेत्रमें वे स्वीकार किये गये होते हैं, अुसके बाहर वे प्रमाणभूत नहीं माने जाते। अगर ये सब ग्रंथ हिन्दुओंके लिअे प्रमाण माने जायँ, तो अैसा कोअी भी अनाचार नहीं जिसके लिअे शास्त्रका आधार न

---

* आठवाँ बयान, ता० १७-११-१९३२

मिले। और प्राचीन मनुस्मृतिसे भी शंकास्पद प्रमाणवाले श्लोक नहीं निकाल दिये जायँ, तो अिस सारे महान ग्रंथमें भी जो अूँचेसे अूँचा नैतिक अुपदेश जगह-जगह पर बिखरा हुआ है, अुसके विरोधी वाक्य कितने ही मिल जायँगे। अिसलिअे भगवद्‌गीतामें अेक ही जगह जहाँ 'शास्त्र' शब्द आता है, वहाँ मैंने अुसका अर्थ यह नहीं किया कि वह गीताके बाहरका कोअी ग्रंथ या विधि-वाक्य है, बल्कि यह कि वह किसी जीवंत प्रमाणभूत व्यक्तिमें मूर्तिमान हुआ सदाचार है। मैं जानता हूँ कि अिससे अिस आलोचकको संतोष नहीं होगा। और साधारण मनुष्यकी हैसियतसे मैं किसीको रास्ता भी नहीं बता सकता, परन्तु यह बताकर कि शास्त्रका साफ़ अर्थ मैं क्या करता हूँ, अपने आलोचकोंकी जिज्ञासाको तृप्त कर सकता हूँ।

अीश्वरीय प्रेरणा और अन्तर्नाद

अेक और सवाल अितने ही आग्रहसे बार-बार पूछा जाता है: "अीश्वरीय प्रेरणा और अन्तर्नादका आप क्या अर्थ करते हैं? और अगर हर मनुष्य अपने लिअे अैसी ही प्रेरणा होनेका दावा करे व हर शख्स अपने पड़ोसियोंसे बिलकुल जुदा ही ढंगसे बर्ताव करे, तो आपकी और दुनियाकी क्या दशा हो!"

यह अच्छा सवाल है। अीश्वरने अगर आत्मरक्षाके लिअे सुविधा न कर रखी होती, तो हमारा बुरा हाल होता। अिसलिअे यह दावा भले ही सब करें, परन्तु अिसे सच्चा साबित करके दिखलानेवाले तो थोड़े ही मनुष्य निकलेंगे। किसी दुनियावी राजाकी आज्ञानुसार चलनेका झूठा दावा करनेवालेकी जितनी बुरी दशा हो सकती है, अुससे भी बुरी दशा अीश्वरकी प्रेरणा या अन्तर्नादकी आज्ञानुसार चलनेका झूठा दावा करनेवालेकी होगी। पहला पकड़ा गया तो शारीरिक सज़ा पाकर छूट जायगा, मगर दूसरा तो शरीर और आत्मा दोनोंसे नाश हो जायगा। अुदार मनवाले आलोचक मुझ पर धोखेका आरोप नहीं करते, परन्तु कहते हैं कि संभव है मैं भारी भ्रममें पड़ा हुआ हूँ। तो भी मेरे लिअे अिसका परिणाम मेरे झूठा दावा करनेसे बहुत भिन्न नहीं होगा। मेरे जैसे नम्र शोधक होनेका दावा करनेवालेको अत्यंत सावधान रहना चाहिये और मनका सन्तुलन कायम रखना चाहिये। अीश्वर प्रेरणा करे अिससे पहले अुसे शून्यवत् बन जाना पड़ता है। अिस चीज़के बारेमें मैं अधिक नहीं कहूँगा। मैंने जो दावा किया है, वह असाधारण नहीं है, और न अकेले मेरे लिअे ही है। जो पूरी तरह अीश्वरकी शरणमें जाते हैं, अुन सबके जीवनका वह नियामक बन जाता है। गीताकी भाषामें जिन्होंने संपूर्ण अनासक्ति यानी आत्मविलोपनको साध लिया है, अुनके जरिये अीश्वर अपना काम करता है।

अिसमें भ्रमणाका सवाल ही नहीं रहता। मैंने अेक सरल शास्त्रीय सत्य पेश किया है। जिनमें यह योग्यता प्राप्त करनेकी अिच्छा और धीरज हो, वे सब अिसकी परीक्षा कर सकते हैं। यह योग्यता भी समझनेमें अत्यंत सीधी और जहाँ निश्चय हो वहाँ प्राप्त करनेमें आसान है। अन्तमें, मेरे दावेके बारेमें किसीको चिन्ता करनेकी ज़रूरत नहीं। मैं लोगोंसे जो करनेको कहता हूँ, वह बुद्धिकी कसौटी पर कसा जा सकता है। मैं चला जाअूँगा तब भी अस्पृश्यताको दूर तो करना ही होगा। अुपवासकी प्रेरणा अीश्वरने की है या नहीं, अिसकी फिक्र मेरे निकटसे निकटके साथियोंको भी करनेकी ज़रूरत नहीं। वे मेरे प्रति प्रेमके कारण अिस कार्यमें दुगुने अुत्साहसे काम करें, अिसमें तो आपत्ति होगी ही नहीं; फिर भले ही अैसा मालूम हो कि अुपवास अेक मनस्वी मित्रका बेवकूफी भरा कदम था। जिन्हें मेरे प्रति प्रेम या विश्वास नहीं होगा, अुन पर अुपवासका असर नहीं होगा। अिसलिअे मेरे सोचे हुअे अुपवासकी या अिस विषयमें मेरे दावेकी बात बार-बार करते रहनेसे जनता परेशान होती है और राष्ट्रके सामने जो महान कार्य पड़ा है अुससे ध्यान हट जाता है। अिसलिअे मेरे पास पड़े हुअे ढेरों पत्रोंमें से थोड़से चुन कर निकाले हुअे चित्रोंकी तरफ पाठकोंका ध्यान खींच कर मैं यह लेख पूरा करूँगा।

हरिजनोंके मुहल्ले

यह अेक चित्र विलेपारलेका है। वहाँ हिन्दुओं और दूसरी जातियोंकी बस्ती है। विलेपारलेमें लगभग १७०० घर हैं। म्युनिसिपेलिटीकी ७०,००० रुपयेकी आमदनी है, जिसमें से ३१,००० रुपया सफाअीके काममें खर्च होता है। भंगियोंको जिस मुहल्लेमें रखा जाता है, वहाँ न पक्के रास्ते हैं, न पानीका अिंतजाम है और न सफाअीकी सुविधा है। ज़मीनका धरातल भी नीचा है। झोंपड़े किसी समय पाखानोंके लिअे काममें लिये हुअे पीपोंके पतरेके बने हुअे हैं। लालटेनोंकी सुविधा नहीं है। पास ही कचरा डालनेका घूरा है। अुससे हमेशा बदबू आती रहती है। अुसीसे लगी हुअी पाखानेकी लारियाँ रखनेकी जगह है। अुसीके साथ मैले डब्बे धोनेके लिअे पानीका अेक नल लगा हुआ है। जमादार यदि भला हो, तो भंगियोंको अिस नलसे पानी भर लेने दे! दूसरी तरफ जिन गाड़ियोंमें घरोंके पाखानोंके डोल अुँड़ेले जाते हैं, अुनकी कतार खड़ी रहती है। भंगियोंको अिस स्थितिमें जीवन बिताना पड़ता है। अिन झोंपड़ोंके आसपास जो खेत हैं, वे अक्सर पानीसे भर जाते हैं। अुनमें मच्छर पैदा होते हैं तथा साँप, बिच्छू और चूहे भरे रहते हैं। अिस हालतमें ३१ परिवार रहते हैं। अिनमें ३५ पुरुष, २५ स्त्रियाँ, ३४ लड़के

और १५ लड़कियाँ हैं। १०९ व्यक्तियोंकी अिस आबादीमें से फक्त ९ लड़के मुश्किलसे कुछ पढ़-लिख सकते हैं। बाकी सब निरे अपढ़ हैं। यह अुपनगर अैसा है कि यहाँके रहनेवालोंमें अिन मनुष्य भाअी-बहनोंके बारेमें कुछ भी विचार हो, तो अुनके लिअे वे साफ घरोंमें सफाअीसे रहनेकी सुविधा दे सकते हैं और पानी, रोशनी वगैरा शहरी जीवनकी जो सुविधाअें हैं, वे सब मुहैया कर सकते हैं। यहाँ सनातनियों और सुधारकों दोनोंके लिअे काम है। यह कहना कि विलेपारलेकी म्युनिसिपेलिटीकी आमदनी सिर्फ ७० हजारकी है, जिसमें से वह ३१ हज़ारकी बड़ी रकम पाखानोंकी सफाअीके लिअे खर्च करती है, मेरी शिकायतका जवाब न होगा। मैं जानता हूँ कि विलेपारलेके रहनेवाले अितने मालदार हैं कि वे अिन अुपयोगी समाज-सेवकोंके लिअे अपने पर विशेष कर लगा सकते हैं। मगर अिसे मैं धीमी क्रिया मानूँगा। वहाँके हिन्दू निवासियोंका प्रथम धर्म यह है कि वे रातोंरात अच्छा चन्दा अिकट्ठा करें और भंगियोंके लिअे सुविधा वाले मकान और दूसरे सुभीते कर दें। अगर वे अितना करें तो भी कहा जा सकता है कि अपने भाअी-बंधुओंके प्रति अुन्होंने अेक मामूली फर्ज़, देरसे ही सही, अदा किया। वे अितना कर दें, तो फिर भंगियोंको कुछ सुखसे रहनेकी सुविधा देनेके लिअे जो सालाना खर्च करना होगा, अुसके लिअे म्युनिसिपेलिटीमें आन्दोलन करें तो ठीक होगा।

ठीक अैसा ही चित्र अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके अविश्रान्त मंत्री श्री ठक्करबापाने संघकी तरफसे किये गये प्रवासमें जाँच किये भंगियोंके मुहल्लोंका खींचा है। बिहार प्रान्तके दानापुरमें और पटनाके आसपासके अैसे मुहल्लोंकी हालतके बारेमें अुन्होंने दुःखद कहानी बयान की है। शास्त्रोंमें अस्पृश्यताके बारेमें क्या है और क्या नहीं है, अिसके व्यर्थ झगड़ेमें पड़नेके बजाय हममें से हरअेक शख्स हरिजनोंकी दुर्दशा सुधारनेके काममें लग जाये, तो कैसा अच्छा हो। मुझे लिखनेवाले तमाम विद्वान पत्रलेखकोंको अिसमें काफी और अुससे भी ज्यादा काम मिल सकता है; क्योंकि अिन सबने मुझे विश्वास दिलाया है कि हरिजनोंकी आर्थिक और नैतिक स्थिति सुधारनेकी अिच्छा रखनेमें वे किसीसे कम नहीं हैं।

१०

धर्मरक्षाकी खातिर*

मतगणना

जनवरीकी पहली तारीख ज्यों-ज्यों नज़दीक आ रही है, गुरुवायुर सम्बंधी पत्र बढ़ते जा रहे हैं। अिन पत्रोंसे खड़े होनेवाले प्रश्नोंका अेक-अेक करके जवाब देनेके बजाय मेरी स्थितिका सार्वजनिक स्पष्टीकरण करके अिन सबका अुत्तर देना शायद आसान रहेगा। अगर २ जनवरीसे पहले गुरुवायुरके मन्दिरमें हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंके बराबर ही स्वतंत्रतासे प्रवेश नहीं मिलेगा, तो अुस तारीखसे मेरा अुपवास शुरू हो जायगा। लेकिन अगर निश्चित रूपसे यह मालूम पड़ जाय कि पड़ोसमें बसनेवाले और मन्दिरमें जानेवाले हिन्दू हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध हैं, या यह साफ़ तौर पर जान पड़े कि हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोल देनेको सभी अुत्सुक हैं, परन्तु अगली २ जनवरीसे पहले अनिवार्य कानूनी मुश्किलें हैं, तो मेरा अुपवास मुल्तवी रहेगा। मेरे पास आये हुअे अधिकांश पत्रोंमें मुझे विश्वास दिलाया गया है कि मन्दिरमें जानेवाले लोग हरिजनोंको मन्दिरमें जाने देनेके पक्षमें हैं। अेक-दो पत्रलेखक अिस बातका सख्त विरोध करते हैं और कहते हैं कि अगर ठीक तौर पर मतगणना की जाय, तो यह मालूम हो जायगा कि बहुत ही बड़ा भाग हरिजनोंके प्रवेशके विरुद्ध है। अिन पत्रलेखकोंने अपनी रायके समर्थनमें कोअी शहादत नहीं दी, जब कि दूसरे कहते हैं कि अुन्होंने अपने ढंगसे मतगणना की है और अुसका परिणाम हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें आया है। अगर कट्टरपंथी लोग सहमत हों, तो दोनों पक्षोंके मुक़र्रर किये हुअे मध्यस्थोंकी मौजूदगीमें तुरंत ही लोकमतकी गिनती की जा सकती है। पिछले शनिवारको 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' के संवाददाताके सवालका जवाब देते हुअे मैंने जो योजना बताअी है, वह यहाँ फिरसे देनेकी जरूरत नहीं है। कुछ भी हो, सुधारक दलको बिलकुल वक्त खोये बिना अपने कथनको निर्विवाद सबूतसे सबल बनाना चाहिये।

कुंजी जनताके हाथमें

परन्तु वे कहते हैं कि मन्दिरमें जानेवालोंके बहुत ही बड़े भागकी राय अुनके पक्षमें हो, तो भी मन्दिरकी कुंजी ज़ामोरिनके हाथमें है। अिस बातमे शाब्दिक

---

* नवाँ बयान, ता० २८-११-१९३२

सत्य ज़रूर है, मगर ज़ामोरिन मन्दिरके मालिक नहीं। वे ट्रस्टी होनेके नाते मन्दिरमें जानेवालोंके प्रतिनिधि हैं। अिसलिअे वे जनताके बड़े भागकी साफ तौर पर ज़ाहिर की हुअी अिच्छाका विरोध नहीं कर सकते। अगर कोअी कानूनी मुश्किलें हों, तो वे अुन्हें दूर करनी चाहियें; और वे अैसा न करें, तो अुसका अर्थ अितना ही है कि अुन्हें अपना स्पष्ट कर्तव्य पालन करनेको मजबूर करने लायक लोकमत मजबूत नहीं हुआ। अिसलिअे मेरा अुपवास लोकमतको अितना प्रबल बनायेगा कि अुसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। अिसलिअे असलमें तो मन्दिरकी कुंजी जनताके हाथमें है। मगर कानूनका अेक सूत्र है कि कानून या न्याय जागनेवालोंकी मदद करता है, आलसियोंकी नहीं। अिसलिअे केरल प्रान्तके सुधारकोंको ज़ामोरिनको दोष नहीं देना चाहिये। ज़ामोरिनके बारेमें दुष्ट हेतुका आरोप करनेमें अविवेक और अन्याय है। अगर वे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोल देनेको तैयार न हों, तो हमें मानना चाहिये कि जनताकी माँग अुनके गले नहीं अुतरी। वे अिनकार करें, तो हमें अुन्हें गालियाँ न देनी चाहियें, परन्तु अपने पक्षकी निर्बलता खोजनी चाहिये। अधिक गौरव और औचित्य अिसीमें है कि जनतामें अैसी भावना पैदा हो कि यह जनताकी साफ तौर पर प्रगट की गअी अिच्छा है और ज़ामोरिन जनताके प्रतिनिधिके नाते अुसकी अुपेक्षा नहीं कर सकते।

गुरुवायुरका प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न बन चुका है। सारे हिन्दुस्तानमें सवर्ण हिन्दू जाग्रत हों और अपना मत प्रगट करें कि वे चाहते हैं कि गुरुवायुरके मन्दिरमें हरिजनोंको प्रवेश मिले। अैसी अीमानदारी और आज़ादीसे जाहिर की गअी रायकी शक्ति अमोघ बन जायगी।

मैं सुधारकोंको चेतावनी दे चुका हूँ कि वे कट्टर सनातनियों या वाअिसरॉयके नाम प्रार्थना-पत्रमें अुन्होंने जो नाम धारण किया है, अुसे अिस्तेमाल करें तो 'अपरिवर्तनवादियों' के बारेमें अनुचित भाषा हरगिज़ काममें न लें। अुन्हें अपनी राय रखनेका हक है। मैं अस्पृश्यताके सवालको मुख्यतः धार्मिक मानता हूँ। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि सुधारक और अपरिवर्तनवादी अेक दूसरे पर दुष्ट हेतुका आरोप लगाये बिना धार्मिक भावनासे काम करें। कोअी भी सुधार जबरदस्तीसे नहीं कराया जा सकता, न कराना चाहिये; तब फिर धार्मिक सुधारमें तो बलात्कार किया ही कैसे जा सकता है? आगामी अुपवासकी मर्यादा और अुद्देश्य मैंने बारबार असंदिग्ध शब्दोंमें बता दिये हैं।

मेरी धर्मश्रद्धा

परंतु अेक सज्जनने अपने और दूसरोंकी तरफसे भी गुजरातीमें नीचे लिखे आशयका पत्र लिखा है:

"आप जो यह कहते हैं कि मैं किसी पर जब्र नहीं करना चाहता, सो तो सब ठीक है। परन्तु आपके रवैयेके कारण कितने ही लोग अपनी मरजीके खिलाफ चलनेको मजबूर हुअे बिना नहीं रह सकते। हममें से कितनोंको ही आपके धार्मिक मत या आपके धार्मिक सुधारके विषयमें जरा भी आदर नहीं है। परन्तु आपकी राजनैतिक शक्तिके लिअे हम चाहते हैं कि आप जीयें। और अिसलिअे आप अुपवास करनेकी जिद पकड़ेंगे, तो हमें अपनी मान्यताअें ताक पर रखकर भी मन्दिर-प्रवेशकी लड़ाअीमें आपकी मदद देनी पड़ेगी। अगर यह बलात्कार नहीं है, तो हम अिस शब्दका अर्थ नहीं समझते।"

मेरा जवाब यह है: यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये कि चूँकि हिन्दुस्तानमें मैं नेता माना जाता हूँ, अिसीलिअे मैं अपनी दीर्घकालसे रखी हुअी मान्यताओंको छोड़ दूँ; या अिस कारण कि राजनैतिक क्षेत्रमें मेरा कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है, मुझसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा या राजनैतिक सत्ता बनाये रखनेके लिअे अपनी धर्मश्रद्धाका विनिमय नहीं किया जा सकता और न अुस पर खड़ा किया गया आन्दोलन ही बन्द किया जा सकता है। दूसरा सब कुछ अिस धर्मश्रद्धाके आगे गौण है और अिसीमें से पैदा हुआ है। अुसे मिटा देने या दबा देनेके लिअे मुझे कहना, आत्महत्या करनेको कहनेसे भी ज्यादा भद्दा है। मैं यह भी कहनेकी हिम्मत करता हूँ कि जो मेरी प्रतिष्ठा या राजनैतिक प्रभावके प्रति अपने आदरके बनिस्बत अपनी मान्यताओंको गौण समझते हैं, अुनकी मान्यताअें कुछ भी हों, पर वे छिछली ही होनी चाहियें। मान्यताअें अिससे ज्यादा गहरी और अविचल होती हैं। अैसे मनुष्योंके अुदाहरण हमें मालूम हैं, जिन्होंने अपनी मान्यताओंकी खातिर सर्वस्व की बाजी लगा दी। अितना होनेके बाद ही मान्यताको धर्मकी पदवी मिलती है।

भगवान भरोसे

यही सज्जन पूछते हैं:

"बेचारे ज़ामोरिन क्या करें? अेक तरफ आप और श्री केलप्पन अुपवास करेंगे। दूसरी ओर कहा जाता है कि अेक हज़ार अपरिवर्तनवादियोंने भी अैसा ही करनेका संकल्प किया है। तब ज़ामोरिन किसे राज़ी रखें?"

मैं निःसंकोच जवाब देता हूँ कि ज़ामोरिनको अेक भी पक्षको राज़ी नहीं रखना है। अुन्हें सत्यनारायणको राज़ी रखना है। अुन्हें अपना धर्मपालन करना है और अैसा करते हुअे हज़ारों अपरिवर्तनवादियोंकी, श्री केलप्पनकी और मेरी आहुति देनी पड़े, तो अुसे देनेकी हिम्मत अुनमें होनी चाहिये। तभी वे मौजूदा और भावी पीढ़ियोंके आदरके पात्र बनेंगे। अुपवासी संघकी सँभाल तो भगवान रखेंगे। अुपवास करनेवाले जो सत्य अुन्हें दिखाअी देता है, अुसकी रक्षा करनेके लिअे अुपवास करेंगे और सत्यनारायणको अुनका जो करना होगा सो करेगा।

अगर अुनका अुपवास अन्तरकी प्रेरणासे हुआ होगा, तो अुपवासमें ही अुन्हें अिसका फल मिल जायगा; और जिस हेतुके लिअे वह किया गया होगा, वह पूरा हुआ दीखे या न दीखे, पर अुपवास करनेवालोंका तो भला ही होगा।

अीश्वर और अन्तर्नाद

यही सज्जन और पूछते हैं :

"मगर आप अीश्वरीय प्रेरणाकी और अन्तर्नाद की और अैसी बहुतसी बातें कहते हैं, सो तो ठीक है। दूसरे लोग भी अैसा दावा कर सकते हैं और करते भी हैं। परन्तु हम जैसे, जिन्हें अन्तर्नाद नहीं होता और जिनके पास लोगोंके सामने समय-समय पर बतानेको अीश्वर नहीं, वे क्या करें और दोनोंमें से किस पक्ष पर आस्था रखें?"

मैं तो अितना ही कह सकता हूँ : आप अपने सिवाय और किसी पर आस्था न रखिये। आपको अपना ही अन्तर्नाद सुननेकी कोशिश करनी चाहिये। परन्तु आपको 'अन्तर्नाद' शब्द न चाहिये, तो 'बुद्धिकी आवाज' शब्द काममें लीजिये। अिस आवाजका आपको अनुसरण करना चाहिये। और अगर आप अीश्वरको सामने नहीं रखेंगे, तो मुझे शंका नहीं कि और किसी चीज़को आप ज़रूर सामने रखेंगे। यही चीज़ अन्तमें अीश्वर जान पड़ेगी, क्योंकि सौभाग्यसे अिस विश्वमें अीश्वरके सिवाय और कोअी व्यक्ति या वस्तु है ही नहीं। साथ ही मैं यह भी कहूँगा कि अन्तर्नादकी प्रेरणासे काम करनेका दावा करनेवाले हरअेक मनुष्यको यह प्रेरणा नहीं होती। और सब शक्तियोंकी तरह अिस शान्त और सूक्ष्म अन्तर्नादको सुननेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिअे, शायद और किसी भी शक्तिकी प्राप्तिके लिअे चाहिये अुसकी अपेक्षा अधिक पूर्वाभ्यास और साधनाकी ज़रूरत होती है। और अगर दावा करनेवाले हज़ारोंमें से थोड़े भी अपना दावा सिद्ध करनेमें सफल साबित हों, तो अिसके लिअे भी लेभग्गू लोगोंका दावा चलने देने और अुसे बर्दाश्त करनेकी जोखिम अुठानी पड़े, तो वह अुठाने लायक है।

अेक ही वृक्षकी शाखाअें

यह तो हुअी अिस गुजराती पत्रलेखककी बात। अब अंग्रेजीमें लिखनेवाले अेक सज्जनके प्रश्नकी चर्चा करके मुझे यह लेख पूरा करना चाहिये। अिस सज्जनका पत्र लम्बा और विस्तृत दलीलोंसे भरा है, परन्तु मुझे लगता है कि नीचे दिये हुअे सारमें अुनके कहनेका आशय आ जाता है :

"मैं जानता हूँ कि अब तक आपमें साम्प्रदायिकता बिलकुल नहीं थी, परन्तु अब आप अेकाअेक साम्प्रदायिक लिबासमें प्रगट हुअे हैं। स्वराज्यको खातिर या क़ौमी अेकताके लिअे आप अुपवास करते तो अुसे मैं समझ सकता था और अुचित

भीमानता। परन्तु हिन्दूधर्मके लिअे आपके अिस अुपवासको मैं नहीं समझ सकता। मैंने आपको कभी हिन्दू नहीं माना, संकुचित हिन्दू तो हरगिज़ नहीं माना। जो हरिजन मन्दिरमें जाना नहीं चाहते, अुनके लिअे मन्दिर खोल देनेका क्या अर्थ है?"

यह सवाल मुझे पसन्द है। मैं जैसा हूँ अुससे भिन्न किसीके सामने दीखनेकी मेरी बिलकुल अिच्छा नहीं। मुझे हिन्दूधर्मकी या हिन्दू जातिकी शर्म नहीं। मैं संकुचित होनेसे सदा अिनकार करता हूँ। मेरी मान्यता है कि कोअी संकुचित सम्प्रदाय मुझे अेक क्षण भी बाँधकर नहीं रख सकता। मैंने अस्पृश्यताके खिलाफ अिसी कारण बगावत की है कि अस्पृश्यताके 'अतिरिक्त अंग' से हिन्दू धर्म संकुचित सम्प्रदाय बन जाता है; और अिस कलंकको धोनेके लिअे मुझे अपने प्राण अर्पण करने पड़ें, तो भी मैं अिसे सस्ता सौदा ही मानूँगा। मुझमें साम्प्रदायिकता बिलकुल नहीं, क्योंकि मेरे हिन्दू धर्ममें सबका समावेश हो जाता है। अुसे न अिस्लामसे विरोध है, न अीसाअी धर्मसे या और किसी दूसरे धर्मसे। अुसे तो अिस्लामके प्रति सद्भाव है, अीसाअी धर्मके प्रति सद्भाव है और दुनियाके दूसरे तमाम प्रचलित धर्मोंके प्रति सद्भाव है। मेरे खयालसे हिन्दू धर्म अेक ही महावृक्षकी अनेक शाखाओंमें से अेक है। अिन भिन्न-भिन्न शाखाओंके अेकत्रित बल और गुण परसे ही हम अिस वृक्षकी जड़ और अुसके गुणकी कीमत आँकते हैं। और अगर मैं जिस पर बैठा हुआ हूँ और जो मुझे पोषण दे रही है, अुस हिन्दू शाखाकी सँभाल करता हूँ, तो कहा जायगा कि मैं दूसरी शाखाओंकी भी सँभाल कर रहा हूँ। अगर हिन्दू शाखामें ज़हर लगा हुआ हो, तो अुस ज़हरके दूसरी शाखाओंमें भी फैल जानेकी संभावना है। अगर यह शाखा सूख जाय, तो अिसके सूखनेसे वृक्षकी शक्ति कम होगी।

सवर्णोंका प्रायश्चित्त

ये पत्रलेखक और अिनके जैसे विचारवाले अगर मेरा अब तकका कहा हुआ समझे हों, तो वे देख सकेंगे कि अगर अीश्वर मुझे अपनी कल्पनाके हिन्दू धर्मके लिअे मरनेका सौभाग्य देगा, तो वह मेरा सब कौमों और स्वराज्यके लिअे भी प्राणार्पण किया हुआ माना जायगा। अंतमें, मैं पहले जो कह चुका हूँ अुसे फिर कहता हूँ कि मंदिर खुल जायँ, तो हरिजन अुनमें जाना चाहें या नहीं, यह प्रश्न अप्रस्तुत है। अस्पृश्यता-निवारण हरिजनों पर अुपकार करनेकी बात नहीं है। वह तो सवर्ण हिन्दुओंके करनेका प्रायश्चित्त और आत्मशुद्धि है। और हरिजनोंके लिअे हिन्दू मंदिर खोलना और अुनमें अुन्हें निमंत्रित करना, सवर्णोंके करनेके अनेकों प्रायश्चित्तोंमें से अेक है।

११

सत्याग्रहीका आखिरी सहारा

[गांधीजीने ३ दिसम्बरको जो अुपवास किया था और जिसके कारण सारे देशमें भारी चिन्ता फैल गअी थी, अुसका कारण समझाते हुअे दूसरे दिन यानी ४ तारीखको गांधीजीने अस्पृश्यता-निवारण संघके सदस्योंको सारे मामलेका सार अिस प्रकार कह सुनाया।]

अुपवासकी जड़

अुपवासके मूल कारणके बारेमें और सरकारके व मेरे बीच जो घटनाअें घटीं, अुनके बारेमें मुझे जो कहना हो वह कहनेकी अिजाज़त अिन्स्पेक्टर जनरलने मुझे दी है, फिर भी अुनकी दी हुअी अिस छूटका पूरा फायदा अुठानेकी मेरी अिच्छा नहीं है। जो कुछ हुआ है अुसका सार ही आपको सुना दूँगा, ताकि आपकी बेचैनी मिटे और मेरी स्थितिके बारेमें गलतफहमी पैदा न हो।

आप यह जानकर खुश होंगे कि कल मैंने जो अुपवास शुरू किया था, वह अभी यहाँ आनेसे पहले ही छोड़ा है। मेरी स्थिति असाधारण है। हालाँकि मैंने अपना हृदय कड़ा कर लिया है, तो भी कुछ अैसी बातें हैं जिनका मेरे हृदय पर बहुत ही तीव्र असर होता है। महत्त्वके मामलोंके बारेमें मेरे मनमें तारतम्य नहीं है; और जितनी शक्ति मुझमें बड़े कामके लिअे प्राणार्पण करनेकी है, अुतनी ही शक्ति साथीके जीवनके लिअे भी प्राण दे देनेकी है। अब अिस मामलेमें मेरे सामने सवाल यह था कि मैं अपने अेक प्रिय साथीको मरने देकर लापरवाहीसे जीअूँ, या अुसकी जिन्दगी बचानेकी कोशिशमें अपनी जान जोखिममें डालूँ!

अप्पा साहब पटवर्धन, जिनका नाम मैंने सुना है कि अखबारोंमें आ चुका है, रत्नागिरि जेलमें कैदी हैं। वे मेरे प्रिय साथी हैं। अप्पा साहब शुद्ध कुन्दन हैं। वे सौ फीसदी सत्यनिष्ठ हैं। जेलके नियमोंसे गुजरकर मेरे पास खबर आअी कि अप्पा साहबको हरिजनोंकी जो सेवा करनी थी, वह अुन्हें नहीं करने दी गअी, अिसलिअे अुन्होंने कमसे कम — शरीरमें प्राण टिके रहें अुतनी ही — खुराक लेना शुरू किया है। मैंने सरकारको, जितनी अधिकसे अधिक सौम्य भाषामें लिखा जा सकता है, लिखा कि अगर अप्पा साहबको राहत न दी गअी, तो जो वेदना और कठिनाअी वे भोग रहे हैं वही मुझे भी भोगनी

पड़ेगी। मैंने कहा कि मुझे अुपवास करना पड़ेगा। मैं अगर अुन्हें छोड़ सकता हूँ, तो हरिजनोंको भी छोड़ सकता हूँ। और जो आदमी साथियोंको छोड़ देता है, अुसका अधिक मूल्य नहीं है। मुझे थोड़े समयका नोटिस देना पड़ा, क्योंकि मेरे पास दूसरा रास्ता नहीं था। यद्यपि मैं जानता हूँ कि अप्पा साहब वज्र हृदयके आदमी हैं, फिर भी अति अल्पाहार करनेवालेको जो वेदना भोगनी पड़ती है अुसकी मुझे कल्पना थी। अिसलिअे मेरे पास थोड़े समयका नोटिस देनेके सिवाय कोअी अुपाय न था। मुझे यह कहते हुअे आनन्द होता है कि मैं अपना अुपवास तोड़ सका अैसे हालात पैदा हो गये, फिर भी अिसका अर्थ यह नहीं कि अिस प्रकरणका अन्त हो गया है। जेलोंके अिन्स्पेक्टर जनरल, जो यहाँ थे, सरकारके साथ सलाह-मशविरा कर रहे हैं और बुधवारको सुबह या अुससे पहले सरकारका निर्णय मिल जानेकी आशा रखते हैं। अिस निर्णयके आने तक मैंने अपना अुपवास स्थगित कर दिया है। मगर आशा है कि मुझे वह दुबारा नहीं करना पड़ेगा।

मेरे शारीरिक स्वास्थ्यके बारेमें तो कहूँगा कि मेरी जो सँभाल यहाँ रखी जाती है, अुससे अच्छी कहीं नहीं रखी जा सकती। और कोअी यह न मान ले कि सरकारको मेरी जिन्दगीके बारेमें जरा भी परवाह नहीं है, या वह मुझे जेलमें मरा देखना चाहती है। मुझे छोड़ना ही हो, तो सरकार मुझे अीमानदारीसे मेरी अुम्रके लिहाजसे पूरी तन्दुरुस्तीके साथ छूटा हुआ देखना चाहती है। प्रस्तुत मामलेमें मैंने बहुत छोटी-सी माँग की थी, परन्तु सरकारको शायद अैसा लगा होगा कि वह बहुत ज्यादा थी। मगर मेरा खयाल है कि अब वह अिस नाजुक स्थितिको समझ जायगी और माँगी हुअी राहत दे देगी। अुपवासके सम्बन्धमें दूसरी बातें भी हैं, परन्तु अुनमें पड़ना मुझे पसन्द नहीं है। सरकारके और मेरे बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है, वह सरकार छाप दे तो बहुत ही अच्छा हो। मगर यह बात मैं अुसी पर छोड़ देता हूँ।

अहिंसा और अुपवास

मुझे आशा है कि मैंने आपसे जो कहा अुस परसे आपको विश्वास हो जायगा कि मैंने मूर्खता, अुतावली या नासमझीसे कदम नहीं अुठाया। आप मुझे जानते हैं, अिसलिअे अैसा मौका फिर आ जाय, तो आप चाहेंगे कि मैं अिसी तरहका आचरण करूँ। मैं अपने मामलेमें तो कहूँगा कि मैंने बताया अैसे प्रसंग पर मुझसे हो सके वह सब अगर मैं न करूँ, तो मेरी नजरमें अपनी सारी कीमत घट जायगी और मैं अपनेको पामर प्राणी मानूँगा। मेरे जैसे आदमीके लिअे, जिसे हिंसा नहीं करनी है और जिसने मन, वचन और कर्मसे

अहिंसक रहनेकी प्रतिज्ञा की हुअी है, आखिरी सहारा आत्मबलिदानका है। मेरे जैसे अल्प मनुष्यको अीश्वरने जो बुद्धि दी है, अुसके निर्णयके अनुसार कड़ा प्रसंग आये, तब अुसके लिअे प्राणोंकी बाजी लगा देना ही मेरा बड़ेसे बड़ा शस्त्र है। अिस तरह मेरा जीवन अुपवासके अनेक प्रसंगों पर रचा हुआ है। यह प्रार्थनाका सबसे अुत्कट स्वरूप है। दुनियाके सामने तो यह हाल ही में आया है, परन्तु मेरे पास तो यह बहुत वर्षोंसे है। यह विचारहीन कर्म नहीं है। अिसमें किसी पर बलात्कार नहीं है। यह व्यक्तियों पर और सरकार पर दबाव ज़रूर डालता है; परन्तु अिसमें आत्मत्यागके स्वाभाविक और नैतिक परिणामसे अधिक और कुछ नहीं है। यह सोअी हुअी आत्माको झंझोड़कर जगाता है और प्रेमी हृदयोंको कार्यमें प्रवृत्त करता है। जिन्हें मनुष्य, समाजकी स्थिति और वातावरणमें मौलिक परिवर्तन कराना हो, अुनका काम समाजमें क्षोभ पैदा किये बिना नहीं चलता। अैसा करनेके दो ही रास्ते हैं — हिंसा और अहिंसा। हिंसाका दबाव शरीरको लगता है, और अुससे करने और भोगनेवाले दोनोंका पतन होता है। परन्तु अुपवास द्वारा खुद कष्ट अुठा कर डाले हुअे अहिंसक दबावका असर बिलकुल दूसरी ही तरहका होता है। जिसके खिलाफ वह किया जाता है, अुसके शरीरको तो वह छूता ही नहीं, परन्तु अुसकी नैतिक शक्तिको स्पर्श करके अुसे सबल बनाता है।

मेरा खयाल है कि अभी अितना काफी होगा। कौन जाने मुझे कितने अुपवास करने होंगे और घुरुघुरु कर मरना होगा! परन्तु अैसा हो तो मैं चाहता हूँ कि आप मेरे कामके लिअे गर्वित हों और यह न मानें कि यह जड़ मनुष्यका कार्य था। मेरे जीवन पर बहुत कुछ बुद्धिका राज्य चलता है, और जब बुद्धि बेकार साबित होती है, तब अुस पर बुद्धिसे बड़ी शक्तिका — श्रद्धाका शासन चलता है।

१२

और कड़ा तप*

स० — आपकी तबीयत कैसी है?

ज० — मैं चौबीसों घंटे अस्पृश्यताके काममें बिताता हूँ। आठों पहर अुसीका विचार करता हूँ, और नींदमें सपने भी मुझे अुसीके आते हैं।

स० — गुरुवायुरकी क्या खबर है?

ज० — बहुत ही अच्छी। आज वहाँसे अेक पत्र मिला है, जिससे मुझे बहुत आनंद हुआ है। मतगणनाका काम पूरा करनेकी पूरी तैयारियाँ हो रही हैं। लगभग ३०० स्वयंसेवक घर-घर जाते हैं और तीन तरहके आँकड़े अिकट्ठे करते हैं: (१) मन्दिर-प्रवेशके पक्षके म्युनिसिपल मतदाता, (२) अुसके पक्षके या विरोधी तमाम पुरुष, (३) अुसके पक्षकी या विरोधी तमाम स्त्रियाँ। हरअेक मनुष्यको मत देनेसे पहले सारी स्थिति साफ़ तौर पर समझाअी जाती है।

स० — मतगणनाका निर्णय मन्दिर खोलनेके पक्षमें हो, परन्तु दूसरी मुश्किलें पैदा हो जायँ तो क्या होगा?

ज० — कानूनकी या दूसरी जो जो मुश्किलें होंगी, अुन्हें दूर करना पड़ेगा। वकील मित्रोंने यह काम हाथमें लिया है। मतगणना मेरे पक्षमें हो, और अैसा पता चले कि कानूनकी मुश्किलें दूर करनी हैं, परंतु वे बँधी हुअी मियादके भीतर दूर नहीं की जा सकतीं, तो अिस क्षण तो मुझे लगता है कि अुपवास मुल्तवी करना पड़ेगा।

स० — दक्षिण भारतके अेक अखबारने लिखा है कि मतगणनाके बारेमें गांधीजीका जो रवैया है, अुसे देखते हुअे अुन्हें बचानेका अेक यही अुपाय है कि लोग मंदिर-प्रवेशके विरुद्ध मत दें। तब गांधीजीको लोकमत तैयार करने तक राह देखनी ही पड़ेगी।

ज० — अैसे किसी प्रपंचजालसे लोग मुझे नहीं बचा सकते। मुझे लोग ठगना चाहें, तो मेरे पास अुसका भी अुपाय है; नहीं हो सो बात नहीं।

स० — वह अुपाय क्या है?

ज० — सशर्त अुपवाससे भी बहुत कड़ा अुपाय।

---

* ता० ५ दिसम्बरको 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' के प्रतिनिधिको गांधीजी द्वारा दी हुअी मुलाकात।

आसपास बैठे हुअे सभी खिलखिलाकर हँसे, और अेक आदमीने पूछा: पिछले अुपवाससे ज्यादा कड़ा अुपाय और क्या हो सकता है?

गांधीजीने हँसते-हँसते कहा: सशर्त अुपवाससे ज्यादा कड़ा अुपाय है बिनाशर्त अनशन। आज तक तो मैंने यह कहा है कि अमुक वस्तु नहीं हो जायगी तब तक अुपवास करूँगा। मगर आपके कहे मुताबिक मुझे यह विश्वास हो जाय कि लोग मुझे धोखा देते हैं, तो सम्भव है कि मुझे जीवनमें कोअी रस न रह जाय और शायद मैं यह घोषणा भी कर दूँ कि अब मेरा सदाके लिअे अनशन है। या मैं यह कहूँ कि ३० दिनका अुपवास है — जैसा मैंने दिल्लीमें २१ दिनका बिनाशर्त अुपवास घोषित किया था! मगर लोग मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं, अिसलिअे अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं कि धोखा देकर मुझे बचानेका अुपाय वे कभी नहीं करेंगे।

१३

सुधारका कार्यक्रम*

अुद्धार किसका?

अस्पृश्यता-निवारण संघकी बैठकमें अुपस्थित होनेवाले मित्रोंमें से अेकने मुझे अेक प्रश्नमाला दी थी। अिन प्रश्नोंमें अुन्होंने अपनी दलीलें भी पिरो दी थीं। संक्षेपकी खातिर मैं अिन सवालोंमें से अेक सबसे महत्त्वका सवाल पत्रके रूपमें नीचे देता हूँ:

"संघ आपके सुझाव पर अस्पृश्यता-निवारणका कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे स्थापित हुआ है, अिसलिअे कार्यकर्ता आपसे निश्चित मार्गदर्शनकी अपेक्षा रखें, यह स्वाभाविक है। तब मुझे पहला सवाल यह सूझता है: कार्यकर्ताओंको सुधारक बनकर हरिजनोंके अुद्धारका काम करना है या अपने अुद्धारका? अपने अुद्धारका काम करना हो, तो सवर्ण हिन्दुओंमें ही काम करने पर अधिकसे अधिक जोर देना चाहिये। यदि अैसा हो तो यह काम किस ढंगसे किया जाय?"

यह व्यापक प्रश्न है। और अैसी आशा है कि अुसका जवाब देते हुअे मैं अिन मित्रके अुठाये हुअे मुख्य मुद्दोंकी चर्चा कर सकूँगा। मैंने बार-बार साफ शब्दोंमें कहा है कि सवर्ण हिन्दू दोषी हैं। अुन्होंने हरिजनोंके प्रति पाप किया है। हरिजनोंकी मौजूदा हालतके लिअे सवर्ण हिन्दू जिम्मेदार हैं। अिसलिअे वे

---

* दसवाँ बयान, ता० ९-१२-१९३२

हरिजनोंकी पीठ परसे अस्पृश्यताका बोझा अुठा लें और अपने पापोंका प्रायश्चित्त करके आत्मशुद्धि कर लें, तो तुरन्त हम हरिजनोंमें संपूर्ण परिवर्तन हुआ देखेंगे। वे जिन्दगी भरकी आदतें अेकाअेक छोड़ देंगे अैसा नहीं, परन्तु ये आदतें छोड़नेके लिअे वे ज्ञानपूर्वक प्रयत्न करेंगे और सवर्ण हिन्दू अुन्हें ये आदतें छोड़नेमें सर्वत्र सहायता देंगे। यह अैसी ही बात होगी जैसे अेक कुटुम्बके दलित सदस्योंका जालिमोंके साथ पुनर्मिलन हो और वे अुसकी गरमी अनुभव करें, और जालिम अुन्हें अिस तरह अपनावें जैसे वे कभी अलग ही नहीं हुअे हों। यह परिणाम आनेमें कुछ समय लगेगा, अिसका मुझे दुःखद भान है। परन्तु हममें से यदि कुछ लोग समझ कर सही रवैया अख्तियार न करेंगे, तो यह परिणाम कभी नहीं आयेगा।

बिना शर्त अपनाअिये

अुदार विचारके कार्यकर्ताओंको भी मैंने अकसर कहते सुना है कि हरिजन अपनी कुटेवें छोड़ें, शिक्षा पायें और स्वच्छ जीवन बिताने लगें तभी अस्पृश्यता मिटनी चाहिये। अैसा कहनेवाले बिलकुल भूल जाते हैं कि हरिजन जब तक 'अस्पृश्य' रहेंगे, तब तक वे ये बातें करना चाहें तो भी नहीं कर सकते। वे यह भी भूल जाते हैं कि जो हरिजन साफ रहन-सहन रखते हैं, अुनका भी सवर्ण हिन्दू समान भावसे स्वागत नहीं करते, और अुनमें से अच्छेसे अच्छे आदमियोंको जीवनकी साधारण सुख-सुविधाओंसे और सवर्ण हिन्दुओंके साथके रोजमर्राके संसर्गसे अलग रखा जाता है। वे अंत्यज पैदा हुअे अिसीलिअे अुन्हें जीवन भर दास माना जाता है और रीति-रिवाजके फेर-बदल या और किसी कारणसे अिस दासतामें कमी नहीं हो सकती। अिसलिअे हरिजनोंके लिअे अच्छा रहन-सहन रखनेकी प्रेरणा करनेवाला कारण ही नहीं रह जाता; कहाँसे रहे? अिसलिअे अिस बुराअीको दूर करने और अुनमें मनुष्योचित स्वाभिमान अुत्पन्न करनेका अेक यही रास्ता है कि सवर्ण हिन्दू पहले तो अुन्हें बिनाशर्त अपनावें। बादमें ही अुनकी हालतमें बड़े पैमाने पर तब्दीली हो सकती है।

अिसलिअे सवर्णोंके मत तैयार करने और अिकट्ठे करनेके प्रचंड आन्दोलनको कार्यक्रममें सबसे पहला और प्रमुख स्थान देना चाहिये। यह काम अधिकसे अधिक तेज़ीसे घर-घर पहुँचकर और देशमें अिस विषयके साहित्यकी बाढ़ लाकर किया जा सकता है। मेरी रायमें अस्पृश्यता असत्यके बराबर ही स्वयंसिद्ध पाप है। अिस कथनको शास्त्रोंके समर्थनकी ज़रूरत नहीं। फिर भी सिर्फ जन्मके कारण अस्पृश्यताकी हिमायत करनेके लिअे शास्त्रोंकी मदद लेनेवाले विद्वानोंका अेक वर्ग मौजूद है, अिसलिअे कार्यकर्ता सुधार पक्षके साहित्यसे लैस रहें, यह

अच्छा ही है। शास्त्रज्ञ लोगोंका अेक अैसा वर्ग बढ़ता जा रहा है, जो आग्रह-पूर्वक यह राय रखता है कि आज जो अस्पृश्यता मानी और रखी जाती है, अुसके लिअे शास्त्रोंमें बिलकुल आधार नहीं है। यह प्रचार-कार्य अैसे कार्यकर्ताओंको सौंपना चाहिये, जो चरित्रवान हों, जो अपमानसे सहज ही तिलमिला अुठनेवाले न हों और जिनमें विरोधी दलीलें सुननेका धीरज और अुनका जवाब देनेकी चतुराअी हो।

स्वेच्छापूर्ण त्याग

धार्मिक सुधारके आन्दोलनमें किसी भी किस्मकी जबरदस्तीकी जरा भी गुंजाअिश नहीं है। अिस प्रकार मत अेकत्र करते हुअे अगर यह जान पड़े कि हिन्दुओंके बड़े भागको अस्पृश्यतामें कोअी पाप मालूम नहीं होता और वह दूसरी तरहसे भी अुसे दूर करने और हरिजनोंका दर्जा अूँचा करनेके विरुद्ध है, तो सुधारकोंको दैवकी अिच्छा शिरोधार्य करनी होगी। फिर अुन्हें बहुमतके खिलाफ चिढ़े बिना खुद कष्ट अुठाकर बता देना होगा कि अुनकी बात सच है और बहुमतकी गलत। अैसा करनेका अुत्तम अुपाय यह है कि वे हरिजनोंके साथ अेकता साधें और जो हक और सुविधाअें आज हरिजनोंको नहीं मिलतीं, अुन्हें खुद भी स्वेच्छासे छोड़ दें। स्त्री-पुरुषोंके अैसे बड़े समुदायके त्यागसे ही हरिजनोंमें आशाका संचार होगा और अुनकी अपनी नज़रमें अुनकी कीमत बढ़ेगी और अुन्हें सुधरनेकी कोशिश करनेका प्रोत्साहन मिलेगा।

दाता नहीं, कर्ज़दार

सवर्णोंमें सबसे कारगर काम यह हो सकता है: अुन्हें हर घरमें कमसे कम अेक हरिजनको कुटुम्बीकी तरह या घरके नौकरकी तरह रखनेको समझाना चाहिये। संस्कारी परिवारोंमें कमसे कम अेक अतिथिके बिना भोजन न करने की प्राचीन हिन्दू प्रथा है। आजकल तो अिसके पालनकी अपेक्षा भंग ही ज्यादा होता है। अिसे पंच महायज्ञोंमें से अेक माना गया है। अेक हरिजनको भोजनमें साथ रखनेसे ज्यादा अच्छा ढंग अिस यज्ञके करनेका मैं नहीं सोच सकता। अिसे सहभोजन माननेकी भूल न होनी चाहिये। मेरे खयालसे सहभोजनका अर्थ यह है कि अैसे लोगोंके साथ बैठकर खायें जो हमारी थालीको छू सकें। लेकिन अेक दूसरेका स्पर्श किये बिना अेक छतके नीचे साथ बैठकर खाना सहभोज नहीं। हरिजनोंकी 'अस्पृश्यता' दूर हो जाय, तो दूसरे वर्णोंको जिस ढंगसे खिलाया जाय अुसी ढंगसे अुन्हें भी कुटुम्बमें खिलानेमें कोअी अेतराज़ नहीं हो सकता।

अैसे बेशुमार अुत्सव, सम्मेलन और धर्म-विधियाँ हैं, जिनमें सवर्ण हरिजनोंको कभी नहीं बुलाते। घरके ढोर और दूसरे पशु अुनके सुख-

दुःखमें भाग ले सकते हैं, परंतु हरिजन नहीं ले सकते। ले सकते हैं तो अैसे मौके पर, जब अुन्हें अितनी कड़वाहटसे याद किया जाता है मानो वे सवर्णोंकी पंक्तिके मनुष्य ही न हों।

सवर्ण हिन्दू अपने पाप धोयें, अिसके लिअे अुनमें जिस प्रकारके प्रचार और काम हो सकते हैं और होने चाहियें, अुसके मैंने थोड़ेसे ही दृष्टान्त बताये हैं। परंतु जैसे कुटुम्बसे निकाले हुअेको वापस बुलवाया जाता है तब अुसकी खास खातिर और चिन्ता रखी जाती है, वैसे ही जब सचमुच सवर्णोंमें अपने पापका भान जाग्रत होगा तब वे हरिजनोंमें काम करेंगे। अुस वक्त वे हरिजनोंके पास शिक्षक या दाताके रूपमें नहीं जायेंगे, बल्कि अिस ढंगसे जायँगे जैसे कर्ज़दार आदमी अपना कर्ज़ चुकानेके लिअे ऋणदाताके पास जाता है। और अिसी नम्र भावसे वे हरिजनोंको और अुनके बच्चोंको शिक्षा देंगे और दूसरी तरहसे भी अुनकी भरसक मदद करेंगे।

अधीरता चाहिये

अैसा कहा गया है कि अगर यह रचनात्मक कार्यक्रम हाथमें ले लिया जाय, तो वह अितना खर्चीला और अितना लम्बा साबित होगा कि अुससे तात्कालिक लाभ नहीं होगा। अगर वह मुट्ठी भर सुधारकोंके पूरा करनेका अलग ही कार्यक्रम हो, तो अैसा ज़रूर हो सकता है। परंतु अगर अिसे सवर्णोंकी आत्मशुद्धिके कार्यक्रमका अेक अंग बना दिया जाय, तो वह दूसरा ही रूप धारण कर लेता है। जैसे पेड़की कीमत अुसके फलसे होती है, वैसे ही सवर्णोंके हृदय-परिवर्तनका मूल्य अुसके परिणामोंसे लगाना पड़ेगा। अिसलिअे दिन भरमें पाँच हरिजनोंको छुआ या अेक हरिजनको खिलाया, अितना कहना अुनके लिअे काफी नहीं है। अपनेमें नये पैदा हुअे हरिजन-प्रेमके कारण अुन्हें अिन अुपेक्षित मानवप्राणियोंको यथाशक्ति मदद देनेके लिअे अधीर बन जाना चाहिये। अन्तमें तो खुद हरिजनोंको ही हिन्दू धर्मकी नअी जाग्रतिका असर महसूस करना है। और जब तक सवर्ण लोग जीवनके हर क्षेत्रमें और हर प्रवृत्तिमें हरिजनोंके संसर्गमें नहीं आयँगे, तब तक वे अिस असरको महसूस नहीं करेंगे। अगर यह प्रवृत्ति सर्वव्यापी हो जाय, तो यह रचनात्मक कार्यक्रम खर्चीला नहीं साबित होगा। स्थानीय स्वयंसेवक अपने-अपने मुहल्लोंमें काम करें, तो अुन्हें मेहनतानेकी कोअी ज़रूरत नहीं होगी। और अगर यह जाग्रति सर्वव्यापी न हो, तो कार्यकर्ताओंका रचनात्मक कार्यक्रम चलानेका फर्ज़ दुगुना हो जाता है। अिसलिअे धीमा हो या तेज, खर्चीला हो या बेखर्चीला, परंतु अिसे संघकी प्रवृत्तियोंका अेक अंग मानना ही चाहिये। शायद तमाम हरिजन बालकों, या

डॉक्टरी सहायताकी ज़रूरतवाले तमाम बीमार हरिजनों तक नहीं पहुँचा जा सके, परंतु अिस दिशामें जो कुछ किया जायगा वह क़ीमती होगा, और जो अधिक काम होनेवाला है अुसको आगाही स्वरूप साबित होगा। और रुपयेका दान कितना मिलता है, अिस परसे अंदाज लगेगा कि सवर्ण हिन्दुओंने युगधर्मको कितना पहचाना है।

मंदिर-प्रवेश

अिस कार्यक्रममें मंदिर-प्रवेशका स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि जब असंख्य सार्वजनिक मंदिर हरिजनोंके लिअे खुल जायँगे, तब अुन्हें तत्काल अपने लिअे नवयुगका अुदय होते दीख जायगा। वे यह भूल जायँगे कि हम किसी समय समाजसे बहिष्कृत थे। मंदिरोंमें परस्पर संसर्गसे ही अुनकी दृष्टि और जीवनमें परिवर्तन हो जायगा। वे अपनी बुरी आदतें छोड़ देंगे। मगर कुछ पत्रलेखक कहते हैं: आजकल मंदिरोंकी क्या कीमत है! वे अनाचारके अड्डे हैं और वहाँ सब तरहका दुराचार होता है। मेरे पास अेक कतरन है, जिसमें अेक बहनका खत है। अेक मशहूर मंदिरमें जो कुछ हो रहा है अुसका अुसमें भद्दा चित्र है। अिन प्रसिद्ध तीर्थोंमें से कुछके खिलाफ जो आक्षेप किये गये हैं वे कहाँ तक सही हैं, यह मुझे मालूम नहीं। अिसमें तो कोअी शंका नहीं कि मंदिर जब बने थे, तब जैसे थे वैसे अब नहीं हैं। मंदिरोंका सुधार अेक स्वतंत्र विषय है। मंदिरोंका अध:पतन हरिजनोंको अुनमें प्रवेश न करने देनेका अुचित कारण नहीं माना जा सकता। मैं अितना जानता हूँ कि मंदिरोंमें जानेवाले गरीब लोगोंके बहुत बड़े समुदायको अुनमें होनेवाले भ्रष्टाचारका स्पर्श नहीं होता। और प्रसिद्ध मंदिरोंके लिअे कोअी भी बात सच हो, परंतु वह गाँवोंके मंदिरोंके लिअे हरगिज़ सही नहीं है। गाँवके मंदिर ग्रामवासियोंके लिअे आश्रय-स्थान थे और अब भी हैं। हिन्दू ग्रामवासियोंकी जीवन व्यवस्था मंदिरोंके बिना चले अैसी कल्पना करना मुश्किल है। हिन्दू कुटुम्बमें जन्म हो, मरण हो या विवाह हो, अुसमें मंदिरोंका खास महत्व रहता है। अिसलिअे मंदिर कैसा भी हो, अुसमें हरिजनोंको प्रवेश मिलना ही चाहिये।

परंतु अेक और भाअी कहते हैं: "हरिजन अमुक नियम — जैसे कि सफ़ाअी—पालन करें ही, अैसा आग्रह यदि आप नहीं रखेंगे, तो मन्दिरोंकी आज जो गिरी-गिरी हालत हो रही है अुसे आप और भी धक्का पहुँचायेंगे।" मुझे अैसी किसी आपत्तिका डर नहीं है। मैंने तो कहा है कि दूसरे हरअेक हिन्दू पूजकको जो लागू नहीं होती अैसी अेक भी खास शर्त हरिजनोंके प्रवेशके लिअे नहीं रखी जा सकती। डॉ० भगवानदासने सुझाव रखा है कि अविचारसे मनुष्यको जन्मके कारण अस्पृश्य माननेके बजाय बाह्य आचारके कारण अस्पृश्य मानना

चाहिये। भीतरी स्वच्छताका तो नियंत्रण नहीं हो सकता, परन्तु बाहरी आचरण का नियंत्रण हो सकता है। अिसलिअे जिनकी आदतें गंदी हों, जो नहाये-धोये या साफ-सुथरे न हों और जो शराब पिये हुअे हों, अुन्हें स्वच्छ होने तक अस्पृश्य मानना चाहिये; जैसे दुनिया भरके सभ्य समाजमें मनुष्य किसी भी कारणसे अस्वच्छ हालतमें हो तब तक वह अस्पृश्य माना जाता है। परन्तु सफ़ाअीका हौआ बनाकर सवर्ण हिन्दुओंको हरिजनोंका चढ़ा हुआ कर्ज़ चुकानेमें देर न करनी चाहिये। अिसलिअे पहली सीढ़ी यह है कि वे जैसे हैं, वैसे ही अुन्हें अपनाया जाय। सिर्फ साधारण नियमों — जो अिस खास प्रसंगके लिअे तैयार न किये गये हों, परन्तु सुधार होनेसे पहलेके प्रचलित हों — की ही मर्यादा रखी जाय। हरिजनोंकी स्वतंत्रता अीमानदारीके साथ घोषित कर दी जाय और अच्छी तरह स्थापित कर दी जाय, तो बादमें अवश्य नये नियम बनाये जा सकते हैं।

१४

चालाकीसे मुझे नहीं बचाया जा सकेगा*

“आपने कहा है कि मतगणना आपके विरुद्ध जाय, तो आपके बयानके अनुसार आप अनिश्चित कालके लिअे अपना अुपवास स्थगित कर देंगे। अिस परसे मान लीजिये कि गुरुवायुर-मन्दिरमें हरिजनोंके प्रवेशके पक्षमें होते हुअे भी आपके अुपवासको रोकनेके लिअे ही मतदाता आपके खिलाफ राय दें, तो आप क्या करेंगे?”

अैसा सवाल मुझसे पूछा गया है। मैं यह आशा रखता हूँ कि मतदाता अैसी किसी चालाकीका आसरा नहीं लेंगे। फिर भी मुझे मालूम हो जाय कि अुन्होंने अैसी चालाकी की है, तो मैं अितना ही कहूँगा कि अीमानदारीसे और अपनी मान्यताके अनुसार मत देनेके बजाय अैसा प्रपंच करके वे मेरी जिन्दगीको ज्यादा जोखिममें डालेंगे। अस्पृश्यता-निवारणके लिअे अपनी जिन्दगीकी बाज़ी लगा देनेके बाद मैं आशा रखता हूँ कि अैसी किसी चालाकीसे लाभ अुठाकर अुसे बचानेके लिअे मैं अितना कायर नहीं बनूँगा।

मैंने अुपवास स्थगित करनेकी जो बात कही है, वह यह ध्यानमें रखकर ही कही है कि मत अीमानदारीसे दिये जायँगे। मुझे अगर विश्वास हो जाय कि

* ११वाँ बयान, ता १४–१२–१९३२

गुरुवायुरके पासमें रहनेवालों और मन्दिरमें जानेवालोंमेंसे अधिकांश सचमुच ही हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध हैं, फिर भी मैं अुपवास करनेका आग्रह रखूँ, तो मैं अपना अुद्देश्य पूरा करनेके लिअे जबरदस्तीके अुपाय करनेका अपराधी ठहरूँगा। मुझे खयाल नहीं कि मैंने अपनी जिन्दगीमें कभी अैसी बात की हो। और जन्मभर पाले हुअे नियमका अब, जब मैं जीवनके अंतके निकट आ पहुँचा हूँ, भंग करूँ यह अनहोनी बात है। नजदीक आ रहे अपने अिस अुपवासको बलात्कारके लेशमात्र भी दोषसे मुक्त रखनेको मैं बहुत ही अुत्सुक हूँ। और मुझे शंका नहीं कि अिस अुपवासके अन्तमें सबको मालूम हो जायगा कि वह किसी भी तरहके दोषसे मुक्त था।

अुपवास सनातनियोंके लिअे नहीं

मेरे सोचे हुअे अुपवासका क्या असर होता है, अुसका मैं अेक वैज्ञानिककी भाँति निरीक्षण कर रहा हूँ। अुसके कारण लोग विचारमें पड़ गये हैं, यह देखकर मुझे आशा और आनन्द होता है। अुससे किसी भी मनुष्यको अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध काम करनेको मजबूर नहीं होना पड़ेगा। परन्तु जो लोग सुस्त हैं, अुन्हें वह अपनी सुस्ती निकाल देने और तेजीसे काम करनेको बाध्य करेगा। यानी जो लोग मेरे प्रति प्रेम रखते हैं, अुन्हें मेरा अुपवास काममें लगा देगा। अैसी प्रवृत्तिसे मुझे अफसोस नहीं हो सकता। जो यह मानते हैं कि मैं हिन्दुओंको धर्मभ्रष्ट करनेकी कोशिश कर रहा हूँ, वे मुझे गुस्सेसे भरे पत्र लिखते हैं और कहते हैं कि जल्दी-जल्दी अुपवास करके शीघ्र ही मर जाओ। मैं अैसे पत्रोंकी कोअी परवाह नहीं करता। मैं अैसे पत्रोंका आदी हो गया हूँ। यहाँ अुनका ज़िक्र अितना ही बतानेके लिअे कर रहा हूँ कि जो लोग अस्पृश्यता-निवारणके विरुद्ध हैं, अुन पर मेरे अुपवास करनेसे कोअी असर होनेकी सम्भावना नहीं है। और मेरे अुपवासके विचारका तो अुन पर अिससे भी कम असर हो यह स्वाभाविक है।

सत्यके सिवाय और कोअी साध्य नहीं

अमुक संयोगोंमें अुपवास करनेकी पद्धतिने मेरे जीवनमें किस तरह स्थान लिया है, अिस बारेमें ज्यादा कहनेकी अिच्छा होती है। मगर वह कहना मैं भविष्यके लिअे मुल्तवी रखता हूँ। अभी तो अितना ही कहूँगा कि श्री केलप्पन को या मुझे अपनी अन्तरात्माके दिये हुअे आदेशके मार्गसे कोअी विचलित नहीं कर सकेगा।

मतगणनाके मामलेमें पूरी अीमानदारी रखनेकी भरसक कोशिश की गअी है, फिर भी मतगणनामें लगे हुअे आदमियों पर ज़ामोरिन दगाबाज़ीका आरोप

करते हैं, अिससे मुझे दुःखके साथ आश्चर्य होता है। मैं ज़ामोरिनको सज्जन समझता हूँ। वे जानते हैं कि श्री माधवन नायर सारे केरलमें आदरपात्र माने जानेवाले प्रसिद्ध कानून-पंडित हैं। श्री राजगोपालाचारी मौके पर मौजूद हैं और वे कार्यकर्ताओंको मदद दे रहे हैं। मैं नहीं समझता कि वहाँ कोअी अैसा कार्यकर्ता या नेता है, जो जरा भी शंकास्पद व्यवहार होने दे। अिसलिअे दगाबाज़ीके बारेमें ज़ामोरिन या और किसी आदमीके सुननेमें कोअी बात आये, तो अुन्हें अुसके निश्चित मामले कमेटीके ध्यानमें लाने चाहियें। बिना किसी प्रमाणके आधारके किये गये अललटप्पू आक्षेपोंकी जाँच करना असम्भव है।

यह साफ़ नैतिक और धार्मिक सवाल है। अिसमें राग-द्वेष या पक्षापक्षीके लिअे स्थान ही नहीं हो सकता। सनातनी और सुधारक दोनों सत्यको खोज निकालनेके लिअे अेक दूसरेके साथ मिलकर काम कर सकते हैं। मैंने समय-समय पर यह यकीन दिलाया है और फिर दिलाता हूँ कि स्थानीय लोकमत मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें होनेके बारेमें मुझे अपनी भूल जान पड़ेगी, तो मैं तुरन्त अपने कदम वापस ले लूँगा। सत्यकी अुपासनाके सिवाय मेरे लिअे और कोअी साध्य नहीं है।

१५

कुछ और स्पष्टीकरण*

सनातनियोंको आश्वासन

मन्दिर-प्रवेशके आन्दोलनकी मर्यादाओंके सम्बन्धमें मुझे अैसा खयाल था कि मैंने अपनी स्थिति बिलकुल साफ़ कर दी है। परन्तु मैं देख रहा हूँ कि सनातनी मित्रोंको अैसा लगता है कि अिस आन्दोलनसे सनातन धर्मको खतरा है और अिसलिअे वे अभी तक अुत्तेजित हैं। यह दिखानेके लिअे कि अुनका यह भय कल्पित है, मैं अपने बयानों और पत्रोंमें जो चीज़ प्रकाशित कर चुका हूँ अुसका सार नीचे देता हूँ:

१. अुपवासका विचार अभी तो सिर्फ गुरुवायुर तक ही सीमित है। सुधारककी दृष्टिसे अिस अुपवासके लिअे अैतिहासिक कारण हैं। अिस अुपवासको टालनेका और कोअी मार्ग ही न था। मैं जानता हूँ कि सुधारके विरोधी या मन्दिर-प्रवेशके माननेवालोंमें भी सभी लोग मेरे कारणोंको किसी बचावके तौर

* १२वाँ बयान, ता० १५-१२-१९३२

पर नहीं मानेंगे। अुनका निर्देश करनेमें मेरा हेतु केवल अिस अुपवासकी मर्यादाअें बताना ही है।

२. अगर मतगणना सुधारकोंके विरुद्ध जायगी, तो सोचा हुआ अुपवास नहीं किया जायगा। अगर अैसा मालूम पड़ेगा कि वर्तमान कानून सुधारकोंके विरुद्ध है और ज़रूरी कानून पास करानेके लिअे कोशिश करने पर भी, और वर्तमान कानूनको सुधारनेके लिअे धारासभामें बिल पेश करनेकी वाअिसरॉयकी मंजूरी मिलने पर भी, २ जनवरी १९३३ से पहले धारासभामें यह कानून पास न हो सकता हो, तो भी अुपवास मुलतवी रहेगा।

३. संबंधित मन्दिरोंमें जानेवाले दर्शनार्थियोंके बहुमतकी अिच्छाके विरुद्ध मैं जबरदस्ती मन्दिर-प्रवेश करनेमें भाग नहीं लूँगा। और मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन सार्वजनिक मन्दिरों तक ही सीमित रहेगा। अिस प्रकार खानगी मन्दिर खोलनेका सवाल पूरी तरह अुनके मालिकोंकी अिच्छा पर निर्भर रहेगा। पूजाके मामलेमें जो प्रतिबन्ध सवर्ण हिन्दुओं पर लागू होंगे, वे स्वाभाविक रूपसे ही हरिजनों पर भी लागू होंगे।

बहुतसे शास्त्री सुधारके पक्षमें

मेरी राय यह है कि अितने स्पष्टीकरणसे किसी भी समझदार हिन्दूको सन्तोष होना चाहिये। मगर मैं जानता हूँ कि अैसे विचारवाले लोग भी हैं, जो आजकलका कोअी भी हिन्दू मन्दिर दूसरे हिन्दुओंके जैसी ही शर्त पर हरिजनोंके लिअे खोल दिया जाय, तो अुसे बरदाश्त नहीं कर सकते। अैसे किसी भी तरह न माननेवाले विरोधियोंको समझानेका और कोअी तरीका मुझे नहीं सूझता, सिवाय अिसके कि नये मन्दिर बनानेका कार्यक्रम हाथमें लिया जाय। अिसका अर्थ यह हुआ कि कअी तरहकी फूटवाले हमारे समाजमें अेक और नअी व अधिक तीव्र फूट पैदा की जाय। मगर मुझे यकीन है कि मैंने जो मर्यादाअें बताअी हैं, अुन्हें सुधारक वफादारी और अीमानदारीसे पालन करते रहेंगे, तो यह बेसमझी भरा विरोध कोअी समर्थन न मिलनेके कारण गायब हो जायगा। यदि सनातनधर्मी होनेका अभिमान करनेवाले जिन शास्त्रोंको मानते हैं, अुन्हीं शास्त्रोंमेंसे अुनके प्रतिपक्षी अिन सुधारोंके लिअे प्रमाण बतायें, तो अुन्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिये या आघात नहीं पहुँचना चाहिये। जो संस्कृतके अच्छे पण्डित हैं अुनमें अैसे शास्त्रियोंकी संख्या बढ़ती जा रही है, जो यह मानते हैं कि 'अस्पृश्यों' को सार्वजनिक मन्दिरोंमें दाखिल करनेकी हिन्दू धर्ममें विधि है; अितना ही नहीं, बल्कि अिन मन्दिरोंमें दूसरे हिन्दुओंके साथ पूजा करनेसे हरिजनोंको रोकना बुरा है। ये पण्डित यह भी मानते हैं कि जन्मके कारण अस्पृश्यता जैसी कोअी चीज़ ही नहीं है, जिसका अिलाज प्रायश्चित्त

या शुद्धिकरणसे न हो सके। वे यह ज़रूर मानते हैं कि कुछ कृत्यों या धन्धोंमें अस्पृश्यता आ जाती है, परन्तु यह कोअी हिन्दू धर्मकी खास विलक्षणता नहीं। यह चीज़ तो सब धर्मोंमें है और वह स्वच्छताके ठोस सिद्धान्तों पर कायम हुअी है।

व्यर्थका भय

मैं यह भी मानता हूँ कि नये बननेवाले कानूनके कारण जो भय पैदा हो गया है वह अज्ञानमूलक है। जहाँ तक मैं समझता हूँ अिस कानूनका अर्थ अितना ही है: अमुक मन्दिरमें जानेवाले पूजार्थियोंका बहुमत कानूनमें बताये तरीके पर अपनी अिस तरहकी अिच्छा प्रकट करे, तो ये मन्दिर औरोंके साथ समानताकी शर्त पर हरिजनोंके लिअे खुल जायँ। मेरी रायमें यह सूचना ही अितनी अच्छी है कि किसी भी समझदार आदमीके लिअे अिसके विरुद्ध कुछ कहनेको रह ही नहीं जाता।

कुछ भी हो, सुधारके विरोधी अितना तो अच्छी तरह समझ लें कि सुधारक क्या करना चाहते हैं। अभी तो मुझे यह कहते अफसोस होता है कि अिस सुधारके विरुद्ध जो आन्दोलन चलाया गया है, अुसमें हक़ीक़तोंकी अवहेलना होती है; और वह आन्दोलन असत्य वक्तव्यों, निराधार आक्षेपों और आलोचनाओंसे टिका हुआ है। कोअी भी सुधार अगर मूल रूपमें अच्छा है, तो अिन तरीकोंसे अुसका कोअी नुकसान नहीं हो सकता। लेकिन अगर सुधारक या अुनके विरोधी अैसे अुपायोंका आश्रय लेंगे, जो न्याय्य और अुचित न हों, तो अुससे हिन्दू धर्मका नुकसान होगा।

१६

आत्मशुद्धिका महान कार्य*

अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे जिस आशाका अुदय हुआ है, अुसका संचार हिन्दुस्तानके गाँव-गाँवमें हरिजन मुहल्लोंमें अगले रविवार ता० १८-१२-३२ को होगा अैसी मैं अुम्मीद रखता हूँ। केन्द्रीय संघने यह दिन अस्पृश्यता-निवारण दिवसके तौर पर मनाना निश्चित किया है। अुस दिन हरअेक हिन्दू बालक अपने हरिजन भाअी-बहनोंकी जो कुछ छोटीसी सेवा हो सके, करे।

यह आत्मशुद्धिका सामूहिक आन्दोलन है। सनातनी मित्रोंकी दलीलें मैं आदरपूर्वक ध्यान देकर और खुला दिमाग रख कर सुनता हूँ। हिन्दू धर्मका जो अर्थ वे करते हैं, वह मुझसे स्वीकार करानेके लिअे जहाँ तक वे कोशिश करेंगे, वहाँ तक मैं अुनकी बात सुनता रहूँगा। मेरी मान्यता तो रोज रोज दृढ़ होती जा रही है कि अस्पृश्यताका जो अर्थ किया जाता है और जिस ढंगसे आजकल अुस पर अमल होता है, अुसके लिअे समग्र दृष्टिसे देखें तो — और अिसी तरह देखना चाहिये — हिन्दू शास्त्रोंमें ज़रा भी आधार नहीं है।

अस्पृश्यताका आजकल जो अर्थ किया जाता है और जिस तरह अुस पर अमल किया जाता है, वह नीतिके किसी भी कानूनसे बिलकुल विरुद्ध है, अिसमें शंका नहीं हो सकती। अिस कलंकको धो डालना सवर्ण हिन्दुओंके लिअे आत्म-शुद्धिका मौजूदा जमानेका बड़ेसे बड़ा काम है। अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि केन्द्रीय संघ जो कार्यक्रम प्रकाशित करेगा, अुसका पूरी तरह अमल होगा। मैं सनातनी मित्रोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे भी अिस कार्यक्रमसे केवल अिसलिअे दूर न रहें कि वे मन्दिर-प्रवेशसे सहमत नहीं हो सकते। किसी भी मानवबन्धुकी सेवा करना किसी भी धर्मके आदेशके विरुद्ध हो ही नहीं सकता। फिर हरिजनोंकी, जो हिन्दू समाजके अंग माने जाते हैं, सेवा करना तो हिन्दू धर्मके विरुद्ध हो ही कैसे सकता है? हरिजन सचमुच ही अीश्वरकी सन्तान हैं, क्योंकि हमने अुन्हें छोड़ दिया है। असंख्य प्रेमपूर्ण व्यवहारोंसे सनातनी अुनकी सेवा कर सकते हैं।

किसीके अुपवाससे मैं धर्मविमुख नहीं हो सकता

अेक भाअीके, जिनका अवधूत स्वामीके रूपमें वर्णन किया गया है, अुपवासकी बात मैंने अखबारमें पढ़ी है। यह सच बात है कि अिन भाअीने

---

* १३वाँ बयान, ता० १६-१२-१९३२

कुछ महीने पहले मुझे कुछ पत्र लिखे थे। मुझे अैसे पत्र अकसर बहुत मिलते हैं। अुन्हींकी तरह ये भी लम्बे, असम्बद्ध और अप्रस्तुत थे। अिन पत्रोंकी मुझ पर यह छाप पड़ी थी कि अिनके लिखनेवालेका दिमाग ठिकाने नहीं है। अुन्होंने अपने पत्रोंमें लिखा था कि वे १९१९में या अुस बीच मुझे मिले थे। मुझे अुनके साथ अिस तरहकी मुलाकातकी कुछ भी याद नहीं है, और अिसी तरह मैंने अुन्हें लिख कर जतला दिया। अिस बातसे अुन्होंने कभी अिनकार नहीं किया। वर्षों पहले मुझसे मिलनेकी बात वे कहते हैं। अुस वक्त, अखबारोंमें जैसा कहा गया है, अुनकी तरफसे कोअी सूचना मिलनेकी या अुपवासका कोअी ज़िक्र होनेकी बात मुझे याद नहीं है। अभी थोड़े दिन हुअे किसीने मुझे तार दिया कि अवधूत स्वामी अुपवास कर रहे हैं और जब तक मैं अस्पृश्यताके विरुद्ध अपना प्रचार छोड़ न दूँगा, तब तक वे अपना अुपवास जारी रखेंगे। अुस तारके भेजनेवालेको मैंने तारसे बताया कि अुन्हें स्वामीको अुपवास छोड़ देनेके लिअे समझाना चाहिये। जिस प्रवृत्तिको मैंने अपना जीता-जागता धर्म माना है, अुसे मुझसे छुड़वानेके लिअे लाखों आदमी अुपवास करें, तो भी मैं नहीं छोड़ सकता। हरअेक आदमीको अपना जीता-जागता धर्म अीश्वरसे मिलता है और अीश्वर ही अुसे अुससे विमुख — अगर विमुख होनेकी ज़रूरत हो तो — कर सकता है।

१७

अस्पृश्यताकी भस्ममें से ही हिन्दू धर्म पनपेगा*

मतगणनाके परिणामोंका विश्लेषण

राजाजी, के० माधवन नायर और केलप्पन मुझसे सलाह-मशविरा करने पूना आये हैं। अुनसे मेरी खूब चर्चा हुअी। अुन्होंने गुरुवायुरकी मतगणनाके परिणाम मेरे सामने रखे। मतगणना पोनानी तहसीलमें, जहाँ मन्दिर है, की गअी थी। अितनी बारीकीसे ध्यान रखकर और अितनी वैज्ञानिक सावधानीके साथ मतगणना पहले कभी नहीं की गअी होगी। मत देनेके अधिकारवालोंमें से ७३ फीसदी मत दें, अैसा मेरी जानकारीमें शायद ही कभी हुआ है।

सत्यको खोज निकालनेकी खातिर जो मन्दिरमें सचमुच जानेवाले थे अुन्हींके मत लिये गये थे। यानी जिन्हें गुरुवायुर मन्दिरमें जानेका हक नहीं, और अिसी तरह जो वहाँ जाना नहीं चाहते — जैसे आर्यसमाजी — अुन्हें मतदाताओंकी सूचीसे अलग रखा गया था। यह किस ढंगसे हो सकता है, अिसका पूरा विचार किये बिना मैंने यह आशा रखी थी कि हम किसी न किसी पद्धतिसे यह तय कर सकेंगे कि सचमुच मन्दिरमें जानेवाले कौन हैं। लेकिन मुझे तुरन्त ही मालूम हो गया कि अैसा करना बिलकुल असम्भव था। अिसलिअे यह घोषणा की गअी कि जो मन्दिर जानेमें विश्वास रखते हों, जिन्हें यह श्रद्धा हो कि देवदर्शन करना हिन्दू धर्मका अविभाज्य अंग है और जिन्हें गुरुवायुर मन्दिरमें जानेका अधिकार हो, सिर्फ वे ही मत दें।

मन्दिर-प्रवेशके अधिकारवालोंकी कुल आबादी लगभग ६५,००० है। अुनमें से बालिगोंकी संख्या करीब ३०,००० मानी जा सकती है। हकीकतमें २७,४६५ बालिग स्त्री-पुरुषोंके मत लेनेके लिअे मुलाकात की गअी। अिनमें से ५६ फीसदीने मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें मत दिये, ९ फीसदीने विरुद्ध मत दिये, ८ फीसदी तटस्थ रहे और २७ फीसदी मत देने ही नहीं आये।

यह याद रखना चाहिये कि मतगणनाका काम प्रतिकूल वातावरणमें किया गया था। ज़ामोरिनने सहयोग नहीं दिया। अितना ही नहीं, मगर मुझे कहते अफसोस होता है कि कार्यकर्ताओंके खिलाफ और अिसी तरह अपनाये गये तरीकेके खिलाफ अुन्होंने कीचड़ अुछाला। पोनानी तहसील सनातनियोंका मज़बूत

* १४ वाँ बयान, ता० ३०-१२-१९३२

केन्द्र है, फिर भी वहाँका जो मन्दिर आज देशके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक मशहूर हो गया है, अुसमें 'अछूतों' के प्रवेशके पक्षमें निर्णायक बहुमत हुआ।

ये आँकड़े अिस ढंगसे भी बोधक हैं कि अुपवासकी बात होने पर भी स्त्री और पुरुष दोनों अपने विरुद्ध मत देनेमें नहीं हिचकिचाये। तटस्थ रहनेवालों और मतगणनामें भाग न लेनेवालोंके बारेमें भी मैं तो अनुकूल अनुमान ही करता हूँ। अुन्होंने मत देना पसन्द किया होता, तो वे सभी हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध ही मत नहीं देते। अगर मैं यह सुझाअूँ कि अुनमें से कमसे कम अेक तिहाअी लोग बहुत करके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें होंगे, तो यह अटकल गलत या अनुचित नहीं मानी जायगी। यों गिनें तो मताधिकारवालोंकी कुल संख्याके ६५ फीसदी मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें थे। अगर अिस तरह हिसाब लगायें कि अुन्हें मतदाताओंमें से बिलकुल निकाल दिया जाय, तो बहुमत ७७ फीसदी हो जाय। आँकड़ोंका हिसाब किसी भी तरह लगाअिये, निर्विवाद परिणाम यह आता है कि अधिकारवाले मतदाताओंका निर्णायक बहुमत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है। यह हकीकत बताती है कि अपने अुपवासके समय केलप्पनने जो यह बयान दिया था कि गुरुवायुरके आसपास रहनेवालों और मन्दिरमें जानेवालोंका बहुमत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है, वह सही था।

अुपवास मुलतवी रखना चाहिये

सरकारकी तरफसे यह जाहिर किया गया है कि मन्दिर-प्रवेशकी छूट देनेवाले डॉ० सुब्बारायनके बिलको मद्रासकी धारासभामें पेश करनेकी मंजूरी देनेका वाअिसरॉयका फैसला १५ जनवरीसे पहले जाहिर करना सम्भव नहीं है। यह देखते हुअे नये सालकी २ तारीखसे जो अुपवास करनेका विचार था, वह अुपवास अनिश्चित कालके लिअे या कुछ नहीं तो वाअिसरॉयका निर्णय प्रकट होनेकी तारीख तक मुल्तवी रखा जायगा। अिस बातसे श्री केलप्पन सहमत हैं।

चूँकि सोचा हुआ अुपवास लोगोंको ध्यानमें रखकर होनेवाला था, अिसलिअे जो कुछ मैंने पहले कह दिया है अुसके बारेमें पुनरुक्ति दोष करके भी मुझे अपनी स्थिति स्पष्ट कर देनी चाहिये। मैं अपने अुपवासको शुद्ध आध्यात्मिक कार्य मानता हूँ। अिसलिअे अुसे पूरी तरह समझाना सम्भव नहीं। फिर भी जिस हद तक समझाया जा सकता है, मैं कहूँगा कि अुसका अुद्देश्य लोगोंकी अन्तरात्माको सतेज करना है। हिन्दू धर्म सिखाता है कि जब अैसी बुराअियाँ और गन्दगी फैल जाय, जिनका अुपाय साधारण साधनोंसे नहीं हो सकता हो, तब मनुष्यके प्रयत्नमें तपस्या जोड़ी जाती है। अिस तपस्याका अन्तिम रूप सशर्त या बिना शर्त अुपवास है। अिसलिअे मेरा अुपवास कोअी नअी चीज़

नहीं है। आम जनतामें मेरा कल्पित या सच्चा असर है; अैसा न होता तो शायद अिस पर कोअी ध्यान भी न दिया जाता।

निदान और अुपाय

मुझे यह यकीन हो गया है कि किसी समय हिन्दू धर्ममें जो विशुद्धि और चेतना थी, वह अब नहीं रही और अुसका अधःपात हो गया है। समय-समय पर पैदा होनेवाली परिस्थितियोंको अनुकूल बना लेना और सतत प्रगति करना हिन्दू धर्मके विशेष लक्षण हैं। अिसका सबूत अुसके शास्त्रोंसे ही मिलता है। अुन शास्त्रोंके अीश्वर प्रेरित होनेके दावेको आम तौर पर अबाधित रखकर अुनमें नये सुधार और परिवर्तन करनेमें अुसने कभी हिचकिचाहट महसूस नहीं की। अिसलिअे हिन्दू धर्ममें सिर्फ वेदोंको ही नहीं, परन्तु बादके वचनोंको भी प्रमाण माना जाता है। परन्तु अेक अैसा समय आया, जब यह आरोग्यप्रद वृद्धि और विकास रुक गया और शास्त्रवचनोंका अुपयोग आन्तरिक प्रकाश प्राप्तिके लिअे करनेके बजाय, अुन्हींको सब कुछ मान लिया गया, फिर भले अन्तरात्माकी अभिलाषाओं और प्रयत्नोंके साथ वे सुसंगत हों या न हों। हमारे जिन पूर्वजोंने स्वयं अीश्वरसे मल्लयुद्ध करके अुससे वेदोंमें और बादके ग्रंथोंमें मिलनेवाली अमर वस्तुअें प्राप्त की हैं, अुनके वंशज आज हतवीर्य हो गये हैं और पुराने श्लोकों और पुराने मन्त्रोंसे नये अर्थ खींच निकालनेके लिअे या नये मन्त्रोंका दर्शन करनेके लिअे ज्यादा पुरुषार्थ करनेको तैयार नहीं हैं। अुन्होंने मान लिया है कि अब अीश्वरके साथ अुनका कोअी वास्ता नहीं रहा। अीश्वरने आखिरीसे आखिरी शास्त्रके आखिरीसे आखिरी श्लोककी प्रेरणा देनेके बाद अपना काम समेट लिया है। आजकल शास्त्रियोंकी मण्डलियाँ परस्पर असंगत शास्त्रवचनोंकी संगति बैठानेकी कोशिश कर रही हैं। अुन्हें यह भी होश नहीं कि वे अिस युगकी अत्यन्त आवश्यक ज़रूरतें पूरी कर सकते हैं या नहीं, या वे सूक्ष्म परीक्षाका प्रकाश बर्दाश्त कर सकते हैं या नहीं। अुनकी तपस्याअें भी अन्तरको मथ डालनेवाली व्यथाका प्रतिबिम्ब बननेके बजाय केवल बाह्य स्वरूपवाली होती हैं।

सम्भव है अैसा निदान करनेमें मेरी भूल हो। मगर मुझे तो यही निदान सच्चा लगता है। हिन्दू धर्मका जो प्रधान आदेश है कि जीवमात्रकी अेकताका अुत्तरोत्तर साक्षात्कार किया जाय — कोरी सैद्धान्तिक चर्चाके रूपमें नहीं, बल्कि जीवनके ठोस सत्यके रूपमें — अुसका हिन्दू समाज अनुसरण नहीं करता, अैसा मुझे दीख रहा है। मुझे अैसा लगता है कि हिन्दू धर्मकी विशुद्धिके लिअे, मैं स्वधर्मको जैसा समझता हूँ, अुसी ढंगसे जीनेका सतत प्रयत्न करनेवालेके नाते

अुपवासके द्वारा तपस्या करनेकी मुझमें योग्यता है, और वैसा करनेका मुझे आन्तरिक आदेश मिला है।

अुपवास फिर करना पड़ेगा

मैं आशा रखता हूँ कि पाठक अिसे आसानीसे समझ सकेंगे कि अिस ढंगसे सोचे हुअे अुपवासमें बलात्कार नहीं हो सकता। अुपवास आखिरी अुपाय और बिनाशर्त हो, तो यह स्पष्ट है कि अुसमें बलात्कार हो ही नहीं सकता। क्योंकि अुसमें लोगोंके अमुक काम करने या न करनेसे अुपवास जारी रखने या बन्द करनेकी बात नहीं होती। सशर्त अुपवासको बलात्कार माना जाता है, तो शर्तके ही कारण माना जाता है। मेरा अनुभव अैसा है कि किसीका अुपवास मनुष्यको अपने सिद्धान्तोंसे या अपनी मनोवृत्तिसे विचलित नहीं करता। गुरुवायुरकी मतगणनामें यही पाया गया है।

लोग अब समझ जायँगे कि मुल्तवी रखनेका क्या अर्थ है। अुपवासका हेतु 'अस्पृश्यों' को गुरुवायुर मन्दिरमें प्रवेश दिला देना था। अगर वह प्रवेश न्यायपूर्ण ढंगसे दिलानेके लिअे फिर अुपवास करना ज़रूरी हो जायगा, तो मैं ज़रूर अुपवास करूँगा। अुदाहरणके लिअे, सिर्फ सुधारकोंके प्रमादके कारण और अुसके परिणामस्वरूप अदालतोंके फैसलेसे या ट्रस्टी सम्बन्धी कानूनोंसे या मद्रासके धर्म सम्बन्धी दानोंके कानून (रिलीज्यस अेण्डाअुमेण्ट अेक्ट) से — जो कानून खुद ही धर्मके मामलों पर असर डालनेवाला है — जो मुश्किल खड़ी हो गअी है, अुसे दूर करनेके लिअे आवश्यक कानूनकी माँग करनेवाला लोकमत व्यक्त न हो सके, तो अिस कारणसे मुझे अुपवास करना पड़ेगा। अिसलिअे मुझे अपनी मूल प्रतिज्ञा पूरी करनी हो, तो जो गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोलनेके पक्षमें माने जाते हैं, अुनके अपने करनेका काम न करने पर, या न करनेका काम करने पर मुझे अुपवास करना पड़ सकता है।

बम्बअीकी परिषदका प्रस्ताव

यरवदा-समझौता सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंके प्रतिनिधियोंके बीच हुआ है। बम्बअीकी स्मरणीय परिषदमें अुस समझौतेका समर्थन करते हुअे सवर्ण हिन्दुओंने नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया था: —

> "यह परिषद निश्चय करती है कि आजसे जन्मके कारण किसीको भी अस्पृश्य नहीं माना जायगा और अब तक जिनको अस्पृश्य समझा गया है, अुनके सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक रास्तों और सार्वजनिक संस्थाओंके अुपयोग सम्बन्धी अधिकार दूसरे हिन्दुओंके बराबर ही माने जायँगे। अिन अधिकारोंको पहला अवसर मिलते ही कानूनी मंजूरी दी जायगी; और अगर वह मंजूरी पहले ही न मिल चुकी होगी, तो अुसके सम्बन्धका कानून स्वराज्य पार्लियामेण्टके पहलेसे पहले कानूनोंमें अेक होगा।

"खास तौर पर यह निश्चय किया जाता है कि कथित अस्पृश्यों पर प्रचलित रूढ़िके अनुसार आजकल जो सामाजिक अपमान, जिनमें मन्दिर-प्रवेशका प्रतिबन्ध भी शामिल है, लादे जाते हैं, वे तमाम न्यायपूर्ण और शान्तिमय अुपायोंसे जल्द से जल्द दूर हों, यह देखना तमाम हिन्दू नेताओंका फर्ज होगा।"

जिन नामांकित सवर्ण हिन्दुओंने यह प्रस्ताव पास किया है, वे अपने दावेके मुताबिक भारतीय राष्ट्रके हिन्दू विभागके प्रतिनिधि हों, तो अुन्हें सार्वजनिक मंदिर और दूसरी सार्वजनिक संस्थाअें हरिजनोंके लिअे खुलवाकर और अुनके साथ दिन-दिन बढ़ता जानेवाला भाअीचारा पैदा करके अपना दावा सच्चा साबित करना चाहिये।

जामिन हूँ

जब अिस समझौतेकी चर्चा हो रही थी, तब गुरुवायुरका मन्दिर खोलनेके लिअे श्री केलप्पनका अुपवास चल रहा था। मैंने अुन्हें, खास कर कालीकटके झामोरिनके सुझाव पर, वह अुपवास मुल्तवी करनेको कहा। और जैसा मैं कह चुका हूँ, ब्रिटिश सरकारने समझौतेका अपनेसे सम्बन्धित भाग स्वीकार किया और मैंने अपना अुपवास तोड़ा, तब डॉ० आम्बेडकरको मैंने वचन दिया था और अीश्वरके सामने अपने हृदयकी गुफामें मैंने निश्चय किया था कि अूपर बताये हुअे प्रस्तावके यथायोग्य पालनके लिअे और समझौतेका सवर्ण हिन्दू भली-भाँति पालन करें, अिसके लिअे मैं अपनेको जामिन समझूँगा। अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें मैं अपनी कोशिशोंमें किसी भी तरहकी ढिलाअी आने दूँ या अुपवास करनेका अपना विचार छोड़ दूँ, तो कहा जायगा कि मैंने विश्वास-घात किया और हरिजनोंको धोखा दिया। मैं चाहता हूँ कि मूक और असहाय हरिजनोंके दिलमें यह बात जम जाय कि हजारों हिन्दू सुधारक, जो हिन्दू धर्म और अुसके आधारभूत शास्त्रोंके लिअे अुतने ही आग्रही हैं, जितना अपनेको सनातनी कहनेवाला कोअी भी हो सकता है, अस्पृश्यताका जड़मूलसे नाश करनेके लिअे ज़रूरत पड़े तो प्राण निछावर करनेके लिअे मेरे जैसे ही तैयार हैं। अिस-लिअे मेरे लिअे या जिन्होंने अपनी जबानसे या हाथ अुठाकर प्रस्तावको अपनाया है, अुनके लिअे जब तक अस्पृश्यता नामशेष नहीं हो जाती, तब तक चैनसे बैठनेकी बात ही नहीं है। अस्पृश्यताकी भस्ममेंसे ही हिन्दू धर्म पनपेगा; और अिस तरह शुद्ध होकर वह दुनियामें अेक जीवित और जीवनप्रद बल बन सकेगा।

सूची